लगन चन्द्र प्रकाश

चन्द्र दत्त पन्त

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: वाराणसी :: पटना

लग्नचन्द्रप्रकाश

चन्द्रदत्त पन्त

काशीपुर, जिला नैनीताल (उ० प्र०)

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: पटना :: वाराणसी

प्रधान कार्यालय—बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली—७

शाखाएँ—(१) चौक, वाराणसी (उ० प्र०)

(२) अशोक राजपथ, पटना (बिहार)

प्रथम संस्करण : वाराणसी, १९७५

मूल्य : रु० ३६·००

श्री सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित तथा केशव मुद्रणालय सुधाकर रोड, खजुरी वाराणसी द्वारा मुद्रित।

ॐ

दो शब्द

यह बात केवल हमारे पाठकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सभी को पूर्णतया विदित है कि आज का मानव यद्यपि अपने पूर्वजों को ज्ञान में तो नहीं; किन्तु अज्ञान में, विज्ञान में, लड़ाई-झगड़े में, राग-विराग में, माया-मोह में, आपसी दंगे-फिसाद में, ईर्षा-डाह में तथा लोभ की चरमसीमा पार कर कहीं आगे निकल गया है और तर्क में कहीं सतर्क, कुतर्क द्वारा हो गया है जिससे किसी भी सत्य तथ्य का असत्य साबित हो जाना उसके बाँये हाथ का खेल मात्र रह गया है और छोटे से छोटा बच्चा भी अपने से बड़े को चुटकियों में उड़ा देने की क्षमता रखता है। इसलिये यह युग बड़े ही संभल कर पग उठा कर रखने का है। किसी भी व्यक्ति को उसके स्थान से हटाने की अपेक्षा अपने आप हट जाना कहीं अच्छा है क्योंकि यदि समय रहते बच गये तो ठीक है अन्यथा किसी भी प्रगतिशील मैदान में चारों खाने चित्त गिर पड़ना सहज ही हो जायेगा। और यश, प्रतिष्ठा, आदर, सत्कार की अभिलाषा तिरस्कार में बदल जायेगी, जहाँ तहाँ अपवाद होने लगेंगे। राह चलते लोग उंगलियाँ उठाने लगेंगे। स्वयं मानव अपनी ही आँखों गिर जायेगा तब इससे अधिक दुःख और क्या होगा कि अश्लील कुत्सा ही श्रवण होगी इसी बात को भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा है।

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्॥

किन्तु इतना होने पर भी स्वाभाविक कर्म परवश करने ही पड़ते हैं इसलिये जो भी कार्य करना है। उसे यश-अपयश हानि लाभ की आशा त्याग कर पूर्ण सामर्थ्य के साथ करना ही श्रेयष्कर है।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

जिन मनुष्यों का यह ज्योतिष-शास्त्र का अभ्यास पुस्तैनी है उनको तो किसी न किसी रूप में करना ही होगा इसलिये किसी भी ज्योतिषी को ज्योतिष के सर्वाङ्गों का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर निश्चय पूर्वक ज्योतिष फलादेश, ध्यानावस्थित, शान्तचित से, लोभ, मोह और अभिमान को त्याग कर अवश्य ही करना चाहिये जिसकी सफलता में, यश, बड़ाई, धन, सत्कार आदि स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं और केवल गाल बजाने वाले को अवश्य ही एक दिन नीचा देखना ही पड़ता है यह बात प्रत्येक मनुष्य ने अपने ध्यान में रखकर किसी भी कार्य का श्री गणेश करना चाहिये । अतः पाठकों से सादर प्रार्थना है कि आप लोग जिस लग्न चन्द्र प्रकाश नामक पुस्तक का सत्यशः फलादेश कहने के लिये एक समय से इन्तजार कर रहे थे वही पुस्तक आज श्री लालीबाबू (मोतीलाल बनारसी दास देहली) की कृपा से आप लोगों के कर कमलों में सुशोभित है । केवल इसी पुस्तक के आद्योपान्त गम्भीर अध्ययन से मनुष्य त्रिकालज्ञ हो सकता है जिसने सरस्वती देवी की प्रसन्नता प्राप्त की है वर्ष चन्द्र प्रकाश, प्रश्न चन्द्र प्रकाश आदि पुस्तकों को विवेक पूर्वक पढ़ा है वह किसी भी जन्म पत्र का फला देश कहने में किसी भी विद्वान् पण्डित से मार नहीं खा सकता यह मेरा पूर्ण विश्वास है अपूर्णज्ञान धोखा दिये बिना न रहेगा । इस पुस्तक की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई मांग ही इसकी सफलता की द्योतक है चन्द्रहस्त विज्ञान हाथ देखने की अद्वितीय पुस्तक है अंक चन्द्रप्रकाश, जन्म की तारीख से समस्त जीवन की, उथल पुथल, ऊँचनीच, उन्नति अवनति, विवाह, व्यापार, प्रेम, नौकरी, विदेश यात्रा जीत हार आदि सभी का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ बनाती है इसलिये प्रत्येक मनुष्य ने इस पुस्तक को अपने पास रखकर अपने घर की शोभा को बढ़ाना चाहिये और साथ ही किसी की सही जन्म तारीख से उसके साथ होने वाली

गत अवगत दोनों ही प्रकार की घटनाओं का सही वर्णन कर उसे और उसके साथियों को आश्चर्य चकित कर अचम्भे में डाल कर उसके और अपने जीवन को सफल बनाना चाहिये अपनी खरीदी हुई कोई भी पुस्तक अपनी नहीं रहती, इसलिये किसी को नहीं देनी चाहिये।

नारी लेखनी पुस्तिका, परहस्ते गता-गता ॥

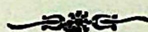
उपर्युक्त पुस्तकों का सदुपयोग ही मेरी मेहनत या परिश्रम का श्रेय है और उनके द्वारा आदर सत्कार धन और यश प्राप्त करना आपके लिये श्रेयष्कर है जिसके लिये शतशः धन्यवाद है।

—चन्द्रदत्त पन्त
मौ० काजीबाज
पो० ओ० काशीपुर
जिला नैनीताल (उ० प्र०)



ॐ

विषय-सूची





॥ ॐ ॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

लग्नचन्द्रप्रकाश

"हरिः ॐ तत्सत्"



शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

प्रथम खण्ड–प्रथम अध्याय

लग्नचन्द्रप्रकाश

साधारणतया ज्योतिष शास्त्र का थोड़ा बहुत ज्ञान रखनेवाले सभी मनुष्य यह बात भली-भाँति जानते ही हैं कि ज्योतिष शास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना प्रशान्त महासागर में गोता लगाकर उसकी तह में से रत्न-राशि निकालकर बाहर ले आने से भी कहीं कठिनतम काम है। इसलिए प्रत्येक पाठक को ज्योतिष शास्त्र का अभ्यास करने से प्रथम, धैर्य, शान्ति और एकाग्रता का पूर्णतया अभ्यास करके अपने मन को एकाग्रता की पराकाष्ठा पर पहुँचा देना चाहिये ताकि किसी भी बात को समझने में अधिक समय की आवश्यकता न हो। जो मनुष्य जितनी सावधानी, शान्ति तथा एकाग्रता से कार्य करेगा, वह उतनी ही जल्दी इस विषय में पारङ्गत हो सकेगा। जिसके लिये लगन, मन की एकाग्रता तथा इष्टसिद्धि को परम आवश्यकता होती है। लिखा भी है—

'बिना इष्ट सब भ्रष्ट हैं ज्योतिष-वैद्यकराज'

और यह भी सभी जानते ही हैं कि किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए मन की एकाग्रता की कहाँ तक आवश्यकता होती है। जीवन क्षणिक है और कार्य-क्षेत्र अत्यन्त विस्तीर्ण तथा दुर्गम है। ज्ञान का तो किसो प्रकार भी अन्त नहीं मिलता, इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि अपने छोटे से जीवन में ही अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय। ज्ञानोदधि जो कि अगाध, अगम्य तथा असीम है किसी प्रकार भी तैर कर पार नहीं किया जा सकता। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जब अधूरा ही रहना है तो उस ओर ध्यान ही क्यों दिया जाय। जब मर ही जाना है तो फिर कार्य करके ही क्या करना है। इन सभी बातों को त्याग कर अपने जीवन-लक्ष्य को सर्वप्रथम निर्धारित कर लेना चाहिये और तत्पश्चात् अपने ध्येय को प्राप्ति के लिये नियमित रूप से सदैव सतत यत्न करते रहना चाहिये। ईश्वर उसकी अवश्य ही सहायता करता है जो कि अपने कर्तव्य पालन में आपत्ति के समय भी पीछे नहीं हटता। इस

बात को पूर्णतया ध्यान में रखते हुए अपने कार्यक्षेत्र में पदार्पण करने के लिए प्रत्येक परिस्थिति में तत्पर रहना चाहिये। इसलिए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने वाले सभी छात्रों से मेरी यही संमति या प्रार्थना है कि वे इस बात पर विशेष रूप से ध्यान दें कि वे ज्योतिष शास्त्र के किस अंग को अपनाकर अपने जीवन-लक्ष्य की पूर्ति करना चाहते हैं। क्योंकि ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत गणित तथा फलित दोनों ही प्रकार की पद्धति सुचारु रूप से प्रचलित पाई जाती है। गणित ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत समस्त खगोल शास्त्र आ जाता है और फलित ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत किसी भी शुभा-शुभ प्रश्न का उत्तर देकर जातक की प्रत्येक प्रकार से तृप्ति करनी पड़ती है। चाहे प्रश्न कुछ भी हो उसका फल कहना ही होगा और यह फल अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार ही मनुष्य कह सकता है। यह योग्यता अपने-अपने ज्ञान के अनुसार होगी। ज्ञान की प्राप्ति विद्याध्ययन से सम्बन्ध रखती है और विद्याध्ययन अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार ही हो सकता है।

यूँ तो ज्योतिष शास्त्र में गणित और फलित ग्रन्थ सहस्रों उपलब्ध हैं किन्तु उन उपलब्ध ग्रन्थों में गणित का बहुत कुछ सम्बन्ध फलित ज्योतिष से भी है जो समय-समय पर काम आता रहता है। इसलिये हम उतना ही गणित, फलित से जिसका विशेष सम्बन्ध रहता है, फलित ज्योतिष के साथ-वर्णन करेंगे। तत्पश्चात् फलित ज्योतिष शास्त्र का साङ्गोपाङ्ग वर्णन करने का सफल प्रयत्न करेंगे।

प्रश्न :—जब कि सहस्रों ग्रन्थ ज्योतिष शास्त्र पर अब तक लिखे जा चुके हैं और वे उपलब्ध भी हैं तो फिर इस नवीन पुस्तक के लिखने की कहाँ तक आवश्यकता रह जाती है ?

उत्तर :—प्रश्न बड़ा ही युक्तिसंगत है क्योंकि जिस समस्या की पूर्ति बड़े-बड़े ऋषि मुनियों के तथा धुरन्धर विद्वानों के बड़े-बड़े ग्रन्थ न कर सके, क्या सम्भव है कि यह छोटी-सी पुस्तक और साधारण से व्यक्ति की जिसका कि व्यक्तित्व शून्य के समान है किसी भी समस्या का अंगस्पर्श कर किसी भी शंका का समाधान कर सके। समझता तो मैं भी यही हूँ किन्तु मैं देखता, सुनता तथा पढ़ता भी यही हूँ कि प्राचीन फलादेश आधुनिक व्यक्तियों के लिये कुछ शुभ फल कारक प्रतीत नहीं होते किन्तु अशुभ फल किसी हद तक अपना कुप्रभाव

दिखाये बिना नहीं रहते। इसलिये किसी भी ज्योतिष शास्त्र से प्रेम रखनेवाले व्यक्ति के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी योग्यता के अनुसार समस्त प्राचीन आचार्यों के ज्योतिष ग्रन्थों का पूर्ण रूप से, किसी विषयपारङ्गत ज्योतिषी से सांगोपांग तथा आद्योपान्त अध्ययन करे और तत्पश्चात् सोच समझ कर उनके फलादेश न मिलने का कारण ज्ञात करे और अपनी बात पर पूर्ण रूप से निश्चित हो जाने पर उसे सर्वसाधारण के लाभार्थ किसी-न-किसी रूप में प्रकाशित करते हो रहना चाहिये। यह प्रकाशन चाहे पुस्तकाकार हो या सार्वजनिक समाचार पत्रों द्वारा हो। चाहे जैसे भी हो प्रत्येक प्रकार से जनता जनार्दन के सम्मुख आना ही चाहिये। यों तो मैं भी इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता नहीं समझता था क्योंकि मेरा यह विफल प्रयास प्राचीन ग्रन्थों के सम्मुख केवल उपहास मात्र ही है किन्तु उन प्राचीन ग्रन्थों का अथवा उनके हिन्दी रूपान्तर का पूर्ण रूप से अवलोकन कर लेने के बाद मेरे हृदय में उन फलादेशों का संग्रह कर लेने के लिये एक ऐसी गुदगुदी हुई कि जिसका उत्कर्ष आये दिन बढ़ता ही गया और जब उसका आवेग किसी प्रकार भी हृदय में स्थिर न रह सका तो अपने सर्वाङ्ग उद्वेगों के साथ सहसा इस प्रकार पुस्तक रूप में उतर आया। यह सब कुछ लिखने की मेरी इच्छा न होते हुए भी किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा के वशीभूत होकर आज मुझे यह कार्य स्वेच्छानुकूल के समान ही करना पड़ रहा है। इसको पाठक मेरी धृष्टता समझें या इसी प्रकार से कहकर अपने विचारों को पुस्तकाकार देने की आवश्यकता ही समझें।

यह तो सभी मनुष्य भली-भाँति जानते ही हैं कि "आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है।" इन्हीं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्राचीन दैवज्ञों ने फलित ज्योतिष को भी तीन भागों में विभक्त करके, समयानुकूल अपने सुभीते के अनुसार फलादेश कहना आरम्भ कर दिया और पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त कर त्रिकालज्ञ बन गये। जिनकी वे तीनों रीतियाँ आज भी पूर्ण रूप से काम में लाई जा रही हैं।

प्रश्न :—ज्योतिष शास्त्र में वर्णित फलादेश की तीन रीतियाँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर :—फलित ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत वर्णित फलादेश की तीन रीतियाँ इस प्रकार क्रमशः निम्नांकित की जाती हैं।

प्रथम :—वह रीति है जो कि जन्मपत्र या जन्मकुंडली अथवा टेवा देखकर किसी भी मनुष्य के जीवन का हाल जन्म से लेकर मरणपर्यन्त विशद रूप से बताया जाता है।

द्वितीय :—वह रीति है जो कि वर्षफल द्वारा केवल वर्ष पर्यन्त किसी के शुभाशुभ फल कहे जाते हैं जिसके द्वारा केवल एक साल के फल जन्म दिन से अगले वर्ष के आरम्भ होने से प्रथम दिन तक के सभी शुभाशुभ फल कहे जाते हैं।

तृतीय :—वह रीति है जिसके द्वारा तात्कालिक समयानुकूल घड़ी देखकर उसी समय कुंडली तैयार की जाती है और जिसके द्वारा प्रष्टा के प्रश्नों का उत्तर तत्काल दिया जाता है। इसके प्रष्टा को जन्मकुंडली और वर्षफल की आवश्यकता नहीं होती। जिसके प्रश्नोत्तर ज्योतिषी और जातक के बीच ही होते हैं। इस प्रकार के सवाल, प्रश्न कहलाते हैं जिनके दो भेद हैं।

प्रथम :—मूक प्रश्न कहलाता है जिसमें जातक ज्योतिषी के पास जाता है और चुपचाप बैठ जाता है। ज्योतिषी अपने ज्ञान से उसके प्रश्नोत्तर दोनो ही को बताता है।

द्वितीय :—वाचाल प्रश्न कहलाता है। इसमें जातक को ज्योतिषी के पास जाकर अपना सवाल कहना पड़ता है और ज्योतिषी अपने गणित के अनुसार उसका उत्तर देता है।

अब तक हमने सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रकार से केवल पाठकों के बोधार्थ अपने वर्णन-क्रम को समझाने के लिये उपर्युक्त वातावरण को साधारण रूप से लिखकर अपने वास्तविक पाठ्यक्रम का दिग्दर्शनमात्र कराया है। किन्तु अब हम अपने विषय का विशद विवेचन जनता जनार्दन के सम्मुख उपस्थित करेंगे। जिसका विचार तात्कालिक, पारदर्शक दृष्टि से बहुत कुछ होता है। फिर भी यथाशक्ति जैसा भी समझ में आता है समझाने का सफल प्रयास करेंगे।

———

प्रथम खण्ड—द्वितीय अध्याय

लग्नचन्द्रप्रकाश

मानव ज्योतिषारम्भ :—मानव का यह पार्थिव शरीर ही सकल ब्रह्मांड का द्योतक है और वह स्वयं साक्षात् ब्रह्म है। जिस मनुष्य ने अपने मन और बुद्धि को

एकाग्रता के द्वारा अपनी सुषुप्त अवस्था को त्याग कर अपनी जाग्रत अवस्था को प्राप्त कर अपनी असीम शक्ति का अनुभव कर अपने को पहचान लिया है वही मनुष्य वास्तव में सचराचर जगत् के प्रत्येक कण-कण पर शासन करने की शक्ति रखता है और वही यथार्थ में अपने शरीरमय ब्रह्मांड की रचना करने तथा प्रलय और प्रसव की सत्ता को धारण कर नवीन सृष्टि की पूर्णतया क्षमता रखता है। वही ईश्वर है। ईश्वरमय संसार है संसारमय ईश्वर है। इसलिये ईश्वर के अतिरिक्त न कोई ईश्वर है और न कोई संसार। वह प्रत्येक रूप में स्वयं अपने आप ही विद्यमान है अथवा यों कहिये कि वह स्वयं ही है। जन्म-मरण से अतीत होने पर भी जन्म-मरण में संलग्न है। उसकी त्रिगुणात्मक माया का विशद रूप देखकर हम अपने को जन्मने तथा मरने वाला समझते हैं। इसलिये हमारे ज्योतिष शास्त्र का आरम्भ हमारे जन्म दिवस से ही होता है।

किसी भी मनुष्य का जन्म सुबह-शाम, रात-दिन चाहे जिस समय भी हो वह अपने पुष्टांगों की चेतना के अनुसार समय आने पर दिन और रात को ही पहचानेगा और उसीकी बाबत अपने माता-पितादि से प्रश्नोत्तर करने के बाद अपनी शंकाओं का समाधान करने का सतत प्रयत्न करेगा। बस उसके इन प्रश्नोत्तरों से ही मानव का त्रिकाल ज्योतिष आरम्भ होता है।

प्रश्नः—दिन रात का वर्ष पर्यन्त समय विभाग किस प्रकार से होता है?

उत्तरः—दिन रात का वर्ष पर्यन्त समय विभाग हम इस प्रकार से कर सकते हैं। सूक्ष्म रूप से अनेक ज्योतिष-ग्रन्थों में इसका बहुत ही बड़ा विस्तार मिलेगा। किन्तु हम साधारण तौर पर अपना कार्य चलाने के लिये समय विभाग को लिखेंगे, जो कि इस प्रकार से है। ६० विपल का १ पल, ६० पल की १ घड़ी और २½ घड़ी का १ घंटा होता है। इसी प्रकार २½ पल का १ सेकिन्ड, ६० सेकिन्ड का १ मिनट और ६० मिनट का १ घन्टा होता है। और २४ घन्टों के मिलकर दिन-रात होते हैं जो कि २२ मार्च और २३ सितम्बर के अतिरिक्त कभी भी दिन-रात का समय प्रमाण घन्टों में बराबर नहीं आता सदैव छोटे-बड़े होने के कारण ही जाड़ों की रातें बड़ी और दिन छोटे होते है और गर्मियों के दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं। यह सभी परिवर्तन पृथ्वी द्वारा सूर्य को

परिक्रमा से उत्पन्न होता है। इस प्रकार के २४ घंन्टों के समयपरिमाण को दिन रात की संज्ञा के स्थान पर केवल दिन कहकर भी पुकारते हैं जो सर्वसाधारण में विशेष रूप से प्रचलित है। इन्ही ७ दिनों का १ सप्ताह और २ सप्ताह का एक पक्ष और दो (२) पक्षों का १ मास होता है। ये ही पक्ष ज्योतिष शास्त्र में कृष्ण पक्ष या अंधेरा, शुक्ल पक्ष या उजाला आदि नामों से पुकारे जाते हैं। अथवा चन्द्रमा के बढ़नेवाले पक्ष को उजाला पक्ष और घटने वाले पक्ष को अंधेरा पक्ष कहते हैं।

दो मास की एक ऋतु, ६ ऋतु या १२ मास अथवा ५२ सप्ताह या ३६५ दिन का एक वर्ष या साल होता है। हिन्दु-ज्योतिषशास्त्रानुसारेण वर्षारम्भ दो प्रकार से माना जाता है प्रथम सूर्य की संक्रान्ति के अनुसार दूसरा चन्द्र पूर्णिमा के अनुसार। इसी प्रकार से प्रत्येक मास का आरम्भ भी माना जाता है। चन्द्रमा और पृथ्वी की गति के अनुसार सूर्य और चन्द्र मासों में ३ वर्ष के पश्चात् एक मास का अन्तर पड़ जाता है जिसको गणित के अनुसार हर चौथे साल बढ़ाकर कमी पूरी कर दी जाती है अथवा यों कहिये कि सूर्य संक्रान्ति और चन्द्र पूर्णिमा की समता को रखने के लिए ही इस मास की हर चौथे वर्ष बृद्धि की जाती है जिसे ज्योतिषशास्त्र के अनुसार पुरुषोत्तम मास या मलमास अथवा लौंद का महीना कहते हैं।

प्रश्न :–एक वर्ष में कितने मास होते हैं उनके नाम तथा पर्याय।

उत्तर :–एक वर्ष में १२ मास होते हैं जिनके नाम तथा पर्याय इस प्रकार से हैं।

१	वैशाख	माधव	क्रिय	मेषः	Aries
२	ज्येष्ठ	शुक्र	ककुद्मान	वृषः	Taurees
३	आषाढ़	शुचि	काम	मिथुनम्	Gemini
४	श्रावण	नभ	कर्कट	कर्कः	Cancer
५	भाद्रपद	नभस्य	कण्ठीरव	सिंहः	Leo
६	आसोज	इषु (क्वार)	अश्विनी-कुमार	कन्या	Virgo

७	कार्तिक	ऊर्ज	वणिक	तुला	Libra
८	मार्गशीर्ष	सहः	कौर्पिन	वृश्चिकः	Scorpio
९	पौष	सहस्य	कोदण्ड	धनुः	Sagittariees
१०	माघ	तप	कुरङ्ग	मकरः	Capricorn
११	फाल्गुन	तपस्य	कुम्भभृत्	कुम्भः	Aquaries
१२	चैत्र	मधु	मत्स्य	मीनः	Pisees

प्रश्न :–एक वर्ष में कितने अयन होते हैं ? उन्हें परिभाषा सहित बताओ।

उत्तर :–एक वर्ष में दो (२) अयन होते हैं (१) उत्तरायण और (२) दक्षिणायन।

(१) उत्तरायणः–यह छै महीने का होता है इसमें माघ, फागुन, चैत, वैशाख, जेठ और असाढ़ ये ६ महीने सम्मलित होते हैं अर्थात् माघ की संक्रान्ति या मकर संक्रान्ति से लेकर कर्क संक्रान्ति तक का समय सम्मिलित रहता है और यही ६ महीने उत्तरायण कहलाते हैं।

(२) दक्षिणायन :–यह भी ६ महीने का समय होता है। इसमें सावन, भादों, क्वार, कार्तिक, अगहन, पूस ये ६ महीने सम्मिलित रहते हैं अर्थात् कर्क संक्रान्ति से लेकर मकर संक्रान्ति तक का समय सम्मिलित रहता है और यही ६ महीने दक्षिणायन कहलाते हैं।

पृथ्वी एक ग्रह है जो कि कन्दुक के समान अथवा नारंगी के समान है जिसके आधे भाग में जब सूर्य चमकता है तो दूसरे अर्ध भाग में चन्द्रमा चमकता है। अर्थात् एक पृथ्वी के अर्ध गोलार्ध में दिन, और अर्ध भाग में सन्धि समय को छोड़कर, रात्रि ही रहती है जिसका ऊपरी भाग उत्तरी ध्रुव और निचला भाग दक्षिणी ध्रुव कहलाता है। जब सूर्य उत्तरायण में होता है उस समय उत्तरी गोलार्ध में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं। भारत में तब गर्मी पड़ती है और वर्षा होती है। इस समय उत्तरी ध्रुव में ६ मास तक सूर्य नहीं छिपता और वहाँ ६ महीने तक दिन ही रहता है। किन्तु जब सूर्य दक्षिणायन में होता है तब दक्षिणी गोलार्ध में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं और तब भारत में सर्दी का मौसम होता है और इस समय दक्षिणी ध्रुव में ६ मास तक सूर्य नहीं छिपता और वहाँ ६ महीने तक दिन ही रहता है। कहने का तात्पर्य यही है कि जब

उत्तरी गोलार्ध में दिन बड़े होते हैं तो दक्षिणी गोलार्ध में रातें बड़ी होती हैं किन्तु जब दक्षिणी गोलार्ध में दिन बड़े होते हैं तो उत्तरी गोलार्ध में रातें बड़ी होती हैं।

प्रश्न :– ऋतु या मौसम कितने हैं उनके नाम।

उत्तर :-एक वर्ष में मुख्यतः ३ ऋतु, गर्मी, वर्षा तथा सर्दी की होती हैं किन्तु विचारशील पुरुषों ने इहें ६ तक माना है जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं (१) वसन्त, (२) ग्रीष्म, (३) वर्षा, (४) शरद, (५) हेमन्त और (६) शिशिर। इनमें प्रत्येक ऋतु २ मास की होती है। इन मासों के नाम यथाक्रम हम पूर्व पृष्ठ पर अंकित कर आये हैं।

प्रश्न— एक मास में कितने पक्ष होते हैं उनके नाम।

उत्तर—प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं जिनके नाम शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष कहे गये हैं। शुक्ल पक्ष को उजाला पक्ष या देवयान और कृष्ण पक्ष को अंधेरा पक्ष या पित्र या पितृयान कहकर पुकारते हैं।

प्रश्न—एक पक्ष में कितने सप्ताह और एक सप्ताह में कितने दिन होते हैं उनके नाम।

उत्तर—एक पक्ष में दो सप्ताह या १५ तिथियाँ होती हैं और एक सप्ताह में सात दिन होते हैं जिनके नाम यथाक्रम इस प्रकार से हैं।

शुक्ल पक्ष तिथियों के नाम		कृष्ण पक्ष तिथियों के नाम	
१. प्रतिपदा	९. नवमी	१. पड़वा	९. नौमी
२. द्वितीया	१०. दशमी	२. दोज	१०. दसमी
३. तृतीया	११. एकादशी	३. तीज	११. एकादशी
४. चतुर्थी	१२. द्वादशी	४. चौथ	१२. द्वादशी
५. पंचमी	१३. त्रयोदशी	५. पंचमी	१३. त्रोत्सी-त्रयोदशी
६. षष्ठी	१४. चतुर्दशी	६. छठ	१४. चौदस
७. सप्तमी	१५. पूर्णिमा	७. सप्तमी, सातें	१५. अमावस
८. अष्टमी		८. अष्टमी आठें	

वारों या दिनों के नाम

(१) रविवार	इतवार
(२) चन्द्रवार	सोमवार
(३) भौमवार	मंगल
(४) बुधवार	बुध
(५) गुरुवार	बृहस्पति
(६) शुक्रवार	शुक्र
(७) शनिवार	शनैश्चर

इस प्रकार ५२ सप्ताह या ३६५ दिनों का एक वर्ष होता है और प्रत्येक वर्ष को ज्योतिषशास्त्र-मतानुसार संवत्सर कहते हैं जो कि गणित संख्या के अनुसार केवल ६० (साठ) होते हैं। इसका तात्पर्य यही हो सकता है कि इकसठवां संवत्सर लौटकर फिर वही पहला संवत्सर आ जायगा जिनके नामों को यथाक्रम इस प्रकार से निम्नांकित किया जाता है।

संवत्सरों के नाम

१. प्रभव, २. विभव, ३. शुक्ल, ४. प्रमोद, ५. प्रजापति, ६. अंगिरस, ७. श्रीमुख, ८. भाव, ९. युवा, १०. धाता, ११. ईश्वर, १२. बहुधान्य, १३. प्रमाथी, १४. विक्रम, १५. वृष, १६. चित्रभानु, १७. सुभानु, १८. तारण, १९. पार्थिव, २०. अव्यय, २१. सर्वजित्, २२. सर्वधारी, २३. विरोधी, २४. विकृति, २५. खर, २६. नन्दन, २७. विजय, २८. जय, २९. मन्मथ, ३०. दुर्मुख, ३१. हेमलम्बी, ३२. विलम्ब, ३३. विकारी, ३४. शार्वरी, ३५. प्लव, ३६. शुभकृत्, ३७. शोभन, ३८. क्रोधी, ३९. विश्वावसु, ४०. पराभव, ४१. प्लवंग, ४२. कीलक, ४३. सौम्य, ४४. साधारण, ४५. विरोधकृत्, ४६. परिधावी, ४७. प्रमादी, ४८. आनन्द, ४९. राक्षस, ५०. नल, ५१. पिंगल, ५२. कालयुत, ५३. सिद्धार्थी, ५४. रौद्र, ५५. दुर्मति, ५६. दुन्दुभि, ५७. रुधिरोद्गारी, ५८. रक्ताक्ष, ५९. क्रोधन, ६०. क्षय।

१२ वर्ष या १२ संवत्सरों का एक युग होता है इसलिए ५ युगों के पश्चात् सभी संवत्सर समाप्त हो जाते हैं और फिर प्रथम संवत्सर से आरम्भ होते हैं।

नोट—किसी भी मनुष्य के जन्म संवत्सर, ऋतु, मास, तिथि, वार, नक्षत्र, करण, योगादि के फलादेश यहाँ इसलिए नहीं दिये गये हैं कि उपर्युक्त एक ही संवत्सर से लेकर एक दिन पर्यन्त लाखों व्यक्ति उत्पन्न होते हैं तो क्या उनमें वारादि के एक होने से किसी प्रकार भी साम्य हो सकता है। मैं समझता हूँ कदापि नहीं। इसीलिए मैं इन उपर्युक्त योगादि का फलादेश लिखने की आवश्यकता नहीं समझता। अनुभवसिद्ध बात को झूठ लिखना भारी भूल है। फिर भी अधिक से अधिक जानकारी के लिये ज्योतिषांगों के नाम अधिक से अधिक लिखने का प्रयत्न करेंगे।

प्रथम खण्ड—तृतीय अध्याय

ग्रहों, नक्षत्रों, योगों और करणादि के नाम

प्राचीन ज्योतिष शास्त्र वेत्ताओं ने १२ ग्रहों का वर्णन किया है किन्तु मध्य-काल में केवल नवग्रहों का ही पाठान्तर मिलता है, लेकिन आधुनिक ज्योतिषी ११ ग्रहों से फलादेश कहते हैं जिनको यथाक्रम लिखते हैं।

प्राचीन	मध्य कालीन	अर्वाचीन या आधुनिक
१—सूर्य	सूर्य	सूर्य
२ - चन्द्र	चन्द्र	चन्द्र
३—मंगल	मंगल	मंगल
४—बुध	बुध	बुध
५—गुरु	बृहस्पति	बृहस्पति
६—शुक्र	शुक्र	शुक्र
७—शनि	शनि	शनि
८—राहु	राहु	राहु
९—केतु	केतु	केतु
१०–प्रजापति		हर्शल
११–वरुण		नेपच्यून
१२–इन्द्र		

ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत प्रयोग में आने वाले नव ग्रहों के पर्यायवाची शब्द

(१) सूर्य :—हेलि, भानु, दीप्तरश्मि, चंडांशु, भास्कर, अहस्कर, प्रभाकर, उजागर, दिनेश, दिनकर, अंशुमान्, ध्वान्तशत्रु, खेचर, अर्क, आदित्य।

(२) चन्द्र :—सोम, चन्द्रमा, शीतरश्मि, शीतांशु, ग्लौ, मृगांक, कलेश, निशानाथ, रात्रिपति, राकेश, रजनीचर, खेचर, ध्वान्तशत्रु, निशाचर, शीतकर, हिमांशु।

(३) मंगल :—भौम, कुज, क्रूर, आर, वक्र, आवनेय, लोहितांग, पापी, भूमिसुत, रक्ताक्ष, ताम्रवर्ण, महीज।

(४) बुध :—वित्, ज्ञ, सौम्य, बोधन, चन्द्रपुत्र, चांद्रि, शान्त, श्यामगात्र, अतिदीर्घ, सौम्याभिध।

(५) गुरु :—जीव, अंगिरा, देवगुरु, निर्जरराजपूज्य, प्रशान्त, वाचस्पति, इज्य, त्रिदिवेशवंद्य, सुरगुरु।

(६) शुक्र :—भृगुसुत, उशना, भार्गव, अच्छ, काण, कवि, शुक्राचार्य, सित, दैत्यगुरु, देवारि, काव्याह्वय।

(७) शनि :—अंगु, मन्द, रविसुत, छायात्मज, पंगु, यम, अर्कसुत, कोण, असित, सौरि, तम, नील, क्रूर, कृशांग, कपिलाक्ष, दीर्घ, कृष्णवर्ण, असुर, सैंहिकेय,

(८) राहु :—भुजंग, स्वर्भानु, विधुंतुद।

(९) केतु—शिखी, ध्वज, शनिसुत, गुलिक, मांदि, यमात्मज।

(१०) प्रजापति—हर्शल

(११) वरुण—नेपच्यून।

(१२) इन्द्र—प्लूटो।

नक्षत्र और उनके स्वामी तथा योनि

न०	नक्षत्र	योनि	स्वामी
(१)	अश्विनी	घोड़ा	अश्विनीकुमार
(२)	भरणी	हाथी	काल, यम
(३)	कृत्तिका	मेंढा	अग्नि, अनल
(४)	रोहिणी	सर्प	ब्रह्मा
(५)	मृगशिरा	सर्प	चन्द्रमा

न०	नक्षत्र	योनि	स्वामी
(६)	आर्द्रा	श्वान	रुद्र, शिव
(७)	पुनर्वसु	विडाल	अदिति
(८)	पुष्य	मेंढा	बृहस्पति
(९)	अश्लेषा	विडाल	सर्प
(१०)	मघा	मूषक	पितर
(११)	पूर्वाफाल्गुनी	मूषक	भग देवता
(१२)	उत्तराफाल्गुनी	गौ	अर्य्यमा
(१३)	हस्त	महिष	सूर्य
(१४)	चित्रा	व्याघ्र	त्वष्टा, विश्वकर्मा
(१५)	स्वाती	महिष	वायु
(१६)	विशाखा	व्याघ्र	शक्राग्नि, इन्द्र, अग्नि
(१७)	अनुराधा	नकुल	मित्र
(१८)	ज्येष्ठा	नकुल	इन्द्र
(१९)	मूल	श्वान	निर्ऋति, राक्षस
(२०)	पूर्वाषाढ़ा	वानर	जल
(२१)	उत्तराषाढ़ा	मृग	विश्वेदेवा
(२२)	अभिजित्	मृग	ब्रह्मा
(२३)	श्रवण	वानर	विष्णु
(२४)	धनिष्ठा	सिंह	वसु
(२५)	शतभिषा	घोड़ा	वरुण
(२६)	पूर्वाभाद्रपदा	सिंह	अजैकपाद
(२७)	उत्तराभाद्रपदा	गौ	अहिर्बुध्न्य
(२८)	रेवती	हाथी	पूषा

नोट—ज्योतिष शास्त्र में अभिजित् नक्षत्र को सदैव सन्निगत माना है इसलिए इसको नक्षत्र संज्ञा से निकाल दिया गया है। जिस कारण नक्षत्र संख्या २८ के स्थान पर २७ ही रह जाती है। विंशोत्तरी आदि महादशायें गिनते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

विष्कुम्भादि योगों के नाम

१. विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान्, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगंड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गंड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतीपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्ध, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५. ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति।

आनन्दादि योगों के नाम

१. आनन्द, २. कालदंड, ३. धूम्राक्ष, ४. सौम्य, ५. ध्वांक्ष, ६. ध्वजनाम, ७. श्रीवत्स, ८. वज्र, ९. मुद्गर, १०. छत्र, ११. मित्र, १२. मानस, १३. पद्म, १४. लुम्बक, १५. उत्पात, १६. मृत्यु, १७. कण, १८. सिद्धि, १९. शुभ, २०. अमृत, २१. मूसल, २२. गदाख्य, २३. मातंग, २४. राक्षस, २५. चर, २६. स्थिर, २७. प्रवर्धमान, २८. प्रजापति।

सर्वत्र प्रजापति को चौथा मान कर गिने। ये सभी नाम-गुण सार्थक हैं।

करणादि के नाम

१. बव, २. बालव, ३. कौलव, ४ तैतिल, ५. गर, ६. वणिज, ७. विष्टि। कृष्ण चतुर्दशी उत्तरार्ध में शकुनि, अमावास्या के पूर्वार्ध में नाग और उत्तरार्ध चतुष्पद नामक एवं शुक्लप्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्ननामक करण होते हैं। ये चारों करण स्थिर हैं।

नक्षत्र तथा अक्षरारम्भ से राशि ज्ञान

चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी।
आ ई ऊ ए कृत्तिका, ओ वा वी वू रोहणी।
वे वो का की मृगशिरा, कू घ ङ छ आर्द्रा।
के को हा ही पुनर्वसु, हू हे हो डा पुष्यभम्।
डी डू डे डो अश्लेषा, मा मी मू मे मघा।
मो टा टी टू पूर्वाफाल्गुनी, टे टो पा पी उत्तराफाल्गुनी।
पू षा णा ठा हस्त, पे पो रा रि चित्रा।
रू रे रो ता स्वाती, ती तू ते तो विशाखा।

ना नी नू ने अनुराधा, नो या यी यू ज्येष्ठा।
ये यो मा मी मूल, भू धा फा ढा पूर्वाषाढा।
भे भो जा जी उत्तराषाढा, जू जे जो खा अभिजित।
खा, खू खे खो श्रवण, गा गी गू गे धनिष्ठा।
गो सा सी सू शतभिषा, से सो दा दी पूर्वा भाद्रपदा।
दू था झा ञा उत्तराभाद्रपदा दे दो चा ची रेवती॥

नोट—प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होते हैं और इस प्रकार के ९ चरणों की एक राशि होती है जैसे—

राशि-चक्रम्

चू चे चो ला ली लू ले लो, अ मेषः
इ उ ए ओ, व वि वु वे वो वृषः
क कि कु घ ङ छ के को ह मिथुनम्
हि हु हे हो ड डि डु डे डो कर्कः
म मि मु मे मो ट टि टु टे सिंहः
टो प पी पू ष ण ठ पे पो कन्या
र रि रू रे रो त ति तु ते तुला
तो न नि नु ने नो या यि यू वृश्चिकः
ये यो भ भि भू धा फा ढा भे धनु
भो ज जि जु जे ख खु खे गि जो खि खे ग मकरः
गु गे गो स सि सु से सो द कुम्भः
दि दु थ झ ञ दे दो च चि मीनः

यद्यपि किसी भी नाम का प्रथम अक्षर, ङ, ञ, ण, से प्रारम्भ नहीं होता फिर भी यदि किसी को इनकी आवश्यकता हो जाय तो ङ के स्थान पर ग, ञ के स्थान पर ज और ण के स्थान पर ड का पाठान्तर करना चाहिये।

———

प्रथम खण्ड—चतुर्थ अध्याय

राशि तथा भावों की संज्ञा तथा पर्याय

राशि-पर्याय :—मेष :—अज, वस्त, प्रथम, क्रिय।

वृष :—वृष, उक्षा, गौ, ताबुरि, शुक्रभ, द्वितीय।

मिथुन :—बौध, नृयुग्म, तृतीय, जितुम।

कर्क :—चान्द्र, कुलीर, चतुर्थ।

सिंह :—कंठोरव, लेप,

कन्या :—पाथोन, षष्ठी, अबला, तन्वी।

तुला :—जूक, वणिक्, सप्तम, तौलि।

वृश्चिक :—कौर्प्य, अष्टम, कौज, अलि।

धन :—जैव, धनु, तौक्षिक, चाप, नवम।

मकर :—आकेकर, दशम, चक्र।

कुम्भ :—हृद्रोग, घट।

मीन :—रिष्फ, मीन, झष, अन्तिम।

भाव-पर्याय—तनु :—लग्न, मूर्ति, उदर, सिर, अंग, वपु, कल्प, आद्य, देह, होरा।

धन :—स्व, कोष, अर्थ, कुटुम्ब, धन, वाक्, वित्त, अक्षि, मृत्यु, मारक।

सहज :—भ्रातृ, दुश्चिक्य, गल, सहोत्थ, पराक्रम, वीर्य, धैर्य, कर्ण।

मित्र :—अम्बा, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद, वाहन, यान, बन्धु, अम्बु, नीर, जल, मातृ, चौर्य, कर्ण, सुख, बन्धु, रसातल, वेश्म, हृत, गेह, क्षिति, विद्या।

पुत्र :—धी, तनय, सुत, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाक्, पंचम, तनुज, प्रभाव, मंत्र, विवेक, शक्ति, उदर, देवराज, पंचक।

अरि :—रिपु, द्वेष्य, वैरी, क्षत, ऋण, बीमारी, अरि, व्यसन, विघ्न, चोरस्थान, रोग, अंश, भय।

जाया :—जामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यून, काम, स्त्री, मृत्यु, मारक, चित्तोत्थ, स्त्रियों का भर्तृ-स्थान, कलत्र, दधि, सूप ।

निधन :—रन्ध्र, आयु, छिद्र, याम्य, लयपद, अष्टम, मृत्यु, क्षीर, गुड़, मूत्र, कृच्छ्र, गुह्य, मरण, अंतक, रण ।

भाग्य :—शुक्र, गुरु, धर्म, शुभ, तप, मार्ग, दया, पौत्रिक, लाभ, अर्जित ।

कर्म :—राज्य, तात, आज्ञा, मान, नभ, गगन, आस्पद, व्योम, निपुण, मध्य, व्यापार, खं, मेषूरण ।

आय :—आगम, प्राप्ति, लाभ, उपान्त्य, भव, अव ।

व्यय :—प्रान्त्य, अन्तिम, ऋष्फ, अंत्य, रिष्फ, विनाश, लग्नांत्य-खंड ।

भाव-विचार

प्रथम से :—शरीर, वर्ण, यश, सुख, आयु, जाति, आरोग्य, गुण, आकृति, रूप, क्लेश, भय आदि का विचार तनु, लग्न अथवा प्रथम भाव से करना चाहिये ।

द्वितीय से :—सोना, चाँदी, रत्न, ऐश्वर्य तथा कुटुम्ब, स्त्री आदि का विचार करना चाहिये ।

तृतीय से :—बहिन, भाई, नौकर, पराक्रम, वीर्य, भोजन आदि का विचार करना चाहिये ।

चतुर्थ से :—माता, खेती, घर, वाहन, खजाना आदि का विचार करना चाहिये ।

पंचम से :—गर्भ, सन्तान, विद्या, बुद्धि, राज्यमन्त्र, विनय आदि का विचार करना चाहिये ।

षष्ठ से :—रोग, चोर, शत्रु, भय, संग्राम, व्रण, क्रूर कर्म, मामा, चौपाये आदि का विचार करना चाहिये ।

सप्तम से :—विवाह, स्त्री, व्यवहार, झगड़ा, प्रवास, चोरी आदि का विचार करना चाहिये ।

अष्टम से :--मृत्यु, ऋण, मार्ग-संकट, गृहछिद्र आदि का विचार करना चाहिये।

नवम से :--धर्म, यश, देवालय, दीक्षा, यात्रा, मठ, वापी, कूप धर्मशाला, वृद्धि आदि का विचार करना चाहिये।

दशम से :--राज्य, पुण्य, पिता, व्यापार, कर्म, वृत्ति, मुद्रा, वृष्टि स्थान आदि का विचार करना चाहिये।

एकादश से :--द्रव्यलाभ, लाभ, पांडित्य, वाद-विवाद, लाट्री आदि का विचार करना चाहिये।

द्वादश से :--दान, खर्च, भोग, मंगलक्रिया आदि का विचार करना चाहिये।

राशियों के गुण, कर्म, स्वभाव, रंग, अंग, प्रकृति, संज्ञा, मित्र, शत्रु आदि—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
चर स्थिर द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०
पुरुष स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
क्रूर शुभ	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ
दिशायें	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर

धातु मूल जीवसंज्ञा	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव
उदय	पृष्ठोदय	पृष्ठो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	शीर्षो.	पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो.	उभयो.
तत्त्व	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
मित्र-शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चर	पर्वत	भूमि	वन	जल	पर्वत	भूमि	वन	जल	पर्वत	भूमि	वन	जल
प्रकृति	पित्त	शीत	वायु	कफ	पित्त	शीत	वायु	कफ	पित्त	शीत	वायु	कफ
स्वभाव	तेज	शान्त	तेज	शान्त	तेज	शान्त	तेज	शान्त	तेज	शान्त	तेज	शान्त
रंग	लाल	श्वेत	हरित	पाटल	पाण्डु	सब रंग	श्याम	पीत	कपिल	कबरा	कपिल	श्याम
अंग	सिर	मुख	छाती	हृदय	उदर	कटि	नाभि	जांघ	ऊरु	दो जांघ	घुटना	चरण
शरीर	छोटा	दीर्घ	सामान्य	छोटा सामान्य	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सामान्य	सामान्य	छोटा	दीर्घ

नैसर्गिक मित्र-सम-शत्रु-चक्र

ग्रह :—	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र :—	चन्द्र मंगल बृहस्पति	सूर्य बुध	सूर्य गुरु चन्द्र	सूर्य शुक्र	सूर्य मंगल चन्द्र	बुध शनि	शुक्र बुध	शनि शुक्र गुरु	शनि शुक्र गुरु
सम—	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल शनि गुरु	शनि	गुरु मंगल	गुरु	बुध केतु	बुध राहु
शत्रु—	शुक्र शनि		बुध	चन्द्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सूर्य मंगल चन्द्र	सूर्य मंगल चन्द्र	सूर्य मंगल चन्द्र

तत्काल मित्र-शत्रु—(२, ३, ४, १०, ११, १२) तत्काल मित्र एवं (१, ५, ६, ७, ८, ९) तत्काल शत्रु होते हैं। जिस ग्रह का तत्काल मित्र-शत्रु जानना हो उसी ग्रह से गिनकर किसी समय भी तत्काल मित्र-शत्रु जन्म-पत्र या प्रश्न-कुंडली में प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रथम खण्ड—पंचम अध्याय

केन्द्रादि स्थान उच्चादि चक्र

केन्द्र-स्थान—	लग्न को १ मानकर	(१-४-७-१०)
त्रिकोण स्थान—		(५-९)
त्रिक स्थान—		(६-८-१२)
पणफर स्थान—		(२-५-८-११)
आपोक्लिम स्थान—		(३-६-९-१२)
उपचय स्थान—		(३-६-१०-११)
चतुरस्र स्थान—		(४-८)
मारक स्थान—		(२-७)

ग्रहों के उच्चादि नीचादि राशि-चक्र

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्चराशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	वृष	वृश्चिक
उच्चांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०		
नीच राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	वृश्चिक	वृष
नीचांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०		
स्वराशि	सिंह	कर्क	मेष	मिथुन	धनु	वृष	मकर	कन्या	मीन
"			वृश्चिक	कन्या	मीन	तुला	कुम्भ		
	५	४	१-८	३-६	९-१२	२-७	१०-११	६	१२
मूल त्रिकोण राशि	५	२	१	६	९	७	११	११	७
उच्चराशि		३		१५					
मूल अंश	२०	२०	१२	५	१०	१५	२०	मित्रभ	मित्रभ
स्व	१०		१८	२०	२०	१५	१०	मेष	तुला
ग्रह-लिंग भेद	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	नपुंसक	नपुंसक
शुभाशुभ ग्रह	पाप	क्रूर	पाप	शुभ	शुभ	शुभ	क्रूर	क्रूर	पाप
पूर्ण दृष्टि	७	७	४-८	७	५-९	७	३-१०	५-७-९	५-७-९
एकपाद "	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-६	३-६
द्विपाद "	९-५	९-५	९-५	-५	९-५	९-५	९-५	१०-२	१०-२
त्रिपाद "	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८

नोट—कोई २ सूर्य मंगल को क्रूर, बुध, गुरु, शुक्र को शुभ, शनि, राहु केतु को पाप और चन्द्रमा को यथासंग मानते हैं।

दिनमान—सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान कहते हैं।

रात्रिमान—सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं।

दिनार्धं—दिनमान का आधा दिनार्धं कहलाता हैं।

रात्रिअर्ध—रात्रिमान का आधा रात्रिअर्धं कहलाता है।

मिश्रमान—दिनमान में रात्रिअर्धं जोड़ देने से मिश्रमान हो जाता है।

सर्वमान—दिनमान और रात्रिमान जोड़ने से सर्वमान या समस्तमान हो जाता है जो कि ६० घड़ी या २४ घण्टे का होता है। जिसमें से दिनमान घटाने पर रात्रिमान और रात्रिमान घटाने पर दिनमान शेष रहता है।

लग्न घड़ियाँ—

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	३	४	५	६	६	६
	३½	४¾	५¾	५¾	५¾	५¾
राशि-दृष्टि—	८-५-११,	९-३-६,	७-४/१०,	८-५-११,	९-३-६,	७ ४/१०,
	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
	६	६	६	५	४	३
	५¾	५¾	५¾	५¾	४¾	३½
	८-५-११,	९-३-६,	७ ४/१०,	८-५-११,	९-३-६,	७ ४/१०

चतुष्पद राशि—वृष, सिंह, मेष, मकर का पूर्वार्धं और धन का परार्धं।
मनुष्य राशि—मिथुन, कन्या, तुला, धन का पूर्वार्धं व कुम्भ।
कीट राशि—कर्क, वृश्चिक।
जलचर राशि—मकर, उत्तरार्धं मीन।
सजल राशि—कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन।
निर्जल राशि—मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु।
दिनबली राशियाँ—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
रात्रिबली राशियाँ—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन, मकर, मीन।

राशि काल-बल ज्ञान—केन्द्रस्थ मनुष्य राशियाँ दिन के समय बलवान होती हैं। सुबह और शाम के समय कीट और रात्रि के समय चतुष्पद राशियाँ बलवान होती हैं।

काल-स्वामी—बुध-गुरु प्रभात के, सूर्य मंगल दोपहर के शुक्र तीसरे पहर के और संध्याकाल अथवा शाम के राहु शनि रात्रिपर्यन्त के स्वामी होते हैं।

चन्द्रावस्था ज्ञान—शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक पूर्ण चन्द्र, शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से दशमी तक मध्य चन्द्र और कृष्ण पक्ष की षष्ठी (६) से अमावास्या तक चन्द्र क्षीण परिस्थिति में रहता है।

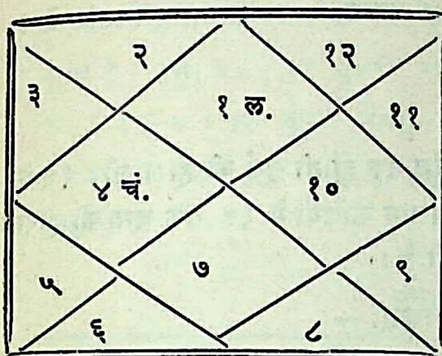
जन्म-पत्र लिखने की विधि

ॐ श्रीगणेशाय नमः—

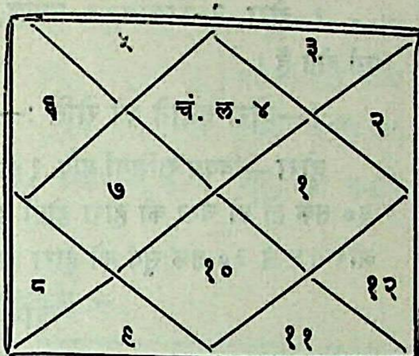
ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः कुर्याच्च सम्पदम्।
हरो रक्षतु गात्राणि यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥
आदित्यादिग्रहास्सर्वे नक्षत्रांशकराशयः।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥

श्रीशुभविक्रमीयसंवत्··· ···शालिवाहनशके·······शोभायने उत्तरायणे या दक्षिणायने·······अमुक ऋतौ···अमुक मासे···अमुक पक्षे···अमुक दिने··· घटी × पल × शुभयोगे घटी × पल × अमुक विष्टिकरणे घटी × पल × दिनमानं ×। × रात्रिमानं ×। × मिश्रमानं ×। × समस्तमानं ×। × अथानेन सौरमानेन अमुक राशि···अमुक प्रविष्टे···अमुक लग्नोदये·······अमुक लग्नस्पष्टम् ×। ×। ×। ×। सूर्यादिष्टम् ×। ×। ×। × श्रीसनातनधर्म-प्रीत्यर्थम् अमुककुलभूषणम् श्री नाम····तस्यात्मज सौभाग्यशीलधर्मपत्न्या दक्षिणकुक्षौ पुत्ररत्नम् जातम् तस्य होराचक्रानुसारेण अमुक नक्षत्र····अमुक चरणे जातत्त्वात्····अमुक नाम प्रतिष्ठितम्।

जन्मलग्नम्—



चन्द्रलग्नम्



जन्म महादशा निकालने की रीति—जन्म नक्षत्र में ७ जोड़कर ९ का भाग देने से जो शेष रहता है उसे ही जन्म की महादशा जानना चाहिए। यदि शेष शून्य हो तो अन्त के नक्षत्र से ही जन्म महादशा लगानी चाहिये। जो कि इस प्रकार से है।

आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	बृहस्पति	शनि	बुध	केतु	शुक्र

जन्मयोगनीमहादशा निकालने की रीति—जन्म-नक्षत्र में ३ जोड़ने पर जो उपलब्ध हो उसे ८ से भाग दे जो शेष बचे उसी को योगनी दशा जाने। यदि शेष शून्य हो तो अन्त की दशा जाननी चाहिये। जो कि ये हैं।

मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
चन्द्र	सूर्य	बृहस्पति	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	राहु

—: अथ योगिनी-दशा-चक्रम् :—

दशापति—	चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	राहु
दशा—	मं	पिं.	धा	भ्रा	भ	उ.	सि.	सं.
वर्ष—	१	२	३	४	५	६	७	८
नक्षत्र—	आ.	पुन.	पु	अश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.
	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू षा.	उ.षा
	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.
	कृ.	रो.	मृ.					

-: षड्वर्ग तथा उनके बनाने की रीति ।-

१-होरा, २-द्रेष्कांण, ३-सप्तांश, ४-नवांश, ५-द्वादशांश, ६-त्रिशांश ये ६ वर्ग होते हैं ।

१—होरा बनाने की रीति :—

होरा—विषम राशियाँ यदि १५ अंश तक हों तो सूर्य की होरा और १५ से ३० तक हों तो चन्द्र की होरा होती है । सम राशियों में १५ तक चन्द्र की होरा और १५ से ३० तक सूर्य की होरा होती है ।

होरा-चक्रम्:—

स्वामी	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मीन
देव	१५°	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.
		५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४
पितृ	३०°	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.	च.	सू.
		४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५

द्रेष्कांण—३०° अंशों के (१०, २०, ३०) इन तीनों भागों को द्रेष्कांण कहते हैं यदि लग्न १० अंश के अन्दर होता है तो लग्न-द्रेष्कांण लग्न-राशि गत ही रहता है और यदि लग्न स्पष्ट १० से २० अंश तक का होता है तो द्रेष्कांण लग्न से ५ वीं राशि का होता है और यदि लग्न २० से ३० अंश तक हो तो द्रेष्कांण लग्न से ९ वीं राशि का होता है ।

-: द्रेष्कांण-चक्रम् ।-

स्वामी	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मीन
नारद	१०°	म.	शु.	बु.	च.	सू.	बु.	शु.	म.	बृ.	श.	श.	बृ.
		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अगस्त्य	२०°	सू.	बु.	शु.	म.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	च.
		५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
दुर्वासा	३०°	बृ.	श.	श.	बृ.	म.	शु.	बु.	च.	सू.	बु.	शु.	मं.
		९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८

सप्तांश—तीस अंशों (३०°) के ७ भाग करने को सप्तांश कहते हैं। विषम राशियों के ४ अंश १७ कला के अन्दर उसी लग्न गत राशि का सप्तांश होता है। (८, ३४) पर दूसरी राशि का, (१२–५१) पर तीसरी राशि का, (१७–८) पर चौथी राशि का, (२१–२५) पर पाँचवीं राशि का, (२५–४३) पर छठी राशि का तथा ३० अंश पर ७ वीं राशि का सप्तांश होता है।

—: सप्तांश-चक्रम् :—

स्वामी	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मीन
क्षार	४-१७-९	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
क्षीर	८-३४-१७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
दधि	१२-५१-१६	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
आज्य	१७-८-३४	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
इक्षु	२१-२५-४३	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
मद्य	२५-२४-५१	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
शुद्धाम्बु	३०-०-०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

सम राशियों के लिये—लग्न से सातवीं (७) राशि का सप्तांश होता है। उपर्युक्त अंशों के क्रमानुसार बढ़ने पर एक २ राशि क्रमशः बढ़ती है।

नवांश की रीति—३० अंशों के ९ भाग करने को नवांश कहते हैं।... मेष, सिंह, धन का नवांश मेष से गिने, वृष, कन्या, मकर इनका नवांश मकर से गिने, मिथुन, तुला, कुम्भ का नवांश तुला से और कर्क, वृश्चिक, मीन का नवांश कर्क से गिने। (३,२०), (६-४०), (१०-०), (१३-२०), (१६-४०), (२०-०), (२३-२०), (२६-४०), (३०-०) यही नवांश है।

नवांश-चक्रम्

स्वामी	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मीन
देवता	३-२०	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.
नर	६-४०	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू.
राक्षस	१०-००	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.
देवता	१३-२०	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.
नर	१६-४०	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू	२ शु.	११ श.	८ म.
राक्षस	२०-००	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.
देवता	२३-२०	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.	७ शु.	४ च.	१ म.	१० श.
नर	२६-४०	८ म.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू.	२ शु.	११ श.	८ म.	५ सू.	२ शु.	११ श.
राक्षस	३०-००	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.	९ बृ.	६ बु.	३ बु.	१२ बृ.

द्वादशांश की रीति —३० अंशों के १२ भाग करने को द्वादशांश कहते हैं और प्रत्येक भाग २$\frac{1}{2}$ अंश का होता है। यह लग्न के अनुसार २$\frac{1}{2}$ के पूर्ण होने पर १ राशि बढ़ाता है।

द्वादशांश-चक्रम्

स्वामी	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मीन
गणेश	२-३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अश्वनीकु.	५-००	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
यम	७-३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
वह्निः	१०-००	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
गणेश	१२-३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
अश्वनीकु.	१५-००	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
यम	१७-३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
वह्नि	२०-००	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
गणेश	२२-३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
अश्वनीकु.	२५-००	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
यम	२७-३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
वह्नि	३०-००	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

त्रिशांश की रीति—३० अंशों के ५ भाग करने को त्रिशांश कहते हैं जिनमें (५, १०, १८, २५, ३०) विषम राशियों के लिए ५° अंशों के अन्दर मेष से, १०° के अन्दर कुम्भ से, १८° के अन्दर धन से, २५° के अन्दर मिथुन से, तथा ३०° के अन्दर तुला लग्न से उसे ज्ञात करना चाहिये। सम राशियों में ५° के अन्दर वृष से, १२° के अन्दर कन्या से, २०° के अन्दर मीन से, २५° के अन्दर मकर से और ३०° के अन्दर वृश्चिक से ज्ञात करना चाहिए। (५, १२, २०, ३०),

त्रिशांश-चक्रे

विषम-त्रिशांश चक्रम्

स्वामी	अंश	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धन	कुम्भ
वह्नि	५°-०	मं. १	मं. १	मं. १	मं. १	मं. १	मं. १
वायु	१०°-०	श. ११	श. ११	श. ११	श. ११	श. ११	श. ११
इन्द्र	१८°-०	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९	बृ. ९
धनद	२५°-०	बु. ३	बु. ३	बु. ३	बु. ३	बु. ३	बु. ३
जलद	३०°-०	शु. ७	शु. ७	शु. ७	शु. ७	शु. ७	शु. ७

सम-त्रिशांश-चक्रम्

स्वामी	अंशः	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन
जलद	५°-०	शु. २	शु. २	शु. २	शु. २	शु. २	शु. २
धनद	१२°-०	बु. ६	बु. ६	बु. ६	बु. ६	बु. ६	बु. ६
इन्द्र	२०°-०	वृ. १२	बृ. १२	वृ. १२	वृ. १२	वृ. १२	वृ. १२
वायु	२५°-०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०	श. १०
वह्नि	३०°-०	म. ८	म. ८	म. ८	म. ८	म. ८	म. ८

उपर्युक्त चक्रों के अतिरिक्त भी बहुत से चक्र ज्योतिष शास्त्र में कहे गये हैं जिनका जानना अनेक ज्योतिषियों के मत में अत्यन्त आवश्यक है किन्तु मेरी राय में नवांश चक्र तथा भावस्पष्ट का पूर्ण ज्ञान हो जाने पर किसी और चक्र के जानने की आवश्यकता नहीं रहती। क्योंकि समस्त फलादेशों की सत्यता बड़े २ विद्वानों के मत से इन्हीं पर पूर्णतया आधारित है। जिसके पूर्ण रूप से ज्ञात हो जाने पर मनुष्य त्रिकालज्ञ हो जाता है। इन सभी बातों का विशद वर्णन समय मिलने पर किसी दूसरी पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जायगा। यहाँ तो केवल आवश्यकतानुसार जन्म-कुंडली गणित देकर अपने फलादेश की सत्यता को प्रकट करने का ध्येय है। इस पुस्तक का लक्ष्य केवल फलादेश कहने का है न कि गणित सिखलाने का। ज्योतिष की वर्सांगपूर्ति के लिये एक नवीन संग्रह को यथाक्रम प्रकाशित करने का सफल प्रयास ईश्वराधीन है।

भाव स्पष्ट या चलित-चक्रम्

जन्म-इष्टकाल में से दिनार्ध घटाने पर 'भावेष्ट बच रहता है। इष्ट-काल बनाकर दशमलग्नसारिणी से जितनी प्रविष्ठा, जिस महीने का जन्म हो उससे अंक लावे और दशमेष्ट में जोड़ देने से जो अंक आवें उनको सारिणी में मिलाकर अंकराशि लावे यही दशम लग्न स्पष्ट है। यह यदि लग्न से ६, १०, ११, ५ पर न मिले तो गलत समझना चाहिये। इस दशम लग्न स्पष्ट को कर्मभाव के नीचे रक्खे। दशम लग्न स्पष्ट की राशियों में ६ जोड़ने से चतुर्थ भाव हो जाता है। उसको

चतुर्थ भाव के नीचे रख दे। चतुर्थ में से लग्न स्पष्ट को घटाने पर जो शेष रहे उसमें ६ का भाग दे जो कि राशि से प्रारम्भ होकर अंश, कला विकला तक निकाला हुआ हो। यही षडंश होता है। जो शेष रहे उसको जन्म लग्न स्पष्ट की विकला में जोड़ दे और तनुभाव के नीचे रख दे। तत्पश्चात् उसमें षडंश जोड़कर सन्धि में रख दे, सन्धि में षडंश जोड़कर द्वितीय भाव में रख दे। इसी प्रकार षडंश को बार-बार आये हुए सन्धि तथा भावों में जोड़कर चतुर्थ भाव मिलेगा।

एक राशि में से षडंश घटाकर जो शेष रहे उसको चतुर्थ भाव में जोड़ने से जो आये वही चतुर्थ भाव की सन्धि होगी। घटा हुआ षडंश क्रमश: चतुर्थ भाव में से १, २, ३, ४, ५ सन्धि भाव घटाकर आये हुए सन्धि भावों में जोड़ चतुर्थ भाव से अगले १, २, ३, ४, ५ सन्धि भावों में रख दे और तनु भाव की राशि में ६ जोड़कर जाया राशि निकाल ले। इस राशि में शेष उपर्युक्त अंश कला-विकला को रखकर जाया-भाव के नीचे रख दे। इसी प्रकार आगे की प्रत्येक राशि में ६ जोड़कर अंश-कला-विकला वैसे ही रख कर अपने नीचे वाली राशि के नीचे रखकर चक्र पूर्ण कर ले।

–: भाव-चक्रम् :–

तनु	सन्धि	धन	सन्धि	सहज	सन्धि	मित्र	सन्धि	पुत्र	सन्धि	अरि	सन्धि
जाया	सन्धि	निधन	सन्धि	शुक्र	सन्धि	कर्म	सन्धि	आय	सन्धि	व्यय	सन्धि

जन्म ग्रह स्पष्ट

ग्रह स्पष्ट—जो भी ग्रह जितने अंश-कला-विकला जिस राशि के समाप्त कर जिस राशि पर जन्म के समय प्रवेश करता हैं सूर्यादि ग्रहों का गत राशियों का स्पष्ट प्रमाण लिखकर अपने जन्म पत्र के ग्रह स्पष्ट का साधन करने में पञ्चाङ्ग का पूर्ण सहारा लेकर निम्नांकित ग्रह स्पष्ट चक्र को पूर्ण कर लेना चाहिये।

ग्रह-स्पष्ट-चक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	ल.	च.	के.
राशि											
अंश											
कला											
विकला											

इष्टकाल का सर्वप्रथम पर और पूर्व को ज्ञात करे, और पर में से पूर्व को घटाकर प्रस्तार ज्ञात करे। (जन्म-काल की वह तिथि जो अष्टमी या पूर्णिमा के पास होती है पर कहलाती है और पूर्व से मतलव जन्म-नक्षत्र से पूर्व या पहले नक्षत्र से होता है।) प्रस्तार अंकों को तीन स्थानों पर रखकर, प्रत्येक ग्रह की चाल जो पञ्चांग में दी हो उससे गुणा करे और गुणा करते समय तीसरे अंक के नीचे के पलों को पलों से गुणा करके ६० से भाग दे, जो शेष रहे उसे छोड़ दे। घड़ियों से तीसरे अंक को गुणा करके और पहले आई हुई घड़ियों को जोड़ दे फिर ६० से भाग देकर जो घड़ियाँ आयें उन्हें दूसरे अंक की घड़ियां में जोड़ दे। जो शेष रहा हो उसे दूसरे अंक से गुणा किए हुए पलों में जोड़कर पलों में ६० का भाग दे। शेष को पहले अंक के गुणन पलों में जोड़ दे और जो घड़ियां हैं उन्हें घड़ियों में जोड़ दे। अन्त की घड़ियों में ६० का भाग देकर ० शून्य राशि मान लब्धि को अंश मान उसके शेष को कला और पल के शेष को विकला मानकर क्रमशः रख दे। इसी रीति से प्रत्येक ग्रह-स्पष्ट बना ले।

एक पक्ष में दो अवधि होती हैं। ग्रहों की ये अवधि जो कि पत्रे में दी होती है। जिस दिन का ग्रह स्पष्ट करना हो उस दिन का बार, इष्ट घड़ी पल एक

स्थान में रखकर अवधि का बार, इष्ट घड़ी पल को देखकर यदि अवधि आगे की हो तो बार, इष्ट घड़ी पल अवधि को घटा देना और पीछे की हो तो बार इष्ट घड़ी पल जोड़ दे। इसका प्रस्तार बना ले और गोमूत्रिका क्रम से ग्रहों को गुणा करके ६० से भाग देता जाय, जब अन्तिम तीसरी पंक्ति के पल मिलें तो उन पलों को ग्रहों में पूर्ववत् घटा बढ़ा दे। वक्र ग्रहों को दूसरे ग्रहों से विपरीत करना चाहिये।

गोमूत्रिका-क्रम

बार	घड़ी	पल	
६			ग्रहाणां गतिः
५			

प्रथम खण्ड—षष्ठ अध्याय

योगनी—विंशोत्तरीमहादशायामन्तरदशाज्ञानाय चक्रमिदम्

अथ मंगलादशायां मंगलादिदशान्तराणि वर्ष १

ग्रह-दशा	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	०	०	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

अथ पिंगलादशायां पिंगलादिदशान्तराणि वर्ष २

ग्रह-दशा	पि.	धा.	भ्रा.	मं.	उ.	सि.	सं.	मं.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	१	२	२	३	४	४	५	०
दिन	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०

अथ धान्यादशायां धन्यादिदशान्तराणि वर्ष ३

ग्रह-दशा	धा.	भ्रा.	म.	उ.	सि	सं.	सं.	पि.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	३	४	५	६	७	८	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भ्रामरीदशायां भ्रामर्यादिदशान्तराणि वर्षं ४

ग्रह-दशा	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.
वर्षं	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	५	६	८	९	१०	१	२	४
दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०

अथ भद्रिकादशायां भद्रिकादिदशान्तराणि वर्षं ५

ग्रह-दशा	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.
वर्षं	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	८	१०	११	१	१	३	५	६
दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	१०

अथ उल्कादशायां मुल्कादिदशान्तराणि वर्षं ६

ग्रह-दशा	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.
वर्षं	१	१	१	०	०	०	०	०
मास	०	२	४	२	४	६	८	१०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सिद्धादशायां सिद्धादिदशान्तराणि वर्षं ७

ग्रह-दशा	सि.	सं.	मं.	पि	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
वर्षं	१	१	०	०	०	०	०	०
मास	४	६	२	४	७	९	११	२
दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०

अथ संकटादशायां संकटादिदशान्तराणि वर्षं ८

ग्रह-दशा	सं	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
वर्षं	१	०	०	०	०	१	१	१
मास	९	२	५	८	१०	१	४	६
दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

नोट—इन उपर्युक्त अन्तरदशाओं के अंकों में जन्म की दशा का संम्वत् और सूर्य स्पष्ट जोड़ देने से प्रत्येक जन्म-पत्र का अन्तर्दशा-चक्र पूरा हो जाता है।

नक्षत्रद्वारा ग्रह-दशाचक्रम्

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	कुज	राहु	जीव	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्षं	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्र	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.फा.
	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.
	उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.

अथ विंशोत्तरीमहादशायामन्तरदशाज्ञानाय चक्रम्

महादशाओं के वर्ष जन्म के

महादशा—	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह.	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष—	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य-दशा वर्ष ६	नक्षत्र	ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह०	शनि	बुध	केतु	शुक्र
	कृ. उ. फा.	वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	उ. षा.	मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
		दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

चन्द्र-दशा वर्ष १०	रो. ह.	वर्ष	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि
	श्रवण		०	०	१	१	१	१	०	१	०
		मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
		दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौम-दशा वर्ष ७	नक्षत्र	ग्रह	मंगल	राहु	बृह०	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र
	मृ. चि. ध.	वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
		मास	४	०	११	०	११	१	२	४	७
		दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

राहु-दशा वर्षं १८	नक्षत्र	ग्रह	राहु	बृह०	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मंगल
	आ. स्वा. श.	वर्षं	२	२	२	२	१	३	०	१	१
		मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
		दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

गुरु-दशा वर्षं १६	नक्षत्र	ग्रह	बृह०	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु
	पुन. वि.	वष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
	पू. भा.	मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
		दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

शनि-दशा वर्षं १९	नक्षत्र	ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह०
	पु. अनु.	वर्षं	३	२	१	३	०	१	१	२	२
	उ. भा.	मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
		दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

बुध-दशा वर्ष १७	नक्षत्र	ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह०	शनि
	अश्ले. ज्ये. रे.	वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
		मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
		दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

केतु-दशा वर्ष ७	नक्षत्र	ग्रह	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह.	शनि	बुध
	म. मू. अश्वि.	वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
		मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
		दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

शुक्र-दशा वर्ष २०	नक्षत्र	ग्रह	शुक्र	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु	बृह	शनि	बुध	केतु
	पू० फा.	वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
	पू. षा.	मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
	भ.	दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अन्तरदशा-चक्रम्

रविदशायां रव्यन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घड़ी	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-दशायां चन्द्रान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	वृ.	श.	वु	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घड़ी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-दशायां भौमान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	वृ.	श.	वृ.	के	शु.	सू.	च
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१८	१७	७	२१	६	१०
घड़ी	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-दशायां राहोरन्तरमध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	वृ	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घड़ी	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-दशायां गुर्वन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	वु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घड़ी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-दशायां शन्यन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घड़ी	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-दशायां बुधान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च	म.	रा.	बृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घड़ी	२९	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-दशायां केतोरन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	केतु	शु.	सू.	च.	म.	रा,	बृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	१७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घड़ी	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-दशायां शुक्रान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	केतु.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१

चन्द्रान्तरदशा-चक्रम्

चन्द्र-दशायां चन्द्रान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घड़ी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-दशायां भौमान्तरमध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२०	१२	५	१०	१७
घड़ी	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-दशायां राहोरन्तरमध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घड़ी	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

चन्द्र-दशायां गुरोरन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-दशायां शनेरन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घड़ी	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-दशायां बुधान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घड़ी	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-दशायां केत्यन्तरमध्ये प्रत्वन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा,	बृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घड़ी	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-दशायां शुक्रान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-दशायां सूर्यान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घड़ी	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम-दशायां भौमाद्यन्तरदशा सु प्रत्यन्तर-चक्रम्

मंगल-दशायां मंगलान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घड़ी	३४	३	३६	१६	४६	३४	३०	२१	१५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

मंगल-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सु.	च.	म.
मास	१	१	१	१	०	५	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घड़ी	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

मंगल-दशायां गुरोरन्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घड़ी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगल-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	३
घड़ी	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

मंगल-दशायां बुधान्तरदशामध्ये प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	०	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घड़ी	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

मंगल-दशायां केतोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२१	२०
घड़ी	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

मंगल-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	२	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घड़ी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

मंगल-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ	श	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घड़ी	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०

मंगल-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२६	३	२८	१२	५	१०
घड़ी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु-दशायां राह्वाद्यन्तरदशा सु प्रत्यन्तर-चक्रम्

राहु-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घड़ी	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-दशायां गुरोन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घड़ी	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घड़ी	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-दशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घड़ी	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-दशायां केतोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
घड़ी	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घड़ी	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१९	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घड़ी	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

राहु-दशायां मंगलान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.	च.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२४	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घड़ी	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरुदशायां गुर्वाद्यन्तरदशासु प्रत्यन्तर-चक्रम्

गुरु-दशायां गुरोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घड़ी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घड़ी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-दशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घड़ी	३६	२६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-दशायां केत्वन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७
घड़ी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	वु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	वु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	२४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घड़ी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	वृ.	श.	वु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	१	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-दशायां मंगलान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	०	०	०	०	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घड़ी	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.
मास	४	२	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घड़ी	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनिदशायां शन्याद्यन्तरदशासु प्रत्यन्तर-चक्रम्

शनि-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घड़ी	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शनि-दशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
घड़ी	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शनिदशायां केतोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घड़ी	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनि-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घड़ी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनि-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१६	२१	१५	२४	१८	१६	२७
घड़ी	६	३०	५७	१८	३६	६	२७	५७	०

शनि-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म	रा.	वृ.	श.	वु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३०	५	२८
घड़ी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-दशायां मंगलान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	वु.	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२६	२३	३	२६	२३	६	१६	३
घड़ी	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शनि-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२९
घड़ी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनि-दशायां गुरोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श	बु.	के	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१६	२४	६	२३	२	१५	१६	२३	१६
झड़ी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध-दशायां बुधाद्यन्तरदशासु प्रत्यन्तर-चक्रम्

बुध-दशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	जी.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घड़ी	४६	३४	३०	२१	१५	३४	३०	२६	१६
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

बुध-दशायां केतोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	२०
घड़ी	४६	३०	५१	४५	४६	३३	३६	३१	३४
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

बुध-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२६	३	१६	११	२४	२६
घड़ी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घड़ी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२६	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५
घड़ी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुध-दशायां मंगलान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घड़ी	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

बुध-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म
मास	४	२	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घड़ी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-दशायां गुरोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	३	४	३	५	४	१	२	१	४
दिन	१८	१९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घड़ी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घड़ी	२५	१६	३१	३०	१७	४५	३१	२१	१२
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतु-दशायां केत्वाद्यन्तरदशासु प्रत्यन्तर-चक्रम्

केतु-दशायां केतोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घड़ी	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
पल	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

केतु-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२९	६	२८	२४
घड़ी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घड़ी	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०

केतु-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घड़ी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-दशायां मंगलान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घड़ी	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
पल	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

केतु-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घड़ी	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु-दशायां गुरोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घड़ी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतु-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	जी.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घड़ी	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
पल	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतु-दशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घड़ी	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
पल	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-दशायां शुक्राद्यन्तरदशासु प्रत्यन्तर-चक्रम्

शुक्र-दशायां शुक्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-दशायां सूर्यान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-दशायां चन्द्रान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-दशायां मंगलान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घड़ी	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-दशायां राहोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-दशायां गुरोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घड़ी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-दशायां शनेरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घड़ी	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-दशायां बुधान्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	जी.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घड़ी	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-दशायां केतोरन्तरे प्रत्यन्तराणि

ग्रह	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घड़ी	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

दीप्तांश प्रकार तथा फल

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः ।
विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत् ॥
उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वपतिमित्रभे ।
मुदितो मित्रभे शांतः समभे दीन उच्यते ॥
शत्रुभे दुःखितोऽतीवविकलः पापसंयुतः ।
खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥

उच्च का ग्रह दीप्त, स्वराशि तथा मित्रराशि का स्वस्थ, मित्रराशि पर प्रमुदित तथा शान्त, सम की राशि पर दीन, शत्रु राशि पर अतिदुखित, पाप ग्रह के साथ होने पर विकल, खल ग्रह के साथ खल और सूर्य के साथ होने पर कोपी होता है ।

फलम्ः—दीप्तः—पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्ये धनवाहने च ।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबन्धुपूज्यतां क्षितीश्वरान्मानमुपैति विद्यात् ॥

दीप्तांश की पूर्ण दशा पर राज्य की नौकरी, उत्साह, शौर्य, धन, वाहन, स्त्री-पुत्र का लाभ, समाज, बन्धुओं और विद्या से प्रतिष्ठा प्राप्त होती हैं एवं नौकरी में उन्नति होती है ।

स्वस्थः —

स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्त्रास्थ्यं नृपाल्लब्धधनादिसौख्यम् ।
विद्यायशःप्रीतिमहत्त्वमाराद्दारार्थभूम्यादिजधर्ममेति ॥

स्वस्थ की दशा में धैर्य, धन, सुख, विद्या, यश, प्रीति, स्त्री, भूमि, धर्मादि लाभ होता है ।

प्रमुदितः—

मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिभूगन्धसुतार्थधैर्यम् ।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं शस्त्रादियानाम्बरभूषणाप्तिम् ॥

प्रमुदित की दशा में भूमि, सुगन्ध, पुत्र, धन, धैर्य, धर्म-कथायें, शस्त्र, सवारी, शाल और गहने मिलते हैं ।

शान्तः—

दशाविपाके सुखधैर्यमेति शान्तस्य भूपुत्रकलत्रयानम् ।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यतां च ॥

शान्त-दशा में सुख, धैर्य, पुत्र, भूमि, सभी सवारी, विद्या, विनोद, धन, धर्म तथा राज्य-सत्कार मिलता है ।

दीनः—

स्थानच्युतिर्बन्धुविरोधिता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके ।
जीवत्यसौ कुत्सितहीनवृत्त्या त्यक्तो जनैः रोगनिपीडितः स्यात् ॥

दीन-दशा में स्थान-परिवर्तन, बन्धुओं से झगड़ा तथा त्याग, रोग तथा निम्न वृत्ति प्राप्त होती है ।

अतिदुखितः—

दुःखार्दितस्यापि दशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम् ।
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूपैर्भयमातनोति ॥

अतिदुखित-दशा में, दुख, विदेशयात्रा, बन्धुवियोग, चोर, अग्नि तथा राजा से भय रहता है ।

विकलः—

वैकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम् ।
मित्रादिकानां मरणं विशेषात्स्त्रीपुत्रयानाम्वरचोरपीडाम् ॥

विकल की दशा में, बेचैनी, मनोविकार, मित्रमरण, स्त्री, पुत्र, सवारी, चोर आदि से पीड़ा होती है।

खलः—

दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम् ।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम् ॥

खल की दशा में कलह, वियोग, पिता का वियोग, शत्रुओं द्वारा धन, धर्म, भूमि का हरण तथा स्वजनों से निन्दा होती है।

कोपीः—

कोपान्वितास्यापि दशाविपाके पापाः समायान्ति बहुप्रकारैः ।
विद्याधनस्त्रीसुतबन्धुनाशं पुत्रादिकृच्छ्रं त्वथ नेत्ररोगम् ॥

कोपी ग्रह की दशामें अनेक पाप लगें, विद्या, धन, बन्धु का नाश, कष्ट तथा सन्तान-कष्ट और नेत्र-रोग होता है।

कारक जानने की विधि

सर्वग्रहेभ्योऽधिकांशादिनात्मकारकस्ततः क्रमेण न्यूनांशाः ।
अमात्य-भ्रातृ-मातृ-पितृ-पुत्र-ज्ञाति-दाराकारकाः ॥

सूर्य से लेकर राहु पर्यन्त सभी ग्रहों में जो ग्रह सबसे अधिक अंश बली हो वही आत्मकारक होता है। फिर अंशादि के न्यूनत्व क्रम से अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पितृ, पुत्र, ज्ञाति और दारा कारक क्रमशः होते हैं।

लग्नादि भावों के कारक—१ अर्को, २ जीवः, ३ कुजः, ४ चंद्रज्ञौ, ५ गुरुः, ६ मंदारौ, ७ शुक्रः, ८ शनिः, ९ सूर्यज्यौ, १० ज्ञार्कज्यमंदा, ११ जीवः, १२ शनिरिति क्रमात्तन्वादिकारकाः ।

लग्न	धन	सहज	चतुर्थ	पंचम	रिपु	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	लाभ	व्यय
सूर्य	गुरु	मंगल	चन्द्र	गुरु	शनि	शुक्र	शनि	रवि	बुध	गुरु	शनि
			बुध		मंगल			गुरु	सूर्य		
									गुरु		
									शनि		

स्थिरकारक—	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	आत्मा	मन	सत्य	वाणी	ज्ञान	मद	दुख
	पिता	माता	भ्राता	मामा	सुख	वीर्य	मृत्यु
	राजा	राजा	सेनापति	कुमार	पुत्र	दारा	भृत्य
					देव-मन्त्री	राक्षस-मन्त्री	

इन उपर्युक्त चर, स्थिर तथाकारक ग्रहों में से जिसका कारक ग्रह बलवान् होता है वही सत्त्व बलवान् और निर्बल कारक होने से निर्बली फल करता है। जैसे रवि आत्मकारक बलवान् होने से आत्मा वली होता है। चन्द्र के निर्बल होने से मन निर्बल होता है और वह सदा दुखी रहता है। सभी कारक इस प्रकार फल वाले हैं। 'विपरीतंशनेः' अर्थात् शनि दुखकारक बलवान् होने से दुख अधिक तथा नौकरादि का नाश करता है, निर्बल होने से दुख कम और नौकरादि का सुख अधिक होता है।

मारक ग्रह—सूर्य से शनि, शनि से मंगल, मंगल से गुरु, गुरु से चन्द्र, चन्द्र से शुक्र, शुक्र से बुध, बुध से चन्द्र निश्चय-पूर्वक मारे जाते हैं अर्थात् सूर्य से शनि का दोष मिटता है या सूर्य शनि से वली है इसी प्रकार सभी जानने चाहिये।

वालाद्यवस्था-साधनरीति

विषम राशि में छह २ अंशों के क्रम से वाल, कुमार. युवा, वृद्ध और मृत ये ५ अवस्थायें होती हैं और सम राशि में इसके विपरोत छह २ अंशों के क्रम से मृत, वृद्ध, युवा, कुमार और बाल (२४′-३०′) तक अवस्था जाननी चाहिए।

शयनाद्यवस्था—जिस नक्षत्र का ग्रह हो उस नक्षत्र की संख्या को ग्रह की संख्या से (सूर्य १ चन्द्र २ मंगल ३) गुणा कर, ग्रहांश से गुणा करे और गुणन-

फल में इष्ट घड़ी, जन्म-नक्षत्र और जन्म-लग्न संख्या मिलाकर १२ का भाग दे तो यदि शेष १ हो तो शयन, २ उपवेशन, ३ नेत्रवाणी, ४ प्रकाश, ५ गमन, ६ आगमन, ७ सभा, ८ गम, ९ भोजन, १० नृत्यलिप्सा, ११ कौतुक तथा १२ निद्रावस्था होती है।

ग्रहों की २७ अवस्थायें और उनकी साधन-रीति

किसी भी ग्रह को अवस्था जानने के लिए यह आवश्यक है कि लग्न की राशि संख्या में ग्रह राशि संख्या जोड़ कर दूना कर दो और उसको ग्रहों की महादशा वर्षों से गुणा करके २७ का भाग दो शेष को क्रमशः वही अवस्था जानो (ग्रहों के वर्ष सू. ६, च. १०, म. ७, बु. १७, शु. २०, शनि १९, राहु १८, और केतु ७)।

नाम अवस्था—१ स्नान, २ वस्त्रधारण, ३ आमोद, ४ पूजारम्भ, ५ प्रार्थना, ६ पूजन, ७ यज्ञारम्भ, ८ ध्यान, ९ उपवेश, १० प्रदक्षिणा, ११ भावना, १२ अतिथि, १३ भोजन, १४ जलसेवन, १५ क्रोध, १६ ताम्बूलचर्वण, १७ सभावसति, १८ मुकुट-धारण, १९ मन्त्र, २० विलम्ब, २१ शयन, २२ मद्यपान, २३ मिष्ठपान, २४ धनागमन, २५ मुकुट-त्याग, २६ सुषुप्ति और २७ रति।

सुनफा, अनफा, दुरुधरा और केमुद्रुम योग जानने की विधि

१. सुनफा सूर्य को छोड़कर चन्द्र से दूसरे घर में कोई भी ग्रह सुनफा योग बनाता है।

२. अनफा—चन्द्र से बारहवें घर में कोई भी ग्रह अनफा योग बनाता है।

३. दुरुधरा—चन्द्र से दूसरे और बारहवें घर में कोई भी ग्रह होने से दुरुधरा योग बनाता है।

४. केमुद्रुम—चन्द्र से दूसरे और बारवें यदि कोई भी ग्रह न हो तो केमुद्रुम योग होता है।

१—चन्द्र से चौथे सूर्य को छोड़कर कोई भी ग्रह हो सुनफा योग होता है।

२—चन्द्र से दशवें कोई भी ग्रह अ नफा योग करता है।

३—चन्द्र से चौथे और दसवें दोनों में ग्रह होने से दुरुधरा योग होता है।

४—चन्द्र से चौथे और दसवें में कोई भी ग्रह न होने से केमुद्रुम योग होता है।

केमद्रुम-भङ्ग योग

सम्पूर्ण ग्रह केन्द्र और त्रिकोण में बैठे हों या चन्द्र को सभी ग्रह देखते हों या केवल बृहस्पति देखता हो या कन्या का चन्द्र शुभ ग्रह से युक्त होने पर गुरु से दृष्ट हो या तुला में मंगल और गुरु, कन्या में सूर्य, मेष में चन्द्र हो और कोई भी ग्रह न देखता हो तो अवश्य ही केमुद्रुम योग को नष्ट करके शुभ फल प्रदान करता है।

फलादेश-नियमावली

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः।
पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः॥

सम्पूर्ण ग्रह त्रिकोण (५–९) के स्वामी होने से शुभ फल करते हैं और जो (३–६–११) के स्वामी हों तो अशुभ फल करते हैं।

न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि।
क्रूराश्चेदशुभं ह्येते प्रबलाश्चोत्तरोत्तराः॥ ८॥

यदि केन्द्रेश शुभ ग्रह हों तो अपना शुभ फल नहीं देते, पाप ग्रह यदि केन्द्रेश हों तो शुभ फल करते हैं। त्रिकोण, केन्द्र तीसरे, छठें, एकादश के स्वामी (अर्थात्) पंचमेश से नवमेश, तृतीयेश से षष्ठेश और षष्ठेश से एकादशेश प्रवल हैं और लग्नेश से चतुर्थेश, चतुर्थेश से सप्तमेश और सप्तमेश से दशमेश प्रवल होता है।

लग्नाद् व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्य्यतः।
स्थानान्तरानुगुण्येन भवतः फलदायकौ॥

लग्न से दूसरे और बारहवें स्थान के स्वामी दूसरे कारक ग्रहों के साथ वैठकर अपने मित्र और शत्रु के स्थान पर भी शुभाशुभ फल करते हैं।

भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो न शुभप्रदः।
स एव शुभसंधाता लग्नाधीशोऽपि चेत् स्वयम्॥

भाग्य से बारहवाँ अर्थात् लग्न से अष्टम में गया भाग्येश शुभ फल नहीं देता और न अष्टमेश ही शुभ फलदायक है। अष्टमेश और लग्नेश अष्टम में शुभ फल करता है जैसे मेष लग्न का मंगल और तुला का शुक्र अष्टम में शुभ फल करता है।

केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः ।
मारकत्वेऽपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थितिः ॥

गुरु और शुक्र का केन्द्रेश होना अत्यन्त अशुभ है यदि ये दोनों मारक स्थान (२–७) पर हों तो तुरन्त अशुभ फल देने में वलवान् हैं ।

बुधस्तदनु चन्द्रोऽपि भवेत्तदनु तद्विधः ।
न रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत् ॥

बुध और शुक्र गुरु की अपेक्षा अष्टम में कुछ कम अशुभ फल करते हैं । सूर्य और चन्द्र को अष्टमेश का दोष नहीं लगता ।

कुजस्य कर्मनेतृत्वे प्रयुक्ता शुभकारिता ।
त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशत्वमात्रतः ॥

दशमेश मंगल शुभ फलदायक केवल कर्क लग्न का होने पर है क्योंकि वह त्रिकोण (५) का भी स्वामी हो जाता है ।

यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ ।

राहु और केतु जिस घर के स्वामी अथवा जिस भाव में बैठे हों उसी के अनुसार अपना फल करते हैं ।

राजयोग-प्रकरण

केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम् ।
इतरैरप्रसक्ताश्चेद्विशेषफलदायकाः ॥

केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी (३–६–११) के स्वामियों से सम्बन्धित न होकर आपस में सम्बन्धित होने से शुभ फल करते हैं ।

केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयम् ।
सम्बन्धमात्राद्बलिनौ भवेतां योगकारकौ ॥

केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी दोषयुक्त होने पर भी सम्बन्ध मात्र से बली होकर योगकारी होते हैं ।

निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः ।
एकत्रान्यतरो वापि वसेच्चेद्योगकारकौ ॥

नवमेश दशम में, दशमेश नवम में या दोनों नवम में या दोनों दशम में अथवा दोनों में से एक भी अपने क्षेत्र या स्थान में हो तो राजयोग करता है ।

त्रिकोणाधिपयोर्मध्ये सम्बन्धो येन केनचित् ।
केन्द्रनाथस्य बलिनो भवेद्यदि सुयोगकृत् ॥

यदि त्रिकोणेश का सम्बन्ध, केन्द्रेश बलवान से हो या दशमेश से हो तो राजयोग होता है ।

दशास्वपि भवेद्योगः प्रायशो योगकारिणोः ।
दशाद्वयोर्मध्यगतस्तदयुक् शुभकारिणाम् ॥

राजयोगकारक, केन्द्रेश और त्रिकोणेश (नवमेश तथा दशमेश) की मूल दशा में ग्रहों के शुभ सम्बन्ध फल न होकर उनकी अन्तर दशा में शुभ फल होते हैं ।

योगकारकसम्बन्धात्पापिनोऽपि ग्रहाः स्वतः ।
तत्तद्भुक्त्यनुसारेण दिशेयुर्योगजं फलम् ॥

पापी ग्रह (३–६–११) के स्वामी होकर योगकारक ग्रह के साथ सम्बन्ध करने से योगकारक ग्रह की अन्तरदशा में शुभ फल देते हैं ।

केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे योगकारकौ ।
अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किं परम् ॥

केन्द्रेश और त्रिकोणेश के आपसी सम्बन्ध से राजयोग बनता है और दूसरे त्रिकोण का उत्तम राजयोग होता है ।

यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥

यदि राहु और केतु केन्द्रस्थ होकर त्रिकोणेश से सम्बन्धित हों और त्रिकोण में बैठकर केन्द्रेश से सम्बन्धित हों तो राजयोग करते हैं ।

राजयोग-भंग

धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि ।
तयोः सम्बन्धमात्रेण न योगं लभते नरः ॥

धम और कर्म के स्वामी, अष्टम, नवम के स्वामी, दशम-एकादश के स्वामी यदि अष्टम में हों तो राजयोग नष्ट होता है। यह योग शनि, मेष और मिथुन लग्न वालों का होता है।

ग्रह-सम्बन्ध—चार प्रकार का होता है।

१—क्षेत्र के सम्बन्ध—एक, दूसरे ग्रह की राशि में ग्रहों के होने से होता है।

२—दृष्टि सम्बन्ध—एक के दूसरे ग्रह को सप्तम दृष्टि से देखने पर होता है।

३—अन्यतर-दृष्टि—एक ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखे, किन्तु दूसरे के न देखने पर होता है।

४—सहावस्थान-सम्बन्ध—एक ही राशि पर दो ग्रहों के बैठने पर मित्र ग्रहों में होता है।

आयु-योग

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत्।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥

लग्न से अष्टम, तथा अष्टम से अष्टम, अर्थात् लग्न से तीसरा स्थान आयु स्थान कहलाता है इन दोनों अर्थात् लग्न से अष्टम और लग्न से तीसरे का द्वादशवाँ स्थान अर्थात् लग्न से दूसरा और सातवां स्थान मारक स्थान कहलाते हैं।

तत्राप्याद्यं व्ययस्थानाद्वितीयं बलवत्तरम् ॥
तदीशितुस्तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः ॥
तेषामसम्भवे साक्षाद्व्ययाधीशदशास्वपि ॥ २ ॥
तेषां दशाविपाकेषु संभवेन्निधनं नृणाम् ॥ १ ॥

सप्तम स्थान से दूसरा स्थान अधिक बली है, इसलिए द्वितीयेश की दशा में मृत्यु कहना चाहिये। या दूसरे स्थान में बैठे हुए पापी ग्रह द्वितीयेश से युक्त हो तो, या द्वितीयेश से सम्बन्धित पापी ग्रहों की अन्तरदशा में या द्वादशेश की दशा में या उससे सम्बन्धित पापी ग्रह की दशा में मरण कहना चाहिये।

अलाभे पुनरेतेषां सम्बधेन तदीशितुः।
क्वचिच्छुभानां च दशास्वष्टमेशदशासु च ॥

व्ययेश से सम्बन्धित पापी ग्रहों की दशा में अथवा शुभ ग्रहों की दशा में और उसमें भी न हो तो अष्टमेश की दशा में ही मृत्यु कहनो चाहिये।

केवलानां च पापानां दशासु निधनं क्वचित्।
कल्पनीयं बुधैर्नृणां मारकाणामदर्शने॥

यदि मारक या मारकेश की दशा में मृत्यु सम्भव न हो तो ३, ६, ११ स्थान के स्वामियों की दशा में मृत्यु कहे।

आयु प्रकार—आयु तीन प्रकार की होती है।

(१) दीर्घायु—६० वर्ष से १०० तक तथा उससे भी बड़ी होती है। यदि चर राशि गत लग्नेश और अष्टमेश या फिर स्थिर और द्विस्वभाव गत हों तो दीर्घायु हो।

(२) मध्यायु—३२ से ६० तक। यदि लग्नेश और अष्टमेश, चर-स्थिर अथवा दोनों द्विस्वभाव राशि पर हों तो मध्यायु होती है।

(३) अल्पायु—जन्म से ३२ वर्ष तक। यदि लग्नेश और अष्टमेश स्थिर राशि के हों तो अल्पायु होती है और लग्न से १२ वें स्थान की दशा में मृत्यु कहे।

आयुःस्थानाधिपः पापैः सहैव यदि संस्थितः।
करोत्यल्पायुषं जातं लग्नेशोऽप्यत्र संस्थितः॥

यदि अष्टमेश और लग्नेश पाप ग्रहों के साथ एक ही स्थान पर हों तो अल्पायु करते हैं।

षष्ठे व्ययेऽपि षष्ठेशो व्ययाधीशौ रिपौ व्यये।
लग्नेऽष्टमे स्थितौ वापि दीर्घमायुः प्रयच्छतः।

षष्ठेश (६–१२), व्ययेश (१२–६) में या ये दोनों लग्न या अष्टम में दीर्घायु करते हैं।

शनिमारकत्व की विशेषता

मारकैः सह सम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः।
अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः॥

जब पापी शनि मारकेशों से सम्बन्ध करता है तो निस्संदेह मारक होता है।

एवं हि शनिना चिन्ता कार्या तर्कैर्विचक्षणैः ।
कर्माधिपेन च तथा चिन्तनं कार्यमायुषः ॥

यदि अष्टमेश पाप ग्रहों के साथ हो या उसके साथ शनि या दशमेश हो तो मारक होता है ।

स्वस्थाने स्वांशके वापि मित्रांशे मित्रमन्दिरे ।
दीर्घायुषं करोत्येव लग्नेशोऽष्टमपः पुनः ॥

यदि लग्नेश और अष्टमेश अपनी अपनी राशि के हों अपने नवाँश के हों या मित्र के नवांश के हों और मित्र की राशि के हों तो दीर्घायु करते हैं ।

लग्नाष्टमपकर्मेशमंदाः केन्द्रत्रिकोणयोः ।
लाभे वा संस्थितास्तद्वद्दिशेयुदीर्घमायुषम् ॥

मदि लग्नेश, अष्टमेश, दशमेश, और शनि ये चारों केन्द्र, त्रिकोण अथवा लाभ में बैठे हों तो दीर्घायु करते हैं । अथवा (३, ६, ११) स्थान पर अथवा उनके स्वामी के साथ या उनसे सम्बन्धित होने पर दीर्घायु करते हैं ।

ग्रहों का शुभ या अशुभ फल देने का समय

न दिशेयुर्ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु ।
शुभाशुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः ॥

सूर्यादि सम्पूर्ण ग्रह अपने मूलदशान्तर में सिंहादि भावों के अनुरूप फल किसी भी मनुष्य को नहीं देते ।

आत्मसम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः ।
तेषामन्तंदशास्वेव दिशन्ति स्वदशाफलम् ॥

जो ग्रह चार प्रकार से सम्बन्धित अथवा सहधर्मी अथवा सम्बन्धी न होने पर भी शुभ और अशुभ स्थान के स्वामी होने से समान है उनकी अन्तर्दशा में ही फल होता है ।

समान धर्म ग्रहों के अभाव में दशा-फल

इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनाम् ।
तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानि सूरिभिः ।

दशानाथ के विरुद्ध फल देने वाले जो शेष ग्रह हैं उनका फल अन्तर्दशा के स्वामियों के फलानुसार कहना चाहिये।

स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम्।
दिशेत्सोऽपि तथा नो चेदसम्बधेन पापकृत्॥

केन्द्र-स्वामी अपनी दशा और त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है। जब कि वे आपस में सम्बन्धित हों विना, सम्बन्ध के अशुभ फल देते हैं। इसी प्रकार त्रिकोणेश के स्वामी की दशा में केन्द्र के स्वामी की अन्तर्दशा में शुभ फल होता है अन्यथा अशुभ फल होता है।

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु।
प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः॥

जो मारकेश के अन्तर में राजयोग आरम्भ हो तो पाप ग्रहों की अन्तर्दशा उस मनुष्य को राज्याधिकार से पूर्ण सुख न देकर केवल प्रशंसा देती है।

तत्सम्बन्धिशुभानां तु तथा पुनरसंयुजाम्।
शुभानां तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम्॥

यदि राजयोगकारक ग्रहों के सम्बन्ध से शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा में राजयोग आरम्भ हो तो राज्य से सुख और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और जो बिना सम्बन्ध के अन्तर्दशा में राजयोग का आरम्भ हो तो फल प्रथम जैसा ही बना रहता है।

शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः।
स्वभुक्तिषु प्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजं फलम्॥

योगकारक शुभ ग्रह से सम्बन्ध करने वाले ग्रह की दशा में योगकारक ग्रह अपनी अन्तर्दशा में भी कभी-कभी राजयोग का फल देते हैं अर्थात् योगकारक ग्रह दशा में योगकारक ग्रह का अन्तर लगते ही शुभ फल होगा।

राहु और केतु के विशेष फल

तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेन केनचित्।
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ॥

राहु केतु ये दोनों ही कभी-कभी योगकारक ग्रह के सम्बन्धी न होने पर भी केवल केन्द्र और त्रिकोण में अन्तर्दशा के अनुसार उत्तम योगकारक होते हैं किंतु शुभ योगकारक ग्रह अन्तर्दशा में उत्तम फल; अन्यथा हीन फल करते हैं।

पाप ग्रह दशाओं में अन्तर्दशा विशेष फल

पापा यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम्।
भुक्तयः पापफलदास्तत्सयुक्शुभभुक्तयः॥
भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम्।
अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम्॥

सम्बन्ध रहित शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा में अशुभ ग्रह दशा के स्वामी अशुभ फल देते हैं। पापी दशानाथ शुभ ग्रह से सम्बन्धित होने पर अन्तर्दशा में शुभ फल करते हैं। पापी दशानाथ से सम्बन्ध रखने वाली योगकारक ग्रहों की अन्तर्दशा बुरा फल देने वाली होती है। अर्थात् पापी ग्रह दशा सब प्रकार से निषिद्ध फलदायक होती है।

अन्तर्दशा के मारक योग के मारकत्व

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु॥

अपने सम्बन्धी मारक ग्रह शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा में नहीं मारते और सम्बन्ध रहित पाप ग्रहों का अन्तर होने पर मारक ग्रह मृत्यु प्रदान करता है।

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम्॥

शनि और शुक्र परस्पर मूल दशा तथा अन्तर्दशा में विशेष रूप से विपरीत शुभाशुभ फल करते हैं। अर्थात् शनि की मूलदशा में शुक्र का अन्तर हो तो भी शनि का ही प्रभाव प्रवल होगा इसी प्रकार शुक्र की मूल दशा में यदि शनि का अन्तर हो तो शुक्र दशा का ही प्रभाव प्रवल रहेगा।

विशेष राजयोगकारक

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योऽन्याश्रयसंस्थितौ।
राजयोग इति प्रोक्तो विख्यातो विजयी भवेत्॥

लग्नेश तथा दशमेश एक दूसरे के घर में बैठे हों तो इस योग में उत्पन्न
ुष्य उन दोनों के दशान्तर में बड़ा ही प्रसिद्ध तथा सर्वत्र विजय पाने वाला
ता है।

धर्मकर्माधिनेतावन्योऽन्याश्रयसंस्थितौ।
राजयोग इति प्रोक्तो विख्यातो विजयी भवेत्॥

धर्म और कर्म के स्वामी एक दूसरे के घर में बैठकर राजयोग करते हैं। जिस ुष्य के यह राजयोग जन्मकाल में होगा वह निश्चयपूर्वक बड़ा ही प्रसिद्ध तथा जी क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

ग्रहों के भाव

ग्रहों के भाव ६ प्रकार के यथा नाम तथा गुण होते हैं।

१—जो ग्रह पञ्चम स्थान में राहु, केतु, सूर्य, मंगल और शनि में से किसी ; से भी युक्त हो वह लज्जित होता है।

२—प्रत्येक ग्रह अपने उच्च तथा मूल त्रिकोण में गर्वित होता है।

३—शत्रु राशि पर या शत्रु ग्रह से दृष्ट या युक्त होने पर वह ग्रह क्षुधित हो ता है।

४—जलचर राशि पर कोई भी ग्रह अपने शत्रु से दृष्ट होने पर शुभ ग्रह दृष्ट न होने पर तृषित होता है।

५ - मित्र के घर में मित्र से दृष्ट युक्त या गुरु से दृष्ट युक्त होने पर मुदित ा है।

६—सूर्य के साथ होने पर ग्रह अस्त और पापग्रहों से दृष्ट होने पर क्षोभित जाता है।

जो ग्रह अपने लज्जित भाव में होता है उसकी दशा में मनुष्य की बुद्धि ण हो जाती है। स्त्री-वियोग तथा पुत्र को रोग, व्यर्थ की यात्रा या देशाटन ना पड़ता है। इष्ट-मित्रों से कलह, अशुभ कार्यों में रुचि बढ़ती है तथा शुभ र्यों में इच्छा नहीं रहती। दशम स्थानगत लज्जित ग्रह मनुष्य को दरिद्री और ाम स्थान-गत ग्रह पुत्र-हीन बनाता है।

गर्वित ग्रह का दशाफल मनुष्य को गर्वित बनाता है। धन और धान्य से पूर्ण करने के लिए मनुष्य को व्यापार, नौकरी, कलापूर्ण कार्यों में सफलता प्रदान करता है। व्यवहार में कुशलता, नवीन गृह की प्राप्ति, वाटिकादि का सुख, राज्य से पारितोषिकादि की प्राप्ति कराकर मनुष्य को पूर्ण रूप से सुखी बनाता है। गर्वित ग्रह यथा स्थान सुख की प्राप्ति प्रदान करते हैं।

क्षुधित ग्रह का दशाफल मनुष्य को लोभ-मोह-शोक, अज्ञानादि प्रदान कर दुष्ट कर्म में लगाता है। मानसिक पीड़ा के साथ-साथ स्वजन समुदाय से सन्ताप व्यथा, तथा विरोध दिलाकर प्रत्येक कार्य में अड़चन उत्पन्न करता है। शत्रुओं द्वारा धन का ह्रास होता है। शरीर में विकलता होने के कारण स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। दशम, द्वितीय स्थान की क्षुधित दशा मनुष्य को विशेष रूप से धन-हीन कर सकती है।

तृषित ग्रह दशाफल मनुष्य को दुष्ट संगति में लगाकर मानहानि प्रदान करता है। शरीर में रोग, भय, विवाद उत्पन्न कर, ध्येय से च्युत करता है। धन की हानि होती है। इच्छित वस्तु का ह्रास होता है। दशमस्थ तृषित ग्रह का दशाफल-विशेषरूप से राज्य-विवाद कराता है।

मुदित ग्रह का दशाफल मनुष्य को प्रत्येक प्रकार से प्रसन्न रखता है। स्त्री-पुत्रादि का सुख मिलता है। मकान, वस्त्र, धन, धान्य, भूमि, बुद्धिविकास कर शत्रु विनाश द्वारा मनुष्य को सर्वसाधारण में सम्मान प्रदान करवाता है। राज्यपारि-तोषिक दशमस्थ होने पर दिलवाता है।

क्षोभित ग्रह का दशाफल मनुष्य को सदा क्षोभित ही रखता है। बुद्धि, धन, मान, आयादि का ह्रास करता है। शरीर में रोग, मन में अशान्ति, चोर, अग्नि, सर्प, विषादिका भय प्रदान करता है। दशमस्थ होने पर मनुष्य को राजा का कोप भाजन बनना पड़ता है। मुकदमें में हार होती है। दण्ड मिलता है। चित्त में अशान्ति तथा ग्लानि उत्पन्न होती है।

मुदित और गर्वित ग्रह की दशा अपने स्थान फल की पुष्टि तथा वृद्धि करती है लज्जित, क्षुधित, क्षोभित और तृषित दशाओं के फल स्थानान्तर से हानि तथा ह्रास को प्रदान कर मनुष्य को विनाश की ओर ले जाते हैं।

द्वादश लग्न फल

जिसका जन्म हो मेष लग्नका, क्रोधयुक्त हो महाव्यसन।
नियत मान धनवान् सुखी हो जिसका होवे वृष लगन॥
मिथुन लग्न का चंचल बालक नहीं किसी से शर्माता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि बिना भाग्य नहीं आता है॥
कर्क लग्न का रहे कृशांगु होय उदर में बीमारी।
सिंह लग्न का महा पराक्रम करे नाग पर असवारी॥
कन्या लग्न का पुरुष नपुंसक रोयें पिता औ महतारी।
तुला लग्न का तस्कर कहिये खेले जुआ हारे नारी॥
वृश्चिक लग्न का दुष्ट पदारथ आप अकेला खाता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि बिना भाग्य नहीं आता है॥
नियत मान धनवान् सुखी हो जिसका होवे धन्न लगन।
मकर लग्न का मन्दबुद्धि हो, रहे हृदय में सदा मगन॥
कुम्भ लग्न का पूत फिरे अवधूत करे दिन रात भजन।
मीन लग्न का मृत्यु लोक में जीना महा कठिन॥

लग्नगत द्वादशराशि-फल

मेष—जिन मनुष्यों का जन्म मेष राशि का हो तो वे स्वतन्त्रविचार, साहसी, मझला कद, तीव्रदृष्टि, लाल रंग, लम्बा चेहरा, हल्के काले छोटे बाल, पुष्टदन्त, बड़ी आँखें, हठी, स्पष्टवक्ता, कला, काव्य विद्या प्रेमी, बाल की खाल निकालने वाले होते हैं। यदि चन्द्र और शनि मेष में हो तो, एकान्त प्रेमी, वहमी, कम हंसने वाला, यात्राप्रिय, क्रोधी, रक्तविकारी, दंतरोगी होता है। रवि, मंगल के साथ होने पर मुखाकृति पर लाल चिह्न होता है। शनि, रवि, मंगल के योग से मनुष्य के नेत्र बिल्ली जैसे होते हैं। मेष का रवि-शनि किसी भी स्थान पर शब्द को भारी कर देता है।

बृष—वृष लग्न वाले मनुष्य आत्मविश्वासी, सलीकेदार, गर्वयुक्त, हठी, प्रेमी, लालसा युक्त, गंदमी रंग, छोटे, मोटे, सुन्दराकृति, अधिक मानसिक तथा शारीरिक शक्ति वाले, संगीत और सौन्दर्य के प्रेमी, शासनशक्ति रखने वाले,

सन्तान दुख से दुखी रहते हैं। यदि गुरु-चन्द्र-शुक्र इस राशि पर हों तो स्त्री या पुरुष दोनों ही बड़े मनमोहक तथा तेजस्वी प्रतीत होते हैं। ५० वर्ष पश्चात् उनके अंग शिथिल हो जाते हैं।

मिथुन—विद्याव्यसनी, तुरन्त स्पष्टवक्ता, अस्थिरप्रकृति, रंग गंदमी, चेहरा भरा, साहित्यकार, अपनी व्यक्तिगत दुर्बलता को जानने वाला, धोखे में आ जाने वाला, परिश्रम रत, परलिंगतत्व से सावधान होता है। चन्द्र युक्त होने से मंजुल गान, शास्त्री, श्लोक दोहे बोलने वाला तथा पाप युक्त तथा दृष्ट होने पर मनुष्य घातक घाव से पीड़ित होता है।

कर्क—संगीतप्रिय, कारीगर, पतला, चलचित्त, कोमल वदन, रंग गोरा, उन्नत वक्ष, मध्यम कद, परिश्रमी, समझदार, स्त्री-बच्चों का प्रेमी, कंजूस, विफल प्रेमी, न्यायप्रिय, आत्मविश्वासी, अधिक मानसिक शक्ति वाला, व्याख्यान-कर्ता, कामी होता है। यदि कर्क का चन्द्र हो तो, प्रवासी, तैराक, बाग बगीचे, गायन, वाद्यप्रिय होता है। परस्त्रीरत, सांवलारंग, मध्यम कद, व्यसनी, शुक्र होने से वस्त्र का शौकीन, गुरु होने से निर्व्यसनी, शनि, मंगल, राहु होने से मनुष्य ओछा होता है। (४, ६) में कर्क राशि उपर्युक्त ग्रहों से युक्त होने से दरिद्र तथा उदर रोगी होता है। कर्क लग्नगत चन्द्र जलभय देने वाला है उसी से मृत्यु भी हो सकती है।

सिंह—उच्चाभिलाषी, प्रसन्न, कला-संगीतप्रिय, मध्यम कद, गठा वदन, भरा चेहरा, गम्भीर स्वभाव, व्यंग्यात्मक बातें, सच्चे प्रेम में विश्वास रखने वाला, दार्शनिक, सहनशील, क्षमावान्, धार्मिक, विद्याप्रेमी, परोपकारी, चन्द्र युक्त होने पर श्याम रंग, शब्द भारी, प्राकृतिक, ऐतिहासिक वन, पर्वत आदि की सैर करने वाला, शासन शक्ति रखने वाला, गुरु, शुक्र और बुध युक्त होने पर दर्शनीय, सूर्य युक्त होने पर श्याम और मंगल युक्त होने पर रक्तिम, क्रूर पुलिस सैनिक होता है। शनि, राहु और केतु युक्त होने पर रोगी होता है और प्रभुत्व को प्राप्त नहीं होता।

कन्या—कला, विद्या, संगीत, कारीगरी चित्रकारी में उत्साही, मादक, निरुत्साही मध्यम कद, निर्बल छाती, सीधीनाक, बुद्धिमान्, जल्दबाज, दुअर्थी बात

करने वाले, दूरदर्शी, प्रभावी और वैज्ञानिक होते हैं। यदि चन्द्र युक्त हो तो मनुष्य लजीला, हँसमुख, आलसी, मस्त, मधुरस्वर, स्त्रियों जैसे कपड़े पहनने वाला मिलनसार होता है।

तुला—उच्च विचार, शक्तिशाली, द्वेषी, हाजिर जवाब, रंग साफ, सुन्दर चेहरा, मध्यम कद, सदा युवक, सुन्दर आँखें, चौड़ी छाती, मोहक, न्यायी, शान्तिप्रिय, दूरदर्शी, कंजूस, उन्नति के लिये बहुत सोचने वाले किन्तु पूर्ण कार्य न करने वाले, दुअर्थी बातें करने वाला, बहुइच्छा वाला, वेपरवाह, धार्मिक, राजनैतिक, आदि बातों में मनचाही करने वाला, द्रवितहृदय, क्षणिक विचार, अस्थिर, मतलब से पूर्ण, रवि युक्त होने पर रंग श्याम, चन्द्र, शुक्र और गुरु होने पर रंग गौर होता है।

वृश्चिक—बिना विचारे स्पष्ट वक्ता, तान्त्रिक, दर्शनीय, सुन्दर, बड़ी आँखें, पुष्ट, लम्बा, बड़ा माथा, घुंघराले बाल, उदार, विचारों का पक्का, कलाकार, गर्म स्वभाव, व्याख्यानदाता, अर्श रोगी होता है। यदि चन्द्रमा युक्त हो तो गौर वर्ण, बड़े दाँत, जबड़ा मोटा, शरीर का निचला भाग ऊपर के भाग की अपेक्षा छोटा होता है। छोटी बातें करने वाला तथा दिल में प्रतिशोध की भावना रखता है।

धनु—दार्शनिक, दयावान्, शीघ्र कार्य करने वाला, सुन्दर गोल आँखें, समान दाँत, रूढिवाद पर विश्वास रखने वाला, दूरदर्शी, रूक्ष, आस्तिक, सीधे-सादे, बनावट से दूर, स्वादिष्ट भोजन तथा स्त्रियों से बचते हैं। लोग इनकी प्रकृति के विपरीत समझते हैं इनके फेफड़े दुर्बल तथा गठिया का रोग हो जाता है। यदि चन्द्र या शुक्र युक्त हो तो मनुष्य तेजस्वी, गौर वर्ण, सुडौल होता है। यदि मंगल युक्त हो तो पहलवान, अच्छा सैनिक, उष्ण प्रकृति, अर्श, रक्त, अपघात रोग रहता है। बुध या गुरु होने पर अत्यन्त सुन्दर और शनि राहु, आदि होने पर रोगी होता है।

मकर—आत्मविश्वासी, दयावान्, उदास, दानी, भेद गुप्त रखने वाला, दुबला-पतला, भूरा रंग, बड़ा सिर, चौड़ा चेहरा, उच्चाभिलाषी, खर्चीला, चंचलप्रकृति, होता है। चन्द्र युक्त होने पर जिद्दी, अविचारी, हास्यास्पद,

वायुविकारी, सगुण उपासक, मकर का मंगल हो तो वलिष्ठ, अर्शरोगी, शरीर बड़ा दिल छोटा होता है। शनि युक्त होने पर मनुष्य द्वेषी होता है।

कुम्भ—दार्शनिक, शिक्षक, लेखक, उदार, दयालु, कुशाग्रवुद्धि, लम्वे-पतले और सुन्दर, होठ, कपोल सुन्दर, चौड़े, सवका मित्र, शान्त, लज्जायुक्त, भविष्य-वक्ता, स्त्रीरत। यदि चन्द्र युक्त हो तो मनुष्य काल्पनिक, गंभीर, तात्विक, होता है। शनि युक्त होने पर पुष्ट अंग, वायु रोगी होता है। चतुर्थ शनि छाती निर्वल करता है।

मीन—धार्मिक, भक्त, हठी, शक्तिमान्, गेहुँआँ रंग, आँखें गोल, मोटे छोटे, रूढिवादी, वहमी, चंचलचित्त, मितव्ययी, न्यायी, कानून पसन्द, पराश्रय, ऐतिहासिक, पौराणिक गाथा युक्त होते हैं चन्द्रयुक्त होने पर कामी, गौरवर्ण, जननेन्द्रिय वारीक, तुरन्त फैसला करने वाले, हाकिम होते हैं।

राशिलग्न से गृह तथा उसके समीपवर्ती स्थान का ज्ञान

जिस मनुष्य का जन्म लग्न मेष, कर्क, तुला तथा मकर राशि का हो तो उस मनुष्य का घर, गली, कूँचे, सड़क तथा वाजार के कोने में होता है।

मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन लग्न वालों का मकान, गली, कूँचे, सड़क के क्रॉस या वाजार के अन्तिम भाग में होता हैं।

वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ लग्न वालों का मकान, गली, कूँचे, सड़क तथा वाजार के मध्य में होता है।

मेष और कर्क लग्न में गली, कूँचे, सड़क आदि का पहला मकान होगा। तुला और मकर लग्न से मकान, गली, सड़क आदि के अन्त में होता है।

सिंह लग्न वाले का मकान गली, सड़क आदि के मध्य में होता है। उसके दो दर्वाजे होते हैं। किसी भी भाव के स्वामी वृहस्पति से यदि दूसरे शनि हो तो उस घर वाला मूक होता है। शुभ ग्रह से दृष्ट होने पर भी जीभ लड़खड़ाती है।

मेष लग्न—जिस मनुष्य का जन्म लग्न मेष हो, उसके घर के समीप कोई-कोई कृषक या पशु पालने वाला डेरी, या कोई अन्न, जवाहरात, मोती का व्यापारी, जौहरी अवश्य ही रहता है और जलाशय उसके घर से काफी दूरी पर होगा।

वृष लग्न – जिसका जन्म वृष लग्न का हो उस मनुष्य के पड़ौस में कोई विधवा स्त्री, सुनार, चाँदी, सोने का व्यापारी, या पशु पक्षियों का व्यापारी अवश्य ही रहता होगा। जलाशय दूर हो।

मिथुन लग्न - जिसका जन्म लग्न मिथुन हो, उसके मकान के समीप, कुँआ, नल, कोई वृक्ष, बाग, फुलवाड़ी आदि में से कुछ न कुछ अवश्य होता है। वह न्यायी और सुन्दर भोजन करने वाला होता है।

कर्क लग्न—कर्क लग्न वाले मनुष्य के घर में नल, कुँआ आदि होता हो। उसका घर जंगल के समीप या घर बाग में या घर में ही फुलवाड़ी या पेड़-पौधे लगे होते हैं। ऐसा मनुष्य न्यायी या परोपकारी होता है।

सिंह लग्न—सिंह लग्न वाले मनुष्य परोपकारी, पराक्रमी होते हैं उनके घर के समीप गोशाला, डेरी, बकरी आदि पाली जाती हों या सुनार या जौहरी, या सोना, चाँदी बेचने वाले की दूकान हो या वह स्वयं ही वहाँ रहता हो।

कन्या लग्न--कन्या लग्न वाले मनुष्य के पड़ौस में कोई दूकान, नल, कुँआ कोई जलाशय आदि होते हैं। पशु पालने वाले या डेरी का काम स्वयं या पड़ौसी करने वाले होते हैं।

तुला लग्न—ऐसा मनुष्य कम धनी, बात को बदलने वाला होता है। उसके घर में कुँआ, नल आदि होते हैं। पड़ौस में जौहरी या धन-धान्य या मिट्टी के सामान बेचने वाले की दूकान होती है।

वृश्चिक लग्न—धन-धान्य का कार्य करने वाला होता है। उसके पड़ौस में कोई पण्डित, पशु-पालक, मास्टर, या धनी, प्रसिद्ध मनुष्य रहता है।

धनु लग्न—स्वयं धार्मिक, धनी, यशस्वी, मास्टर या कथावाचक होता है। उसके समीप, कोई वकील, कृषक, या कोई नौकर पेशा रहता है। कुँआ, नल, जलाशय समीप होता है।

मकर लग्न—ऐसा आदमी प्रपंची और कामी होता है। उसके घर के समीप कुँआ, नल, बाग, वृक्ष, फुलवाड़ी आदि या करीब में वकील, मुख्तार, मुन्शी, पटवारी रहता है।

कुम्भ लग्न—ऐसे मनुष्य के घर में कुँआ, नल, जलाशय, बाग, फुलवाड़ी, पुष्प आदि के वृक्ष पौधे होते हैं। उसके घर के समीप स्कूल, मन्दिर, कृषिभूमि, खंडहर, या कोई कुँआ, नल या जलाशय होता है।

मीन लग्न—वाले मन्दबुद्धि होते हैं। उनका जन्म मन्दिर, सभा, स्कूल, शफाखाना या मांसाहारियों के समीप का होता है। कुँआ या नल उनके घर में अथवा घर के बाहर समीप में हो होता है। ये लोग पशु-पालक भी होते हैं।

ग्रहों के गुण तथा स्वभाव

सूर्य—ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को लम्बा, पीले नेत्र, गहरे भूरे रंग का तथा ताम्र सिर का पुरुष माना है। यह पूर्व दिशा का स्वामी है। इसका स्वभाव तीव्र तथा क्रूर है। यह पिता, आत्मबल, चैतन्यता, साहस, कीर्ति, मानसिक शक्ति, मन का बोधक है। राज-कर्मचारी, पवित्र स्थान, देवस्थल, मैदान, वन, पर्वत, बड़े नगर में वास होता है। शरीर में सिर, हड्डियाँ, रक्त, नेत्र, दिमाग, गला, तिल्ली, नाक, कान, कण्ठ सम्बन्धी रोग उत्पन्न करता है। जलचर राशि पर होने से तेजबुखार, पेचिश, क्षय आदि रोग करता है। गेहूँ, सोना, अग्नि, विष, औषधि, डाक्टर-वैद्य, राजा, राजनीति, चमड़ा, खाल, ऊन, ईंधन, शस्त्र, रेशमी वस्त्र, चरागाह, कड़-वापन आदि इसके अधिकार में रहते हैं।

चन्द्र—यह एक स्त्री ग्रह हैं जिसका रंग श्वेत और अधिकार, मन, बुद्धि, विचार, माता, सौन्दर्य, चैतन्यता, रक्तस्राव, जल पदार्थ, झील, सागर, वर्षा, वनस्पति, कपड़े बुनने का उद्योग, रसायन पदार्थ, मदिरा, दूध, दही, गन्ना, चाँदी, चावल, जौ, युवती, किसान, यश, कीर्ति आदि पर है। इसकी वायु कफ प्रकृति ओर मधुर शब्द हैं। यह नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी है। इसके अशुभ होने पर नजला जुकाम, पीलिया, पीनस, मूर्छा, मन्दाग्नि, दमा, लकवा, गर्भ, त्वचा, फेफड़े, हव्वा-डव्वा, गुह्यांगों में रोग उत्पन्न होते हैं। इसका स्वभाव कोमल है।

मंगल -यह सेनापति है। इसका रंग लाल, प्रकृति पित्त, स्वभाव क्रूर तथा तीव्र है। भ्राता, अग्नि, दृढ़ता, स्वतन्त्रता, तर्क शास्त्र, रसोई, इंजिन, चूल्हा, खान, खनिज पदार्थ, धान, सोना, मूँगा, शस्त्र, सेना, पुलिस, गोला, बारूद, भूमि, जायदाद, हत्या, षड्यन्त्र, अस्पताल, धाव, टीन, नेता, यौवन, ताँबा, तम्बाखू, तेजबुखार, गठिया रोग, गर्भपात, सुजाक, प्रसवपीड़ा पर इसका अधिकार है।

बुध—यह बच्चा है। यह दुबला-पतला, हरे रंग का, व्यापार, मन्दिर, स्कूल, कालेज, बाग, हरे चने, पन्ना, सीसा, तिलहन, खाद्य तेल, घी, मशीन,

क्लर्क, पानी के बाँध, कविता, बुद्धि, विद्या, ग्रन्थ-लेखक, व्याख्यान, सिक्का, मिश्रधातु, मामा-नाना, पैतृक सम्पत्ति, महल, अस्तबल, घोड़े, डाक्टर आदि का अधिकारी है। शरीर में दिमाग, छाती, जिह्वा, कण्ठ, गर्दन, चमड़ा, खाल, नाड़ी आदि का स्वामी है। इसके अशुभ होने पर मनुष्य बहरा, पागल, स्मरण शक्ति क्षीण, सर दर्द, चमड़ी सम्बन्धी रोग होते हैं। यह उत्तर दिशा का स्वामी है।

गुरु—यह सुरगुरु ज्ञान का आगार है। इसका रंग श्वेत-पीत, कद लम्बा, वायु कफ प्रकृति, शान्त स्वभाव, ईशान दिशा का स्वामी, लक्ष्मी भंडार, बैंक, विद्वत्ता, चाँदी, सोना, पुखराज, पुत्र, यश, कलत्र, प्रसिद्धि, घर के पिता-पितामह, विद्या-बुद्धि, ज्ञान, मंत्री, सलाहकार, धार्मिक पुस्तकों, हवन सामग्री, टीन, इलायची आदि पर अधिकार रखता है। शरीर में चरबी, पेट, अंतड़ियाँ, जिगर में रोग, जलोदर, पेट फूलना, व्रण, जहरवात, स्वेतप्रदर, मन्दाग्नि, मानसिक रोग, अशुभ होने पर देता है।

शुक्र—यह एक स्त्री ग्रह है। श्वेत रंग, सुन्दर स्वरूप, कफ प्रकृति होती है। इसका अधिकार पति-पत्नी, निद्रास्थान, नाटच तथा नृत्य गृह, काम वासना, सवारी, गन्ना परिश्रम, उद्योग, व्यापार रासायनिक पदार्थ, औषधि, ऊन, रेशम, रूई, यात्रा, इत्र, दासी, संगीत आदि पर है। शरीर में लिंग, पुट्ठे, वीर्य, जाँघ, मूत्र और बालों पर अधिकार होता है। इसके द्वारा, गुप्त रोग, कामवासना, के रोग, पुट्ठों के दर्द, नेत्र रोग, अन्ध मय रोग, शुक्रपात, श्वेतप्रदरादि के रोग होते हैं। यह प्रेम का प्रतीक समझा जाता है।

शनि—यह दास है। इसका रंग काला स्वभाव तीव्र, गति मन्द, प्रकृति वात की है। दुर्जन और दीर्घ, कफात्मक है। इसका अधिकार, वायु, पर्वत, जंगल, गन्दगीस्थल, लोहा, श्मशान, जेल, वृद्धव्यक्ति, कालाचना, उर्द, राई, जौ, पटसन, और समस्त तेलों पर है। शरीर में यह मूत्राशय, दाँत, पुट्ठे, गुदा, कलाई, पाँव आदि पर होता है। पुट्ठों, दांतों, जोड़ों का दर्द, गठिया, क्षय, मृगी, मूर्छा, फोड़ा आदि का दर्द होता है। यह पश्चिम दिशा का स्वामी है और बलवान् ग्रह है।

राहु—यह लम्बा, वायु कफात्मक प्रकृतिवाला, काले रंग का दीर्घसूत्री, तथा नीच कर्मरत है। इसके अधिकार में बूढ़ी तथा दुश्चरित्र स्त्रियाँ, नाना, नानी,

विदेशयात्रा, नीच को संगति तथा षड्यन्त्र, जड़वाद आदि पर है। शरीर में यह चमड़ी, रक्त, मज्जा तथा गले मांस का अधिकारी है। इसमें हैजा, चेचक, कोढ़, प्लेग, मलेरिया, चौथिया, तिजारी, इकतरा आदि बुखार आते हैं, यह उत्तर-पश्चिम दिशा का स्वामी है।

केतु--यह कद में लम्बा, वायु कफात्मक प्रकृति, धूम्र वर्ण है। इसका अधिकार वृद्ध पितामह, चेचक, हैजा, अग्नि, सुरंग, खान, खंडहर, पुराने मकान, किले आदि पर है, इसके रोग राहु के समान ही हैं।

सूर्यादि ग्रहों के लग्नादि फल

सूर्य—जिस मनुष्य का सूर्य उच्च या स्वगृही लग्न में हो वह मनुष्य उदार, आत्मशक्ति वाला, स्वस्थ, पुष्ट, उच्चाभिलाषी, प्रसन्न, आशावादी, लोकप्रिय, शुद्धाचरण, सुशील तथा प्रतापी होता है। उसका रंग लाल, ऊँचे अवयव, देशाटनप्रिय, पित्तरोगी, ऐश्वर्ययुक्त सुन्दर होता है। यदि नीच राशि का हो तो नेत्र-कष्ट, बाल्यरोगी, नीच की सेवा, अभागी, घर से दुःखी, सन्तान कष्ट, विकलहृदय होता है। शत्रु-राशि में होने से बीमार, कर्कगत होने से ज्ञानी, नेत्र परवाल, कन्याराशि गत होने से कृतघ्न, बहुकन्या वाला, स्त्री और क्षेत्र से रहित होता है। मीनगत सूर्य होने पर पुरुष कामी होता है। शुभ दृष्ट युक्त होने पर फल शुभ और अशुभ से दृष्ट युक्त होने पर फल अशुभ हो जाता है। उसे स्त्री सुख कम होता है।

चन्द्र—जिस मनुष्य का चन्द्र उच्च या स्वगृही लग्न में हो तो वह मनुष्य दुबला, सुन्दर, पुष्ट, धनी, सुखी, विद्वान् पूर्ण चन्द्रमा के होने पर होता है। कलापूर्ण कम खाने वाला. भ्रमणशील, वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, गुरु से युक्त दृष्ट होने पर तीव्र बुद्धि होता है। पाप या क्रूर ग्रह से दृष्ट-युक्त तथा राशि का होने पर, मूर्ख, दरिद्री, जल से भयभीत, बहरा, नीच का होने पर जल में डूबकर मृत्यु, क्षीण चन्द्र होने पर कुरूप होता है। स्त्री कुण्डली में भौमयुक्त या दृष्ट होने पर मासिक धर्म में रुकावट करता है। राहु से युक्त होने पर दौरे पड़ते हैं।

मंगल—यदि मंगल उच्च स्वगृही मित्र क्षेत्री शुभ युक्त अथवा दृष्ट अथवा किसी भी राशि का लग्न में बैठा हो तो उस मनुष्य को अर्श, रक्तविकार, ब्लड-

प्रेशर, चेचक के दाग आदि रोग होते हैं। सिर नेत्र में रोग होता है। ये लोग साहसी, पुष्ट, पराक्रमी, पित्तप्रकृति, स्वतन्त्रताप्रिय, मन्त्रजापी, धार्मिकप्रिय, लड़ाई से डरने वाले, किन्तु सिर पड़े पर डटकर मुकाबला करने वाले, पुलिस से भयभीत, स्त्री रहित, पुत्रादि से सन्तप्त, कार्य परिणाम में विघ्न का सामना करने वाले होते हैं। सूर्य और चन्द्र युक्त होने पर शरीर में दाग, शनि से युक्त होने पर क्रोधी, चिड़चिड़ा, वायु शूल रोगी, पेट आँतों का रोगी, दुर्बल, नीच सेवा में रत तथा सुख से रहित होता है।

बुध-- यदि बुध उच्च, स्वगृही, मित्र की राशि का, शुभ युक्त दृष्ट हो तो मनुष्य सुन्दर, निर्मलबुद्धि, प्रसिद्ध विद्वान्, सत्यवक्ता, लम्बा पतला शरीर, हँस-मुख और भ्रमणशील होता है; दर्शनशास्त्र का ज्ञाता, अध्यापक, वैद्य, डाक्टर आदि का कर्म करता है। चित्रकारी शिल्पकारी आदि में भी निपुण होता है। शुक्र युक्त होने पर संगीतप्रिय राजमान्य होता है। राहु केतु से युक्त या दृष्ट होने पर मनुष्य नाड़ी रोग से पीड़ित तथा कुरूप होता है।

गुरु—जिस मनुष्य के लग्न में उच्च या स्वगृही अथवा मित्रक्षेत्री गुरु शुभ युक्त या दृष्ट हो तो वह मनुष्य, देखने में सुन्दर, तीव्रबुद्धि, निर्व्यसनी, स्वच्छ नेत्र और दाँतवाला, विद्याप्रेमी, उच्च तथा प्रौढ़ विचार, आकर्षित, प्रसन्न, आशावादी, व्यवहार कुशल, वकील, अध्यापक, अध्यात्मवादी और प्रभावशाली नेता तक होते हैं। यदि पंचम भाव दूषित न हो तो पुत्रों वाला, राहु से युक्त वा दृष्ट होने से वात रोगी, रक्तविकार, नीच या शत्रु राशि का होने पर अथवा पाप और क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर नीचविचार, अल्पवीर्य, स्त्रीरहित और अनेक रोग उत्पन्न करता है। धन, मीन या लग्न में से किसी एक स्थान की हानि अवश्य ही करता है। शनि की राशि का होने पर उस राशि की वृद्धि करता है।

शुक्र—यदि शुक्र उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभयुक्त शुभ दृष्ट हो तो मनुष्य कोमलांग, उदार, पंडित, यश दान करने वाला, आकर्षक स्वभाव, सुन्दर, विद्या-प्रेमी, संगीतप्रिय, प्रियवादी, शास्त्राभ्यासी, विनम्र, प्रसन्न, व्यवहारकुशल, सुगन्धित पुष्प, इत्रादि का सेवन करने वाला होता है। मकर या कुम्भ राशि का होने पर, परस्त्रीरत, ऐश्वर्यभोक्ता, आपसी प्रेम को निभाने वाला, तथा स्त्रियों को

प्यारा तथा धनवान् होता है । यदि शुक्र नीच, शत्रु राशि का, पाप और क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य का गार्हस्थ्य-जीवन दुखमय व्यतीत होता है ।

शनि—यदि शनि उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री हो या शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य परोपकारी, अल्पगति, अहंकारी, छोटे केश, दुर्बलदेह होता है । रंग अकेले लग्न में होने पर काला करता है । ऐसे व्यक्ति पुष्ट, साहसी, आत्मबली होते हैं । उदासीन रहने के कारण मन्दगति से धीरे-धीरे कार्य करने वाले, आलसी तथा निश्चिन्त से होते हैं । नीच या शत्रु राशि का पाप या क्रूर तथा शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य द्वेषी ईर्ष्यालु, पाप; चर्चारत, मिथ्या-वक्ता, दुर्बुद्धि, दुर्भाग्य, असावधान, मित्रों से झगड़ा करने वाला, और क्रूरकर्मी होता है । मंगल से युक्त होने पर मनुष्य लाल और गौर वर्ण, अचलवक्ता, हठी या दृढ़प्रतिज्ञ होता है । अपनी हानि करके भी बात को रखने वाला होता है ।

राहु—जिस मनुष्य के राहु उच्च, स्वगृही होकर लग्न में बैठा हो उसका रंग श्वेत आगे से नाक चौड़ी, हिम्मती, शत्रुजित, दूसरों के आश्रय में रहने वाला, मन्दगति, वृद्धों जैसी बातें करनेवाला तथा कामी होता है । यदि नीच, शत्रुक्षेत्री, दुष्ट या पाप युक्त या दृष्ट हो तो रक्तवर्ण, नेत्ररोगी, संतोषरहित, धूर्त, दुष्ट-स्वभाव, कुकर्मी, ठगविद्या में निपुण, शिर में व्यथा वाला होता है । ऐसे मनुष्य की शादी देर में होती है । राहु, शुक्र और चन्द्र युक्त होने पर प्रेमविवाह में अड़चनें डालता है ।

केतु जिस मनुष्य का केतु उच्च, मित्र क्षेत्री, स्वगृही तथा शुभ युक्त या दृष्ट लग्न में हो तो मनुष्य आत्मिक शक्ति से युक्त, अद्‌भुत भोजन करने में रुचि रखता है उसका शरीर दुबला-पतला, वात, पित्त और कफ युक्त होता है । नीच और शत्रु राशि में पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर उदासीन मनमलिन, दूषितविचार, शत्रुओं से भयभीत, भाइयों को दुःख देने वाला, स्त्रीरहित, धोखेवाज, दूषित कल्पना शक्ति वाला, व्यर्थ घूमने वाला, कलहप्रिय, सदैव सन्तप्त रहता है । चन्द्र और शुक्र युक्त होने पर गन्धर्व या प्रेम विवाह रचाने वाला होता है किन्तु उस विवाह में अनेक अड़चनें उत्पन्न होती हैं । उसका गार्हस्थ्य-जीवन दुखमय व्यतीत होता है । केतु राहु लग्न में

होने से मनुष्य बोलने में अटकता है। केवल केतु के लग्न में होने से नाक टेढ़ी या कोई खोट साफ दिखाई देता है। चन्द्र युक्त राहु होने पर मनुष्य जिह्वा को आगे करके बोलता है।

सूर्यादि ग्रहों के धनगतफल

सूर्य—जिसका सूर्य, उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री शुभ-मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर दूसरे भाव में हो तो मनुष्य अमीर घर में उत्पन्न न होकर भी अपने पराक्रम से धन कमाकर बड़ा आदमी होता है। वह धार्मिक, उपकारी और कृतज्ञ होता है। उसकी स्त्री झगड़ालू होती है तथा पुत्र आज्ञाकारी नहीं होते, बन्धुवर्ग तथा कुटुम्ब में कभी शान्ति नहीं रहती। यदि सूर्य नीच का, शत्रुराशि का पाप, क्रूर और शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो कुरूप, अहंकारी, कृतघ्न, दुष्टसंगति वाला, अश्रद्धालु, नीच कर्म रत, राज्य कर्मचारियों से अनवन रखने वाला तथा स्त्रीलोलुप होता है।

चन्द्र—यदि चन्द्र उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दूसरे घर में बैठा हो तो मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर, त्यागी, बुद्धिमान्, धनी, सुखी, कीर्तिमान्, सहनशील, कोमलांग, प्रियवादी, धार्मिक, विलासी तथा मित्रों से युक्त होता है और यदि नीच या शत्रुक्षेत्री हो अथवा पाप, क्रूर और शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो क्रूरकर्मी, पापी, कामी, विलासी, नेत्ररोगी होता है। क्षीण चन्द्र होने से घमंडी, निर्धन, बहुसन्तति तथा रोजगार अक्सर बदलने वाला होता है उसका मन सन्तप्त तथा बन्धु वान्धवों से दुखी रहता है और उसके कन्यायें अधिक होती हैं।

मंगल—यदि मंगल उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दूसरे भाव में बैठा हो तो मनुष्य ताम्र, सोना आदि धातुओं, मूंगा, लालवस्त्रादि के व्यापार से धन कमाने वाला कृपण होता है। भ्रमणशील, जुआरी, खेती करनेवाला, चालाक होता है और यदि नीच का या शत्रु राशि का, पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो, झगड़ालू, पाप कर्मी, जालिम, निर्दयी, कठोरवाणी, दूषित नेत्र (नेत्र रोगी, कुकरे, पखाल, आदि) मित्ररहित, बुद्धिप्रताप हीन, डरपोक होता है। धन राशि का जहाँ भी वैठा होगा शरीर के उसी भाग में घाव, या फोड़ा होकर दुःख देगा, अपकार का बदला चुकाने वाला होता है।

बुध—जिसका बुध उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर द्वितीय भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य धनी, सुखी, बुद्धिमान्, धार्मिक, कोमलांग, दीर्घकेश परदेश में रहने वाला, दानी, भोगी, तथा पण्डित होता है। अध्यापक या दार्शनिक होता है। इष्ट मित्रों से युक्त तथा हँसमुख होता है। नीच या शत्रु क्षेत्री होने पर पापी, और क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य विषयी, चालवाज़ छोटा व्यापारी और धर्म विमुख होता है।

गुरु—जिसका गुरु उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दूसरे भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य कवि, लेखक, वैद्य, वैज्ञानिक, ज्योतिषी, नेता, हाकिम, जज, वकील, पराक्रम से धन कमानेवाला, धनी, व्यापारी भी होता है। ऐसा व्यक्ति उदार, दानी, शत्रुरहित, परोपकारी; सुशील स्त्री युक्त तथा गर्वयुक्त होता है। नीच या शत्रुक्षेत्री, पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर बाल्यरोगी, अल्पवीर्य, कामासक्त, मुखरोगी तथा अभिमानी होता है।

शुक्र—यदि शुक्र उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दूसरे घर में हो तो मनुष्य आकर्षक, सुन्दर, सुगन्धित वस्त्रों से युक्त, चतुर, बुद्धिमान्, सज्जन, सोना चाँदी मोती का व्यापारी, सरस, बहुसन्तति-युक्त होता है। पराये धन से धनी, कामासक्त होता है, नीच, पाप, शत्रुक्षेत्री होने पर पाप, क्रूर शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर विधर्मी, पापी, कामी, परस्त्रीरत, लम्पट, अश्लील कवि, बड़ा शृङ्गारी होता है।

शनि जिस मनुष्य के उच्च, स्वगृही या मित्र की राशि का शनि मित्र-शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य सत्य वचन वक्ता, चंचल नेत्र, क्षमाशील, धन संग्रह में परिश्रमी, परदेशवासी लोहादि अष्टधातु का व्यापारी, फैक्ट्री मैनेजर आदि होता है। लोग उसके दृष्टि पात मात्र से डरते हैं। यदि शनि नीच या शत्रु राशि का दूसरे घर में बैठा हो तो इष्ट मित्रों से रहित, कुटुम्ब का शत्रु और चोर कला प्रवीण होता है। कुंचित केश, कठोर वक्ता, कृशगात होता है। यदि वृश्चिक राशि के शनि को मंगल देखता हो तो अंडकोष को बढ़ाता या पेड़ू सम्बन्धी रोग करता है। अथवा वृश्चिक राशि के चन्द्र को शनि या मंगल देखे तो भी उपर्युक्त फल होता है।

राहु—यदि राहु उच्च, स्वगृही या मित्र के घर का हो तो मनुष्य भ्रमणशील, स्पष्टवक्ता होता है, शुभ दृष्ट होने पर धनी, परिश्रमी होता है, नीच या शत्रु राशि का होने पर पाप करने वाला, शत्रु दृष्ट या युक्त होने पर कुटुम्ब का शत्रु, धनहीन, झुठा, धोखेवाज, कृपण, धूर्त, वाचाल, दुर्वलहृदय होता है तथा दृष्टि खराब होती है। आवारा घूमता है।

केतु - यदि केतु उच्च, स्वगृही, मित्र की राशि का शुभ दृष्ट या युक्त ह तो मनुष्य धनहीन होने पर भी धार्मिक, समुद्र यात्रा करनेवाला, हाथ की सफाई, जादू, अस्पताल आदि के काम में सफलता पाता है। यदि नीच या शत्रु राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट होकर दूसरे भाव में बैठा हो तो घर से दूर रखता है। कुटुम्ब, इष्ट-मित्रों से नहीं बनती। मित्रों से धोखा खाता है। धनहानि होती है तथा भ्रमणशील होता है। कटुवक्ता, मुख में रोग होता है। भोजन अच्छा नहीं मिलता, दुःखी होकर खाता है।

सूर्यादि ग्रहों के सहजगत फल

सूर्य :—जिस मनुष्य के सूर्य उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर तीसरे भाव में बैठा हो वह मनुष्य साहसी, परिश्रमी, शुद्ध बुद्धि, हठी, पराक्रमी. सहनशील, शौकीन, स्त्री-पुत्रों से सुखो, धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला तथा संग्रामविजयी होता है। राज्यकर्मचारी होता है और यदि वह नीच, शत्रु राशि का पाप, क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पाप कर्मरत, झगड़ालू, कामी, परस्त्रीरत, रोगी, दुर्वलदृष्टि होता है। भ्रातृहीन या भ्रातृ-कष्टी होता है।

चन्द्र :—जिसके चन्द्र तीसरे घर में उच्च, स्वगृही या मित्र राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त बैठा हो तो वह मनुष्य, कविता करने वाला, धनधान्य पूर्ण, श्वेत वस्त्र धारण करने वाला, कोमलांग, मधुरवाणी. साहित्यप्रेमी, भ्रमणशील, विद्वान्, दार्शनिक, स्त्रीप्रेमरत, धार्मिक, कलाकौशलपूर्ण तथा यशस्वी होता है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो, नीच या शत्रु राशि का हो, पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य लम्पट, कामी, परस्त्रीरत, निर्दयी, दुःखी, धोखेबाज, अशान्त, भ्रातृहीन तथा क्रोधी होता है।

मंगल :—यदि मंगल उच्च, स्वगृही या मित्र-राशि का शुभ-मित्र दृष्ट या युक्त होकर तीसरे भवन में बैठा हो तो मनुष्य पराक्रमी, राजमान्य, निरोग, पुष्ट, धनधान्यपूर्ण, उदार तथा धर्मात्मा होता है और यदि यह नीच या शत्रुक्षेत्री, पाप तथा क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य विलासी, कामी, भ्रातृ-द्रोही या भ्रातृ-हीन, सन्तान से दुखी, दुर्बलदेह, धन-सुखहीन, कुत्सित घर में निवास करने वाला, वेश्यागामी, यात्रा में दुर्घटना ग्रस्त, लापरवाह, अनियमित, पाप-कर्मरत रहता है। क्रोधावेश में आत्महत्या भी कर लेता है।

बुध : जिसका बुध उच्च, स्वगृही या मित्रराशि का शुभ ग्रह या मित्र से दृष्ट या युक्त होकर तीसरे भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य परोपकारी, तीव्र बुद्धि, चतुर, व्यवहारकुशल, व्यापारी, स्वतन्त्र विचार, भाई-बहिन, इष्ट-मित्रों को प्रिय, नम्र, सुशील, वृद्धावस्था में संन्यास लेने वाला होता है। यदि नीच, शत्रु राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो अपवित्र, दुखी, कामी, सट्टेबाज, जुआरी, पापरत, बन्धुवर्ग से दुखी और भय सहित होता है।

गुरु :— जिसका गुरु उच्च, स्वगृही, या मित्र क्षेत्री शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर तीसरे घर में हो तो वह मनुष्य, राजमान्य, बन्धुवर्ग का माननीय, अतिथिसेवी, आशावादी, दार्शनिक, भ्रातृ-सुखी, विरागी, धार्मिक, परोपकारी और दानी होता है। यदि यह नीच, शत्रु-क्षेत्री, पाप, क्रूर और शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य कृतघ्न, भ्रातृदुखी, नीचकर्मरत, पापी, कामी, कंजूस, बीमार, मित्र रहित हो।

शुक्र : यदि शुक्र उच्च, स्वगृही, शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर तीसरे भाव में हो तो वह मनुष्य मुन्दर वस्त्र धारण करने का शौकीन, मधुभाषी, धनवान्, भान्जे से प्रेम करने वाला, बुद्धिमान्, कलापूर्ण गान, नृत्य, संगीतप्रिय, भ्रातृसुखी, सन्तान सुख कम, सुन्दर रूप, विनम्र, तेजवान्, प्रसिद्ध कवि होता है। यदि नीच या शत्रु राशि का हो और पाप-क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो नेत्ररोगी, कामी, दूसरे की स्त्री में रत, क्षीण धातु, पेट दर्द, निर्धन, कृपण और दुश्चरित्र होता है। चुगलखोर होता है और इन्द्रिय लोलुपता के कारण बदनामी उठाने वाला होता है।

शनि :--जिसके शनि उच्च का तीसरे घर में हो तो भ्रातृ-हानि करता है। स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर तोसरे भवन में मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर सत्यवक्ता, चंचलनेत्र, परिश्रमी, धनसंग्रह में तत्पर, क्षमाशील, भ्रमणशील, बड़े आदमियों से मिलने वाला, स्त्री-पुत्रादि युक्त, धनतृषित, पढ़ा-लिखा, निरोग, भरे शरीर का होता है। निगम, छोटी-छोटी सभाओं का प्रधान, सफलोद्यम में विफल होता है। निराशावादी तथा धार्मिक होता है। यदि नीच या शत्रुक्षेत्री हो और साथ ही पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य दुष्ट, पराक्रमी, वाचाल, दीर्घसूत्री, अशान्त, तृषित, सन्तप्त, चलायमान होता है। चर राशि में हो तो रेल का सफर करने वाला, कठोर वाणी, भ्रातृनाशक, मानसिक रोग वाला तथा पापाक्रान्त होंता है।

राहु :--जिसके तीसरे भाव में राहु उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य पराक्रमी, यात्राप्रिय, मध्यम धन-धान्य वाला, फिर भी स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्रों तथा सवारी सुख से सुखी होता है। भ्रातृ-कष्टी होता है। मुकदमा, और शत्रुओं को जीतता है। यदि राहु नीच या शत्रु-राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य को भ्रातृ-हानि, हर कार्य में निराशा तथा अशुभ समाचर प्राप्त होते हैं और अपने दूषित विचारों के लिए लोकनिन्दा को प्राप्त होता है। वाहन, कृषि और पशु की हानि होती है।

केतु :--जिसके तीसरे भाव में केतु उच्च, मित्रगृही, स्वक्षेत्री होकर तीसरे भाव में मित्र-शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य धन-ऐश्वर्यंयुक्त, तेजवान् होता है। मुकदमें में जीत, झगड़े में जय, शत्रुओ से जीत होती है। यदि केतु नीच, शत्रु, राशि का अशुभ पाप, क्रूर या शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो भ्रातृ-रहित, भ्रातृ-पीड़ा, दोनों बांहों में दर्द, मन में चिन्ता, उद्वेग, दिमाग में अशान्ति, चित्त में बेचैनी, रात दिन कलह शत्रु विवाद की घबराहट रहती है। जीवन दुखी रहता है। यदि तीसरे भाव का केतु शनि से दृष्ट हो तो मनुष्य को निश्चय भ्रातृ-रहित करता है।

सूर्यादि ग्रहों के मित्रगतफल

सूर्य—जिसके सूर्य उच्च या स्वगृही होकर शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो वह मनुष्य अनेक मित्रों वाला, मधुरभाषी, गाना जानने वाला, कविताप्रेमी, युद्ध में

विजयी तथा सरकारी नौकर होता है। यदि वह चौथे भाव में नीच, शत्रु-राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य दिल का काला, परस्त्रीरत, कातरस्वर, मतलबी, स्वतन्त्र, घर से दूर रहने वाला, अनेक कार्यों को करने की इच्छा वाला, धनहीन तथा कृतघ्न होता है और किसी स्त्री के सम्पर्क में आने पर मानहानि को प्राप्त होता है।

चन्द्र—यदि चन्द्र उच्च स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर चतुर्थ भाव में शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य इष्टमित्रों से युक्त, स्त्रियों का प्यारा, वाहन, गृहादि से सुखी, वायु कफादि का रोगी, मातृसुख पाने वाला, नौंकरी करने वाला होता है उसे १४ वर्ष बाद सुख प्राप्त होता है। वह धार्मिक, विनम्र तथा शत्रु-रहित होता है। यदि चन्द्रमा क्षीण, नीच, शत्रु-राशि का पाप, क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उसकी माता बीमार रहती है। वह दांभिक, चुगलखोर, परस्त्रीरत, मांसाहारी तथा वाहनसुख से रहित होता है।

मंगल—जिसका मंगल उच्च या स्वगृही, मित्र की राशि का, शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह सरकारी नौकरी करने वाला, घर से दूर रहने वाला, रक्तचाप, अर्शादि से बीमार तथा उदर रोगी होता है। शत्रु-राशि, या नीच का होने पर अशुभ, पाप तथा क्रूर शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर मनुष्य रक्तविकार, अर्शादि रोगों से युक्त मातृकष्टी, परस्त्रीरत, नीच की सेवा में रत, तन्त्रवाद की रुचि रखने वाला, घर से दूर रहने वाला, धनहीन, स्वार्थी, कृपण, अनेक इच्छाओं वाला तथा दुःखी होता है।

बुध—जिसका बुध चतुर्थ भाव में उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्र शुभ-मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो उस मनुष्य को खेती, धन-धान्य के व्यापार से लाभ, सरकारी नौकरी तथा अच्छे मित्रों से समागम होता है। जो बुध नीच या शत्रु राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पिता के धन से रहित, स्वधन सम्पन्न, भाई का नाश या हानि करने वाला, परस्त्रीरत, निर्लज्ज, रोगी, चलचित्त तथा स्वार्थी होता है।

गुरु—यदि गुरु उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो मनुष्य राजमान्य, सरकारी नौकर, धन-धान्य तथा

सवारी सुख से पूर्ण, धार्मिक, शत्रुजित, तीर्थयात्रा करने वाला और दानी होता है। फिर भी उसका मन सन्तप्त रहता है। यदि गुरु नीच, शत्रु-राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य माता-पिता को कष्ट देने वाला, इष्टमित्रों से रहित, पाप कर्म रत, वायु रोग से पीड़ित, धन-हीन, नीच का सेवक तथा पराश्रय में रहने वाला होता है।

शुक्र—जिसका शुक्र चतुर्थ भाव में उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री शुभ ग्रह या मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य पूजा-पाठ करने वाला, धार्मिक, सर्वत्र पूजा प्राप्त, माता का पालन करने वाला, शुभ भोजन तथा स्वच्छ गृह में रहने वाला तथा सुखी होता है। यदि वह नीच अस्त, शत्रु-राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो पुत्र-कलत्र के दुख से दुखी, मध्य सुख भोगने वाला, वाहन से दुखी, कविता करने वाला तथा स्त्रीद्वेषी होता है।

शनि—जिस मनुष्य के शनि उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य, सरकारी नौकर, शरीर रोगी, शब्द भारी, विचारवान्, स्वार्थी तथा मतलब का पूर्ण होता है। यदि नीच, शत्रुक्षेत्री अस्त का, शत्रु, पाप तथा क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो मनुष्य स्त्रीरहित, पिता के धन धान्य से वंचित, भाई, बन्धुओं में बदनाम उनके साथ उपकार करने पर भी श्रेयस् न हो तथा घर से दूर रहने वाला होता है। वक्री शनि होने पर स्त्री, पुत्र, नौकर वाहन, आदि के होने तथा न होने पर भी दुखी रहता है।। उसकी ाता सदैव किसी न किसी कष्ट में रहती है।

राहु—जिस मनुष्य के राहु उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री (१, ६, ३, ९) राशियों के चतुर्थ भाव में होने से मित्र, शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य प्रत्येक प्रकार से धन धान्य पूर्ण, मातृ सुख से सुखी, भ्रमणशील, वायु पीड़ित रहता है। यदि वह नीच, शत्रु राशि का पाप, क्रूर या शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मातृहीन या मातृकष्टी, हृदय रोग से पीड़ित, उदर में वायुदर्द, कुकर्मी, होता है, केवल एक कन्या का सुख होता है, नीच संगति में आसक्त, पापकर्मरत, परनिन्दक तथा नीचों की मण्डली का नेता या प्रधान होता है।

केतु—यदि केतु चतुर्थ भाव में उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बन्धुवर्गादि से सौख्य पाता है। मातृसुख से सुखी

रहता है। परदेश में रहता है औरभ्रमणशील होता है। यदि नीच, वक्री, शत्रुक्षेत्री होकर पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो माता को कष्ट, पिता को कष्ट, प्रवासी, चिन्ता और क्लेश से युक्त, पिता के धन को हानि करने वाला तथा उसकी जायदाद से वंचित रहने वाला होता है। उसके उदर में वायु गोले का दर्द होकर अंग पीड़ा होती है। वह सदैव व्यग्र ही रहता है।

सूर्यादि ग्रहों के पुत्र गत फल

सूर्य—जिस मनुष्य के सूर्य उच्च, स्वगृही या मित्र की राशि का शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर पंचम भाव में हो तो वह मनुष्य तान्त्रिक, नीति, मन्त्रशास्त्र का ज्ञाता, कुशाग्रबुद्धि, विचार शील, धनी तथा परोपकारी होता है। संतान सुख अल्प होता है यदि यह नीच या शत्रु राशि का पाप, क्रूर या शत्रु ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो मनुष्य को प्रथम पुत्र का संताप देखना पड़ता है। रक्त-पित्त विकार, कुक्षिरोग वाला तथा दुष्ट कर्मरत, ठग, साहसी, घर से बाहर रहने वाला, या परस्त्रीरत, पापी, चलचित्त, तथा अनेक व्याधि युक्त होता है।

चन्द्र—यदि चन्द्र उच्च स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर पंचम भाव में शुभ ग्रहों से मित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य धन-धान्य से युक्त, बुद्धिमान्, स्त्रीसंतान का पूर्ण सुख भोगने वाला और सरकारी कर्मचारी हो उच्च पद को प्राप्त हो, प्रियवादी, धार्मिक, प्रेमी और कामी होता है। यदि यह क्षीण हो नीच या शत्रु-राशि का पाप, क्रूर शत्रु-ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पापी, कामी, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित, दूसरी स्त्री से प्रेम करने वाला और अपयश का भागी होता है।

मंगल - जिसका मंगल उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभमित्र, ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर पंचम भाव में **स्थित** हो तो उस मनुष्य की पाचन शक्ति अधिक, सन्तान कम, क्रोधी, वलिष्ट तथा एक पुत्रवान् होता है यदि यह नीच शत्रुक्षेत्री, पाप क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य पापी, पुत्ररहित, दुर्बल, सन्तप्त, विद्याविहीन, झगड़ालू, दुखी, शेखी-खोर तथा मित्रों से रहित होता है।

बुध—जिस मनुष्य के बुध पंचम भाव में उच्च, स्वगृही होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त हो तो वह मनुष्य, ३० वर्ष के उपरान्त पुत्र लाभ को प्राप्त होता है उसके कन्यायें अधिक होती हैं। वह बुद्धिमान्, बात की तह तक पहुँचने वाला, शिक्षाकर्मरत, सुन्दर, धन कमाने वाला और सच्चरित्र होता है यदि बुध नीच एवं शत्रुराशि का पाप, क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य स्त्री-पुत्र के सुख से रहित, पराक्रम रहित, क्षुधातुर इष्टमित्रों से रहित, परिश्रमी तथा घमंडी होता है।

गुरु—यदि वृहस्पति उच्च स्वगृही या मित्रराशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर पंचम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य, स्त्री-पुत्र से युक्त, शास्त्री, बुद्धिमान्, धार्मिक, मित्रों से सम्मानित, सुखी दर्शनीय तथा साक्षर होता है। यदि गुरु नीच या शत्रुराशि का पाप क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य वाचाल, तर्क-वितर्क करने वाला, कामी और भोग विलास में आस्था रखने वाला, कार्य परिणाम में विघ्नों से पीड़ित और पुत्रों से पीड़ित होता है।

शुक्र—यदि शुक्र उच्च स्वगृही या मित्रराशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य काव्य रचना करने वाला कवि, विलासी, धन संग्रह करने में परिश्रमी, स्त्री, सन्तान युत, कन्यायें अधिक हों, धार्मिक मन्त्र जाप करने वाला, बड़ा ही ऐश्वर्यशाली होता है। यदि शुक्र नीच अस्त का शत्रुराशि पर शत्रु पाप, क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य पुत्ररहित और कन्यायें अधिक, अश्लील शृंगार की कवितायें करने वाला, तान्त्रिक होता है।

शनि—यदि शनि उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर पंचमभाव में शुभ मित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मिल, फैक्ट्री प्रेस इन्जीनियरिंग आदि के कार्य करने वाला होता है। एक से तीन पुत्र युक्त, उसकी स्त्री को सदा कष्ट हो और उसका ऐश्वर्य स्थिर नहीं रहता यदि शनि नीच अस्त शत्रुराशि का पाप, क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य सन्तान से दुःखी, स्त्री वीमार, व्यापार में हानि और पढ़ने में अटकाव होता है।

राहु जिसके राहु उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर पंचम भाव में स्थित हो तो पढ़ा-लिखा साक्षर, कम सन्तान,

स्त्री को कष्ट, कम धनी और भ्रमित होता है यदि राहु नीच या शत्रुराशि का पाप क्रूर और शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य की बुद्धि में भ्रम, दीर्घसूत्री, विद्या रहित, सन्तान की हानि और भ्रातृ कष्ट कारक होता है। तथा शत्रु का भय रहता है।

केतु—यदि केतु उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर पंचम भाव में शुभमित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बलवान्, प्रपंची जड़बुद्धि, हठी और विद्यान्यून होता है यदि केतु नीच का हो शत्रुराशि का पाप, क्रूर, शत्रुग्रहों से दृष्ट य युक्त हो तो मनुष्य, वात पीड़ित, शस्त्रादि घात से पीड़ित, निर्बुद्धि, संताना के दुःख से दुःखी, पापी, दास कर्म करने वाला तथा सेवक होता है।

सूर्यादि ग्रहों के अरिगत फल

सूर्य :— यदि सूर्य उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर छठे भाव में शुभ मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य शत्रु रहित सुन्दर, सज्जन, इष्टमित्रों से युक्त, धर्म कर्म में रत, मन्त्र-तन्त्र करने वाला, योग साधना करने वाला और दुर्बल स्त्री से युक्त होता है और यदि सूर्य नीच या शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो निर्बल, विवादी, मामा के कुल की हानि करने वाला, यात्रा में धन हानि करने वाला, कलह प्रिय और चोरों द्वारा हानि को प्राप्त होता है।

चन्द्र :— जिसके चन्द्रमा छठे भाव में उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री या पूर्णबली होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य माता का भक्त, शत्रुजित, प्रभावशाली तथा अनेक सुखों का उपभोग करने वाला होता है किन्तु जिसके चन्द्रमा क्षीण, अस्त नीच तथा शत्रु की राशि का हो तो वह मनुष्य बड़ा ही दुर्बुद्धि, पापी, रोगी, ठग तथा शत्रुओं से युक्त, राजदण्ड पाने वाला, दुर्बल और नित्य क्लेश सहन करने वाला होता है।

मंगल : जिसका मंगल छठे भाव में उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य संग्राम प्रिय, शत्रुओं को जीतने वाला, विद्या-बुद्धिमान्, एक बार धनहीन होकर फिर धनी होने वाला, बन्धु-बान्धवों में प्रधान, दर्शनीय और सब से प्रशंसा चाहने वाला होता है यदि मंगल नीच,

अस्त, शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मातृकुल को दुखी करने वाला, अंगहीन, निन्दित, दुष्ट कर्मरत, कलह प्रिय और शस्त्र प्रहार से चोट खाकर मृत्यु को प्राप्त होता है।

बुध :—जिसका बुध छठे भाव में उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य विद्वान्, कवि, शुभ मित्रों से युक्त, सरकारी नौकरी करने वाला, व्यवहार कुशल, धन संग्रह करने वाला, संन्यास दीक्षा लेने वाला होता है। यदि बुध नीच, वक्री, शत्रु राशि का, पाप, क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट युक्त हो तो मनुष्य मांसाहारी, दरिद्री, कामातुर, मातृकुलघातक, शत्रु युक्त होता है।

गुरु :—जब गुरु छठे भाव में उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य सामर्थ्यवान्, शत्रु रहित, पशुपालक, मामा के पक्ष से सुख रहित, संग्राम विजयी, परदेशी तथा परसेवारत रहता है। यदि गुरु नीच अस्त, शत्रु राशि का हो तो मनुष्य दुर्बल देह, मातृ रोगी, कृतघ्न, निन्दक, मूर्ख, दुर्बुद्धि, पापरत होता है।

शुक्र :—यदि शुक्र उच्च, स्वगृहो मित्रक्षेत्री, अस्तगत होकर छठे भाव में शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य जन्म ही से सामर्थ्यवान्, धन-धान्य पूर्ण पण्डित होता है। शत्रुओं को जीतने वाला, गुणवान्, श्रेष्ठ कर्मरत, धार्मिक कार्यों में धन व्यय करने वाला, अच्छा मनुष्य होता है। यदि शुक्र नीच, शत्रु की राशि का होकर पाप क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य स्वजन परिजन सुख से रहित, कुरूप, सन्तान रहित, बुद्धिहीन, अल्पायु, अपवित्र, अश्लील तथा श्रृंगारी होता है।

शनि : - जिस मनुष्य के शनि उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर छठे भाव में शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर स्थित हो तो वह मनुष्य धार्मिक, सद्-बुद्धि, संग्राम विजयी, शत्रु नाशक, मुकदमे में जीतने वाला, पशु व्यापार में लाभ उठाने वाला, राज्य सेवी, परिश्रमी, धन-धान्य से पूर्ण, कार्य कुशल, सफलीभूत होता है। यदि शनि नीच अस्त वक्री शत्रुराशि का छठे घर में हो तो अपने तथा मातृकुल का घातक होता है। सदैव झगड़ा करने की सोचता है और शत्रुओं से नीचा देखता है।

राहु :—यदि राहु उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर छठे भाव में शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य शत्रुओं का नाश करने वाला, स्त्री-पुत्र धन-धान्यादि से सुखी, बलवान्, चतुर, इष्ट मित्रों से युक्त, दायें अण्डकोष की वृद्धि वाला, मामाहीन होता है या मामा के वंश में स्वयं पोषित होता है। यदि नीच, शत्रु क्षेत्री हो और शत्रु पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य परस्त्रीगामी, वायु से पीड़ित, पेडू कमर में दर्द, म्लेच्छों की संगति में प्रसन्न रहने वाला होता है।

केतु :—जिसका केतु उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर छठे भाव में शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य निरोग रहकर महिषादि व्यापार में लाभ उठाता है। वायु रोग से पीड़ित, मामा के कुल को घातक होता है। यदि नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य मलिनमन बुजदिल, मामा का मान भंग करने वाला, मामा रहित या शत्रु रहित भी हो सकता है। अनेक व्याधि युक्त पेट में वायु गोले का दर्द होता है।

सूर्यादि ग्रहों का जायागत फल

सूर्य :—जिसके सूर्य सप्तम स्थान में उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री शुभ-मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो वह मनुष्य वायु, पित्त, कफ रोग से पीड़ित, बीमार स्त्री वाला, व्यापार में अल्पलाभ पाने वाला होता है यदि सूर्य नीच शत्रु पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य अत्यन्त कामी, कपिलनेत्र, स्त्री सुख से रहित, चंचलचित्त, दुष्टात्मा, मध्यमकद, सौन्दर्य से रहित होता है।

चन्द्र :—यदि चन्द्र उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर सप्तम भाव में स्थित हो तो मनुष्य, दयावान्, धर्मात्मा, प्रसन्नचित्त, सद्बुद्धि, कीर्तिमान् तथा धन-धान्य से सुखी रहकर स्त्री, बच्चों के सुख से सुखी रहता है और यदि वह, क्षीण, नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री होकर पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य कामी, परस्त्रीरत, कृष्ण पक्ष में नीच स्त्रियों से वार्तालाप करने वाला, नजले जुकाम से पीड़ित, धातुक्षीण रोग से ग्रसित, प्रेम विवाह करने वाला रोगी स्त्री का पति होता है। भ्रमणशील, शत्रुयुक्त, मिष्ठान्न प्रिय होता है।

मंगल :—जिसका मंगल, उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर सप्तम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य साहसी होता है उसके विवाह में देर होती है। पुरुष स्त्री के लिए और स्त्री पुरुष के लिए घातक होती है। यदि मंगल नीचास्त शत्रु की राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य स्त्री रहित, शत्रु-पीड़ित, विवाह सम्बन्ध विच्छेदी, रोगिणी स्त्री वाला, या स्त्री का स्वभाव चंचल, दुष्ट चित्त, कुत्सित चित्त, विरूप होती है। उसे व्यापार में हानि होती है सरकार से हानि पाता है।

बुध :—यदि बुध सप्तम स्थान में उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उस मनुष्य की स्त्री अद्वितीय सुन्दरी होती है और वह पुरुष स्वयं अत्यन्त सुन्दर, छोटे नेत्र वाला होता है। उसकी काम-वासना तीव्र होती है धातुक्षीण रोग होता है। यदि बुध नीचास्त, शत्रु की राशि का पाप क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य की स्त्री कृष्णवर्णा, गुप्त रोगी, चलचित्त, विलासी, हँसमुख, (मजाकिया) तथा रोगी होती है।

गुरु :—जिसका गुरु सप्तम स्थान में उच्च का हो तो विशेषकर ब्राह्मणों को उत्तम पुत्र प्रदान नहीं करता दूसरी राशियों में थोड़ा फल देता है किन्तु स्वगृहीं मित्र राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो शुभ फल देता है ऐसा मनुष्य विचारशील, धन-धान्य पूर्ण, दर्शनीय, आत्मविश्वासी, धार्मिक, होता है और यदि नीच अस्त वक्री गुरु पाप क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो स्त्री हानि, घमण्डो, पाप कर्मरत, तथा कामातुर होता है। किन्तु स्त्रियाँ उसे कम चाहती हैं।

शुक्र : यदि शुक्र सप्तम भाव में किसी मनुष्य के उच्च, स्वगृही होकर शुभ मित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य सौन्दर्य विभूषित स्त्रियों का प्यारा, धन-धान्य युक्त, सुन्दर, गुणवान्, सत्यवक्ता, दयावान्, कामी होता है और यदि यह नीच, अस्त, वक्री, शत्रुक्षेत्री, पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अत्यन्त कामी, आलसी, परदेशवासी, वायुरोग से पीड़ित, कमर पेट में दर्द, श्रमरहित होता है।

शनि : - जिसका शनि सप्तम भाव में उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मित्र हितकारी, चतुर तथा द्वयर्थक, बात करने वाला होता है। और यदि शनि नीचास्त शत्रु राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य लोभी, कृपण, इन्द्रिय लोलुप, सगे सम्बन्धियों की स्त्री या कन्या से रति करने वाला, पापी, नीच का साथी, आलसी, मलीन, दंभी, अङ्गहीन, स्त्री-पुरुष दोनों रोगी, भाग्यहीन तथा पराक्रम से रहित होता है।

राहु :—सप्तम स्थान में राहु चाहे जैसा भी हो ऊँच, नीच, स्वगृही, अस्त, शत्रु मित्रक्षेत्री कोई अच्छा फल नहीं करता यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो प्रत्येक प्रकार के दुःख में कमी हो जाती है और यदि पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर शत्रु राशिका सप्तम में हो तो, मनुष्य निर्धन न होने पर भी पेट का रोगी, बन्धुओं से पृथक रहने वाला, योगभ्रष्ट सदैव मलिन बात सोचने वाला, मन्द दृष्टि होता है।

केतु :—यदि केतु उच्च या स्वगृही होकर सप्तम स्थान में शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य को धन-धान्य पूर्ण करता है वायु का रोग होता है और यदि नीच, अस्त, शत्रु आदि राशि का हो पाप, क्रूर, तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पाप कर्मरत, स्त्री रहित, या झगड़ालू पर-स्त्री युक्त, भ्रमणशील, यात्रा में भय सहित, अपव्यय करने वाला, मार्गचिन्तित तथा शनि से दृष्ट होने पर मार्ग में ही अपनी वस्तुएँ छोड़ आने वाला होता है। जल से भयभीत रहे।

सूर्यादिग्रहों का निधनगत फल

सूर्य—जिसका सूर्य अष्टम स्थान में उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभमित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य, परदेश में भ्रमण द्वारा धन कमाने वाला, परसेवक, कामी, धन तृषित होता है और यदि नीच, शत्रुराशि का, पाप क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य धूर्त चालबाज, निर्दयी, वाचाल, रोगयुक्त, नीच सेवारत, परस्त्रीरत, वेश्यागामी, भक्षाभक्ष का विचार न करने वाला, क्षुधातुर, चोर, आलसी, तथा गुह्येन्द्रिय का रोगी होता है।

चन्द्र—यदि अष्टम चन्द्रमा उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर शुभ-मित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पूर्ण चन्द्र होने पर, परदेशवासी होकर धन कमाता है जल से भयभीत रहता है और रोगी रहता है और यदि चन्द्र, नीच, क्षीण तथा शत्रुराशि का होकर पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अल्पायु, जल से भयभीत, दुर्जनों की संगति करने वाला, नित्यरोगी, जिगर तिल्ली ज्वरादि से रोगी, नजला-जुकाम खाँसी से पीड़ित, स्नेह रहित, इष्टमित्रों से पृथक, निर्दयी तथा परस्त्रीगमन करने वाला पापी होता है।

मंगल—जिसका मंगल अष्टमभाव में उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री, शुभमित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य, क्रोधी तथा परसेवा से आजीविका पैदा करने वाला, सरकारी नौकर घर से दूर रहने वाला तटस्थ होता है अर्श, रक्त विकार आदि से पीड़ित होता है यदि मंगल नीच, अस्त, शत्रु-राशि का पाप, क्रूर तथा शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य महाक्रोधी, अर्श, रक्तविकार, रक्तचाप, (ब्लडप्रेशर) शरीर में कहीं श्वेतदाग (चित्रकोढ़) होता है। उसकी शादी देर में होती है या नहीं होती है और स्त्री झगड़ालू मिलती है। इसके मित्र कम, कार्यारम्भ में विघ्न उपस्थित होते हैं।

बुध—यदि बुध अष्टम भाव में उच्च स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य दर्शनीय, सत्यवक्ता, अतिथि सेवक देश-विदेश से धन कमाने वाला, राजसेवी, दीर्घायु होता है। और यदि नीच, शत्रुराशि का पाप क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य छिद्रान्वेषी, गुप्त प्रकट स्त्रियों वाला, कृश, कुकर्मी, कीर्तिरहित, वायुरोग से पीड़ित होता है। इष्टमित्रों से ईर्ष्या करता है।

गुरु—जिसका गुरु उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर अष्टम भाव में स्थित हो और शुभ मित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मध्यायु, दुर्बलदेह, धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला, चंचलमन, अपनी कमाई से मकान तथा जाय-दाद करने वाला, घर से दूर रहने वाला होता है। यदि यह नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री होकर पाप क्रूर, शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अस्थिर

प्रकृति, अल्पायु, बुद्धिहीन, विवेक शून्य, ठग, दूषित, प्रताप रहित, अवधूत की भाँति रहने वाला होता है।

शुक्र--यदि शुक्र अष्टम भाव में उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री, शुभ मित्रग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मध्यमायु, धार्मिक, राजसेवी, आमिषभोजन करने वाला तथा हंसमुख होता है और यदि नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री, पाप क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य, दुर्व्यसनो, बन्धुरहित, शत्रु सहित, पापी, पराक्रम से हीन होता है। विदेश में मांस भक्षण करता है जल से भयभीत रहता है चुगलखोर होता है। उधार लेकर नहीं देता।

शनि :—जिसका शनि अष्टम भाव में उच्च स्वगृही मित्र क्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य पूर्णायु, वायु रोग से ग्रसित होता है। परसेवारत नहीं रहता, स्वतन्त्र व्यवसाय करता है और यदि नीच अस्त, शत्रु क्षेत्री, पाप, क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य देशान्तर में दुख उठाने वाला, नेत्र रोगी, चोरी करने वाला, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, धूर्त, ठग, मन्दबुद्धि, रक्त प्रकोप, रक्त विकार, रक्त पाप से पीड़ित, द्वेषो तथा ईर्षालु होता है।

राहु : यदि राहु उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर अष्टम भाव में स्थित हो तो मनुष्य राजमान्य, पंडितों से पूजित होता है ४२ वर्ष बाद उसके पास धन होता है। पेट में वात रोग, अपने घर वालों से निन्दित होता है ओर यदि राहु नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य के अण्डकोष बढ़ जाते हैं। ८½ वर्ष में बीमार होता है चेचक, सुजाक, प्रमेह आदि में से कोई रोग अवश्य होता है। पिता का धन जायदाद नहीं मिलती, दुर्बल देह, सदा रोगी, पिता का शत्रु, घर से दूर रहने वाला, मंगली न होने पर कायर होता है।

केतु :— जिसका केतु अष्टम भाव में उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मध्यायु, सदा रोगी, परदेश से धन कमाने वाला होता है और यदि केतु नीच, शत्रु क्षेत्री पाप, क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अर्श, ववासोर, काँच, भकन्दर आदि से पीड़ित होता है सवारी से चोट का भय रहता है। वायुवात से सदा रोगी, पेट पेडू में दर्द,

मूत्रेन्द्रिय में रोग, धातु क्षीण, पेशाब के रोग, शूगर आदि जाने के रोग होते हैं। ऐसे मनुष्य जीवन से उदासोन रहते हैं।

सूर्यादि ग्रहों के धर्मगत फल

सूर्य :—जिसका सूर्य नवें भाव में उच्च स्वगृही मित्र की राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य कीर्तिमान्, दर्शनीय, धनवान्, राजसेवी, धार्मिक, इष्टमित्रों, भाई-वन्धुओं का हितकारी, लोकप्रिय, दाम्भिक होता है। और यदि सूर्य नीच, शत्रु राशि का शत्रु पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, धर्मरहित, सन्तापी, पापकर्मरत, दुष्टचित्त, भ्रातृक्लेशी या रहित होता है।

चन्द्र :—यदि चन्द्रमा पूर्ण बली होकर उच्च, स्वगृही, मित्र राशि का अपने शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अत्यन्त धनी, धन-धान्य सम्पन्न, धार्मिक, स्त्री जाति को प्रिय, शोभायुक्त, चतुर, मित्रादि से युक्त, शत्रुरहित, तथा प्रशंसनीय होता है यदि क्षीण चन्द्रमा, नोच, शत्रुराशि का होकर पाप क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मूर्ख, पापी, परस्त्रारत, धनहीन, वहुत वहिनों से युक्त होता है।

मंगल :—जिसके मंगल, उच्च, स्वगृही, मित्रराशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर नवें स्थान पर स्थित हा तो वह मनुष्य क्रोधी होने पर भी धन-धान्यपूर्ण, भाग्यवान्, शिल्प कला का जानने वाला, रोबीला, इष्टमित्रों वाला होता है और यदि नीच, अस्त शत्रु राशि का पाप क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अधर्मी, भाग्यहीन, वन्धुओं का शत्रु, अभिमानी, मन्दबुद्धि, सन्तप्त, चिन्तायुक्त, रोगी, पीतवर्ण, ज्येष्ठ भ्राता तथा साले से कलह या रहित हो जाता है।

बुध :—यदि बुध उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर नवें भाव में स्थित हो तो मनुष्य धन-धर्म, स्त्री-पुत्रादि से पूर्ण सुख पाता है। सद्‌गुणों से युक्त, कृषिकर्म में रुचि, राजसेवी, धार्मिक, तीर्थाटन करने वाला, सबका प्यारा, दक्षिण मन्त्र जापी होता है। और यदि नीच, शत्रु राशि का होकर, पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य चपल, कुमार्ग में चलने वाला, पापरत, उद्यमहीन, स्वधर्म निन्दक होता है।

गुरु :—जिसका गुरु नवम स्थान पर उच्च, स्वगृही, मित्र राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य धर्मात्मा, दयावान्, धन-धान्यपूर्ण इष्टमित्रों से युक्त, सन्ध्यावन्दनादि करने वाला, धर्मग्रन्थों का लेखक, प्रेमी, स्त्री पुत्रवान् होता है और यदि गुरु नीच, शत्रु राशि का पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य सन्ध्यावन्दन में आलस्य करने वाला, पुत्रादि रहित अथवा कुपुत्रों से अनवन रखने वाला, गृहभूमि रहित, कंजूस, स्त्रियों का प्रेमी, इन्द्रिय लोलुप होता है।

शुक्र :—यदि शुक्र उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर नवें भाव में स्थित हो तो मनुष्य धार्मिक विनम्र, स्त्री-पुत्र, भाई बन्धु नौकरादि के ऐश्वर्य से युक्त, धन-धान्य पूर्ण, कीर्तिमान्, सुन्दर वेश में रहने वाला होता है। यदि शुक्र नीचास्त, शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य निर्लज्ज, शृङ्गारी, अश्लील, कवि, कामी, दूसरे की स्त्री पाने की इच्छा रखता है। विषयी होता है।

शनि :—जिसका शनि उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री होकर अपने शुभमित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर नवें स्थान में स्थित हो तो वह मनुष्य धनवान्, विषय वासना विरक्त, योगाभ्यास करने वाला उदासीन, दयावान्, दूसरों के दुःख से दुःखी, देर में भाग्योदय होता है। इसके अतिरिक्त यदि शनि, नीचास्त शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो पाखंडी, धन धर्म से रहित, घमंडी, वायु रोगी, छलिया, दुर्बल, दुष्टस्त्री का पति, धर्मकार्य त्यागकर केवल उदर पूर्ति के लिए कपड़े रंगनेवाला, दुर्बुद्धि, क्रोधी ईर्षालु सुख रहित होता है।

राहु :—यदि राहु उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युत होकर नवें भाव में बैठा हो तो मनुष्य बड़ा चतुर, शुभ गुणों से युक्त, तीर्थाटन करने वाला धार्मिक, कृतज्ञ, सामाजिक मिलन सार, उपकारी, बन्धु पालक होता है यदि यह नीच, शत्रु राशि का, पाप क्रुर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य भाइयों का विरोधी, जुआरी, पाप कर्म रत, चुगलखोर, ठग, रात्रि को घर से बाहर रहने वाला आचरणहीन, पिता का विरोधी, घर के धन को गँवाने वाला होता है।

केतु—जिसका केतु उच्च स्वगृही मित्र क्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर नवे भाव में बैठा हो तो मनुष्य जप, तप, दान, धर्म करने वाला दिखावटी होता है, नीच की सेवा से उसका भाग्योदय होता है और यदि केतु नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य भ्रातृविरोधी, भ्रातृपीड़क, म्लेच्छसाथी, नीच कर्मरत, बाहुपीड़ित तथा धार्मिक कार्य में अपमानित, दम्भी, उपहास करने वाला पुत्रेच्छुक होता है।

सूर्यादि ग्रहों का कर्म या राज्यगत फल

सूर्य—जिसका सूर्य उच्च, स्वगृही मित्र राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दशम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य सरकारी नौकर, धनी मानी, बुद्धिमान्, अनेक गुणों से युक्त आत्मसम्मानी, धर्मात्मा, पवित्र, नाचगाना देखने का शौकीन, तथा मिलनसार होता है। और यदि यह नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य रोगी, निरुद्यमी, मातृहीन या मातृविरोधी, स्त्री पुत्र, इष्ट मित्र सभी से विषमता रखने वाला होता है।

चन्द्र—यदि चन्द्र उच्च, स्वगृही, मित्र राशि का शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दशम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य, सरकारी नौकर, अच्छी पदवी वाला, इष्ट मित्र सभी सन्तान से सुखी, अतिथिसेवक, धार्मिक, दयालु, आज्ञा देने वाला बड़ा आदमी होता है यदि यह क्षीण, नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य पाप कर्मरत, परस्त्रीरत; बहुपुत्रीयुक्त, खाँसी, कफ, नजला, जुकाम, शरीर दुर्बल रोगी तथा उदासीन होता है वहम करता है।

मंगल—जिसका मंगल उच्च का दशम में हो तो वह मनुष्य कुलदीपक होता है। स्वगृही मित्र राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पराक्रमी, भूमिहार, धन-धान्य पूर्ण, सेवकयुक्त, राज्यप्रवेशी, धार्मिक, पूजा-पाठी, यन्त्रतन्त्र पर विश्वास करनेवाला अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये परिश्रम करनेवाला उच्चाभिलाषी होता है और यदि मंगल नीच अस्त शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य इन्द्रियलोलुप, कामी विषयी लंपट, धनहीन, पापरत, वृद्धवत् शरीर, चोर होता है।

बुध—जिसका बुध उच्च स्वगृही मित्र राशि का शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दशम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य राज्यप्रवेशी, धार्मिक विनम्र,

अल्प तथा सत्यवक्ता, दर्शनीय, धन धान्य पूर्ण, सुखभोगी, वाहनादि से युक्त उच्चाधिकारी होता है। परोपकारी, दानी तथा शुभ कर्मरत होता है। नीचास्त शत्रु राशि में पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य वाचाल, चोर, चपल, उद्दण्ड होता है।

गुरु—यदि गुरु दशम भाव में उच्च का स्वगृही मित्र की राशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य सत्कर्मी, राज्यसेवी (सरकारी नौकर), सामर्थ्यवान, वाहनयुक्त, नीतिवान, संगीतप्रिय, शुभ संगति, स्त्रियों से वर्जित तथा विचारवान होता है। पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य पिता से पृथक रहने वाला स्त्री हीन, कंजूस, स्वार्थी, होता है। यदि नीच अस्त शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पाप कर्म, परस्त्रीरत पिता से कलह करने वाला, स्त्री रहित, इष्टमित्रों से अप्रसन्न रहता है। शत्रु दवे रहते हैं। जब गुरु शुभ फलप्रद होता है तो ऑफिसर, शिल्परंग, कचेहरी वाहन. विद्वान दार्शनिक आदि भी बनाता है, किन्तु केन्द्रों में उच्च का गुरु इतना शुभ फल दायक नहीं होता।

शुक्र--जिसका शुक्र उच्च, स्वगृही, मित्र राशि का, मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दशम में बैठा हो तो वह मनुष्य स्त्री सन्तान युक्त, राज्य-प्रवेशी, धार्मिक, पंडित, तर्कशिरोमणि धन धान्य पूर्ण, सुगन्धि युक्त रहता है। और यदि शुक्र नीच अस्त शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बहुसन्तति हीन, पापरत, अनेक स्त्रीरत, कामी, पाखड़ी, आडम्बर युक्त श्रृंगारी, अश्लील, कवि तक होता है। उसका प्रेम दिखावटी होता है।

शनि—जिसका शनि उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर दशम में स्थित हो तो वह मनुष्य सत्कर्मी, धनवान, शत्रुरहित, अभिमानी, परदेशवासी, राज्यसेवी, निजी मकान बनाने वाला, पराक्रमी होता है। यदि शनि नीच अस्त शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य पाप कर्मरत, झगड़ालू स्त्री वाला, मातृ-पितृहीन अथवा उसके माता-पिता बीमार रहें, क्रूर कर्मी, पशु पालित, दुष्ट चित्त होता है। उसका धन स्त्री की बीमारी में खर्च हो और उसके शत्रु दवे रहें।

राहु—यदि राहु उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री होकर दशम भाव में अपने शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य राज्यमान्य (सरकारी नौकर), पराक्रमी, पिता सुख से रहित, सुन्दर स्त्रियों से विषय करने वाला होता है। और यदि वह नीच, शत्रु राशि का, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य अति कामी, द्वेषी, ईर्ष्यालु, वाचाल, चंचल, उन्मादी, भ्रमणशील, दुष्कर्म में धन व्यय करने वाला म्लेच्छों का साथी होता है व्याकुलता उसे रात को जी भर सोने नहीं देती।

केतु—यदि केतु उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री दशम भाव में शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य शत्रुओं को जीतने वाला पराक्रमी, पिता-माता से अनवन रखने वाला, नीच जातियों से लाभ उठाने वाला, छोटा राज्यकर्मचारी, होता है। यदि पाप क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त दृष्ट होकर नीच शत्रु राशि में स्थित हो तो अधर्मी, जपतप दानादि धार्मिक कृत्यों का उपहास करने वाला, उच्चवर्ण का द्वेषी, दुःखित, पापी, भाग्यहीन, माता-पिता में से किसी की हानि करने वाला, सर्व साधारण से ईर्ष्या रखता है। उसका मन उदास और आकृति विरूप होती है अर्थात् सुन्दर होने पर भी कोई ऐव प्रत्यक्ष देखने में दृष्टिगोचर हो ही जाता है।

सूर्यादि ग्रहों का आयगत फल

सूर्य—यदि सूर्य ग्यारहवें भाव में उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य राज्य या सरकारी नौकरी करने वाला, अनेक गुण युक्त, धनी, भाग्यवान्, उत्तम भोजन करने वाला, वाहनयुक्त, मधुभाषी, रति-क्रियाप्रवीण होता है। यदि सूर्य नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य चपल, हीन जाति की स्त्री में रत, दुर्वल देह, सन्तान के लिए अथवा सन्तान से दुखी होता है।

चन्द्र—जिसके चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में पूर्ण उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर बैठा हो तो वह मनुष्य सरकारी नौकर, तथा व्यापार से धन कमाने वाला, स्त्री सेवकों वाहन से युक्त, उदार, परोपकारी, सज्जनसेवी, शत्रु रहित होता है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो, पाप, नीच शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य, मूर्खों की संगति करने वाला, व्याधियुक्त, स्त्री, नौकर वाहन से दुखी, अधिक कन्या वाला, विफल कार्य होता है।

मंगल—यदि मंगल उच्च, स्वगृही, मित्र क्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य तेजस्वी, धनी, धार्मिक, यशस्वी, धन-धान्य पूर्ण, लोभी, प्रतापी, दर्शनीय, पशु. भूमि क्रय-विक्रय से धन कमाने वाला, सर्वत्र मान प्राप्त करता है। और यदि वह नीच, अस्त शत्रु राशि का, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य ठगी करने वाला, क्रोधी, दुष्ट वचन कहने वाला, पशु पीड़ित, रक्त प्रकोप, रक्त विकार से दुःखी, सन्तान विरोधी, परस्त्रीरत होता है।

बुध—जिसका बुध ग्यारहवें भाव में उच्च, स्वगृही, मित्र क्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य सुन्दर, दर्शनीय, पण्डित कवि, स्वाभिमानी, निरोग, राजसेवी (सरकारी नौकर) स्त्रियों को प्रिय, निज वंश की वृद्धि करने वाला, बहु कन्यावान् होता है और उनके विवाह में दहेज खूब देता है। यदि बुध नीच, शत्रु राशि का, पाप क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य कृशगात्र, सामर्थ्यहीन, मूर्ख, वाचाल, श्यामवर्ण, परस्त्रीरत होता है।

गुरु—जिसका गुरु ग्यारहवें भाव में उच्च, स्वगृही, मित्र क्षेत्री होकर, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पिता के कारोबार को संभालने वाला, धनवान्, विद्वान्, सत्यवक्ता, धार्मिक, दानी, परोपकारी, शुभ भवन में रहने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से युक्त, धन-धान्य पूर्ण होता है। यदि गुरु नीच अस्त शत्रु राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य कृपण, आत्मीयजनों का विरोधी तथा द्वेषी होता है। वाचाल, तर्क-वितर्क करने वाला, स्वार्थसाधक होता है।

शुक्र—यदि शुक्र ग्यारहवें भाव में, उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री, मित्र शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट बैंठा हो तो मनुष्य दीर्घायु, उदार, राज्यमान्य (सरकारी पदाधिकारी) कन्या, स्त्री युक्त, कीर्तिमान, कवि, विद्वान्, धार्मिक, रूप, ऐश्वर्यवान् सत्यवक्ता होता है। और यदि शुक्र नीच अस्त, शत्रु क्षेत्री होकर, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बहु कन्यावान्, दिखावटी भेष-भूषा, सुगन्धि आदि से अपने को सजाकर रखने वाला, पाखंडी, चिवल्ला होता है। और हँस-हँस कर स्त्रियों जैसी बातें करता है।

शनि—जिसका शनि एकादश भाव में उच्च स्वगृहो मित्रक्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त बैठा हो तो वह मनुष्य धनवान्, विचारवान्, सुखी, प्रतापी, शील शास्त्र का ज्ञाता, बाल-रोगी, शत्रुजित्, सज्जनों का प्रेमी, लोह कार्य का कर्त्ता, धन-धान्य पूर्ण होता है। यदि शनि नीच अस्त वक्री शत्रुक्षेत्री शत्रु पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य रोगी, सन्तान का शोक देखने वाला, विद्याहीन, क्रूर, कृष्णवर्ण, उदर शूल रोगी, प्रपंची तथा जन साधारण का द्वेषी, व्यसनी, द्यूत कर्म रत, पापी होता है।

राहु--जब राहु एकादश भाव में उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री होकर, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट, या युक्त बैठा हो तो वह मनुष्य दर्शनीय, सुन्दर, अल्पभाषी, शास्त्र का ज्ञाता, परदेश में रहने वाला, यात्राप्रिय, धार्मिक, आत्माभिमानी, विना सहायक कहीं जाना अच्छा न लगे, धनधान्यपूर्ण, सरकारी नौकर वाहन से युक्त, सर्वत्र पूज्य होता है। यदि राहु नीच, शत्रु क्षेत्री, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य प्रपंची, ठगी करने वाला, असत्य वायदा करने वाला, पराया धन हरण करने वाला, दुष्टप्रकृति, निर्लज्ज, चपल, शत्रुजित होता है।

केतु--यदि केतु एकादश भाव में उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य गौर वर्ण, दर्शनीय आकृति, कुछ न कुछ दोष लिये सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, शत्रु रहित होता है। यदि यह नीच, शत्रु क्षेत्री हो शत्रु पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य पाखण्डी, पापी, ठग, भाग्यहीन, सन्तान से दुखी, पाप कार्य रत होता है। यद्यपि एकादश भाव में धनकारक है फिर भी यह धन पाप वृत्ति से कमाया हुआ होता है।

सूर्यादि ग्रहों का व्ययगत फल

सूर्य—यदि सूर्य बारहवें भाव में उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य संग्रामविजयी, शत्रुजित, ताऊ चाचा पितादि पक्ष से क्लेश को पाता है। और यदि यह, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त अथवा नीच, शत्रु राशि का हो तो मनुष्य मन्ददृष्टि, मन्दबुद्धि, मूर्ख, कामी, पक्षिहंता, परस्त्रीरत, विलासी लम्पट, दुर्जनसंगति में धन नष्ट करने वाला, सन्तप्त, दुष्टकर्मी, धन धान्य हीन, चोर डाकुओं द्वारा धन लूटा जाय।

चन्द्र—जिसका चन्द्र द्वादश भाव में उच्च, स्वगृही, मित्र क्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त पूर्ण रूप से बैठा हो वह मनुष्य, दयालु, दुर्बलदेह, नीच की संगति में सुख अनुभव करने वाला, यात्रा प्रिय, जल भय सहित होता है। यदि चन्द्र नीच, क्षीण, शत्रु राशि का, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य नजला जुकाम पीड़ित, निर्धन, क्रोधी, झूठा, शत्रु सहित, प्रेम सम्वन्ध में निराश प्रेमी, नेत्रादि रोग ग्रसित, कुटुम्ब से दुखी होता है।

मंगल—यदि द्वादश भाव में मंगल उच्च, स्वगृही, मित्र क्षेत्री शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर स्थित हो तो मनुष्य मंगली होता है। विवाह में कठिनाई तथा देरी होती है, शत्रु का नाश करने वाला, रहस्ययुक्त, परधनेच्छुक होता है। यदि नीच अस्त, शत्रु क्षेत्री होकर पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य चंचलचित्त, विलासी, परस्त्रीरत, दुर्व्यसनी, कृपण, धर्म रहित, शरीर पर घात खानेवाला, रक्तविकार, रक्तचाप, अर्शादि से रोगी, व्यर्थ खर्चा करनेवाला, क्रूर तथा प्रचंड, निन्दित, नौकरों से दुख पाता है।

बुध-–जिसका बुध उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य कृतज्ञ, धार्मिक विद्वान्, शत्रुजित, धन धान्यपूर्ण, गौ, ब्राह्मण, गुरुभक्त, उत्तमबुद्धि, परोपकारी होता है। और यदि नीच, शत्रु, वक्री राशि का पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य विकलांग, निर्धन, पापरत, विषयासक्त, परस्त्रीविलासी, वन्धुओं से दबने वाला, दुर्बुद्धि, अपवित्र शत्रुयुक्त, दुष्टस्वभाव होता है।

गुरु—यदि गुरु द्वादश भाव में उच्च, स्वगृही मित्र क्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो मनुष्य कृतज्ञ, कृपण, मन्दवुद्धि मातृ कष्टी होता है और गुरु, यदि नीच अस्त वक्री शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य द्वेषी, हिंसक, कृतघ्न, पापी, वीमार, ठग, अपयशी, व्यर्थ द्रव्य खर्चने वाला, हृदयरोगी, परांग-मुख, तथा पाखंडी होता है।

शुक्र—-जिसका शुक्र द्वादश भाव में उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री, शुभ-मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य, कौतुकी, जल क्रीड़ा प्रिय, शुभ कर्मों में धन व्यय करने वाला, यथायोग्य व्यवहार करने वाला, सभ्य होता है। यदि नीच अस्त, शत्रु क्षेत्री, पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य विरोधी,

खर्चीला, रोगी, दुर्बल, मलिन मन, पाखंडी, कामी, परस्त्रीरत, धनहीन, निर्दय, धातु-पित्त-कफ रोगी, पराक्रमहीन होता है।

शनि---यदि शनि द्वादश भाव में लग्नेश होकर, उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो खल्वाट, शत्रुजित, परदेश में रहनेवाला, ग्रामपंचायत, निगम आदि का प्रधान होता है। यदि यह नीच, अस्त, शत्रुवक्र राशि में हो तो मनुष्य पापरत, कुकर्मी, कुरूप, निर्लज्ज, मन्ददृष्टि, कातर-कायर, दीन, कुसंगति, रोगी, घावयुक्त, कुमित्र वाला, दुष्ट स्वभाव होता है।

राहु :—जिसका राहु द्वादश भाव में उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य शुभ कार्यों में धन खर्च करने वाला, वाचाल, परदेश में रहने वाला होता है। और यदि नीच शत्रु राशि का, पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य धनरहित, वियोगी, स्त्री रहित, कुवेश, नेत्ररोगी, प्रपंची, हाथ-पैर में घाव वाला, दुष्टों का साथी, चरित्रहीन होता है। मामा रहित या मामा से अनबन या मामा से पालित होता है।

केतु :-- जिसका केतु द्वादश भाव में उच्च, स्वगृही मित्रक्षेत्री शुभमित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य धन-धान्य पूर्ण सुखी होता है। मामा का सुख नहीं मिलता, शत्रुजित, शुभ कार्यों में धन व्यय करने वाला होता है। और यदि यह नीच शत्रु क्षेत्री होकर पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उस मनुष्य को अंग-भंग, नेत्र कमर में दर्द, नाभि, लिंग, गुदा, सन्धि जोड़ों तथा दाँतों में दर्द होता है। मामा-पक्ष का सुख नहीं होता।

नोट :—यदि चन्द्रमा पूर्ण हो शुभ स्थान का स्वामी होकर शुभ स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो शुभ फल करता है और यदि क्षीण हीन बली हो तो शुभ स्थान में भी शुभ फल नहीं करता। इसके अतिरिक्त पाप क्रूर शत्रु की राशि पर होने या दृष्ट युक्त होने पर अशुभ फल करता है। इसी प्रकार बृहस्पति केन्द्र में अधिक शुभ फल कारक नहीं होता चाहे शुभाशुभ कैसे ही ग्रहों से दृष्ट या युक्त क्यों न हो। ठीक है कि कुछ फल शुभ योगों के होने पर करता है अन्यथा नहीं। शेष सभी ग्रह उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री होने पर शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो अच्छा फल करते हैं, किन्तु पाप क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर अच्छा फल नहीं करते। यदि ग्रह, अस्त, वक्री, नीच शत्रु राशि का हो और शुभ ग्रहों

से दृष्ट या युक्त हो तो विशेष खराब फल नहीं करता जितना कि पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहो से दृष्ट युक्त या शत्रु राशि का होने पर खराब फल करता है। पुरुष ग्रह स्त्री ग्रहों के साथ खराब फल नहीं करते। किन्तु पुरुष ग्रह पुरुष ग्रहों के शत्रु होने पर, उनसे दृष्ट या युक्त होने पर बहुत खराब फल करते हैं इसी प्रकार स्त्री ग्रह, स्त्री ग्रहों के साथ शत्रु राशि के होने पर अधिक खराब फल करते हैं। अस्त के ग्रह यदि उच्च या उच्चांश पर हों तो अच्छा फल शुभ भाव में बैठकर शुभ फल करते हैं। नीच के ग्रह नीच भंग होने पर शुभ फल करते हैं। तीन नीच भंग होने पर मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है। ६, ८, १२ भाव में सभो शुभ ग्रह होने से अथवा सभी ग्रह सन्धिगत होने से बहुत अच्छा राजयोग करते हैं जिससे वह मनुष्य बहुत ही उन्नति करता है। राहु-केतु इस व्यवस्था से सर्वथा अतीत हैं। ३, ६, ११ भाव में सभी पाप क्रूर ग्रह शुभ फलदायक हैं। राहु और शनि विशेष शुभ करते हैं। ११ भाव में सभी ग्रह शुभ फल करते हैं केतु विशेष शुभ फल करता है। अन्य सभी स्थानों में केतु अशुभ फलदायक होता है। केवल एक ही ग्रह के आश्रय, जबकि वह पूर्ण रूप से बली न हो पूर्ण शुभाशुभ फल प्राप्त नहीं होता।

वराहमिहिरसंहिता से—

लग्ने स्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीड़ां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं
जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकांतिदाः स्युः ॥१॥

यदि सूर्य लग्न या तनु भाव में सूर्य हो तो मनुष्य के शरीर में बेचैनी या किसी न किसी प्रकार की पीड़ा अवश्य रहती है। मंगल के होने से रक्तचाप, रक्तविकार या अर्शादि रोगों से शरीर में फोड़े फुंसियाँ आदि होते हैं। शनि के होने से वायु रोग तथा मन में अशान्ति और अनेक कष्ट दुख प्राप्त होते हैं (उसकी पिता से नहीं बनती)। गुरु, चन्द्र, शुक्र और बुध के होने से मन शान्त, ज्ञान की वृद्धि, वस्त्रादि का अनेक प्रकार से सुख प्राप्त होता है जिससे निजी शोभाकीर्ति बढ़ती है।

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रतिष्ठा-
वित्तस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः।
चन्द्रो बुधः सुर-गुरुर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः ॥२॥

सूर्य, शनि और मंगल में से कोई भी यदि धन भाव में हो तो वन का क्षय करता है और अनेक प्रकार से दुख देते हैं। किन्तु प्रतिष्ठा और वित्त को स्थिर करते हैं। चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र धन भाव में होने से वड़े परिश्रम के पश्चात् अनेक विपत्तियों को जीतने के वाद धन देते हैं।

भानुः करोति निरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रभाषम्।
सिद्धि बुधः सुधिषणः शुभनीतिवेषं
प्राणप्रियं कविशनो नीचगतौ ॥३॥

तीसरे भाव में सूर्य प्रतापवान यशस्वी चन्द्रमा कीर्तिमान और मंगल अच्छा व्याख्याता या पराक्रमी, बुध सिद्धि, गुरु शान्ति, शुक्र वस्त्रधारण का शौकीन शनि यश तथा प्रताप वढ़ाता है। शुक्र, शनि नीचांश नीचराशि गत होने पर अशुभ फल देते हैं।

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्मनि फलं नियते चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुदेहजातः
सौख्यं प्रियं प्रकुरुते यशसः प्रवृद्धिं ॥४॥

चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि मानसिक वेदना देते हैं और शारीरिक दुख भी देते हैं। जिससे मनुष्य कोई पराक्रम न कर सकने के कारण निष्फल सा ही रहता है। चन्द्रमा बुध, बृहस्पति और शुक्र में से किसी एक के होने पर मनुष्य कुलानुसार, सुख, सौख्य, यश, उन्नति को पाता है।

सुते रविः प्रचुरकोपगते बुधोऽपि
निःसंततिः शनिधरातनुजौ कुपुत्रम्।
शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसस्थाः
कुर्वंति पुत्रनिवहं सुखिनं सुरूपम्।५।

पंचम भाव में सूर्य के होने पर मनुष्य क्रोधी, राज्यपंडित (राज्यभाषा का जानने वाला) कष्ट से या देर से सन्तान का प्राप्त करने वाला, बुध के होने पर पुत्रसुख कम कन्या अधिक और शनि मंगल के होने पर मनुष्य के अयोग्य या कुपुत्र पैदा होते हैं। शुक्र, चन्द्रमा और गुरु के होने पर मनुष्य यशस्वी तथा सुन्दर पुत्रों से युक्त होता है।

मार्तण्डभूमितनुजौ यदि शत्रुपक्षं
पंगुर्नरो रिपुगृहेष्वपि पूजनीयम्।
काव्येन्दुजौ मतिविहीन मनुष्यरोगं
जीवः करोति पुरुषं विकलं शशाङ्कः ॥ ६ ॥

यदि छठे भाव में सूर्य या मंगल हो तो शत्रु पक्ष की हानि और उस मनुष्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं। शुक्र, बुध के होने पर मनुष्य बुद्धिहीन, गुरु के होने पर रोगी, अस्वस्थ और चन्द्रमा के होने पर मनुष्य बेचैन या व्याकुल रहता है।

तिग्मांशु भौम रविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसंतति च।
जोवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तं
रूपान्वितं जनमनोहररूपशीलम् ॥७॥

यदि सूर्य मंगल और शनि में से कोई भी सप्तम स्थान पर हो तो उस मनुष्य की स्त्री बच्चे और वह स्वयं पाप कर्म युक्त होता है। और यदि, गुरु शुक्र, बुध में से कोई भी सप्तम भाव में हो तो वह मनुष्य अनेक पुत्रों से युक्त सौन्दर्य विभूषित, मनमोहक बातें करने वाला, शान्तचित्त, मिलनसार होता है।

सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थितां वितनुते किल दुःखवृद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीड़ितगात्रयष्टिं
बुद्धया विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ॥८॥

अष्टम भाव में सभी ग्रह दुख देने वाले, शस्त्र से घात द्वारा शरीर को पीड़ा देने वाले, बुद्धि को नष्ट करने वाले, रोग प्रदान करने वाले तथा विरूप बनाने वाले होते हैं।

धर्मस्थिता रविशनैश्वरभूमिपुत्राः
कुर्वंति धर्मनिधनं जनयंति पापम्।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम् ॥९॥

नवम भाव में स्थित सूर्य, शनि, मंगल मनुष्य को धनहीन करके धर्म से विमुख अधर्म में लगाते हैं और चन्द्र, बुध, शुक्र, बृहस्पति मनुष्य को धन धर्म का अधीश्वर बनाते हैं। अर्थात् इन चारों के होने से मनुष्य सदैव धर्मकार्य में लगा रहता है।

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।
चन्द्रश्च कीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तं
गुणान्वितं गुरुबुधौ बहुराज्यपूज्यम् ॥१०॥

दशम भाव में यदि सूर्य, मंगल, शनि में से कोई भी ग्रह स्थित हो तो वह मनुष्य को दरिद्री बनाकर अनेक बुराइयों में फँसा देता है। चन्द्रमा, दशम में यश प्रतिष्ठा, शुक्र अनेक धन, गुरु अनेक गुण प्रदान करता है और बुध राजमान्य प्रतिष्ठा प्रदान करता है, नौकरी मिल जाती है।

लाभस्थितो दिनकरं नृपलक्ष्मयुक्तं,
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितारम्।
सोम्यो विवेकवसतिं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति सुधनं रविजः सुकीर्तिम् ॥११॥

एकादश भाव में स्थित सूर्य मनुष्य को बड़ा, चन्द्रमा धनवान्, मंगल जायदाद वाला बनाता है। चन्द्रमा, विवेक तथा ज्ञान देता है, गुरु भाग्यवान् बनाता है। शुक्र अनेक धन और शनि मान प्रतिष्ठा तथा सुयश प्रदान करता है।

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगः कुशीलं,
काणं शशिः क्षितिसुतो बहुपापयुक्तम्।
चन्द्राङ्गजोऽतिनिधनं धिषणः कृशाङ्गं
शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ॥१२॥

बारहवें भाव में स्थित सूर्य मनुष्य को चरित्रहीन, चन्द्रमा ज्योतिहीन, कांणा, मंगल अनेक पाप करवाने वाला होता है। बुध मनुष्य को श्री कान्तिहीन, और शुक्र दुर्बल, ढेंणा, कांणा और शनि बहुत धन खर्च करवाने वाला बनाता है, क्रोध उत्पन्न करता है।

मेष

तनु—रक्त वर्ण शरीर, विलक्षण, अल्पबुद्धि, पित्ताधिक, सर्वभक्ष, सर्व जनोपसेव्य होता है।

धनु—पुण्यकार्यरत, पशु व्यापार दक्ष, भ्राता से धन लाभ करनेवाला होता है।

सहज—ब्राह्मण से मित्रता, परोपकारी, पराक्रमी नौकर, विशेषज्ञ।

सुख—चतुष्पद, स्त्री अन्न, कृषि, स्वभुज धनोपार्जन से सुख मिलता है।

सुत—विघ्नकारी, क्रूर, सुखहीन, मोहानुरक्त, कुचरित्र घमंडी पुत्र होते हैं।

रिपु—पशुओं से भयभीत तथा नीच मलेच्छों से शत्रुता रखते हैं।

जाया—स्त्री चंचल, पापी स्वार्थी परपुरुषरत उसके पास में वेश्या या कुचरित्र स्त्री अवश्य रहतो हो।

आयु—विदेश या घर से बाहर भजन कीर्तन करते-करते मृत्यु हो।

धर्म—दानी हो पशुपालन से प्रेम हो।

कर्म—कामी, हृष्टपुष्ट, दुष्ट विनयहीन निन्दक होता है।

लाभ—पशु प्रिय, नृपसेवी देशान्तर या घर से बाहर लाभ पाने वाला होता है।

व्यय—चक्षु रोगी, पुरुषार्थी, अनेक पदार्थ खाने वाला, खर्चीला होता है।

वृष

तनु—श्वेतवर्ण कफ प्रकृति, क्रोधी, कृतघ्न, स्थिर मन्द बुद्धि, पराजित स्त्रीरत कामी होता है।

धनु—पशु, कृषि, अन्न, जवाहरात, मोती कीमती पत्थरों से लाभ तथा वैभव वाला होता है।

सहज—प्रबल, धनिकों का मित्र, भू पशु संग्रह करने वाला, धर्मभीरु होता है।

सुख—राज्यसेवा, शूरता, विप्र वृत्ति, यमनियम, व्रत तथा धर्म कर्म से सुख तथा धन मिलता है।

सुत—मनोहर, सुशील आज्ञाकारी, सुखद पुत्र होते हैं। बलवान्।

रिपु—पशुओं से घात कष्ट चोट लगती है। स्त्री असत्य से भ्रातृ-कलह होती है।

जाया—सर्वगुणसंपन्न, दानी धार्मिक, भक्त, शान्त नेक स्त्री होती है।

आयु—कफ या श्वास हृदय गति रुकने से या किसी पशुघात से रात्रि समय मृत्यु हो।

धर्म—गुप्तदानी, पशु प्रेमी, वस्त्र धनादि का प्रेमी हो।

कर्म—स्वार्थी, व्ययी दुख देने वाला होता है।

लाभ—स्त्री, स्वजन कृषि से लाभ पाता है।

व्यय—सैनिक शिक्षा से उद्योग पराक्रम से भी कम लाभ हो।

मिथुन

तनु—गौरवर्ण, प्रसन्न, कामासक्त, सुन्दर, गीतप्रिय, नृपसेवी, विचक्षण सभीत होता है।

धनु—स्त्री, चाँदी सोना आदि धातुओं से, पशु पक्षियों के व्यापार से धन लाभ करता है।

सहज—वैश्य का मित्र, कृषिप्रेमी, धार्मिक सुशील, योग्यजनों में मान पाने वाला।

सुख—स्त्री, जलाशय, पुष्प वनौषधि, कृषि वस्त्रादि से सुख मिलता है।

सुत—मनोहर, सुशील मधुभाषी, कोमल पुत्र होते हैं।

रिपु—स्त्री, वैश्य जाति अछूत, नीचों से झगड़ा रहता है।

जाया—सुन्दर स्त्री, सदा ही नव वस्त्र धारण करने वाली चंचल गुणहीन स्त्री मिले।

आयु—प्रमेह, अर्श जल स्त्री या स्नेह के प्रसंग में मृत्यु हो।

धर्म—दीन, अतिथि, विप्र को भोजन कराने वाला, दानी, दयालु होता है।

कर्म—कृषक, द्विजभक्त, बड़ों का मान करने वाला यशस्वी होता है।

लाभ—स्त्री, कन्या, वस्त्र वाहन से धन तथा मान लाभ करता है।

व्यय—स्त्री, पुत्रादि के बुरे आचरण की निवृत्ति में खर्च हो।

कर्क

तनु--गौर-श्याम वर्ण पित्ताधिक बुद्धिमान्, तैराक, प्रगल्भ, क्षमावान्, धर्म कर्म रत, कामासक्त होता है।

धनु--न्यायी, प्रिय सुन्दर भोजन करने वाला, गृह समीप में वृक्ष कुआं तालाब, नदी आदि होते हैं।

सहज--ब्राह्मणमित्र, नम्र शान्त, सुधर्मी देवाराधक, दुर्बल।

सुख--जल, जलोत्पन्न पदार्थ बाग, अच्छे मकानादि से सुख धन मिलता है।

सुत--श्रेष्ठ पुत्रों के होने पर भी पुत्रेच्छा बनी रहती है।

रिपु--उच्च वर्ण से वैर तथा झगड़ा रहता है।

जाया--मनोहर, सुशील, सौभाग्यवती स्त्री प्राप्त हो।

आयु--जल, पशु, विषैले कीट सर्पादि या घर से बाहर परदेश सफर में दुर्घटना से मृत्यु हो।

धर्म--व्रती, यम नियम भक्ति करने वाला, तीर्थाटन देशाटन, सिन्धु यात्री भी होता है।

कर्म--दयार्द्र, धर्मी, पुष्पबाग वाटिका फुलवाड़ी जलाशयादि लगाने का शौकीन, शारीरिक कृत्रिमता अधिक होती है।

लाभ--वस्त्र धातु व्यापार कृषि साधु संगति से लाभ पाता है।

व्यय--देव द्विज साधु संगति अतिथि सेवा में धन व्यय हो।

सिंह

तनु--मिश्रितवर्ण, वातपित्त, मांसभक्षी, शूर क्रूर, धीर, रूक्ष व्यंगयुक्त प्रतिभावान्, निर्भीक, मोहजित।

धनु--परोपकारी, पराक्रमी, वन, बाग में घर या घर में फुलवाड़ी वृक्षादि, समीप में कुआ होता है।

सहज--शूद्रमित्र, वाचाल, प्रचंड, चोर, दगाबाज, तिरस्कृत।

सुख--हठयोग, वनाश्रय से सुख मिलता है और वह क्रोधी मित्ररहित कष्ट से भोजन मिलता है जीवन दुःखी रहता है।

सुत--विदेशरत, मांसपेभक्षी क्रूर, धूर्त, क्षुधातुर पुत्र होते हैं।

रिपु--स्त्री पुत्रादि से कलह या वैर रहता है।

जाया--चपल दुष्ट क्रोधी दुर्वसना, पेटार्थी स्वार्थी स्त्री मिले ।

आयु--पशु, विषैले जीवजन्तु चोर डाकू आदि के घात से मृत्यु हो ।

धर्म--क्रूर, स्वधर्महीन, परधर्मरत गंभीर सुस्वरूप होता है ।

कर्म--अधर्मी पापी हिंसक निन्दक होता है ।

लाभ--नौकरी पुलिस सेना, मनुष्यों के वध बन्धन, जेलर आदि का पुत्र लाभ पाता है ।

व्यय--पशुप्रवृत्ति, साधु द्विज विरोध, कुपात्र और कुमार्ग में व्यय हो ।

कन्या

तनु--सुन्दर, कफपित्त, निपुत्र, भीरु, मायावी, कामासक्त, परस्त्रीरत, मधुर कंठ होता है ।

धनु--घर के समीप पशु पलते हो या घर में गाय बकरी कुत्तादि हो, रत्न, मुक्ता, सुवर्णादि की दूकान अपनी या पड़ोसी की हो ।

सहज--गुरु धर्म स्त्रियों में प्रीति युक्त, कामी, पराक्रमशून्य होता है ।

सुख--परिश्रम, उद्योग नौकरी तथा स्त्री की सहायता से धन या सुख मिलता है ।

सुत--स्वजनहीना, सुशील, गुणी कन्या होती है ।

रिपु--स्त्री, स्वजन इष्ट मित्रों से धन धर्म के कारण झगड़ा बैर रहता है ।

जाया--सुन्दर, नम्र, प्रियेवदा सुखी-निःसन्तान स्त्री मिले ।

आयु--स्त्री, स्वजन द्वारा विषया हिंसक पशु या विषैले कीट द्वारा मृत्यु हो ।

धर्म--पाखंडी, परधर्मरत, स्त्रीसेवी, कामी लम्पट होता है ।

कर्म--हिंसक, निन्दक, स्वजन परिजन राज्य विरोधी होता है ।

लाभ—विवेक, शास्त्रसाधुसंगति, तन्त्र मन्त्र से लाभ पाता है ।

व्यय—स्त्री, विवाह योगादि माङ्गलक कार्यों में कम धन व्यय होता है ।

तुला

तनु--कफाधिक, व्यंगयुक्त स्पष्ट वक्ता, माता भक्त, धोखेबाज, प्रियंवद यन्त्र तन्त्र वाला धर्म भीरु, चलचित्त होता है ।

धनु--सच्चा, न्यायी, कम धनी, पड़ौस में दूकान कुँआ जल जलाश्रय नल आदि होते हैं ।

सहज--दुष्ट, विषयी, कुकर्मी, लम्पट मित्र, पापयुक्त विषय वार्तारत होता है।

सुख--पिशुनता, चोरी, लड़ाई प्रेम, हंसी, मस्करी छल छिद्र से धन सुख मिलता है।

सुत--सुशील, शान्त, श्रेष्ठ पुत्र होते हैं। सन्तान नहीं या कम होती है।

रिपु--सभी श्रेष्ठ जनों से वैर रहता है।

जाया--पवित्र, सुन्दर, भक्त सुखी स्त्री मिले।

आयु--ठोकर से द्विपद प्रहार, उपवास, सन्निपात बुखारादि से मृत्यु हो।

धर्म--देव, द्विज बालक परिजन अतिथि सेवक होता हैं।

कर्म--प्रभावशाली व्यापारी अभिनय करने वाला कलाकार होता हैं।

लाभ--वनोत्पन्न पदार्थ गुरुजनों की सेवा से लाभ पाता हैं।

व्यय--देव द्विज, साधु अतिथि, तीर्थ यात्रा यमनियम व्रतादि पालन में धन खर्च हो।

वृश्चिक

तनु--क्रोधी, असत्यवक्ता, गुणी, राज्यसेवी, वाचाल, शत्रुजित शास्त्री, कामासक्त होता है।

धनु--पड़ौस में जौहरी, कपड़ा धन धान्य मिट्टी या वर्तन की दूकान, कुम्हार का मकान होता है।

सहज--दुष्ट, म्लेच्छ, कृतघ्न निर्लज्ज पापियों का मित्र, पापरत रहता है।

सुख--जलज पदार्थ से विष शास्त्र, नीच की सेवा, हृदय को ठेस पहुँच कर सुख मिलता है।

सुत--श्रेष्ठ, बलवान पुत्र होते हैं।

रिपु--पशुओं मनुष्यों से घात तथा बैर रहता है।

जाया--कृपण, कुसंगी, दम्भी, अपवित्र स्त्री मिले।

आयु--मुख रोग, विषैले फोड़े, कैन्सर, पथरी, पशु, विष, कीट द्वारा मृत्यु हो।

धर्म--पाखंडी, भक्तिहीन, परपीड़क होता है।

कर्म--निर्दयी, निन्दक, देवद्विजशत्रु होता है।

लाभ--छल, कपट, पाप, ठग, चुगलखोरी झूठ, सच लगाकर लाभ पाता है।

व्यय--निन्दित कर्मों में खर्च होता है।

धन

तनु--राज्यसेवी, सत्कारी, द्विज देव मित्रादि का भक्त, वाहनयुक्त पशु, रक्षक, वीर, प्रतापी होता है।

धनु--धनी, मानी, यशस्वी, पशुप्रेमी, धार्मिक विद्या से धनोपार्जन करता है।

सहज--शूर, धार्मिक, विद्वान्, सज्जन, ऑफीसर डाक्टरादि बड़े जनों से मित्रता रखता है।

सुख--गुप्तचर, सेना, पुलिस धूर्त साधु तन्त्र-मंत्र से सुख मिलता है।

सुत--बहादुर, सैनिक, पुलिस में, युद्ध-प्रिय पुत्र होते हैं।

रिपु--सभी से वैर।

जाया--पुरुषाकृति, निष्ठुर सुखहीन स्त्री मिले, स्त्रीसंगरहित, पुरुष साधु संग होता है।

आयु--गुल्मरोग, चतुष्पद जलाश्रय जलचर से मृत्यु हो।

धर्म--द्विज गौ भक्त, सन्तोषी, आत्मसंयमी, धर्मरत प्रसिद्ध होता है।

कर्म--चोर सेवक, गरीबों की भोजनादि से सेवा करने वाला डाकू होता है।

लाभ--राज्यसेवा, पुष्प बाग वस्त्र व्यापार देवाराधन से धनलाभ पुजारी कर्म से।

व्यय--दुष्ट संगति में खर्च, कृषि, धोखा, ठगी करने से लाभ रहता है।

मकर

तनु--सुन्दराकृति संतोषी, सत्कर्मी, कफवातयुक्त दीर्घगात, कामी, मन्द-बुद्धि, परवंचक होता है।

धनु--विविध प्रपंच, कृषि, नौकरी, जलाश्रय, परदेश से धनलाभ होता है।

सहज--सुखी, धनी, देव गुरु भक्त, पंडित, सज्जनों का मित्र होता है।

सुख—जलाशय, बन, बाग, माता-पिता, साधु सेवा आदि से धन लाभ होता है।

सुत—कुरूप, पापी, कुकर्मी, क्लीब, शक्तिहीन, बातून पुत्र होते हैं।

रिपु—मित्र साधु स्वजन आदि से बैर होता है।

जाया—परपुरुषरत, निर्लज्ज, दुष्ट, लड़ाकू स्त्री मिलती है।

आयु—धन के समान।

धर्म—धन के समान।

कर्म—धर्महीन, पथभ्रष्ट, दुष्ट पापी, बन्धु-विरोधी होता है।

लाभ—नौकरी, परदेश में निवास, जलपानगृह या धनिक सेवा से लाभ होता है।

व्यय—परसेवा, आसव आदि के क्रय-विक्रय से लाभ होता है।

कुम्भ

तनु—सुन्दर जनवल्लभ, इष्टमित्रों से युक्त, जलप्रेमी, स्थिर कफ वात प्रकृति, कामासक्त, स्त्रीरत होता है।

धनु—फल, पुष्प, जल, जमीन बागादि क्रय-विक्रय से लाभ होता है, जल या वाटिका के समीप जन्म होता है।

सहज—विद्वानों का मित्र, वेदों का विज्ञ तथा कुशल व्यवहार नीतिज्ञ होता है।

सुख—कपटाचरण, छल छिद्र, स्त्रियों की चापलूसी, पुष्पादि क्रय-विक्रय, व्याख्यान गानादि से लाभ होता है।

सुत—गंभीर, शक्तिमान्, कीर्तियुक्त, पुत्र कष्ट से होते हैं, सन्तान नहीं भी होती।

रिपु—जल, कृषि, खेत, मिट्टी आदि के लिए झगड़ा, बैर रहता है।

जाया—पतिव्रता, धार्मिक स्त्री मिले।

आयु—अग्नि, पित्त, जलोदर, विष, जलाशयादि से मृत्यु हो।

धर्म—देवाराधक, अग्नि, वृक्ष बाग जलाशय प्रिय, धर्म कर्मरत, परमार्थी होता है।

कर्म—धर्म-कर्मरत, देवद्विज भक्त, पद प्रतिष्ठावान होता है।

लाभ—न्याय धर्म, पराक्रम, विश्वप्रेम, साधु संगति से लाभ होता है।

व्यय—देवद्विज, साधु, अतिथि, मन्त्र-तन्त्र सिद्धि में धन व्यय होता है।

मीन

तनु—सुन्दर, विनीत पंडित, कामी, स्त्रीरत, यशस्वी, पित्ताधिक, कफ-प्रकृति, बहु सन्तति होता है।

धनु—स्कूल, मन्दिर, अस्पताल, वृक्षादि घर के समीप हों, कृषि, जल, वनस्पति, घड़ीसाजी आदि कलाओं से आजीविका चलती है।

सहज—दास, भक्ष्याभक्ष्य, कुशीलव, शृंगारी, अश्लील, दुष्ट, कविता, गीत प्रिय होता है।

सुख—जलाश्रय, देवालय, कौतुकी बातों से, विद्या से लाभ तथा सुख प्राप्त होता है।

सुत—भार्यासक्त, रोगी, पाप, शक्तिहीन, अल्पवीर्य, कमजोर, सुन्दर पुत्र होता है।

रिपु—स्त्री पुत्रादि से वैर या स्त्री पुत्रादि का न होना बताता है।

जाया—रोगी, कुपुत्रा, अधर्मी, कलहप्रिय, स्त्री मित्र।

आयु—अतिसार, पित्तज्वर, जल, रक्तप्रकोप, रक्तचाप, रक्तविकार से मृत्यु हो।

धर्म—बाग, प्याऊ, तालाब, कुआँ, धर्मशालादि बनाने वाला, उपकारी होता है।

कर्म—मतलबी, पाखंडी, विश्वासहीन लोगों का विरोधी होता है।

लाभ—मित्र, नम्रता, उद्योग, व्यवहार कुशलता से लाभ होता है।

व्यय—जल, नभ, पृथ्वी, यात्रा, सवारी, मुकदमें आदि में धन खर्च होता है।

शुभाशुभ फल विचार

शनि, राहु, केतु ३-६-११ स्थानों में शुभ फल देते हैं।

सूर्य-मंगल १०-११ स्थानों में शुभ फल देते हैं।

चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र ५-९ स्थानों में शुभ फल करते हैं।

राहु-शनि; चन्द्र-गुरु; सूर्य-मंगल अतिमित्र हैं।

सूर्य-राहु-शनि; गुरु-शुक्र; चन्द्र-बुध अतिशत्रु हैं।

स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, सम, अधिमित्र तथा उच्च के ग्रह शुभभाव में शुभ फल और अशुभ शत्रुराशि तथा भाव में अनिष्ट फल करते हैं।

सूर्य-मंगल-राहु ग्रीष्म ऋतु में, चन्द्र वर्षा में, बुध शरद में, बृहस्पति हेमन्त में, शनि-केतु शिशिर में और शुक्र वसन्त में पूर्ण फल करते हैं। विपरीत ऋतु में न्यून फल करते हैं।

संयोग दो प्रकार का होता है। प्रथम दृष्टि, दूसरा योग। या युति

पाप ग्रहों की दृष्टि फलदायक होती है। शुभ ग्रहों का योग शुभ स्थानों में शुभ फल दायक होता है। राहु केतु के अतिरिक्त सभी ग्रह सूर्य के साथ होने से अस्त हो जाते हैं किन्तु किसी-किसी आचार्य के मत में बुध सूर्य के साथ अस्त नहीं होता। चन्द्रमा के साथ गुरु का शुभ स्थान पर योग शुभ फलदायक होता है। मंगल को छोड़कर सभी ग्रह गुरु के साथ, सूर्य-चन्द्र-बुध के साथ शुक्र, चन्द्र के साथ सूर्य, सूर्य या चन्द्र के साथ बुध, उच्च या स्वक्षेत्री ग्रहों के साथ अशुभ समागम भी कुछ अच्छा फल करता है शेष सभी समागम अशुभ फलदायक होते हैं।

सूर्य के साथ १२ अंशतक, प्रत्येक ग्रह अस्त हो जाता है। १५ अंश तक शुभ फल देता है।

सूर्य से पृथक घर में उदय २ स्थान में शीघ्रगति वाले, ३ घर में सम, ४ घर में मन्द गति ५-६ में वक्री ७-८ में अति वक्री हो जाते हैं। ९-१० घर में मार्गी और ११-१२ घर में अति मार्गी ग्रह हो जाते हैं। क्रूर ग्रहों का वक्री होना बड़ा क्रूर फल करता है, तथा सौम्य ग्रहों का वक्री होना अति सौम्य फल करता है।

शनि और केतु की महामारक संज्ञा है २, ७, ८ स्थानों के स्वामी मारकेश कहलाते हैं। छठे भाव में पाप ग्रहों के होने से षष्ठेश की मुख्य मारक गति होती है।

छठे सूर्य, चौथे चन्द्रमा, त्रिकोण गुरु, लग्न में शुक्र, तीसरे शनि ग्यारहवें स्थान में सभी ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं।

सूर्य से नवें पिता, चन्द्र से चतुर्थ माता, मंगल से तृतीय भाई, बुध से छठे मामा, गुरु से पंचम पुत्र, शुक्र से सप्तम स्त्री, शनि से अष्टम मृत्यु तथा वंश का विचार, धन का विचार; २, ५, ९ से सुख का विचार; ४-१० से कीर्ति-यश, मान, प्रतिष्ठा का भी विचार करना चाहिये।

सूर्य—दशम भाव में होने से दिमागी कार्य करवाता है। हैड मास्टर, क्लर्क, मन्त्री, ज्योतिषी, डाक्टर, प्रोफेसर आदि बनाता है। विशेषोन्नति २२, ७० वर्ष में होती है।

चन्द्र—दशम भाव में होने से सर्व साधारण की सेवा करवाता है मल्लाह, पुलिस, सेना, फेरी वाला, जनरल मर्चेन्ट आदि। उच्च का होने पर मिनिष्टर, सेठ या कोई आज्ञा देने वाला अधिकारी (ओफीसर) होता है। भाग्योदय २४, ४३ में होता है।

मंगल—दशम भाव में होने से यन्त्र (कल) मन्त्र (पूजा) व्यायाम, पहलवान, पुलिस, सेना, चीरफाड़ डाक्टर, सर्जन, जर्राह आदि कार्य करवाता है। पूर्णांश पर उच्च का होने से मनुष्य कुलदीपक होता है। भाग्योदय २८, ५८ पर होता है।

बुध—दशम भाव में होने से लेखक, मुनीम, गुमास्ता, पुस्तकविक्रेता, मास्टर, पटवारी, पुजारी, पण्डित, क्लर्क आदि बनाता है। भाग्योदय १२, ३२, ४२ में करता है।

गुरु—दशम भाव में होने से सौदागर, बजाज, क्लर्क, पंडित, जज, न्याया-धीश, वैद्य, डाक्टर, मास्टर, प्रोफेसर आदि बनाता है। भाग्योदय १६, ३४, ५० में करता है।

शुक्र—दशम भाव में होने से प्रसन्न करने वाली सभी आजीविकायें करवाता है। जैसे गायन, वाद्य बजाना, शिल्प कला, नाटच, नकल करना, ड्रामा, प्रहसन,

गल्प-लेखक, श्रृङ्गार, प्रेम, सजावट, फर्नीचर आदि के कार्य (गेम के कार्य) करवाता है। भाग्योदय २५-३२ में होता है।

शनि—दशम भाव में होने से उद्योग, मेहनत, परिश्रम-कार्य जैसे खेती, वैद्यक, फैक्ट्री, लुहार, बढ़ई, वैद्यक, टैक्सी ड्राईवर, एंजिन ड्राईवर, खलासी आदि कार्य तथा मन को स्थिर करने वाले कार्य उदासी, साधु, तप, संन्यास, नीचों में प्रसिद्धि प्राप्त करवाता है। भाग्योदय ३६, ४२, ७२, ८३ में करता है।

उपर्युक्त विचार दशम भाव में होता है, किन्तु छठा भाव मनुष्य की इच्छा के के प्रतिकूल भावना को व्यक्त करता है कि विवश होकर मनुष्य को क्या करना पड़ेगा।

राहु—दशम भाव में होने से ठेकेदारी, लकड़ी का कार्य, क्लर्की करवाता है भाग्योदय ४२ में होता है।

केतु—दशम भाव में होने से राहु-जैसा फल करता है। विशेष उन्नति नहीं करने देता, पिता से झगड़ा या मनमुटाव रखता है, माता को कष्ट पहुँचाता है।

सूर्य—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य दास, नौकर बनाता बन्धुओं से वर्जित करता है।

चन्द्र—जन्मसमय नीच हो तो मनुष्य को रोगी, धनहीन, दुर्भागी होता है।

मंगल—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य नीच कर्म रत, व्यसनी, लम्पट, कुत्सित होता है।

बुध—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य दुष्ट, क्षुद्रबुद्धि, वान्धव-बालशत्रु बनाता है।

गुरु—जन्म समय नोच हो तो मनुष्य सदैव दुखी, मलिनमन, पराजित, धनहीन होता है।

शुक्र—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य स्त्रीरहित, स्वेच्छाचारी, शील-रहित बनाता है।

शनि—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य काना, दरिद्री होता है।

राहु—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य क्रोधी, उद्यम रहित रहता है।

केतु—जन्म समय नीच हो तो मनुष्य आश्रयहीन, निकम्मा, दुखित रहता है।

ग्रह	स्वग्रही	मित्रग्रही	शत्रुग्रही	केन्द्रफल	युतिफल	विचार
सूर्य	उग्रस्वभाव, धनवान	साक्षर, विद्वान प्रसिद्ध स्थिर मैत्री	निर्धन, विषयी	राज्यसेवा	यदि तृतीयेश सूर्य से युक्त हो तो पंडित होता है।	सूर्य से पितृ विचार होता है।
चन्द्र	धर्मी, सज्जन, उदार, सुन्दर	भाग्यवान चतुर धनवान	हृदयरोगी प्रेमोन्माद	व्यापार	धैर्यवान	मातृविचार
मंगल	धनवान, लड़ाकू विजयी	सैनिक, सिपाही शस्त्री बहादुर	मूर्ख स्त्री वाला निर्धन	युद्धप्रिय शूर पहलवान	क्रोधी	लड़ाई, युद्ध बहादुराना कार्य
बुध	धनवान, पंडित, शिल्पी	रूपवान, धनवान	मूर्ख, गूंगा, दुखी	अध्यापक	सच्चा, सद्बुद्धि	बुद्धिविचार
गुरु	धनवान, पंडित, शास्त्रज्ञ, कवि	पूज्य, धार्मिक सत्कारी	नपुंसक, भूखा वेकार	धार्मिक अनुष्ठानी	विद्वान	सुखविचार
शुक्र	धनवान, कृषक	धनवान, बन्धुप्रिय	दास, भृत्य दुखित कुबुद्धि	विद्यावान, धनी	कामी	स्त्रीवाहन, आभूषण
शनि	मान्य खलस्वभाव	कुकर्मी, पराया	व्याधियुक्त,	नीच का सेवक	मूर्ख जड़	आयुविचार
राहु	,, ,,	अन्न, खानेवाला	सन्तप्त धनरहित, मलिन	,,	,, ,,	
केतु	दुष्ट हानि कारक	भिक्षुक	,,		,, ,,	

ग्रह	छठास्थान	सप्तम स्थान	द्वादश स्थान
सूर्य	सिर में घाव	वहु स्त्रियों से प्रेम	खर्चीला
चन्द्र	चेहरा या मुख में घाव	परस्त्रीगामी	कृपण
मंगल	गले में घाव	परस्त्रीरत, कुलघ्न, लम्पट	झगड़े में व्यय करे
बुध	नाभि में घाव	परस्त्रीगामी	शुभ कार्यों में खर्च
गुरु	नाक में घाव	परस्त्रीप्रेमी	शुभ कार्य में खर्च
शुक्र	गाल, आँख के पास घाव	कामी, परस्त्रीरत	विषय वासना में खर्च
शनि	पैर में घाव	कुत्सित स्त्री रत	असत् कार्य में खर्च
राहु केतु	बगल, करवट में घाव	सप्तमेश युक्त व्यभिचारी	झूठे, व्यर्थ कार्य में खर्च

राहु केतु केन्द्र त्रिकोण में तब शुभ फल करते हैं जवकि वे जिस राशि वैठे हो उससे युक्त या पूर्ण दृष्ट हों।

किसी भी ग्रह के अशुभ समय में यदि शनि १, ८, २, १२ में हो बुरा फल करता है। शनि ४ में, गुरु ६ में, मंगल ओर राहु ५ वें भाव में बुरा फल करते हैं।

सभी अशुभ, पाप और क्रूर ग्रह ३, ६, ११, ४, ६ में विशेषकर राहु फल करता है।

शुक्र १०, ११, १२ में, अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त न होने पर शुभ फल करता है।

शुभ ग्रह ६, ८, १२ में अशुभ और अशुभ ग्रह ६, ८, १२ में शुभ फल करते हैं।

विशेष ग्रह फल

यदि शनि चन्द्र, जलराशि में हों तो मनुष्य को, गर्मी-सर्दी वायुवद्ध बनाते हैं। और यदि ये दोनों कुम्भ राशि में हों तो मनुष्य बोलते समय खंगारता है

और बार-बार कन्धे से गर्दन रगड़ता है। और गुरु चन्द्र के होने पर पेट बड़ा और बहुत केश युक्त होता है।

कन्या राशि में चन्द्र-शुक्र होने से मनुष्य अच्छा कवि, अच्छा गायक, कला-कृतियों का जानने वाला, कागज की जाली, फूल पत्ते, अच्छी ड्राइंग बनाने वाला, सुन्दर गोल अक्षर लिखने वाला, नाखून पर चित्र, अक्षर लिखने वाला, सींग हाथी दांत पर कारीगरी दिखाने वाला गुणी होता है।

लग्न या चन्द्रमा से नवें भाव में गुरु के होने पर मनुष्य शिक्षक धर्माचार्य होता है। मकर राशि में गुरु या चन्द्र होने पर मनुष्य आडम्बरी पुजारी या साधु होता है। गुरु शनि केन्द्र योग होने पर मनुष्य निःसन्तान या निपुत्र होता है।

एकादश भाव में शनि होने पर पंचम राहु होने पर सन्तान देर में होती है। मेष, वृष, कर्क का राहु पंचम या एकादश में हो या मंगल हर्शल, राहु इन स्थानों में एक दूसरे युक्त दृष्ट हों तो गर्भपात हो, बालक काट कर निकाला जाय या फिर होते ही मर जाता है।

तीसरे स्थान में कर्क, मकर, वृश्चिक, मीन राशि हो तो बहन भाई बहुत होते हैं। और यदि मेष, सिंह धन वृश्चिक या शनि हो तो भाई-बहन सभी जीवित नहीं रहते कुछ की मृत्यु अवश्य हो। रवि मंगल के होने से पिता, पुत्रादि के होने पर भी दुखी रहता है। स्त्री के गर्भ पात या पिता से पुत्रों को सुख नहीं पहुँचता।

दूसरे भाव का हर्शल उसके जन्म से ७ वर्ष पर्यन्त घर में किसी न किसी की मृत्यु अवश्य करता है। हर्शल किसी भी स्थान में उस स्थान सम्बन्धी हानि करता है।

शनि चन्द्र योग चतुर्थ में हर्शल दशम में माता-पिता की साथ मृत्यु करता है। नवम में उच्च या स्वगृही गुरु प्रसिद्धि देता है।

यदि लग्न या सप्तम में, शुक्र चन्द्र हो तो वह मनुष्य प्रेम विवाह (Love Mariage) करता है। बुध-गुरु हो तो उसकी स्त्री अद्वितीय सुन्दरी होती है किन्तु शनि से या दूसरे पापी क्रूर ग्रहों से दृष्ट होने पर स्त्री रोगी या कृष्ण वर्ण होती है।

सप्तम हर्शल, स्त्रीकलह, अनबन, स्त्रीवियोग कराता है।

सिंह का मंगल दशम में खूब उन्नति करवाता है। राहु, शनि अवनति करवाते हैं।

चतुर्थ स्थान में गुरु, शुक्र, बुधादि शुभग्रह के होने पर मनुष्य को बाग, कृषि फुलवाड़ी, सागसब्जी उत्पन्न करने का शौक होता है।

सप्तम भाव में जितने पाप क्रूर ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो या सप्तम से नवम स्थान तक जितने भी ग्रह हों उनमें से जितने ग्रह पूर्णबली हों उतने ही विवाह होते हैं। बल के अभाव में कभी-कभी विवाह तक नहीं हो पाता।

जिस कुंडली में शुक्र, शनि की राशि का पंचम में हो उसके ५ पुत्र होते हैं।

यदि बुध और शुक्र लाभ स्थान में हो तो उस मनुष्य की प्रथम सन्तान लड़की होती है। यदि वह जीवित रहे तो उसके विवाह समय बड़ी ही परेशानी होती है।

जिस कुण्डली में कर्क का चन्द्रमा लग्न में हो तो उस आदमी की मृत्यु पानी में डूब कर, जलोदर या फिर नजला जुकाम के बिगड़ जाने से होती है।

यदि चन्द्र से शनि सप्तम कुंडली में हो तो वह मनुष्य हथलस करने वाला होता है और मंगल से दृष्ट होने पर वह मनुष्य टट्टी या स्नानागार में वीर्य त्याग करता है।

यदि मंगल शनि को पूर्ण दृष्टि से देखे तो मनुष्य लौंडेवाज होता है एकाकी पुरुष ग्रह के एकाकी पुरुष से दृष्ट होने पर उपर्युक्त परिणाम होता है।

कर्क का मंगल शनि से दृष्ट होने पर पुरुष छोटी-छोटी कन्याओं को अंगुलियाता, विषयवासना तृप्त करता और साथ ही अपनी स्त्री की गुदा भोग करता है।

द्वादश भावगत मंगल यदि उच्च, नीच, शत्रु राशि का एकाकी हो वह पुरुष स्त्री मुख से आकर्षित न होकर स्तन भाग से आकर्षित होता है। शनि, केतु, राहु से दृष्ट होने पर नीच जाति को स्त्रियों से वासना-तृप्ति की इच्छा करता है या विषय करता है।

यदि एकाकी शनि लग्न में हो या लग्न को देखे तो मनुष्य का शब्द तीव्र भारी कृष्णवर्ण होता है। टेवे में यदि गुरु उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो उस मनुष्य का एक पुत्र कुलदीपक होता है और वह मकान बनवाता है। शुभ ग्रह से दृष्ट होने पर और पाप ग्रहों से दृष्ट होने पर पुराने मकान का जीर्णोद्धार करता है।

यदि सूर्य सप्तम में हो तो मनुष्य को आतों का रोग, शूलदर्द क्षयादि रोग होते हैं। और यदि २, १२ भाव में हो और शुक्र से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य को काणा बनाता है। और यदि सूर्य दशमेश, चतुर्थेश, पंचमेश, षष्ठेश, सप्तमेश होकर २, १२ भाव में हो और साथ ही शुक्र से पूर्ण होने पर क्रमशः पिता-माता, पुत्र, (मामा, भाई) स्त्री आदि को काणा बना देता है।

जिसके जन्म पत्र में मंगल १, ४, ७, ८, १२ में से किसी भी भाव में हो तो वह मनुष्य पुलिस से डरता है। चतुर्थ में राहु मंगल साथ हों तो जेलयात्रा करनी पड़ती है। उस वर्ष में जबकि राहु वर्षफल में चतुर्थ हो। जातक को रक्तिम वातार्श २८ वर्ष से ५६ की अवस्था में किसी समय भी हो सकती है। रक्तविकार तथा रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) आदि में से कोई भी रोग हो सकता है।

भाग्येश जिस राशि में हो उस राशि अधिपति से भाग्योदय क्रमशः निम्नांकित वर्ष कहना चाहिए। जो उस समय अपनी ही दशा में विशेष शुभ करते हैं। सूर्य २२, चन्द्र २४, मंगल २८, बुध ३२, गुरु १६, ३२, ४२, ५०, शुक्र २५, शनि १६, ३६, ४२।

यदि लाभेश सूर्य धन, राज्य, विद्या, भाग्य, पराक्रम में पड़े तो राज्यसेवा करनी पड़ती है।

यदि लाभेश चन्द्र धन, राज्य, विद्या, भाग्य पराक्रम में पड़े तो राज्य सेवा करती पड़ती है।

यदि लाभेश मंगल धन, राज्य, विद्या, भाग्य पराक्रम में पड़े तो भ्रातृसेवा, कृषि आदि से लाभ होता है

यदि लाभेश बुध धन, राज्य, विद्या, भाग्य पराक्रम में पड़े तो पुत्र कुटुम्ब, विद्या आदि से लाभ होता है।

यदि लाभेश गुरु धन, राज्य, विद्या, भाग्य पराक्रम में पड़े तो विद्या पढ़ाकर धर्म, कर्म, संस्था से लाभ होता है।

यदि लाभेश शुक्र धन, राज्य, विद्या, भाग्य पराक्रम में पड़े तो व्यापार, शत्रुओं से लाभ होता है।

यदि लाभेश शनि धन, राज्य, विद्या, भाग्य पराक्रम में पड़े तो कुप्रवृत्ति, नीचकर्म, लोहादि से लाभ होता है।

अष्टम भाव में
क्रमशः   सूर्य   चन्द्र   मंगल   बुध   वृहस्पति   शुक्र   शनि हो तो
मृत्यु क्रमशः   अनल   जल   शस्त्र   ज्वर   पुरा रोग   धातु चोरादि सन्निपात भाव से भूखसे
दृष्टिपात रोग   पित्त, गर्मी, वायु, पित्त,   पित्त, गर्मी   पित्त, बलगम   बलगम,   कामोत्तेजक,   वायु, दम घुटना
क्रमशः   ज्वर   जल   हैजा   मस्तिष्क   धातु क्षीण,
लकवा   नजला जुकाम प्लेग, निमोनियाँ चेचक, गर्दन,   कमर में   बलगम   फाँसीखाना
Apoplexy   तोड़ बुखार,   रसौली, थकान   वायु
जलोदर   गर्भपात,   Pleuriesy.   थकान जलोदर जलना, लकवा
रक्तविकार आपरेशन   कफ   Spasms.
खूनाँव के   कैन्सर कार्बेन्कल   खाँसी, काला   जिगर बढ़ना   नजला अतिभूख विषम ज्वर
दस्त   ज्वर,
रिवोल्वर आदि   अनिद्रा नसें   फेफड़े गलना   प्यास   Syphi-   तपेदिक
फूलना Ague   les
हृदय गतिरुकना Gonoria

यदि लग्नेश   मन्दिर, तीर्थ उद्यान, बाग अस्पताल   प्लेग्राउंड स्पोर्ट कचहरी सभा   नरसिंग हाउस   गन्दी जगह
नवांश पति के   गंगा तट   खेत, वृक्षतल औपरेशन   क्लब, रेस,   खजाना, रुपये   ड्राइंग रूम,   वेश्याघर, लोह
ग्रह में हो तो   सरोवर   जल के समीप हाल स्पेशल   जुआ घर   के समीप वकील   स्नानागार,   कारखाना, नाली
मृत्यु स्थान क्र० : जंगल   वार्ड   के घर   दूर धनी स्थान   टट्टी, कूड़ाघर
चरस्थिर द्विस्भाव परदेश   घर   मार्ग में क्रमशः मृत्यु होती है।
राशिगत मृत्यु

यदि अष्टम भाव दो से अधिक ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो बलवान् ग्रह का प्रभाव जानना चाहिये। दृष्टि में अष्टमेश का प्रभाव प्रधान होता है विंशोत्तरी दशा को विचार कर रोग और मृत्यु निर्णय करनी चाहिये।

यदि चन्द्रमा शनि—मंगल के बीच में हो और सूर्य मकर राशि पर हो तो निमोनियाँ और सूर्य-चन्द्र एक दूसरे की राशि में हो तो, टी बी, क्षय, राजयक्ष्मा, तपेदिक, और यदि सूर्य-चन्द्र-मंगल तीनों ही सप्तम में हों तो दांतों में दर्द, पायेरिया, कीड़ाआदि से रोग होता है।

जिस टेवे में मकर का सूर्य दशम में कर्क का मंगल चतुर्थ हो उसकी मृत्यु चोट द्वारा होती है।

जिस टेवे में शनि-चन्द्र-मंगल क्रमश: ४, ७, १० भाव में हो उसकी मृत्यु जल द्वारा होती है।

कन्या राशि सूर्य चन्द्र युक्त होने पर उसकी मृत्यु विष द्वारा होती है।

सूर्य मंगल चतुर्थ और शनि दशम होने पर उसकी मृत्यु फाँसी द्वारा होती है।

मंगल-सूर्य-शनि क्रमश: ४, ७, १० भाव में हो उसकी मृत्यु हथियार द्वारा होती है।

सूर्य चतुर्थ मंगल दशम में क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो उसकी मृत्यु फाँसी द्वारा होती है। शनि, चन्द्र-मंगल क्रमश: २, ४, १०भाव में हों तो उसकी मृत्यु सर्पादि द्वारा होती है।

अष्टम शनि यदि क्षीण चन्द्र और उच्च के मंगल से दृष्ट हो तो उसकी मृत्यु ऑपरेशन से होती है। (यह ऑपरेशन, अर्श भगन्दर, पथरी केन्सर का होता है।)

चन्द्र, राहु से दृष्ट हो और साथ ही मंगल अष्टम हो तो माँ की मृत्यु बच्चे सहित होती है।

सूर्य शनि से दृष्ट हो और राहु मंगल अष्टम हो तो मां बच्चे की मृत्यु चीराफाड़ी से होती है। पंचम बृहस्पति प्रत्येक भाग्य सम्बन्धी मुसीबत को टालता है।

६, ८ भाव में पूर्ण चन्द्र मनुष्य की रक्षा करता है।

लग्न में शनि और सप्तम में सूर्य चन्द्र मंगल अल्पायु योग करते हैं।

तृतीयेश, षष्ठेश यदि केन्द्र में हो तो मध्यायु योग करते हैं।

लग्न, लग्नेश से दृष्ट हो, अष्टमेश अष्टम में हो, गुरु केन्द्र में हो तो पूर्णायु योग होता है।

यदि लग्न से प्रथम ६ भावों में समस्त शुभ ग्रह हो और अन्तिम ६ भावों में अशुभ ग्रह हों तो मनुष्य की आयु ८० वर्ष होती है।

शनि, सूर्य, चन्द्र, गुरु के अंशों को जोड़कर १२ से गुणा करो यदि गुणनफल पर क्रमशः शनि, गुरु-सूर्य हो तो अल्प-मध्य-पूर्णायु जाननी चाहिये।

यदि शुक्र, गुरुक्षेत्री हो. लग्नेश, नवमेश स्वक्षेत्री या मनुष्य राशि या अपने-अपने नवांश पर हो तो उस मनुष्य की स्त्री, स्वस्थ, सुन्दर, धनवान और बुद्धिमान और होती है।

यदि ३, ६ ११ भावों के स्वामी पृथक-पृथक हो तो भविष्य शुभ रहता है। भाग्येश के प्रबल होने पर सरकारी नौकरी नहीं मिलती।

यदि चन्द्र-गुरु-सूर्य, शनि के साथ ४, ५, ९ में हो तों पिता, पुत्र, माँ में से किसी एक की मृत्यु अवश्य होती है।

यदि चन्द्र-शनि चतुर्थ हो तो माँ, बुध मंगल पंचम हों तो बच्चे की मृत्यु अवश्य होती है। यदि ४, ५, ८, १० भाव में पापग्रह हो, रन्ध्रेश कुज के साथ लग्न में हो तो आत्म-हत्या योग होता है।

लग्नेश अष्टमेश पाप ग्रह युक्त षष्ठ भाव में हो तो युद्ध में मृत्यु होती है। लड़ाई-झगड़े में मरता है।

चतुर्थ कुज, दशम सूर्य या शनि हो तो, फाँसी, सूली, वृक्ष, पर्वत, मकान, पाड़ से गिरकर मृत्यु होती है।

सूर्य लग्न में, शनि पंचम, मंगल अष्टम, चन्द्र नवम हो तो बिजली, एलैक्ट्रिक या गिरकर मृत्यु होती है। शुक्राष्टम पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो प्रमेह, वात, क्षय, धातु क्षीणादि से मृत्यु होती है।

मंगल शनि छठे घर में, सूर्य, राहु से दृष्ट, लग्नेश अष्टम में हो तो क्षय से मृत्यु होती है।

लग्नेश, अष्टमेश एक साथ या पाप ग्रहों के साथ हो या अष्टमेश कई ग्रहों के साथ हो या अष्टमभाव कई पाप क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो रेल, जहाज, खान, भूकम्पादि से आकस्मिक घटना से सामूहिक मृत्यु होती है।

सुखेश जिस राशि पर हो उस राशीश पर सुखेश की दृष्टि या युति से जल से मृत्यु होती है। कर्क में शनि मकर में चन्द्रमा हो तो जलोदर या पानी से मृत्यु होती है।

यदि अष्टमेश ४, ७, ८, १०, ११, १२ राशि का ४, ६, १२ भाव में हो तो मृत्यु क्रमशः सर्प, सिंह, मृग (कुँआ, तालाब) घर, वृक्षादि के गिरने या गिरकर मृत्यु होती है।

शनि ४ में, चन्द्र ७ में, मंगल १० वें भाव में हो तो मृत्यु कुएें, तालावादि में गिरकर होती है। लग्नेशाष्टमेश चर राशि में हो तो दीर्घायु अथवा एक स्थिर दूसरा चर भाव में हो तो दीर्घायु होती है। एक चर, दूसरा स्थिर में या दोनों द्विष्भाव राशि में होने से मध्यायु होती है। दोनों स्थिर राशि में हों या एक चर दूसरा द्विष्भाव में हो तो अल्पायु होती हैं।

यदि सूर्य भाग्येश होकर भाग्य स्थान में हो तो मनुष्य भ्रातृरहित होता है। यदि भाई चिरजीवी हो तो वह बहुत बड़ा आदमी होता है।

दूसरे भाव में शनि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु होने से जातक की माँ नहीं जीवित रहती। पंचम भाव में शनि का वर्ग हो, चन्द्रमा वहाँ बैठा हो, और वह सूर्य शुक्र से दृष्ट हो तो उस मनुष्य को पुनर्भू विधवा से पुत्र प्राप्त होगा।

लग्न से ६, १२ भाव में चन्द्र-सूर्य हो तो जातक को एक ही स्त्री से एक ही पुत्र होता है। यदि सप्तम में शनि या मंगल का वर्ग हो और इन्हीं दोनों से युक्त या दृष्ट हो तो स्त्री पुरुष दोनों ही व्यभिचारी होते हैं।

सप्तम में यदि बुध शुक्र दोनो हों तो जातक को स्त्रीरहित करते हैं। गुरु चन्द्र से दृष्ट होने पर बुढ़ापे में स्त्रीलाभ या नाजायज़ तआल्लुक होता है।

कर्क लग्न का सूर्य जातक को काणा और मेष का सूर्य मनुष्य को सन्तानहीन दरिद्री बनाता है। पंचम भाव में मंगल-केतु यदि शुक्र से दृष्ट हो तो प्रथम सन्तान जीवित नहीं रहती। पंचम में चन्द्र ७, १२ में पाप ग्रह हो तो स्त्री पुत्रहीन होती है।

सप्तम और लग्न शनि मंगल से युक्त होने पर यदि शुभ दृष्ट न हों तो स्त्रीरहित करते हैं। छठे मंगल, सप्तम राहु, अष्टम शनि स्त्रीरहित करते हैं।

यदि ६, १२ में रवि चन्द्र हों तो पति-पत्नी एकाक्षी होते हैं। रवि शुक्र यदि ५, ७ में हो तो स्त्री एकाक्षी होते हैं।

यदि शनि, मंगल, चन्द्र तीनों सप्तम में हों तो पुरुष स्त्री सहित व्यभिचारी होता है। यदि शनि, रवि, चन्द्र ३, ५, ६, ११ में से किसी एक स्थान पर हों तो मनुष्य बहरा और सप्तम में एकत्रित होने से दन्तरोग या दन्तहीन होता है।

मेष में चन्द्र, कुम्भ में शनि, धनु में सूर्य, मकर में शुक्र हो मनुष्य स्वबाहुबल से धनोपार्जन करके पैतृक सम्पत्ति की रक्षा करता है।

सूर्य के नवांश में चन्द्र और चन्द्र के नवांश में सूर्य होकर एक ही राशि में होने से जातक को निर्धन बनाते हैं।

सूर्य या चन्द्र अथवा दोनों द्वादश भाव में मंगल से दृष्ट होने पर जुर्माना देना पड़ता है।

वृश्चिक और धनु लग्न वाले जातक रविप्रधान होने से चर-स्थिर दोनों स्वभाव वाले होते हैं। चर राशि में रवि होने से मनुष्य घूमने का शौकीन होता है। वह घर में भी इधर-उधर घूमता रहता है। रवि, शनि, मंगल, राहु ये स्त्री अधिपति राशियों में शुभ और पुरुष अधिपति राशियों में अशुभ फल करते हैं। गुरु, शुक्र, चन्द्र, बुध ये चारों स्त्री अधिपति राशियों में अशुभ और पुरुष अधिपति राशियों में शुभ फल करते हैं। रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र अपने स्थान की हानि करते हैं। दशम गुरु पितृ-सुख नहीं होने देता (पितृमृत्यु नहीं होती) मातृ सुख होता है। दशम शनि मातृसुख नहीं होने देता। रवि पुरुष अधिपति राशियों में सन्तान कम और स्त्री अधिपति राशियों में सन्तान अधिक करता है। मेष, सिंह, धनु राशि गत रवि दिन में भी रति करवा देता है।

दूसरे भाव में क्रूर ग्रह हो ३, ५, ७ में गुरु हो तो जातक नीच से उत्पन्न होता है।

यदि चन्द्र-मंगल कुण्डली में २, ३, ५, ६, १०, ११ में हो तो मनुष्य धनी होता है। शुक्र मंगल के साथ होने से मनुष्य विद्वान, बहु सन्ततिवान होता है।

मेष, वृष-कर्क का राहु पिता तुल्य रक्षा ८½ वर्ष के बाद करता है।

तीसरे गुरु ११ में शनि होने से, सिंह लग्न में मंगल, पंचम चन्द्रमा, द्वादश राहु कुल दीपक बनाता है।

अष्टम गुरु घर से बाहर रखता है, बुध लग्न शुभ फल करता है धन, में शुक्र धनिक सुन्दर वाणी देता है, सप्तम केतु मन क्रोधित रखता कुटुम्ब से नहीं बनती।

कर्क का मंगल यदि केतु के साथ चतुर्थ भाव में हो तो १ वर्ष के अन्दर माँ की मृत्यु हो जाती है। पंचम बृहस्पति यदि वृष का हो तो बच्चे होने से रोकता है।

जन्म पत्र में बुध तीसरे हो तो जातक को शुभ ग्रह से दृष्ट होने पर दो पुत्र तीन कन्या होती हैं।

जन्म पत्र में गुरु तीसरे हो तो जातक को क्रूर पाप ग्रह से दृष्ट न होने पर पाँच पुत्र होते हैं।

जन्म पत्र में शुक्र तीसरे हो तो जातक को क्रूर पाप ग्रह से दृष्ट न होने पर तीन पुत्र दो कन्या होती हैं।

जन्म पत्र भें राहु, चन्द्र, शनि तीसरे हों तो जातक को कृष्णवर्ण भ्रातृ रहित करते हैं।

जन्मपत्र में शुक्र सप्तम में बली हो तो जातक को तीन पुत्र २ कन्या होती हैं।

जन्मपत्र में मंगल तीसरे पर पंचम पुत्र के दुख से दुखी होता है। पुत्र होने पर भी पुत्र सुख नहीं होता।

परमोच्च अंशों का ध्यान रखकर फल कहने चाहिये। सूर्य १० अंश तक, चन्द्र ३ अंश तक मंगल २८ अंश तक, बुध १५ अंश तक, गुरु ५ अश तक, शुक्र २७ अंश तक शनि-राहु २० अंश तक परमोच्च माने जाते हैं। यदि टेवे में लग्न ५ से २५ अंश तक हो तो समयानुकूल फल होता है। ५ से कम होने पर १२ वें भाव की राशि और २५ से अधिक होने पर धन गत राशि का फल होता है। चलित चक्र द्वारा ग्रह राशि को देखकर फल कहना चाहिये। १२ राशियों को १२ वर्ष की गणना में लेकर और प्रत्येक स्थान राशि के स्वामी को उस वर्ष की दशा जानकर उपर्युक्त लग्नांश का ध्यान रखकर दशाफल कहे तो सर्वसाधारण फल मिल जाते हैं, बिल्कुल ठीक नहीं मिलते।

लग्न में मंगल अष्टम नीच का चन्द्रमा हो तो स्त्री वेश्यावृत्ति से खाती है।

यदि अष्टमेश शनि लग्न या पराक्रम में हो तो ७२ वर्ष अन्यथा ३६ वर्ष अवस्था होती है। चतुर्थ शनि स्त्रीसुख नहीं देता। जिसका सूर्य लग्न में हो

स्त्रीस्थान किसी शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त न हो तो उसकी ३३-३४ में शादी होती है। ३५ वर्ष के बाद फिर शादी नही होती।

जन्म कुण्डली में यदि षष्ठेश लग्नेश दोनों केन्द्र, त्रिकोण में हो तो बन्धन पूर्ण योग होता है।

जन्म कुण्डली में यदि षष्ठेश केन्द्र, त्रिकोण में हो तो जेलादि कार्य से सम्बन्ध हो।

जन्म कुण्डली में यदि षष्ठेश लग्नेश राहु केतु युक्त हों तो कारागार अवश्य हो।

जन्म कुण्डली में यदि लग्नेश केतु युक्त और षष्ठेश मंगल युक्त दशम हो तो जातक को केतु की विंशोत्तरी दशा में कारा या बन्धन होता है।

जन्म कुण्डली में यदि अष्टमेश ४ या ११ में धनकारक शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र. बुध) के साथ बलवान् हो और पंचमेश से भी सम्बन्धित हो तो मनुष्य को अकल्पित धन सट्टा, रेस, बौंड, लाट्री, धरोहर, राह में पड़ा या दबा हुआ धन प्राप्त होता है।

यदि लग्न चर राशि हो, लग्नेश चर राशि का होकर चर ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो जातक का भाग्योदय विदेश में, स्थिर होने से स्वदेश में, और द्विष्भाव होने से कहीं भी हो सकता है। चन्द्र, बुध, शुक्र, चर, सूर्य, मंगल, द्विष्भाव और शेष ग्रह मन्द गति स्थिर माने गये हैं।

यदि भाग्येश होकर बुध तीसरे या छठे पड़ जाय तो संन्यास लेना पड़ता है। यदि दशमेश गुरु नवम पड़ जाय तो जातक को लखपति पिता से भी कोई सम्पत्ति, जायदाद नहीं मिलती और नौकरी ४५०) से अधिक कभी भी नहीं हो, सन्तान कठिनता से हो। पुत्र न जियें, यदि जीवित रहें तो पिता के विरोधी शत्रुवत रहें।

यदि बुध लग्नेश होकर सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री अद्वितीय सुन्दरी होती है। पाप, क्रूर ग्रहों से दृष्ट होने पर नहीं होती, शनि से दृष्ट होने पर श्याम, रोगी, बाँझ तथा मंगल से दृष्ट होने पर विषयी तथा क्रोधी होती है।

जब किसी के टेवे में सप्तमेश नीच का होकर तीसरे पड़े तो उसकी स्त्री देवरगामिनी होती है।

भावेश फल

लग्नेश सूर्य फल

सूर्य—यदि सूर्य सिंह का लग्नेश होकर लग्न में हो तो मनुष्य कान्तियुक्त, पराक्रमी, बुद्धिमान, घमंडी, रोब दिखाने वाला, उन्नतेच्छा वाला, पित्तरोगी, क्रोधी, राज्य सम्बन्धी कार्य करने वाला, पुष्टदेह, दीर्घायु, ज्ञानी, धार्मिक, चलचित्त, अल्प कार्य करने वाला, रक्तनेत्र, मनमानी, भूधर होता है।

जब लग्नेश होकर सूर्य धन में होता है तो मनुष्य धनी, स्थूल, सत्कर्मी, ज्ञानी, ध्यानी, नेत्ररोगी, कुटुम्ब से दुखी, स्वतन्त्र कार्य करने वाला, गुणी, सुन्दर भवन बनाने वाला, इष्ट मित्र युक्त होता है।

जब लग्नेश सूर्य पराक्रम में हो तो वह मनुष्य पराक्रमी, इष्टमित्र, बन्धु-बान्धवयुक्त, दानी, धर्मरत, शूरवीर, तेजस्वी, सिपाही स्वभाव, स्वतन्त्र कार्य, साहसी, शुभवाणी, पुण्यात्मा होता है।

जब लग्नेश चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य, सरकारी नौकर, मातृरोगी, स्वादु भोजन करने वाला, गृहविरोधी, उच्च विचार, मकान, भूमि खरीदने का इच्छुक, स्वपराक्रम से कार्य करने वाला, थोड़ी वस्तु से प्रसन्न न होने वाला, धार्मिक, स्वच्छ घर, पितृविरोधी होता है।

जब लग्नेश सूर्य पंचम भाव में हो तो मनुष्य, ध्यानी, मानी, ज्ञानी, विद्वान् धार्मिक, त्यागी, पुत्र-लक्ष्मीवान्, प्रथम पुत्र से सुख नहीं होता, सुन्दर, राज्यसेवी, मधुभाषी, सौन्दर्य प्रतियोगिता करने वाला, हंसमुख, उन्नतशील होता है।

जब लग्नेश सूर्य छठे घर में हो तो मनुष्य रोगी, शत्रुरहित, कृपण, प्रभावशाली, भूमि खरीदने का इच्छुक, स्वाभिमानी, पक्षपाती, उच्चकुलवैरी, मामाविरोधी होता है।

जब लग्नेश सूर्य सप्तम भाव में हो मनुष्य पित्तरोगी, कलहप्रिय, प्रवासी, उद्योगी, तेजस्वी, कामुक, सुन्दर स्त्री किन्तु सदाही बीमार, या शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होती है, देह में विकलता रहती है, इष्ट मित्रों से कम बनती है।

यदि लग्नेश सूर्य अष्टम भाव में हो तो मनुष्य, रोगी, कृपण, दीर्घायु, पापरत, क्रोधी, कठोर, शिल्पी, चोरी-जारी द्यूत कर्म रत होता है। चिन्तायुक्त मन्ददृष्टि या काना भी होता है।

यदि लग्नेश सूर्य नवम भाव में हो तो मनुष्य धर्म कर्म, तीर्थयात्रारत, भाग्यवान्, बहिन-भाई युक्त जो कि रोगी रहें, पराक्रमी, देवभक्त, भ्रमणशील, नीतिवान् तेजस्वी तथा परोपकारी होता है।

जब लग्नेश सूर्य दशम भाव में हो तो मनुष्य, विद्वान्, राज्य सेवी, कृषिप्रिय, मातृभक्त, पितृसेवी, दोनों रोगी, कविता, गानप्रिय, तेजस्वी, सुशील, बुद्धिमान्, उन्नतिशील, कीर्ति लाभ करता है।

यदि लग्नेश सूर्य एकादश भाव में हो तो मनुष्य, परिश्रमी, धनिक, सन्तति-युक्त, तेजस्वी, वाहनयुक्त, सत्कार्ययुक्त, स्त्रीवान्, मित्रयुक्त, सम्मान सहित जीने वाला होता है।

जब लग्नेश सूर्य द्वादश भाव में हो तो मनुष्य भ्रमणशील, कठोर, नीच संगति रत, खर्चीला द्यूतप्रिय, रोगी, इष्टमित्रों से कलह करने वाला, वाद-विवाद में चतुर, नीच बुद्धिरत, लेकर न देने वाला ऋणी होता है।

लग्नेश चन्द्र फल

चन्द्रः—यदि कर्क का चन्द्रमा लग्न में हो तो मनुष्य कृशगात्र, लम्बा कद, बुद्धिमान् श्यामवर्ण, उन्नतशील, मधुर वाणी, परस्त्रीरत, चालाक, नौकरी करने-वाला, नजला जुकाम से पीड़ित, जल में डुबकी खानेवाला, धार्मिक विचार, बड़ी आयु में सुन्दर स्त्री, जीवन को जल से भय होता है।

जब लग्नेश चन्द्र दूसरे भाव में हो तो मनुष्य धन धान्यपूर्ण, पुष्प, बेल-बूँटे वाटिका से प्रेम करने वाला, बड़ा आदमी होता है। समाजसेवी, मिलनसार, इष्टमित्रों से युक्त, सर्वप्रिय, हास्यमुख, शान्त, दूसरों के आश्रय में रहनेवाला विचित्र प्रकृति होता है।

यदि लग्नेश चन्द्र तृतीय भाव में हो तो मनुष्य शत्रुजित, पराक्रमी, भाग्यवान, दीनों पर दया करने वाला, प्रिय, परस्त्रीरत, विद्वान, कवि प्रकृति सौन्दर्य को चाहनेवाला सुखी, भ्रातृसुख, अनुभवी, धार्मिक, निजकुलानुसार सम्मान वृद्धि को प्राप्त होता है।

जब लग्नेश चन्द्र चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य माता-पिता का भक्त, उनकी सम्पत्ति का अधिकारी, स्निग्ध, रसीले पदार्थों का भोगी, राज्यसेवी, कृषि, वाटिका, जल पदार्थों से लाभ उठाने वाला, वाहन, पशु, सवारी सुख से सुखी होता है।

यदि लग्नेश चन्द्र पंचम भाव में हो तो मनुष्य सन्तति सुख से सुखी नहीं होता, पुत्र कम कन्या अधिक, सत्कर्मी, विद्वान, परस्त्रीरत, सौम्य, छिपकर कार्य करनेवाला, बड़ा व्यक्ति होता है। कवि, गान, वाद्य का शौकीन, इष्टमित्रों से युक्त, धनतृषित होता है।

जब लग्नेश षष्ठ चन्द्र भाव में हो तो मनुष्य परस्त्रीरत, द्वेषी, वेचैन, रुग्ण, अपयशी, धनहीन, शत्रु से हानि, वासनापूर्ण, कृपण, नीच प्रकृति, मतलबी होता है।

यदि लग्नेश चन्द्र सप्तम भाव में होता है तो मनुष्य देशाटनप्रिय, सुन्दर स्त्री वाला, गन्धर्व विवाहरत, स्वेच्छाचारी, व्यापारेच्छुक होता है, क्षीण चन्द्र सन्तान-रहित करता है, जल भय, नजला जुकाम पीड़ा धनलिप्सा अधिक रहती है।

जब लग्नेश चन्द्र अष्टम में हो तो मनुष्य को बालारिष्ट करता है यदि मनुष्य जीवित रहे तो मन्द बुद्धि, रोगी, पढ़ने लिखने में कमजोर, कटु वचन, कृपण, कृशगात्र होता है।

यदि लग्नेश चन्द्र नवम हो तो जातक बड़ा ही भाग्यवान, मिलनसार, पराक्रमी, धार्मिक, समाजसेवी, राज्यसेवी, इष्टमित्रों का प्यारा, प्रतिष्ठित, तीर्थरत, तेजस्वी ईश्वर भक्त, परोपकारी तथा दीनों पर दया करने वाला होता है।

जब लग्नेश चन्द्र दशम भाव में हो तो राज्यसेवी, माता पिता का भक्त शुभकर्मरत, सम्मानित, कवि, सुशील, भूमिधर, अन्त में संन्यासी जैसा शुद्धाचरण रखता है।

यदि लग्नेश चन्द्र एकादश में हो तो स्त्री पुत्रादि से सुखी, बल वाहन से युक्त, देशाटनप्रिय, तेजस्वी, मित्रादि से युक्त, कण्ठ रोगी, विद्याविनयसम्पन्न होता है।

जब लग्नेश चन्द्र द्वादश भाव में हो तो जातक, जलयात्रा का शौकीन, खर्चीला, मधुर वाणी, परदेशरत, रोगी, इष्टमित्रों से त्याज्य, ठगविद्या (जूआदि) में निपुण, ऋणी, परदेश में कष्ट उठाने वाला, नजला जुकाम से पीड़ित, कामी होता है।

लग्नेश मंगल फल

मंगल—यदि मंगल मेष या वृश्चिक १-८ का लग्नेश होकर लग्न में हो तो मेष पर होने से मनुष्य सिर में दर्द, शरोर कष्ट, रक्तविकार, विजय, पद-प्राप्ति, पित्तरोग, लालवस्त्र से लाभ। वृश्चिक का मंगल लग्न में हो तो कृषि व्यापार से लाभ, रक्त चाप, अर्श, अनेक शत्रु होते हैं।

जब लग्नेश मंगल धन भाव में हो तो नेत्र पीड़ा, धन की कमी, पित्त रोग, सन्तान चिन्ता, व्यर्थ खर्च, पुलिसभय, सत्कर्म रुचि, इष्टमित्रों से वादविवाद, भाग्य की हानि होती है।

यदि लग्नेश मंगल तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य पराक्रमी, साहसी, पुत्र पिता को भारी, प्रयासरत, यात्राप्रेमी, व्ययी, राज्यसेवी, विजयी, पदलोलुप, बन्धुविरोधी, प्रधान होता है।

जब लग्नेश मंगल चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य भूमिधर, मातृकष्टी, सवारी सुख, स्त्री पुत्र वियोग, रोगी, रक्त विकार, अर्श, चोट लगना, कामी, मुख से आकर्षित न होकर वक्ष से मोहित होता है। पाप वृत्ति, भ्रमित चित्त, वासना तृषित, मन्त्रतन्त्रेच्छुक, कृपण, स्वार्थी मन से बड़ा होता है।

यदि लग्नेश मंगल पंचम भाव में हो तो सन्तान कष्ट, रक्तविकार, बुद्धि भ्रम, नेत्र रोग प्रधान, सत्याग्रही, ऋणी, प्रवासी, हृद्रोग, उष्णपित्त विकार, रजोगुणी होता है।

जब लग्नेश मंगल छठे भाव में हो तो मनुष्य शत्रुजित, रक्तदोष पीड़ित, उद्वेग, श्रद्धालु, अधिक परिश्रम से धन प्राप्ति, भाग्य मलिनता, साहसी कार्य में यश प्राप्ति, पुलिस सेना में पारितोषिक प्राप्त करता है।

यदि लग्नेश मंगल सप्तम भाव में हो तो रक्तविकार, अर्श, स्त्रीकष्ट, धन हानि, कफदोष, राज्य से विगाड़, शत्रुभय, बन्धु कलह, सत्कर्म, धर्म में श्रद्धा, निराशा से वेचैनी होती है।

जब लग्नेश मंगल अष्टम भाव में हो तो अर्श, रक्तचाप, रक्तदोष, पित्तादि रोग, बुखार, धनहानि, पराक्रम हीन, शरीर कष्ट, अनेक संकट, अग्नि बिजली से जल से भय रहता है।

यदि लग्नेश मंगल नवम भाव में हो तो मनुष्य, उत्कर्ष, धर्म में रुचि, वाद-विवाद में सुख, खर्च में कमी, धार्मिक कार्यों में विघ्न, व्यर्थ भ्रमण, माता को कष्ट, भूमि, सवारी स्वजन से कष्ट होता है।

जब लग्नेश मंगल दशम भाव में हो तो राज्योन्नति, अफसरों से सुरुचि, व्यापार से लाभ, शरीर पीड़ा, विद्या, संतान कष्ट, पदप्राप्ति, इष्टमित्रों से सुयश, रुके कार्य बनते हैं, शत्रु क्षय होते हैं।

यदि लग्नेश मंगल एकादश भाव में हो तो शत्रु नाश, सन्तान धन चिन्ता, अधिक व्यय, पाप वृत्ति, बन्धुवान्धवकलह, भ्रमित चित्त, अस्थिर प्रकृति, मन उद्विग्न, लाभ में कठिनता हो।

जब लग्नेश मंगल द्वादश भाव में हो तो मनुष्य को स्त्री-सन्तान कष्ट, प्रवास, ऋण, शत्रु भय, पराक्रम, पराभव, मन मलिन, अनेक रोग, अर्श रक्तादि विकार, चोर पुलिस भय, जुर्माना, पित्त-रक्त रोग, पित्ती उछलना, मन में क्रोध, हृद्रोग होता है।

लग्नेश बुध फल

बुध—यदि लग्नेश बुध मिथुन-कन्या का लग्न में हो तो मनुष्य स्वस्थ, स्त्री बच्चों से सुखी, धन-यश नीति द्वारा संगृही, वक्तृत्वशक्तिपूर्ण, धार्मिक, उपासक, सदाप्रसन्न, हँसमुख, चंचल, विनोदी, खेल-कूद में उत्साही, मास्टर आदि कर्मरत रहता है।

जब लग्नेश बुध धन भाव में हो तो विद्याभ्यास में मन लगे, आत्मीय जनों से शुभ सम्पर्क, धन यश लाभ हो, व्याख्यान शक्ति बढ़े, शुभ भोजन प्राप्त हो, शरीर कष्ट, द्रव्य व्यय, वायु विकार हो।

जब लग्नेश बुध तृतीय भाव में हो तो मनुष्य को बन्धु सुख, स्थलान्तर, पराक्रम से लाभ, यात्रा में हर्ष, कर्ण रोग, मित्रकष्ट तथा परवशता प्राप्त होती है।

यदि लग्नेश बुध चतुर्थ भाव में हो तो उत्कर्ष, धार्मिक रुचि, तन्त्र मन्त्र में रुचि, धनतृषा, विरोध, माता-पिता सुख, स्थानान्तर, परवश सवारी, अपयश, मन में क्षोभ, तथा नित नव चाह होती है।

जब लग्नेश बुध पुत्र भाव में हो तो मन्द बुद्धि, बड़ी आयु में विद्या लाभ, राज्य सेवा, स्त्री पुत्र सुख कम या न हों, शरीर रोगी, व्यापार में कम लाभ, झूंठ में रुचि, गुप्त कार्य में दक्ष होता है।

यदि लग्नेश बुध छठे घर में हो तो मनुष्य अस्थिर प्रकृति, कटुस्वभाव, रोगी मानसिक दुर्बलता, धन हानि, इष्ट मित्रों से कलह, परवशता, उद्योग असफल, सन्ताप प्राप्त होता है।

जब लग्नेश बुध सप्तम घर में हो तो स्त्री पुत्र सुख, सुन्दर स्त्री, व्यापार, विद्या में हर्षोन्नति, लोकापवाद, शरीर कष्ट, व्यर्थ सन्ताप, पेट में दर्द, निराशा के बाद आशा सफल होती है।

यदि लग्नेश बुध अष्टम भाव में हो तो वायु रोग, धन जन हानि, दुष्ट संगति, अपयश, ईर्ष्या, मनमलिन, पराधीनता तथा व्यसन की ओर झुकाव रहता है।

जब लग्नेश बुध नवम भाव में हो तो मनुष्य को राज्य नौकरी, तीर्थ यात्रा, धार्मिक रुचि, उत्कर्ष, धन व्यय, नव कार्य में उत्साह भंग तथा विश्वासघात पाता है।

यदि लग्नेश बुध दशम भाव में हो तो राज्य सेवा से लाभ, नव कार्य में यश, धन संचय में कमी, मनचिन्तित, मातृ कष्ट, पितृ योग, सदा सामान्य लाभ से उन्नति होती है।

जब लग्नेश बुध एकादश भाव में हो तो मनुष्य इष्टमित्र, भ्रातृ सवारी सुख से सुखी, कन्यायें अधिक, स्वस्थ, यश कुटुम्ब वृद्धि, भूमि लाभ, किसी दुर्घटना से कष्ट, देशाटन में रुचि, घर से बाहर निवास हो।

यदि लग्नेश बुध व्यय भाव में हो तो खर्च अधिक, बड़ों की सहायता प्राप्त, शत्रु त्रास, उद्योग विफल, मन में संताप, बुद्धिह्रास, कुटुम्ब चिन्ता, वायु पांडु रोग, चञ्चल चित्त, स्थानपरिवर्तन तथा विदेश में कष्ट होता है।

लग्नेश गुरु फल

गुरु—यदि बृहस्पति लग्नेश होकर ६–१२ लग्न में हो तो मनुष्य को आरोग्य, शरीर, सन्तान स्त्री, विद्या, बुद्धि आदि से धन सुख हर्ष प्राप्त होता है। धर्म कर्म, तीर्थ यात्रा में रुचि, सवारी, प्रतिष्ठा, उद्योग में विजय, पद लाभ, राज्य सम्मान प्राप्त होता है।

जब गुरु लग्नेश होकर दूसरे भाव में हो तो मनुष्य को इष्टमित्रों से सुख, राज्य सेवा से सुख, धनलाभ, पदवृद्धि, उत्कर्ष, प्रवास, गुप्त रोग तथा शत्रु उच्च वर्ण से कलह रहती है।

यदि लग्नेश गुरु तृतीय भाव में हो तो शुभ यात्रा, पराक्रम, भ्रातृ, स्त्री से धन लाभ, राज्य सेवा, विद्या, वस्त्रव्यापार, स्वर्णादि से लाभ होता है। वायु रोग से पीड़ा भी होती है।

जब लग्नेश गुरु चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य को वाहन, भोजन, मातृ, पितृ, मकान, प्रतिष्ठा पद, नौकरी आदि में उद्योग, परिश्रम तथा साहस से लाभ होता है, किन्तु स्वजनों से कलह तथा दुख होता है।

यदि लग्नेश गुरु पंचम भाव में हो तो मनुष्य को विद्या, पुत्र, उच्चाभिलाषा, राज्य सेवा से सुख हर्ष, उच्चस्थान अपनी दशान्तर में प्राप्त होता है।

जब लग्नेश गुरु षष्ठ भाव में हो तो मनुष्य को शत्रु चोर भय, गुप्त रोग, अनेक जोखम के कार्यों से शरीर मानसिक कष्ट, कुटुम्ब राज्य से सुख तथा वात रोग की उत्पत्ति होती है।

यदि लग्नेश गुरु सप्तम भाव में हो तो मनुष्य को स्त्री, पुत्र, तीर्थ यात्रा का लाभ या सुख, देशाटन व्यापार से लाभ, आँफीसरों, वड़े व्यक्तियों से मिलाप, तथा सेवा से लाभ होता है।

जब लग्नेश गुरु अष्टम भाव में हो तो वुद्धि भ्रष्ट, स्वपरिवार से कलह, कष्ट, यात्रा में हानि, अपयश प्राप्ति, माता से सान्त्वना, किसी से धोखा प्राप्त होता है, शरीर को वायु पीड़ा होती है।

यदि लग्नेश गुरु नवम भाव में हो तो तीर्थ यात्रा, धार्मिकोत्सव, स्त्री पुत्र सुख, पद यश लाभ, भूमि, मकान, लाभ परिवर्तन, विद्या में उन्नति, पुस्तकादि की प्राप्ति तथा समाजप्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

जब लग्नेश गुरु दशम में हो तो पदोन्नति, सत्ताशक्ति, प्रधानता, स्वजन परिजन सुख, धर्म-कर्म में रुचि, नौकर, सवारी, शरीर सुख, विद्या, स्त्री पुत्रादि से लाभ तथा यश में वृद्धि होती है।

यदि लग्नेश गुरु एकादश भाव में हो तो व्यापार में लाभ, पुत्र स्त्री सुख, स्वजन से कलह, राज्यविरोध, स्थानपरिवर्तन, चित्त में खेद, गुप्तांग रोग, शरीर में पीड़ा होती है।

जब लग्नेश गुरु द्वादश भाव में हो तो मनुष्य को स्थावर सुख, जायदाद, मकानादि का लाभ, सवारी का सुख, उत्कर्ष, उद्योग में व्यय, आत्मीय जनों का सहयोग, बीमारी में खर्च, किसी आविष्कार या सलाह के लिये देशान्तर में हर्ष यश लाभ होता है।

लग्नेश शुक्र फल

शुक्र—यदि शुक्र २-७ राशि का लग्न में हो तो मनुष्य को शारीरिक, मानसिक सुख होता है वह शृंगारी, सुगन्धित वस्तुओं को चाहने वाला, मधुरभाषी, सबका प्यारा, स्त्री पुत्रादि वाहन, भूमि, मकान से सुखी, समाजी, सत्कार से पूजित, मध्यम धन वाला, धार्मिक होता है।

जब शुक्र लग्नेश होकर धन भाव में हो तो सत्कर्मरत, उद्योगी, बन्धुओं का प्रिय, बुद्धिमान, कलापूर्ण, विद्वान, कवि, ग्रन्थकर्ता, परोपकारी, अन्न धन से सुखी, नजला जुकाम जलभय रहता है।

यदि शुक्र लग्नेश होकर तीसरे घर में हो तो भ्रातृ वाहन सुख, कला पूर्ण कार्य से भाग्योन्नति, देशाटन, स्थानान्तर, पराक्रम से यश, हर्ष, व्यापार लाभ, पदवृद्धि, चंचल चित, काम प्रबल होता है।

जब शुक्र लग्नेश होकर चतुर्थ भाव में हो तो सरकारी नौकर, कवित्व-शक्ति, लेखक, उत्कर्ष पदवृद्धि में अड़चनें, स्त्री सन्तान सवारी चिन्ता, प्रवासी, कम यश, सुन्दराकृति, कुटुम्ब से दुखी हो।

यदि लग्नेश शुक्र पंचम भाव में हो तो मनुष्य को विद्या सुख, उद्योग में सफलता, कला कौशल में चतुर, कन्यायें अधिक, गुप्त रोगी, धन चिन्ता, अनेक इच्छाओं से ग्रसित होता है।

जब लग्नेश शुक्र छठे भाव में हो तो मनुष्य सुन्दराकृति, सदैव रोगी, धन तृषित, कामपीड़ित, इन्द्रियलोलुप, वैश्यजाति शत्रु, बड़ों तथा सवारी सुख, धीमी उन्नति, मानसिक चिन्ता, स्त्री सुख नहीं होता।

यदि लग्नेश शुक्र सप्तम भाव में हो तो सुन्दर स्त्री, शरीर में कष्ट, सदा रोगी, अतिकामी, गन्धर्व विवाह रत, प्रवासी, बदनाम, धन जन पीड़ित, प्रमेह, सुजाकादि रोगी होता है।

जब लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में हो तो मनुष्य को शारीरिक मानसिक कष्ट, अनेक रोग ग्रसित, सदा दुखी, पराश्रय, कामी, बदनाम, शत्रुभय, पदवृद्धि में अड़चनें पड़ती हैं।

यदि लग्नेश शुक्र नवम भाव में हो तो मनुष्य धार्मिक वृत्ति, नित्य नवउत्कर्ष, बन्धुसंवारी सुख, हर्ष, जय, लेखक, कलापूर्ण होने से धन लाभ होता है। श्रृंगारी समाज में मान मिलता है।

जब लग्नेश शुक्र दशम भाव में हो तो मनुष्य को राज्य, व्यापार, विद्या, कला से लाभ होता है। माता पिता वाहन, मकान भूमि आदि का सुख रहता है।

यदि लग्नेश शुक्र एकादश भाव में हो तो मनुष्य को स्त्री-पुत्रादि, विद्या, बुद्धि, लेखन कला में सफलता हर्ष, सुख मिलता है। सामूहिक सम्मान, व्यापार से लाभ होता है। किन्तु कन्यायें अधिक होने से चिन्ता, नजला, जुकाम, जल रोग का सदैव भय रहता है।

जब लग्नेश शुक्र द्वादश भाव में हो तो मनुष्य को नेत्र रोग, ऋणचिन्ता, अनेक व्याधि, शत्रु भय, स्थानान्तरण, गुप्तरोग, उद्योग, विफलता व्यापार में हानि आदि होती हैं।

लग्नेश शनि फल

शनि—यदि लग्नेश शनि १०, ११ का लग्न में हो तो मनुष्य कृष्णवर्ण होता है। मकर का शनि मनुष्य को चुलबुला, धोखेबाज, वाचाल, विश्वासघाती, संकटग्रस्त बनाता है। कुम्भ का शनि, मनुष्य को गम्भीर, मित्रयुक्त, विद्या-विपन्न, उच्चविचार बनता है। स्वगृही लग्न में शनि उदासीन, वात से शरीर कष्ट, पराक्रमहीन, पिता की मृत्यु या अनबन, द्रव्य की कमी, राजभय तथा सदैव रोगी रखता है।

जब लग्नेश शनि दूसरे घर में हो तो परिवारचिन्ता, नेत्रविकार, उष्णवात रोग, धन हानि, मातृ कष्ट, मीन में होने से स्थानपरिवर्तन, राज्यसुख, शत्रु क्षय, परोपकारी बुद्धि प्रदान करता है।

यदि लग्नेश शनि तीसरे भाव में हो तो मनुष्य पराक्रमी, उद्योग में सफलता, बड़ों से मित्रता, छिद्रान्वेषी, विद्याविहीन, लोभी, भ्रमणशील, रक्तदोषी, सन्तान सुख से वंचित करता है।

जब लग्नेश शनि चतुर्थ भाव में हो तो मातृ रोग, शत्रु भय, गृहहानि, स्त्री रहित, अपयश, शत्रु क्षय, मानसिक कष्ट, माता-पिता का भक्त, ३९ वर्षो-परान्त पिताद्वेषी, छल सहित बनाता है। शरीर रोगी हो।

यदि लग्नेश शनि पंचम भाव में हो तो मनुष्य को स्त्री पुत्र विद्या सुख कम, बुद्धि में भ्रम, शत्रुत्रास, कुटुम्ब का ह्रास, स्त्री रोगी, मन विलासी, धन व्यापार में हानि, नेत्र में पीड़ा, तन्त्र-मन्त्र में रुचि होती है।

जब लग्नेश शनि छठे भाव में हो तो शत्रुक्षय, अनेक रोग, वायु रक्त-विकार, भाई को दुःख, उद्योग शिथिल, मन में बेचैनी, लोहकार्य में लाभ, मन में चिन्ता गुह्यांग में रोग होता है।

यदि लग्नेश शनि सप्तम भाव में हो ता भाग्योदय में रुकावट, स्त्री पुत्र माता को कष्ट, गुह्यांग रोग, वायुगोले का दर्द, पेशाब रोग, शत्रु उत्पात, चंचलचित, इष्टमित्रों से कलह होती है।

जब लग्नेश शनि अष्टमभाव में हो तो मनुष्य दीर्घायु, गुह्य रोग, राज्य-भय, स्त्री की पीड़ा, शरीर अस्वस्थ, वायु शूल अण्डकोष वृद्धि, कलह, तथा अपयश की प्राप्ति होती है।

यदि लग्नेश शनि नवम भाव में हो तो मनुष्य को धन धर्म की हानि, शत्रुक्षय, भाग्योदय में रुकावट, यात्रा में व्यय, उच्च का होने पर, पद, भूमि, वाहन, आदि लाभ तथा सुख पाता है।

जब लग्नेश शनि दशम भाव में हो तो मनुष्य को अपयश, शत्रु भय, सर्वत्र कलह, मातृ-पितृ कष्ट, स्त्री कष्ट, बीमारी में व्यय, बुद्धि चंचल, प्रेम में विफलता, निराश जीवन मिलता है।

यदि लग्नेश शनि एकादश भाव में हो तो मनुष्य को लोहे के व्यापार से लाभ, पद वृद्धि, राज्य से सुख, सत्संग, बड़ों से मित्रता, मंगल क्षेत्री होने पर कलह, नीच संगति और गुरु क्षेत्री होने पर यात्रासुख, व्यापार से लाभ, शत्रु की पराजय से हर्ष प्राप्त होता है।

जब लग्नेश शनि द्वादश भाव में स्वगृही मकर का हो तो मनुष्य मितव्ययी, कम धनी, वायु रोगी, नेत्र पीड़ा, नीति निपुण, उदासीन, तन्त्र-मन्त्र प्रवीण होता है। इसके अतिरिक्त धन संकट, अपयश, राज्यभय, ऋण चिन्ता, गुह्यरोग, वात विकार सदा लगा रहता है।

धनेश फल

धनेश सूर्य फल

सूर्य—जिसका धनेश लग्न में सूर्य हो वह कृपण, व्यापारी, धनी, धार्मिक, कुटुम्बचिन्तायुक्त, शरीर में मन में बेचैनी, पित्तरोगी, क्रोधी, रक्तवर्ण, स्त्री को कष्ट, मित्रविरोधी, आँफीसरों का प्रेमी होता है।

जब धनेश सूर्य धन भाव में हो तो मनुष्य, धनिक, लोभी, चतुर, अधिकारियों से गठजोड़ रखने वाला, इधर-उधर करने वाला, लम्बा, कृष्णवर्ण, सदैव भूखा, अपराधी, नीच कर्मरत, पापी, अनर्थकर्ता, साहसी, राज्यसेवक, दुष्कर्म द्वारा धन संग्रह करके अन्त में गँवाने वाला होता है।

यदि धनेश सूर्य तीसरे घर में हो तो मनुष्य पराक्रमी, व्यवसायी, कलाहीन, चलचित्त, विनयरहित, निष्ठुर, बन्धुविरोधी, कर्णरोगी, पुलिस सेना में राज्य सम्मान अपनी दशा में देता है।

जिसका धनेश सूर्य मातृ भाव में हो तो मातृ पीड़ा, पिता-राज्य सेवा से अप्रसन्न, दयालु, सत्यार्थी, चोराग्नि से भय, स्त्रीधन कष्ट, हृद्रोगी, भूमिरहित, तथा क्रूर, सुख रहित होता है। पिता से अनवन रहती है।

जब धनेश सूर्य पंचम भाव में हो तो मनुष्य, विद्या विनय से युक्त, राज्यप्रवेश राज्यभाषा में निपुण, कृपण, स्त्री पुत्रवान्, परमार्थी, वाद में यश जय वाला, तेजस्वी, अग्नि चोर भय, विषैली वस्तु से हानि, प्रेम में सतर्क प्रेमी, रोगी सन्तान, चलचित्त, धनतृषित, सदा परेशान रहता है।

यदि धनेश सूर्य छठे भाव में हो तो मनुष्य शत्रुनाशक, नौकरादि से हानि, देशाटन में परेशानी, अस्वस्थ, स्वतंत्र पेशा, कामी, अभिमानी, बली, राज्यपूज्य, मध्यमकोटि का जीवन रहता है।

जिसका धनेश सूर्य सप्तम भाव में हो तो मनुष्य पित्त, गर्मी का रोगी, बड़ा विलासी, सुन्दर स्त्री वाला, रोगी स्त्री, वियोगभय, कलहारी, व्यग्र, चिन्तायुक्त, तथा स्त्री जाति से अपमान मिलता है।

जब धनेश सूर्य अष्टम भाव में हो तो मनुष्य सदा रोगी, अल्पायु, अपयश, इष्ट मित्रों से अनबन, मन्द दृष्टि, शत्रुयुक्त, क्रोधी, निर्बल, हिंसक, पाखण्डी, प्रेम करने में अधीर, निरुद्यमी होता है।

यदि धनेश सूर्य नवम भाव में हो तो मनुष्य को शादी में धन मिलता है। और अन्तिम समय में यश प्राप्त करता है कविता या व्यापार में, बुद्धि धन, दार्शनिकता, वकालत, अध्यापक से भाग्योदय, दानी, उपकारी, बन्धु वान्धव द्वेषी, तीर्थयात्राप्रेमी, सत्कर्मी, रक्तपित्तदोषी, शरीर में कष्ट, मानसिक चिन्ता रहती है।

जिसका धनेश सूर्य दशमगत हो तो मनुष्य राज्यसेवी, मातृकष्ट, पिता से लाभ, सफलता अड़चनों के बाद, व्यापार लाभ, हृद्रोग, घर की चिन्ता, परोपकारी, वाहनसुख से वंचित रहता है।

जब धनेश सूर्य एकादश में हो तो मनुष्य को भाई बन्धु इष्टमित्रों से सुख, किन्तु सन्तान सुख नहीं होता, धनिक, व्यापारी, राज्यसेवी, वस्तुसंग्रही, साहित्यप्रेमी, समाजसेवी, देशाटन प्रिय होता है।

यदि धनेश सूर्य द्वादश भाव में हो तो मनुष्य समाज से पृथक दानान्न खाने वाला, वन्धुद्रोही, विफल व्यापारी, कृपण, पाखण्डी, विदेश में भाग्योदय, मन्दहष्टि, पिताविरोधी, विलासी, राजदंडित, क्रोधी, देशाटनादि में व्यर्थ धन खर्च करने वाला होता है।

धनेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका धनेश चन्द्र लग्न में हो तो मनुष्य लज्जायुक्त, कोमलहृदय, शान्त, भ्रमणशील, कवि लेखक, खान-पान का शौकीन, परिवर्तनशील, समाज-सेवी, सरोग, क्षीणचन्द्र बहिरा, पूर्णचन्द्र विद्वान, दीर्घायु, गौरांगस्त्रीआसक्त, गानप्रिय, मधुभाषी, सुन्दरकेश, निरुत्साह, जुकाम नजला पीड़ित, सत्कर्मी, सुखी होता है।

जब धनेश चन्द्र धन भाव में हो तो परिवर्तनशील यात्रा, रहन-सहन नव-मित्र चाहता है। कलात्मक साहित्यकर्ता या प्रेमी, सम्पादन कार्य निपुण, कामी, कर्मज्ञ विद्वान, स्त्रीपुत्र इष्टमित्र युक्त, सुयशी, लोभी, चतुर, सुन्दर भोजन करने वाला, गुप्तरोगी, भूमि सवारी सुख से रहित, न्यायी, जल, वृष पुष्पादि प्रेमी, होता है।

यदि धनेश चन्द्र तृतीय में हो तो मनुष्य यात्राप्रिय, वन, पर्वत पर घूमने वाला, परोपकारी, धन से पराक्रम करने वाला, कलाहीन, व्यवसायी, चलचित्त, विनयरहित, प्रवासी, तथा बन्धुप्रिय होता है।

जिसका धनेश चन्द्र चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य माता-पिता का भक्त, वन्धु विद्रोही, धन, जमीन से दुखी, प्रारम्भिक जीवन में पश्चात् सुखी, श्वेत वस्तु क्रय विक्रय से लाभ, यश, पद, वाहन, यात्रा से हर्ष लाभ हो।

जब धनेश चन्द्र पंचम में हो तो मनुष्य स्त्रीपुत्रादि से सुखी, कामी, कृत्रिम प्रेमी, जुआ सट्टा नीचकर्मरत, धोखा खाने वाला होता है। धन की कमी, निरुत्साह, कुसंगति में रहने वाला, श्रृंगारी कवि होता है।

यदि धनेश चन्द्र छठे घर में हो तो मनुष्य समाजसेवा में सफल, होटल, छात्रावास, या घरेलू नौकरी में छल या धोखा करते हैं। धनहीन, संकट, अपयश, पराधीन, शत्रुवृद्धि, राज्यविरोधो, कामी होते हैं।

जिसका धनेश चन्द्र सप्तम में हो तो मनुष्य को समाज, राजनैतिक, मुकदमे आदि में सफलता, छोटी अवस्था में विवाह, बड़े दहेज के साथ, भाग्योदय होता है। क्षीण चन्द्र चलचित्त, अस्थिर प्रकृति, कलह, कामी क्रूर स्त्री देता है। पशु, धार्मिक कार्यों से लाभ, स्त्री को कष्ट, वायु, नजला जुकाम रोग, जलभय होता है।

जब धनेश चन्द्र अष्टम भाव में हो तो मनुष्य की अल्पायु, क्षीण चन्द्र होने पर, फिर प्रपंच द्वारा राज्यसेवा, कृषि, जलकार्य, विदेश से भाग्यानुकूल लाभ उठाने वाला, गुह्यचिन्ता से चिन्तित रहता है। प्रमेह, अण्डकोषवृद्धि, धातु क्षोणादि के रोग से पीड़ा होती है।

यदि धनेश, चन्द्र नवम में हो तो मनुष्य को अपनी स्त्री या उसके सम्बन्धियों द्वारा तीर्थयात्रा सिन्धुयात्रा का अवसर मिलता है। कवित्वशक्ति, देशाटन, आविष्कार, वाहन में सफलता, धार्मिक, दान आदि कर्मों में रति रहती है किन्तु धन तृषा सदा ही लगी रहती है।

जिसका धनेश चन्द्र दशम में हो तो मनुष्य को राज्याधिकार में कई ऊँच-नीच देखने पड़ते हैं, किन्तु स्त्रीजाति की मदद से सफलता मिलती है। धन यश, व्यवसायपरिवर्तन आदि भूमि, मकानादि के व्यवसाय से खूब फलते हैं। वह कामो, जलविहारप्रिय, तैराक, विनीत, पंडित, खर्चीला, मातृपितृभक्त होता है।

जब धनेश चन्द्र एकादश हो तो मनुष्य, सामाजिक, बहुकुटुम्बी, इष्टमित्रयुक्त, स्त्रीजाति से लाभ, कन्यायुक्त, यशकीर्तिवान्, व्यापार से लाभ, देवभक्त, प्रवासी, उत्सुक, ईश्वरभक्त, क्रोधी होता है।

यदि धनेश चन्द्र द्वादश हो तो मनुष्य शुभ कार्य में खर्च करने वाला, क्षणिक प्रेमी, विफल, समाज जन सेवक, स्त्रीजाति से छलित, शत्रुभय से पीड़ित, जलविहार तत्पर, प्रवासी, नजला जुकाम कफ से पीड़ित, वायु रोग से द्रवित दर्शनीय होता है।

धनेश मंगल फल

मंगल—जिसका धनेश मंगल लग्न में हो (७-१२) तो मनुष्य मिलनसार, मित्रों के लिए खर्च करने वाले स्वार्थी, धातु वादी, कृषिकर्ता, क्रोधी, रक्तचाप, अर्श, सत्तात्मक उष्ण प्रकृति, मस्तक पीड़ा, स्त्रीद्रोही, कृपण, कामी, छिद्रान्वेषी, झगड़ालू, तन्त्र-मन्त्र विश्वासी, देवाराधक, रौबीला होता है।

जब धनेश मंगल १-८ दूसरे में हो तो मनुष्य को नेष्ट पीड़ा, धन की कमी, सन्तान चिन्ता, भाग्य विरोध, सदा लाटरी रेस लगाना, जो धन मिले सो व्यभिचार में लगे, कृषि व्यापार में लाभ होता है।

यदि धनेश मंगल तीसरे भाव में हो तो मनुष्य पराक्रमी, भ्रातृ सुख रहित, रोब से धनिक, पुलिस सैनिक अधिकारी, रक्त कफ दोषी, देवभक्त, शत्रुनाशी, विलासप्रिय होता है।

जिसका धनेश मंगल उच्च का चतुर्थ हो तो मातृकष्ट, विदेश में भाग्योदय होता है घर पर नहीं, मित्र भूमि का लाभ, कृषि वाहन सुख, स्त्रीरहित, सदा रोगी, चिन्तित, जादू-टोना मन्त्रेच्छुक, स्वार्थी होता है। स्त्री के गर्भपात करता है, स्पष्ट वक्ता, अपनी बात पर अड़ने वाला, पूर्वज सम्पत्ति से अलग मकान बना कर रहना पड़ता है।

जब धनेश मंगल पंचम हो तो मनुष्य जुए, सट्टे, रेस में धन नष्ट करता है। स्त्री बच्चों की तरफ से दुखी, रक्त, कफ, वायु प्रकोप, नेत्ररोग, अपयशी, बुद्धिहीन, चीर-फाड़ कार्य में चतुर, विदेशरत होता है।

यदि धनेश मंगल छठे घर में हो तो शत्रुनाशक, प्रबन्धकर्ता, रक्तचाप पीड़ित, दुर्घटनाग्रस्त, कामी, पित्तप्रकृति, बहुभोजी, साहसी, धन कष्ट से प्राप्त हो, अनुसन्धानकर्ता, स्वार्थी तथा रोगी हो।

जिसका धनेश सप्तम में मंगल हो उसको साझे के कार्य में हानि, कुशल प्रेमी, स्त्री रोगी, विवाह देर में, युद्धप्रिय, सन्तप्त मन, व्यापार में हानि, दूर की

यात्रा, प्रवासी, व्यभिचारी स्त्री वाला, वकालत में लाभ देने वाला तथा अधिकारी वर्ग से कलह रखने वाला होता है।

जब मंगल धनेश होकर अष्टम में हो तो स्त्रीघातक, संचित धननाशक, रक्तविकारी, पुलिस से डरने वाला, नेत्ररोगी, मन्दबुद्धि, नीचप्रकृति, वेश्यागामी, शरीर कष्ट, स्त्री चेचक दागों वाली, व्यभिचारिणी होती है। पुरुष मलेरिया, अर्श, रक्तविकार, रक्तचाप से पीड़ित, अति कामी होता है।

यदि धनेश मंगल नवम में हो तो यात्रा में खतरा, धार्मिक कार्यों में असन्तोषी, दुखी, हिंसक, नास्तिक, अपयशी, कामी, कानून रहित, अभिमानी, दुराग्रही, वैद्य डॉक्टर, कृषक आदि सभी कार्य करते हैं।

जिसका धनेश मंगल दशम हो तो मनुष्य क्रोधी, स्वभुजा से कमाने वाला राज्यसेवी, पितृमारक, भय रहित निज कार्य को निर्विघ्न रूप से करने वाला, शत्रुजित, परोपकारी, उद्यमी व्यापार से लाभ लेने वाला, पदाधिकारी, औफिसरों का मित्र होता है। परस्त्रीरत, इन्द्रियलोलुप होता है।

जब धनेश मंगल एकादश में हो तो कुशल व्यापारी, या राज्यसेवी, धनिक, शूर, शत्रुरहित, भूमि स्त्री सुख, से सुखी सन्तानचिन्ता, अनेक अड़चन के बाद सफलता, दूर की यात्रा से लाभ, वकील, डाक्टरी आदि से लाभ, रक्तदोष अर्धांगादि से मृत्यु होती है।

यदि धनेश मंगल द्वादश भाव में हो तो मनुष्य, क्रोधी, स्त्रीहीन या द्वेषी, मित्र का वैरी, पुलिस से डरने वाला, नेत्रपीड़ा, व्यर्थ धन खर्चीला, दुर्घटना ग्रस्त, हस्पताल में औपरेशन या आत्मघात से मूर्खतापूर्ण मृत्यु को प्राप्त होता है, स्त्री से न बने, स्त्री को कष्ट, धनहानि, शत्रुपीड़ा, उद्यमरहित होता है। कामी, उदार क्रोधी, सत्यवादी, देवाराधक, भ्रातृकष्टी होता है।

धनेश बुध फल

बुध—जिसका बुध धनेश होकर लग्न में हो तो मनुष्य की प्रकृति परिवर्तनशील, चलचित्त, तीव्र स्मरणशक्ति, तार्किक, प्रबलवक्ता, सज्जन, विद्वान, धार्मिक, स्वस्थ, कुटुम्बसुख, से सुखी यशस्वी, लेखक, एकान्तप्रिय, गौरवर्ण, धनिक, परदारासक्त। सिंह में होने से अपयशी होता है।

जब बुध धनेश होकर धन में हो तो मनुष्य को पुस्तक, पढ़ाई, विवाह काडं की लिखाई विक्री आदि से लाभ, वक्तृता, कुटुम्ब, पशु आदि से लाभ, किन्तु धनवान नहीं होता, निर्भीक, भोजनप्रिय होता हैं, बच्चों जैसा स्वभाव, हँसमुख सुन्दर, सबका प्यारा, मिथुन का बुध प्रपंची बनाता है।

यदि बुध धनेश होकर तीसरे हो तो मनुष्य उद्योगी, सबन्धु, पुष्पोद्यानप्रिय, प्रवासी, पुरुष अपने कमाये धन से बड़ा कार्य करने वाला, अपने भाइयों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा होता है।

जिसका धनेश बुध चतुर्थ हो तो मनुष्य को घरेलू चिन्ता होती है यह अपने मकान पेशे को सदा ही बदलने की सोचता है। और तन्त्र-मन्त्र द्वारा निज को बड़ा बनाने की सोचता है। भूमि वाहन कष्ट से प्राप्त, शरीरकष्ट, मातृपोड़ा, स्वार्थी, चतुर कंजूस, झूठा, गुप्त कार्य में व्यय करने वाला अपयशी होता है।

जब धनेश बुध पंचम हो तो मनुष्य बुद्धिमान, स्त्री से सन्ताप, या क्वारा रहता है। पराधीन विद्वान लेखक, कम पढ़ने पर भी लोग विद्वान समझते हैं किन्तु मित्रों की कमो रहती है। दार्शनिक होता है।

यदि धनेश बुध छठे वैठा हो तो मनुष्य को स्नायु रोग होता है। वह स्वास्थ्य के लिए देश-देश की सैर करता है नौकर से हानि उठाता है। शत्रु से भयभीत, व्यर्थं वार्ता करने वाला, चिड़चिड़ा अपयशी होता है।

जिसका धनेश बुध सप्तम हो तो वह मनुष्य व्यापार, लेखन, कला में पढ़ाने में चतुर होता है। उसकी स्त्री सुन्दर, वाचाल, शीलयुक्त होती है। और मनुष्य राज्यसेवी मित्र से कष्ट पाने वाला होता है। शरीर से सुखी रहता है।

जब धनेश बुध अष्टम भाव में हो तो अनेक रोग युक्त, उदास, धनचिन्तित, सन्तान की ओर से दुःखी, मृत्यु पश्चात् यशस्वी, वातरोगी संकटग्रस्त, राज्य-भय, लोकविरोध, पाने वाला धनहीन दुःखी रहता है।

यदि धनेश बुध नवम हो तो मनुष्य धार्मिक, तीर्थसेवो, अनेक भाषा का ज्ञाता, अच्छा वकील, डाक्टर, लेखक, वैज्ञानिक, पराक्रमो, गणितज्ञ, शिक्षक, ज्योतिषी आदि होता है।

जिसका धनेश बुध दशम हो तो ऐसे मनुष्य उच्चाधिकारी, चतुर, निज बुद्धि से पर्याप्त धन कमाने वाला, राज्यसेवी, व्यापारी, विनोदी, यशस्वी, भाग्यवान,

विद्याविनयविपन्न, माता-पिता से सुखी, कागज स्टेश्नरी, पुस्तक, सम्पादकीय कार्य में भी सफलता पाते हैं।

जब धनेश बुध एकादश हो तो मनुष्य बड़ा स्वार्थी, चतुर व्यापारी, प्रेम में अधीर, चलचित्त, कामी, कृपण, धन में कमी, शरीरकष्ट, दुःखी। मिथुन में होने से स्त्री-कन्या, वस्त्र व्यापार से लाभ हो, शेयर, शिक्षा चित्र, शिल्पकलादि से लाभ होता है।

यदि धनेश बुध द्वादश में हो तो मनुष्य का स्वभाव चिड़चिड़ा, इसलिए अपने गुणों को प्रदर्शित नहीं कर पाता, बुढ़ापे में उसके गुण विकसित होते हैं। खर्च संकट, पराधीन, शत्रुत्रास, नीचों से हानि, इण्टर या बी० ए के फेल होने पर पढ़ाई छूटती है। खाना-पीना विवाह सन्तान तथा बनावटी कार्य करते हैं।

धनेश गुरु फल

गुरुः—जिसका धनेश गुरु लग्न में हो तो मनुष्य आशावादी, ज्ञानी, सुन्दर, द्रव्य, कुटुम्ब, मानसिक चिन्ता, गम्भीर, आत्माभिमानी, क्षणिक क्रोधी, हंसमुख, सावधान, कृपण, मीठी चुटकी लेने वाले, स्त्री से प्रेम कम, क्वारे या दो विवाह करते हैं। यह गुरु मनुष्य ३,६,१२ को वर्ष में आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक कष्ट देता है। और कीर्ति अचल करता है।

जब धनेश गुरु धन भाव में हो तो मनुष्य धनिक, धार्मिक, वक्ता, शुभ भोजन करने वाला, व्याज बट्टा, रेस, शादी में धन पाने वाला, राज्यसेवी, परोपकारी, सवारी नौकर सुख, प्रतिष्ठा पदवृद्धि, शिक्षा अपूर्ण, पिता से अनबन, दानी, कभी दत्तक पुत्र रूप में रहना पड़ता है। ये मिलनसार, सामाजिक राजनैतिक सभी क्षेत्रों का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

यदि धनेश गुरु तीसरे हो तो मनुष्य विद्वान्, स्वजनप्रिय, भ्रमणशील, धार्मिक, स्त्री पुत्र से सुखी, व्यापार में लाभ, मन्दाग्नि पीड़ित, व्यवसाय बदलने वाला, भ्रातृविरोध, अलग रहने वाले, गर्वीले, शान्त, शिक्षक कार्य में सफल होते हैं।

जिसका धनेश गुरु चतुर्थ में हो तो मनुष्य साहिबे जायदाद, गार्हस्थ्य जीवन से सुखी, नित नव भोजन करने वाला, पुष्पोद्यानप्रिय, सम्मानित, राज्यसेवी, वक्ता, इसके धन का सुख माता-पिता को नहीं होता, गृह-निर्माण करता है।

जब धनेश गुरु पंचम हो तो, धन, विद्या, संतान से सुख यश प्राप्त होता है। घमंडी, मन्त्रशास्त्री, उत्तम कर्म, धर्मी, सफल कामना, राज्याधिकारी, आपत्ति में धैर्य धरने वाला, अच्छे मित्रों से युक्त, स्त्री से भाग्योदय, अर्थ, वीज, भाषा राज्य का ज्ञानी होता है। वक्ता, लेखक, सम्पादक, पुत्रों से कलह, व्यवहारदक्ष, रूक्ष, उष्ण प्रकृति, डाक्टर वकीलादि हो।

यदि धनेश गुरु छठे घर में हो तो मनुष्य पराधीन, राज्यसेवी, शत्रु द्वारा धन हानि, उच्च वर्ण से अनवन, नौकर से चोरी भय, उच्चाधिकार में रुकावट, भार्यादि से सुख नहीं, जुआ शराब, काम के वश होकर मनुष्य को बहुमूत्र, प्रमेह, हार्नियां, किडनी दर्द, पैतृक सम्पत्ति रहित करता है। आपत्ति, अपयश, कर्जादि से दबना पड़ता है।

जिसका धनेश गुरु सप्तम हो तो स्त्री मुन्दर, चरित्रवान, धार्मिक, शान्त होती है। व्यापार से लाभ, तीर्थयात्रा हो, पिता गुरु द्वेषी। वृष का गुरु स्त्री-वियोग भी देता है। ऐसे व्यक्ति लापरवाह से होते हैं।

जब धनेश गुरु अष्टम हो तो, मारण मोहन उच्चाटन मन्त्रजापी, यात्रा में हानि, कुटुम्ब से विरोध विवेक विनय हीन, आलसी, विष द्वारा मृत्यु, गुदा रोग, प्रमेह, स्वजनत्रास, वंशक्षय, दारिद्रय योग बनता है।

यदि धनेश गुरु नवम हो तो मनुष्य को यात्रा में सफलता, पुजारी, वकोल, अध्यापकादि कार्य में सफल होता है। धन धर्म से सुख; प्रेम में विफलता, पदवृद्धि, सन्तान नहीं जीती, यदि जिये तो कलह रहतो है। त्रास, अपयश मिलता है। इसके प्रत्येक अच्छे कार्य के वाद बुरा, बुरे के वाद अच्छा ऐसे कार्य होते हैं। सभी कार्य सफल नहीं होते।

जिसका धनेश गुरु दशम हो तो मनुष्य को माता-पिता स्त्री की ओर से धनादि जायदाद मिलती है। नौकरी में पदवृद्धि, कीर्तिलाभ, हर्ष, सम्मान, जायदादि बनते हैं। इष्ट मित्रों से सहयोग, धार्मिक उत्सव, समाज सेवा में रुचि।

जब धनेश गुरु एकादश में हो तो मनुष्य को सामाजिक सफलता, व्यापार कलात्मक कार्य, गायन, चित्र विवाहादि में आशातीत सफलता मिलती है। मित्रों से अमूल्य भेंट, स्त्री पुत्र सुख, सवारी नौकर सुख, धर्मरत, विद्वान्, साधुसेवी, बड़े भाई से अनबन रहती है, जीवन सुखमय रहता है।

यदि धनेश गुरु द्वादश भाव में हो तो मनुष्य बदले में सहायता चाहने वाला. धार्मिक कार्यों में व्यय करने वाला, कामी, मधुभाषी, आलसी, निर्लज्ज, शरीर-कष्ट, स्वजनविरोध, अपयश, गुप्त रोग, सट्टे आदि में हानि। मनुष्य कंजूस, स्वार्थी, मातृसुख, कभी २ भूमि वाहन लाभ भी हो।

धनेश शुक्र फल

गुरु :—जिसका धनेश शुक्र मेष–१ कन्या–६ का लग्न में हो तो कामी, कान्तिमान् स्त्री पुत्र युक्त, विद्वान, कला कविता सौन्दर्य पर स्त्रियों द्वारा प्रशंसा, प्रेम विवाह में तत्पर, गायन वादन निपुण, गुप्त रोगी, धन मिलने पर भी नहीं रहता, विवाह देर में होता है या नहीं भी होता, १५ वर्ष की अवस्था में घर में मृत्यु करता है। बच्चों से प्रेम, स्वस्त्री से नहीं करते।

जब धनेश शुक्र २, ७ का धनगत हो तो विवाह के दहेज द्वारा अनेक प्रकार का धन या साझे के व्यवसाय से धन मिलता है। वह मनुष्य सट्टा, रेस, जुआदि में धन गवाता है। सबका मित्र, समाज प्रधान कलापूर्ण कार्यों से सुखी, पितृसम्पत्ति से वंचित, राज्य सेवा में प्रगति, पर स्त्री रत, स्व स्त्री रोगी मिलती है। स्त्रीचिन्ता रहती है।

यदि धनेश शुक्र तीसरे हो तो मनुष्य नये २ व्यक्तियों से सम्बन्ध रखता है। सबका प्रेमी होता है। सफर में प्रेम, मनोरंजन के लिये होता है। दुर्बल, कृपण, पापी, अश्लील कवि लेखक, प्रवासी, ऋणी, हथलसी, मंगल से दृष्ट होने पर यह विवाह सम्बन्ध के लिये अनेक लड़कियाँ नापसन्द करता है। इसकी पत्नी सदा सन्दिग्ध रहती है, कामुक होता है।

जिसका धनेश शुक्र चतुर्थ हो तो मनुष्य राज्यसेवक, चलचित, कामुक, शत्रुत्रास, पदवृद्धि में अड़चन, निज क्षेत्र में प्रसिद्ध, कवि लेखक, वाहनयुक्त, स्त्री राशि में पिता सुख कम, घरबार रहित, ३, ६ वर्ष में कोई मृत्यु हो।

जब धनेश शुक्र पंचम हो तो मनुष्य उद्योगी, विद्वान्, वकील, न्यायाधीश, स्त्री सुख, सन्तान पुत्र की चिन्ता, कलापूर्ण कृतियों, कविता गायन में, प्रेम सम्बन्धों में सफलता, नाटककार, उच्च शिक्षक, परस्त्रीरत होते हैं।

यदि धनेश शुक्र छठे घर में हो तो चचा ताऊ से सम्पत्ति लाभ, अस्वस्थ, विवाह यदि हो तो स्वस्थ, न हो तो प्रमेह, स्वप्नदोष रोग होते हैं। शत्रुयुक्त,

अपवादी स्त्रियों से प्रेम, रोगी, मानसिक क्लेश तथा अपनी हीनता तथा नासमझों पर पछताते हैं कामी तथा स्वार्थी होते हैं।

जिसका धनेश शुक्र सप्तम हो तो उसकी स्त्री भाग्यवान, हंसमुख, सुन्दर हो, वह इष्ट मित्रों से युक्त २० वर्ष में विवाहित होता है। ससुराल से बहुत धन मिलता है। जलविहार, रतिकला में निपुण, वेश्यागामी, प्रवासी, प्रेमविवाह करता है। प्रवृति रंगीन, विलासी तथा स्त्री सम्मानमय होती है।

जब धनेश शुक्र अष्टम में हो तो मनुष्य का विवाह सम्बन्ध कठिनता से हो, यदि हो तो स्त्री घमंडी शारीरिक, साम्पत्तिक अड़चनें, शत्रुभय, प्रवासी, प्रमेह अफीमची, गुप्त रोगी, कामुक हो।

यदि धनेश शुक्र नवम हो तो विदेश यात्रा से लाभ। वह कलापूर्ण साहित्यिक, विवाह के बाद स्त्री तथा अन्य सम्बन्धियों से भाग्योदय, धार्मिक, विद्वान्, देवाराधक, गायनवादन सिनेमा नाटकादि से, स्त्री धन से जीवनयापन होता है और कभी विदेशी स्त्रो, अन्तर्जातीय विवाह भी होता है।

जिसका धनेश शुक्र दशम में हो तो मनुष्य सामाजिक, शान्त होता है उसके गुण अवसर के बिना विकसित नहीं हो पाते। वह राज्यसेवी, धार्मिक, ग्रह पशु सुख से सुखी, सिनेमा, नाटक फोटोग्राफी आदि सभी कार्यों में कुशल तथा यश पाते हैं। स्त्री के अधीन भी कभी रहते हैं जबकि स्त्री स्वयं नौकर शिक्षक हो।

जब धनेश शुक्र एकादश हो तो मनुष्य को कलापूर्ण कार्यों, इष्ट मित्रों से लाभ, उनके स्त्रो बच्चे सुन्दराकृति, ये प्रेम में निराश भी रहते हैं। पदवृद्धि, यश, कवि लेखन कार्य से मिलता है। गायन, वादन में चतुर, परस्त्रीरत, धनिक होते हैं। कृपण अपयशी, द्विभार्या योग भी होता है।

यदि धनेश शुक्र द्वादश में हो तो मनुष्य दान पुण्य धार्मिक व्यक्तियों से लाभ होता है। वह झूठा स्वार्थी कुमार्गगामी, सुरापी, जार, नेत्र-धन कष्ट, ऋणी, पापरत, पद तथा इन्द्रियलोलुप, झगड़ालू स्त्री, विजातीय स्त्री से सम्बन्ध रखने वाले, व्यसनी, कभी २ क्वारे भी रह जाते हैं।

धनेश शनि फल

शनि—जिसका धनेश शनि १०, ११ का होकर लग्न में हो तो मनुष्य कृष्णवर्ण, वात शरीर विकार, राज्यसुख धन की कमी, चपल, अस्थिर प्रकृति,

कृपण, कृश, विद्यवान्, शत्रुरहित, स्वार्थी, युक्तिवाद-कुशल, व्यवसाय में लोहे का कार्य करते हैं। मिलनसार कम, एकान्तसेवी, पिता मृत्यु या सदा कलह, नजला, उन्माद, बहुमूत्र रोग होता है।

जब धनेश शनि धनगत हो तो मनुष्य झूठा, चपल, मन्ददृष्टि, लोभी, विश्वास-घाती, राज्यसेवी, शत्रुजित, परिश्रमी, किन्तु विफल व्यापार, भाग्यानुकूल लाभ न लेने वाला, लोहकार्य में धीमी सफलता मिलती है : यह दुराग्रही, हठी, बेपरवाह, पैतृक धन नहीं मिलता, सदा असन्तुष्ट, खानपानादि से रहते हैं।

यदि धनेश शनि तीसरे हो तो यौवन में चिन्ता कष्ट, शैशव में लज्जित, आयु के साथ बुद्धि में उन्नति, स्वल्पभोजी, गुणी, शान्त, ससुर से हानि, धार्मिक, बन्धु मृत्यु, वातपीड़ा, बहिन हो तो विधवा, उदास, सन्तान कम, दया, लोभ, पराक्रम, उद्योग, राज्यसेवा सभी सामान्य होते हैं। परस्त्रीरति की इच्छा रखते हैं।

जिसका धनेश शनि चतुर्थ हो तो मातृपीड़ा, ३६ वर्षोपरि पितृकलह, एकान्तप्रिय, क्वारा या कलिहारी स्त्री, शत्रुजीत, प्रवासी, अपयशी, आचारहीन, पित्तवायुयुक्त, राज्यसेवक, नेतृत्व करने वाला, धनतृषित होता है।

जब धनेश शनि पंचम हो तो दुष्ट, प्रतिशोधपूर्ण, अहंकारी, पुत्रशोक हो, पत्नी को पेट विकार, दया, प्रेम रहित, पुरा सम्पत्ति नष्ट हो, विद्या में विघ्न, शत्रुत्रास, स्त्रीविरोध, भ्रमणशील, रोगी, व्यापार में हानि होती है।

यदि धनेश शनि छठे हो तो शत्रुजित, वातरोगी, पराक्रमहीन, भ्रातृ-कष्टी या मृत्यु, यात्रा में कष्ट, विलासी, कृपण, बन्धुकलह, स्त्री, पशु, गँवार तथा झूठ के कारण सदा ही झगड़ा हो, भैंस पालित एकान्त वासी हो।

जिसका धनेश शनि सप्तम में हो तो स्त्री और साझी से नहीं बनती, वे धोखा देते हैं। उत्कर्ष में रुकावट, मूत्रकृच्छ रोग, चंचलवृत्ति, नेत्र कष्ट, धैर्यवान्, प्रौढ़स्त्री, संकट में उत्साह देने वाली, दूरदर्शी, सावधान, दोनों बातों में झगड़ते हैं किन्तु आपस में प्रेम रखते हैं। मनुष्य गणितज्ञ, शिक्षक, सम्पादक, ज्योतिषी आदि कार्य करता है।

जब धनेश शनि अष्टम हो तो दीर्घायु, विवाह के बाद दुखी, धन बीमारी में व्यय हो, अपमान, नौकरी में अड़चन, धन कम, वियोग दुख, उच्चाभिलाषा,

सन्तति सम्पत्ति में से एक की कमी अवश्य, स्वतन्त्र व्यवसाय, आकस्मिक लाभ, बचपन में दुख, प्रौढ़ावस्था में सुख, मृत्यु समय कष्ट देता है।

यदि धनेश शनि नवम हो तो मनुष्य उदास, यात्रा दुख से अलग रहने वाला, विवाह के बाद सम्बन्धियों से कलह, वह पुजारी, तपस्वी, अध्यापकादि होता है। ३६ वर्ष बाद भाग्योदय, परधर्म, परस्त्री, परदेश रत हो, आस्तिक होकर नास्तिक विचार, कभी-कभी बड़े आदमी भी होते है।

जिसका धनेश शनि दशम हो तो मनुष्य निज उत्थान पतन देखने वाला होता है, उसे नीचों की सेवा से उन्नति, हर्ष, और धन मिलता है। माता-पिता विरोध, उद्योग राज्य विफल, अपयश। उच्च का होने पर, नीतिज्ञ, उच्चाधिकारी, धर्मप्रवर्तक, संन्यासी, गूढ़शास्त्राभ्यासी, लेखक, वक्ता, निगम, जिलापरिषदध्यक्ष होते हैं, विषयासक्त नीच रत होते हैं।

जब धनेश शनि एकादश हो तो मित्र कम, तुला में सत्यवक्ता, धनी, सफल, बच्चे कम, किन्तु दयालु, कोमल हृदय, कमजोर, उन्नतिशील, लोह कोल व्यापार से लाभ, राज्यसम्मान, देशाटन, नीचसंगति, धनी, चालाक, मुकदमा, चुनाव में जीत, हठी, दुराग्रही, जमानत लेने में हानि होती है।

यदि धनेश शनि द्वादश में हो तो मनुष्य अभागी, इष्टमित्रों से कलह, व्यापार में हानि, शत्रुभय, राज्यदण्ड, धनजनसंकट, ऋण चिन्ता, खिन्नता, भ्रमण, निर्दयी, आलस्य, अङ्गभङ्ग होता है क्रान्तिकारी, रूढ़िवादी, आँखहीन, सन्तान-हीन या बहुत ही कम, मृत्यु के बाद यशस्वी होते हैं।

सहजेश फल

सहजेश सूर्य फल

सूर्य—जिसका सहजेश सूर्य लग्न में हो तो मनुष्य अपने पराक्रम से (पुलिस सेना) जीविका कमाने वाला, गौर वर्ण, लम्बा, प्रतिशोध लेने वाला, पित्तरोगी, तार्किक, विवादी, लम्पट, तेजस्वी दृष्टि, उन्नतशील, वातभय, छोटी यात्राएँ, आवश्यकता पर काम आने वाला, क्रोधी, अच्छी जगह मिलने पर भी दुखी रहता है। लेखक, कविसम्पादक।

जब सहजेश सूर्य दूसरे हो तो मनुष्य दुश्चरित्र, परधन-स्त्री को चाहने वाला, बन्धुविरोधी, धन तृषित, औफीसरों से प्रेम, विद्या-स्वच्छता प्रेमी, आँख

में पीड़ा, जलविहारप्रिय, तैराक, परिवर्तनशील, यश चाहने वाला, कलासौंदर्य-प्रिय, जीवन में बहुत ऊँच-नीच देखने वाला, दुखी होता है।

यदि सहजेश सूर्य तीसरे भाव में हो तो मनुष्य उद्योगी, परिश्रमी, साहसी, बन्धुपीड़ित, कर्णरोगी, वातून, राज्य, समाज, निगमादि चुनाव में विजयी, अध्यक्ष, आत्मविश्वासी, सत्यवक्ता, शत्रुजित, मित्रों की सहायता से बड़ा हो।

जिसका सहजेश सूर्य चतुर्थ हो तो माता-पिता मामादि का विरोधी, गृह, उद्यान, पुष्पादि शौकीन, कटु स्त्री वाला, कम सन्तति, दुखी गुप्त चिन्ता, कठोर प्रकृति, क्वारा या देर में शादी, बुढ़ापे में कुछ धन हो।

जब सहजेश सूर्य पंचम हो तो संतान सुख नहीं, धनिक किन्तु दुखी, धार्मिक, विद्याभ्यासी, लेखक, कभी-कभी दो पत्नियाँ, उच्चाभिलाषी, यशस्वी, शान्त, स्वच्छ, तार्किक, पुत्र गोद लेता है, घरेलू जीवन दुखी रहे।

यदि सहजेश सूर्य छठे हो तो शत्रुदमन, निरोग, बन्धुविरोध, नेत्रकष्ट, मामा को भारी होता है। स्मरणशक्तिहीन, नौकरी में झगड़ालू, सेवा, रसोई कार्य अच्छा करते हैं। ये लोग स्वार्थी, मतलब के पूरे, प्रबल वक्ता, इञ्जिनियर, डाक्टर, सर्जन, कैमिस्ट होते हैं, रिश्वत लेने से नहीं चूकते।

जिसका सहजेश सूर्य सप्तम में हो तो बाल्य रोगी, पराक्रम द्वारा विवाह, प्रवासी, स्त्री दुश्चरित्र होती है। अधिकारी असन्तुष्ट रहते हैं। यात्राभय, किन्तु सभी कार्यों को होशियारी से ठीक कर लेते हैं। ये आरामतलब, आकर्षित वेश-भूषा रखते हैं ये लोग स्वयं बड़े अच्छे होते हैं फिर भी स्त्रीवियोग हो जाता है।

जब सहजेश सूर्य अष्टम हो तो मनुष्य राज्यदंड पाता है। बन्धु शत्रु द्वारा कष्ट, अनेक चिन्ता-ग्रस्त, मुकदमा चले, जीवन में उथल-पुथल हो, पैतृक सम्पत्ति न मिले, स्त्री से पहले मृत्यु हो, एकान्त रहे, अनेक कठिनाई पार करने पर इच्छा पूर्ति कर पाता है। ये लोग सतर्क रह कर अवसर पाते हैं।

यदि सहजेश सूर्य नवम हो तो विवाह के बाद भाग्योदय, जीवन में अचानक परिवर्तन आते हैं। दूर की यात्रा, यश कार्य, राज्यसेवक, छोटे भाई को कष्ट, अभिमानी, परोपकारी, शिक्षा से अधिक दिखाई देते हैं, सदा प्रसन्न, सच्चा उच्च-विचार, तन्त्र-मन्त्रादि का तत्त्व जानने वाले स्वतन्त्रता प्रेमी होते हैं।

जिसका सहजेश सूर्य दशम हो तो वह राज्यप्रवेश, पदवृद्धि, उद्योगी, पिता-

भक्त, मातृ कष्ट, पितृ सुख कम, वह जादू आविष्कार, स्त्री आदि का प्रेमी होता है। बच्चे और वह प्रसन्न तथा दुर्बल होते हैं।

जब सहजेश सूर्य एकादश हो तो राज्य, व्यापार, भाई आदि से लाभ उठाने वाला, सुखी, भोगी होता है। सम्पत्ति सन्तति दोनों साथ नहीं होते, और बड़े भाई को कष्ट देता है। वह कामी होता है और बड़ा पद प्राप्त करता है। जीवन में उथल-पुथल देखने पर देरी से उन्नति करता है।

यदि सहजेश सूर्य द्वादश हो तो स्त्री द्वारा भाग्योदय, विलासी, प्रवासी, बन्धुवर्ग को कष्टी, ध्येयवादी, सहनशील, धनतृषित, ईर्ष्यालु, सोच-समझ कर कार्य करने वाला, समाजसेवक, अपने ध्येय पर पहुँचने तक वे शान्त चुप रहता है। वे परिश्रमी, उद्योगी, तथा तत्पर होते हैं और अपनी आशा को सफल करने के अवसर की तलाश में लगे रहते हैं।

सहजेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका सहजेश चन्द्रमा २ का लग्न में हो तो वह सुन्दर, निष्कपट, तेजस्वी, विद्वान्, कवि, लेखक, कमहिम्मती, नींद में बोलने वाला, विवाहित, सुख कम, परस्त्रीप्रेमी, जलभय, असत्यभाषी, अव्यावहारिक, इष्ट-मित्र युक्त, पुष्प, उद्यान, स्वच्छ मकानादि का शौकीन, मधुरभाषी, कंठ रोगी, नजला, जुकामादि होते हैं।

जब सहजेश चन्द्र दूसरे हो तो मिथ्यावादी, बुद्धिहीन, भ्रमणशील, पापरत, धनहीन, अन्न-वस्त्र की कमी नहीं, पूर्ण चन्द्र हो तो उद्योगी, बुद्धिमान, पढ़ने-लिखने का शौकीन, यात्राएँ निर्द्वन्द नहीं होती, ये बेपरवाह होते हैं।

यदि सहजेश चन्द्र ४ का तीसरे हों तो (पूर्णचन्द्र) राज्यसेवी, देव-गुरु-सज्जन-बन्धुप्रिय, गर्वी, कृपण। क्षीण चन्द्र भाई-बहनों का सुख कम करता है। जल यात्रा प्रेमी, स्त्री-मातृ विरोधी, झूठे, कविता गान प्रेमी होते हैं।

जिसका सहजेश चतुर्थ हो तो उद्योग, पराक्रम से धन, जमीन जायदाद, कुआँ उद्यानादि का उपभोग करने वाला, विकल, कृषि, पशुयुक्त, जल विभाग या बन विभाग में नौकर, दादलाई जायदाद से पृथक् रहने वाला, रहन-सहन सीधा-स्वच्छ, क्रियात्मक, प्रेमी, स्त्री-बच्चों को प्रिय होते हैं।

जब सहजेश चन्द्र पंचम हो तो जातक परिश्रमी, तीव्र बुद्धि, देवभक्त कवि लेखक, स्त्री-बच्चों की बीमारी से चिन्तित, कन्यायें अधिक, उच्च शिक्षा हीन, स्वच्छन्द, पर पकारी, पूर्णचन्द्र होने पर होता है। क्षीण चन्द्र स्त्री-बच्चों से कलह, स्वभिमानी स्त्री होने के कारण जीवन सुखी नहीं रहता।

यदि सहजेश चन्द्र छठे घर में हो तो आलसी, मन्दाग्नि, निष्ठुर, पापरत, कामी, कठोर वक्ता, नजला जुकाम, पेड़ू में अक्सर दर्द, डूबने का भय, राज्यचौर भय, दुर्बल देह होते हैं। यह ऐश्वर्य भोक्ता, सदा युवकों की संगति करने वाला, नीतिज्ञ, निज कार्य कर लेने वाला होता है।

जिसका सहजेश चन्द्र सप्तम में हो तो कामी, प्रेम विवाह में तत्पर, क्षीण देह, धन-शील हीन, परस्त्री रत, घमण्डी, स्त्रीवियोग, कृपण, स्त्री सम्बन्धी अनेक रोगों से पीड़ित, धातुक्षीण, स्वप्नदोष, पागल प्रेमी होता है। यात्री हो।

जब सहजेश चन्द्र अष्टम में हो तो शारीरिक, मानसिक, बन्धुकष्ट, क्षीण देह अनेक रोग युक्त, निर्धन, चोर शत्रु राज्य भय, किन्तु अचानक धन मिलता है। पाप से डरने वाला, शिक्षक रूप होता है। बूढ़ों से मित्रता रखता है। ऐसे मनुष्य को अपनी स्त्री से मानसिक, शारीरिक तथा साम्पत्तिक पूर्ण सहायता मिलती है। यात्रा में कष्ट होता है।

यदि सहजेश चन्द्र नवम हो तो शिक्षा अधूरी, जल यात्रा, उदास कल्पना-शक्ति, तीव्र आत्मविश्वासी, गुप्त चिन्तित, कृपण, स्त्री सुख नहीं, भाई-बन्धु कष्ट, थोड़ा यश, जनता में थोड़ा मान मिलता है।

जिसका सहजेश चन्द्र दशम क्षीण हो तो मातृ-पितृ कष्ट वियोग, पूर्ण होने पर सुखी, यात्रा उत्कर्ष, राज्य सेवा, द्रव्य की कमी, माता-पिता की सेवा, सदैव विचार और नोकरी बदलने वाला, एकान्तप्रिय, तप मन्त्र, जादू आदि कार्य सीखने में तत्पर, इनकी विफलता उसे उन्मादी तक बना देती है।

जब सहजेश चन्द्र एकादश हो तो हृदय कमजोर, जीवन अनेक घटना दुर्घटनापूर्ण, सफलता कम, संकल्प बहुत, क्षणिक प्रेमी, समाजसेवी, उदासीन प्रकृति, स्त्री-पुत्रादि से सुख, किन्तु किसी पुत्र से दुख भी मिलता है। जलतत्व, जलयात्रा से लाभ, किन्तु ईर्ष्यालु, कवि या लेखक का छोटा कार्य करता है।

यदि सहजेश चन्द्र द्वादश में हो तो कल्पनाशक्ति अधिक उद्योग कम, स्त्री या विवाह से भाग्योदय, चञ्चल, आत्मविश्वासी, दिखावटी खर्च करने वाला, कम हिम्मत, परिवर्तनशील, प्रकृति प्रवासी, जलविहाररत, नेत्रविकारी, शत्रुसहित होता है। विलासी किन्तु बुढ़ापे में देवाराधक होता है।

सहजेश मंगल फल

मंगल—जिसका सहजेश मंगल लग्न गत ६, ११ राशि का हो तो क्रूर, साहसी, रोगी, कामी, चोर प्रकृति, पुलिस, सर्वे, तथा सैनिक, कार्य करने वाला, भ्रमणशील, उद्वेग, रक्तविकार, अर्श, निराशावादी, तार्किक, एकान्तसेवी, देवाराधक, झग ड़ालू, जिद्दी, शीघ्र परिणाम पर पहुँचने वाला, समाज सुधारक, रोबीला किन्तु भीरु होता है।

जब सहजेश मंगल दूसरे हो तो मनुष्य धनहीन, नेत्रपीड़ित, उष्णता, कुटुम्ब-कलह, खिलाड़ी पढ़ने में रुचि कम, लम्पट, स्वलिंग जातक प्रेमरत, कृषि, धातु-रत, मुश्किलों को जीतने वाला, अपनी बात रखने वाला, निराशप्रेमी, छोटा व्यापारी, स्त्री से नहीं बनती, या वियोग, बुद्धिमान पुत्र होते हैं भाग्योदय देर में होता है।

यदि सहजेश मंगल सहजगत हो तो, प्रबल, वक्ता, भ्रातृ-पितृ-पुत्र-सुख-रहित, रोगीकर्ण, स्वार्थी धूर्त, दादलाई सम्पत्तिरहित, छलिया, व्यापारी, मारने मरने पर तत्पर, डाक्टर, कैमीकल, इन्जीनियर, प्रेमविवाहरत, धोखे से विवाह में रुपया पाने वाला, जीवनशक्ति से पूर्ण सिपाही होता है, चिन्ता रहित होता है।

जिसका सहजेश मंगल चतुर्थ भाव में हो तो वह किराये में रहता है। स्त्री, बंधु, मातावाहन आदि से दुःखी रहता है। रक्त पित्त कफ से रोग, कठोर वचन, डिपलोमेट, स्वच्छन्द, शक्तिमान प्रवासी, सामाजिक, धर्मभीरु, कई स्त्रीका इच्छुक, यात्रा में हानि, धर्म-कर्म में रुकावट होती है।

जब सहजेश मंगल पंचम में हो तो विवाह देर में, पुत्र संतान, गाने का शौकीन, रिश्वत में शीघ्र पकड़े जाने वाले, यशस्वी, यात्रा में कष्ट, कफ पित्त रोगी, झगड़ालू, खर्चीले, उच्चाभिलाषी, व्यभिचारी होते हैं।

यदि सहजेश मंगल षष्ठ में हो तो शत्रुजित, क्रोधी, सुसंगत, कई वार खाने वाला, ननसाल को भारी, सुरापी, रजोगुणी, दिनरतिप्रिय, वाचाल, जल से भय, नेत्ररोगी, माता से अनबन, भाग्योदय देर में, नीच स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

जिसका सहजेश मंगल सप्तम में हो तो स्त्री शत्रु से कष्ट, दूर की यात्रा, पदलोलुप, रक्तविकार, अर्श व्यापार, राज्य से हानि, द्विभार्या, खेती, लकड़ी, छापेखाने के कार्य से लाभ, गाने का शौकीन, बहुशत्रु, प्रेम में निराशा और कष्ट, बड़े ही संघर्षमय जीवन व्यतीत होने पर बड़ी आयु में धन, यश मिलता है।

जब सहजेश मंगल अष्टम हो तो, कामी, मन्दबुद्धि, रक्तविकार, शरीर में श्वेत दाग नेत्र के पास, सज्जन विरोधी, भ्रातृकष्टी, कम संतान, स्त्रीकलहकारणी, मनुष्यताकू, अर्श, मलेरिया होता है। नित नया झगड़ा घर में रहे, स्नायुपीड़ा हो, कृपण, बीबी खर्चीली, परस्त्री से छिपा सम्बन्ध हो, राज्यसेवी।

यदि सहजेश मंगल नवम हो तो नास्तिक, उत्कर्ष में रुकावट, मातृकष्ट, हिंसक, राज्यसेवी, पद्धतिविवाह का विरोधी, द्विभार्या भी हो, व्यभिचारी, डाक्टर, जर्राह, कारीगर जैसे बढ़ई, लुहार, चुनाव जीतने वाले, अधिकार प्रिय, रोबीला किन्तु अपने मातहत से धोखा पाता है। प्रेम विवाह में निराश रहता है।

जिसका सहजेश मंगल दशम हो तो राज्यसेवी, साहसी, सन्तोषी, उपकारी, शत्रुरहित, प्रथम पुत्र न जिये, यशस्वी हो, सुख कम रहे। वृश्चिक राशि पर सर्जन, वकील, मामा को कष्टी, शुभवक्ता, द्वयर्थक बात करने वाला, क्रोधी, चालाक, प्रेम करने में विनोदी, विवाह से दहेजका पूर्ण लाभ, स्वास्थ्य सुन्दर हो।

जब सहजेश मंगल एकादश हो तो राजप्रवेशी, शत्रुक्षय, स्त्री-भूमि से लाभ, व्यापार से लाभ, कुटुम्ब, से विरोध, पुत्र सुख नहीं, डाक्टर वैद्य वकीलों को लाभ देता है। स्वतन्त्र, स्पष्टवक्ता, भयरहित, विनोदी यात्राप्रिय, समाजसेवक, परिश्रम और बुद्धि से उन्नति करने वाले, कर्क में होने से मनुष्य भीरु, बकवादी, जलयात्रा में जीवन भय हो।

यदि सहजेश मंगल द्वादश हो तो आँख में रोग, रक्तविकार या रक्तचाप या अर्श, विवाह में देरी, विवाद, स्त्री-भाई को कष्ट, पेट में पीड़ा, खर्चीला, क्रोधयुक्त, कामी, द्विभार्या, दानी, देशाटन प्रिय, जलयात्रा, चोरी भय, पुलिस, सेना में अधिकारी। सिंह में मंगल हो प्रेम में विफलता, बड़े संघर्ष के पश्चात् जीवन में स्थिरता तथा शक्ति बड़ी आयु ५६ वर्ष के पश्चात् मिलती है।

सहजेश बुध फल

बुध—जिसका बुध सहजेश होकर, १, ४ का लग्न में हो तो गौर वर्ण, कृशगात, लेखक, प्रूफरीडर, वैद्यादि छिद्रान्वेषी, मिलनसार, नीचसंगत, प्रवास में

दु:खी, चपल, ठगी कार्य में निपुण, अनुशासनरहित व्यवहार, बचपन में मियादी बुखार, स्नायुदुर्बल, नजर लगना, वायु से पीड़ित, नाजुक मिजाज, हृदय, कलाकार होते हैं।

जब बुध सहजेश होकर २, ५ का दूसरे भाव में हो तो मनुष्य परस्त्री बच्चों के साथ विषय करने वाला, गुदाभोगी, स्पष्टवक्ता, अपूर्ण विद्या वाला, भ्रष्टबुद्धि, अपयशी, ३२ वर्ष बाद उद्योग विफल, व्यर्थ पापमय खर्च, भोजनप्रिय, स्त्री की कमाई खानेवाला वृष में अच्छा तार्किक, कला द्वारा धन पाने वाला, पड़ौसप्रिय होता है।

यदि सहजेश बुध तीसरे भाव में हो तो जनमलिन हृदय, स्वच्छन्द, चंचल, कर्णरोगी, ज्योतिष जानने वाला, चिकित्सक, लेखक बनाता है। जिद्दी, सुखहीन, मिथुन में मित्रों की सहायता से उन्नति, वकील, व्यापारी, मजाकिया, देशाटनप्रिय, परिवर्तनशील। कन्या में गणितज्ञ, साहित्यिक, वैज्ञानिक, मितव्ययी किन्तु निर्धन होता है।

जिसका सहजेश बुध चतुर्थ हो तो मनुष्य, संगीत, नृत्यविद्या, वाहन युक्त होता है। प्रवास में कष्ट, पिता से कलह, शिक्षा अपूर्ण किन्तु घमंडी, व्यापार में कुछ धन मिलता है। बात बदलने में तेज, यात्राप्रिय, तिकड़मी, राजनीतिज्ञ निराश रहता है।

जब सहजेश बुध पंचम हो तो अपूर्णशिक्षा, कवि, लेखक, नाटकी, तीव्रबुद्धि, क्रोधयुक्त, विश्वासहीन, ज्योतिषी, गणितज्ञ, पामिस्ट, राज्यसेवी, अल्पलाभ, सुरापी, दुर्बल हृदय, कलाकार, इष्टमित्रों से कम मिलनसार, सन्तान से दु:खी।

यदि सहजेश बुध छठे हो तो शत्रुयुक्त, रोगी, मातृकुलघातक, लोकप्रियलेखक, मन्दाग्नि, बद्धकोष्ठ रोग होता है। गणितज्ञ, वैज्ञानिक किन्तु धन की कमी रहती है, विदेशी वस्तु क्रय-विक्रय से लाभ हो, उद्योगी होता है।

जिसका सहजेश बुध सप्तम हो तो मनुष्य शिक्षक, वकील, क्लर्क, टाईपिस्ट हो जिससे औफीसर सन्तुष्ट न रहें हों, बचपन कष्टमय, शिल्पी, विनोदी, स्त्री सुन्दर अच्छी, स्वार्थसिद्धि में चतुर, अविश्वासी, जीवन में आशा निराशा की उथल-पुथल बहुत, अन्त में सफलता, मकर का बुध विवाह के लिये शुभ लक्षण नहीं, परेशान रहता है।

जब सहजेश बुध अष्टम हो तो परोद्योग से लाभ उठाने वाला, झूठे मुकदमे में फँसने वाला, दु:खी, मस्तिष्क में विकार, स्त्री वाचाल, झगड़ालू, [illegible] हो, ज्योतिषादि ज्ञान हो, वातपीड़ा, राज्यभय, धोखे से सफल। कुम्भ में बुध, तार्किक, मित्रवान हों, धनी स्त्री से सम्बन्ध करने वाला, किन्तु उसे अन्त तक नहीं बनती।

यदि सहजेश बुध नवम हो तो मनुष्य का विवाह के बाद उत्कर्ष, गणित शिक्षक, क्लर्क, डाकियादि होता है, पढ़ाई में मन्द गति, कुछ धार्मिक, शिक्षा पूर्ण न हो, चपल बातूनी, सख्त मेहनत से भाग्य बनाने वाला, विदेशी वस्तु, विदेश व्यापार से कुछ लाभ रहे। मीन में स्त्री अशुभचिन्तक, जलविहार तत्पर, समयवादी हो।

जिसका सहजेश बुध दशम मेष में हो तो राज्यसेवी, शिक्षक, छलिया प्रकृति, चलचित्त कायदे कानून से रहित, मियादी बुखार, रक्तिम आँव के दस्तों पीड़ित, वह सांसारिक जोवन में सफल कम होता है। चतुर, मितव्ययी, विवाह में कष्ट, स्त्री अविश्वासी कलिहारी मिले, यात्रा में लाभ हो।

जब सहजेश बुध एकादश हो तो द्वेषी, परसेवारत, रोगी, शिल्पी, चितेरा, वैद्यादि, शिक्षक हो। शेयर व्यापार से लाभ उठाने वाला, तार्किक, न्यायप्रिय, विशेष विवाह से लाभ उठाने वाला, मित्रों से समाज में यश लेने वाला, सन्तति सुखपूर्ण, कन्या अधिक, बातों से बात पैदा करने वाला, वाहन सुख हो।

यदि सहजेश बुध द्वादश हो तो अपूर्ण विद्यावान, खर्चीला, चंचल, विनोदी २४ वर्ष बाद उत्कर्ष, धन उन्नति, इष्ट मित्रों से रहित, मलिन मन, धूर्त, बन्धु द्वेषी, शरीर कष्ट, प्रपञ्ची, बातूनी, जिससे मानहानि हो, यात्राप्रिय। मिथुन में बुध हो तो मनुष्य वकील तक हो सकता है। अपने मित्रों की सहायता से बढ़ता है। वह परिवर्तनशील, यात्रा, नौकरी, स्थान में प्रसन्न रहता है।

सहजेश गुरु फल

गुरु—जिसका सहजेश गुरु ७, १० का लग्न में हो तो अभिमानी, कम धनी, द्विभार्या, स्त्री प्रेम कम, नीच स्त्रीरत, शिक्षक, प्रवासी, गुप्तरोगी, स्वजन-विरोधी, शरीर पीड़ा, पीतवर्ण, नौकरी से जीविका करने वाला, मित्रों की सहायता पाकर बढ़ता है। स्त्री बच्चों तथा पिता से दु:खी, यात्रा में कष्ट, ४४ वर्षोपरि बीमार या कोई दुर्घटना हो।

जब सहजेश गुरु दूसरे हो तो उद्योग पराक्रम से लाभ हो, शुभ कार्यों में व्यय, उपकारी, दत्तक पुत्र रूप में उन्नति, वह स्वतन्त्र विचारों के कारण नये मित्रों से लाभ पाता है। वृद्ध गोष्ठी में रत, ज्ञान द्वारा यश पाता है। वृश्चिक में गुरु, क्रोधो, स्वभिमानी, वंशगत रोग से रोगी, झूठे आरोपों से बचने की योग्यता रखता है।

यदि सहजेश गुरु तृतीय हो तो शिक्षित, कीर्ति और धन एक साथ नहीं मिलते। वयोवृद्ध होनेपर ज्ञानी त्यागी, मन्दाग्नि, स्त्री बच्चों से प्रेम कम, उच्च-वर्ण से ईर्ष्या, दयालु, उपकारी, उन्नति धीमी, स्त्री मृत्यु पर संन्यासी, समाज-सेवक, यात्राप्रिय, मन्त्रवादी, गायक, किसी कला में निपुण, इष्ट मित्रों द्वारा व्यापार से लाभ।

जिसका सहजेश गुरु चतुर्थ हो तो राज्यसेवी, उद्यम से मकान, भूमिलेने वाला, मातृसुखी, धर्म कर्मरत। मकर में धन सन्तान चिन्ता, बचपन कष्टी, बुढ़ापा में ज्ञान द्वारा सुखी रहता है। मेष में आजीविका पथ बदलने वाला, विवाह देर में, तीर्थ यात्रा होती है, जीवन विशेष सुखमय नहीं होता।

यदि सहजेश गुरु पंचम हो तो विद्वान्, पुत्र के दुख से दुखी, विद्याभिमानी, दक्ष कार्य, वा रायुरोगी, पुजारी, वकील, अध्यापक, लेखक, आविष्कारक, स्वतन्त्र विचार, देर में भाग्योदय, घर को स्वच्छ रखते हैं।

जब सहजेश गुरु षष्ठ भाव में हो तो मातृ कुल को अशुभ, व्यभिचारी, जुआरी, सुरासेवक, धातुक्षीण, पेड़ू में दर्द, कर्जदार रहे, शत्रु चोर भय रहे, गुण विकसित नहीं होते, निराश रहता है। स्त्री, इष्ट मित्र भी प्रसन्न नहीं होते।

जिसका सहजेश गुरु सप्तम मेष का हो तो मनुष्य सुशिक्षित, विद्वान, वकील, प्रोफेसर, मास्टर, न्यायाधीश, स्त्री का सुख, तीर्थयात्रा, धर्म कर्म रत हो, अचानक धन मिलता है, कर्क का गुरु, स्त्रीवियोग, कलह रखता है, यद्यपि स्त्री, अनेक गुण सम्पन्न होती है किन्तु उसकी मृत्यु मध्यायु में होने से दुख मिले, वह राज्य प्रवेशी हो।

जब सहजेश गुरु अष्टम हो वृष का तो या सिंह का तो सहसा धन मिले, किसी स्त्री की धरोहर का, उसकी स्त्री और वह दोनों घर की उन्नति करते हैं। राज्य की नौकरी मिले, यात्रा में कष्ट, आलसी, क्षीणदेह, पापरत हो।

यदि सहजेश गुरु नवम हो तो मनुष्य सुशिक्षित, वकील, प्रोफेसर, राज्यसेवक, सम्पादक, सन्तान सुख रहित, पुत्र यदि हो तो पिता विरोधी हो, किसी सम्बन्धी स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला, यश प्राप्ति का बहुत यत्न करना पड़ता है। वह नाजुक हृदय हो उसे निराशा से कई बार ठेस पहुँचती है।

जिसका सहजेश गुरु दशम हो तो ३६ वर्षोपरि पिता से अनबन, विवाह न हो, हो तो स्त्री पुत्र न जिये, स्वाभिमानी, स्वच्छ वस्त्र पहने, कलाप्रिय, सरकारी नौकरी, उच्चाभिलाषी, भ्राता की मृत्यु, कामी, जार हो, निज नाम के लिए तन्त्र-मन्त्र करने में तत्पर, प्रपंची, मित्रता किसी से न निभे, स्वप्नदोष, धातु क्षीण रोग हो।

जब सहजेश गुरु एकादश हो तो धन, विद्या, सन्तान, व्यापार में से किसी एक का पूर्ण सुख हो, अच्छी नौकरी मिले, बड़े उद्योग से, विवाह में दहेज काफी मिले, इष्ट मित्रों से युक्त, सुखी हो किन्तु वृश्चिक का गुरु पड़ोसियों से नहीं बनने देता, वंशगत रोग से पीड़ा हो, बड़े भाई से विरोध स्वयं को बचाने के लिए चतुर हो।

यदि सहजेश गुरु द्वादश हो तो धर्म के नाम पर, यात्रा में खर्च करने वाले स्वार्थी हो, अविवाहित रहे या स्त्री से न बने, शारीरिक कष्ट हो, बीमार रहे, वायु रोग, अंग-भंग, निर्दयी, नीच संगत हो, छलिया, जिगर खराब, मन्दाग्नि हो, नीच जाति स्त्री से सम्बन्ध गुप्त हो। धन में होने से स्वतन्त्रविचार, खिलाड़ी, मैदान, जल की सैर करने वाला, सट्टा, जुआ, रेस में थोड़ा-थोड़ा लाभ लेकर बढ़े, स्त्री मृत्यु पर साधु हो।

सहजेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका सहजेश शुक्र १२, ५ का लग्न में हो तो मनुष्य प्रेम विवाह, गन्धर्व या द्विभार्या हो, लेखक, कलाकार, नाटयकार, कवि, शृंगारी, कामी, प्रमेहादि गुप्त रोगी, इत्रादि पुष्पों, श्वेत रंगीन वस्त्रों का शौकीन, कोमल वाणी, यात्रा प्रिय। सिंह में होने से सामाजिक,इष्ट मित्र युक्त, सुन्दर मोहक हो, विवाह से यश धन शान्ति मिले।

जब सहजेश शुक्र १, ६ का दूसरे हो तो मेष में नौकरी हो, सट्टा, लाट्री, रेस का शौक हो पर धन न रुके, प्रेम में निराशा, द्विभार्यायोग भी हो। कन्या का

शुक्र, व्यभिचारी तथा स्त्री को रोगी बनाता है, गायन, लेखन, सरस कविता, शृंगारी हो, धातु विकार, गुप्त चिन्ता, कामी, विलासी, स्वलिंग जातक से विषय रत रहता है, धन तृषित हो।

यदि सहजेश शुक्र २, ७ का तृतीय हो मनुष्य का विवाह देर में हो, स्त्री बच्चों का सुख, दहेज मिले वह व्यापार कलादि से धन कमाये, समाजसेवी, इष्ट मित्रों से युक्त अच्छे औहदे पर हो, २० वर्ष में प्रेमोन्माद, धातुविकार हो।

जिसका सहजेश शुक्र चतुर्थ हो सरकारी नौकर, स्त्री रहित या वियोगी, सुशिक्षित, देवभक्त, कामपीड़ित, परस्त्रीप्रेमरत, विवाह में निराशा, दूसरा विवाह और भी दुखित हो, घर से बाहर रहे, कविता, लेखन कला से कुछ यश प्राप्त हो।

जब सहजेश शुक्र पंचम हो तो मनुष्य सुशिक्षित होने पर, शृङ्गारी, शिक्षित, स्त्री की चाह करता है, और परस्त्रीरत रहता है जिस कारण अनेक रोग होते हैं। धनु में होने पर कलाकृतियों से धन कमाता, विधवा में धन के लिए आसक्त रहता है, पढ़ने लिखने पर वकील, न्यायाधीश, वैज्ञानिक, शिक्षक या व्यापारी उच्च कक्षा का होता है।

यदि सहजेश शुक्र छठे हो तो ५ में वह कविता, गायनादि, कला से दूसरों को आकर्षित करता है किन्तु प्रेम में सफल नहीं होता, मकर में बड़ी स्त्री से विवाह की इच्छा हो, उसके प्रभाव में रहे, प्रेम में अनेक निराशा आयें, ऐसा मनुष्य झूठे वायदे द्वारा धन कमाता, मित्रों को ठगता, वीर्य सम्बन्धी रोगों से पीड़ित रहता, और मानसिक कष्ट सहता है।

जिसका सहजेश शुक्र सप्तम ६ का हो तो मनुष्य विधर्मी, विजाती स्त्री से प्रेम विवाह करना पसन्द करता है जो कि सुन्दर नक्श की हो प्रथम प्रेम में निराशा, ये लोग मधुरभाषी स्त्रियाँ फँसाने में चतुर, इन्हें स्त्री जाति से धन मिलता है, अन्त में अपनी कामलिप्सा पूर्ण करने में सफल होते हैं। जलविहार, जल क्रीड़ा इन्हें पसन्द होती है, प्रवास में वेश्यागमन करते हैं।

जब सहजेश शुक्र अष्टम में ७, १२ का स्वोच्चगृही हो तो जातक स्वभिमानी विद्वान्, प्रपंची, विधवा या त्यक्ता स्त्री का प्रेमी जो कि पुरुष प्रकृति की हो, कभी-कभी आपसी कलह जेल तक कराती है और कोई-कोई नव मकान तक बनाकर देता है।

है, द्विभार्या योग है, किसी कलापूर्ण कार्य से धन मिले, समाज में मान तथा प्रधानता मिले।

यदि सहजेश शुक्र नवम ८, १ में हो तो जातक शृंगारी, कवि, लेखक, उसकी स्त्री सर्वाधिकार चाहने वाली, ईर्ष्यालु, कलहप्रिय, विवाह २० वर्ष तक हो, ये लोग प्रेम दिखाने को करते हैं। मेष में शुक्र धार्मिक विद्वान्, तीर्थाटनप्रिय बनाता है। वृश्चिक में, प्रवास में कष्ट उठाता है। कामी, लंपट हो, परस्त्री रत रहे।

जिसका सहजेश शुक्र दशम २ में हो तो मनुष्य परिश्रम से गायन-वादन कलाकार्यों, रंगविरंग के फूल-पत्ती बनाने, उच्च शिक्षा प्राप्ति में उद्यत रहता है, व्यापार, नौकरी में उन्नति करता है, स्त्रीरत रहता है। यात्राप्रिय, माता का सुख हो किन्तु पिता से न हो। ६ में नौकरी में अड़चन, किन्तु शिक्षा उच्च हो, विवाह में देरी हो, उच्च वर्ण से न बने।

जब सहजेश शुक्र एकादश ३ में हो तो गीत, नृत्य, प्रिय, शुभ लेखक, पुत्रादि चिन्ता, यात्रादि में कष्ट, इन्द्रियलोलुप, दुतर्फा आय, द्विभार्या हो, १० में धन के लिए स्त्रीप्रेम करता है, किन्तु निराश ररता है। पुत्री अधिक हों, बनावटी प्रेम से लड़कियां नीच घराने की फँसाता है। जल से भय, शुक्रक्षय, नजला, जुकाम, मन्दाग्नि से रोगी रहता है। स्त्री बड़ी हो।

यदि सहजेश शुक्र कर्क का द्वादश हो तो किसी विधवा से प्रेम में गुप्त खर्च करने वाला, अपनी स्त्री से सदा ही कलह रहे और विवाह के बाद, व्यापार या नौकरी में उन्नति हो, कुम्भ में होने से उदास जलयात्राप्रिय, नीच स्त्री रत, वहुत से अविवाहित, व्यभिचारी, उन्नति बहुत ही धीमी, नेत्र पीड़ा, ऋणी, शत्रुभय, शादी बहुत ही देर में हो, वुढ़ापे में आशा के पूर्ण होने पर शान्ति मिले, यौवन कष्टमय निराश रहता है।

सहजेश शनि फल

शनि—जिसका सहजेश शनि १०, ११ का स्वामी होकर लग्न में ८ का हो तो मनुष्य सरकारी नौकर, अधिकारियों से न बने, विवाह एक, सन्तान कम, इनका स्वभाव अक्खड़, प्रथम मिलन में बुरा प्रभाव पड़े किन्तु हृदय साफ सत्य पर दृढ़ रहते हैं। श्यामवर्ण। धन में शनि बड़ी आयु में सुख शान्ति

देता है, रक्त विकार, रक्तचाप वात रोग होता है, पिता भाई से न बने, स्त्री बीमार रहे। धन तृषित तथा कृपण हो, स्पष्ट वक्ता होने के कारण किसी से न बने, भ्रमण कम करे।

जब सहजेश शनि ९, १० का दूसरे हो, तो परिश्रम से प्रारम्भिक जीवनयात्रा चलती है। ये पढ़े लिखे, सार्वजनिक कार्य करने वाले बड़े व्यक्ति होते हैं किन्तु यौवन में सुखी नहीं होते, नेत्रकष्ट, कुटुम्ब चिन्ता, हठी हों, ये परोपकारी द्विभार्या मातृकष्टी, जायदाद वाला राज्य सेवी, अपनी चालाकी से बढ़ने वाला, नीच संगति, विवाह में स्वजन से रुकावट हो।

यदि सहजेश शनि तीसरे हो तो भाई की मृत्यु कर दरिद्री बनाता है। दुष्ट प्रकृति, अविश्वासी, उदास, उद्योग में सफल हो, सरकारी नौकर, डिपलोमेट, तार्किक, शत्रुजित, पराक्रमी, सन्तान चिन्ता, स्त्री से सुख, प्रवासी, लोह कार्य में खर्च हो, शिल्पी हो।

जिसका सहजेश चतुर्थ में कुम्भ में हो तो व्यापारी, नौकरी में उन्नति नहीं, दादलायी धन न मिले, पित्त वायु रोग हो, आलसी, कृशांग हो, मातृ-पितृकष्टी, आचार विचार हीन। मीन में उदार, नौकरी में उन्नति, साधुवृत्ति, मित्र-धोखे से जीवन में निराशा, आत्म-हत्या तक करते है। शत्रुजित, वायु रोग से पीड़ित, कभी-कभी विवाह रहित ही रहते हैं और यश पाते हैं।

यदि सहजेश शनि पंचम मीन का हो तो स्त्री बच्चों का सुख नहीं होता, प्रतिशोध की भावना रखते, शिक्षापूर्ण नहीं हो, नौकरी छोटी ही रहती है। मेष में परिश्रम से देर में भाग्योदय होता है। व्यापार में लाभ न हो, रोगी, रक्तदोष हो, कुटुम्ब से न बने, भ्रमणशील प्रवास में रहे, मानहानि हो, गंभीर विषय का विवेचन एकान्त में करें।

जिसका सहजेश शनि षष्ठ मेष, वृष का हो तो शत्रुजित, मुकदमा जीतने वाला, भजनानन्दी, संसार से निराश हृदय, घुटनों में विकार दर्द, बन्धुद्वेषी, पराक्रम में हानि, विवाह के बाद कलह हो, सर्वभक्षी, यात्रा में कष्ट हो।

जब सहजेश शनि सप्तम वृष मिथुन का हो तो शिक्षापूर्ण नहीं होती फिर भी अनुसन्धान करते हैं। पत्नी की सास से नहीं बनती किन्तु संकट के समय पति का साथ नहीं छोड़ती। मिथुन में शनि उच्च शिक्षा देता है मनुष्य शिक्षक,

ज्योतिषी, हस्तप्रेक्षक, उदार तथा खर्चीला हो, शरीर रोगी, मातृ कष्ट, भाग्योदय ३६ के वाद हो।

यदि सहजेश शनि अष्टम कर्क हो तो अचानक धन मिले सन्तान सुख भी हो, स्वतन्त्र कार्य से जीविका चले, उसका प्रारम्भिक जीवन दुखित, बुढ़ापा सुखी हो, विवाह देर में हो। मिथुन में मनुष्य का स्वभाव चंचल होने के कारण इष्टमित्र सन्तुष्ट न रहें, वात रोग, दीर्घायु हो, सरकारी नौकरी में उन्नति कम, संतान सुख भी कम हो।

जिसका सहजेश शनि नवम सिंह का हो ३६ वर्ष के बाद भाग्योदय हो, विदेश यात्रा रत तथा विजातीय स्त्रीरत होते हैं। कभी वक्ता तो कभी उदास, द्विभार्या योग भी होता है। कर्क में भाई से अनबन, नीच संगत, विवाह में निराशा मिले। प्रवास, यात्रा में कष्ट, धर्मरत किन्तु उदासीन, शत्रुरहित हो।

जब सहजेश शनि दशम कन्या का हो तो मनुष्य धार्मिक, गूढ़लेखक, ज्योतिषी, निगम जिलापरिषद का सदस्य, उपदेशक किन्तु धनिक न हो, मातृ-पितृ वियोग, उदास दुखी, जीवन भार लगे, स्त्री बच्चों से दुखी, सिंह में शनि हो तो दयालु राज्यसेवक नीचों से दुख, द्विभार्या योग करता है। सुशिक्षित होकर बड़ी-बड़ी उपाधियों से विभूषित होते हैं तथा वकील, जज, स्टेनोग्राफरादि होते हैं।

यदि सहजेश शनि एकादश तुला का हो तो राज्य में बड़ा अधिकारी, लोभी, शत्रुजित, जिद को पूर्ण करने वाला, प्रतिशोधी, विरत, संयमी, ४२ के बाद हो, तार्किक, स्त्री बच्चों की चिन्ता रहे। कन्या में शनि अनेक कार्यरत रखता है। राज्य से लाभ, संसार से अलग, साधुवृत्ति, इसके जीवन का प्रथम आधा भाग कष्टमय हो तत्पश्चात सुखमय हो।

जब सहजेश शनि द्वादश वृश्चिक या तुला का हो तों परिश्रम से सुशिक्षित, राजनीतिज्ञ, वकील, बड़ा कार्य नाम के लिए करने वाले, क्रान्तिकारी, भाग्योदय आधा आयु व्यतीत होने पर हो, देशाटनप्रिय, प्रेम में निराशा दुख मिले, चतुर हो किन्तु घरेलू झगड़े लगे रहे। चोर से हानि हो, नीचों से लाभ हो, बुढ़ापे में विरक्त होकर शान्ति साधन करें।

सुखेश सूर्य फल

सूर्य :—जिसका सुखेश सूर्य लग्न में वृष राशि का हो तो राज्य भाषा पढ़ने वाला, राज्य नौकर, उन्नति कम, माता-पिता से पृथक रहने वाला, कामी,

चुप रहने वाला, ठोस कार्य करने वाला चाहे जितनी देर लगे, रोगी स्त्री वाला, पित्त रोगी, क्रोधी तथा मन्दभागी हो, हृद्रोगी, अरुण कान्ति वाला, रुधिर-विकारी, रूक्ष हो।

जब सुखेश सूर्य दूसरे मिथुन का हो तो धन कमाने वाला कृपण हो, कम पढ़ने वाला, वैज्ञानिक रुचि का, यात्राप्रिय, यन्त्रदीक्षित, तार्किक, लेखक, नेत्र रोगी, इष्ट मित्रों से कम मिलने वाला, मानी, सहानुभूतिरहित हो।

यदि सुखेश सूर्य कर्क का तीसरे हो तो सुशिक्षित, धन वाहन युक्त, अति परिश्रम से हो, दुर्बल देह, यात्राप्रिय, उत्थान पतन देखने वाला, कलाकार, प्राकृतिक सौन्दर्य प्रिय, प्रसिद्धि पराङ्मुख, कर्ण रोगी, भूमिधर, मित्रविरोधी, भ्रातृकष्टी, हिम्मत वाला, गर्वीला, नीच संगत रत रहे। कृषि, बागादि में रुचि रहे।

जिसका सुखेश सूर्य सिंह का चतुर्थ हो तो अत्यधिक आत्मविश्वासी जिससे कार्य पूर्ण नहीं होते, स्पष्ट वक्ता, शत्रुओं को जीतने वाला, समाज तथा इष्ट मित्रों की मदद से यश पाने वाला, पितृविरोधी, स्त्री सुख से रहित, सदैव चिन्तित रहने वाला, तन्त्र मन्त्र पर विश्वास करने वाला, नौकर वाहन सुख से सुखी होता है।

जब सुखेश सूर्य कन्या का पंचम हो तो जातक स्त्री, सन्तान, धनादि से सुखी, प्रथम पुत्र कठिनता से जीता है। सुशिक्षित, कृपण स्वार्थी, व्यापारी, नौकर, शीघ्र गुस्से में आने वाला, लड़ाकू न हो, कायदे कानून पसन्द, विवाह देर में करते हैं। अहं भाव अधिक, देवाराधक, उद्यमी होता है।

यदि सुखेश तुला का सूर्य षष्ठ भाव में हो तो शत्रु और मामापक्ष को नाश करने वाला, नौकरी में ऑफीसरों से लड़ने के कारण उन्नति कम, स्वच्छ वस्त्र, साफ दिल, रसोई बनाने में निपुण, स्त्री को भारी दो विवाह भी हो सकते हैं। पित्त, रक्त, प्रमेह रोग। नीच में होने से चोर, अग्नि भय, दुष्ट, पिताद्रोही, नेत्र विकारी, कृपण हो।

जिसका सुखेश सूर्य वृश्चिक का सप्तम हो तो मनुष्य डाक्टर, जलाधिकारी, जीवन में ऊँच नीच देखने वाला, इन्जीनियर, कैमिस्ट, विषैली वस्तु से हानि, अग्निभय हो। उसकी स्त्री कुलीन धनवान घर की हो, किन्तु विवाह देर में हो, स्त्री बीमार रहे, स्वयं की पित्त, गर्म प्रकृति रहे। पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहे और ५४ वर्ष से प्रथम उसका धन्धा मन्द हो।

जब सुखेश सूर्य धन का अष्टम हो तो विद्या अपूर्ण, मन्द दृष्टि, क्रोधी, इष्ट मित्रों से अनबन, रोगी, पाप से डरने वाला, स्त्री से प्रथम मरने वाला, परिश्रमी, उत्साही, आकर्षित ढंग से रहने वाला, आराम तलब होता है।

यदि सुखेश सूर्य मकर का नवम हो तो अपूर्ण विद्या, खेती-व्यापार करने वाला, वकील की सी सलाह देने वाला, भ्रातृविरोधी, अर्धायु पश्चात् भाग्योदय हो, अनेक कठिनाई के पश्चात् सफलता, आत्मविश्वासी, धार्मिक, यात्राप्रिय, उच्च कुल में विवाह करने वाला तथा किसी दूसरी स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला हो। ये वृद्धावस्था में बिगड़ते हैं।

जिसका सुखेश सूर्य कुम्भ का दशम हो तो विरोध के बाद अच्छी नौकरी मिले, मातृ सुख, पितृ वियोग हो, प्रवासी हो, स्वतन्त्र विचार, तार्किक, प्रारम्भिक जीवन सुखकर, जीवनान्त अच्छा न हो. स्त्री सुशील किन्तु क्रोधी हो। हृद्रोगी, व्यर्थ में बुराई मिले, अपनी कलाकृति से धन लाभ करने वाला, अनुसन्धान कर्ता होता है।

जब सुखेश सूर्य मीन का एकादश हो तो दुर्बल, अच्छे व्यापारी, गाना, नाटक चिड़िया घर देखने के शौकीन, बड़े भाई का विरोधी, सन्तानचिन्ता, राज्यसेवी, धर्म कर्मरत, धन कमाने वाला होता है। इष्ट-मित्रों से युक्त, रक्तपित्तविकारी, पसलियों में दर्द, विद्या धन प्राप्ति में रुकावट हो।

यदि सुखेश सूर्य मेष का द्वादश हो तो मनुष्य स्वाभिमानी, घर का धन खर्च करने वाला, अविचारी, जीवन में अनेक उथल-पुथल देखने के बाद उन्नति करने वाला, बड़ी उम्र में बड़ा आदमी होता है। कीर्ति यश मिले, लेखक, डाक्टर, नेत्र-ज्योति कम, चश्मा लगाने वाला, भूमिधर, पशुपालक, पितृविरोधी, बुढ़ापे में शरीर रोगी, शोक होने पर भी अपनी बात रखने वाला होता है।

सुखेश चन्द्र फल

चन्द्र :—जिसका सुखेश चन्द्र मेष का लग्न में हो तो मनुष्य सुन्दराकृति, सरल स्वभाव, बाल्यकाल में चपल, फिर गम्भीर, कामी प्राकृतिक दृश्य, चित्र, कला कविता का शौकीन, आत्मविश्वास न्यून होता है। परिवर्तनशील, धन से बेपरवाह, साधारणतः भाग्यवादी ही होते हैं। यात्राप्रिय, देवाराधक, प्रेम विवाह करने वाले, चित्ताकर्षक। यदि चन्द्र क्षीण न हो तो उच्चाभिलाषी होते हैं।

जब सुखेश चन्द्र वृष का दूसरे भाव में उच्च हो तो मनुष्य राज्यसेवी, अधिकार युक्त वचन कहने वाला, इष्ट मित्र स्त्री पुत्र से सुखी, प्रेमी, कनवर, टौन्सिलादि का रोगी, नजला जूकाम भी हो, स्वपरिश्रम से धनी, घर से जायदाद तो मिले किन्तु नकदी नहीं मिलती, स्वाध्यायप्रिय, कृपण, शारीरिक परोपकार में तत्पर, पूर्ण चन्द्र, विद्वान, डाक्टर, जज, वकीलादि को यश देता हैं।

यदि सुखेश चन्द्र मिथुन का तृतीय हो तो पूर्ण चन्द्र, माता, पिता, भाई, वहिन, जमीन जायदाद का सुख २४ वर्षोपरि देता है। ये लोग यात्राप्रिय, नम्रकार्य, विचाररत, राज्यसेवक, सत्कर्मी हो। क्षीण चन्द्र इसके विपरीत फल करता है।

जिसका सुखेश चन्द्र कर्क का पूर्ण चतुर्थ होने पर स्त्री जाति से धन प्राप्ति, माता-पिता, मकान पुष्पादि से सुसज्जित, कवि हृदय, लजीला, जल क्रीड़ा या जलयात्रारत, नौकरी या व्यापार में सुखी, सुन्दर आकर्षित, नजला जुकाम रोग पेट के ऊपरी भाग में दर्द। क्षीण चन्द्र उपर्युक्त फल की हानि करता है। स्त्री के सम्बन्ध से जीवन में सुधार होता है।

जब सुखेश चन्द्र सिंह का पूर्ण पंचम हो तो मनुष्य विद्वान, सुशिक्षित, रेडियो में संवाददाता, सम्पादक, कवि, लेखक, उन्नतिशील, राज्यसेवी, सामाजिक इन्तजाम करने वाला, धाराप्रवाह लेखक, स्पष्ट वक्ता, साफ श्वेत वस्त्र धारण करने वाला, परस्त्रीरत, आकर्षकस्त्री, कन्या पुत्रों से युक्त। क्षीण चन्द्र प्रेमविवाह में बदनामी कराता, प्रतिकूल फल करता है।

यदि सुखेश चन्द्र कन्या का छठे भाव में हो तो मन्त्र तन्त्रों द्वारा अपनी विद्वत्ता, ज्ञान बढ़ाने की सोचता है, माता से विरोध रहता है, मन्दाग्नि, यात्रा कष्ट, अण्डकोष वृद्धि, आलस्य, क्षीण देह, क्रोध, सांस, श्लेष्मा वृद्धि, रक्तविकार, नजला रोग होता है।

जिसका सुखेश चन्द्र सप्तम में तुला का हो तो धन की कमी, निरुद्यमी, विवादी, परस्त्रीरत, कामी, जातिच्युत, विवाहेच्छुक, मिलनसार, मधुर भाषी, जीवनपथ अड़चनों से पूर्ण, स्वप्नदोष वीर्यपात, प्रमेह, सुजाकादि रोग हों। क्षीण चन्द्र उपर्युक्त फल को बढ़ाकर मनुष्य को इन्द्रिय लोलुप, व्यसनी बनाता है। उसकी माता उसकी स्त्री को गुप्त धन देती है।

जब सुखेश चन्द्र अष्टम में वृश्चिक का हो तो स्त्रीजाति से कष्ट, मानहानि,

पराधीनता, राज्य शत्रु चोरों से भय, धातु सम्बन्धी, नजला जुकाम, पेड़ू में वायु, जलोदर में से कोई रोग अवश्य हो, अन्तिम समय सुमति हो।

जिसका सुखेश चन्द्र नवम भाव में पूर्ण, धनु का हो तो मनुष्य स्वकुलानुसार विद्वान, धर्म कर्म में रत, यशस्वी, तीर्थ यात्रा प्रिय, कवि, लेखक, शिक्षक, बाल की खाल निकालने वाले, किसी स्त्री के सम्बन्ध में आने पर भाग्योदय, कथा स्वाध्याय रत, देवाराधक, बन्धु बान्धव युक्त, उपकारी हो। क्षीण चन्द्र फल की हानि करता है।

जब सुखेश पूर्ण चन्द्र दशम में मकर का हो तो मनुष्य राज्यसेवी, धनधान्य युक्त, सुशील, माता-पिता का आज्ञाकरी, ग्राम पंचायत, निगम, डिस्ट्रिक्टबोर्डादि का सदस्य या प्रधान होता है। क्षीण चन्द्र माता-पिता की मृत्यु या विरोध रखता है। अस्थिर प्रकृति, नीच जाति के संसर्ग से बदनामी होती है।

यदि सुखेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का एकादश हो तो मनुष्य व्यापारी या राज्याधिकारी जो भी हो, बड़ा ही बुद्धिमान, धनवान, गुणवान, ऐश्वर्यवान, यशस्वी होता है, स्त्री बच्चों का पूर्ण सुख होता है। इष्ट मित्र भाई बन्धु मातादि को प्रिय होता है। यदि चन्द्र क्षीण हो तो इसका फल विपरीत होता है। ऐसे व्यक्ति अपने ऐश्वर्यमय जीवन को त्याग कर साधु वृत्ति अपना लेते हैं। मित्रों से निराशा, कार्य में विफलता हो।

जब सुखेश पूर्ण चन्द्र मीन का द्वादश हो तो मनुष्य विद्वान, राज्यप्रवेशी, दुर्बल हृदय तथा नेत्र रोग, द्विभार्या योग करता है। खर्च अधिक, परदेश में वास करनेवाला होता है। क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य क्रोधी, शत्रुयुक्त हो, उसकी अनेक योजनायें विफल होने से निराश रहता है। दूसरों को धोखा देकर ठगने में स्वयं ठगा जाता है। अपयश पाता है, जलयात्रा में जीवन संकटमय रहता है।

सुखेश मंगल फल

मंगल—जिनका सुखेश मंगल मकर उच्च का होकर लग्न में हो तो मनुष्य भूमिधर, कृषक, पटवारी, कानूनगो, सर्वेदार, पतरोलादि भूमि, कृषि विज्ञान की दीक्षा विदेश में लेकर बड़े होते हैं। हठी, रोब से काम लेनेवाले, चतुर, पुलिस से डरने वाले, छलिया, चालाक किसी नीच स्त्री से सम्बन्धित, गुप्त शत्रु द्वारा अपमानित। सिंह में पुलिस महकमे में नौकरी करके रिश्वत लेते हैं, कभी पकड़े भी

जाते हैं। रक्तचाप, रक्तविकार, पित्त रोग, अर्शादि रोग होते हैं। ऐसे मनुष्यों में ज्ञान योग्यता से कम, क्रोध अधिक होता है। घरेलू जीवन सुखमय न हो, माता की मृत्यु या अनबन रहे। जीवनान्त दुख होता है। जल से सदैव भयभीत रहता है।

जब सुखेश मंगल दूसरे घर में कुम्भ का हो तो मनुष्य कृपण, जायदाद प्रिय, तार्किक, हठी, शीघ्र परिणाम पर पहुँचने वाला, समाज सेवा से धन प्राप्त करने वाला, गर्म चटपटे उष्ण भोजन करने वाला, इसके प्रभाव से मित्र बहुत होते हैं। स्त्री से धन प्राप्त हो किन्तु जूआ रेस लाट्री आदि में खराब करे और यदि कन्या में मंगल हो तो स्त्रीवियोग, निराश, भाग्यसे असंतुष्ट, तर्क द्वारा सबका विरोध करनेवाला, नेत्र पीड़ित, झगडालू, नीच संगति में प्रसन्न, रक्त विकार हो।

यदि सुखेश मंगल तीसरे घर में मीन का हो तो भाई को भारी, शत्रुनाश, राज्याधिकारियों से अनबन रहने के कारण उन्नति रुक-रुक कर हो, यह रुपये से अधिक यश चाहने वाला, जल से भयभीत, प्रेम में निराशा, विवाह देर में, पुत्र कमाई का सुख बहुत ही कम या नहीं। द्विभार्या योग है। यदि तुला में हो तो आपत्ति को जीतने की क्षमता, धैर्य, नौकरी में अफसर, व्यापार में कष्ट, सर्जन, जर्राह, वकीलादि के लिये लाभदायक है। प्रेम में निराशा, जल्दी विवाह दुखदायी हो, नित्यकलह रहती है। स्त्री शोक देखना पड़ता है।

जिसका सुखेश मंगल वृश्चिक या मेष का चतुर्थ हो तो मनुष्य को जन्म-भूमि का त्याग कर कहीं मकान बनाकर रहना पड़ता है। स्त्री माता को कष्ट या गर्भपात कराता है। मृत्यु भी हो सकती है। वह कुलधर्मरत, स्पष्ट वक्ता, मन्त्र से शक्ति प्राप्त करने की इच्छा से भक्ति, देवाराधना करता है। व्यापार, नौकरी में सम्मान, रक्तविकार सम्बन्धी कोई रोग, अर्शादि, पित्त अवश्य हो। किसी दुर्घटना से खासी चोट या अग्निभय रहे। कसरत खेल-कूद का शौकीन, स्वतन्त्र विचार, हठी, चालाक, दुअर्थक बात करने वाला, डाक्टर, जर्राह, वैद्यादि हो सकता है। स्त्रियों से लाभ के लिए मीठी-मीठी बातें कर प्रेम करता है।

जब सुखेश मंगल धन का पंचम हो तो मनुष्य सुशिक्षित, होकर सर्जन, सेना, पुलिस का बड़ा अधिकारी, मसक्कत का कार्य करने वाला, वाहन चालक, स्वतन्त्र विचार स्पष्ट वक्ता हिम्मती, बहादुर, परिवर्तन चाहने वाला यात्रा प्रिय, धन पाने वाला, परस्त्री रत। वृष का मंगल कृषिविज्ञान की दीक्षा दिलाता है।

देवभक्त, रक्तकफपित्त-दोष धनिक स्त्री से विवाहेच्छुक हो। प्रथम पुत्र की मृत्यु अवश्य हो, पुत्री के बाद पुत्र जीवित रहे।

यदि सुखेश मंगल उच्च मकर का छठे भाव में हो तो शत्रु मातृ कुल का नाश करता है, पित्त बढ़ा होने के कारण भूख लगती है और रोग उत्पन्न होते हैं काम वासना बहुत होती है। यह उद्योगी, चालाक, यौवन में किसी स्त्री से अनुचित संबन्ध रखने वाला होता है। मिथुन का मंगल शरीर में विकलता, यात्रा में कष्ट, बड़ों से कलह कराता है, अपने परिश्रम से जीवनयात्रा सफल चलाने वाला, अन्तिमावस्था साधु, सज्जन पुरुषों की सेवा में व्यतीत करता है।

जिसका सुखेश मंगल कर्क (नीच) तथा कुम्भ का सप्तम भाव में हो तो मनुष्य का घरेलू जीवन दुखमय रहता है, द्विभार्या योग होता है, दूसरे विवाह से उन्नति शान्ति स्थिरता मिलती है। ये लोग यान, मोटर, साइकिलादि को बनाते और बेचते हैं, विचार बहुत करते हैं किन्तु कार्य नहीं करते, डरपोक, दून को बघारने वाले, रक्तविकारी खूनी पेचिश आदि से दुखी, परिवार से दुखी, सामाजिक कार्य से लाभ पाने वाले, सट्टा रेस, में रुपया खोने वाले, पितृघातक होते हैं।

जिसका सुखेश मंगल मीन का अष्टम हो तो मन्दबुद्धि दुष्टसंगति, नेत्र कर्ण पीड़ा, उष्ण प्रकृति, रक्त विकार, रक्त चाप, ऋणी, छोटे-छोटे कार्य करने वाला, पुलिस से भयभीत, जल से जीवनभय, विवाह देर में हो प्रेम में विफल रहे। सिंह में होने से हठी, प्रधानत्व दिखाने वाला, रक्तपित्त विकारी, अर्श का रोग हो, स्त्री निर्धन तथा कलहकारी हो, अपनी चुस्ती चालाकी से शत्रुओं को परास्त करने वाला, क्रोधी, अत्यधिक संघर्ष के बाद अपनी वृद्धावस्था में धन-शान्ति-सुख को प्राप्त हो, देवाराधक हो। यौवन कष्टमय निराश रहे।

जब सुखेश मंगल मेष का नवम हो तो मनुष्य सैनिक, पुलिस की उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऑफीसर बनता है, कृपण होता है और दुर्घटनावश शरीर में गोली आदि का घाव खाता है या अनलप्रकोप का शिकार होता है। खेल-कूद, कसरत प्रतियोगिता में यश कीर्ति पाता है। कन्या में होने से यात्राप्रिय, सत्कर्मी, मातृ-सुख से वंचित, स्त्री नीच वर्ण की होती है। ये लोग मन चाहा धर्म अपनाने वाले समाज में प्रथम ही होते हैं और नासमझी के कारण अपने इष्ट मित्रों से झगड़ा कर बैठते हैं फिर पछताते हैं।

यदि सुखेश मंगल वृष का दशम हो तो माता-पिता में से किसी मृत्यु, या विरोध, पुत्र नाशक, देवभक्त, हृद्रोग, रक्तकफ दोष, शरीर में बेचैनी या जलन, साहसी, परोपकारी, सरकारी नौकर, धनिक घर में विवाह होने पर भी सुख चैन सन्तोष न हो, किन्तु यश प्राप्त होता है। महा क्रोधी, गुप्त शत्रु द्वारा पराजित। तुला का मंगल शुभ फलद नहीं होता किन्तु आपत्तियो पर विजय पाने का साहस होता है और अपने आधीन कार्य करने वालों से हानि उठाता है। साझी व्यापार में हानि होती है। प्रेम में निराशा स्त्री से कलह ही रहती है।

जिसका सुखेश मंगल मिथुन का एकादश हो तो पुत्र नहीं जीते, स्त्री को गर्भ पात होते हैं। व्यर्थ धन का व्यय, कुटुम्ब का विरोध, शत्रुदमन हो, मित्रों की मदद, सफलता पाने वाला, स्पष्ट वक्ता होता है और यदि मंगल स्वगृही वृश्चिक का हो तो पुत्र जीते हैं और मनुष्य को व्यापार में लाभ, नौकरी में अधिकार प्राप्त होता है। वह चुश्ती चालाकी, खुशामद से वढ़ता है। स्वतन्त्र पेशा जैसे डाक्टर, वकील, दर्जी आदि होना अधिक पसन्द करता है। प्रेम के मामले में चपल, विनोदी होता है।

जब सुखेश मंगल कर्क का द्वादश में हो तो उद्योग में विफलता, विदेश यात्रा में खतरा स्त्री, भाई को कष्ट, पेट में दर्द, स्वजन वियोग, भूमि मकान में खर्च क्रोधी, रक्तविकार रक्तचाप, ब्लडप्रेशर विवाह में देरी, प्रेम में निराशा, आँख में पीड़ा, अंग विकलता, पुलिस से चालान हो, सवारी कष्ट। यदि धन में मंगल हो तो मनुष्य परस्त्री गमन करने वाला, इच्छाविरुद्ध होने पर प्रसिद्धिप्राप्ति होती है। अर्श रक्त विकार, विवाह में झगड़ा, पत्नी सेविरोध, तीर्थ यात्रा में प्रेम, पुलिस विभाग में नौकरी, स्त्री के गर्भपात, पराक्रम क्षीण, भाई को कष्ट होता है।

सुखेश बुध फल

बुध :—जिसका सुखेश बुध मिथुन का लग्न में हो तो मनुष्य विद्वान, लेखक, गौरवर्ण, सुन्दराकृति, व्यापारी, वकील, इष्ट मित्रों से लाभ पाने वाला, हँसमुख, परिवर्तनशील यात्राप्रिय, स्त्री पुत्रादि सुख से युक्त प्रपंची होता है। मीन का हो तो छोटे कार्य करने वाला, सामान्य लाभ, वाचाल उसकी स्त्री कृतघ्न हो, वह स्वयं स्वार्थी, जलयात्राप्रिय, धनहीन रोगी हो।

जब सुखेश बुध कर्क का दूसरे घर में हो तो शिक्षा रुकावटों के बाद पूर्ण हो, पूर्णांश पर सरकारी नौकर, कीर्ति धन, मिले, निर्भीक होते हुए भी समयानुकूल बात बदल देते हैं। चंचल प्रकृति, जल विहार रत, काम को पूर्ण करने के लिये जरिया निकालने वाले, बूढ़ी स्त्री का प्रेमी, प्रवासी। मेष का बुध मनुष्य को छलिया प्रकार का चालाक, चंचल, गंभीरता रहित, रूढिवाद के विरुद्ध, कायदे रहित, स्नायुरोगी, पीलिया, म्यादी बुखार, दुष्ट संगति, सन्तप्त, व्ययी बनाता है।

यदि सुखेश बुध सिंह का तृतीय हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण न हो, उच्चाकांक्षा, आत्मविश्वास, परिश्रम, क्रोध में कमी न हो, कुसंगति, सुरापी, दुर्बल हृदय, कलाकार, इष्ट मित्र युक्त, स्वच्छन्द, मलिन हृदय, अपयशी होता है। वृष पर होने से जातक सुन्दराकृति, हंसमुख, तार्किक, स्थिर आय वाला, कलापूर्ण कार्य द्वारा धन पाने वाला, इष्ट मित्रों का प्रिय, धन के लिए स्त्री को प्रेम करने वाला, कर्ण रोगी, बन्धु प्रिय, सुख शान्ति से रहित, घरेलू कार्य द्वारा यशस्वी होता है।

जिसका सुखेश बुध कन्या का चतुर्थ हो या मिथुन का हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। पिता की अपेक्षा माता से सम्बन्ध अच्छा रहता है। ज्ञान का अभिमान रहता है। गाना, कवितादि प्रिय हो, धन धान्य मकानादि का कष्ट रहे किन्तु स्थिर विचार, गणितप्रिय, साहित्यिक होने पर यश मिले, मितव्ययी, वैज्ञानिक विचार होने पर भी धन की कमी रहे।

जब सुखेश बुध तुला का पंचम हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है पढ़ने की इच्छा शेष रह जाती है, पढ़ना छोड़कर भी ऐसा मनुष्य घर पर विद्याध्ययन बड़ी आयु तक पूर्ण करता ही रहता है। उसके पास डिगरी न होने पर भी अनेक विषय का अच्छा ज्ञान होता है। सरकारी नौकरी में विशेष उन्नति नहीं होती, लोग योग्यता से अधिक समझते हैं। स्त्री पुत्र सुख कम, कन्या ही अधिक हों, शरीर रोगी हो ज्योतिष, गणित, वैद्यक का अभ्यास हो। कर्क में बुध, हों तो सन्तान अधिक हो, घर से बाहर रहना पड़े, यात्राप्रिय, बात को बदलने वाला, जल से भयभीत परिस्थिति से बचने के लिये काफी बुद्धिमान हो, अन्य स्त्री प्रेम रत रहे। लेखक कवि हो।

यदि सुखेश बुध, वृश्चिक का छठे हो तो मनुष्य शिक्षा रहित, शत्रुयुक्त, कलहप्रिय, सदा रोगी, चिड़चिड़ा, आलसी, पाण्डुरोग, विषयी यौवन के पश्चात् मन्दाग्नि का रोगी रहे। स्वार्थी, अविश्वासी, चोरी भय से युक्त हो। सिंह में बुध हो तो प्रपंच बुद्धि से युक्त, नीतिज्ञ, कुटुम्ब से अनवन, नेत्र रोगी, चलचित्त, अपयशी रोगी, धर्म कर्म से हीन, इनके लेख आलोचनात्मक होते हैं।

जिसका सुखेश बुध धन का सप्तम हो तो मनुष्य सुशिक्षित, अध्यापक, वकील, लेखक, कवि, सुन्दर स्त्री बच्चों से युक्त, विनोदी, सरकारी नौकर, वायदे का पूरा नहीं होता। इसीलिये अत्यधिक उद्योग से भाग्योदय होता है। कन्या का बुध क्लर्क, व्यापारी, साहित्यिक, यशस्वी तो बनाता है किन्तु धनिक नहीं करता, ये लोग लेखक, आविष्कर्ता, सुन्दर स्त्री से युक्त होते हैं।

जब सुखेश बुध मकर का अष्टम हो तो विद्या कम ज्ञान अधिक होता है। राज्य संकट, कोई मुकदमा हो, वात रोग। इसके उद्योग का परिणाम इसको पूर्ण न न मिले इसलिये विशेष उन्नति न हो। मितव्ययी, चतुर गुप्त कार्य रत, दुष्ट संगति, विवाह के लिये अशुभ होता है। तुला का बुध, मनुष्य को रोगी, उन्मादी, पत्नी, झगड़ालू हो, स्वयं नीतिज्ञ हो।

जिसका सुखेश बुध कुम्भ का नवम हो तो मनुष्य शिक्षक, लेखक, क्लर्क, कवि, सम्पादकादि होते हैं। विवाहोपरान्त, भाग्योदय, सर्व प्रकार की उन्नति हो। स्त्री पुत्र माता-पिता का सुख हो। उसका स्वभाव तार्किक, इष्ट मित्रों भाई बन्धु युक्त, सबका प्रिय धर्म कर्म युक्त, जलयात्राप्रिय, उपकारी होता है। वृश्चिक का बुध प्रवासी बनाता है, शरीर में बेचैनी, पराधीन तथा कलहप्रिय, झगड़ालू, चंचल, गर्वीला, परस्त्रीप्रेमरत होता है।

जब सुखेश बुध मीन का दशम हो तो सुशिक्षित, सम्पादक, पुस्तक, समाचार पत्र, स्टेशनरी, कागज की दुकान या खेल का सामान विक्रेता भी होते हैं। सरकारी नौकर, ज्ञान विज्ञान युक्त, श्रेष्ठ कर्मरत धार्मिक होते हैं। गप्प खूब उड़ाते हैं, जलयात्रा प्रिय समयानुकूल कार्य करते हैं। धन में धन की कमी, अधिकारियों से अनबन, बदनामी हो।

यदि सुखेश बुध एकादश मेष राशि का हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, उसकी पढ़ने की इच्छा बनी रहती है, वह मुनीम, क्लर्क या ऐसा ही लेखक

छोटा व्यापारी होता है, उसके बड़े भाई को कीर्ति को ठेस पहुँचती है, पुत्र कम होते हैं, वह स्वयं चंचल, वाचाल, खेल कूद में दिलचस्पी लेने वाला, बचपन में ज्वरादि से पीड़ित रहने वाला हो। कर्क राशि का बुध मनुष्य को श्वेत पीत, जल सम्बन्धी तथा कीमती नगों का व्यापारी बनाता है। ये लोग अवसरवादी और सुप्रबन्धक होते हैं। इन्द्रियलोलुप, प्रवासी तथा स्थानभ्रष्ट होते हैं।

जब सुखेश बुध वृष राशि का द्वादश हो तो मनुष्य अधिक पढ़ा लिखा न होने पर भी अपनी कलाकृतियों या बातों ही द्वारा धन कमाता है और दिखावटी धर्म कर्म तीर्थ यात्रा करने में धन खर्च करता है जिसमें श्रद्धा की कमी और गर्व की मात्रा अधिक होती है। पशुधन से युक्त, माता से सुख पाने वाला, मन्द बुद्धि होता है। सिंह राशि में बुध हो तो घरका रुपया काफी खर्च करके ऐश्वर्य के साथ जीवन व्यतीत करते हुए पढ़ाई करते हैं। इनमें गुणों की मात्रा अधिक होती है जिससे लोग प्रेम करते हैं किन्तु ये मनचाही न होने पर शीघ्र आवेश में आ जाते हैं। ये बड़े ही उच्चाभिलाषी, आत्मविश्वासी, किन्तु शराब या किसी नशे की लत लिये होते है जिससे हृदय दुर्बल हो जाता है। ये कवि लेखक, सिनेमा, थियेटरादि के प्रबन्धक या मैनेजर होते हैं। और अपनी धूर्तता या हठधर्मी से अपनी प्रत्येक बात को पुष्ट करके ही छोड़ते हैं।

सुखेश गुरु फल

गुरु—जिसका सुखेश गुरु धन राशि का लग्न में हो तो मनुष्य कुशाग्र बुद्धि, विशाल हृदय, स्वतन्त्र विचार, न्यायी, दयालु, दार्शनिक, धीरे-धीरे उन्नति करने वाला, मिलनसार, सुशिक्षित, वकील, न्यायाधीश, कवि, गानाचार्य, धर्मभीरु, शान्त, कामी, स्त्री की मृत्यु के बाद बुढ़ापे में साधु वृत्ति हो, एकान्त वास करता है। कन्या का गुरु लग्न में हो तो मनुष्य हंसमुख, विनोदी, खिलाड़ी, यौवन तक कष्ट सहने वाला तत्पश्चात् धनी, अधिकारी, परिस्थिति पर विजय पाने वाला, अपने रूप रंग गुणों का गर्व करने वाला, नियमानुकूल चलने वाला, होता है, किन्तु समाज, सामाजिक बन्धनों से अलग रह कर उद्यम से उन्नति करता है। विवाह देर में विशेष उद्देश्य को लेकर होता है सन्तान सुख होता है। भाग्योदय ४२ वर्ष के बाद होता है। इन्हें मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली आदि रोग होते हैं।

जब सुखेश गुरु मकर का दूसरे भाव में हो तो विद्या अपूर्ण रहती है, पिता से बनने के कारण प्रवास में रहना पड़ता है। शरीर में गुप्त रोग, शत्रु भय,

पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहता है। जल यात्रा ४२ वर्षोंपरान्त हो तो अवश्य ही हानि या कष्टमय रहे। ये लोग व्यापारी तथा सरकारी नौकरी में धन कमाते हैं किन्तु उसे रख नहीं पाते, सुभोजन प्रिय होते हैं। तुला का गुरु मनुष्य को सुशिक्षित बनाकर, अध्यापक, प्रोफेसर, वकील, जज, कलाकार, साहित्यिक कवि, लेखक बनाता है। इसका विवाह दहेज, सौन्दर्य, हर्षमय होता है। इसकी समान मित्रों, विद्वानों औफीसरों से नहीं बनती।

यदि सुखेश गुरु कुम्भ का तीसरे हो तो मनुष्य शिक्षा प्राप्त से कहीं अधिक तार्किक विद्वान से दृष्ट होते हैं। इनकी बुद्धि तीव्र, तथा गंभीर होती है, ये कोई भी कार्य करें धन नहीं जोड़ पाते, इनके विवाह का ध्येय, सुख और शान्ति से है। ये लोग अपने जीवन में यश प्राप्त करते हैं किन्तु इनके अपने सगे भाई से नहीं बनती। जब वृश्चिक में गुरु हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है, बुद्धि कार्य यश, जायदाद भी प्राप्त हो किन्तु भाई से झगड़ा करके। वंशगत रोग से रोगी हो, कभी-कभी गप्पों में ही झगड़ बैठता है।

जिसका सुखेश गुरु मीन का चतुर्थ हो तो मनुष्य अपने गुणों से धन कमाने वाला प्रतिष्ठित, उच्चाधिकारी होता है। पैतृक सम्पत्ति से हीन, यात्राप्रिय, इष्ट मित्र से युक्त, समाज सेवी उपकारी, दयालु, सहायक हो। यदि धन का गुरु हो तो जातक अपने मकान को पुष्पों, वेल, बूँटों से सजाकर रखनेवाला, दार्शनिक, अचानक धन पाने वाला, धार्मिक, धीरे-धीरे उन्नति करने वाला, नौकरादि सुख से सुखी, औफीसर तक होता है।

जब सुखेश गुरु मेष का पंचम हो तो मनुष्य सुशिक्षित, सुवक्ता, लेखक, कवि सम्पादकादि पुस्तक या शिक्षा सम्बन्धी कार्य करने वाला, कम सन्तति, पुत्र स्वयं भाग्यवान यशस्वी होते हैं किन्तु स्वयं का भाग्योदय मध्यायु में होता है। शरीर सुखी, विवाह देर में होता है। जब गुरु मकर में हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है जिससे जीवन यात्रा चलाने के लिये अनेक कार्य करने पड़ते हैं पूर्ण भाग्योदय कभी नहीं होता, वायु, पीलिया, गुप्त रोग होते हैं।

यदि सुखेश गुरु वृष का छठे भाव में हो तो मनुष्य सुशिक्षित, सुन्दराकृति, उच्चवर्ण का विरोधी, उच्चाभिलाषी राज्याधिकारी, गुप्त रोगी जैसे धातुक्षीण प्रमेह बहुमूत्रादि, कृपण। उसकी स्त्री घर की सफाई तथा सुप्रबन्धकर्त्ता होती हैं।

जब गुरु कुम्भ का हो तो मनुष्य शत्रुदमन, रोब से कार्य लेने वाला, जल यात्रा-प्रिय, तार्किक, यशस्वी, इष्ट मित्रों से युक्त, दार्शनिक, परोपकारी, अन्त समय में जीवन को सुधारने के लिए तप करते हुए एकान्त सेवन करता है।

जिसका सुखेश गुरु मिथुन का सप्तम हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी अपने उच्चविचार से दर्शक को आकर्षित करते हैं। साधारणतः ये विवाह से दूरर हते हैं या फिर दूसरा विवाह भी करना पड़ता है। इन्हें स्त्री से अत्यधिक प्रेम होता है किन्तु पुत्रेच्छा बनी रहती है। विद्वत्तापूर्ण कार्यों में साहसी अन्यथा भीरु शान्त होते हैं, इनका अनुचित सम्बन्ध रहता है। जब गुरु मीन में हो तो निश्चय से सांसारिक सुख से वंचित रहना पड़ता है। और जातक, गरीब परवर, पर उपकारी तथा दयालु होता है। हठी, शीघ्र आवेश में आजाने वाला, राज्य तथा व्यापार सुख से सुखी, अन्त में धर्मकर्मरत रहकर शास्त्राभ्यास या स्वाध्याय कर शान्ति की खोज में रहना पड़ता है।

जब सुखेश गुरु कर्क का अष्टम हो तो शिक्षा सामान्य, और मनुष्य रोगी तथा सदैव ऋणी रहता है, अपनी लाज बचाने को व्यवहार में कमी नहीं आने देता, दादलाई सम्पत्ति कर्जदारों के पास चली जाती है। जीवन दुखी रहता है फिर भी अपनी मर्यादा और उच्चविचार, स्वाभिमान नहीं त्यागता जिससे और कष्ट होता है। और जब गुरु मेष का हो तो धन सम्पत्ति पोष्य पुत्र के रूप में प्राप्त होती है और मनुष्य चालाकी तथा प्रपंच से बहुत कुछ कमाता है किन्तु इसके विवाह में काफी अड़चन पड़ती है।

यदि सुखेश गुरु सिंह का नवम हो तो मनुष्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर राज्य या विश्वविद्यालय में उच्चाधिकार प्राप्त करता है। वह विद्वान्, दार्शनिक, धार्मिक, तीर्थयात्राप्रिय, देवाराधक, सत्संगप्रिय, पुत्रों के लिए भारी होता है। यदि पुत्र हुए तो कुचाली होते हैं, मानसिक चिन्ता रहती है, शरीर निरोग होता है। जब वृष में गुरु हो तो आविष्कारक या विज्ञान उपाधियों से सुशोभित, आचार्य, प्रिन्सिपल या वायस प्रिंसिपल, बड़ा प्रोफेसर होता है। ये विनोदी, शृंगारी, उपहासकर्ता, शत्रु द्वेषी होते हैं। यह स्त्री पक्ष से धन प्राप्त करने वाला विषयी होता है।

जिसका सुखेश गुरु कन्या का दशम हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर राज्य नौकरी करता है किन्तु इसके अपने पिता से ४० वर्ष उपरान्त सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, उच्च वर्ण के लोग ईर्ष्या रखते हैं। प्रथम तो विवाह देर से होता है या नहीं

भी होता किन्तु इसका पिता अन्य स्त्री रत रहता है फिर भी बजाहिर वंश को दाग नहीं लगने देता। बड़े-बड़े ऑफिसरों से मित्रता रखते हैं, और मिथुन में गुरु होने से मनुष्य को इष्ट मित्र स्त्री पुत्र का सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है, किन्तु ये लोग एक कार्य छोड़कर दूसरे कार्य की इच्छा रखते हैं। इनके विचार वजाहिर सात्विक किन्तु अन्दर से कामवासनापूर्ण होते हैं फिर भी जीवन सुधारने की इच्छा से ये ६० वर्षोपरि पूर्ण धार्मिक विचार के हो जाते हैं।

जब सुखेश गुरु तुला का एकादश हो तो मनुष्य शिक्षित होकर विदेश में धन-धान्य कमाने वाला, स्वजन विरोधी, स्त्री-सुत सुख से सुखी, बड़े भाई को कष्ट, साहित्यिक, कलाकार, शत्रु विरोध से युक्त, स्वभिमानी होता है। और कर्क का गुरु हो तो स्त्री-बच्चों के दुख से दुखी तथा स्वयं रोगी रहे, स्त्री रोगी और झगड़ालू हो तथा यह द्विभार्या योग भी बनाता है। इसके कारण बहुत से मनुष्यों को ऋण न दे सकने के कारण गुप्त वास करना पड़ता है।

यदि सुखेश गुरु वृश्चिक का द्वादश भाव में हो तो मनुष्य में सन्देह उत्पन्न करता है और मनुष्य बुद्धिहीन, स्वच्छन्द, क्रोधी और अशान्त होता है। घर की सम्पत्ति व्यर्थ की बातों में अपनी शान दिखाने के लिए खर्च करता है या फिर किसी गुप्त रोग में खर्च होता है, और जब गुरु सिंह का द्वादश होता है तो मनुष्य साहसी, माता-पिता से धन-सम्पत्ति पाने वाला, शिक्षा कार्यरत, मकान की शोभा के लिये खर्च करने वाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक, बन विहार रत, सरकारी नौकरी में उन्नति करने वाला, किन्तु अपने विचारों की असम्भवता को नहीं पहुँचता। सवारी सुख से रहने वाला होता है।

सुखेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका सुखेश शुक्र कुम्भ का लग्न में हो तो मनुष्य साधारण पढ़ा-लिखा होता है किन्तु उसकी स्त्री शिक्षित होती है और अपने पति से प्रेम करने वाली होती है फिर भी ऐसे लोग शुग़ल के लिए पर स्त्री रत रहते हैं। माता, मित्र, क्षेत्र, सवारी सुख से सुखी रहते हैं। इन्हें किसी से धन भी प्राप्त होता है। कर्क का शुक्र लग्न में हो तो स्त्री से अनबन, बच्चों से प्रेम होता है। इनका गुप्त-प्रेम किसी से होता है। ये अन्तर्जातीय प्रेम विवाह भी करने में नहीं हिचकते, गंभीर, मधुर भाषी तथा मिलन सारी से कार्य बनाते हैं।

जब सुखेश शुक्र मीन का द्वितीय हो तो मनुष्य सुशिक्षित, कवि, लेखन-कला प्रवीण, स्त्री सुख कम, दूसरा विवाह भी हो, कन्यायें अधिक हों, दूसरी स्त्री आने पर भाग्योदय मध्यायु के समीप हो। और जीवनान्त पर्यन्त सुखी रहे। खाने-पीने, गाने-बजाने का शौक रहे। जब सिंह का शुक्र दूसरे हो तो जातक नौकरी से धन कमाने वाला, पैतृक सम्पत्ति से युक्त, अचानक सट्टे, रेस, लाट्री, वोटों से धन पाने वाला, ईमानदार, प्रेमी, कवि, लेखक, गायक, स्वादु, रसीले भोजन फल खाने का शौकीन, स्त्रीचित्ताकर्षक, विवाहोपरान्त धन, यश, शान्ति, सुख प्राप्त करने वाला होता है।

यदि सुखेश शुक्र मेष का हो तो सुशिक्षित न होने पर भी मनुष्य पूर्ण रूप से कार्य चलाने वाला, कामी, प्रारम्भिक २० वर्ष तक प्रेम, गन्धर्व विवाह में रत तथा निराश, ये लोग विवाह करने से पहले अनेक लड़कियाँ देखकर नापसन्द करते हैं और फिर पछताकर साधारण लड़की से विवाह के लिये विवश होते हैं। भ्रातादि सुख रहता है। जब शुक्र कन्या का हो तो नीच घराने की लड़कियों से सम्बन्धित उनकी कमाई खाने वाले, वैश्यागामी, वार्तालाप चतुर होते हैं। ३२ वर्षोपरि अनेक चिन्तायुक्त, गुप्त रोग से पीड़ित, व्यवसाय रहित तक हो जाते हैं।

जिसका सुखेश शुक्र वृष का चतुर्थ हो तो मनुष्य साधारण शिक्षित, धन जायदाद से युक्त, मातृ सुख कम, स्त्री सुन्दर नहीं होती इसलिये जातक अनेक पर-स्त्री रत रहता है और धन पाता है। विवाह देर में होता है। व्यापार, मकान किरायां, मोटर, रिक्सा आदि वाहन से सुख प्राप्त होता है। यदि तुला का शुक्र हो तो सदा धन की चिन्ता रहती है। उसे स्त्री सुन्दर मिलती है। बच्चों का सुख रहता है। यह विशेष प्रकार का कलाकार होता है और उसी से धन कमाता है। सुगन्धित, स्वच्छ वस्त्र धारण करता है। समाज में मुख्य स्थान लेता है। पिता के धन का अधिकारी होता है। चल चित्त होने के कारण स्त्रीवार्ता में रत रहता है।

जब सुखेश शुक्र मिथुन का पंचम में हो तो किसी भी विषय के पूर्ण विद्वान् होकर लेखक, शिक्षक का कार्य बड़ी सफलता से करते हैं। ये बड़े ही कामी तथा इन्द्रिय लोलुप होते हैं। सदा ही अपने साथ एक स्त्री को, जो कि सुन्दर, शृंगार-मय, सुशिक्षित होनी चाहिये, रखते हैं। उसकी कमी में उदास जीवन व्यतीत

करते हैं। पुत्र सुख कम, कन्या अधिक होती हैं। वृश्चिक का शुक्र अपनी स्त्री के अतिरिक्त एक ऐसी स्त्री से सम्बन्ध कराता है जो बदनामी का कारण बनती है। कन्यायें अधिक होती हैं। इनकी प्रथम स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरी शादी इनके लिये सदैव के लिये दुखदाई और अशान्त रहती है।

यदि सुखेश शुक्र कर्क का छठे भाव में हो तो मनुष्य शिक्षित किन्तु व्यभिचारी होता है। इसको शराब तथा स्त्रियों के कारण ही अनेक गुप्त रोग होते हैं। यह गुप्त प्रेमी, अन्तर्जातीय या विधवा विवाह का इच्छुक होता है। यह शादी धन के लिये ही करता है किन्तु जब शुक्र धन राशि का होता है तो मनुष्य को मामा, मौसियों, भाई आदि से धन मिलता है। अधिकार प्राप्ति में अड़चन, रुकावट, शत्रुओं से भय, धातु सम्बन्धी रोग होते हैं। अविवाहितों को स्वप्नदोष आदि रोग होते हैं। ३० वर्ष के करीब नौकर या किसी दुर्घटना से हानि होती है।

जिसका सुखेश शुक्र सिंह का सप्तम में हो तो वह शिक्षित, कलापूर्ण, गायक, शृंगारी, कवि तथा स्त्री जाति को आकर्षित करने वाला, सौन्दर्य विभूषित, गंभीर होता है। इसको स्त्री, पुत्री का सुख तथा प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह एक ही विवाह करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से धन पाने वाला होता है। मकर का शुक्र मनुष्य को व्यापार, सट्टे, साझा आदि में लाभ देता है। यह अपने से बड़ी आयु वाली लड़की पर आसक्त होता है। जो कि गार्हस्थ्य गाड़ी को ठीक चला सके और उसके प्रभाव में ही रहता है।

जब सुखेश शुक्र कन्या का अष्टम हो तो जातक कम पढ़ा, व्यवसाय रहित, आर्थिक दशा खराब, ऋणबन्द, विवाह के बाद और भी दुख बढ़ जाता है। स्त्री वार्तालाप में चतुर, नीच घर की लड़कियों से सम्बन्धित, उनकी आय खाने वाला पापी होता है और जब शुक्र कुम्भ राशि का हो तो विशेष प्रकार का प्रपंची होता है और उसके द्वारा साधारणतया अपना जीवन सुखमय व्यतीत करता है। इसको जल यात्रा में जीवन संकट रहता है। यह अनेक गुप्त रोगों से ग्रसित रहता है और अन्य कई स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है।

यदि सुखेश शुक्र तुला का नवम हो तो मनुष्य साहित्यिक, विद्या, विनय-विपन्न, धन-धान्य पूर्ण, शत्रुजित, संस्था प्रधान, गौर वर्ण, प्रसन्नचित्त होता है। धार्मिक, तीर्थयात्रा प्रिय, शुभ कार्य में खर्च करने वाला, मृदुल, उपकारी होता है,

सुगन्धित वस्तुओं से रंजित, अभिनय, कलापूर्ण, प्रकृति प्रेमी, विवाह के बाद भाग्योदय, सुख शान्ति तथा प्रसन्नता विशेष रूप से मिलती है। जब शुक्र मीन या उच्च का हो तो मनुष्य को ठगी या चोरी या किसी और प्रकार से नुकसान होता है। २० वर्ष से पहले यदि विवाह हुआ तो दूसरा विवाह भी होगा अन्यथा नहीं होता। इनका सांसारिक जीवन सुखमय रहता है। ये धर्म के बन्धन से दूर रह कर मनमाने चलते हैं।

जिसका सुखेश शुक्र वृश्चिक का दशम हो तो मनुष्य राज्य सेवक, अधिकार प्रिय, माता-पिता के सुख से सुखी, धन-धान्य पूर्ण होता है। किन्तु अन्य स्त्री के सम्बन्ध में आने से झगड़ा तथा बदनामी हो, धन खर्च हो, स्थानान्तरण होते रहें और जब शुक्र मेष का हो तो मनुष्य पढ़ा-लिखा, विद्वान्, वैज्ञानिक, अनेक कला जानने वाला, गायन, गणित, फोटोग्राफी आदि में निपुण होता है। इसमें दोष यही है कि वह वेश्यागामी, पर स्त्री से गुप्त सम्बन्धित होता है और लड़ाई-झगड़े, मुकदमों में व्यर्थ सम्पत्ति बर्बाद करता है।

जब सुखेश शुक्र धन का एकादश हो तो मनुष्य व्यापार तथा नौकरी दोनों भले प्रकार से करता है। इसकी कन्यायें अधिक और पुत्र एकाध ही जीवित रहता है। धन जैसे आता है वैसे ही जाता भी है। इसको अपने भाई का भी भार ढोना पड़ता है। और जब शुक्र वृष में हो तो मनुष्य को व्यापार में खूब लाभ होता है। स्त्री, कन्या, पशु, गृह निर्माण का लाभ होता है। यह धार्मिक प्रवृत्ति होने पर भी कई स्त्रियों पर आसक्त रहता है। यह गीत, नृत्य, यात्रा प्रिय होता है।

यदि सुखेश शुक्र मकर का द्वादश हो तो मनुष्य धन खर्च करने पर भी पढ़ने में उन्नति नहीं कर पाता। वह सट्टा, साझा व्यापार में ही रुपया कमाता तथा खोता है। यह सदा ऐसी स्त्री की तलाश में रहता है जो उसका बोझ उठाये और घर का कार्य चलाये। यह जीवन में समुद्र यात्रा चाहे छोटी सी ही हो अवश्य करता है। जब शुक्र मिथुन का द्वादश हो तो मनुष्य विषयी, काम वासना की तृप्ति के लिये रुपया खर्च करने वाला, परस्त्री रत, शृंगारी, लेखक, झूठ बोलने वाला, नेत्र पीड़ित, गुप्त रोगी, धातु विकार से ग्रसित होता है।

सुखेश शनि फल

शनि—जिसका सुखेश शनि लग्न में तुला का उच्च का हो तो मनुष्य सुशिक्षित होने पर सरकारी नौकरी पसन्द करता है या फिर मिल, फर्मादि के मालिक

के रूप में पाया जाता है। ये देखने में कृष्ण वर्ण किन्तु नक्श अच्छे होते हैं। इनका पारिवारिक जीवन सुखकर नहीं होता। स्त्री से सदा मन मुटाव रहता है या वह बीमार रहने के कारण चिड़चिड़े स्वभाव की होती है। ये लोग धन-धान्य पूर्ण माता-पिता से दूर रहकर सुख से जीवन बिताते हैं। पास में झगड़ा होता है। जुआ, सट्टा, रेस में रुपया लगाते, बहुत ही कामी तथा वेश्यागामी होते हैं और जब शनि वृश्चिक का लग्न में हो तो दिल के साफ होने के कारण स्पष्ट बात करने पर झगड़ालू प्रतीत होते हैं। ये वयोवृद्ध होने पर धार्मिक, उदासीन, तपस्वी होते हैं किन्तु इनका योग सफल नहीं होता। वात रोग होता है। ये लोग डिप्लोमेट, होशियार, चालाक, अपना कार्य बनाने वाले होने पर भी सफल प्रेमी नहीं होते, प्रेम में निराशा, कष्ट ही देखते हैं।

जब सुखेश शनि वृश्चिक का दूसरे भाव में हो तो असत्यवक्ता, झूठ, सत्य से धन कमाने वाला, पिता का ऋण चुकाने वाला, उदार, कुटुम्ब से कलह करने वाला, मन्द दृष्टि, विदेश में सुख पाने वाला, विफल प्रेमी के रूप में रहता है। लोहे के कार्य से लाभान्वित, नीच गति रत, मातृ-पितृ विरोधी, जायदाद वाला होता है। धन का शनि मनुष्य को परोपकारी, शत्रुजित्, आचरणहीन, मलिनमन, पित्त वायु रोगी, आलसी, बुढ़ापे में सब कुछ त्यागकर एकान्त वास से लाभ उठाने वाला, अन्त में स्नायु पीड़ा से मृत्यु को प्राप्त होता है।

यदि सुखेश शनि धन का तीसरे भाव में हो तो मनुष्य शिक्षा पूर्ण न होने पर भी धन कमाने वाले, उन्नतिशील, पराक्रमी, निर्दय, सन्तान सुख वर्जित, खर्चीला, अविश्वासी, बन्धु पीड़ा, बुद्धिहीन, लाभ सामान्य, बड़े-बड़े आदमियों से मेल रखने वाला, चतुर होता है। मकर का शनि हो तो मनुष्य अपनी चालाकियों से उन्नति करने वाला, अपनी उथल-पुथल जीवन में कई बार देखने वाला, नीच संगति से लाभान्वित और विवाह में क्लेश पाने वाला होता है। विश्वासघाती, संकटमय जीवन व्यतीत करने वाला, ऋणी, नास्तिक होता है।

जिसका सुखेश शनि मकर का चतुर्थ हो तो वह अधिकतर व्यापारी या सरकारी नौकर होता है और उन्नति बड़ी ही धीमी होती है, माता सदा किसी न किसी रोग से ग्रसित रहती है, पिता से ४२ वर्षोपरि सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। शत्रु दबे रहते हैं, मनुष्य स्वयं रोगी, विकल मन, अनेक विद्या सीखने का शौकीन होता है किन्तु स्वार्थी, लालची होने के कारण कोई कार्य पूर्णरूप से नहीं सीखता,

उसको दादलाई जायदाद नहीं मिलती, प्रवास में दुख, भाग्य पर पछताना पड़ता है, वायु रोग, पेट में विकलता उत्पन्न करता है, व्यर्थ उपवास बहुत होते हैं। कार्य में परिवर्तन चाहने पर भी नहीं मिलते, पिता का ऋण देना पड़ता है। वासना तृप्ति को अप्राकृतिक नियम वर्तना पड़ता है, शादी नहीं होती, यदि हुई तो उससे नहीं बनती। जब शनि कुम्भ में हो तो बहुत कुछ फल मकर से मिलते हैं। इसके अतिरिक्त वह तार्किक, स्पष्ट वक्ता, ऊँचे या गगन चुम्बी ख्याल, सहानुभूति रखने वाला, विवाह युक्त, अन्तिम अवस्था में ऊँची जगह प्राप्त करता है।

जब सुखेश शनि पंचम में कुम्भ का हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी ये लोग कार्य व्यवहार कुशल होते हैं और मीठा बोलकर स्पष्टता से कार्य बना लेते हैं, लोग इनके प्रभाव में आ जाते हैं। ये लोग लोह, वर्क जैसे छापाखाना, प्रेसादि लगाकर पुस्तक सम्बन्धी कार्यों एवं स्टेशनरी आदि के कार्य से खूब लाभ उठाते हैं। देखने में सदा युवक-से चुस्त, चालाक नज़र आते हैं। इनको दादलाई जायदाद का सुख थोड़े दिन होता है, वह बाद में नष्ट प्राय हो जाती है। इनको माता-पिता, स्त्री-पुत्र का सुख कम होता है। दैवी आपत्ति से बचने पर ये लोग स्वयं उद्योग से अपने को ऊँचा उठाते हैं और यश पाते हैं। जब शनि मीन का हो तो मनुष्य अनेक कष्ट सहन करने पर अपने परिश्रम से भाग्योदय को प्राप्त होता है। जब तक भाग्योदय नहीं होता तब तक यह उदास रहता, आत्मघात करने को सोचता, स्त्री-बच्चों मित्रों, धन से निराश होता, विवाह देर में होता फिर भी उससे शान्ति नहीं मिलती क्योंकि या तो वह स्त्री बीमार रहती, वायु विकास पेट में दर्द या फिर वह झगड़ालू ही होती है।

यदि सुखेश शनि मीन का छठे भाव में हो तो शिक्षा साधारण अच्छी होती है, ये लोग वैद्यकादि कार्य कुशलता पूर्वक करते हैं। शत्रुजित्, मुकदमा जीतने वाले, जमीन-जायदाद वाले, परोपकारी, पुष्टांग, शान्त, कर्मकांडी, रूढ़िवाद से पृथक्, शान्त, जलोदर से मरने वाले, पशुपालक होते हैं। जब मेष का शनि हो तो रक्तविकारी, रोगी, भ्रमणशील, भाई के उद्योग का नाशक, बन्धु द्रोही या मारक होता है। इनको धातु सम्बन्धी रोग होते हैं। शत्रु परास्त रहते हैं।

जिसका सुखेश शनि मेष का सप्तम हो तो शिक्षा पूर्ण न हो, विवाह एक हो पत्नी से ऊपरी कलह, आन्तरिक प्रेम रहता है, जिससे बात बनी रहती है। पुरुषों

से स्त्री अधिक गुणवान् होती है। माता नहीं जीती, यदि जीवित रहें तो बीमार रहती हैं। भाग्योदय ३६ से ४२ तक होता है। वृष का शनि व्यभिचारी प्रवृत्ति को बताता है। उसकी जीविका कठिनता से चलती है। वह ठग, क्रोधी, ऋणी रहता है और कठिनता से अपनी मर्यादा को रख पाता है। सास से न बने।

जब सुखेश शनि वृष का अष्टम हो तो नौकरी से आजीविका हो, स्त्री गुणवान् किन्तु सन्तान कष्ट रहता है। आयु के पूर्वार्ध में मनुष्य का जीवन सुखमय और उत्तरार्ध में कष्टमय व्यतीत होता है। यात्रा में कष्ट, धनहीन, राज्याधिकारियो की अनबन से उन्नति बहुत ही कम और यदि शनि मिथुन का हो तो, दर्जी, लुहार, सुनारादि के कार्य से लाभ हो, दीर्घायु किन्तु वायु पीड़ित, स्त्री आपत्ति में साथ रहने वाली, घर की लाज रखने वाली होती है। इन्हें नौकरी में हानि तथा स्वतन्त्र व्यवसाय में लाभ रहता है।

यदि सुखेश शनि मिथुन का नवम हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। भाग्य मन्द रहता है किन्तु शत्रु दबे रहते हैं, व्यापार में हानि, धन की कमी ३६ वर्ष तक ही रहती है फिर उन्नति होती है। विवाह देर में होता है, स्त्री प्रौढ़ हो, भाई के लिए अशुभ होता है। दार्शनिक होते हैं किन्तु धर्म की परवाह नहीं करते। कर्क में शनि ४२ के बाद विदेश यात्रा को उकसाता है। यदि यात्रा हुई तो ये धर्म परिवर्तन कर विजातीय लड़की से विवाह कर लेते हैं। भाई का भला करते हैं। प्रेम के सम्बन्ध में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

जिसका सुखेश शनि कर्क का दशम हो तो मनुष्य नौकरी करने वाला, नीच संगति से भाग्योदय पाने वाला, वैद्यक, ज्योतिष, हस्तविज्ञान द्वारा धन कमाने वाला, माता-पिता से कलह रखने वाला, खर्चीला, जमीन, जायदाद युक्त, पास-पड़ोस में मान पाने वाला होता है। और जब सिंह का शनि हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर अधिकार पद को प्राप्त होता है और निष्पक्ष न्याय कर यश कमाते हैं। ये लोग धन-यश पूर्ण विदेश यात्रा करते हैं। इनको विवाह में दहेज खूब मिलता है। ये मौजी होते हैं, कभी-कभी बोलते ही रहते हैं और कभी एक दम चुप रहते हैं। ये कार्य कुशल होते हैं। किन्तु तेज नहीं होते, बात पर अड़ने से दया रहित तक हो जाते हैं। अपनी बात को रखते हैं।

जब सुखेश शनि सिंह का एकादश हो तो रोगी, आयु क्षीण होने का योग है, ये लोभी, चतुर, चालाक, ठगी में न आने वाले, यौवन में सुखानुभव करने

वाला, धनी, पुत्र दुःख से दुःखी होता है। चुनाव जीतने वाला, सत्ताधारी, ऑफिसरों का मित्र होता है। जब कन्या में शनि होता है तो मनुष्य धन-धान्यपूर्ण, स्त्री और सन्तान से दुःखी, तटस्थ, बुद्धि तीव्र, शास्त्र से रुचि, व्यापार से लाभ, वात पित्त रोग से ग्रसित, गठिया, अण्डकोष वृद्धि के रोगों से दुःखी, वह अपनी ही कठिनाइयों से दवा रहने के कारण उदास रहता है।

यदि सुखेश शनि कन्या का द्वादश हो तो शिक्षा पूर्ण होने पर मनुष्य डाक्टर, वकील, न्यायाधीश आदि होता है। इसमें यश मिलता है, इष्ट मित्रों से नहीं बनती, ४२ के बाद बहुत अच्छी स्थिति होती है। तुला का शनि द्वादश में मनुष्य को एकाक्षी बनाता है। घर को नष्ट करता है, फिर अपने उद्योग से अपनी स्थिति को बनाता है, समाज में यश पाता है। प्रथम पुत्र का सन्ताप देखने को मिलता है। तीर्थ-यात्रा में खर्च करने वाला, अन्तिम समय में साधु वृत्ति को प्राप्त करने के लिये निर्जन वास करता है।

पञ्चमेश रवि फल

रवि—जिसका पंचमेश रवि उच्च का मेष लग्न में हो तो वह मनुष्य आत्मविश्वासी, उच्चाभिलाषी, क्रोधी, गम्भीर, अधिकार युक्त वचन कहने वाला, धनहीन, स्त्री-सन्तान की बीमारी, संतान न होने से दुखी, ज्ञानी, विद्वान्, यशस्वी, स्वतन्त्रताप्रिय होता है। धर्म-कर्म-रत, पित्तादि रक्तविकार का रोगी रहता है।

जब पंचमेश रवि वृष का दूसरे भाव में हो तो तीव्र बुद्धि, सुशिक्षित होकर डाक्टर, वकील, स्वतन्त्र कार्य करने वाला, बिना उकताये कार्य रत रहने वाला होने पर भी अत्यधिक धनिक नहीं होता। कुटुम्ब से नहीं बनती, स्वांसरोगी, स्पष्टवक्ता, शत्रुजित्, यशस्वी, समाजसेवक और अपनी इच्छापूर्ति तक शान्त रहने वाला होता है।

यदि पंचमेश रवि मिथुन का तीसरे हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर, डाक्टर, कवि, सम्पादक, शिक्षक, लेखक प्रकाशकादि कार्य से लाभ उठाने वाला, भ्रातृ-विरोधी या मारक होता है देवाराधक, उपकारी, भ्रमणशील, अच्छा व्यापारी, सदा दो कार्य करने वाला, पराक्रमी घमंडी होता है।

जिसका पंचमेश रवि कर्क का चतुर्थ हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, इच्छा बनी रहने पर भी पढ़ाई छूट जाती है। जातक प्रयत्न करते रहने पर भी विद्योन्नति नहीं कर पाता, माता पिता से कम बनती है। ये लोग गणित, ज्योतिष, वैद्यक

के शौकीन, सन्तप्त, क्रोधी, विवाह देर में हो या न भी हो, सरकारी नौकर होने पर भी तंगदस्त नहीं रहते ।

जब पंचमेश रवि सिंह का पंचम हो तो मनुष्य राज्य भाषा का जानने वाला, सुन्दर, अड़चनों को दूर करके भी विद्या को पूर्ण करने वाला, अधिकार पूर्ण होता है । सन्तान कष्ट, प्रथम पुत्र का सन्ताप देखने को मिले, सन्तान जीवित भी रहे, ये लोग हस्तरेखा, ज्योतिष के शौकीन होते हैं । सरकारी नौकरी पसन्द करते, कामी होते, शादी के बाद अस्वस्थ रहते हैं ।

यदि पंचमेश रवि कन्या का छठे हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, कम पढ़ने वाला, मधुरभाषी, शत्रुजित, सरकारी छोटा नौकर होता है, इसके कुपुत्र होते हैं । पित्त, रक्त विकार, म्यादी बुखार, मूत्र-कृच्छ्र रोगी होता है, अपयश मिलता है ।

जिसका पंचमेश रवि तुला का सप्तम हो तो वह शिक्षित होकर नौकरी करने वाला, संगीत, वाद्य का शौकीन, स्त्री सन्तान से दुखी, मन उद्विग्न रहे, प्रपंची हो, क्रोधी हो, शिर में दर्द, नेत्र पीड़ा हो । नीच का सूर्य चोराग्नि भय देता है ।

जब पंचमेश रवि वृश्चिक का अष्टम हो तो शिक्षा कम होती है, शरीर रोगी रहता है, रक्त-पित्त दोष हो, स्त्री व्यभिचारी, पति के बाद मरने वाली होती है । सन्तति अधिक होती है, धन का कष्ट रहता है, देह दुर्बल, नेत्ररोगी हो, न तो पाप करता, न पाप सहन करता, जीवन सुखमय नहीं होता ।

यदि पंचमेश रवि धन का नवम हो तो मनुष्य शिक्षित, उच्चविचार, नौकरी पेशा, धार्मिक, तीर्थयात्रा प्रिय, लेखक, कवि, शिक्षक, कृषक आदि कार्य से लाभ उठाने वाला, अभिमानी, परोपकारी, भाई-बहन युक्त, कर्कश शब्द, व्यवहार शून्य स्वार्थी होता है । २० वर्ष से पहले विवाह हो ।

जिसका पंचमेश रवि मकर का दशम हो तो वह सुशिक्षा प्राप्त कर बड़ा अधिकार पूर्ण जगह लेता है । माता-पिता को कष्टदायक रहे, प्रवासी हो, स्त्री-पुत्र से युक्त, परोपकारी, धार्मिक हो, कुशल प्रवन्धक, उद्योगी, नौकर, वाहन से युक्त, द्यूत, रेस, वृजादि खेलने का शौकीन हो ।

जब पंचमेश रवि कुम्भ का एकादश हो तो मनुष्य साधारण शिक्षित, व्यापारी, बड़े भाई को दुखदाई, सन्तान और सम्पत्ति दोनों साथ नहीं होते, एक

का अभाव सदा रहता है। यात्रा प्रिय, गायन वादन जानने वाला, श्रेष्ठकर्मी, यशस्वी होता है। राजा से लाभ होता है।

यदि पंचमेश रवि मीन का द्वादश हो तो मनुष्य, विद्वान्, राजनैतिक, निश्चिन्त खर्चीला होता है। साहसी, उपकारी, पिता विरोधी, मन्द दृष्टि, घमंडी, ऋणी, शत्रुजित, राजदंड पाने वाला, रोगी, हिंसावृत्ति धारण करने वाला, कामी, पुत्र से शत्रुता करने वाला, कला, गायन, जादू, परस्त्री से बातचीत करने का प्रेमी होता है।

पंचमेश चन्द्र फल

चन्द्र–जिसका पञ्चमेश चन्द्र मीन का पूर्णलग्न में हो तो मनुष्य रूपवान्, सुन्दर, सरल हृदय, विद्वान्, यशस्वी, सरकारी नौकर, स्त्री-सन्तान से सुखी, पर-स्त्री रत, कामी, चतुर होता है। यदि क्षीण चन्द्र हो तो, झूठा, स्वार्थी, धोखेबाज, उन्मादी, व्यवहार रहित, नीच स्त्री से प्रेम रत, प्रेम विवाह (Love Marriage) करनेवाला, कामी, अविश्वासी होता है।

जब पञ्चमेश पूर्ण चन्द्र मेष का दूसरे हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर धन कमानेवाला, विनीत, मर्मज्ञ, प्रसिद्ध, स्त्री-बच्चों से सुखी, कामी, मधुर वाणी होता है। जब क्षीण चन्द्र हो तो धन विहीन, मिथ्यावादी, अधिक कन्या वाला हो।

यदि पञ्चमेश पूर्ण चन्द्र वृष का तीसरे हो तो मनुष्य विद्या से पराक्रम प्राप्त करनेवाला, सज्जन, सहायक, मधुरभाषी, इष्ट-मित्र, धन-धान्य से सुखी, व्यवहार कुशल, प्रेम करने में चतुर, बन्धुप्रिय, कृपण होता है। २४ वर्षोपरि शुभ दिन आते हैं। क्षीण चन्द्र, अभिमानी, हिंसक, बुद्धि, बन्धु हीन, निर्दयी, असन्तोषी, कामी, लम्पट, गले, कान में पीड़ा करता है।

जिसका पञ्चमेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का चतुर्थ हो तो मनुष्य माता-पिता, स्त्री-बच्चों, विद्या, मकान, कृषि, वाहन आदि सुख से सुखी, नये विचारों के लिये साहित्य प्रेम रखनेवाला हो, क्षीण चन्द्र मनुष्य को शृङ्गारी, कठिन परिश्रम द्वारा जायदाद थोड़ी बनाये, माता-पिता की मृत्यु या उनसे कलह या अलग रहे। छोटे-छोटे कार्यों से लाभ होता है।

जब पञ्चमेश पूर्ण चन्द्र कर्क का पंचम हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर बड़ा सरकारी अधिकारी, डाइरेक्टर औफ इन्फॉर्मेशन, डाक्टर, वकील आदि होकर

लोकप्रिय होते, यशस्वी बनते हैं। कवि, लेखक, सम्पादकादि का कार्य सफलता से करते हैं, क्षीण चन्द्र होने पर प्रेम में निराश, बदनामी, चरित्रहीन होता है, विवाह के बाद दशा सुधर जाती है।

यदि पंचमेश पूर्ण चन्द्र छठे सिंह का हो तो मनुष्य शिक्षा पर मांसिक, सामाजिक, आत्मिक उन्नति में लगता है। वह डाक्टर या वकील या कुछ और करे, गरीबों पर दयालु, शान्त, उपकारी होते हैं। इनके शत्रु दबे रहते हैं। क्षीण चन्द्र, स्त्री जाति का द्वेषी, बच्चों का प्रेमी, प्रेम के मामले में अधीर, ऋणी, शत्रुयुक्त, रक्त कफ दोष, अपमानित, पेड़ू में दर्द हो।

जिसका पंचमेश पूर्ण चन्द्र कन्या का सप्तम हो तो मनुष्य प्रेम विवाह रत, अनेक लड़कियों से सम्बन्धित, शिक्षित, व्यापारी, देशाटन प्रिय, शृंगारी, कवि, चंचल प्रकृति, देखने में सुन्दर, यदि चन्द्र क्षीण हो तो मनुष्य, कामी, रोगी, स्त्री से कलह, उदास वृत्ति, मन्दाग्नि, धातु विकार से पीड़ित, क्षीण, धनहीन, विनय रहित पापी होता है।

जब पंचमेश पूर्ण चन्द्र तुला का अष्टम हो तो शिक्षा अच्छी होती है और स्त्री सुन्दर, विश्वसनीय तथा कम बोलनेवाली, घर की लज्जा रखनेवाली होती है। ये लोग अन्तिम समय धर्म कर्मरत रहते हैं किन्तु क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा कम, स्त्री कलहकारी, घर की बातें बाहर कहनेवाली, सास से लड़नेवाली, ऋणी बनानेवाली, अशुभ दृष्ट होने पर बीमार या मृत्यु कारक होता है।

यदि पंचमेश चन्द्र वृश्चिक नीच का नवम हो तो मनुष्य संसार से उदास, मन्द बुद्धि, भाई से झगड़ा करनेवाला, लेखक, प्रकाशन कार्य करनेवाला, अधिकार पद से रहित, यात्रा में जीवन संकट पानेवाला, मातृ सुख से सुखी होता है।

जिसका पंचमेश चन्द्र धन का दशम हो तो सुशिक्षित, सरकारी नौकर, मातृ-पितृ, खेती, मकान, वाहन सुख से सुखी, रोबीला, सबका प्रिय होता है। किन्तु क्षीण चन्द्र से मातृ-पितृ सुख रहित, धन का कष्ट, राज्य से विरोध, ऑफीसरों से झगड़ा, एक ही जगह स्थिर रहनेवाला, छोटे-छोटे व्यापार करनेवाला, मन्दभागी होता है।

जब पचमेश पूर्ण चन्द्र मकर का एकादश हो तो मनुष्य सुशिक्षा प्राप्त कर कुशल व्यापारी या बड़ा अधिकारी होता है और सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र

में प्रगति करता है किन्तु घरेलू जीवन सुखमय नहीं होता, क्षीण चन्द्र, स्त्री-पुत्रादि से चिन्तित रखता है, पढ़ाई पूर्ण नहीं होती, प्रवास, गुप्त चिन्ता, जन द्वेषी होता है।

यदि पंचमेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का द्वादश हो तो मनुष्य पढ़ाई में काफी धन खर्च करता है किन्तु इसका प्रभाव कम होता है। ये मितव्ययी, व्यवहार कुशल होते हैं, क्षीण चन्द्र, ऋणी, कुसंगति प्रिय, धर्म कर्म रहित, नेत्र रोगी, क्रोधी, शत्रु युक्त, अस्थिर बुद्धि, उदास, निराश, विफल बनाता है।

पंचमेश भौम फल

मंगल—जिसका पंचमेश मंगल कर्क में नीच का लग्न में हो तो मनुष्य शिक्षित होकर पुलिस, सेना में नौकरी करनेवाले, हठी, लोभी, स्वार्थी, परिश्रम से उन्नति करनेवाले, रिश्वती, खूनी, मुकदमे को दबानेवाले, रक्त विकारी, अर्श, पित्त रोगी होते हैं। बड़े ही व्यभिचारी कामी, लम्पट होते हैं। जब धन राशि का मंगल हो तो सुशिक्षा प्राप्त कर मनुष्य डाक्टर, सर्जन, थानेदार, वकील आदि के लिये अच्छा है। यह तार्किक, धातु, कृषि से लाभ पानेवाला, रक्तचाप का रोगी, माता के लिये मारी होता है। यात्रा में कष्ट, द्विभार्या योग करता है। इसको उन्नति पथ पर अनेक बाधायें आती हैं।

जब पंचमेश मंगल सिंह का द्वितीय हो तो शिक्षित, धन लोलुप होने के कारण, जुआ, रेस, सट्टा, लाट्री लगाने वाला, प्रेम के मामले में अधीर, निराश, दूसरी स्त्री से धन पानेवाला, प्रधान पद पानेवाला, हठी, सत्याग्रही, पुत्र के लिये चिन्तित, यशस्वी, कठिनता से सफलता पानेवाला, मध्य आयु के बाद भाग्योदय होता है और जब मकर में हो तो अत्यधिक उद्योगी, चपल, चालाक, दृढ़ व्रती, भय रहित, देशाटन प्रिय, सामाजिक प्रधान, विवाह में धन पाने पर पर स्त्री रत, स्वस्त्री से वियोग हो, काम वासना अधिक, पुत्र चिन्ता, धन का अत्यन्त खर्च हो।

यदि पंचमेश मंगल कन्या राशि का तृतीय हो तो मनुष्य शुभ कार्यों में श्रद्धा रखनेवाला, शत्रुजित, धूर्त, स्वार्थी, पैतृक सम्पत्ति से वंचित, पुत्र, धन का सुख नहीं, घर से निश्चिन्त, कामी, निराश, छिद्रान्वेषी, उदास, उन्नति पथ अड़चनों से पूर्ण, इष्ट मित्रों का द्वेषी, भाई यदि हो तो अनबन, नीच संगति, स्नायु पीड़ित होता है किन्तु जब कुम्भ में मंगल हो तो मनुष्य पूर्ण तार्किक, समाजवादी, अनेक गुणों से युक्त, कठिनता से धन पानेवाला, विवाह युक्त,

रेल यात्रा प्रिय, स्पष्ट वक्ता होने से सहानुभूति रहित, पाप वृत्ति, सन्तान से कष्ट, नौकरी में अड़चन रहे।

जिसका पंचमेश मंगल तुला का चतुर्थ हो तो शिक्षा कम, माता रोगी, छोटे कार्यों द्वारा जिल्दसाजी, स्टेशनरी से जीवन-यापन करनेवाला, हठी, विवाह देर में हो, मकान बनाकर रहनेवाला, प्रथम पुत्र का सन्ताप देखनेवाला, स्वधर्म रत रहनेवाला हो। यदि मीन का मंगल हो तो मनुष्य छोटा व्यापारी, अच्छी आय, पुलिस या सेना में नौकरी करनेवाला, जल से भयभीत, बीमार स्त्री से विवाह हो, सन्तान कष्ट, ऋणी, उष्ण रक्त विकार, हृदय रोग, प्रवासी, बीमारी में खर्च करनेवाला, माता से अनवन या माता बीमार रहे।

जब पंचमेश मंगल वृश्चिक का स्वगृही हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर, डाक्टर, वकील, पुलिस, सेना कार्य में कीर्ति पानेवाला, कामी, प्रेमी, विवाह में धन पानेवाला, स्वस्थ, चालाक, २८ वर्ष बाद उन्नति, खर्चीला हो, मेष में होने से शिक्षा कुछ कम, गुस्सा अधिक, छोटी नौकरी, छोटे व्यापार करनेवाला, क्रूर, साहसी, वायु, पित्त, कफ रोगी, चोट से घाव, नेत्र पीड़ा, खेल-कूद में अग्रसर, स्वच्छन्द, इसका विवाह शुभ परिणामदायक होता है किन्तु देर में होता है, पुत्र शोक देखना पड़ता है।

यदि पंचमेश मंगल धन का छठे भाव में हो तो शिक्षा कम, उत्साह, साहस, स्वतन्त्र विचार, स्पष्टवक्ता अधिक होता है। काम वासना अधिक होने से दो स्त्रियाँ तक रखता है। रजोगुणी पदार्थ पसन्द करता है। दिन में रति करता है, अपने उद्योग से उन्नति करता है। इनके धार्मिक विचार अपने ही होते हैं। इन्हें यात्रा में कष्ट, जीवन भय रहता है, किन्तु वृष में होने से शराबी, कवाबी होने से, बहुत खाने से मन्दाग्नि, क्रोधी, विजाति या अन्तंजाति स्त्री से सम्बन्धित होने के कारण धन की हानि गुप्त शत्रु द्वारा होती है। इन्हें अत्यन्त परिश्रम करने पर भी पूर्ण रूप से निराश हो जाने पर सफलता मिलती है, जीवन संघर्षमय रहता है।

जिसका पंचमेश मंगल मकर का सप्तम हो तो मनुष्य सुशिक्षा प्राप्त कर विदेश यात्रा से धन, कीर्ति, यश पाने पाला, यदि विवाह हो तो स्त्री कलह करनेवाली, क्रोधी, हठी, दुराग्रही होती है। द्विभार्या योग भी रहता है। ४२ वर्षोपरि मनुष्य पूर्ण सुखी रहता है, उसे आजीवन सुख मिलता है। जब मिथुन

का मंगल हो तो स्त्री द्वेषी, देशाटन प्रिय, इष्ट मित्र पिता आदि का विरोधी, अधिक खर्च करनेवाला, राज्य पक्ष से हानि पानेवाला, नौकरी में कम वेतन पाने वाला, स्त्री के पेट में दर्द, गर्भपात आदि हों।

जब पंचमेश मंगल कुम्भ का अष्टम हो तो शिक्षा अधिक न होने पर भी समझ अच्छी होती है। ये लोग कामी तथा इन्द्रिय लोलुप होते हैं। इन्हें स्त्री, झगड़ालू मिलती है। कृपण, आत्मविश्वासी, पर स्त्री को देखने में रत, सन्तान कम, रक्त विकारी, सज्जनों के निन्दक, मतलबी, बात याद रखने वाले, कर्क में नीच का मंगल होने से दुर्बुद्धि, अत्यन्त कामी, पर-स्त्रीरत, किसी भी स्त्री के सौन्दर्य से आकर्षित न होकर वक्ष भाग से होते हैं। नीच प्रवृत्ति होती है।

यदि पंचमेश मंगल मीन का नवम हो तो मनुष्य की विशेष शिक्षा नहीं होती, इसलिए छोटी नौकरी छोटा व्यापार होता है। ये बढ़-बढ़ कर बात करने वाले निरे झूठे होते हैं। पूर्ण धनिक कभी नहीं होते, मातृ कष्ट, सन्तान कष्ट, रक्त, पित्त विकारी, हृद्रोगी होता है, सिंह में होने से शिक्षा कम, क्रूर कर्मी, हिंसक, डाकू, प्रेम में निराश रहने वाला, स्त्री पुत्र से शोकित, द्विभार्या, चुस्त चालाक, किसी समूह का प्रधान, पाप रत होता है।

जिसका पंचमेश मंगल मेष का दशम हो तो मनुष्य अत्यन्त धनी, राज्याधिकारी, धन-धान्य पूर्ण विजय पद से उन्नत, रक्तविकारी, क्रोधी, घाव से पीड़ित अग्निचोर, भयपूर्ण, खेल-कूद, घोड़े की सवारी का शौकीन, स्वतन्त्र विचार, साहसी, बहादुर होता है। पराधीनता नहीं चाहता, माता-पिता को भारी कष्टी, शिक्षायुक्त होता। कन्या का मंगल सन्तान से सुख रहित करता है, माता-पिता की मृत्यु जल्दी होने से पोष्य पुत्र बनना तथा सदा निराश रहना पड़ता है, और शिक्षा की कमी से नीच संगति में बिगड़ जाता है। मन में उद्वेग रहता है।

जब पंचमेश मंगल वृष का एकादश भाव में हो तो शिक्षित होकर नौकरी या व्यापार करता है, तो सफल होता है, वह धार्मिक, ईश्वर भक्त, पुत्र युक्त होता है। रक्त कफ दोष युक्त होता है। लाल वस्तु के व्यापार से लाभ हो, शूर-वीर, कामी तथा क्रोधी होता है। जब तुला का मंगल हो तो जातक पूर्ण शिक्षक होकर वकील, डाक्टर, सर्जन, जज होते हैं। ये परोपकारी, धार्मिक, प्रगतिशील, यशस्वी तथा बड़े आदमी होते हैं। ऐसे मनुष्य की मृत्यु फालिस या रक्तचाप से होती है।

यदि पंचमेश मंगल मिथुन का द्वादश हो तो ये लोग शिक्षित होकर सरकारी नौकरी या स्वतन्त्र व्यवसाय दोनों ही करते पाये जाते हैं। इनके पुत्र नहीं जीते। स्त्री को गर्भ पात होते हैं। स्त्री से झगड़ा रहता है। ये पर-स्त्रीरत रहते हैं। विवाह में अड़चनें पड़ती हैं। ये लोग उऋण हो जाते हैं। इनमें रजोगुण प्रधान होता है इसलिये बात बड़ी गम्भीर बनावट लिये हुए करते हैं। जब वृश्चिक का स्वगृही मंगल हो तो उपर्युक्त फल के साथ वंशक्षय फल विशेष है। इनको विदेश यात्रा करनी पड़ती है। धन कमाते हैं, उससे जनता में नाम पैदा करने के लिए कोई ऐसा काम करते हैं जिससे इनका नाम अमर हो जाता है। स्कूल, कालेज, धर्मशाला बनाना, समाज सुधार कार्य करना और इच्छानुसार धर्म पालन करना, अर्श, रक्त विकार, रक्त चाप पित्त पीड़ित रहना, नेत्र विकार हो और थोड़े में अपनी बेइज्जती को बहुत सोचकर क्रोधित हो जाते हैं और अपने शत्रु को परास्त करके छोड़ते हैं।

पंचमेश बुध फल

बुध—जिसका बुध पंचमेश होकर वृष का लग्न में हो तो वह मनुष्य हंसमुख, सुन्दर, विनीत, उदार, विद्यावान्, कलापूर्ण, कुशल व्यापारी, या फर्म का नौकर, एकान्तप्रिय, परस्त्रीरत, नीच संगति, झूठा होता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, दोनों का विचार-विनिमय न होने पर भी प्रेम रहता है। कुम्भ का बुध हो तो आस्तिक, स्वतन्त्र विचार, तार्किक, न्यायप्रिय, इष्टमित्रों, समाज से लाभ उठाने वाला, विवाह में दहेज पाने वाला, किन्तु उसका स्त्री से विचार विनिमय न होने के कारण जीवन सुखमय नहीं रहता।

जब बुध पंचमेश होकर मिथुन का दूसरे भाव में होता है तो मनुष्य की बुद्धि तीव्र किन्तु शिक्षा कम होती है, इसलिये छोटी नौकरी या छोटा व्यापार करना पड़ता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, चौथे पाँचवे वर्ष बीमार होता है। समय-समय पर आपत्तियाँ आती हैं। ऋण लेना पड़ता है, लड़के कम जीते हैं। यात्रायें होती हैं और जब मीन का बुध हो तो जातक बातूनी, गप्पी होता है जिससे उसकी मान हानि होती है। ये लोग यात्रा प्रिय, तैराक, पत्नी का धन ठगने वाले, समय के अनुसार वर्तने वाले, स्वछन्द तथा तटस्थ होते हैं।

यदि बुध पंचमेश होकर कर्क का तीसरे भाव में हो तो मनुष्य शिक्षा हीन, पराक्रमशून्य, भाई कम, बहिनें अधिक, इसका पिता सदा इससे

अप्रसन्न रहे। मलिन हृदय, सुखहीन, स्वच्छन्द, नीच संगति का होता है। इसका भाग्योदय ३२ वर्ष के बाद होता है। मेष का बुध मनुष्य को साहसी, पराक्रमी, बुद्धिमान्, चालाक, चंचल, अस्थिर, पित्त वायु कफ रोगी, लेखक, मुद्रक, प्रकाशक बनाता है।

जिसका बुध पंचमेश होकर सिंह का चतुर्थ हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण हो, छोटी नौकरी या क्लर्क या छोटा व्यापार होता है। क्रोधी, माता से अनबन रखने वाला, ज्ञान का गर्व होता है, कंजूस, दादलाई जायदाद मिलती है। उन्नति में रूकावटें आती हैं। वृष का बुध मनुष्य को तार्किक, न्यायप्रिय, हठी, घटने-बढ़ने वाली आय हो, कलापूर्ण कार्यों से धन कमाता है। पड़ोसियों, इष्टमित्रों को प्रिय होता है और वह किसी विशेष स्त्री से लाभ की आशा से विवाह करने वाला, स्वार्थी, सुन्दर किन्तु अन्तर्जातीय विवाह का हामी रहता है।

जिसका बुध पंचमेश होकर पंचम कन्या राशि का हो तो जातक शिक्षा से कहीं अधिक समझदार होता है। काल्पनिक, शक्ति तीव्र होने के कारण, ज्ञान-विज्ञान, तर्क, वितर्क, लेखक, कवि, झगड़ालू प्रकृति का होता है। वह व्यवहार कुशल, प्रभावशाली, विवाह रहित, यदि विवाह हो तो कन्यायें अधिक, पुत्र एक या दो से अधिक नहीं होते, पुत्र के लिये तरसते हैं, ज्योतिष, गणित, हस्तरेखा का शौक होता है। सरकारी नौकरी करते हैं, स्वभिमानी होते हैं। मिथुन का बुध पूर्ण शिक्षा नहीं करता, किन्तु साहित्य प्रेम जीवन भर बना रहता है, होम्योपैथिक, वैद्यक और दूसरे कार्य सफलता से करते हैं। शेष कन्या के समान ही फल होता है।

यदि बुध पंचमेश होकर तुला का छठे भाव में हो तो जातक मन्द बुद्धि किन्तु मतलब का चतुर, कायदे कानून को जानने वाला, पुत्र से दुखी, सफल आलोचक, छोटे धन्धे करने वाला, शरीर कष्ट, खर्चीला होता है। जब बुध कर्क का होता है तो मनुष्य के मस्तिष्क में पीड़ा होती है। पुत्र से सदा अनबन रहती है। स्थान भ्रष्ट, प्रवासी, किसी बड़े कार्य में अपयश मिलता है। यात्रा में कष्ट हो, गुप्त स्त्रीरत रहे।

जिसका पंचमेश बुध वृश्चिक का सप्तम भाव में हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, जातक सरकारी नौकरी में क्लर्क, स्टेनोग्राफर, टाइपिस्ट, व्यापार आदि भी करता है। स्त्री सुन्दर तथा झगड़ालू होती है। बच्चों का सुख होता है। जातक स्वार्थी,

और निराशा के बाद सफलता प्राप्त करने वाला, चोरी, धोखे आदि में नुकसान उठाने वाला होता है। सिंह का बुध मनुष्य को बुद्धिमान्, क्रोधी, चपल, सुरापी, दुर्बल हृदय, इष्टमित्रों से युक्त, सुन्दराकृति, कलाकार, नाटक, ड्रामा, संगीतादि का प्रवन्धक होता है।

जब पंचमेश बुध धन राशि का अष्टम भाव में हो तो जातक चुस्त, चालाक, कठिन परिश्रम से सफलता पाने वाला, अपूर्ण शिक्षित, झगड़ालू स्त्री वाला, वह वाचाल तथा खर्चीला भी होता है। सन्तान से अल्प सुखी, पाण्डु रोगी, सूर्य के साथ होने से कुछ शुभ फल वाला, धार्मिक, उपासना में रुचि, हँसमुख होता है, किन्तु स्त्री घर के रहस्य खोलने वाली होती है। इसलिए उससे सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते।

यदि पंचमेश बुध मकर राशि का नवम भाव में हो तो मनुष्य सुशिक्षित न होने के कारण साधारण नौकरी करने वाला, दुष्ट संगति, मितव्ययी, उद्योगी, दिखावटी, धार्मिक, अशुभ विवाह कारक, अपयशी होता है। इसकी उन्नति मध्यायु के बाद साधारण तौर पर होती है। जब बुध तुला का होता है तो निश्चय विवाह, ३ वर्ष के बाद भाग्योदय होता है, नौकरी या व्यापार में उन्नति होती है, मस्तिष्क में स्थिरता आती है, इष्ट मित्र भाई-बन्धु सबसे मेल रहता है।

जिसका पंचमेश बुध कुम्भ का होकर दशम में हो तो मनुष्य की शिक्षा साधारण अच्छी होती है। उसका मस्तिष्क तार्किक, स्वतन्त्र विचार, न्यायप्रिय होते हैं। वह राज्य की नौकरी करने वाला, सफल कर्मचारी, क्लर्कादि होता है। उसका विवाह सम्बन्ध धनिक घर में होता है किन्तु उसकी स्त्री का स्वभाव अच्छा न होने के कारण विचार विनिमय नहीं हो पाता और जीवन दुःखी होता है। और जब बुध वृश्चिक का होता है तो मनुष्य स्वार्थी, कृपण, सम्पादक या प्रूफ-रीडर, छापेखाने में कार्य करने वाला, या कापी, पेंसिल, होल्डर खरीद कर बेचने वाला होता है। माता-पिता का सुख रहता है। छलकपट द्वारा सफलता मिलती है।

जब पंचमेश बुध मीन का एकादश हो तो शिक्षा अधिक न होने के कारण मनुष्य स्वतन्त्र व्यापार करता है और शेयर व्यापार में काफी लाभ होता है। यह जल क्रीड़ा का शौकीन, तैराक तथा जलयात्रा प्रिय होता है। भाई सन्तान स्त्री को सुखकर होता है। यह परिस्थिति के अनुसार अपने को बनाकर अपना कार्य

चला लेता है। और साहित्यिक प्रेम इसे सदा रहता है। जब बुध धन का होता है तो क्लर्क, लेखक, कवि, प्रकाशक , ज्योतिषी या इसी तरह का कार्य करके धन कमाने वाला होता है। स्त्री सन्तान में कन्या अधिक होती है किन्तु बड़े भाई की परिस्थिति चिंताजनक रहती है। इसका भाग्योदय विदेशी वस्तुविक्रय से होता है।

यदि पंचमेश बुध मेष का द्वादश हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर बड़े पदाधिकारी या कुशल व्यापारी होते हैं, धर्म-कर्म में खर्च करने वाले पुत्र द्वेषी होते हैं। अपनी बात को हठपूर्वक मनवाने वाला, सदा धन तृषित होता है। जब बुध मकर का द्वादश हो तो मनुष्य मन्द बुद्धि, दयाहीन, मलिन हृदय, धनहीन, प्रवासी, अपयशी, पापवृत्ति, दूसरे की स्त्रीरत, अभिमानी होते हैं, इनको चोर, शत्रुभय सदैव रहता है। ये लोग छापेखाने, दर्जी गिरी, लुहार, बढ़ई के कार्य में दक्ष होते हैं फिर भी उसका उपभोग कम होता है और ये ऋणी रहते हैं।

पंचमेश गुरु फल

गुरु—जिसका पंचमेश गुरु वृश्चिक का लग्न में बैठा हो तो उस मनुष्य की शिक्षा अधिक नहीं होती, ये लोग क्रोधी, झूठे, व्यर्थ हँसी मजाक करने वाले, अभिमानी, निर्लज्जता लिये हुए होते हैं। क्लर्की करते, दूसरों को ठगकर खाते फिर भी दिन भर मुँह चलता ही रहता, पेट नहीं भरता, किसी शुभ योग के कारण यदि पढ़ जाते हैं तो अच्छे सर्जन, डाक्टर, वकीलादि बनकर यश पाते हैं किन्तु विशेष धनी नहीं होते, द्विभार्या योग होता है या फिर नीच जाति की स्त्री से गुप्त प्रेम सम्बन्ध रखते हैं, यदि यह गुरु सिंह का हो तो मनुष्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर बहुत बड़े पदाधिकारी बनते हैं या फिर नाटचकार, प्रोफेसर, कवि, न्यायाधीश, गानाचार्यादि, शान्त, भीरु, नास्तिक तथा लम्पट प्रकार के होते हैं। मिलनसार होने के बावजूद भी ये लोग दुखी रहते हैं फिर भी अपने चरित्र को दूषित होने से बचाते हैं।

जब पंचमेश गुरु धन राशि का द्वितीय हो तो जातक की शिक्षा कम होने पर भी धन-धान्य पूर्ण होता है। यह दानी, धार्मिक, परोपकारी, इष्टमित्रों से युक्त, उच्चविचार, अहंभाव पूर्ण होता है। राजनैतिक सामाजिक उन्नति होती है, यह गोद लिये जाने का भी योग है। कन्या का गुरु हो तो चतुर, उद्योगी, परिश्रम से धन कमाने वाला तथा अन्तिमावस्था में यशस्वी, किन्तु स्वास्थ्य, मन्दाग्नि, जिगर,

बिल्ली के कारण खराब हो जाता है। इसका विवाह किसी कमाऊ लड़की या फिर नीच जाति की लड़की से होता है। खानदान को बट्टा लगता है।

यदि पंचमेश गुरु मकर का तृतीय नीच का हो तो अधिकतर जातक दुर्बुद्धि, अशिक्षित ही होते हैं किन्तु कोई-कोई पूर्ण विद्वान् भी मिलते हैं जो कि शिक्षा कार्य अपनाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जो अशिक्षित हैं उनका जीवन-यापन मजदूरी या छोटे-छोटे व्यापार द्वारा होता है। इनके बहिन भाइयों के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, जायदाद के लिए झगड़ा होता है। गुप्तरोग, शरीर कष्ट हो, घर से बाहर रहना पड़ता है, सदा निराशा ही होती है और तुला का गुरु शिक्षा अधिक न होने से मनुष्य को विद्वानों का सत्संग प्रदान करता है, धन से अधिक कीर्ति देता है। विफल प्रेमी के रूप में जब विवाह होता है तो स्त्री से सदा कलह रहता है।

जिसका पंचमेश गुरु कुम्भ का चतुर्थ हो तो जातक शिक्षित, उच्च विचार, राजनैतिक सामाजिक कार्य में यशस्वी, तार्किक, प्रत्युत्पन्नमति, माता-पिता का भक्त, स्नेही, विवाह से लाभान्वित, ज्योतिष, वैद्यकादि जानने वाला, न्यून धनिक होता है और जब वृश्चिक का गुरु हो तो अभिमानी, माता-पिता को कष्टी, दुखी, दत्तक पुत्र बनकर जायदाद का सुख भोगने वाला, फिजूल खर्च करने वाला होता है। शिक्षा अपूर्ण रहती है, एक बार गरीब होकर फिर परिश्रम से धन मिलता है।

जब पंचमेश गुरु मीन या धनु का पंचम हो तो मनुष्य स्वतन्त्र विचार, स्पष्ट वक्ता, चाहे रुककर ही हो किन्तु शिक्षा पूर्ण होती है और वह क्लर्क, वकील, नीतिज्ञ कुछ भी बने, दयालु, घमण्डी, धार्मिक, शनैः-शनैः उन्नति करने वाला, स्त्री की अपेक्षा बच्चों को अधिक प्रेम करने वाला, सन्ततिवान्, ३२, ३९, ४२ वर्षों तक भाग्योदय होता है तब तक धन तृषित ही रहता है। इनको अपने परिश्रम से लाभ होता है, दादलाई जायदाद से नहीं।

यदि पंचमेश गुरु मेष का छठे घर में हो तो मनुष्य विद्याभिमानी, क्रोधी, शत्रुयुक्त, प्रतिकूल बुद्धि, पुत्र कष्टी, उच्च वर्ण, विरोधी, पिता का ऋणी, सरकारी नौकर, भाग्याधीन रहने वाला, आलसी होता है। जब गुरु मकर का हो तो मन्द बुद्धि, कामी, मधुमेह, धातु विकारादि गुप्त रोग हों। सदा ही ऋणी रहे, मान भंग हो, नीच संगति से हानि, पापरत, जल क्रीड़ा प्रिय, यात्रा में कष्ट, ४२

वर्षोपरि रक्तविकार या पाण्डु रोग हो। नौकरी में उच्चवर्ण द्वारा विरोध किया जाता है।

जिसका पंचमेश गुरु सप्तम में वृष का हो तो जातक की इच्छा बनी रहने पर भी शिक्षा पूर्ण नहीं होती इसलिये किसी भी व्यवसाय में प्रसन्नता नहीं मिलती, पत्नी से झगड़ा रहने के कारण सांसारिक सुख भी नहीं होता, वियोग की कविता, लेख, कहानियाँ लिखते हैं या पढ़ते हैं, कितने ही अविवाहित रह जाते हैं। जब गुरु कुम्भ का हो तो स्त्री बच्चों से प्रेम हो, व्यापार से लाभ, नौकरी में प्रगति, यात्रा में सुख मिलता है।

जब पंचमेश गुरु मिथुन का अष्टम हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, प्रपंची होता है और किसी की धरोहर हड़प कर धनिक बनता है। अन्तिम अवस्था ठीक व्यतीत होती है और इसी दशा में मृत्यु होती है, वायु, पीलिया रोग होता है। मीन का बृहस्पति इस स्थान पर मनुष्य को भली प्रकार शिक्षा दिलाकर मित्रों की सहायता से मनुष्य को बड़ा बनाता है। यह दयालु, यात्रा प्रिय, तैराक, तथा माता को सुखकर होता है। इसकी स्त्री मर जाती है और यह दूसरा विवाह करता है जिसमें खर्च काफी होता है।

यदि पंचमेश गुरु कर्क का नवम भाग्य स्थान में हो तो मनुष्य पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर उच्चाधिकारी पद को पाता है। वकील, जज, डाक्टर, कवि, दर्शन शास्त्र का ज्ञाता, धार्मिक, तीर्थ यात्रा प्रिय, परोपकारी, विद्या घमण्ड से पूर्ण, यशस्वी, पुत्रों के लिये चिन्तित, यदि पुत्र हुए तो कुपुत्र ही होते हैं जिससे पिता को अपयश मिलता है। ध्येय के लिये कभी-कभी आजन्म अविवाहित ही रह जाते हैं, और जब मेष का गुरु हो तो मनुष्य बड़ी-बड़ी डिगरियाँ लेकर विश्वविद्यालय में, प्रिन्सिपल, प्रोफेसर, वायस प्रिन्सिपल होकर सुख से जीवन व्यतीत करते हैं, कायदे कानून के पाबन्द, स्वस्थ, पुत्र चिन्ता से चिन्तित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति कुछ व्यभिचार की ओर होती है, बुढापे में बदनाम होते हैं।

जिसका पंचमेश गुरु सिंह का दशम हो तो वह मनुष्य पूर्ण शिक्षक होकर राज्य में बड़ा पदाधिकारी, साहसी, सेना पुलिस विभाग में अग्रगण्य, यशस्वी, शत्रुजित, नीतिज्ञ, पुरुषार्थी, उच्चाभिलाषी, मित्रों, बन्धु-बान्धवों के काम आनेवाला, परोपकारी होता है और जब गुरु वृष का होता है तो मनुष्य बुद्धि-

मान्, माता-पिता से अनवन रखनेवाला, स्त्री द्वेषी, विवाह रहित, ३२ वर्षोपरि किसी से धन पानेवाला, बड़ी अवस्था में विवाह करके शान्ति से रहनेवाला होता है।

जब पंचमेश गुरु कन्या का एकादश हो तो मनुष्य व्यापारी प्रकृति का, उच्चाभिलाषी, अपने परिश्रम से अपनी स्थिति सुधार कर बुढ़ापे में उसका उपभोग करनेवाला होता है। यह स्त्री द्वेषी होता है, इसके दो-तीन विवाह तक होते हैं, सन्तान कम होती है। यौवन में ऋणावस्था के कारण अपयश होता है। किन्तु जब गुरु मिथुन का एकादश हो तो मनुष्य बहुत बड़ा व्यापारी होता है और सफलता के लिए बड़े तरीके तथा सलीके से चलता है। यह कुलदीपक होता है। इसका गुस्सा नुकसानदेह होता है। यह समीपी सम्बन्धी स्त्री के प्रेम में रत रहता है।

यदि पंचमेश गुरु तुला का द्वादश हो तो जातक दुर्बुद्धि, विद्या में धन खर्च करने पर भी वुद्धिहीन ही रहता है। तर्क-वितर्क से धन कमानेवाला, निराशा और आपत्तियों का सामना करने के वाद स्थिरता आती है। इष्टमित्रों का सहयोग शुभ विवाह के बाद आता है। इसके बच्चे इससे बुद्धिमान् तथा अच्छे होते हैं और जब कर्क का गुरु द्वादश हो तो मनुष्य विद्याभिमानी, स्वार्थी, विदेश यात्रा रत तथा धोखे से जनता से धन कमानेवाला, छोटे-बड़े का भेद भाव त्यागकर अपना प्रभुत्व जमाता, निर्लज्जता से काम लेकर अपना उल्लू सीधा कर लेता है। इसको किसी भयंकर रोग का सामना करना पड़ता है। और स्त्री बच्चों का सुख कम होता है। माता का सुख, जमीन जायदाद का सुख ४८ वर्षोपरि अच्छा रहता है और सत्कार्य में या तीर्थ यात्रा में खर्च भी करता है।

पंचमेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका पंचमेश शुक्र मिथुन का लग्न में हो तो मनुष्य सुशिक्षित, कलाकार, अध्यापक, प्रिय वक्ता, सरकारी नौकर, आकर्षित, सुगन्धि, श्वेत वस्त्र धारण करनेवाला, कवि, लेखक, सम्पादकादि कार्य करनेवाला, कुशल प्रेमी, यह सदा दो कार्य और दो स्त्रियों से लाभ उठाता है, इसके बच्चे सुन्दर होते हैं और जब लग्न में मकर का शुक्र हो तो अनेक लड़कियों को देखने के बाद

एक साधारण सी लड़की से विवाह होता है। यह किसी नीच या बड़ी आयु वाली स्त्री से सम्बन्धित होकर उसके प्रभाव में अधिक रहता है। इनका विवाह धन के लिये ही होता है। इन्हें प्रेम में निराशा होती है और इसी चक्कर में धन खोते हैं।

जब पंचमेश शुक्र कर्क का दूसरे भाव में हो तो जातक सुशिक्षित न होकर लेखन कला प्रवीण, व्यापारी, गुप्त प्रेमी, दो स्त्रीवाला, विवाह के बाद उन्नति करनेवाला, धन के ठहराने में ससुर सास से अनबन, मदिरा सेवी, स्त्रियों के कारण रोग उत्पन्न होते हैं, सदैव चंचल चित्त रहता है। जब शुक्र कुम्भ का हो तो जातक कुशल व्यापारी, धन-धान्य पूर्ण, दादलाई जायदाद पानेवाला होता है। अन्य स्त्री रत, पुत्र चिन्ता से चिन्तित होता है, इसको स्त्री जाति से लाभ होता है, इसे अपनी स्त्री की ओर से सर्व सुख प्राप्त होता है।

यदि पंचमेश शुक्र सिंह का तृतीय भाव में हो तो जातक के पास स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए अनेक गुण, अनेक कलायें होती हैं। यह कविता, गायन, वादन, नृत्यादि में कुशल होता है। इसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। ये लोग कामुक होने के कारण अवैध स्त्रियों से सम्बन्ध रखते हैं और दिन में रति करते हैं। कन्यायें अधिक होती हैं। जब शुक्र मीन या उच्च का होता है तो जातक विद्या से पराक्रम पानेवाला, बहिनों से युक्त, २० वर्ष तक शादी कर लेनेवाला, धोखे में धन गँवानेवाला, दुर्बल देह, द्विभार्या होता है। प्रधान पद चाहनेवाला, नौकर, सवारी, स्त्री बच्चों से सुखी होता है।

जिसका पंचमेश शुक्र कन्या का नीच में चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती किन्तु साहित्य, ज्योतिष, कविता का प्रेमी, लेखक, कवि, सरकारी नौकर, बड़ी आयु तक अध्ययनशील, धर्म कर्म रत, माता-पिता से अनबन रखनेवाला, उनसे दूर रहनेवाला, सूर्य से अस्त भी हो तो विवाह नहीं हो, स्त्री द्वेषी रहता है अन्यथा पर स्त्री वार्ता में चतुर, नीच जाति की लड़की से सम्बन्धित होता है, जीवन साधारण हो, यदि मेष का शुक्र हो तो मनुष्य दूसरे की स्त्री से गुप्त सम्बन्ध रखनेवाला, निराश प्रेमी, वेश्यागामी या द्विभार्या योग होता है। दूसरी स्त्री सुन्दर होती है किन्तु प्रेम कम करती है। इसकी विशेष इच्छा मकानादि के बनाने की ४८ के बाद पूर्ण होती है।

जब पंचमेश तुला का या वृष का स्वगृही पंचम भाव में हो तो जातक पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर कई उपाधियों से युक्त होता है, ये लोग कामी किन्तु विद्वान् होते हैं। ये शिक्षक, लेखक, वकील, न्यायाधीश, कुशाग्र बुद्धि होते हैं। ये अपनी जैसी सुशिक्षित स्त्री की कमी में उदास रहते हैं और अनेक स्त्री प्रेम रत रहते हैं। कन्यायें अधिक होती हैं। ये लोग धन-धान्य पूर्ण, वाहन युक्त, कोमल वाणी, नम्र, राज्याधिकारी, प्रिंसिपल, प्रोफेसरादि होते हैं, विदेश यात्रा भी करते हैं।

यदि पंचमेश शुक्र वृश्चिक का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, इसकी स्त्री से नहीं बनती, यदि दूसरा विवाह हो तो भी वह दुख-दाई ही रहता है। कामी होने के कारण वीर्य सम्बन्धी दोष, प्रमेह, स्वप्नदोषादि रोग होते हैं, चित्त में विकलता, शत्रु भय, पर स्त्री को आकर्षित करने के लिए काफी चतुर होते हैं। मामा के वंश को अशुभ होते हैं, जब मिथुन का शुक्र हो तो व्यभिचारी, इन्द्रिय लोलुप, स्त्री के प्रति स्वार्थी, दो स्त्रियों से सम्बन्धित, दो ही मार्ग से धन कमानेवाला, कुटुम्ब चिन्ता युक्त, रोगग्रस्त, पुत्र द्वेषी, प्रतिकूल बुद्धि, न्यून विद्या होती है। सूर्य के साथ होने से दोषों में न्यूनता आ जाती है।

जिसका शुक्र पंचमेश होकर धन का सप्तम भाव में हो तो जातक कलाकार और नौकर होता है, दो तरफ से धन कमाता, यश पाता, दूसरे की स्त्री को आकर्षित करने के लिए सुन्दर होता, विवाह देर में, किन्तु सुन्दरी से होता फिर भी उससे प्रेम कम रखता, यह स्त्री उत्तम सलाहकार होती है, उसे कामेच्छा कम तथा साधारण लिवास होती है। जब कर्क में शुक्र हो तो स्त्री बड़ी आँखों वाली, स्वार्थी, झगड़ालू, खर्चीली, निर्मोही सी होती है, यह विवाह सम्बन्ध धन के लिए किया जाता है। ऐसे पुरुष का सम्बन्ध किसी विधवा से होता है जिसके संसर्ग से गुप्त रोग होते हैं। भ्रमण में हानि होती है।

जब शुक्र पंचमेश होकर मकर का अष्टम भाव में हो तो जातक शिक्षा की कमी में व्यापार करते हैं। इनको स्त्री पुत्र सुख कम मिलता है किन्तु पर-स्त्री के प्रभाव में रहने से धन मिलता है, प्रेम में निराशा, नीच जाति की स्त्री के कारण अपयश मिलता है। जब सिंह में हो तो मनुष्य सुरापी, वेश्यागामी, बहुकन्यावान्,

सवारी से संकट, रोगी, स्त्री संतान से दुख मिलता है। पापरत रहने के कारण वीर्य सम्बन्धी अनेक गुप्त रोग होते हैं।

यदि शुक्र पंचमेश होकर कुम्भ का नवम हो तो जातक कला-कौशल में चतुर, धन-धान्य से सुखी, प्रथम सन्तान कन्या से उन्नति होती है और धन स्थिर रहता है किन्तु प्रथम पुत्र से आया धन स्थिर नहीं रहता, कविता, नाटक, अभिनय, स्वांग, थियेटरादि में शौक होता है। सरकारी नौकरी तथा व्यापार में लाभ रहता है, सन्तान स्त्री सुख अच्छा रहता है। कन्या में नीच का शुक्र अशुभ करता है, उपर्युक्त गुणों के साथ स्त्री क्रोधी, स्वार्थी, झगड़ालू, कामी होती है। इनके गुणों का सुख नहीं मिलता, माता-पिता से अनबन होने पर पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती, धन संकट आता है।

जिसका शुक्र पंचमेश होकर मीन का दशम हो तो जातक शिक्षा पाकर नौकरी को अपेक्षा व्यवसाय पसन्द करता है। समाज में पदाधिकार, सवारी सुख प्राप्त होने पर भी किसी धोखे में पकड़ा जाता है। माता-पिता स्त्री बच्चों का सुख अधिक नहीं होता, दूसरा विवाह भी करना पड़ता है। पापी क्रूर दृष्ट होने पर अविवाहित भी रहना पड़ता है। तुला में शुक्र अनेक ज्ञान-विज्ञान की उपाधियों से विभूषित करके मनुष्य को उच्चाधिकार प्राप्त कराता है। ये लोग कवि, लेखक, उदार, मिलनसार, गायन, वादन, नृत्य, सजे मकान, मोटर साइकिल, ज्योतिष, रेखागणित, हस्तरेखादि में निपुण होकर, धन, यश, नाम कमाते हैं। दूषित दृष्टि होने पर परस्त्री रत बनाकर बदनाम करता है।

जब शुक्र पंचमेश होकर मेष का एकादश हो तो जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त कर नौकरी या व्यापार दोनों में सफल होता है। इसकी स्त्री का स्वभाव क्रोधी, सन्तान में कन्या अधिक, धन आता है किन्तु यात्रा धार्मिक उत्सवों, दान में खर्च भी खूब होता है। यह अत्यन्त कामी, दिन में रति इच्छा से पर स्त्री से गुप्त सम्बन्ध रखता है जिस कारण बदनामी और कलह होता है। और वृश्चिक का शुक्र स्वार्थी, कृपण, प्रवासी, ऋणी होता है, ३२ वर्षोपरि, श्रम योग आता है, यौवन में किसी कुल के सम्बन्ध से धन नाश, झगड़ा और अपकीर्ति मिलती है।

यदि शुक्र पंचमेश होकर वृष में द्वादश हो तो जातक विद्या विनय विपन्न, धार्मिक विचार, शुभ कार्य में खर्च करने वाला, दानी, किन्तु कामी, कई स्त्रियों

पर आसक्त, दो विवाह भी देखने में आते हैं किन्तु स्त्री से धन न मिलने के कारण अनबन रहती है, नौकरी में उन्नति होती है और धनु में शत्रुत्रास, पदवृद्धि में रुकावट, स्त्री से झगड़ा, चित्त अशान्त रहता है। ये सदा दो कार्यों में हाथ डालने के कारण सफलता कम पाते हैं। ये प्रायः प्रौढ़ा स्त्री से सम्बन्ध रखते हैं और धन पाते हैं।

पञ्चमेश शनि फल

शनि—जिसका शनि पंचमेश होकर कन्या का लग्न में हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, भाई, माता-पिता से नहीं बनती, प्रथम विवाह नहीं होता, यदि हो तो देर में, स्त्री की शीघ्र मृत्यु हो या फिर कलह रहे, द्विभार्या योग भी हो सकता है। ये लोग झूठ बोलने वाले चालाक धूर्त होते हैं। अपनी सिद्धि के लिए दूसरों का बुरा भी कर देते हैं। यदि शनि तुला में उच्च का हो तो जातक राज्य सेवी, मिल फर्म का पदाधिकारी, अभिमानी, माता-पिता के सुख से वंचित, धन-धान्य पूर्ण, शेष कन्या के समान फल होते हैं। तुला का शनि लग्न में ख्याति, मान-प्रतिष्ठा दिलाये बिना नहीं रहता।

जब शनि पंचमेश होकर तुला का दूसरे भाव में हो तो जातक सुशिक्षित होने पर भी प्रभावहीन होता है। ये लोग व्यापार कुशल, साहुकारा करने वाले, एहसान फरामोश, तार्किक, कायदे-कानून जानने वाले होते हैं, यह विवाह के लिए शुभ योग नहीं, सन्तान कम और दुर्बल, बीमार रहे। इनको विदेश व्यापार से लाभ होता है। जब शनि वृश्चिक का हो तो मनुष्य महत्त्वाकांक्षी, उदार, परोपकारी, देशाटनप्रिय, नीच संगति रत, प्रेम के सम्बन्ध में दुखी, निराश, चालाक, परिश्रमी, कोई बड़ा कार्य करने वाला, मातृ सुख रहित होता है।

यदि शनि पंचमेश होकर वृश्चिक का तृतीय हो तो जातक शिक्षा पाकर नौकरी, व्यापार दोनों ही कार्य करते देखे गये हैं। वे लोग स्वार्थी, दुष्ट, मित्र भ्रातृ रहित, परिश्रम, भ्रमणशील, लौह कार्य मिलादि कारखाने चलाने वाले सावधान होते हैं फिर भी लाभ सामान्य, खर्चीले, सन्तान कष्टी, देर में भाग्योदय हो, एक भाई की मृत्यु ३६ वर्ष तक करता है या फिर बन्धु कलह तो रहती ही है। जब शनि धन का हो तो शिक्षित, शान्त, न्यायी, सरकारी बड़ाधिकारी, दयालु,

घरेलू दशा का सुधारक, कार्य रत, इनका गार्हस्थ्य जीवन देर से आयु के मध्य भाग से आरम्भ होता है, इन्हें स्नायु, वायु पीड़ा रहती है।

जिसका शनि पंचमेश होकर धन का चतुर्थ हो तो जातक सुशिक्षित होकर चाहे सरकारी नौकर हो या व्यापारी, पदाधिकारी ऑफिसर या बड़ा आदमी होता है। ज्ञान-विज्ञान उपाधियों से विभूषित होकर यश कीर्ति लाभ करता है। माता-पिता से अनबन, द्विभार्या योग करता है, शत्रु दबे रहते हैं, शरीर में वायु पीड़ा रहती है। और यदि मकर का शनि हो तो मनुष्य शिक्षित होकर अपनी चालाकी से स्वार्थ, परिश्रम तथा डिप्लोमेसी से ऊँचा उठना चाहता है और बहुत सी उथल-पुथल के बाद ४२ वर्षोपरि कुछ सफलता पाता है और इसका सम्बन्ध नीच जाति से रहता है और अपनी स्त्री तथा घरेलू मामलों में दुख ही उठाना पड़ता है, कभी-कभी अविवाहित भी रह जाना पड़ता है या विमाता से दुख होता है।

जब शनि पंचमेश होकर मकर का पंचम हो तो मनुष्य शान्त, सुखी, शिक्षित, स्त्री-बच्चों का सुख कम, पत्नी को उदर पीड़ा, गर्भाशय दोष, व्यापार में विफलता होती है, स्वभाव मिलनसार प्रेमी होता है। सरकारी नौकरी में उन्नति शनैः-शनैः होती है। माता-पिता-बहनादि का भार ढोना पड़ता है, किसी न किसी रूप में कारखाने से सम्बन्ध रहता है। कुम्भ का शनि होने से मनुष्य अपनी सुशिक्षा से अनेक भाषाओं में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर यश लाभ करता है। ये स्वभाव से अविश्वसनीय तथा स्वार्थी होते हैं, इन्हें माता-पिता स्त्री-पुत्र का सुख कम या नहीं भी होता। पैतृक सम्पत्ति मिलती है जो कि दानादि या किसी और रूप से समाप्त हो जाती है। यह शनि विपत्ति के बाद उन्नति, ऐश्वर्य प्रदान करता है। सन्तान एक बड़े अन्तर के बाद होती है फिर भी प्रेम कम होता है।

यदि शनि पंचमेश होकर कुम्भ का छठे हो तो मनुष्य की शिक्षा में रुकावटें, मामा के घर को अशुभ फलदायक, भाई का उद्योग विफल रहता है, सम्पत्ति, सन्तति दोनों के लिए दुख देखना पड़ता है। इनको स्त्री अच्छी मिलती है फिर भी वृद्धावस्था में शारीरिक, मानसिक, धन सम्बन्धी कष्ट होता है। यात्रा में दुख मिलता है, बीमार रहते हैं। जब शनि मीन का हो तो मनुष्य की विद्या मध्यम रहती है। इनको उन्नति के लिए अत्यन्त संघर्ष करना पड़ता है। शत्रु दबे रहते हैं। पैतृक ऋण देना पड़ता है। सरकारी नौकरी, लोहकार्य से लाभ होता है। परो-

पकारी प्रवृत्ति होती है, इनके पैर में नुक्स होता है, ३६ से ४२ तक की आयु में उऋण होकर भ्रातृ सम्बंध दूषित बना लेते हैं।

जिसका पंचमेश शनि मीन का सप्तम हो तो उसकी शिक्षा अपूर्ण रहती है, मन्दभागी होता है, उसे माता, जमीन, वाहन सुख नहीं होता, उसे स्त्री जीवन के मध्य भाग में प्रौढ़ विचारों वाली अनुरागी मिलती है किन्तु विचार विनिमय न होने के कारण अनबन तथा बीमार रहती है। उसे वासना कम होती है, कभी-कभी मनुष्य अविवाहित भी रह जाता है, जीवन चिन्ताग्रस्त तथा उदास रहता है किन्तु मेष में शनि होने से शिक्षा पूर्ण होती है और मनुष्य पदाधिकारी होता है। वह दयालु, उदार, खर्चीला, हठीला, घमण्डी तथा क्रोधी होता है। इनके विवाह दो तीन चार तक होते देखे गये हैं।

जब पंचमेश शनि मेष का अष्टम हो तो जातक का प्रारम्भिक जीवन दुख-दाई रहता है, उसका स्वभाव हठी, देह दुर्बल, गप्पी, उदास, एकान्त प्रिय, अनेक नीच-ऊँच देखने वाला होता है, विवाह देर में होता है। प्रेम में निराश, स्त्री द्वेषी होने के कारण विवाह के पश्चात् धन की कमी होती है। व्यवसाय से जीविका चलती है। वृष राशि में शनि होने से नौकरी करनी पड़ती है, दीर्घायु होती है, स्त्री सुन्दर, गुणवान्, घर की बातें दिल में ही रखने वाली होती है। ये लोग निजी उद्योग से बढ़ते हैं। इनको अपने ही इष्ट-मित्रों, सम्बन्धियों से क्लेश तथा हानि होती है।

यदि पंचमेश शनि वृष का नवम हो तो जातक शिक्षित होकर नौकरी करता है, बुद्धि कम होती है। साहसी, उद्योगी, शत्रुरहित, भ्रातृ कष्टी होता है, इसका स्वास्थ्य दुर्बल होता है, द्वेष करता है, जब शनि मिथुन का होता है तो मनुष्य शिक्षित होता है, नौकरी या व्यापार में सफलता पाता है। पिता की सम्पत्ति का उपभोग करता है, आयु के मध्य भाग में भाग्योदय होता है, मशीन के कार्य से, विदेशी स्त्री से प्रेम कर धर्माधर्म से दूर रहते हैं।

जिसका पंचमेश शनि मिथुन का दशम हो तो पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त करता है, वे नीतिज्ञ, धन-धान्य पूर्ण होकर समाज सेवा में रत रहते हैं, कभी पूर्ण रूप से अभाग्य का सामना करना पड़ता है। माता-पिता से अनबन या सुख कम रहता है। स्त्री को प्रदर रोग, उसमें खर्च अधिक होता है,

कर्क में शनि होने पर त्याग की भावना उत्पन्न करता है, मनुष्य धर्मोपदेशक, एकान्त प्रिय, संसार से उदास रहकर, कुछ ठोस कार्य करने को सोचता है। प्रभाव कम पड़ता है। पेट में वायु विकार, यात्रा में दुर्घटना होने का भय रहता है, यह सदा अपना कार्यक्रम बदलता रहता है, स्त्री बच्चों की चिन्ता के कारण इन्हें बुढ़ापे में सुख नहीं मिलता।

जब पंचमेश शनि कर्क का एकादश हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती इसलिए कोई भी बड़ा कार्य करने में समर्थ नहीं होता, फिर भी किसी के ठगने में नहीं आता, कृपण तथा स्वार्थी होता है। इसको आयु के मध्य भाग में सुख मिलता है। बच्चों का सुख कम या नहीं होता, वायु कफ का रोग होता है। बुढ़ापा दुखमय रहता है, जब शनि सिंह का होता है तो मनुष्य चुनाव या मुकदमे लड़ने में तेज होता है और उनमें जीत का प्रतिशोध लेता है और हठ पूर्वक प्रतिज्ञा पूर्ण करता है। इसके शत्रु बहुत होते हैं। इसके विवाह में दहेज खास नहीं मिलता, द्विभार्या योग करता है। इसके साथ मनुष्यों की सहानुभूति कम होती है।

यदि पंचमेश शनि सिंह का द्वादश में हो तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त कर वकील, न्यायाधीश, नीतिज्ञ या किसी कार्य में विशेषाधिकार प्राप्त कर समाज में प्रधान पद पाकर यश प्राप्त करता है, रूढ़िवादी होते हैं। स्त्री अच्छी मिलती है, सन्तान कम होती है। एक बार धन की कमी अवश्य होती है, शत्रु दबे रहते हैं। जब कन्या में शनि हो तो जातक अधिकतर कम पढ़े-लिखे होते हैं, ये लोग संसार से विरक्त, उदास, इनके जीवन का प्रथम भाग दुख दरिद्र क्लेश से भरा रहता है। इनकी स्त्री सन्तानहीन होने के कारण दुखी रहती है। यदि शुक्र का शुभ योग प्राप्त हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर बड़ा आदमी होता है, इन्हें अपने कार्य में यश मिलता है, किन्तु प्रथम पुत्र का सन्ताप होता है, अंगहीन होने का भय रहता है।

षष्ठेश रवि फल

रवि—जिसका षष्ठेश रवि मीन का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण होने पर भी गुणवान्, साहसी, शत्रुजित, व्यापारी, सत्संगी, पित्त, खाँसी, पेचिशादी रोगों से पीड़ित रहने वाला होता है, घमण्डी, स्पष्टवक्ता होता है। यात्र प्रिय, चन्द्र से सम्बन्धित होने पर नेत्र रोगी, नौकरी में उन्नति कम, औफीसरों से भय रहता है।

जब षष्ठेश रवि उच्च या मेष का द्वितीय भाव में हो तो जातक बुद्धिमान् होता है, उसका प्रारम्भिक जीवन कष्टमय रहता है, वह स्वतन्त्र व्यवसाय, (वैद्यक, दर्जीगीरी आदि) करते हैं, ३६ वर्षोपरि उनका धन्धा खूब चलता है और वे धनिक, उदार, परोपकारी, दानी आदि समाज में प्रधान होते हैं। स्त्री से नहीं बनतो, उदर रोग से मृत्यु होती है।

यदि षष्ठेश रवि वृष का तृतीय हो तो जातक शिक्षा प्राप्त करने के बाद एक बड़ा आदमी होता है, धन का सदुपयोग करते हैं, धन-धान्य युक्त, सत्कर्मी, प्रिय-वक्ता, पराक्रमी, कामी, आवेशपूर्ण, कर्ण रोगी, वन्धु रहित या द्वेषी होते हैं।

जिसका षष्ठेश रवि मिथुन का चतुर्थ हो तो अपूर्ण शिक्षावान्, क्रोधी, सरकारी नौकर, जायदाद से रहित, माता-पिता का विरोधी, हृद्रोग से पीड़ित, गणितज्ञ, अधिकार युक्त वचन बोलने वाला, ईर्षालु, अच्छा लेखक, तार्किक होता है।

जब षष्ठेश रवि कर्क का पंचम हो तो मनुष्य विद्वान् होता है, अध्यापक, पूजापाठ, कथावार्ता, पुजारी आदि कार्य से धन कमाकर गुप्त रखने वाला, स्त्री वियोगी, माता-पिता से सुखी, यशस्वी होता है। पुत्र अधिक, कन्या कम होती है। स्वार्थी, कंजूस होता है। मित्र कम होते हैं। लेखक, सादा रहन-सहन, उच्च-विचार, सौन्दर्य प्रिय होता है।

यदि षष्ठेश रवि सिंह का छठे स्वग्रही हो तो जातक मन्दबुद्धि, घमण्डी, अनेक इच्छा वाला, शत्रुजित, अग्नि, चोर से भय, चोट खाने वाला, मामा पक्ष का नाश करने वाला, नेत्र रोगी, नौकरी में अधिकारियों से लड़ने वाला, रक्त, पित्त, ज्वर का रोगी होता है, शुभ मित्रों की सहायता से समाज में आदर पाता है।

जिसका षष्ठेश रवि कन्या का सप्तम हो तो मनुष्य शिक्षा पाकर नौकरी करता है। ३६ वर्षोपरि भाग्योदय, विवाहादि सुख होता है, इसकी स्त्री धनिक तथा बीमार होती है। पित्त रोग, ज्वर होता है। शरीर में जलन रहतो है। साहसी तथा पुत्र सुख कम रहता है या हीन होता है। स्त्री को प्रदर रोग, गर्भपात भी हो सकता है, स्त्री पर पुरुषरत रहती है।

जव षष्ठेश रवि तुला का नीच का अष्टम हो तो मनुष्य शिक्षित, शान्तिप्रिय, न्यायी, दयालु, सतर्क, वनावट रहित, साहसी, शत्रुजित, सदा रोगी, सन्तान कम, नेत्र विकार, पर कार्यरत, हिंसक, वन्धु-वान्धवों का विरोधी, पर स्त्रीरत, कामी होता है।

यदि षष्ठेश रवि वृश्चिक का नवम हो तो जातक शिक्षा प्राप्त कर कवि, लेखक तथा प्रतिभाशाली कलाकार होकर कीर्ति पाता है। काष्ठ, पाषाण, हाथी दाँतादि के व्यापार से लाभ पाता है। यात्रा में शारीरिक कष्ट होता है। पापरत, धर्मद्वेषी होता है।

जिसका षष्ठेश रवि धन का दशम हो तो मनुष्य शिक्षा प्राप्त कर गुप्तचर, पुलिस, सेनादि विभागों में क्लर्की करने वाला, अन्तिमावस्था में दुख भोगने वाला होता है, माता-पिता का विरोधी, पैतृक सम्पत्ति से रहित, शरीर कष्टी होता है, व्यापार में भी लाभ रहता है किन्तु मुकदमें जुर्माने आदि में, काफी खर्च होता है, कुलनिन्दक, परदेश में रहने वाला होता है।

जब षष्ठेश रवि मकर का एकादश हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती मनुष्य व्यापार में यश पाता है, उसे प्रथम पुत्र शोक देखना पड़ता है फिर सन्तान सुख होता है, भ्रमणशील, स्वजन विरोधी, शत्रुजित, पशु व्यापार में लाभ हो, एक बार समाज में अपमानित होता है। मन उद्विग्न तथा अनेक चिन्ताएँ लगी रहती हैं।

यदि षष्ठेश रवि कुम्भ का द्वादश हो तो जातक हँसमुख, स्वच्छन्द, शिक्षा अपूर्ण, पापरत, परस्त्रीगामी, अपयशी, उच्च जाति का शत्रु, मलिनमन, दयारहित, खर्चीला, मोहल्ले में प्रधान होता है। स्त्री बच्चों की ओर से दुखी रहता है और अपने शत्रुओं को बढ़ने नहीं देता, जीवन साधारण ही रहता है।

षष्ठेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका षष्ठेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का लग्न में हो तो मनुष्य शिक्षा कम होने पर भी विद्वान्, यशस्वी, सुन्दर, जनसाधारण में आदर का पात्र होता है, क्षीण चन्द्र होने पर लज्जायुक्त, उदास, स्वार्थी, अभिमानी, झूठा, कृपण, कामी, पर स्त्रीरत, प्रेम विवाह में तत्पर, ऋणी, अविश्वासी, मकान व्यवसाय बदलने वाले सनकी-से होते हैं।

जब षष्ठेश पूर्ण चन्द्र मीन का द्वितीय हो तो मनुष्य शिक्षित होकर पदाधिकारी, वकील, डाक्टर आदि कार्यों द्वारा शत्रुओं तक से धन कमाने वाला, यशस्वी होता है। इनका रहन-सहन, खान-पान नियमित तथा सीधा-सादा, मिलनसार होता है, विवाह एक ही होता है। क्षीण चन्द्र से शिक्षा पूर्ण नहीं होती, जातक क्लर्क, दर्जी, छोटे प्रकार की नौकरी पर गुजारा करता, जलयात्रा में कष्ट, ऋणी, अनेक योजना में एकाध में सफल होता है।

यदि षष्ठेश पूर्ण चन्द्र मेष का तीसरे हो तो मनुष्य शिक्षित, ईश्वर भक्त, शत्रुओं द्वारा उत्कर्ष पाने वाला, सैनिक, बन्धुप्रिय, कृपण, सामान्य धनिक होता है किन्तु क्षीण चन्द्र होने पर अल्प बुद्धि, आय रहित, बन्धु हीन या बन्धु द्वेषी, न्यूनभाषी, किन्तु अमिलनसार, कम हिम्मत, चंचल, आत्मविश्वास रहित, किन्तु अश्लील लेखक या कवि हो सकते हैं।

जिसका षष्ठेश पूर्ण चन्द्र वृष का चतुर्थ हो तो मनुष्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर कार्य छोड़-छोड़कर अनेक व्यवसाय करने वाला, पदाधिकारी, माता-पिता, खेती, बाग, मकानादि से लाभ पाने वाला, शत्रुओं को जीतकर लाभ करने वाला, दो विवाह करने वाला, पर स्त्री प्रेम में कुशल होता है। क्षीण चन्द्र होने पर दादलाई जायदाद नहीं मिलती, माता-पिता से अनबन या मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो जाती है। राज्य में छोटी नौकरी मिलती है, जीवन सुखी नहीं होता।

जब षष्ठेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का पंचम हो तो मनुष्य शत्रु से विद्या प्राप्त करने वाला, प्रसन्नचित्त, सन्तति से सुखी, सुशील तथा स्वच्छन्द होता है, क्षीण चन्द्र होने पर अल्पबुद्धि, विवादी, शत्रु से धोखा पाने वाला, पुत्र हीन, कन्या बहुत हों, यात्रा में कष्ट, स्वच्छन्द होता है। स्त्री जाति से नहीं बनती।

यदि षष्ठेश पूर्ण चन्द्र कर्क का छठे हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, छोटी नौकरी या छोटे व्यवसाय करने पड़ते हैं, स्त्री बच्चों का सुख कम, मित्रों की सहायता से शत्रु दबे रहें, मामा कुल से कुछ लाभ हो किन्तु क्षीण चन्द्र से यात्रा, चोर, शत्रु से हानि, जल यात्रा में जीवन संकट, निष्ठुर, आलसी, क्रोधी, पापरत रहता है।

जिसका षष्ठेश पूर्ण चन्द्र सिंह का सप्तम हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है किन्तु उन्नति की अभिलाषा बहुत होती है। ऐसा मनुष्य कायदे-कानून और वस्त्र धारण का शौकीन होता है, स्त्री कुछ तीव्र स्वभाव की होती है फिर भी पूर्ण आसक्ति होती है, छोटी नौकरी, छोटे व्यापार से जीवन यात्रा चलती है। क्षीण चन्द्र होने से जातक कामी, लम्पट, चंचल, प्रेम विवाह रत, शरीर में विकलता, यात्रा में कष्ट, स्वच्छन्द, गले में रोग और भी गुप्त रोग, प्रमेह, मधुमेह, स्वप्नदोषादि अनेक रोग होते हैं, कोई स्थिर व्यवसाय नहीं होता।

जब षष्ठेश पूर्णचन्द्र कन्या का अष्टम हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, कई गुणों से युक्त, दुर्बल देह होता है। पाप कर्म से डरनेवाला, विवाह के पश्चात् उदास रहने वाला,

कोई विशेष उन्नति न करके साधारण जीवन व्यतीत करता है। क्षीण चन्द्र राजा, शत्रु चोर से सन्तप्त, भयभीत, यात्रा में कष्ट, ऋणी, प्रवासी-माता को मारी होता है, शनि से दृष्ट हो तो अल्पायु होता है ।

यदि षष्ठेश पूर्ण चन्द्र तुला का नवम हो तो मनुष्य की शिक्षा अड़चनों के बाद पूरी होती है और वह शत्रुओं तक से धन कमाने में समर्थ होता है। स्त्री देर में विरोधी भावना की प्राप्त होती है, फिर भी घर की वात बाहर नहीं जाने देती, मनुष्य स्वतन्त्र पेशा, वकील, शिक्षकादि से अच्छा जीवन व्यतीत करता है। क्षीण चन्द्र विवाह में अनेक रुकावटें उत्पन्न कर, शान्ति नहीं होने देता, विमाता के व्यवहार से दुःख होता है। क्लर्क या छोटे व्यवसाय से गुजर होती है दुःखी रहते हैं स्वभाव, कुछ सनकी चिड़चिड़ा होता यात्रा में कष्ट होता है।

जिसका षष्ठेश पूर्ण चन्द्र दशम वृश्चिक नीच का हो तो शिक्षा पूर्ण न होने पर भी मनुष्य शिक्षित-सा प्रतीत होता है, उसे नौकरी या स्वतन्त्र व्यवसाय करना पड़ता है। माता-पिता का सुख रहता है। अर्धांगिनी होतो है, मुकदमे लगते हैं, सामान्य जीवन रहता है। यदि चन्द्र क्षीण हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। स्त्री से विरोध, पिता का ऋण देना पड़ता है, मुकदमे में हार होती है। शत्रुओं की वृद्धि, संकट, अपयश मिलता है।

जब षष्ठेश पूर्ण चन्द्र धन का एकादश हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है और वह किसी कला में पूर्ण होता है। उसी से धन तथा यश कमाता है, स्त्री, बच्चे होते हैं किन्तु उनके धन का सुख कम होता है। मातृ सुख मिलता है, जीवन साधारण अच्छा ही रहता है। किन्तु क्षीण चन्द्र से मनुष्य का निजी जीवन कुछ अच्छा नहीं चलता। वह छोटे-छोटे कार्यों से जीवन-यापन करता है। उसके वंश में कोई मनुष्य ऐसा अवश्य होता है जिससे उसे लांछन लगता है। कन्यायें अधिक होती हैं। पाप वृत्ति रहता है, मुकदमा हारता है।

यदि षष्ठेश पूर्ण चन्द्र मकर का द्वादश हो तो मनुष्य अपनी चालाकी से धन कमाता है। कृपण होता है, शत्रु पर खर्च करना पड़ता है। उसकी स्त्री से अनबन रहती है। समाज में, मोहल्ले में आदर पाता है। गुप्त चिन्ता से चिन्तित रहता है, यदि चन्द्र क्षीण हो तो स्त्री जाति ही शत्रु होती है। जलयात्रा में जीवन-

भय, भाग्य हानि, कुचाल या परस्त्री के प्रति धन खर्चना पड़ता है। इसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती। व्यवसाय में अनेक अड़चनें आती हैं, इन्हें तरल पदार्थों द्वारा लाभ होता है।

षष्ठेश भौम फल

मंगल :—जिसका मंगल षष्ठेश होकर मिथुन का लग्न में हो तो वह मनुष्य कम मिलनसार, लड़ाई-झगड़े से बचनेवाला किन्तु बचपन में खून, आंव के दस्तों का रोगी होता है। आँखें खूब दुखती हैं। यौवन में ही चश्मा लगाना पड़ता है किन्तु आपत्ति के आनेपर शत्रुओं को परास्त करनेवाला, क्रोधी, नपा-तुला सख्त बोलने वाला, प्रतिज्ञा को पूर्ण करनेवाला, मन्त्रजापी, ईश्वर-भक्त, रक्त विकारी, अर्श पीड़ित, हठी होता है। और वृश्चिक का मंगल स्वगृही लग्न में हो तो मनुष्य कृपण तथा स्वार्थी होता है, बुद्धिहीन होने पर भी रोब से कार्य लेता है। मस्तक में दर्द, नकसीर छुटती है। शरीर में घाव, रक्त विकार, रक्तचाप, अर्शादि रोग होते हैं। मुँह में टौन्सिल, कन्वरादि रोग होते, आँखें बचपन में खूब दुखती हैं छिद्रान्वेषी, इन्द्रिय लोलुप तथा अहं भावपूर्ण, पुलिस से डरनेवाले, शरीर के बड़े दिल के छोटे होते हैं। विवाह में देरी होती है।

जब षष्ठेश मंगल कर्क का दूसरे भाव में हो तो मनुष्य अपनी योग्यता से अधिक उच्चाभिलाषा रखनेवाला अपने व्यवसाय से धन एकत्रित करनेवाला, निश्चित, अलिप्त, सा होता है। शत्रुओं द्वारा हानि पाता है। जल यात्रा या तैरने में नुकसान, प्राण संकट होता है। उसकी आँख में ज्योति कम हो जाती है। मन्दाग्नि रहती है। माता की मृत्यु के पश्चात् घरेलू जीवन दुखदाई रहता है। और फिर नीच जाति की स्त्री से प्रेम करता है। यह मुख सौन्दर्य से आकर्षित न होकर स्त्री के स्तन भाग से आकर्षित होता है। नीच कर्म रत रहता है। लम्पट, कामी होता है और धन का मंगल हो तो मनुष्य उत्साही, उद्योगी, धन लोलुप होता है। इसीलिये एकदम धन पाने की इच्छा से जुआ, लाट्री, सट्टा, रेस और चौरा आदि में काफी धन लगा देता है। वह स्पष्ट वक्ता, भय रहित, यात्रा प्रिय, समाज सेवी, विवाह में धन पानेवाला, एक स्त्री के अतिरिक्त भी स्त्रियों से प्रेम करनेवाला, बुढ़ापे में धार्मिक वृत्ति का हो जाता है और सन्तान कष्टी होता है।

यदि षष्ठेश मंगल सिंह का तृतीय हो तो जातक प्रख्यात, पराक्रमी, भाइयों को भारी, उदार चित्त, राज्य से अनबन रखने वाला, मुकदमेबाज, शत्रुओं से धन पाने वाला, जायदाद के लिए झगड़ा करने वाला, समाज में प्रधान पद पाने वाला, स्त्री, पुत्र की चिन्ता वाला होता है। व्यापारी या कलापूर्ण, कार्य से जीवन-यापन करने वाला, प्रेम के मामले में निराश रहने वाला होता है। मकर का मंगल उच्च का होता है तब राज्य सम्मान पाने वाला पदाधिकारी पुलिस या सेना में होता है, छोटे भाई की मृत्यु होती है, सत्य वक्ता, अस्थिर प्रकृति होता है, इसलिए अप्रिय होता है।

जिसका षष्ठेश मंगल कन्या राशि का चतुर्थ हो तो जातक धार्मिक पठन-पाठन करने वाला, मन्त्र जापी, जमीन जायदाद-मकान बनाने वाला, स्त्री, मातृ कष्टी, सदा उनसे अनबन रखने वाला, विवाह देर में अड़चनों के बाद हो, स्त्री को गर्भपात हो, सरकारी नौकर तथा व्यापारी वर्ग दोनों ही में ये लोग पाये जाते हैं। किन्तु जब कुम्भ का मंगल हो तो वह पाप वृत्ति, खर्चीला, मन्द-बुद्धि, स्त्री को कष्ट, सन्तान से कष्ट, प्रेम के मामले में सफल, जल यात्रा में कष्ट तथा हानि, अच्छा तार्किक, स्पष्ट वक्ता और शीघ्र परिणाम पर पहुँचने वाला होता है।

जब षष्ठेश मंगल तुला का पंचम हो तो मनुष्य उत्साही, उद्योगी, शिक्षित होने पर डाक्टर, सर्जन, वैद्यादि या नौकरी कार्य से धन, यश, पद प्राप्त करता है, किसी कला में प्रवीण होता है, व्यापार में हानि होती है, स्त्री पुत्र मित्रादि सुख से रहित होता है। पित्त, कफ तथा नेत्र रोग होता है और प्रेम के सम्बन्ध में निराश रहता है, मीन का होने से मनुष्य विशेष उन्नति न करके छोटे-छोटे कार्यों से जीवन यापन करता है। इसकी इच्छा यश की होती है, विदेश यात्रा भी हो सकती है। विवाह देर में होता है। प्रेम में निराशा, अनेक रोग, तार्किक, ऋणी, हृद्रोगी, पाप रत रहता है।

यदि षष्ठेश मंगल वृश्चिक का छठे हो तो जातक की शिक्षा कम होती है, वह क्रोधी, चालाक, शत्रुदमन, दवा कैमिकल विक्रेता तथा सरकारी नौकर भी होता है। वह पर स्त्रीरत, कामी, विवाह से लाभान्वित, कृषि-कर्मी होता है। अग्नि, शस्त्र, विष प्रयोग का भय रहता है। मेष का मंगल भी वृश्चिक के समान

ही फल रखता है। मामा के वंश को भारी होता है, उसे व्यायाम, सर्कसादि के खेलों का शौक होता है। मस्तक पीड़ा, शरीर में विकलता, मन में उद्वेग रहता है।

जिसका षष्ठेश मंगल धन का सप्तम हो तो जातक उत्साही, विनोदी, सत्कर्मी, ईश्वर भक्त, देर में विवाह करने वाला, पर स्त्री रत, दो विवाह वाला, उद्योगी, धन रहित, यात्रा में कष्ट उठाने वाला, साधारण व्यक्ति होता है किन्तु जब वृष का मंगल हो तो अपनी स्त्री से बहुत प्रेम करता है, ये लोग कामी, इन्द्रिय लोलुप, धनिक स्त्री के इच्छुक, अत्यन्त क्रोधी होते हैं। उसे गुप्त शत्रु द्वारा दुःख पहुँचता है और जुआ खेलने की आदत होती है।

जब षष्ठेश मंगल मकर का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, वह साहसी, दिलेर, धन एकत्र करने वाला, पुलिस, सेना में पदाधिकारी, (डाकू हो तो टोली का प्रधान), सज्जनों का विरोधी, नीच कर्मरत, भाई-बन्धुओं से दुखी, रक्तचाप, रक्तविकार, अर्श पीड़ित, नकसीर, पित्तादि से पीड़ित होता है, उसके सन्तान नहीं रहती, पराक्रमी, पर स्त्री रत तथा उसके सम्बन्ध से धोखा खाने वाला होता है। जब मंगल मिथुन का हो तो बहादुर, कातिल, मातृ-पितृ भाई-बन्धु विरोधी, अनेक शत्रुओं से युक्त, कामी, पापरत, पित्त, प्रमेह, कफादि रोगों से युक्त, अपने पराक्रम तथा मित्र सहयोग से कार्य सिद्धि करने वाला, कामी, स्त्री युक्त होता है।

यदि षष्ठेश मंगल कुम्भ का नवम हो तो जातक पापरत, धार्मिक वृत्ति होता है। मातृ सुख नहीं मिलता, वह अन्तर्जातीय विवाह रत होता है। ये लोग अग्रसर, समाज सुधारक, क्वारे रहकर भी देखे गये हैं। द्वि भार्या योग भी रहता है। अपने गुणों तथा मिलनसार प्रकृति से शीघ्र मित्र बना लेते हैं और चुनाव जीतने वाले होते हैं। कर्क का मंगल सुशिक्षा देकर अच्छा पद या व्यापार, व्यवसाय प्रदान करता है, द्वि भार्या योग रहता है, दूसरे विवाह के बाद चित्त में शान्ति आती है, भाग्योदय होता है, भाई-बहनों की मृत्यु भी होती है। अन्तिम समय अच्छा रहता है, यात्रा में भय होता है।

जिसका षष्ठेश मंगल मीन का दशम हो वह शिक्षा प्राप्त कर नौकरी में कम उन्नति करने वाला, प्रवासी, जल यात्रा में प्राण संकट, यह थोड़ा धन थोड़ा

यश पाता है। प्रेम में निराशा, विवाह देर में होती है। शीघ्र विवाह द्विभार्या योग करता है, यह अपने गुप्त शत्रुओं से अपयश पाता है। अन्तिम समय सुखकर नहीं होता, शरीर में कष्ट, रक्तपित्त विकार, सन्तान को कष्ट होता है और जब सिंह का मंगल हो तो मनुष्य उद्योगी, पराक्रमी, सेना, पुलिस में प्रधानत्व प्राप्त करने वाला, विजयी, क्रोधी, अहंभाव पूर्ण। अधिकार युक्त वचन कहने वाला, किसी का मित्र नहीं होता, लालची, वात का पक्का होता है, माता का सुख बहुत कम, पितृ सुख कुछ होता है। उच्चाभिलाषी, शीषपीड़ा, विकल देह, अर्श रक्त विकारी, स्त्री वच्चे सब रोगी रहते हैं, धर्म कथा प्रिय होता है।

जब षष्ठेश मंगल मेष का एकादश हो तो जातक सुशिक्षा प्राप्त कर, सर्जन, वकील, जज आदि बनकर यश धन पाता है। इनको अग्नि चोर से भय रहता है। लड़ाई-झगड़े में चोट आती है, खेल-कूद प्रतियोगिता में अग्रसर रहते हैं, मुकदमे में जीतकर शत्रु को पराजित करते हैं, ये चतुर तथा कामी होते हैं। एक बार परिस्थिति बिगड़ जाने से ऋण लेना पड़ता है, सन्तान को कष्ट होता है। जब मंगल कन्या में हो तो मनुष्य निर्लज्ज होता है। वह धन यश की प्राप्ति में प्रत्येक पाप कर्म कर बैठता है। ये लोग निराशावादी होते हैं, लाभ में कठिनता पड़ती है, इसलिए उदास, विरक्त-से रहते हैं। नीच संगति में यश पाते हैं, स्त्री सन्तान सभी से सुख कम मिलता है, इसलिये जीवनान्त में भक्तिरत रहते हैं।

यदि षष्ठेश मंगल वृष का द्वादश हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, व्यवसाय में धन खर्च करके विदेश से लाभ उठाते हैं, स्त्री सुख नहीं होता, परस्त्री रत रहते हैं, इनकी स्त्री को स्त्री-जनित रोग, गर्भपातादि होते हैं, पित्त कफ अर्शादि रोग होते हैं, पिता का कर्ज भी चुकाना पड़ता है, नकसीर, आधा शीश सर दर्द रहता है। और जब मंगल तुला का होता है तो मनुष्य हिम्मती, विपत्तियों का सामना करने वाला, स्त्री रहित या स्त्री वियोग होता है। दर्द या गुदा रोग होता है। धन हीन, बन्धु विरोधी, पाप रत, कामी, अनेक रोग से युक्त, अंग पीड़ा, नेत्र पीड़ा तथा चित्त में विकलता रहती है, धन खर्च होता है।

षष्ठेश बुध फल

बुध—जिसका षष्ठेश बुध मेष का लग्न में हो तो मनुष्य पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर, अपने शत्रुओं को पराजित करने की सोचता है। वह शान्त, विनीत, शास्त्र

का ज्ञाता, बुद्धिमान्, तार्किक, सुन्दर स्त्री वाला, सबका प्रिय, धार्मिक होता है और जब बुध मकर का होता है तो वह वास्तविक धर्म का ज्ञाता, विद्वान्, तार्किक, दृढ़ विचार, धैर्यवान्, सदाचारी, स्त्री सुख से रहित, एकान्तप्रिय, समाज के लिए ठोस कार्य करने वाला, देश का सच्चा हितैषी होता है और दूर देशान्तर में यश पाता है।

जब षष्ठेश बुध वृष का दूसरे भाव में हो तो शिक्षा में अनेक अड़चनें आती हैं फिर भी शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग अच्छे लेखक, यशस्वी, कवि या कलाकार तथा साधारण धनिक होते हैं। इष्ट-मित्रों से युक्त, मिलनसार, कफ, वायु, पाण्डु रोग के रोगी, कपड़ों के शौकीन होते हैं। कुम्भ का बुध सुशिक्षा देकर मनुष्य को तार्किक, न्यायप्रिय, स्वतन्त्र विचार का बनाता है। उसको विवाह में दहेज अच्छा मिलता है, किन्तु पत्नी से विचार-विनिमय नहीं होता जिससे जीवन दुखी रहता है।

यदि षष्ठेश बुध मिथुन का तीसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी बन्धु सुख प्राप्त होता है, प्रवासी रहता है। कर्ण रोगी रहे, यात्रा में हर्ष, जय प्राप्त करता है। धार्मिक वृत्ति, परोपकारी, राज्यसेवी, तथा कुशल व्यापारी भी होता है। जब मीन का बुध हो तो वह धार्मिक, ईश्वर, गुरु भक्त, धन-धान्य पूर्ण, सुन्दर स्त्री, सुख से सुखी होता है। शरीर को कष्ट, वायु रोग, तैरने में खतरा, कर्तव्य से अधिक बातें करनेवाला, अपने को परिस्थिति के अनुसार बदल लेनेवाला, स्त्री को ठगनेवाला होता है।

जिसका षष्ठेश बुध कर्क का चतुर्थ हो तो शिक्षा पूर्ण न होने के कारण छोटी नौकरी, छोटा व्यापार होता है, फिर भी अकड़ में रहने के कारण अपने साथियों से नहीं बनती, माता-पिता से नहीं बनती, जिसके लिए उनकी सम्पत्ति नहीं मिलती, यात्रा में कष्ट, सवारी सुख नहीं मिलता, और जब मेष का बुध हो तो शिक्षा अच्छी होती है, मनुष्य को ज्ञान का घमण्ड, तथा चालाक होता है। इनका चित्त चंचल, परिश्रमी कम, क्रोध अधिक, कायदे व कानून की कमी, इन्हें स्नायु पीड़ा तथा मियादी बुखार की अक्सर शिकायत बचपन में रहती है।

जब षष्ठेश बुध सिंह का, पंचम में हो तो शिक्षा रुकावटों के बाद पूर्ण हो जाती है और वह आवेश पूर्ण प्रतियोगता का करनेवाला, सुरापी, मांसाहारी, दुर्बल

हृदय, इष्ट मित्रों से युक्त, कलाकार होता है और जीवन साधारण रहता है। सरकारी क्लर्की करते भी पाये जाते हैं। जब बुध वृष का हो तो जातक मन्द-बुद्धि, झगड़ालू, क्रोधी, वितंडावादी, अपूर्ण शिक्षित, व्यवहार कुशल, कन्या सन्तान अधिक होती है। कई कलाओं से धन कमानेवाला, इसकी स्त्री विशेष प्रकार के गुण से युक्त होने के कारण इसको लाभप्रद रहती है।

यदि षष्ठेश बुध मिथुन या कन्या का छठे भाव में हों तो मनुष्य दुर्बल देह, कलह प्रिय, शत्रुओं से पराजित, आलस्य पूर्ण, दुखी होता है, ये लोग अधिकतर अपढ़ रहते हैं। ये लोग भोजन करने के शौकीन होते हैं और स्वादिष्ट भोजन खूब खाते हैं, जिससे मन्दाग्नि, अण्डकोष वृद्धि तथा गुप्त रोग होते हैं, शत्रु भय रहता है। चरित्रहीनता, समाज में निरादर होता है। ये चंचल तथा निर्लज्ज होते हैं।

जिसका षष्ठेश बुध कर्क का सप्तम हो तो शिक्षा पूर्ण न होने के कारण क्लर्क, कम्पाउण्डरादि छोटी नौकरी होती है और स्त्री सुन्दर तथा कलहप्रिय होती है। इसका स्वभाव यात्रा प्रिय होता है, जलयात्रा या तैरने में जीवन भय रहता है। यह धन प्राप्ति के लिये किसी बूढ़ी औरत से प्रेम करता है और तुला का बुध जातक को उच्च शिक्षा देकर प्रसिद्ध वकील या राजनीतिज्ञ बनाता है और स्त्री से निराश रखता है।

जब षष्ठेश बुध सिंह का अष्टम हो तो मनुष्य अपूर्ण शिक्षित होने के कारण छोटी नौकरी, छोटे व्यवसाय करता है। क्रोधी, घमण्डी, स्त्री या साझीदार से झगड़ा रहता है जिससे मस्तिष्क तक खराब हो जाता है। कभी-कभी इसकी मृत्यु के पश्चात् इसकी लेखनी इसे यश देती है। वृश्चिक का बुध मनुष्य को अविश्वासी, स्वार्थी, निराश, चालाक, डिपलोमेट बनाता है, इसे चोरों से हानि होती है। इसको मित्र कष्ट, प्रवास, पराधीनता प्राप्त होती है।

यदि षष्ठेश बुध कन्या का नवम हो तो मनुष्य परोपकारी, धार्मिक, तीर्थ-यात्रा प्रिय, बन्धु-बान्धव युक्त, राज्य सेवी, ईश्वर भक्त, साधारण जीवन व्यतीत करनेवाला, प्रसन्नचित्त होता है और धन का बुध मनुष्य को उच्चाभिलाषी, शत्रु-जित्, कुशलकार्य कर्त्ता, उद्योग से धन कमानेवाला, विदेश यात्रा प्रिय, विदेशी

वस्तु क्रय-विक्रय से लाभ पानेवाला बनाता है। लोक विरोध पाता है। ये लोग शिक्षा, क्लर्की, ज्योतिषी, हस्तावलोकन भी अच्छा करते पाये जाते हैं।

जिसका षष्ठेश बुध तुला का दशम हो तो जातक शिक्षा पूर्ण करके राज्य पदाधिकारी, कुशल राजनीतिज्ञ, मातृ-पितृ सुख से सुखी, इष्ट मित्रों से युक्त, समाज में आदर पानेवाले, यशस्वी होते हैं शत्रुजित् होकर धन तथा नाम पाते हैं और मकर का बुध विशेष प्रकार से मनुष्य को पराक्रमशाली बनाता है इनमें न्याय तथा क्षमता अधिक होती है जिस कारण हानि भी उठाते हैं। ये लोग कुशल व्यापारी, कवि, साहित्य प्रेमी भी पाये जाते हैं जिनको पुरस्कार तथा यश प्राप्त होता है।

जब षष्ठेश बुध वृश्चिक का एकादश हो तो जातक स्वतन्त्र व्यापार करने-वाला, शेयर व्यापार से लाभ उठानेवाला, लेखक, कवि आदि होता है। सन्तान में कन्या अधिक पुत्र कठिनता तथा अभिलाषा से होता है। इनको इष्ट मित्रों का सुख कम होता है। जब बुध कुम्भ का हो तो मनुष्य अच्छी शिक्षा प्राप्तकर अध्यापक, टयूशनादि कार्य पर निर्भर रहता है, परिस्थिति सदा साधारण ही रहती है। इनका मस्तिष्क तार्किक, स्वतन्त्र होता है, जलपदार्थ से लाभ होता है, स्त्री बच्चों का सुख रहता है।

यदि षष्ठेश बुध धन का द्वादश हो तो साधारण शिक्षा प्राप्त कर जीवन यापन में लग जाता है। चोरों,शत्रुओं से भय रहता है, आय से व्यय अधिक होने के कारण ऋण लेना पड़ता है। किसी बड़े आदमी की सेवा से लाभ होता है। मीन राशि गत बुध के फल भी धन राशि जैसे हैं, इनका जीवन सामान्य, चिन्ता युक्त, धन रहित ही रहता है। जल यात्रा से हानि तथा स्त्री जाति से धोखा होता है। इनका स्वभाव अविश्वासी तथा एकान्त प्रिय होता है। शिक्षा की जिज्ञासा होने पर भी शिक्षा पूर्ण नहीं होती।

षष्ठेश गुरु फल

गुरु—जिसका षष्ठेश गुरु तुला का लग्न में हो तो वह मनुष्य सुशिक्षित, तार्किक, साहित्यिक, कलाकार, डाक्टर, वकील, न्यायाधीश, स्वाभिमानी, उच्चा-भिलाषी, दानी, ईश्वर भक्त, चतुर, मिलनसार, स्त्री बच्चों से सुखी किन्तु किसी नीच स्त्री से सम्बन्धित, द्विभार्या योग भी होता है। इसको नियमित समय पर

शारीरिक, आर्थिक संकट आते हैं किन्तु कर्क का गुरु उपर्युक्त सभी गुण दोषों के साथ अचानक, सट्टे, लाट्री, रेसादि से धन दिलवाता है। ये लोग शिक्षा कार्य या पुजारी ज्योतिषी आदि कार्य पसन्द करते हैं। कामी होते हैं। सादगी से रहते हैं। कमाते रहने पर भी धनिक नहीं होते।

जब षष्ठेश गुरु वृश्चिक का दूसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, वह चालाकी से धन कमाता है। गोद लिये जाने पर जायदाद प्राप्त होती है, परिश्रम से नहीं बनती। धन द्वारा ही इनके शत्रु हो जाते हैं। पिता तक से अच्छे सम्बन्ध नहीं रहते और वंश परम्परागत बीमारी से ग्रस्त रहते हैं। दम्भी, प्रवासी, कृशगात रहते हैं। सिंह का गुरु हो तो वह विद्यावान्, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, वन विहार रत, उदार, दानी, राज्यपदाधिकारी, इष्ट मित्रों से युक्त, समाज में आदर पाने वाला, धन तृषित होता है। शत्रुओं पर विजय पाता है और कभी-कभी निरे अपढ़ भी रह जाते हैं।

यदि षष्ठेश गुरु धन का तीसरे हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, उन्नति के लिए कई कार्य करने पड़ते हैं। क्लर्की या शिक्षक का कार्य करना पड़ता है। अनेक शत्रु होते हैं, धन की कमी रहती है। स्त्री सुशील, दहेज में धन लाती है परन्तु वह रहता नहीं। भाइयों की उन्नति नहीं होती, जीवन साधारण रहता है। कन्या का गुरु मनुष्य को बुद्धिमन्; चतुर, शिक्षित बनाता है किन्तु वह संसार में अपने को दुखी ही पाता है। इसका विवाह खास तौर का होता है। पत्नी वियोग होता है। इसे मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली, म्यादी बुखार और ऐसी ही पीड़ा रहती है। बड़ी आयु में पुत्र सुख होता है।

जिसका षष्ठेश गुरु मकर का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी वह शुभ सलाहकार तथा कुशल व्यापारी होता है। माता का सुख कम होता है। पैत्रिक सम्पत्ति मिलकर भी नहीं रहती, जलयात्रा या तैरने में प्राण संकट होता, उसके स्त्री बच्चे बीमार रहते है। गुप्त रोग होता है। मनोरथ तथा शक्ति से हीन रहता है। जब गुरु तुला का हो तो मनुष्य विद्वान् तथा प्रपंची होता है, माता से नहीं बनती, चित्त चल-विचल रहता है, मुकदमा लगता है। खर्च बहुत होता है। दत्तक पुत्र रूप में सुख मिलता है। वीर्य सम्बन्धी विकार होता है।

जब षष्ठेश गुरु कुम्भ का पंचम हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। मनुष्य राज्य सम्मान से यश पाता है। शरीर निरोग, इष्ट मित्रों से लाभ,विदेश यात्रा से सुख, तथा पुत्र से सन्ताप मिलता है। स्त्री शान्त तथा सुखदायी होती है। और जब वृश्चिक का गुरु हो तो मनुष्य को सन्तान सुख नहीं होता, स्त्री से प्रेम कम होता है। इनका भाग्योदय बड़ी आयु में होता है। डाक्टरों को यश धन दोनों ही मिलते हैं। ये उच्चाभिलाषी होते हैं किन्तु इनके कार्यों में रुकावट अवश्य होती है। अन्तिमावस्था इनको साधु जैसी होती है।

यदि षष्ठेश गुरु मीन या धन का होकर छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, वह किसी भी कार्य में विशेष उन्नति न करके क्लर्क या छोटे व्यवसाय रत रहता है। गायन, वादनादि, नाटक कला में शौक रखने वाला, गामा, शत्रुओं का विरोधी, ब्राह्मण का शत्रु, कीर्ति चाहने वाला, भाग्याधीन रहने वाला, सुरापी, द्यूत कर्म रत, प्रमेह, आँतादि रोग से ग्रसित, परस्त्री गामी, शत्रु चोरादि से भयभीत रहता है।

जिसका षष्ठेश गुरु मेष का सप्तम हो तो जातक शिक्षा पूर्ण कर, प्रोफेसर, वकील, न्यायाधीश या सरकारी उच्चपदाधिकारी, सुन्दर स्त्री वाला, इष्ट मित्र, भाई-बन्धु सुख से सुखी, शास्त्राभ्यासी, कवि या लेखक भी होता है। यह एक समय में दो कार्यों को करने की शक्ति रखता है। जब गुरु मकर में नीच का हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, उसे स्त्री सुख नहीं मिलता, इसलिए कई अविवाहित ही रह जाते हैं तो कहीं दो विवाह भी होते देखे जाते हैं। जल विहार, जल यात्रा या तैरने में जीवन को खतरा रहता है। इनके शरीर के नीचे के भाग में वायु, रक्तविकार तथा वीर्य सम्बन्धी रोग भी होते रहते हैं।

जब षष्ठेश गुरु वृष का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, मामा से शत्रुता, चोरी का भय रहता है। वह कोई बड़ा कार्य नहीं कर पाता, ऋणी रहता है। इसको बच्चों का सुख कम रहता है, स्त्री शान्त तथा धैर्यवान् होती है। कुम्भ का गुरु उद्योग तथा पराक्रम में निराशा, शिथिलता, व्यवहार में कलह, भाग्योदय में रुकावट तथा माता से मेल होने पर जायदाद सुख, अन्यथा हानि ही रहती है।

यदि षष्ठेश गुरु मिथुन का नवम हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर वकील, जज, राजनीतिज्ञ, सम्पादक, पत्रकारादि होकर जय हर्ष लाभ पाता है। धर्म कर्मरत, तीर्थ यात्रा प्रिय, परोपकारी, समाज सेवी होता है। स्त्री सुख होने पर भी पुत्र सुख नहीं होता या तो पुत्र नहीं होते हैं तो कलह और विरोध रहता है। मीन का गुरु होने पर सभी उपर्युक्त दोष और गुण रहते हैं। ये लोग शान्त, सदाचारी तथा व्यवहार कुशल होने पर भी पुत्र अभ्युदय की चिंता से चिन्तित रहने के कारण दुखी रहते हैं।

जिसका षष्ठेश गुरु कर्क का दशम हो तो उसकी शिक्षा पूर्ण होती है। वह साहित्यिक उपन्यास, नाटक, कहानी, पढ़ने-लिखने का शौकीन, सरकारी नौकर, उच्चाभिलाषी किन्तु किसी भी कार्य में पूर्ण दिलचस्पी न लेने वाला, भाग्य को दोष देने वाला होता है। भ्रातृ सुख रहित, ४२ वर्षोपरि मातृ-पितृ सुख से रहित होता है। ये लोग आस्तिक, नास्तिक, मिश्रित किसी विशेष फलेच्छा से तन्त्र मन्त्र करने वाले पाप रत रहते हैं। इन्हें स्त्री-बच्चों का सुख कम या अविवाहित ही रहते हैं। निज आय से सन्तोष नहीं होता, कई कार्य करने पर भी धन तृषित ही रहते हैं। मेष का गुरु मनुष्य को सुशिक्षित बनाकर राज्य पदाधिकार, स्त्री-पुत्र वाहनादि सुख देता है। धन-धान्य पूर्ण कर इष्ट-मित्रों से लाभ, समाज में यश, माता या पिता में से किसी एक का पूर्ण सुख देता है।

जब षष्ठेश गुरु सिंह का एकादश हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है और ये लोग फिर भी सरकारी नौकरी तथा व्यापार में अच्छी उन्नति करते हैं। इन्हें स्त्री पुत्र का पूर्ण सुख नहीं होता, द्विभार्या योग भी होता है। छोटे भाई से बनती है तो बड़े से अनबन और बड़े से बनती है तो छोटे से नहीं बनती। लोग इन्हें विद्वान् समझते हैं। ये प्राकृतिक सौन्दर्य को चाहने वाले, तप के लिए निर्जन में रहना पसन्द करते हैं और वृष का गुरु हो तो पशु व्यापार से लाभ पाने वाला, मिलन सार, सुकर्म रत, स्त्री, पुत्रों के सुख से सुखी होता है। उसको स्त्री शान्त, आज्ञाकारी तथा घर की उन्नति चाहने वाली होती है।

यदि षष्ठेश गुरु कन्या का द्वादश हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है फिर भी चालाकी से अपने सभी कार्य करता है जिससे समाज में आदर नहीं पाता। यह बनावटी शृङ्गार को चाहने वाला, मुकदमे में रुपया व्यर्थ करने

वाला, पाण्डु, वायु, कपिल रोग का रोगी होता है। इसकी स्त्री सुशील, नीच वर्ग की या फिर सरकारी नौकर या धन कमाने वाली होती है। मिथुन का गुरु साहसी कार्यों में सफलता देने वाला, व्यापारी, कायदे-कानून से चलने वाला, आवेशपूर्ण धनी होता है। यह अपनी सगी सम्बन्धिनी का प्रेमी होता है और उससे विवाह न होने पर दुखी रहता है।

षष्ठेश शुक्र फल

शुक—जिसका षष्ठेश शुक्र वृष का स्वगृही लग्न में हो तो जातक शिक्षित, कलाकार, ड्रामा, नाटक, संगीत प्रिय या व्यापारी होता है। इसकी स्त्री देखने में सुन्दर, शौकीन, सुगन्धि युक्त व्यभिचारी होती है और यह स्वयं अनेक स्त्रियों पर आसक्त-गन्धर्व-प्रेम विवाहरत, हंसमुख, मधुर वाणी होता है। ये लोग लड़की के छाटने में ही विवाह में देर कर देते हैं। जब शुक्र धन का हो तो मनुष्य अपनी कला कृतियों द्वारा धन, यश, तथा कीर्ति पाता है। इसको सदा दुहरी आय रहती है। इसको किसी विधवा का धन प्राप्त होता है। कविता साहित्य से प्रेम करने वाला, स्त्री बच्चों से सुखी रहता है।

जब षष्ठेश शुक्र मिथुन का हो तो जातक बुद्धिमान् होता है किन्तु विद्यापूर्ण नहीं होती, इसको खेती, व्यापार, नौकरी में से किसी दो से लाभ होता है। वाणी मधुर, खाने-पीने के शौकीन, सन्तान कम, पुत्र चिन्ता रहती है। लोग इन्द्रिय लोलुप अधिक होते हैं। समय-समय पर आपत्तियाँ आती हैं। साधारण जीवन अच्छा चलता है। बीमारी में धन व्यय होता है। जब मकर में शुक्र हो तो नौकरी से आजीविका होती है। पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती, ये लोग अपने से बड़ी अवस्था वाली स्त्री को चाहते हैं। धन के लिए उसके प्रभाव में रहते हैं और लम्पट होते हैं। प्रमेहादि रोग होते हैं।

यदि षष्ठेश शुक्र कर्क का तीसरे भाव में हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, मनुष्य का चरित्र दूषित होता है और उसे इन्द्रिय लोलुपता के कारण अपयश मिलता है। शत्रुओं द्वारा पराक्रम क्षीण होता है। चंचल मन होने से स्थिरता नहीं मिलती, यह गुप्त-प्रेमी; गुप्त-रोगी होता है। स्त्री से विचार विनिमय कम होता है। इसे स्त्रियों के कारण ही रोग होते हैं। कुम्भ का शुक्र हो तो स्त्री जाति

के सम्बन्ध में आने पर शनैः शनैः भाग्योदय होता है। इसका अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रहता है। जल क्रीड़ा, जल यात्रा से जीवन संकट होता है। धार्मिक प्रकृति के होते हुए भी धर्म नहीं कर पाते, कुछ आलसी होते हैं।

जिसका षष्ठेश शुक्र सिंह का चतुर्थ हो तो जातक शिक्षित, दर्शनीय, कलाकार, मातृ सुख रहित, भूमि, मकानदि से सुखी, पितृ द्वेषी, स्त्री जाति को प्रिय, सम्पन्न घर में विवाहित, सबका प्रिय, साहसी कार्य से लाभ पाने वाला, सन्तान की ओर से चिन्तित रहता है और मीन का शुक्र हो तो जातक पितृ सुख से रहित, दो विवाह वाला, पैतृक सम्पति से वंचित, निज पुरुषार्थ से धन, मकान बनाने वाला, अधिकारी जनों से मिलाप रखने वाला, जल क्रीड़ारत, मातृ कुल को घातक होता है। इनकी विवाह के बाद उन्नति होती है।

जब षष्ठेश शुक्र कन्या (नीच) का पंचम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। आगे पढ़ने की इच्छा बनी रहती है। ये अपनी उन्नति के लिए एक साथ कई कार्य करते हैं। कवि, लेखकादि बनने का प्रयत्न करते हैं, यदि न हुए तो साहित्यिक या कवि सम्मेलन पर रचना करने के शौकीन होते हैं। इनकी स्त्री, सन्तान आज्ञाकारी होती है। ये स्त्री वार्ता में चतुर तथा शौकीन होते हैं। जब मेष का शुक्र हो तो समझदारी की बात करने वाले कलाकार, नाटकी, शत्रु से विद्या पाने वाले, प्रेम में अधीर तथा अशान्त, बहु कन्यावान, पर स्त्रीरत, गुप्त रोगी, मुकदमेबाज होते हैं।

यदि षष्ठेश शुक्र तुला, वृष का स्वगृही, रिपु भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। छोटे-छोटे धन्धों से जीवन-यापन करना पड़ता है। अपनी स्त्री सुन्दर तथा कलह प्रिय, झगड़ालू होती है। पर स्त्री आसक्ति होने पर बदनामी होती है। व्यापारी वर्ग तथा स्त्रियों से नहीं बनती फिर भी काम वासना प्रबल होने के कारण पर स्त्रियों से वार्ता तथा प्रेमरत रहते हैं। इनका गुप्त सम्बन्ध होता है। प्रमेह, वीर्यपात, पेशाब की गुप्त बीमारियाँ होती हैं। षष्ठ का शुक्र विवाह नहीं होने देता यदि विवाह हुआ तो पत्नी पतित मिलती है। इनकी व्यभिचारी प्रकृति होती है। उसी से गुप्त रोग होते हैं।

जिसका षष्ठेश शुक्र वृश्चिक का सप्तम हो तो जातक साधारण शिक्षा प्राप्त कर, अधिकतर व्यापार में उन्नति करते हैं। इनकी स्त्री पुरुषाकार होती है जो कि

कलहकारी होती है। ऐसे मनुष्य का भाग्योदय दूसरे विवाह के बाद होता है। ये लोग निन्द्य कार्य करने वाले, अति कामी, अन्य स्त्रीरत जिसके कारण, धन, मान हानि होती है। ये प्रेम विवाहरत, गुप्त रोगी होते हैं। मिथुन का शुक्र जातक को श्रृंगारी कवि, लेखक, नाटचकारादि कलापूर्ण बनाता है। ये लोग प्रियवादी, मिष्ठान्न प्रिय, अत्यधिक इन्द्रिय लोलुप होते हैं। इन्हें वीर्य सम्बन्धी रोग तथा पेशाब में शूगर जाती है।

जब षष्ठेश शुक्र धन का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती इसलिये पदवृद्धि में सदा रुकावटें आती हैं। धन लाभ कम होता है। जीवन साधारण रहता है। विवाह में देरी होती है। स्त्री जाति रुकावट डालती है। उससे कम बनती है। ये विधवा विवाह या बड़ी अवस्था की स्त्री को चाहते हैं। कलाकार होते हैं। कर्क में शुक्र चंचल चित्त, व्यापारी, कोकशास्त्र का ज्ञाता, प्रियवक्ता, दर्शनीय, सुरापी होता है। इसे अनेक स्त्री संसर्ग से अनेक रोग होते हैं। ये लोग विवाह धन के लिए करते हैं। कभी अविवाहित भी रह जाते हैं। इसकी सास ससुर से नहीं बनती।

यदि षष्ठेश शुक्र मकर का नवम हो तो मनुष्य की शिक्षा का उपभोग नहीं होता, इसलिये व्यापार करना पड़ता है। जिसके लिये पूँजी ससुराल से मिलती है। विवाह के बाद जीवन सुखी होता है, किन्तु स्त्री से अनबन रहती है। ये लोग कृपण तथा स्वार्थी होते हैं भाइयों से नहीं बनती, जलक्रीड़ा, जलयात्रा से जीवनभय रहता है। स्त्री से दब कर रहना पड़ता है। सिंह में शुक्र होने से शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग साहित्यिक कवि, लेखक, प्रकृति सौंदर्य के उपासक, सुन्दर स्त्री वाले, पुत्रों से कन्या अधिक होती है। ये कलापूर्ण कार्यों, लेखों से धन तथा यश दोनों ही पाते हैं। यात्रा में सुख मिलता है, ये गायन, वादन युक्त दर्शनीय होने के कारण स्त्रियों को लुभा लेते हैं और वे स्त्रियों के साथ भाग जाते हैं। अपयश भी पाते हैं।

जिसका षष्ठेश शुक्र कुम्भ का दशम हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। मनुष्य नौकरी तथा दूसरे व्यवसाय आसानी से कर सकता है। ज्योतिष, गणित, दर्जीगीरी गायन वादनादि कार्य में यश पाता है। इनका सम्बन्ध कई स्त्रियों से होता है जिनसे धन भी मिलता है, इसकी स्त्री इमानदार, आज्ञाकारी होती है। एक समय आत

है जब इसकी सभी इच्छायें पूर्ण होती हैं। कन्या का शुक्र नौकरी या व्यापार में उन्नति देता है। ये लोग व्यवहार कुशल, मिलनसार होते हैं। ये लोग नीच जाति की स्त्रियों से सम्बन्धित होते हैं और प्रेम वार्ता में चतुर होने के कारण अन्य स्त्रियों को फँसा लेते हैं और गुप्त रोग के कारण कष्ट पाते हैं।

जब षष्ठेश शुक्र मीन का एकादश हो तो जातक व्यापार में धन कमाकर चोरों द्वारा हरण कराने वाला, विदेश यात्रा प्रिय, जलयात्रा, जलक्रीड़ा में हानि पाने वाला, पशु व्यापार से लाभान्वित, स्त्री, बच्चों से सुखी, कन्यायें अधिक होती हैं। पर स्त्री प्रेम रत, मित्रों के प्रति उदासीन, द्विभार्या योग भी होता है, किन्तु तुला का शुक्र मनुष्य को शत्रु से भयभीत रखता है, उसका रहन-सहन सीधा-सादा, सुगन्ध युक्त होता है, कलापूर्ण होता है। उसका विवाह के बाद भाग्योदय होता है और प्रत्येक खुशी मिलती है, किन्तु उसका चरित्र दूषित होता है।

यदि षष्ठेश शुक्र मेष का द्वादश हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। वह व्यापार और धन्धे द्वारा कार्य चलाता है, शत्रुओं, चोरों, अग्नि से भय रहता है, अंग पीड़ा, नेत्र पीड़ा होती है। स्त्री झगड़ालू मिलती है, इसलिए घरेलू जीवन दुखी रहता है। किसी-किसी का विवाह नहीं होता तो वह वैश्यागामी, परस्त्री से गुप्त सम्बन्ध रखता है, अपयश, लड़ाई-झगड़े रखता है। वृश्चिक राशि का शुक्र हो तो जातक न्यून धन वाला, पाप रत, अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी कुलटा से सम्बन्ध रखकर झगड़ा मोल लेने वाला, धन मान हानि उठाने वाला, शत्रुओं पर मुकदमे में खर्च करने वाला, सदा ऋणी, प्रवासी होता है।

षष्ठेश शनि फल

शनि—जिसका षष्ठेश शनि, सिंह का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। ये लोग सरकारी कर्मचारी होते हैं। निजी उद्योग से उन्नति धीरे-धीरे करते हैं। इनकी अधिकारी वर्ग तथा पिता से नहीं बनती, स्वतन्त्र तथा स्पष्टवक्ता होते हैं, कभी उदास तो कभी बहुत बोलते हैं। रंग कृष्ण, शब्द ध्वनि तीव्र, गम्भीर, बुद्धिमान्, तेज, गुप्त शत्रुयुक्त, कभी दयालु तो कभी कठोर दिखाई देते हैं। प्रथम तो विवाह नहीं होता, दो विवाह तक भी होते हैं किन्तु स्त्री बच्चों का सुख कम होता है। वे या तो स्वयं बीमार रहते हैं या उनकी स्त्री बीमार रहती

है। ये दम्भी तथा स्त्री द्वेषी होते हैं। कन्या के शनि का फल बहुत कुछ सिंह के समान ही है। कभी-कभी ये लोग बड़ी मिलों तथा फर्मों के मैनेजर होते हैं जो कि सामाजिक नहीं होते, इन्हें वात, कफ, मूत्र सम्बन्धी रोग रहते हैं। इनका सम्बन्ध नीच वर्ग की स्त्रियों से रहता है।

जब षष्ठेश शनि कन्या का द्वितीय हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। बड़े परिश्रम से जीवन यापन करना पड़ता है। दादलाई जायदाद का सुख नहीं होता। विवाह के बाद भी गृहस्थी से उदासीन रहते हैं। हठी, प्रतिशोधपूर्ण भावना रखते हैं, समाज में यश पाते हैं, निश्चिन्त से रहते हैं। मातृ सुख कम होता है। जीवन में किसी वाहन दुर्घटना से चोट अवश्य लगती है किन्तु तुला या उच्च का शनि उच्च शिक्षा देता है फिर भी उससे लाभ न उठाकर जातक साहूकारा वृत्ति से खाता है या फिर वकील, डाक्टरादि होकर पूर्ण लाभ उठाता है। विवाह देर में होता है, बच्चों का सुख कम होता है, वे बीमार रहते हैं। किसी-किसी के दो विवाह भी होते हैं। धन हो जाने पर भी उपकारी प्रवृत्ति नहीं होती।

यदि षष्ठेश शनि, तुला के तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है जिसका उपभोग कम होता है, नौकरी या कारखाना चलाते हैं। विवाह के बाद भाग्य मन्द होता है। मामा तथा बच्चे कम होते हैं। स्त्री या ससुराल वालों से अनबन रहती है। कृपण, स्वार्थी, अहंभावना युक्त होते हैं। भ्रातृ मारक योग होता है। इष्ट-मित्रों से बचकर रहना चाहते हैं। वृश्चिक का शनि मनुष्य को शिक्षा कम देता है। ये लोग निर्दयी, पापवृत्ति, दूसरों की व्यर्थहानि करने की प्रवृत्ति इनमें पाई जाती है। इतने तीव्र दृष्टि कि धोखे में नहीं आते, मित्रों से दूर, नीच संगतिरत, शत्रुजित्, विष, शस्त्र, अग्नि, चोर से भय होता है। प्रेम में विफलता, बच्चों से अनबन, निज पराक्रम से उन्नति करने वाले होते हैं।

जिसका षष्ठेश शनि, वृश्चिक का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ऐसे मनुष्य, बैरिस्टर, वकील, डाक्टर, न्यायाधीश, क्लर्क, सरकारी नौकरी में होते हैं। इनकी व्यापारिक इच्छा होते हुए भी व्यापार नहीं हो पाता। शत्रु इनके दबे रहते हैं, पिता से अनबन तथा माता स्वाँस रोगी होती है। विवाह नहीं होता, हुआ तो स्त्री बच्चों से नहीं बनती, भाई की देख माल करनी पड़ती

है। शरीर में वायु रोग रहता है,शब्द ध्वनि गंभीर(भारी) होती है। धन का शनि, सरकारी नौकरी में यश, पदवृद्धि करता है। ये लोग उच्चाभिलाषी, शत्रुजित् दो विवाह करने वाले, उदार, दानी, उपकारी होते हैं। जीवन साधारण अच्छा रहता है।

जब षष्ठेश शनि धन का पंचम हो तो विद्यापूर्ण, सरकारी नौकरी में प्रगति, शरीर पुष्ट, मनुष्य उदार, परोपकारी, हंसमुख, स्त्री-बच्चों, माता, पिता, बहन, भाई से सुखी, इष्टमित्रों से दूर रहता है। सदा दो कार्यों से आय करता है। स्त्री को पेट में वायु रोग हो। प्रशंसा, खिला-पिलाकर अपना कार्य बनाते हैं। मकर में आलसी, गप्पें लड़ाने वाले, कम शिक्षावान् होते हैं। स्वतन्त्र कार्य व्यापारादि करते हैं। स्त्री बच्चों का सुख कम मिलता है। पूर्वजों की सम्पत्ति का सुख कम होता है। चतुरता से शत्रुओं से विद्या-धन लाभ उठाते हैं।

यदि षष्ठेश शनि मकर या कुम्भ का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, उसे रुकावटों के कारण पढ़ाई की इच्छा रहते हुए भी छोड़नी पड़ती है। ये अपने व्यवसाय, वैद्यक, कम्पाउंडरी, डाक्ट्री आदि में यश पाते हैं। अहंकारी होते हैं। मातृकुल को भारी होते हैं। खेती, पशुपालन का सुख लेते हैं। लोगों की धारणा इनके प्रतिकूल रहती है और ये चालाकी से बढ़ना चाहते हैं। ईश्वरवादी, नीच जाति की स्त्री से प्रेम रखते हैं। विवाह नहीं करते, तार्किक, अपनी बात को बड़ा करने वाले, शत्रुजित होते हैं। जब विवाह होता है तो किसी बड़े घर से होता है। मन की एकाग्रता योग नाटकादि, कर्मों के लिए करता है। प्रभाव बढ़ाना चाहता है। छोटे भाई की प्रगति में बाधक रहता है। अन्तिम समय में उसे स्वयं धन कष्ट होता है। वात, स्वाँस, प्रमेहादि रोग होते हैं।

जिसका षष्ठेश शनि कुम्भ का सप्तम हो तो शिक्षा पूर्ण रहती है। ये लोग कायदे-कानून के जानने वाले, वकीलादि व्यवसाय में धन और यश कमाते हैं। इनकी स्त्री संकुचित विचार, स्वार्थी, झगड़ालू, कामासक्त होती है। दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय होता है,फिर भी जीवन-सुख नहीं मिलता, ये लोग व्यसनी होते हैं किन्तु मीन का शनि हो तो जातक शिक्षित, विनीत, व्यवहार कुशल, उपकारी, एक ही स्त्री से विवाह तथा प्रेम करनेवाला होता है। उसकी स्त्री भी

सुशील, आपत्ति समय साथ देनेवाली, वासना रहित, पति को वृद्धि को चाहनेवाली रोबीली होतो हैं।

जब षष्ठेश शनि मीन का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। छोटी-मोटी नौकरी पर निर्भर रहना पड़ता है। उसका घरेलू जीवन प्रारम्भ में दुखदायी, ४२ वर्षोपरि सुखदाई होता है। ऐसे मनुष्य उदास, संग्रहणी रोग से पीड़ित रहते हैं। इष्ट मित्रों, ऑफीसरों से न बनने के कारण उन्नति नहीं होती। स्त्री बच्चों का सुख नहीं होता, मनुष्य दीर्घायु होता है। मेष में शनि स्वतन्त्र व्यवसाय करानेवाला, सन्तति सुख से रहित करता है। पित्त-वात से इसे कष्ट होता है। गठिया होती है। बन्धु-बान्धवों से अनबन रहती है। दीर्घायु होती है। विवाह के बाद धन संकट आता है।

यदि षष्ठेश शनि मेष का नवम हो तो शिक्षा पूर्ण होती है और जातक को आयु के मध्य भाग तक उन्नति के पथ पर अनेक अड़चनों का सामना करके, उत्तरार्ध में मुख मिलता है। उसे वायु पित्त का रोग होता है। व्यापार में हानि रहती है। सम्पत्ति के लिये भाइयों में झगड़ा होता है। यात्रा में संकट, धर्म भीरु, दो विवाह करनेवाले, प्रेम सम्बन्ध में निराश रहते हैं। ये लोग स्वयं परिश्रम से बड़े होते हैं। वृष का शनि मनुष्य को परिश्रम द्वारा अपनी स्थिति को संभालने योग्य बनाता है। यह इष्ट मित्रों, बन्धु-बान्धवों से दुख पाता है। अत्यधिक कामी होने के कारण स्वास्थ्य खराव रहता है, विदेश यात्रा में, विदेश युवती से विवाह करते हैं।

जिसका षष्ठेश शनि वृष का दशम हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति, स्वाध्याय प्रिय, पण्डित, पुजारी, ज्योतिषादि कार्य करनेवाला, कवि या लेखक भी होता है। अधिकतर निर्धन ही रहता है। नौकरी में अधिकारी वर्ग से झगड़ा रहने के कारण उन्नति नहीं होती, नीच वर्ग में मान होता है। वैद्यक भी चलती है। स्त्री माता-पिता का सुख कम होता है। खर्च अधिक होने से ऋणी रहते हैं। मिथुन का शनि कीर्ति देता है, किन्तु कष्ट बहुत होते हैं। नौकरी करनी पड़ती है, ये उदास रहते हैं। इसके इष्ट मित्र द्वेषी होते हैं। इसको स्वजनों से ही अभाग्य का सामना करना पड़ता है।

जब षष्ठेश शनि मिथुन का एकादश हो तो जातक बहुत ही चतुर, चालाक और चुस्त होता है, इसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती। यह लोहे के व्यापार में लाभ पाता है। और बदला लेने की भावना से पूर्ण कृपण, सन्तान रहित या सन्तान सुख से हीन होता है। मुकदमा जीतने वाला, वात रोगी, बेपरवाह, हरेक विषय में तीव्र दृष्टि रखने वाला, काइँया होता है किन्तु व्यवहार सत्यपूर्ण होता है। कर्क का शनि हो तो शत्रु चोरी से हानि उठाने वाला, अपूर्ण शिक्षा, पेट रोगी, यात्रा में कष्ट, सदा परिवर्तन शील, स्त्री बच्चों से सुख कम, उद्योग में सफलता कम मिलती है। इसको जीवनान्त समय कष्ट होता है। नेत्र रोगी, शरीर में विकलता होती है।

यदि षष्ठेश शनि कर्क का द्वादश हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये कुशाग्र बुद्धि होने के कारण नीति निपुण किसी विषय के प्रवीण होते हैं। इनके इष्ट-मित्र द्वेषी होते हैं, ये रूढ़िवादी, संयमी, राजनीति में जेल तक हो जाती है। इनकी स्त्री सुन्दर न होकर चतुर होती है, घरेलू कार्यों में दक्ष होती है। ये लोग समाज सेवक होते हैं, लक्ष्मी इनकी स्थिर नहीं रहती, कभी धनवान्, तो कभी निर्धन रहते हैं। विदेश यात्रा में कष्ट होता है, मुकदमा लगता है। जब सिंह का शनि हो तो पिता से पुत्र की नहीं बनती फिर भी शिक्षा पूर्ण होती है। प्रधान पद पाते हैं, वकील बनकर राजनैतिक क्षेत्र में यश पाते हैं। इनकी स्त्री का स्वभाव कुछ क्रोधी होता है। घरेलू जीवन अशान्त रहता है। इनकी दृष्टि मन्द होती है। ये लोग संयम पूर्ण करने के लिए अपनी अन्तिम अवस्था में एकान्त सेवन के निमित्त जंगल में निवास, गंगा किनारे रहने की इच्छा रखते हैं।

सप्तमेश सूर्य फल

सूर्य—जिसका सप्तमेश सूर्य कुम्भ का लग्न में हो तो मनुष्य स्वतन्त्र विचार, दयालु, उच्चाभिलाषी, विलासी, पित्त-रोगी, कमजोर दृष्टि, यात्राप्रिय, क्रोधी, इष्ट-मित्रों से युक्त, ईमानदार, तन्त्र-मन्त्र पर खोज करने वाला, समय-समय पर स्त्री से झगड़ा करने वाला तथा रोगी स्त्री से युक्तहोता है। स्त्री पति-व्रता, किन्तु यह स्वयं पर-स्त्रीरत होता है। सुन्दर किन्तु विकल होता है।

जब सप्तमेश सूर्य मीन का द्वितीयभाव में हो तो शिक्षा अच्छी होती है, सरकारी नौकरी की अपेक्षा प्राइवेट नौकरी में अच्छा धन मिलता है, उसके हाथ

पैरों में अग्निदाह रहती है, शरीर विकल रहता है तथा दुर्बल होता है। उसको स्त्री से लाभ होता है। कुटुम्ब से कलह, खर्च अधिक, स्त्री से अनबन रहे, स्त्री स्वाभिमानी हो। स्वयं को रक्तदोष, कभी-कभी धन-कष्ट भी होता है।

यदि सप्तमेश सूर्य मेष या उच्च का तृतीय हो तो जातक पराक्रमी, सरकारी नौकर, भ्रातृकष्टी या मारक, भाग्योदय देर में हो। उपकारी, कामी, पर स्त्री-प्रिय, उसकी स्त्री पतिव्रता नहीं होती। पुत्र-प्राप्ति में कठिनता रहे। रिश्वती होता है। गर्वयुक्त हो। दुर्बल विचार, आलसी, वातूनी तथा कलहप्रिय होता है। इसके कान में रोग होता है।

जिसका सप्तमेश सूर्य वृष का चतुर्थ हो तो जातक साक्षर होता है। सरकारी नौकरी करता है। माता बीमार या माता-पिता से नहीं बनती, प्रथम स्त्री नहीं होती, यदि विवाह हो तो अनबन रहती है। हृदयरोगी होता है। अपनी जायदाद बनाने में विलम्ब ही होता है। पशुपालन, कृषि करने में मन लगता है किन्तु अवसर कम मिलता है। भीरु प्रकृति होता है।

जब सप्तमेश सूर्य मिथुन का पंचम हो तो जातक सुशिक्षित होकर स्वतन्त्र व्यवसाय या नौकरी करता है और समय आने पर इष्ट-मित्रों में कीर्ति पाता है। व्यवहार कुशल, सन्तान कम, स्त्री बीमार रहती है। वह गर्व युक्त, परोपकारी होता है। धार्मिक तथा विद्या-प्रेमी होता है। वायदे का पूरा नहीं होता।

यदि सप्तमेश सूर्य कर्क का छठे बैठा हो तो मनुष्य की शिक्षा कम होती है। ये लोग छोटी नौकरी या सेवा कार्य अच्छा करते हैं। मधुरभाषी होने के कारण अपना कार्य सहज बना लेते हैं। स्त्री के प्रति अविश्वास रखते हैं। मन्दाग्नि होती है, बुढ़ापे में खाना नहीं पचता, मामा तथा नाना के लिये भारी होते हैं। स्वयं रोगी रहते हैं।

जिसका सप्तमेश सूर्य सिंह का स्वगृही सप्तम हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है। ये नौकरी न चाहकर स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं। उपकारी तथा धोखे में आनेवाले होते हैं। स्त्री नहीं जीती। यदि बड़ी आयु में विवाह हो तो स्त्री जीती है किन्तु अनबन रहती है। लम्पट, वायु-पित्त रोगी, मन उद्विग्न रहता है।

जब सप्तमेश सूर्य कन्या का अष्टम हो तो शिक्षा कम और साहसी होता है। पुलिस या सेना में नौकरी करता है। वैश्यागामी होता है। रोगी तथा विवाह

रहित होता है। यदि विवाह हो तो स्त्री से प्रथम मृत्यु होती है। रक्त विकार, पित्तरोग हो। जीवन शुभ नहीं रहता।

यदि सप्तमेश सूर्य तुला नीच का नवम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। इसलिये वह बड़ा व्यक्ति नहीं हो सकता। भाई-बन्धुओं से इसकी नहीं बनती। धर्म में रुचि कम और यात्रा में हानि होती है। स्त्री नीच या अन्त-र्जातीय होती है और उसी से भाग्योदय होता है। लेखक, साहित्यिक, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशक का कार्य अच्छा चलाता है।

जिसका सप्तमेश सूर्य वृश्चिक का दशम हो तो मनुष्य शिक्षित तथा साहसी होता है। सेना या पुलिस में नौकरी करता, शूरता के लिए इनाम पाता है। सर्जन एवं जर्राह होकर नाम तथा धन पाता है। पिता-माता से कलह रहती है। पर स्त्री रत रहते हैं। इसलिए स्त्री से नहीं बनती। स्वाभिमान की मात्रा अधिक होने से जीवन में कई बार उथल-पुथल देखते हैं। क्रोधी होते हैं।

जब सप्तमेश सूर्य धन का एकादश हो तो मनुष्य मध्यम शिक्षा वाला, स्वतन्त्र व्यवसायी होता है। सुन्दर स्त्री वाला तथा स्त्री से धन पाने वाला, प्रथम पुत्र का सन्ताप देखने वाला, विद्या प्रेमी, परोपकारी, दन्तरोगी होता है। पित्त, रक्त-विकारी, धर्म-कर्म रत, तीर्थ यात्रा प्रिय, बड़े भाई का द्वेषी होता है।

यदि सप्तमेश सूर्य मकर का द्वादश हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। व्यापार करता है। कृपण होता है। जल से भय रहता है। अपने इष्ट प्राप्ति तक शान्त रहता है। उसकी स्त्री खर्चीली एवं उपकारी होती है। उसे शत्रुओं से कष्ट मिलता है। शरीर में कष्ट, नेत्र में पीड़ा, रक्त में विकार, कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है।

सप्तमेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका सप्तमेश पूर्ण चन्द्र मकर का लग्न में हो तो जातक सुशिक्षित तथा विद्वान् होते हैं। किन्तु लज्जा भाव अधिक होने के कारण दूसरों के सम्मुख खुलकर नहीं बोल सकते। ये लोग संगीत प्रिय, कामी, आवेश पूर्ण होते हैं। ये प्रेम विवाह चाहने वाले, विवाह के बाद अप्रसन्न ही रहते हैं। जल यात्रा में संकट होता है। दर्शनीय होने के कारण लड़कियों को शीघ्र आकर्षित कर लेते

हैं। क्षीण चन्द्र मनुष्य को निरुत्साही, चंचल, दुर्बल, धनहीन, शरीर को कष्ट देता है। नजला, जुकाम रहता है। प्रकृति सनकी होती है। गुप्त रोग से सदैव चिन्तित रहते हैं। नीच स्त्री से गुप्त सम्बन्ध रखते हैं।

जब सप्तमेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का द्वितीय हो तो जातक सुशिक्षित होकर स्वतन्त्र तथा नौकरी दोनों ही कार्यों में प्रविष्ट होते हैं। डाक्टर, वकीलादि, क्लर्क, ओफीसरादि होकर धन तथा यश पाते हैं। इनकी बुद्धि तीव्र और वाणी मधुर होती है। स्त्री जाति से धन पाते हैं। इष्ट मित्रों से प्रसन्न रहते हैं। जल यात्रा या जल वस्तुओं से लाभ करते हैं। स्त्री सुशील तथा सुन्दर होती है। बच्चों का सुख तथा सुयश मिलता है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो मनुष्य आलसी, कुबुद्धि, पापरत, ऋणी होता है। स्त्री पुत्रों का सुख कम, जलोदर, अण्डकोष वृद्धि, वात, कफ, नजले का रोग होता है। यह स्वयं पर स्त्रीरत तथा इसकी स्त्री पर-पुरुषरत होती है।

यदि सप्तमेश पूर्ण चन्द्र मीन का तृतीय हो तो जातक सुशिक्षित तथा कलाकार होता है। जिससे धन, यश प्राप्त करता है। जल यात्रा से लाभ पाता है। बुद्धि तेज होने के कारण अपनी योजनाओं में सफल होता है। किसी स्त्री के सम्बन्ध से पराक्रम चमकता है। भ्रातृ सुख कम, भगिनी सुख अधिक होता है। ये सम्पादकीय कार्य, साहित्यिक या पुस्तक, पेपर कार्य में अच्छी सफलता पाते हैं। क्षीण चन्द्र होने पर दुर्बल हृदय और कर्ण रोगी होता है। योजनाएँ सफल नहीं होतीं। इसलिये धोखा या छल भी करना पड़ता है। इनकी प्रथम स्त्री नहीं जीती। दूसरी से कुछ सुख होता है। इनकी जीवन यात्रा साधारण रहती है। जिसे निर्धन नहीं कहा जा सकता।

जिसका सप्तमेश पूर्ण चन्द्र मेष का चतुर्थ हो तो मनुष्य शिक्षित तथा उच्चाभिलाषी होता है। पैतृक सम्पत्ति का त्याग करके स्वयं नौकरी या व्यापार से जायदाद बनानी पड़ती है। मातृ सुख अच्छा रहता है। प्रकृति सौन्दर्य से तथा वन पशुओं से प्रेम रहता है। कृषि व्यवसाय से लाभ होता है। क्षीण चन्द्र के होने पर माता से अनबन, वाहन से कष्ट, इष्ट-मित्रों से रहित, एकान्तसेवी, गुप्त कामी, तन्त्र-मन्त्र द्वारा सफलता की कामना वाला तथा स्त्री-पुत्र सुख से वंचित होता है।

जब सप्तमेश पूर्ण चन्द्र वृष उच्च का पंचम हो तो अधिकतर मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक उपाधियों से विभूषित होते हैं। स्वतन्त्र व्यवसाय तथा सरकारी पदाधिकार प्राप्त कर सुयश प्राप्त करते हैं। ये दयालु, परोपकारी, उच्चाभिलाषी तथा अपनी योजनाओं में सफल होते हैं। शिक्षा कार्य भी अति उत्तमता से करते हैं। कामी होते हैं। स्त्री बच्चों का सुख प्राप्त होता है। धन-धान्य पूर्ण होते हैं। इष्ट-मित्रों से युक्त, कवि तथा लेखक भी होते देखे गये हैं। क्षीण चन्द्र के होने पर शिक्षा चाहे कम न भी हो तो भी ये यश नहीं पाते तथा प्रेम विवाह के कारण अपयश पाते हैं। इनको प्रमेहादि रोग होते हैं। पुत्र सुख कम तथा कन्या अधिक होती हैं। ये नीच स्त्री में रत, पथभ्रष्ट होते हैं।

यदि सप्तमेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का षष्ठ भाव में हो तो सुशिक्षित होकर राज्य नौकरी, डाक्टरी, वकालतादि में धन और यश दोनों ही कमाता है। स्त्री सुन्दर तथा गर्वयुक्त होती है। उससे विचार विनिमय नहीं होता, खर्चा अधिक करती है। जातक स्वयं छोटी-छोटी यात्राएँ करने का शौकीन होता है। साहित्य में उसकी रुचि होती है। समाज में उसका सत्कार होता है। यदि क्षीण चन्द्र हो तो मनुष्य के शत्रु बहुत होते हैं। शरीर दुर्बल, मन्दाग्नि होती है। आलस्य युक्त, दुष्ट चित्त, परस्त्रीरत होता है। जिसके लिए अपयश मिलता है। धन हानि होती है। पराधीन रहना पड़ता है।

जिसका सप्तमेश पूर्ण चन्द्र सप्तम में कर्क राशि का स्वगृही हो तो शिक्षा अपूर्ण होती है। ये लोग नौकरी तथा स्वतंत्र व्यवसाय दोनों ही कार्य करते पाये जाते हैं। ये लोग कोमल हृदय, मधुर वाणी, कवि या लेखक भी होते हैं। इनकी स्त्री सुन्दर, रूपवान्, मिलनसार तथा चतुर होती है। जलयात्रा, विदेश व्यापार से लाभ होता है। ये लोग वासना पूर्ण प्रेम विवाह रत होते हैं। अपनी कलापूर्ण कृतियों के लिए धन और यश पाते हैं। क्षीण चन्द्र होने पर इनके कार्यों में अश्लीलता पाई जाती है। प्रेम विहार तथा जलक्रीड़ा में हानि होती है। जलयात्रा से कष्ट, पेट में दर्द, जलोदर, शुक्रक्षय, प्रमेहादि रोग होते हैं। प्रवास में रहना पड़ता है। ये लोग पर स्त्री रत तथा इनकी स्त्री पर पुरुष की इच्छा करती है।

जब सप्तमेश पूर्ण चन्द्र सिंह का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। इसलिए व्यापार, राज्य नौकरी द्वारा धन और यश मिलता है। उद्योग

पराक्रम द्वारा सफल होते हैं। स्वार्थ की मात्रा अधिक एवं अविश्वासी होते हैं। अपने कार्य को झुकते तथा दूसरे के कार्य करने में अकड़ते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक, नदी, तालाबादि, झरने, पर्वतादि, पर विचरने वाला गले तथा उदर रोग से पीड़ित होता है। इसकी स्त्री कम जीती है या रोगी रहती है। क्षीण चन्द्र होने पर जातक की इष्ट मित्रों से नहीं बनती। जलयात्रा में प्राण-भय, धनचिन्ता, मातृकष्ट, बन्धुविरोध एवं यह स्पष्ट वक्ता होते हैं। दूसरे की स्त्री को आकर्षित करने वाला, कामातुर, चोर, शत्रु राज्य से भय पाने वाला होता है। अनेक रोग, जलोदर, नजला, कफ हो।

यदि सप्तमेश पूर्ण चन्द्र कन्या का नवम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। फिर भी धर्म-कर्म रत, तीर्थ यात्रा करने वाला, जल वस्तुओं तथा जल यात्रा, विदेश वस्तुओं से लाभ उठाने वाला होता है। इसकी स्त्री सुन्दर तथा सुशील होती है। विवाह में दहेज खूब मिलता है। इसकी बुद्धि तीव्र होती है। इसलिये मस्तिष्क कार्य द्वारा धन कमाता है। भाई-बहनों से युक्त होता है। सन्तान चिन्ता रहती है। क्षीण चन्द्र होने पर स्त्री-पुत्र सुख कम, उतावलापन, जलयात्रा में संकट, सदा परिवर्तनशील रहने वाला, अपनी योज-नाओं में कम सफल होता है।

जिसका सप्तमेश पूर्ण चन्द्र तुला का दशम हो तो उस मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है। यह नौकरी करने वाला होता है। समाज में आदर पाता है। वाहन, कृषि, भूमि से लाभ पाता है। उच्चाभिलाषी, राज्य तथा पिता भक्त होते हैं। माता से कम बनती है। जीवन सुखमय रहता है। क्षीण चन्द्र के होने पर जातक की शिक्षा कम, व्यवसाय या छोटी नौकरी करते हैं। समाज में आदर नहीं पाते, कुसंगति में रहते हैं। धन की कमी, निरुत्साह, विवाद तथा स्त्री-बच्चों की चिन्ता बनी रहती है। शरीर विकल रहता है।

जब सप्तमेश पूर्ण चन्द्र वृश्चिक (नीच) का एकादश हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी धन-धान्य तथा यश से युक्त होता है। उसमें जुआ सट्टा करने की आदत होती है। इसलिये कभी-कभी धन संकट भी आता है। व्यापार में लाभ तथा कन्या युक्त होता है। द्वेष करता है, यदि चन्द्र क्षीण हो तो जातक कलह प्रिय, खल, खिन्न हृदय, शान्ति हीन, पराधीन कार्य करने

वाला, राज्य, शत्रुओं से भय पाने वाला, अपयशी होता है। उसकी सन्तान कम जीवित रहती है। पुत्र हो तो अनबन रहे। उसकी शिक्षा नहीं होती।

यदि सप्तमेश पूर्ण चन्द्र धन का द्वादश हो तो जातक उच्चविचार, सुशिक्षित होता है। सरकारी नौकरी करता है। व्यापारी भी होता है। कलापूर्ण, निर्मल हृदय, मधुरवाणी, कृपण, सोच-समझ कर चलने वाला, स्त्री-बच्चों से सुखी तथा स्त्री खर्चीली होती है। इसके शत्रु उत्साह पाते हैं। नजला, जुकामादि रोग होते हैं। क्षीण चन्द्र के होने पर शिक्षा कम, अनेक कष्ट, जल संकट, शत्रु त्रास, भाग्य ह्रास, धन हानि और अपयश मिलता है। स्त्री खर्चीली तथा स्वच्छन्द होती है। इसलिए उससे नहीं बनती। जीवन दुखी रहता है। यात्रा में कष्ट, मति भ्रम, हठ युक्त होता है।

सप्तमेश भौम फल

मंगल–जिसका सप्तमेश मंगल वृष का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा मध्यम दर्जे की रहती है। ये लोग धर्म भीरु, रोब से कार्य निकालने वाले, भूमिधर, कृषकादि कार्य में प्रवीण होते हैं। रक्त विकार, रक्त प्रकोप तथा अर्शादि रोग होते हैं। कृपण होने के नाते कष्ट उठाते हैं। सत्कर्म रत एवं ईश्वर भक्त होते हैं। शरीर में बेचैनी, स्त्री पीड़ा रहती है। यदि तुला का मंगल हो तो शिक्षा अच्छी रहती है। ये लोग पुलिस, सेना विभाग में सफल जीवन-यापन करते हैं। इनके शरीर बड़े, दिल छोटे होते हैं। रिश्वत लेते हैं। बेपरवाह होते हैं। मस्तक पीड़ा, शत्रुजित, राज्यप्रिय, स्त्री-पुत्रादि सुख विशेष नहीं होता। इन्हें अग्नि, शस्त्र भय रहता है। क्रोधी, कामी, उपर्युक्त रोग युक्त होता है। लोभी तथा स्वार्थी होने के कारण व्यर्थ मित्र नहीं बनाते, मित्र बन जाने पर उसका साथ नहीं छोड़ते। बात के पक्के होते हैं।

जब सप्तमेश मंगल मिथुन का दूसरे घर में हो तो मनुष्य सुशिक्षित होकर सरकारी नौकर, डाक्टर, वकीलादि बनकर अच्छा जीवन व्यतीत करता है। इसका विवाह निकट सम्बन्धिनी से ही होता है। स्त्री-पुत्रों का सुख रहता है। नेत्र पीड़ा, पित्त विकार, इष्ट-मित्रों से विरोध, यात्रा में खर्च होता है और जब वृश्चिक का मंगल हो तो वह धार्मिक, उच्च विचार, शास्त्रार्थ करने वाला, वादी, शत्रु युक्त, धन लोलुप, जुआ, रेस, सट्टादि खेलने वाला, दृढ़व्रती, दो विवाह करने वाला, निज पुरुषार्थ से उन्नति करता है।

यदि सप्तमेश मंगल कर्क का तीसरे भाव में हो तो जातक निर्बुद्धि, विद्या हीन होता है। छोटी नौकरो या छोटे कार्य करता है और हिम्मती होता है। भाई नहीं जीते, शत्रु होते हैं किन्तु दवे रहते हैं। नौकरी में उन्नति बहुत कम होती है। स्त्रो बच्चे या स्वयं कोई न कोई घर में बीमार रहता है। जीवन दुखमय ही रहता है। भूमि, सवारी, पैतृक प्राप्त होती है। जब मंगल धन का हो तो मन सदा ही अस्थिर रहता है। भाई का सुख नहीं होता, सरकारी नौकरी में उन्नति, समाज में आदर, वस्ती का प्रधानत्व प्राप्त होता है।

जिसका सप्तमेश मंगल सिंह का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। साहस से कार्य करता, धन कमाता, शत्रुओं को दबाकर रखता, न्यायप्रिय, मातृ-पितृ विरोधी, स्त्री, बच्चों को कष्ट, प्रधानत्व प्राप्त करने वाला, दृढ़व्रती, नीति कुशल होता है। प्रेम में निराश तथा वच्चा पैदा होने में स्त्री की मृत्यु होती है। इसे जीवन में काफी उथल-पुथल के बाद सफलता मिलती है। जब मकर का मंगल हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है। नौकरी के द्वारा सुख से रहता है। यश कम मिलता है और जल यात्रा में कष्ट होता है। विवाह देर में होता है, प्रेम में निराशा रहती है। या विवाह नहीं होता, इसका इष्ट-मित्रों से लाभ नहीं होता है। जुआ, रेसादि तथा सट्टे में नुकसान होता है।

जब सप्तमेश मंगल कन्या का पंचम हो तो जातक निराशावादी, बुद्धिहीन, तार्किक, एकान्तप्रिय, छिद्रान्वेषी, सत्कार्य में श्रद्धा रखने वाला, स्त्री पुत्र चिन्ता से युक्त, नेत्ररोगी, खर्चीला, रक्त चाप, रक्तविकार, फोड़े-फुन्सियों वाला, शस्त्र घात से पीड़ित, स्नायु पीड़ा से द्रवित होता है। इसका सम्बन्ध किसी नीच स्त्री से रहता है और जब मंगल कुम्भ हो तो जातक छोटा व्यापारी होता है और मितव्ययिता के कारण सुखी रहता है। बलवान् मंगल उच्च शिक्षा देकर यश कीर्त्ति, धन भी प्रदान करता है। यह यश तथा रोषदार पोशाक पहन कर रोब से रहना चाहता है। जल से भय रहता है। प्रेम में निराश होने के कारण विवाह देर में करता है। स्त्री बीमार मिलती है। सन्तान, ऋण, हृदय, उदरविकार की चिन्ता रहती है। इसको गुप्त शत्रु, चोर, झूठो अपवादों का भय रहता है।

यदि सप्तमेश मंगल तुला का छठे हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। नौकरो कम मिलती है। छोटे व्यापार से लाभ होता है। शत्रु दवे रहते हैं। स्त्रो

से विचार विनिमय नहीं रहता तथा मामा, मौसी से अनबन रहती है। शरीर में विकलता एवं रक्तविकार रहता है। भाग्योदय देर में होता है, और धन की कमी, अंग भंग हो, स्त्री, भूमि से रहित होना पडता है। मीन का मंगल जल चोर भय देता है। शरीर को कष्ट, पदोन्नति की अभिलाषा प्रबल, पुलिस, सेना, में साहसी कार्य के लिये पदक एवं पारितोषिक मिलते हैं। किसी दुर्घटना या शस्त्र से चोट लगती है। खिलाड़ी होता है। विवाह नहीं होता। यदि हो तो स्त्री से अनबन या स्वसुर से झगड़ा होता है। छोटे व्यापार से लाभ पाता है। प्रेम में निराशा होती है।

जिसका सप्तमेश मंगल मेष या वृश्चिक का सप्तम में हो तो जातक शिक्षित होकर डाक्टर, सर्जन, वकील, इन्जीनियर, पुलिस, सेना में पदाधिकार पाकर राज्य-सम्मान को प्राप्त होता है, या फिर कृषि व्यापार में लाभ होता है। स्त्री पुत्रों से दुखी होता है। स्त्री बीमार रहे, गर्भपात हो, स्त्री मर जाय या फिर विवाह ही न हो। यात्रा सुखकर न हो, धन की कमी रहे। इसके गुप्त शत्रु होते हैं जिन्हें यह चतुरता से वश में करता है। प्रेम में निराश, स्त्री से कलह, नौकरी में उन्नति नहीं होने देता, अधिकारी वर्ग से झगड़ा रहता है और सदा चिन्तित रहता है।

जब सप्तमेश मंगल वृष का अष्टम हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है। सरकारी नौकरी तथा व्यापारी वर्ग दोनों कार्य ये लोग करते हैं। अंग पुष्ट किन्तु रक्त विकारी होता है। स्त्री कलह प्रिय तथा अभिमानी होती है। सन्तान कम होती है। रहस्य छिपे रहते हैं। इसका क्रोध पागल बना देता है। नेत्र, कान में दर्द हो, भाई कष्ट में रहते हैं। विदेश यात्रा में पर स्त्री गमन करते हैं। रक्तविकार होता है। धन का मंगल उच्च विचार, साहसी बनाता है। वाद विवाद में तत्पर, उद्योग तथा पराक्रम से अपनी उन्नति करने वाला, अत्यन्त कामी, धर्म के बारे में अपने ही विचार रखने वाला होता है। यात्रा में कष्ट पाता है, द्विभार्या योग भी हो सकता है।

यदि सप्तमेश मंगल मिथुन का नवम हो तो जातक नीतिज्ञ, निपुण, खर्चीला, पर स्त्री रत, अत्यन्त कामी होता है, बन्धुओं से झगड़ा करने वाला तथा पुत्रों से सुख पाता है। और नीच स्त्री से सम्बन्धित होता है। सेना, पुलिस में छोटी-छोटी

नौकरी करता है। स्त्री-पुत्रादि से अलग रहता है। यह निर्लज्ज, तथा हिंसक होता है। मकर या उच्च का मंगल जातक को धार्मिक, यात्राप्रिय, उच्चाभिलाषी, सुशिक्षित, डाक्टर, वकील, रासायनिक, भूमिधरादि बनाकर यश प्रदान करता है। ये लोग उपकारी, दयालु, तीर्थयात्रा करने वाले, सत्कर्मी होते हैं। अन्तिम समय स्वाध्याय में बिताते हैं। साधु सेवी, अन्याय के प्रति आवाज उठाने वाले, दृढ़व्रती, समाज में प्रधान तथा आदर-सत्कार पाने वाले होते हैं।

जिसका सप्तमेश मंगल कर्क (नीच) का दशम में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है। और ज्ञान-विज्ञान के प्रमाण पत्र पाता है। विदेश यात्रा में विदेशी युवती से प्रेम विवाह करता, कामी तथा लम्पट होता है। यह स्त्री सौन्दर्य से आकर्षित न होकर कटि-वक्ष से आकर्षित होता है। अपने स्त्री-बच्चों की चिन्ता नहीं करता, रक्तचाप, रक्तविकार या स्नायु पीड़ा से दुखी रहता है। कुम्भ का मंगल हो तो मनुष्य पापवृत्ति, चंचलचित, जलयात्रा प्रिय, खर्चीला होता है। यह स्पष्टवक्ता, तार्किक, ऊँच-नीच समझाने वाला होता है। इसे समाज सेवा से धन मिलता है। मधुर भाषी होने के कारण किसी धनिक को आकर्षित कर विवाह में दहेज पाता है।

जब सप्तमेश मंगल सिंह का एकादश में हो तो पराक्रमी, प्राकृतिक सौन्दर्यरत, प्रधानत्व चाहने वाले होते हैं। खिलाड़ी होते हैं। कम पढ़ते हैं और व्यापार से लाभ होता है। स्त्री पुत्र की चिन्ता रहती है। बड़े भाई से नहीं बनती कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है। शत्रु पराजित रहते हैं। मीन का मंगल होने पर शिक्षा अपूर्ण होती है। निगमादि में नौकरी करनी पड़ती है। स्वभिमान अधिक, उद्योग कम, कभी-कभी भोजन से भी दुखी होते हैं। सन्तति काफी होती है। स्त्री को पेट पीड़ा, रसौली, फोड़ादि होता है। जीवन में कशमकश अधिक, लाभ कम होता है। धन के लिये अन्यकार्य भी करने पड़ते हैं।

यदि सप्तमेश मंगल कन्या का द्वादश हो तो जातक शिक्षा में धन खर्च करने वाला, तीर्थयात्रारत, धार्मिक वृत्ति का होता है। स्त्री-पुत्रों की चिन्ता से युक्त, विकल मन, नेत्रपीड़ायुक्त, ऋणी तथा नीच स्त्री से प्रेम करने वाला होता है। यदि मेष का मंगल हो तो शिक्षा अपूर्ण होती है। विवाह देर में होता है। स्त्री को गर्भपात होते हैं। पुत्र की चिन्ता बनी रहती है। पिता का कर्ज देना पड़ता है।

जिसमें वेइज्जती होती है। यदि विदेश यात्रा हुई तो परस्त्री गमन अवश्य करते हैं। हृदय रोग, रक्त-पित्त विकार तथा प्रवास स्वजनों से होता है। शत्रु से हानि, मित्र से लाभ होता है। इनको अग्नि से भय रहता है और नुकसान होता है।

सप्तमेश बुध फल

बुध—जिसका सप्तमेश बुध धन का लग्न में हो तो जातक शान्त, विद्यावान् कलापूर्ण, प्रबल वक्ता, स्मरणशक्ति तीव्र, तार्किक, आलोचक, चंचल, लेखक, निर्भीक होता है। यह किसी भी वस्तु का मूल्य उसके गुणानुसार शीघ्र जान लेता है। इसकी स्त्री सुन्दर, आज्ञाकारी होती है। धन की कमी रहती है। ये लोग धार्मिक वृत्ति के होते हैं। जब मीन का बुध हो तो बहुत कुछ उपर्युक्त फल होते हैं। ये लोग अधिक बातूनी होते हैं। जिससे अपयश मिलता है। इनकी स्त्री कृतघ्न होती है। ये उसे भी ठगते हैं। ये जलक्रीड़ाप्रिय, जलयात्रा करने वाले तथा समयानुकूल बदलने वाले होते हैं।

जब सप्तमेश बुध मकर का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा कठिनता से रुक-रुक कर पूर्ण होती है। ये लोग कटु आलोचक तथा निर्भीक लेखक होते हैं। इसलिये सांसारिक उन्नति नहीं कर पाते। ये मितव्ययी तथा चतुर होते हैं और सदा किसी चिन्ता में रहते हैं। इनको विवाह से सुख नहीं मिलता। इन्हें वायु तथा पीलिया रोग होता है। दुर्बल हृदय, पराधीन, शत्रु से पीड़ा पाने वाला होता है। जब मेष में बुध हो तो मनुष्य छलिया प्रकृति का होता है और दुख पाता है। कायदे-कानून का पाबन्द नहीं होता। बचपन में म्यादी बुखार तथा स्नायु पीड़ा होती है। इसकी स्त्री कटुवक्ता होती है। घर में शान्ति नहीं होती। यह साधारण रूप से स्वस्थ, भले-बुरे जनों से मेल रखने वाला, अनुचित प्रवृत्ति एवं चिन्तातुर रहने वाला, पापरत रहता है।

यदि सप्तमेश बुध कुम्भ का तीसरे घर में हो तो मनुष्य पराक्रम से हीन, भाई बहन से युक्त, शिक्षित, मानव प्रकृति को तुरन्त जानने वाला, आलोचक, धनिक कन्या से विवाह करने वाला होता है, किन्तु उससे अनबन ही रहती है। भाग्योदय धीरे-धीरे देर से होता है। जब वृष का बुध हो तो मनुष्य हंसमुख, गुणवान्, कलापूर्ण, धार्मिक, भाई-बहनों से सुखी और दयालु होता है। उद्योग कम सफल

होने के कारण खर्च में तंगी रहती है। समाज में आदर मिलता है। इसकी स्त्री सुशील एवं आज्ञाकारी होती है। कलापूर्ण कार्यों से जीवन-यापन करता है। कभी-कभी क्रोध भी आता है।

जिनका सप्तमेश बुध मीन का चतुर्थ हो तो जातक शिक्षित होता है। व्यापार से धन कमाता है। अभिमानी होने के कारण आपसी लोगों से मनमुटाव रहता है। संगीत नृत्यादि किसी कला का जानने वाला, तसवीर, कार्टून तथा मिट्टी के खिलौने बनाना जानता है। वाहन, मकान, जमीनादि से युक्त होता है। तैरने तथा जलयात्रा का शौकीन होता है। इसके अपनी स्त्री से बाद में सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। मिथुन का बुध पूर्ण शिक्षा देता है किन्तु वह घमंडी होता है। दूसरों को मूर्ख समझता है, ३२ वर्षोपरि पिता से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, स्त्री सुन्दर एवं सीधी मिलती है। ये लोग अनेक यात्रा और परिवर्तन चाहते हैं। दादलाई या पैतृक सम्पत्ति के लिये झगड़ा होता है। माता को कष्ट रहता है। किसी स्त्री से अपयश मिलता है।

जब सप्तमेश बुध मेष का पंचम हो तो जातक कुशाग्रबुद्धि, सुशिक्षित, कवि, लेखक, नाटयकार, ज्योतिर्विदादि होता है। अपने दायरे में प्रसिद्ध तथा धन-धान्य की कमी नहीं होती, आवेशपूर्ण न्यायी होता है। उदार तथा समाज सेवक होता है। स्त्री-पुत्रादि की चिन्ता रहती है। नौकरी या अध्यापक कार्य करना पड़ता है। हस्तरेखा या किसी कला से धन पाता है, यश पाता है। कर्क का बुध शिक्षा पूर्ण नहीं होने देता, स्त्री सुन्दर होती है किन्तु अनबन रहती है। कन्यायें अधिक होती हैं, छिद्रान्वेषी होते हैं और धोखा देते हैं। घर से दूर रहते हैं। जलयात्रा में कष्ट पाते हैं तथा तैरते समय डुबकी खाते हैं। पिता, पुत्र की आपस में नहीं बनती, इसका किसी स्त्री से गुप्त सम्बन्ध रहता है।

यदि सप्तमेश बुध वृष का छठे भाव में हो तो जातक तीव्र बुद्धि होने पर भी शिक्षापूर्ण नहीं कर पाता। इसको क्रोध जल्दी आता है, यह स्वतन्त्र कार्य द्वारा जीवन-यापन करता है। इसकी कविता, लेख, कहानी, गल्प लोकप्रिय शीघ्र हो जाती है। शत्रु भय रहता है, स्त्री से विचार-विनिमय कम होता है। मन्दाग्नि, पीलिया, पेड़ू दर्दादि रोग होते हैं। उद्योग विफल होता है और अपयश मिलता है। सिंह का बुध चल-चित होने के कारण शिक्षा अधूरी ही रखता है। ये लोग

चोर तथा अग्नि से भय पाते हैं, माता पक्ष से लाभ पाते हैं। स्त्री क्रोधी तथा खर्चीली होती है। ये लोग नशा सेवन करने वाले होने के कारण हृदय के दुर्बल होते हैं। झूठ बोलते हैं। एवं दुश्चरित्र होते हैं और शत्रुओं से मान हानि पाते हैं।

जिसका सप्तमेश बुध मिथुन, कन्या का यदि सप्तम हो तो जातक शिक्षित, सरकारी नौकर, स्वतन्त्र व्यवसायी भी होता है। स्वपुरुषार्थ से उन्नति करता तथा यश पाता है। इसका गणित अच्छा होता है, इसकी स्त्री देखने में सुन्दर, शान्त, मधुर वाणी होती है। ये लोग धार्मिक, तन्त्र-मन्त्र करने वाले, तीर्थ यात्रा प्रिय, उपासना युक्त, प्रपंच से सुख पाते हैं और बात कहकर पूर्ण नहीं करते। कामी होते हैं, स्त्री बच्चों का सुख रहता है किन्तु स्त्री को गुप्त रोग होता है। ये हस्तरेखा एवं ज्योतिषादि का ज्ञान रखते हैं। अभिमानी होते हैं तथा छोटे मनुष्यों से मिलना पसन्द नहीं करते। बात हितैषी—जैसे करते हैं किन्तु स्वार्थी होते हैं।

जब सप्तमेश बुध तुला का अष्टम हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। इसलिए छोटी नौकरी, छोटे व्यवसाय से जीवन-यापन होता है। इनका दिमाग विकार पूर्ण होता है किन्तु पत्नी के सुलक्षणा होने के कारण घर का कार्य अच्छी तरह चलता है और दोनों सुख से रहते हैं। यह वृद्धावस्था में रोगी रहता है। किन्तु कर्क का बुध हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है और पत्नी भी कलिहारी मिलती है जिससे गार्हस्थ्य जीवन दूभर हो जाता है। इसको अनेक रोग होते हैं। उन्माद विशेष कर पाया जाता है। पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं मिलता।

यदि सप्तमेश बुध वृश्चिक का नवम हो तो जातक की शिक्षा उच्चकोटि की नहीं हो पाती। इसलिए डाक, तार, टेलीफोन, रेलवे आदि के आफिसों में क्लर्क, टाइपिस्ट आदि की नौकरी करते हैं। धार्मिक, उपकारी, स्त्री-पुत्र, भाई-बन्धु युक्त होता है। इसको कई बार जीवन में निराशा का सामना करना पड़ता है और चोरो तथा धोखे से हानि होती है। सिंह का बुध एक साथ शिक्षा पूर्ण नहीं होने देता। रुक-रुक कर परीक्षायें करनी पड़ती हैं। क्लर्क ही रहते हैं। गणित तथा ज्योतिष का शौक होता है। विवाह २५ के बाद होता है, स्त्री सुन्दर तथा स्वभाव की तेज मिलती है। विवाह के बाद भाग्योदय, भ्रातृ

सुख, जल यात्रा में भय रहता है। कर्ण रोग होता है। इन्हें बात टालने की आदत होती है।

जिसका सप्तमेश बुध धन का दशम हो तो मनुष्य उच्च विचार, सुशिक्षित होता है। राज्यपदाधिकार पाकर यश तथा धन पाता है, इसको नौकरी ससुराल की सहायता से मिलती है। मातृ-पितृ, भूमि तथा वाहन सुख रहता है, किन्तु स्त्री से विचार विनिमय कम रहता है। कन्या का बुध शिक्षा पूर्ण करता है, जातक धार्मिक वृत्ति एवं उपासनारत रहता है, स्त्री सुन्दर तथा शान्त होती है, हो सकता है स्त्री भी नौकर हो। माता-पिता से ठीक निभाव रहता है। ये लोग कवि, लेखक, वैज्ञानिक, सम्पादक, प्रकाशक आदि भी होते हैं। इनको यश काफी मिलता है किन्तु धन उतना नहीं मिलता।

जब सप्तमेश बुध मकर का एकादश में हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। ये लोग कलाकार, चित्रकार, क्लर्क, कम्पाउण्डर तथा उत्तम व्यापारी भी होते हैं। किन्तु इनकी प्रगति कम होती है। स्त्री सुख कम रहता है। कन्यायें अधिक, पुत्र कम होते हैं। झूठ बोलने में नहीं हिचकते, कार्य में सफलता कम मिलती है। जीवन साधारण ही रहता है। तुला का बुध शिक्षा कम, व्यापार में विफलता, तथा साझे के व्यापार से लाभ होता है। शरीर में विकलता, मन में कुकर्म रुचि रहती है। बड़े भाई से नहीं बनती और वादी होने से दुख पाता है।

यदि सप्तमेश बुध कुम्भ का द्वादश हो तो येन-केन प्रकारेण शिक्षा पूर्ण करते हैं। समाज में यश तथा बुद्धि गत बातों से धन पाते हैं। कुसंगति में पड़कर हानि भी पाते हैं। स्त्री की बिमारी में रुपया खर्च करना पड़ता है। शत्रु एवं चोर का भय रहता है। स्त्री सुन्दर तथा धनिक होती है, किन्तु अनबन रहती है, ये लोग तार्किक तथा स्वतन्त्र विचार के होते हैं। जल यात्रा में कष्ट, तैरने में डुबकियाँ खानी पड़ती हैं। किन्तु वृश्चिक का बुध शिक्षा पूर्ण नहीं होने देता, कष्ट तथा उद्योग से डरते हैं। घर पर या एकान्त में निवास पसन्द करते हैं। स्त्री झगड़ालू होती है और उससे डरते हैं। शत्रु दबे-से रहते हैं, वायु रोग होता है और उदास-से रहते हैं। चंचल चित्त होते हैं। लड़कियों को छेड़ते हैं। अपयश पाते हैं।

सप्तमेश गुरु फल

गुरु—जिसका सप्तमेश गुरु मिथुन का लग्न में हो तो जातक की विद्या पूर्ण नहीं होती। उसको साधारण नौकरी, उच्चाभिलाषी होने के कारण पसन्द नहीं आती। व्यापार करे तो उन्नति होती है। ये लोग देखने में सुन्दर, हँसमुख, प्रियवक्ता, लेखक, कवि, गुणवान् होते हैं। स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह करना पड़ता है। पुत्र शोक होने के बाद स्त्री-बच्चों का अच्छा सुख रहता है। तीर्थयात्रा, धर्म-कर्म, पूजा-पाठ से सुख मिलता है। कन्या का गुरु स्वाभिमानी बनाता है। सांसारिक-सुख कम मिलता है। रुचिकर भोजन खूब खाते हैं। धन की कमी रहती है। अपवाद होता है। विपत्ति में धैर्य धारण करने वाले, हठी, अपनी बात रखने वाले और ज्ञानी होते हैं। इनका विवाह या प्रेम किसी नीच जाति की लड़की से होता है।

जब सप्तमेश गुरु कर्क का दूसरे घर में हो तो जातक सुशिक्षित होकर नौकरी में बड़ा पद प्राप्त करता है, अचानक धन पाता है और देश-विदेश में नाम पाता है। अच्छे भोजन करने वाला, दानी, स्वाभिमानी, उच्च विचार का होता है। स्त्री सुन्दर तथा तेज स्वभाव की होती है, दहेज में धन मिलता है किन्तु गार्हस्थ्य सुख पूर्ण नहीं होता। शत्रु दबे रहते हैं। जब तुला का गुरु होता है तो स्वभाव सौम्य होता है, शिक्षा अच्छी होती है। जप, तप, तपस्या, धर्म, कर्मादि में रुचि होती है। स्वजनों से विरोध रहता है। ये प्रोफेसर, वकील, साहित्यकार होते हैं। इनकी स्त्री शान्त और प्रसन्नचित्त होती है, तथा बच्चे और भी अच्छे होते हैं। इनके शत्रु स्वतः ही हो जाते हैं।

यदि सप्तमेश गुरु सिंह का तीसरे भाव में हो तो जातक पूर्ण शिक्षित न होने पर भी बड़े विद्वान् से दीख पड़ते हैं और इनके विचार असम्भव में सम्भव की कल्पना रखते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रेमी, स्त्री-पुत्रों के सुख से सुखी होते हैं किन्तु स्त्री को पेट की पीड़ा रहती है। व्यापार या राज्य से लाभ रहता है। शत्रु दबे रहते हैं और जब वृश्चिक का गुरु हो तो शिक्षा कम होती है। स्वभाव झगड़ालू, भाइयों से नहीं बनती तथा ये रोब से काम लेते हैं। अचानक धन की प्राप्ति भी हो जाती है। ये पैतृक रोग के रोगी होते हैं। दम्भी होने के कारण दुख उठाते हैं। स्त्री झगड़ालू होती है।

जिसका सप्तमेश गुरु कन्या का चतुर्थ हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। जमीन, जायदाद का सुख रहता है। माता को कष्ट तथा पिता का सुख रहता है। धार्मिक, परोपकार कार्य में धन व्यय होता है। वायु तथा पीलिया रोग होता है और स्त्री को कष्ट रहता है। सन्तान होने पर धन की कमी हो जाती है किन्तु जब धन का गुरु हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी वह दूसरों को अपने विचारगत करने की कला में पूर्ण होता है। स्त्री बच्चों का पूर्ण सुख रहता है। मैकेनिक, जल सम्बन्धी कार्यों, वस्तुओं से लाभ तथा सुख होता है। विचार स्वतन्त्र तथा ऊँचे होते हैं। जीवन में उन्नति धीमी होती है। हठी, धार्मिक, यात्राप्रिय एवं स्त्री के मरने पर संन्यासी विचार के हो जाते हैं।

जब सप्तमेश गुरु तुला का पंचम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। यह निजी पुरुषार्थ से साहित्यिक योग्यता प्राप्त करता है और लोग उसे विद्वान् समझते हैं। ये लोग धार्मिक, स्वाध्याय प्रिय, जप-तप करने वाले, वाचाल, गप्पी होते हैं। विवाह देर में होता है। बच्चों का सुख रहता है तथा नौकरी करनी पड़ती है। जब मकर का गुरु हो तो शिक्षा कम होती है और स्त्री-बच्चों तथा धन की चिन्ता रहती है। मनुष्य क्रोधी एवं सामर्थ्य हीन होता है। जल-यात्रा में जीवन भय या कोई और दुर्घटना होती है तथा जीवन दुखी रहता है।

यदि सप्तमेश गुरु वृश्चिक का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा कम रहती है। छोटे-छोटे कार्यों से जीवन चलाना पड़ता है। अभिमानी, क्रोधी तथा शत्रुजित् होता है, स्त्री झगड़ालू एवं बच्चों का सुख कम होता है। मामा से अनबन रहती है और ऋण लेना पड़ता है। जिसमें अपमान होता है। यदि कुम्भ का गुरु हो तो विद्या अपूर्ण रहती है और भाग्योदय में सदा रुकावटें रहती हैं। यह नये विचारों वाला होता है। जल यात्रा मे कष्ट पाता है। इसकी स्त्री सफल जीवन नहीं बिताने देती फिर भी यह अपने मित्रों में यश पाता है। यह दो-तीन कार्य साथ करता है, फिर भी जीवन सुख से व्यतीत नहीं कर पाता।

जिसका सप्तमेश गुरु धन या मीन का होकर सातवें घर में हो तो मनुष्य उच्च विचारों वाला, पूर्ण शिक्षा प्राप्त करता है। राज्यपदाधिकारी, डाक्टर, वकील, जज आदि होकर यश पाता है। इनको स्त्री झगड़ालू होती है। और विवाह देर में या नहीं भी होता, अभिमानी होते हैं, उद्योग से समाज में यश तथा लाभ पाते हैं। स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जीवन में उन्नति बड़ी धीमी होती है। विदेश यात्रा में सुख होता है तथा विदेशी लड़की से प्रेम रहता है और उसकी मृत्यु के पश्चात् एकान्त, शान्त, उदास जीवन बिताते हैं। ये लोग दिखावटी धार्मिक उपदेशक होते हैं।

जब सप्तमेश गुरु मकर का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती और पापरत रहता है। निन्द्यकार्य द्वारा जीवन यात्रा चलाता है। प्रथम विवाह नहीं होता, यदि हुआ तो मृत्यु हो जाती है। और यदि जीती रही तो कलह होता है। तैरने से जल में डूबना, डुबकी खाना तथा विदेश यात्रा में कष्ट होता है। गुप्त रोग, प्रवास, शरीर कष्ट तथा हानि होती है। जब गुरु मेष का हो तो मनुष्य स्वाभिमानी एवं शिक्षित होता है। प्रधानता प्राप्त करने की इच्छा प्राप्त करता है। इसको किसी की धरोहर का माल मिलता है। धार्मिक कार्यों में खर्च, मातृ सुख, जमीन, मकान बनाने का योग रहता है।

यदि सप्तमेश गुरु कुम्भ का नवम हो तो जातक की शिक्षा उच्च होती है। वह सम्पादक, बड़ा पुजारी, शास्त्रवक्ता, प्रोफेसर, वकील होकर धर्म-कर्म तथा तीर्थयात्रा में सुख मानने वाला होता है। स्वस्थ, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होता है किन्तु कभी-कभी पुत्र के लिये बड़े जप-तप करने पड़ते हैं। कोई-कोई पुत्र रहित भी होता है या पुत्र से अनबन रहती है। वृष में गुरु हो तो मनुष्य सुशिक्षित, शान्त, उदार, उपकारी, ईश्वर भक्त तथा उच्च विचार का होता है। इसको सन्तान की चिन्ता रहती है। स्त्री जाति से ३० वर्षोपरि लाभ होता है। स्त्री सुन्दर तथा मिलनसार होती है। दम्पति घर की उन्नति की शुभ योजनाओं द्वारा उन्नति करते हैं।

जिसका सप्तमेश गुरु मीन का दशम हो तो पढ़ने की इच्छा बनी रहने पर भी शिक्षा पूर्ण नहीं होती है। पिता से ३६, ४२ वर्षोपरि नहीं बनती, सरकारी नौकरी करनी पड़ती है, उसमें दिल न लगने के कारण मनुष्य दुखी

रहता है। धर्म-कर्म रत, परोपकारी, क्रोधी, आवेश पूर्ण रहता है। बात पूर्ण करने की शक्ति रखता है। विवाह नहीं होता, यदि हुआ तो स्त्री से झगड़ा या स्त्री बिमार रहती है। बच्चों का सुख कम रहता है। शत्रु स्वतः ही उत्पन्न होते किन्तु दवे रहते। कुटुम्ब से कम बनती है। मध्यमोंपरि शरीर रोगी हो जाता है। ज्योतिष एवं हस्तरेखा का ज्ञान होता है। वक्ता, मिलनसार, स्वाभिमानी, स्वतंत्र विचार, धर्मभीरु और तीर्थयात्रा रत होता है। जब मिथुन का गुरु हो तो ज्ञान-विज्ञान का जानने वाला शिक्षित होता है। अध्यापक, क्लर्क तथा सरकारी नौकर होता है। अपने पराक्रम से सफलता पाने पर भी इष्ट-मित्रों से त्रास पाता है। कलापूर्ण कार्यों में यश पाता है। स्त्री-पुत्र के सुख से सुखी, चंचल चित्त होने से अपनी ही सगी-सम्बन्धिनी के प्रेम रत रहता है।

जब सप्तमेश गुरु मेष का एकादश हो तो जातक शिक्षित तथा स्वाभिमानी होता है। नौकरी या व्यापार में लाभ पाता है एवं समाज में उच्चाधिकार पाता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। कभी-कभी पुत्र शोक भी रहता है, माता-पिता से अनबन रहती है, पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती। जब कर्क या उच्च का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। कला पूर्ण कवि, लेखक या व्यापारी होता है। बड़े भाई से नहीं बनती, स्त्री सुख रहता है, बच्चों से नहीं बनती और द्विभार्या योग भी रहता है। कार्य में यश तथा कीर्ति मिलती है। गर्व के कारण किसी इष्ट-मित्र से अधिक दिन नहीं बनती। अपने को बड़ा समझते हैं। जल यात्रा से सुख होता है।

यदि सप्तमेश गुरु वृष का द्वादश हो तो जातक विद्या में धन खर्च करने वाला, शान्त व उदार, सुन्दर स्त्री वाला, उसकी स्त्री खर्चीली होती है। माता के मकान से सुखी, पाण्डु तथा वायु रोग से रोगी होता है। शत्रु भय लगा रहता है। सिंह का गुरु मनुष्य को स्वच्छन्द, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रिय, वीर रस कवि, लेखक, धनरहित बनाता है। स्त्री का स्वभाव तेज, कृपण तथा स्वार्थी होता है। जीवन सुखकर नहीं होता और शत्रु दवे रहते हैं। मृत्यु शुभ स्थान पर होती है।

सप्तमेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका सप्तमेश शुक्र मेष का लग्न में हो तो जातक शिक्षित, कलाकार, संगीत, सुगन्धित प्रिय, कवि, लेखक और नाटकादि का शौकीन होता है और उससे धन तथा यश कमाता है। २० वर्ष से प्रथम ही यह किसी लड़की के प्रेम में फंस जाता है और अपयश तथा लड़ाई में हानि पाता है। यदि विवाह हो तो स्त्री की मृत्यु, पर दूसरा विवाह करना पड़ता है। ये प्रेम विवा के प्रेमी तथा गुप्त रोगी होते हैं। ये लोग कान्तिवान्, सुन्दर तथा कामी होते हैं और जब वृश्चिक का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। इनका सम्वन्ध अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी नीच स्त्री से होता है। जिस कारण धन एवं यश की हानि होती है। इनको स्त्री की अपेक्षा बच्चों से प्रेम अधिक होता है। ये चलचित्त होने के कारण अपने व्यवसाय पर स्थिर नहीं रहते, जिससे कष्ट पाते हैं। गुप्त रोगी होते हैं।

जब सप्तमेश शुक्र वृष का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग शृंगारी, लेखक, कवि ·तथा कलाकार होते हैं। यद्यपि पैतृक सम्पत्ति नहीं होती फिर भी ये सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करके धन-धान्य, मकान से युक्त होते हैं। इनकी वस्तुएँ सुव्यवस्थित, मकान सजा हुआ, ये स्वयं विलासी तथा कई स्त्रियों पर आसक्त होते हैं। स्त्री की बीमारी पर धन काफी खर्च होता है। इष्ट-मित्रों से मिलकर रहते हैं। वीर्य सम्बन्धी रोग होते हैं। जब शुक्र धन राशि गत हो तो जातक उच्च विचार, सुशिक्षित, कलाकार, धन-धान्य पूर्ण, स्त्री-पुत्रों से युक्त, अचानक धन पाने वाला, सरकारी नौकर, सदा दुहरी आय से युक्त, धार्मिक, उदार, शत्रु युक्त, पदवृद्धि में अड़चनों वाला और विवाह देर में होता है। पर स्त्रियों को आकर्षित करने वाला कामी होता है।

यदि सप्तमेश शुक्र मिथुन का तीसरे हो तो जातक सुशिक्षित होकर लेखन-कला, कविता या अध्यापक वृत्ति से जीवन-यापन करता है। इन्द्रियलोलुप तथा कामी होता है। एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम रखता है। इसकी सन्तान दर्शनीय होती है। मध्यायु के बाद इसकी श्रवण शक्ति कम हो जाती है। जीवन साधारण ही रहता है। जब मकर का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा कम होती है।

प्रवास में रहता है, जल यात्रा से कष्ट होता है, वृद्धा में रति की इच्छा रखता है या अपने से बड़ी आयु वाली स्त्री से विवाह कर उसके प्रभाव में रहता है। स्त्री से झगड़ा, प्रेम में निराशा, विदेश व्यापार से लाभ तथा विजातीय में धन के लिए विवाह करते हैं। स्त्री-चिन्ता रहती है।

जिसका सप्तमेश शुक्र कर्क का चतुर्थ हो तो जातक शिक्षित, तार्किक, कवि, लेखक, विरोधाभास युक्त होता है। उसके पिता से ४० वर्षोपरि सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। स्त्री की माता से नहीं बनती। जमीन, बागादि का शौक बड़ी ही अड़चनों के बाद पूर्ण होता है। यदि विवाह हो जाय तो मकान तक नहीं बनता। कलापूर्ण कार्य के लिए यश, बड़े आदमियों से मेल होता है और जल यात्रा में दुःख के बाद सुख मिलता है।

जब शुक्र कुम्भ का हो तो मनुष्य विद्या, कला-कौशल में धन, यश लाभ पाने वाला, सुन्दर स्त्री से युक्त, सन्तान, माता-पिता की ओर से सुखी, उद्योग में सफलता पाने वाला, अन्य स्त्रियों से सम्बन्धित, विदेश रत, जलयात्रा से सुख तथा लाभ पाने वाला, कामी, राज्य प्रवेशी और निन्दित होता है।

जब सप्तमेश शुक्र सिंह का पंचम स्थान में हो तो शिक्षा कम, साहसी कार्यों में यश, प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक, स्वच्छन्द, उच्चविचार, शत्रुजित्, धन-सम्पन्न स्त्री से विवाह करने वाला तथा स्त्रियों से धन पाने वाला एवं कन्यायें अधिक होती हैं। यात्रा प्रिय, गाने-बजाने, कविता तथा अन्य कलापूर्ण कार्यों का शौकीन होता है। मीन का शुक्र मनुष्य को ज्ञान-विज्ञान की उपाधियों से विभूषित करता है। ये लोग यश तथा धन पाते हैं। इन्हें स्त्री के प्रति विशेष प्रेम नहीं होता, पुत्र की चिन्ता रहती है एवं विदेश यात्रा में अड़चन पड़ती है। वहाँ जाने पर विजाती स्त्री से सम्बन्ध रहता है। ये अपनी अन्तिम अवस्था में धार्मिक, सत्कर्मंग्त, परोपकारी हो जाते हैं और परलोक सुधारने को तपादि के निमित्त एकान्त सेवन के लिये नदी, जलाशय पर चले जाते हैं।

जिसका सप्तमेश शुक्र कन्या का छठे भाव में हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। इसलिये छोटे-छोटे व्यवसाय या नौकरी करनी पड़ती है। इनकी स्त्री सुन्दर तथा झगड़ालू होती है। ये लोग किसी नीच जाति की कन्या से सम्बन्धित होते हैं, निराश प्रेमी होते हैं। इच्छायें बड़ी होने के कारण पूर्ण

नहीं होतीं, प्रायः दुखी रहते हैं। शत्रु-भय बना रहता है, ऋणी रहते हैं। मामा, नाना का सुख नहीं होता। जब मेष का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा कम, स्वभाव क्रोधी, स्त्री से अनबन एवं मामा का सुख रहता है। शत्रु दबे रहते हैं, खर्च अधिक होता है। कामवासना २० वर्ष से पहले ही जाग्रत् हो जाती है। वेश्या गमनादि करते हैं। किसी स्त्री के गुप्त सम्बन्ध द्वारा धन, यश की हानि होती है।

जब सप्तमेश शुक्र तुला वृष का स्वगृही सप्तम में हो तो जातक सुशिक्षित, कलाकार, कवि, लेखक, सम्पादक, नाटयकार, गायन एवं नृत्यकला में निपुण होकर समाज में आदर पाता है। सुन्दराकृति, स्वच्छ, सुगन्धयुक्त वस्त्र धारण करने वाला, सुन्दर, दर्शनीय, धन-धान्यपूर्ण स्त्री से विवाह करने वाला, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होता है। इनकी स्त्री गृह-प्रबन्ध में दक्ष एवं पति सेवक होती है। यह स्वयं धार्मिक, तीर्थ-यात्रा रत, स्वस्थ, इष्ट-मित्रों से युक्त, प्रेम में अधीर, प्रेम विवाह का इच्छुक, कई स्त्रियों पर आसक्त, कामी, प्रमेहादि रोगों से युक्त होते हैं।

यदि सप्तमेश शुक्र वृश्चिक का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। वह सुरापी और अन्यान्य नशे का सेवन करने वाला, पापरत होता है। साहसी, झगड़ालू तथा प्रवासी होता है। विवाह देर में होता है, प्रेम में निराश, स्त्री से कलह, स्त्री मृत्यु पर दूसरा विवाह होता है। इसको अपनी सगी सम्बन्धिनी से कलंक लगता है। यह अपनी मौसी, ताई, चाची आदि से काला मुँह करता है। किसी कुलटा का प्रेम धन-यश की हानि करता है। जब शुक्र मिथुन का हो तो जातक के शिक्षित होने पर भी व्यवसाय ठीक नहीं चलता, चित्त की वृत्ति चंचल रहती है। यह लेखन कला या शिक्षा देकर जीवन यात्रा चलाता है। यह एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम किये जाने के कारण अच्छा गृहस्थी नहीं हो पाता, यात्रा में कष्ट मिलता है। यह बड़ा ही वासनामय होता है।

जिसका सप्तमेश शुक्र धन का नवम हो तो जातक सुशिक्षित कलाकार होकर समाज में आदर, यश तथा धन पाता है। विवाह के बाद भाग्योदय होता है। विवाह में दहेज खूब मिलता है। भ्रातृ सुख रहता है। स्त्री उच्च विचार, गृहकार्य दक्ष होती है। जल, वस्तु, विदेश व्यापार, तीर्थयात्रा से सुख मिलता है, ये लोग

धर्म-कर्म रत होते हैं। पदवृद्धि में अड़चनें आती हैं। जीवन सुखमय रहता है, जब शुक्र कर्क का हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। व्यापार से लाभ होता है, चलचित्त होने के कारण कई स्त्रियों से सम्बन्ध रहता है। अपनी स्त्री से नहीं बनती, भाई से अनबन रहती है। ये लोग छोटे लेख, कहानियाँ गल्प या कवितायें लिखकर जीवन-यापन करते हैं।

जब सप्तमेश शुक्र मकर का दशम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। वह कोई बड़ा कार्य न करके कृषि, छोटे व्यापार, परचूनी की दूकान या अन्य कार्य करते हैं, ये लोग केवल घर के सभी कार्य करने वाली स्त्री से बिवाह करते हैं, किसी के प्रेम में सदा निराश रहते। बुद्धिहीन, कृपण तथा पापरत रहते हैं। किसी अपनी आयु से बड़ी स्त्री के प्रवाह में आकर धन, यश की हानि उठाते हैं : जब सिंह का शुक्र हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, सुशिक्षित, विदेश यात्रा करने वाला, विदेशी कन्या-स्त्री से वासना तृप्ति करने वाला, सुन्दर तथा शिक्षित लड़की से विवाह करने वाला, सरकारी पदाधिकारी, डाक्टर, वकीलादि होता है। साहसी कार्यों में यश पाता है। माता-पिता का सुख कम, यदि जीवित रहें तो अनवन रहे।

जब सप्तमेश शुक्र कुम्भ का एकादश हो तो मनुष्य की शिक्षा साधारण ही रहती है किन्तु कलाकार होने के कारण, कलात्मक वस्तुओं, व्यापार या फिर नौकरी से थोड़ा धन तथा यश पाते हैं। इनको स्त्री अच्छी तथा देर में २४ वर्षोपरि प्राप्त होती है। सन्तान में कन्यायें अधिक, पुत्र चिन्ता रहती है, बड़े भाई से नहीं बनती। सांसारिक उन्नति बड़ी धीमी रहती है। वह धर्म कर्म करने वाला, अन्य स्त्री की इच्छा वाला होता है। किन्तु जब कन्या का नीच का शुक्र हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। कवि, लेखक, गायक, नाटयकार होता है। नौकरी तथा अपनी कला से धन कमाने वाला, कृपण, स्त्री पुत्र सुख से रहित, परस्त्री वार्ता रत, नीच घर की लड़की से सम्बन्धित, प्रेम में निराश, जल यात्रा में कष्ट पाने वाला, चिन्ताओं से ग्रस्त, गुप्त रोगी होता है।

यदि सप्तमेश शुक्र मीन का द्वादश हो तो मनुष्य ऊँचे दिमाग वाला, शिक्षित, धोखे तथा चालाकी से धन कमाने वाला, सुख से जीवन व्यतीत करने वाला, गायक, कवि, लेखक, नर्तकादि कला में निपुण होता है। ये लोग कामी तथा व्यभिचारी प्रकृति के होने के कारण पर स्त्री प्रेम में धन खर्च खूब करते हैं।

इनकी स्त्री स्वभाव की तेज तथा झगड़ालू होती, स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरी स्त्री से भाग्य फलता है, सन्तान चिन्ता रहती है। जलयात्रा में संकट के बाद सुख मिलता है। और जब तुला का शुक्र स्वगृही हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, इष्ट-मित्रों से युक्त, कलाकार, सुगन्धादि से युक्त होता है। स्त्री सुन्दर तथा आज्ञाकारी होती है, नौकरी में सफलता मिलती है। सन्तान सुख रहता है। शत्रु, चोरादि भय रहता है, यदि विदेश यात्रा हुई तो विजाती स्त्री से अवश्य सम्बन्ध कर आते हैं। या फिर बात निभाने को आजन्म अविवाहित रहकर ही काट देते हैं।

सप्तमेश शनि फल

शनि - जिसका सप्तमेश शनि कर्क का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में प्रगति बहुत ही धीमी होती है। शरीर पुष्ट, भाषा मधुर होती है। पेट में पीड़ा, दुर्घटना का खतरा रहता है। यात्रा में कष्ट, स्त्री, बच्चों का सुख अधिक नहीं रहता, माता-पिता से अनबन रहती है। वात पीड़ा, नेत्र, कान में दर्द, भ्रातृ कलह, स्त्री को पीड़ा, गृहहीन होता है। सिंह का शनि हो तो शिक्षा कम, साहसी, लेखक, आफिस में क्लर्क, औफीसरों से लड़ने वाला, पदवृद्धि में रुकावट रहती है। पिता से बिल्कुल नहीं बनती, स्त्री-पुत्र सुख कम रहता है। शेष फल कर्क के समान ही रहते हैं।

जब सप्तमेश शनि सिंह का दूसरे भाव में हो तो शिक्षा अधिक न होने पर भी धन काफी आता है। फिर भी उपकारी प्रवृत्ति होने के कारण वह जमा नहीं हो पाता, शेष धन से मकानादि बना लेते हैं। समाज में आदर पाते हैं, विचार अस्थिर होते हैं। रुचिकर भोजन खूब खाते हैं, स्त्री-पुत्र, कुटुम्बादि की चिन्ता लगी रहती है, मातृ कष्ट तथा बड़े भाई से अनबन, प्रेम में निराशा, व्यापार में हानि रहती है, जब कन्या का शनि हो तो शिक्षा कम होती है, जातक प्रभावशाला, धार्मिक, इष्ट-मित्रों से युक्त, हठी, अहंभावपूर्ण, सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने वाला, घर से निश्चिन्त सा होता है। विवाह हुआ कि न हुआ जीवन, उथल-पुथल से पूर्ण होता है। इसकी माता से नहीं बनती, स्वयं वात रोगी होता है।

जिसका सप्तमेश शनि तुला का उच्च का स्वगृही शुक्र के साथ, मंगल से पूर्ण दृष्ट तृतीय स्थान में हो तो शिक्षा उच्च न होने पर भी समझ अच्छी होती है। सरकारी नौकरी में प्रगति अच्छी करता है किन्तु इसका स्वभाव अपनी स्त्री

के प्रति चिवल्ला तथा निर्लज्जता पूर्ण होता है। इसकी स्त्री कर्कशा, कलहप्रिय, निर्लज्ज, चिवल्ली, हठी, दुराग्रही तथा मस्त होती है। ये दोनों ही आपस में अपनी यौवन सम्पन्न कन्या, पुत्रों का बिना लिहाज किये चिवल्लियाँ करते, छेड़-छाड़ करते हैं, स्त्री तनिक में रोती, तनिक में हँसती, कोप से विकृत होकर कई दिन रोटी न वनाती, न खाती। कभी चोरी से माल पकाकर खाती, दिन भर स्वच्छन्द घूमती, पति के आने का समय समीप पाकर माथा बाँधकर पड़ जाती, रोती, फैल भरती, पति के हाथ की रोटी खाकर सो जाती है। पति को इससे दबकर रहना पड़ता है। सब खुशामद चाहती है। पति-पुत्रों से नहीं बनती जिससे दूसरों को कष्ट हो वही कार्य करती है। अनहोनी बात बनाकर लड़ती है। मार-पीट भी हो जाती है, तो पति को अपशब्दों के साथ पत्थर, लकड़ी से बदला लेकर मोहल्ले को जगा देती है। चरित्र चाहे जैसा भी रहे किन्तु स्वभाव अच्छा नहीं होता। अतिथि से जलती है। देवरों से तथा अन्य इष्ट-मित्रों से द्वेष करती है, किसी से मिलकर नहीं रहती। घर नर्क के समान ही रहता है। पड़ोसियों के मुकाविले के वस्त्रादि न होने पर रात-दिन कलह करती है, किसी शुभ अवसर-त्यौहार पर इनका घर लड़ाई के कारण देखने योग्य ही रहता है, गुस्से से सभी वासन तोड़ देती है। पति के विरुद्ध कार्य करना ही इसका कर्तव्य होता है, यदि दयालु हो जाय तो पड़ोस के वच्चों को प्यार से रखती है। आस्तिक होती है किन्तु दान-धर्म, सत्कर्म कभी नहीं करती। बिगड़ जाय तो वच्चों की डंडे से अच्छी खबर लेती है। और बच्चों की दिन भर की शैतानी पति के आने पर कहती है और उन्हें पिटता देख प्रसन्न होती है। पति घर में आते डरता है किन्तु जब दोनों बात करते हैं तो चिवल्ले ज्ञात होते हैं। पति की दशा यह है कि 'तूहीं माता तूही पिता तूही घर की जोय, तेरा कहा न माने तो तेरा ही जना होय।' स्त्री की दशा, 'त्रिया चरित्र जाने नहीं कोय पति मारके सत्ती होय।' स्थूल शरीर भार न सँभाल सकने वाला मन होता है। चाहे किसी को कितना ही दुख पहुँचे इसे सदा ही अपना मनमाना करना है, पति को इज्जत का विचार तक नहीं आता।

यदि सप्तमेश शनि कन्या का तीसरे भाव में हो तो शिक्षा अच्छी रहती है। नौकरी करनी पड़ती है। ये लोग नीच प्रकृति स्त्रियों की कमाई खाने वाले,

ल्माट होते हैं। स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है, जो कि उसी के साथ भाग जाती है। इसको उसी स्त्री के कारण संकट में पड़ना पड़ता है, विदेश यात्रा में लांछन, सन्तान कम होती है। भाग्य से बुरे दिन आते हैं, मृतपुत्र होते हैं। ऐसे व्यक्ति से घबराकर गृहत्याग देते हैं या आत्मघात कर लेते हैं। तुला में शनि होने से शिक्षा पूर्णतया अपूर्ण दो प्रकार की पाई जाती है, लोग नौकरी तथा व्यापार दोनों में पाये जाते हैं। इनकी प्रकृति कृपण होती है, भ्रातृ मृत्यु, माता को गर्भपात होते हैं। इनके चरित्र तथा बातों में बनावट होती है, ये रूढ़िवादी होते हैं, खर्च करना पड़े तो नास्तिक अन्यथा सूखे आस्तिक होते हैं। इनकी बीबी झगड़ालू, कलह करने वाली, कुलटा होती है, यदि स्त्री सुलक्षण हुई तो स्वसुर से धन के कारण लड़ाई रहती है, दोनों एक दूसरे के शत्रु रहते हैं। सन्तान कम होती है, ये स्वयं किसी अन्य जाति की स्त्री में रत रहते हैं। सेवा भाव दर्शाते हैं किन्तु सेवा नहीं करते। विवशता में बात रखते हैं। दाँत, कान में वायु पीड़ा होती है। भाइयों में दिखावटी मेल, दूर रहकर ही रहता है।

जिसका सप्तमेश शनि तुला का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग डाक्टर, वकील, प्रोफेसर तथा सरकारी नौकर होते हैं, माता रोगिणी, पिता से अनबन रहती है। शत्रु सदा दबे रहते हैं। और वह स्वयं भी वायु रोग से पीड़ित रहता है। विवाह नहीं भी होता, कभी-कभी दो विवाह भी होते हैं, जमीन, मकान का सुख रहता है, जल यात्रा में सुख रहता है। धन लाभ होता है, बच्चे दुर्बल हृदय होते हैं और जब शनि वृश्चिक का हो तो शिक्षा अपूर्ण होती है, मनुष्य क्रोधी, सरकारी नौकर, पैतृक सम्पत्ति से वंचित, नीच संगतिरत, शस्त्र-शत्रु, अग्नि से कष्ट पाने वाला, माता-पिता से दूर रहनेवाला, सैनिक कार्य में पद, यश पाने वाला बहादुर होता है, प्रेम में दुख, निराशा, घोर आपत्तियों से युक्त, चालाक, मलिन मन, उदास तथा घर से दूर रहनेवाला होता है।

जब सप्तमेश शनि वृश्चिक का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। उसका स्वभाव झगड़ालू, बदला लेने वाला, दुष्ट होता है। ये लोग छोटी-छोटी नौकरियाँ करते हैं। स्वार्थ के वशीभूत होकर सामाजिक कार्य भी करते हैं। और अपयश पाते हैं। नीच संगति में रहते हैं। किसी साहसी कार्य में यश भी पाते हैं। स्त्री बीमार, बच्चों का सुख कम होता है, व्यापार में हानि होती

है। अनेक कष्ट पाने पर बड़ी धीमी उन्नति होती है। जब धन का शनि होता है, तो मनुष्य उच्च विचार, शिक्षा से पूर्ण, पुष्ट शरीर, ऐथलीट, किन्तु नौकरी में धीमी उन्नति करने वाला, कई जगह नौकरी छोड़कर करने वाला, स्त्री, बच्चों के सुख से सुखी, माता-पिता से सुखी, दो कार्यों से एक साथ धन कमाने वाला, हंसमुख, एक दिन बड़ा आदमी होता है। तीर्थयात्रा करने वाला, धार्मिक वृत्ति होता है। शत्रुजित् होता है। कभी-कभी स्त्री के पेट में पीड़ा होती है। किसी गुप्त रोग का रोगी होता है।

यदि सप्तमेश शनि धन का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा बहुत ही कम किन्तु समझ या स्मरण शक्ति अच्छी होती है। नौकरी करनी पड़ती है। उन्नति बहुत ही कम होती है। स्त्री अच्छी मिलती है। पुत्र की चिन्ता बनी रहती, सन्तान होकर कम जीवित रहती है। जमीन-जायदाद का सुख, भाई-बन्धुओं से झगड़े के कारण प्रेम कम होता, शरीर दुर्बल तथा रुक-रुक कर बीमारी आती हो रहती है। कभी-कभी कर्ज भी लेना पड़ता है। चित्त में खिन्नता रहती, ननिहाल का सुख नहीं मिलता, शत्रु होते हैं, किन्तु दबे रहते हैं। मकर का शनि, शिक्षा के कम होने पर भी, चालाकी, धोखे, नीति आदि से बढ़ने का प्रयत्न करते हैं और सफलता पाते हैं। नीच जाति की स्त्री से प्रेम होता है। विवाह देर में होता है। स्त्री से कलह तथा गार्हस्थ्य जीवन दुखित रहता है। मन्दबुद्धि. मुकदमों का जीतने वाला, कामी, विषयी, सन्तान चिन्ता रत रहता है। रोगी होता है। खर्च करना पड़ता है। किसी के विश्वास घात द्वारा धन, यश की हानि होती है।

जिसका सप्तमेश शनि मकर का सप्तम हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। वकील, जज, कानूनगो, पटवारी आदि भी होते, व्यापार में भी प्रगति होती है। स्त्री कुछ सुन्दर नहीं होती और कम बात करती है, द्विभार्या योग होता है, दूसरी पत्नी के आने पर उन्नति होती हैं, किन्तु उससे विचार-विनिमय नहीं होता, पैतृक सम्पत्ति तथा माता का सुख कम होता है। इनकी वासनायें प्रबल होती हैं। शरीर दुर्बल तथा वातरोगी होता है। कुम्भ का शनि शुभ शिक्षा प्रदान करता है। जातक को धन, यश, सम्मान, विद्या द्वारा प्राप्त होता है। मित्रों का सहयोग रहता है, जलयात्रा में सुख मिलता है। इसका विवाह शुभ लक्षणों से युक्त धनिक घर में होता है, स्त्री का स्वभाव झगड़ालू तथा निज को वातरोग रहता है।

जब सप्तमेश शनि कुम्भ का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। नौकरी से जीवन-यापन करना पड़ता है। वृद्धावस्था में धन कष्ट होता है। स्त्री से अनबन रहती है। नौकरो में उन्नति कम होती है। पिता से नहीं बनती, सन्तान चिन्ता रहती है। शत्रु दबे रहते हैं। विदेश यात्रा में कष्ट मिलता है। कुटुम्बियों से नहीं पटती, जीवन दुखित रहता है। मीन का शनि शिक्षा कम देता है। मनुष्य भाग्य से निराश, उदास होकर आत्म-हत्या की सोचता है। यह अपने इष्ट-मित्रों द्वारा ही धोखा खाता है। स्त्री-बच्चों का कुछ सुख नहीं होता, परेशान रहता है। विवाह बड़ो आयु में बड़ी अवस्था की लड़की से होता है। नौकरी में उन्नति कम, व्यापार में लाभ कम होता है, जीवन भार बन जाता है। स्त्री की मृत्यु किसी लम्बी बीमारो या दुर्घटना से होती है, जिसमें ऋण लेना पड़ता है। जीवन दीर्घायु तथा दुखी रहता है।

यदि सप्तमेश शनि मीन का नवम हो तो जातक की शिक्षा सुख पूर्वक अच्छी होती, है राज्यपदाधिकार प्राप्त होता है, स्त्री सुन्दर, उच्चविचार, आवेशपूर्ण होती है। ये लोग रूढ़िवाद से पृथक् प्रेम-विवाह, जाति-पाँति से मुक्त चाहते हैं, विदेश यात्रा के समय अपनी सभी कामेच्छाओं को तृप्त कर आते हैं। इनके धार्मिक विचार दूषित होते हैं। शत्रु दबे रहते हैं, भाइयों से नहीं बनती, जबकि शनि मेष का होता है तो जातक नीच प्रकृति, शिक्षा पूर्ण नहीं होती, नास्तिक होते हैं। अन्तर्जातीय विवाह पसन्द करते हैं। नोचों की संगति में रहते, रक्तदोष से पीड़ित, विदेश यात्रा में कष्ट पाते हैं, विवाह के बाद ऋणी ही रहते हैं।

जिसका सप्तमेश शनि मेष का दशम हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। राज्यपदाधिकार प्राप्त होता है। माता-पिता का वियोग या कलह रहता है, विवाह देर में होता है। स्त्री रागी रहती है। द्विभार्या योग भी होता है। दादलाई जायदाद का सुख नहीं होता, बीमारी में रुपया खर्च होता है, सन्तान चिन्ता रहती है, जब शनि वृष का दशम हो तो मनुष्य कुछ क्रोधी होता है और अपने उद्योग, मानसिक, परिश्रम से लेखन कला द्वारा धन, यश, सम्मान प्राप्त करता है, किन्तु धन-धान्य पूर्ण नहीं हो पाता, स्त्री सुशील होती है, इष्टमित्रों से कष्ट मिलता है। द्विभार्या योग होता है। पोष्यपुत्र से सुख मिलता है। इनका अवैध सम्बन्ध किसी वृद्धा से होता है। ये लोग नीच संगति में यश पाते हैं।

जब सप्तमेश शनि वृष का एकादश हो तो जातक शिक्षित बुद्धि द्वारा धन कमाने वाला, व्यापारी या लेखक होता है। यात्रा रत रहता है, इसकी स्त्री सुन्दर, सुगन्धि युक्त, शौकीन तबीयत होती है, किन्तु उसका सुख कम मिलता है। ये लोग लोभी तथा कृपण होते हैं, और शत्रु से प्रतिशोध की भावना रखते हैं। सन्तान की चिन्ता रहती है। शरीर रोगी रहता है। वायु-पित्त, कफ से पीड़ित होते हैं और जब शनि मिथुन का हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है, नौकरी इच्छा के विरुद्ध करनी पड़ती है। अफसरों से नहीं बनती, इसलिए उन्नति नहीं हो पाती। जीवन भर सन्ताप रहता है। स्त्री, बच्चों का सुख नहीं या कम रहता है। सच्चे मित्र इन्हें नहीं मिलते, धोखा पाते हैं। ४८ वर्षोपरि कुछ शान्ति प्राप्त होती है, समस्त जीवन कष्टमय ही रहता है। माता-पिता, भाई-बन्धुओं से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, घर से बाहर रहना पड़ता है।

यदि सप्तमेश शनि, मिथुन का द्वादश हो तो शिक्षा अच्छी होती है। कुशाग्रबुद्धि होने के कारण शीघ्र प्रगति करते हैं। वकील, न्यायाधीश तथा राज्य प्रमुख होते हैं। जेल यात्रा में यश पाते हैं। चंचल चित्त होते हैं। अभाग्य से अपनी उथल-पुथल देखनी पड़ती है। कोई-कोई बड़े क्रान्तिकारी होते हैं, जो कि यशस्वी होकर मरते हैं। जब कर्क का शनि हो तो जातक के बहुत कुछ फल मिथुन से मिलते हैं, किन्तु इनके पेट, पेड़ू में दर्द, गुर्दे का दर्द, यात्रा में कष्ट, विशेषकर यात्रा में जीवन भय रहता है। अस्थिर प्रकृति होने के कारण अपना व्यवसाय तथा निवास स्थान बदलते रहते हैं। स्त्री, बच्चों की चिन्ता रहती है। इनकी वृद्धावस्था कष्टमय व्यतीत होती है। इनकी उद्योग में सफलता कम ही मिलती है, इनके शत्रु होते हैं, भाग्य मन्द रहता है, इष्ट मित्रों से नहीं बनती। उदास रहते हैं, ऋण चिन्ता लगी रहती है।

अष्टमेश सूर्य फल

सूर्य—जिसका अष्टमेश सूर्य, मकर का लग्न में हो तो वह मन्द बुद्धि होता है। शिक्षा कम होती है। पिता-पुत्र की नहीं बनती, स्त्री बीमार रहती है। आवेशपूर्ण, पित्तरोगी, नेत्र पीड़ा होती है। यात्रा में कष्ट, द्विभार्या योग

होता है। असफलता के कारण मानसिक व्यथा बनी रहती है। हाथ लपक की आदत होती है। मुकदमें में धन खर्च होता है।

जब अष्टमेश, सूर्य कुम्भ का दूसरे भाव में हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। फिर भी धन कमाता है। किन्तु कृपणता के कारण उसका उपयोग नहीं कर पाता, इसलिये समाज में आदर नहीं मिलता, स्त्री-पुरुषों से त्रास मिलता है। हृदयरोग से पीड़ित रहता है। वृद्धावस्था में दुर्गति होती है। रक्तपित्त के रोग से मृत्यु होती है।

यदि अष्टमेश, सूर्य मीन का पराक्रम भाव में हो तो जातक साहसी कार्य में यश पाने वाला, अपूर्ण शिक्षित होता है। भ्रातृ मारक या बन्धु द्वेषी होता है : भाग्य मन्द रहता है, उन्नति नहीं होती। रक्त-पित्तादि दोष के कारण शरीर कष्ट, कान में दर्द, लेखन-कला निपुण, जल यात्रा में आनन्द लेने वाला, गुप्त प्रेमी, कलाकार होता है।

जिसका अष्टमेश, सूर्य मेष उच्च का चतुर्थ हो तो वह शिक्षित होता है। कुशल प्रबन्धकर्ता, सरकारी नौकरी करनी पड़ती है। किन्तु प्रसन्न नहीं रहते, उन्नति बहुत कम होती है। ४० वर्षोपरि माता-पिता आदि से नहीं बनती, पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती, स्त्री-पुत्रादि का सुख नहीं होता, जीवन की उथल-पुथल के बाद उन्नति करता, यश पाता है।

जब अष्टमेश, सूर्य वृष का पंचम में हो तो जातक सुशिक्षित, राज्य भाषा का ज्ञाता, पढ़ाई अड़चनों के बाद पूर्ण करता है। ये लोग अनुसन्धान की प्राप्ति के लिए जीवन लगाने वाले होते हैं, यश पाते हैं, संतान के लिए भारी होते हैं, नौकरी में प्रगति करते हैं। कामी होते हैं। स्वार्थी, कृपण होते हैं। व्यापार या अन्य व्यवसाय से भी धन कमाते हैं।

यदि अष्टमेश सूर्य मिथुन का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। व्यापारादि करते हैं। दो कार्य एक साथ सफलता पूर्वक कर सकते हैं। शत्रु भय, गुप्त रोग, सर्पादि विषतन्तु भय होता है। ऋणी रहते हैं। मामा-ननहाल सुख नहीं होता, पाक कला में निपुण होते हैं। सेवा कार्य अच्छा करते हैं। राजाधिकारियों से विरोध रहता है।

जिसका अष्टमेश सूर्य कर्क का सप्तम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग डाक्टर, वकीलादि होकर धन, यश पाते हैं, जल यात्रा सुख से होती है, स्त्री सुशील तथा गुणी होती है, किन्तु रोगी रहती है। अधिकारियों से प्रेम, मित्र विरोध रहता है। विवाह देर में होता है, सन्तान कम होती है। द्विभार्या योग भी पाया जाता है।

जब अष्टमेश सूर्य अष्टम सिंह का स्वगृही हो तो जातक रुक-रुक कर शिक्षा पूर्ण करने वाला, सरकारी नौकर, धूर्त, व्यर्थ विवादी, कपटी, निन्दक, उसकी स्त्री पतिव्रता नहीं होती, दुहरी आय वाला, गुप्त रोगी, आत्मविश्वासी मुँह फट होता है।

यदि अष्टमेश सूर्य कन्या का नवम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, आवेशपूर्ण होने के कारण औफीसरों से नहीं बनती, उन्नति कम होती है, कायदे कानून का पाबन्द तथा वृद्धावस्था में सुखी होता है। विवाह नहीं होता, यदि हो तो स्त्री बिमार रहती है। स्वतन्त्र धार्मिक, यात्रा प्रिय, बन्धु विरोधी तथा लाभ में कठिनता रहती है।

जिसका अष्टमेश सूर्य तुला नीच का दशम में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, व्यापार में प्रगति होती है। सरकारी नौकरी कम होती, स्त्री सुन्दर तथा सन्तान सुख से सुखी होता है। मांसाहारी, वेश्यागामी, परस्त्रीरत होता है। माता-पिता, भाई-बन्धु का अच्छा सुख रहता है। दादलाई पैतृक सम्पत्ति का सुख रहता है, अहं अधिक हो।

जब अष्टमेश सूर्य वृश्चिक का एकादश हो तो जातक की शिक्षा कठिनता से पूर्ण हो जाती है। वह डाक्टर, वकील तथा कुशल व्यापारी हो सकता है, ये लोग तार्किक तथा स्वार्थी होते हैं। सन्तान काफी होते हैं। बड़े भाई से विरोध रहता है। विष, अग्नि, शस्त्र भय रहता है। प्रथम पुत्र सन्ताप भी हो सकता है। निगमादि चुनाव में जीत, यश मिलता है।

यदि अष्टमेश सूर्य धन का द्वादश हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। रोग के कारण धन खर्च होता है। पिता तथा इष्टमित्रों से नहीं बनती, नेत्र पीड़ा, पित्तादि रोग होते हैं। स्त्री अच्छी होती है किंतु अनबन रहती। शत्रु-जित, विरोध वार्ता करने वाला, ऋणी, चिन्तातुर तथा जल यात्रा में जीवन भय रहता है।

अष्टमेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका अष्टमेश पूर्ण चन्द्र धन का लग्न में हो तो मनुष्य कलाकार, धार्मिक, शिक्षक, सुन्दराकृति, मधुर वाणी, दर्शनीय, सुन्दर स्त्री वाला, धन-धान्य युक्त, कवि, लेखक तथा पर-स्त्री वार्ता में चतुर, लज्जित स्वभाव होता है। क्षीण चन्द्र, चंचल स्वभाव, कम शिक्षा, आवेश पूर्ण, प्रेम विवाह रत होते हैं, इन्हें सांसारिक सुख कम होता है।

जब अष्टमेश पूर्ण चन्द्र मकर का धन भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती हैं, वे कायदे-कानून के ज्ञाता, डाक्टर, वकील आदि होकर धन तथा यश पाते हैं। इनका घरेलू जीवन सुखमय नहीं होता, इनके व्यवसाय को एक बार धक्का अवश्य पहुँचता है। यदि क्षीण चन्द्र हो तो शिक्षा कम होती है। स्त्री से नहीं बनती, प्रवास में रहना पड़ता है। व्यापार में अस्थिरता, स्वयं को नजला, वायु-रोग, धन की कमी, नीच संगति, कामी होता है।

यदि अष्टमेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का तीसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, किन्तु मस्तिष्क शक्ति अच्छी होती है। इसलिये कला और साहित्य में प्रेम रखते हैं। यात्राप्रिय होते हैं। जल यात्रा या तैरने में सुख पाते हैं। स्त्री-पुत्र का सुख कम तथा भ्रातृ प्रेम होता है। जब चन्द्र क्षीण हो तो शिक्षा कम, भ्रातृ कलह, बन्धु हानि, जल यात्रा में प्राण संकट, मन्दभागी, आलसी, पर पुत्र से प्रेम करना पड़ता है।

जिसका अष्टमेश पूर्ण चन्द्र मीन का चतुर्थ स्थान में हो तो जातक गुणवान्, शिक्षित, कार्यकुशल, साहिबे-जायदाद, जल वस्तुओं से लाभान्वित, माता-पिता का भक्त, स्त्री तथा पुत्र से सुखी, कृषि कर्म तथा तरल पदार्थों से लाभ पाता है। जब चन्द्र क्षीण हो तो शिक्षा कम, माता-पिता का विरोधी, पैतृक सम्पत्ति से वंचित, राज्य भययुक्त, जल से भय खाने वाला, जल यात्रा में प्राण संकट होता है और स्त्री का सुख नहीं होता।

जब अष्टमेश पूर्ण चन्द्र मेष का पंचम में हो तो जातक शिक्षित होता है। कोई-कोई उच्च शिक्षा प्राप्त कर धन तथा यश पाता है। शेष क्लर्की करते हैं। इनकी कल्पना ऊँची, किन्तु आत्मविश्वास रहित होती है। ये कलाकार, कवि, लेखक, चलचित्त होते हैं। जिस कारण अपना व्यवसाय बदलते रहते हैं। स्त्री

सीधी तथा हठी होती है। पुत्र सुख कम, कन्या अधिक होती हैं। क्षीण चन्द्र के होने पर शिक्षा कम, स्त्री-पुत्र सुख कम, यात्रा में कष्ट, नजला-जुकाम, जलोदरादि रोग होता है। जीवन साधारणतया कष्टमय व्यतीत होता है।

यदि अष्टमेश पूर्ण चन्द्र वृष का छठे घर में हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। ये लोग छोटी नौकरी करते हैं। सेवा कार्य, होटल (शुल्क विश्रामालय), अस्पतालादि में अच्छा कार्य करते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है। क्रोधी तथा घमण्डी होते हैं। क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा नहीं होती, मनुष्य आलसी, मन्दाग्नि युक्त रोगी होता है। जलयात्रा या तैरने में प्राण संकट रहता है, विवाह यदि हो तो स्त्री मर जाती है, दुराचारी तथा क्रोधी होता है।

जिसका अष्टमेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का सप्तम भाव में स्थित हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, वकालत में धन तथा यश दोनों मिलते हैं। स्त्री के यहाँ से दहेज अच्छा मिलता है, यात्रा में सुख मिलता है, समाज में आदर होता है। शरीर स्वस्थ रहता है। जीवन साधारण अच्छा रहता है, जब चन्द्र क्षीण होता है तो शिक्षा कम होती है। व्यभिचारी प्रकृति होने से अपयश मिलता है, स्त्री से अनबन रहती है, जलयात्रा में प्राण संकट रहता है। घर से दूर रहना पड़ता है।

जब अष्टमेश पूर्ण चन्द्र कर्क का स्वगृही अष्टम में हो तो जातक शिक्षा पूर्ण न होने पर भी दार्शनिक, ईश्वर भक्त, पुजारी, शुभ कर्म रत रहता है। इन्हें स्त्री-बच्चे हुए तो भी उनसे प्रेम कम होता है। नौकरी छोटी मिलती है। जलवस्तु व्यापार से लाभ तथा जल क्रीड़ा में सुख मिलता है। यदि क्षीण चन्द्र हो तो मनुष्य नास्तिक, पाप कर्म रत, नीच संगति, कामी, दुर्बल देह, रोगी होता है। शिक्षा नहीं होती, दैनिक वेतन पर गुजर करनी पड़ती है, स्त्री बच्चों का सुख नहीं होता, जल भय रहता है। तैरने में डुबकी खानी पड़ती है। इष्ट-मित्रों का विरोध तथा ऋण चिन्ता रहती है।

यदि अष्टमेश पूर्ण चन्द्र सिंह राशि का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग अच्छे कवि, लेखक तथा प्रकाशक हो सकते हैं, प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रेमी वन विहार करने वाले, अच्छे शिक्षक, धन-धान्य युक्त होते हैं। अन्तिमावस्था में अवश्य कहीं धन प्राप्त होता है, यश मिलता है। ये

लोग प्रेम के मामले में सतर्क तथा सिनियर होते हैं। धार्मिक वृत्ति तथा भाई-बहन के सुख से सुखी होते हैं, क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य की शिक्षा कम होती है, इसलिए व्यवसाय की चिन्ता बनी रहती है। भाई-बहनों का सुख कम होता है। यात्रा में कष्ट तथा नीच संगति में सुख मानने वाला होता है। प्रेम में निराशा और स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है।

जिसका अष्टमेश पूर्ण चन्द्र कन्या का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, वह कलापूर्ण साहित्य का जानने वाला, सबका प्रिय, नम्र, विनीत, राज्य में पदाधिकार पाने वाला, माता-पिता के सुख से सुखी, पैतृक सम्पत्ति पाने वाला, सुसज्जित मकान से युक्त होता है। इसकी स्त्री सुन्दर तथा सुशील होती है। इष्ट-मित्रों से युक्त, जीवन सुख से व्यतीत होता है। किन्तु क्षीण चन्द्र के होने से मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, अभिमानी तथा चल-चित्त होता है, कामी तथा विलास प्रिय होने के कारण अपयश मिलता है। स्त्री कुरूप तथा कलह प्रिय होती है। पिता का ऋण उसको देना पड़ता है। नौकरी में उन्नति कम होती है। अफसरों से अनबन रहती है। जीवन व्यर्थ एवं सन्ताप युक्त बना रहता है।

जब अष्टमेश पूर्ण चन्द्र तुला का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, इसलिए ये लोग यशस्वी, डाक्टर, वकील, न्यायाधीश अथवा उच्च कोटि के स्वतन्त्र व्यवसायी या पदाधिकारी होते हैं। धार्मिक वृत्ति, समाज सेवी, धन-धान्य पूर्ण, स्त्री-पुत्र के सुख से सुखी रहते हैं। तीर्थयात्रा करने वाले, सत्कर्मी, धार्मिक होते हैं। अपना धन परोपकार में खर्च करने वाले होते हैं, किन्तु क्षीण चन्द्र इन सभी उपर्युक्त बातों में विरोध करता है। मनुष्य निरुत्साही, कुसंगति, ऋणी, स्त्री-पुत्र चिन्ता से युक्त, रोगी, बड़े भाई से कलह रखने वाला होता है।

यदि अष्टमेश पूर्ण चन्द्र वृश्चिक नीच का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में बहुत वर्षों तक क्लर्क ही रहना पड़ता है, अन्तिम समय में स्थिति अच्छी हो जाती है, पेन्शन सुख से तथा थोड़े समय ही मिलती है। स्वभाव में कुछ क्रोध रहता है। शत्रु बहुत हो जाते हैं। स्त्री खर्चीली होती है, मृत्यु के समय अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। क्षीण चन्द्र के होने से शिक्षा बहुत ही कम होती है। क्रोध बहुत आता है। आँखों की

ज्योति शनैः-शनै क्षीण होती रहती है। शत्रु अधिक, तथा चोरी का भय रहता हैं। पराधीनता में दिन व्यतीत होते हैं, किसी स्त्री के प्रेम में अपयश मिलता है। रेस, जुआ, सट्टे आदि में धन खाने वाला, जीते जी अपनी उथल-पुथल देखने वाला, यात्रा में कष्ट पाने वाला, क्रूरकर्मी होता है।

अष्टमेश भौम फल

मंगल—जिसका अष्टमेश मंगल मेष का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, वह पुलिस और सेना विभाग में अच्छी प्रगति करता है। साहसी तथा बहादुर और इतने चतुर होते हैं कि खुली रिश्वत लेने में अपने औफीसरों से नहीं डरते, माता और स्त्री को कष्ट रहता है। द्विभार्या योग हो सकता है। स्वयं को रक्तविकार, रक्तचाप, अर्शादि रोग रहते हैं फिर भी स्वास्थ्य सुन्दर दिखाई पड़ता है, जमीन जायजाद का सुख तथा कृषि, बागादि कार्य से लाभ रहता है। और जब कन्या का मंगल होता है तो शिक्षा बहुत हो कम या नहीं भी होता, उसका उद्योग निष्फल सा रहता है। कमाता है, कृपण होने के कारण भाग्य से निराश, उदास रहता है। उदार वृत्ति नहीं होती, इष्ट मित्र, माता-पिता सबसे अनबन रहती है। स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, ये लोग स्नायु पीड़ा से विकल रहते हैं, सिर में भी दर्द रहता है। किसी की बुराई उसके मुँह पर करने से नहीं चूकते, स्वार्थी तथा ठग प्रकृति के होते हैं, सुख सामान्य रहता है।

जब अष्टमेश मंगल वृष का दूसरे भाव में हो तो मनुष्य की शिक्षा अधूरी रहती है। इसलिये छोटे-बड़े सभी व्यवसायों द्वारा कार्य करना पड़ता है, यह अधीर, आवेश पूर्ण, कामी होता है। यह क्रोध के समय पागल-जैसा व्यवहार करता है। स्त्री-वियोग, उसके जीते जी ही होता है, सन्तान को कष्ट होता है। भाग्य मन्द ही रहता है। स्नायु, रक्त पीड़ा होती है, किन्तु जब तुला का मंगल होता है तो शिक्षा पूर्ण न होने पर भी धन अच्छा कमाते हैं, जमीन जायदाद का सुख उपभोग करते हैं और किसी-किसी केस में देखा गया है कि ये लोग पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर डाक्टर, वकील तथा उच्च श्रेणी के सरकारी कर्मचारी, क्लर्कादि भी होते हैं। प्रेम के मामले में निराश, उदास तथा विवाह के बाद कष्ट, स्त्री से अनबन, सन्तान से दुःखी, द्विभार्या योग भी हो सकता है।

यदि अष्टमेश मंगल मिथुन का तीसरे घर में हो तो जातक शिक्षित, कलापूर्ण तथा स्वतन्त्र व्यवसाय प्रिय होता है। सरकारी नौकरी में दुखी रहता है। चाहे पदाधिकारी ही क्यों न हो। यात्रा प्रिय, घर से बाहर रहने वाला, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, शत्रुजित्, इष्ट-मित्रों से पृथक्, बाल की खाल निकालने वाला, स्पष्ट वक्ता, पिता से कलह तथा मातृ सुख से सुखी होता है। छोटे भाई से नहीं बनती, सम्पत्ति वितरण में झगड़ा होता है। और जब वृश्चिक का स्वगृही होता है तो मनुष्य शिक्षित, प्रतापी, उद्योगी, साहसी, पुलिस, सेना में पदाधिकारी, यात्राप्रिय, शत्रुजित्, राज्य में पारितोषिक पाने वाला, स्त्री सन्तान से सुखी, प्रेम में अपयश पाने वाला, अच्छा सर्जन तथा चतुराई से कार्य निकालने वाला चालाक व्यक्ति होता है।

जिसका अष्टमेश मंगल कर्क या नीच का चतुर्थ स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी इच्छा के विरुद्ध करनी पड़ती है। खेती, जल वस्तुओं से लाभ होता है। माता-पिता, स्त्री से अनबन रहती है। माता की मृत्यु भी हो सकती है। यदि विवाह हुआ तो स्त्री को गर्भपात होते हैं। घर का मकान अन्तिमावस्था तक अवश्य होता है। गप्पी होने के कारण गुप्त शत्रुओं से कष्ट पाते, जलयात्रा में कष्ट होता है, तैरने में प्राण संकट उत्पन्न होता, मन्दाग्नि रहती है। इसका सम्बन्ध नीच जाति की स्त्री से होता है। धन का मंगल उच्च शिक्षा देकर, समाज, राजनीति, राज्य में पदाधिकार द्वारा धन, यश प्रदान करता है। ये लोग धार्मिक, जप-तप करने वाले, ज्योतिषादि में प्रवीण, माता-पिता, स्त्री-पुत्रादि का सुख नहीं होता, मृत्यु उसकी हुई तो कलह अवश्य ही रहती है। घरेलू जीवन दुखी रहता है, दो विवाह हो सकते हैं। ये लोग स्वबुद्धि-अनुसार अच्छा आदर पाते हैं।

जिसका अष्टमेश मंगल सिंह का पंचम भाव में हो तो उस जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग कुशल डाक्टर, सर्जन तथा राज्य पदाधिकारी होकर धन तथा यश प्राप्त करते हैं, साहसी, पराक्रमी होने के कारण सेना, पुलिस विभाग में अग्रसर होते हैं, इन्हें क्रोध बहुत आता है, शत्रु दबे रहते हैं। स्त्री बच्चों का सुख कम होता है, जीवन की उथल-पुथल के बाद अपनी योजना से धन कमाने में सफल होता है, किसी के प्रेम में निराश होना पड़ता है। रक्त सम्बन्धी अनेक

बीमारियाँ होती हैं, खर्च अधिक होता है, जब उच्च का मकर राशि गत मंगल हो तो उपर्युक्त फल के साथ मनुष्य धार्मिक, कलाकार, भूमि सम्बन्धी, जल विभाग में कार्य करने वाला तथा व्यापार में धन-धान्य से लाभ पाने वाला, छलिया, चालाक होता है। इसका सम्बन्ध किसी नीच स्त्री से होता है, विवाह यदि हुआ तो स्त्री की मृत्यु हो जाती है। इसको गुप्त शत्रुओं से हानि पहुँचती है। ये लोग लेखक या गाने-बजाने के शौकीन होते हैं।

जब अष्टमेश मंगल कन्या का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। इसलिए क्लर्क या छोटे व्यापार से जीवन-यापन करते हैं। मामा आदि के लिये भारी होते हैं, या उनसे कलह रखते हैं। शत्रु दबे रहते हैं। इनकी स्त्री, पुत्र, इष्ट-मित्र किसी से नहीं बनती, ये लोग जीवन से निराश तथा उदास रहते हैं, किसी नीच की संगति में अपयश पाते हैं। स्नायु पीड़ा, रक्त विकार या पित्त प्रकोप होता है और जब कुम्भ का मंगल हो तो मनुष्य तार्किक अचल वक्ता, बात के परिणाम पर पहुँचने वाला, हस्तरेखा, ज्योतिषादि का ज्ञान रखने वाला, सफल प्रेमी, स्त्री से झगड़ा करने वाला, मामा से लड़ने वाला, कामी, पापवृत्ति, ऋणी, जलयात्रा में जीवन भय पाने वाला, कुसंगति होता है।

यदि अष्टमेश मंगल तुला का सप्तम हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। छोटे व्यवसायों से जीवन-यापन होता है। कृषि जंगलात का ठेका, घास पूला आदि कार्यों में सफलता मिलती है। स्त्री-सन्तान सुख कम, स्त्री को गर्भ पात होते हैं। राज्याधिकारियों से अनबन, शरीर अस्वस्थ तथा धन की कमी रहती है, विदेश यात्रा या जल क्रीड़ा में कष्ट होता है। जब मीन का मंगल होता है तो मनुष्य सुशिक्षित, उच्च विचार, डाक्टर, सर्जन, इंजीनियरादि होकर मनुष्य देश-विदेश की यात्रा से धन-यश लाभ करता है, कामी होता है। अपनी स्त्री से नहीं बनती, प्रवास में रहना पड़ता है। रक्तविकार, पित्तविकार, हृद्रोग होता है, अन्त में ऋणी होकर मरना पड़ता है। सन्तान से कष्ट मिलता है। प्रारम्भिक जीवन चाहे जैसे भी रहे किन्तु बूढ़ावस्था दुखमय व्यतीत होती है।

जिसका अष्टमेश मंगल वृश्चिक का या मेष में से किसी का भी अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, वह दीर्घायु होता है और अनेक व्यव-

साय द्वारा जीवन-यापन करता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। कृषि, पुलिस या सेना का सिपाही रहकर ही कार्य करना पड़ता है, ये लोग पराक्रमी, हिम्मती, शत्रु पर विजय पाने वाले, रक्त दोष से पीड़ित, स्नायु पीड़ा से ग्रसित, अर्शादि रोग के रोगी होकर मरते हैं। इनको अस्त्र-शस्त्र, अग्नि भय सदा ही लगा रहता है। यात्रा कभी सुख मय नहीं रहती, ऋणी रहते हैं, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धुओं से नहीं बनती। इनकी दशा वृद्धावस्था में शोचनीय होती है। जीवन भार मालूम होता है। जिस कारण कोई-कोई आत्म-हत्या तक कर बैठते हैं।

जिसका अष्टमेश मंगल धन का नवम या भाग्य स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, धार्मिक, सत्कर्मी, सरकारी नौकरी में शनैः-शनैः उन्नति करने वाला, निडर सामाजिक होता है, उत्सवों में खर्च करता है। माता तथा भाई से कम बनती है। यदि विदेश यात्रा हुई तो सफलता मिलती है, विवाह में दहेज अच्छा मिलता है। ये लोग यात्रा प्रिय होते हैं। यदि वृष का मंगल हो तो शिक्षा अच्छी होती है, क्रोध अधिक होता है। माता-स्त्री से नहीं बनती, ये लोग अत्यधिक कामी तथा लम्पट प्रकृति के होते हैं तथा अन्तर्जातीय विवाह में विश्वास रखते हैं, कभी-कभी इसी हठ में जीवन भर अविवाहित हो रह जाते हैं और गुप्त शत्रुओं द्वारा धन-यश की हानि पाते हैं।

जब अष्टमेश मंगल मकर का दशम या राज्य स्थान पर हो तो जातक शिक्षित तथा साहसी होता, पराक्रम से उद्योग में सफलता पाता है। सरकारी नौकरी, पुलिस-सेना विभाग में अच्छी प्रगति होती है, सर्वत्र विजय मिलती, प्रमुखता प्राप्त होती है। यदि डाक्टर, सर्जन, वकील हुए तो काफी धन तथा यश मिलता है। माता-पिता, सन्तान सुख कम होता, पैतृक सम्पत्ति मिलती है। शरीर में पित्त, रक्त विकारादि रोग रहते हैं। इनका किसी नीच जाति की स्त्री से सम्बन्ध होने पर घाव लगता है जिससे धन और यश की हानि होती है। जब मिथुन का मंगल होता है तो शिक्षा कम होती है, छोटी नौकरी करनी पड़ती है, बड़े ही प्रयत्न से कुछ उन्नति होती है। माता-पिता का विरोधी, लेखक तथा तार्किक होता है। इष्ट-मित्रों की सहायता से उन्नति होती है। द्विभार्या योग भी हो सकता है, सन्तान चिन्ता रहती है।

यदि अष्टमेश मंगल कुम्भ का एकादश हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, इसको जल सम्बन्धी लाल रंग की वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है। तार्किक, हाजिर जवाब, तथा आपत्ति में धैर्य धारण करने वाला, शत्रुजित्, इष्ट-मित्रो का विरोधी तथा सन्तान कष्टी होता है। विवाह शुभ फलदायक रहता है। रक्त विकार, पित्तादि रोग होते हैं। चित्त में भ्रम रहता है, जब कर्क या नीच का मंगल हो तो शिक्षा बहुत ही कम या नहीं होती, चित्त में उद्वेग, पाप कर्म में प्रवृत्ति रहती है, दुर्बुद्धि, पराधीन जीविका से पालित, स्त्री-बच्चों का द्वेषी, वियोगी, अनेक रोगों से युक्त, मामा वंश को भारी, शत्रुयुक्त होता है।

जिसका अष्टमेश मंगल मीन का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती, विचार उच्च होते हैं। व्यापार में मितव्ययिता के कारण साधारण अच्छा जीवन व्यतीत होता है। भाइयों से नहीं बनती। शत्रु दबे रहते हैं। स्त्री को कष्ट तथा गर्भपात भी हो सकते हैं, जल यात्रा में कष्ट होता है। इसका विवाह बीमार स्त्री से होता है जिसमें धन काफी खर्च होता है। पुत्र शोक भी देखना पड़ता है। सिंह का मंगल होने से जातक साहसी, पराक्रमी तथा धैर्यवान् होता है। शिक्षा कम होती है इसलिये बन-विहार तथा बन वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है, पुलिस, सेना विभाग में अच्छे सिपाही होते हैं। शस्त्र भय रहता है। स्त्री-बच्चों का वियोग होता है। भाई से नहीं बनती। अपनी तथा स्त्री की बीमारी में खर्च अधिक होता है। अर्श, रक्तविकार, रक्तचाप, आँख में पीड़ा आदि रोग होते हैं। भकन्दर, रक्तिम, अतिसार रोग होते हैं, विवाह में कठिनाई पड़ती है। जीवन कुछ अच्छा व्यतीत नहीं होता, ये लोग दानी तथा यात्रा प्रिय होते हैं।

अष्टमेश बुध फल

बुध—जिसका अष्टमेश बुध वृश्चिक का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा शुभाशुभ ग्रहों के योग से पूर्णापूर्ण दोनों रूपों में पाई जाती है, ये लोग सुन्दर लेखक, उत्कृष्ट भाषा, तीव्र आलोचक होते हैं, क्लर्की भी करते हैं, औफीसर भी होते हैं। वैद्यक, कम्पोजीटर आदि भी करते पाये जाते हैं, स्त्री साधारण होती है जिसकी प्रकृति आवेशपूर्ण होती है, इष्ट मित्रों से कम बनती है। शरीर रोगी होता है, जब कुम्भ में बुध हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। नौकरी करनी

पड़ती है, पदवृद्धि होती है, स्त्री से सुख मिलता है। सन्तान के लिये कष्टी होते, यात्रा, तैरने में जीवन भय रहता है, चित्तवृत्ति चंचल होती है। जीवन साधारण अच्छा रहता है, वृद्धावस्था में अनेक रोग होते हैं।

जब अष्टमेश बुध धन का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अनेक रुकावटों के बाद रुक-रुककर पूर्ण होती है, ये लोग निर्भीक, स्वतन्त्र लेखक, कवि तथा कुशल व्यापारी होते हैं, धार्मिक कार्यों में अपना रुपया खर्च करके यश तथा समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, इनकी स्त्री सुशील तथा धनिक मिलती हैं, इष्ट मित्रो से मिलकर रहते हैं, इन्हें विदेशी व्यापार से लाभ होता है, किसी विशेष योजना में विशेष परिश्रम तथा उद्योग के बाद सफलता मिलती हैं। कभी-कभी धन की कमी भी अचानक आ पड़ती है, जब मीन का बुध होता हैं, तो उच्च विचार, शिक्षित, लेखन कला में सफलता, धार्मिक, सुन्दर स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, अनेक रोगों से युक्त, पीलिया तथा वायु रोग, यात्रा में कष्ट तथा मानसिक चिन्तायें रहती हैं।

यदि अष्टमेश बुध मकर का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधिक नहीं होती, इस कारण छोटे-छोटे व्यवसायों द्वारा जीवन-यापन करना पड़ता हैं। ये दुष्ट संगति में रहकर गुप्त काम करने वाले, असत्य प्रिय होते हैं। नीच कार्यों द्वारा अपयश मिलता है। सदैव मन्द भागी रहते हैं, इनके विवाह का परिणाम शुभ नहीं होता, ये लोग पराक्रम हीन होते हैं। सन्तान सुख कम होता है, जब बुध मेष का होता है तो जातक शिक्षित होता हैं और चालाकी से कार्य करने वाला, चंचल चित्त होता है और कायदे-कानून की परवाह नहीं करता। कामी, पर स्त्री रत होता है। दुष्ट संगति में दुख उठाता है. स्त्री बच्चों का सुख कम, कर्ण रोगी होता हैं। भाई हो तो सुख मिलता है। पिता का सुख नहीं होता, झूठ बोलते हैं।

जिसका अष्टमेश बुध कुम्भ का चतुर्थ भाव में होता है तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर होती है। अधिक न जानने पर भी विद्याभिमानी होते हैं, नौकरी तथा व्यापार से धन कमाते हैं। माता का सुख तथा पिता से अनबन रहती है। विवाह में दहेज मिलता है फिर भी स्त्री से विचार विनिमय न होने के कारण सुख नहीं होता है। जब वृष का बुध हो तो जातक दर्शनीय, तार्किक, हठी,

कलाओं का जानने वाला, शुभ विवाह से युक्त, भाई, सन्तानादि से सुखी, आलसी, कामी होता है।

जब अष्टमेश बुध मीन का पंचम स्थान में हो तो जातक उच्च विचार, बुद्धिमान् तथा शिक्षित होता हैं, लेखन कला में प्रवीण, शब्दार्थ, टाइपिंग, ज्योतिषादि में अच्छा ज्ञान होता है। स्त्री सुन्दर होती है, कन्यायें अधिक, पुत्र कठिनता से होता है। नौकरी तथा अन्य किसी कार्य से धन कमाने की शक्ति होती हैं फिर भी धन चिन्ता रहती है। शरीर रोगी होता है। और जब मिथुन का बुध होता है तो मनुष्य विद्याभ्यासी, प्रभावशाली लेखक, एकान्त प्रिय, नम्र तथा विनयशील होता हैं। माता बीमार रहती है। ये लोग जलवायु परीक्षक, वैद्यक, ज्योतिष, हस्त सामुद्रिक में चतुर होते हैं, इनको स्त्री सुख यदि हो तो भी सन्तान सुख नहीं होता, प्रभाविक होता है।

यदि अष्टमेश बुध मेष का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भो लेखन कार्य में सफलता मिलती है। मामापक्ष से बुराई मिलती है। बीमा में धन खर्च होता है। इष्ट-मित्रों से नहीं बनती, शत्रु बहुत होते हैं, किन्तु कुछ हानि नहीं कर पाते, विवाह हो भी तो स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, मन्दाग्नि या अतिसार का रोग होता है। जब कर्क का बुध हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, पिता से नहीं बनती, चंचल चित्त, अस्थिर प्रकृति होने के कारण, स्थान तथा व्यवसाय बदलते रहते हैं। जल यात्रा, तैरने में प्राण संकट, विवाह नहीं होता, यदि हुआ तो स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता। यह धन के लिये किसी वृद्धा से प्रेम करता है।

जिसका अष्टमेश बुध वृष का सप्तम भाव में हो तो जातक देखने में सुन्दर, पढ़ने में तेज, क्रोधी, तार्किक, हठी, सरकारी नौकर, सुन्दर स्त्री वाला, समाज-प्रिय होता है। विदेश यात्रा यदि हो तो सुख से होती है। शरीर स्वस्थ रहता है। यदि सिंह का बुध हो तो शिक्षा कम, क्रोधी, झूठ बोलने वाला, शत्रुजित्, कामी, परस्त्रीरत, सुप्रबन्धक, स्त्री बच्चों का सुख कम होता है।

जब अष्टमेश बुध मिथुन या कन्या का अष्टम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा रुकावटों के बाद पूरी होती है। ये लोग अच्छे कवि तथा लेखक और अन्य कला प्रवीण होकर जीवन-यापन करते हैं। कुछ धार्मिक प्रवृत्ति, यश पाने

की लालसा रखते हैं। ये लोग अधिक धनिक न होकर अधिक गुणी होते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, कृपण होते हैं।

यदि अष्टमेश बुध कर्क का नवम स्थान में हो तो जातक सुशिक्षित, धर्म-कर्मरत, कलापूर्ण, लेखन कला प्रवोण, तोर्थ-यात्रा में आनन्द मानने वाला, विवाह में धन पाने वाला, सबका प्रिय, स्त्री-वच्चों से सुखो, विदेश यात्रा रत होता है। तुला का बुध शिक्षा अपूर्ण रखता है, सरकारो नौकरी या अन्य व्यापार करता है। विवाह के वाद भाग्योदय, बच्चों का सुख कम, तीर्थ यात्रा रत, नाटक, जेतिषादि का लेखक, विद्याभ्यासी, क्लर्कादि ही रहता है।

जिसका अष्टमेश बुध सिंह का दशम में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, शिक्षक तथा का क्लर्की कार्य करते हैं, उन्नति विशेष नहीं कर पाते, माता से अनवन, पिता का सुख होता है, पैतृक सम्पत्ति कम मिलती है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है और जब वृश्चिक का बुध हो तो मनुष्य क्रोधी, शिक्षा रुकावट से होती है, स्त्री वच्चे बीमार रहते हैं। पैतृक सम्पत्ति नहीं होती।

जब अष्टमेश बुध कन्या का एकादश में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, वह सरकारी ऑफिसर या अन्य व्यवसाय में भी उन्नति करता है, स्त्री बच्चों का सुख होता है, बड़े भाई का सुख कम होता है, विदेश यात्रा में अर्थ, यश मिलता है, किन्तु चरित्र दूषित होता है और जब धन का बुध हो तो वह उच्चविचार, लेखक या क्लर्क ही रहता है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, धर्म-कर्म रत होता है, जीवन साधारण ही रहता है।

यदि अष्टमेश बुध तुला का द्वादश हो तो शिक्षा अपूर्ण किन्तु समझ अच्छी होती है, लोग ज्ञानी समझते हैं, ज्योतिष, कविता में रुचि रखते हैं। बीमारी में खर्च, जल यात्रा या तैरने में प्राण संकट, स्त्रो बच्चों से सुख कम होता है और यदि मकर का बुध हो तो मन्द बुद्धि, चंचल वृत्ति, पाप रत, कामी, अपयशी, नीच संगति, झूठ बोलने वाला, रोगी, जल यात्रा में, तैरने में प्राण संकट, स्त्री बच्चों के सुख से हीन, दुर्बुद्धि, सामर्थ्य रहित होता है।

अष्टमेश गुरु फल

गुरु—जिसका अष्टमेश गुरु वृष का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा विशेष न होने पर भी वह समझदारी से कार्य करने वाला, लेखक या सरकारी नौकर

या पुस्तक, स्टेशनरी का व्यवसाय करने वाला होता है। धन अच्छा कमाता है। धार्मिक कार्यों, उत्सवों तथा तीर्थादि में खर्च करने वाला, धनिक घर में विवाह करने वाला होता है। दहेज अच्छा मिलता है फिर भी स्त्री सुख कम होता है। ३२ वर्षोपरि गृह परिस्थिति में सुधार होता है। सन्तान सुख भी होता है। शत्रु पीड़ा, तथा इष्ट-मित्रों से मनमुटाव रहता है। जब सिंह का गुरु लग्न में हो तो मनुष्य की शिक्षा उच्च कोटि की होती है। ऐसे मनुष्य नीतिज्ञ, वकील, अध्यापक, प्रोफेसर तथा प्रिंसिपल तक की श्रेणी भी प्राप्त करते हैं, स्त्री, पुत्रादि के सुख से सुखी, जप-तप करने वाले, एकान्त वास प्रिय, धन-धान्य युक्त, प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक, पराक्रमी, अचलवक्ता तथा यशस्वी होते हैं। वायु रोग होता है।

जब अष्टमेश गुरु मिथुन का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती इसलिए अधिकतर लोग कायदे-कानून तथा ईमानदारी वर्तने वाले सफल तथा कुशल व्यापारी होते हैं। धन-धान्य से पूर्ण होने पर भी स्वजन त्रास से दुखी रहते हैं। काव्य, कविता, नाटकादि पुस्तक, पेपरादि कार्य में भी सफलता पाते हैं। ये लोग किसी निकट सम्बन्धी लड़की से प्रेम विवाह न कर सकने पर दुःखी होते हैं। उच्च वर्ण के मनुष्यों से शत्रुता रखते हैं या वे स्वयं शत्रु हो जाते हैं जिससे सरकारी नौकरी की उन्नति में रुकावट होती है। जब कन्या का गुरु हो तो मनुष्य की पढ़ने की इच्छा शेष रहने पर भी शिक्षा पूर्ण नहीं होती। पढ़ाई छोड़नी पड़ती है, वह उच्चाभिलाषी, दयालु, चतुर तथा चालाक होता है। वैद्यक, कृषि या कोई इन्डस्ट्री द्वारा धन तथा यश पाता है, जो कि बड़े उद्योग के वाद वड़ी आयु में प्राप्त होता है, इनका विवाह बहुत देर में किसी विशेष बात की हद के लिये होता, इस बीच किसी नीच स्त्री से गुप्त सम्बन्ध रखते हैं। इनको बड़ी आयु में जिगर, तिल्ली, मन्दग्नि का रोग होता है, नौकरी कम करते हैं।

यदि अष्टमेश गुरु कर्क (उच्च) का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग सरकारी नौकरी तथा अन्य व्यवसाय में धन, यश, पदाधिकार प्राप्त करने वाले, कुशल कलाकार, अध्यापक, प्रोफेसर, स्पष्ट वक्ता, राजनीतिज्ञ तथा पराक्रमी होते हैं। इनके भाई से सम्बन्ध अच्छे न रहने पर सम्पत्ति के लिए झगड़ा होता है। स्त्री बच्चों का सुख देखकर ये लोग अन्तिमावस्था में

संन्यास लेकर परलोक सुधारते हैं और जब गुरु तुला का होता है तो शिक्षा पूर्ण न होने पर भी विद्वान् से प्रतीत होते हैं। सरकारी नौकरी हो या दूसरा व्यवसाय, इनको अवश्य ही छोड़कर दूसरे धन्धे करने पड़ते हैं, स्त्री से अनबन, बच्चों से कलह रहती हैं। इनके कार्य कभी नहीं रुकते चाहे विरोध कितना भी क्यों न हो, भाई-बहनों से नहीं बनती, भाग्य एक बार ४८ वर्ष के करीब कुछ चमकता है।

जिसका अष्टमेश गुरु सिंह का चतुर्थ हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रेमी, कवि, प्रभावशाली लेखक होते हैं और ऐश्वर्य युक्त मकान में शान्ति से रहकर जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, जो अभिलाषा बुढ़ापे तक सफल हो ही जाती है। माता-पिता से कम बनती है। पीलिया, वायु, कफादि रोग होते हैं जिनके लिये धन खर्च होता है, स्त्री बच्चों का विशेष सुख नहीं होता। जब वृश्चिक का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, मनुष्य धार्मिक विचारों वाला, क्षेत्र चिन्तित होता है। स्त्री अच्छी होती हैं, बच्चों का सुख कम, श्वसुर से कलह होती हैं, नौकरी न होने पर व्यवसाय करना पड़ता हैं। माता पिता तथा उसकी सम्पत्ति सुख होता हैं। रक्तचाप, स्नायु पीड़ा समय-समय पर होती रहती है।

यदि अष्टमेश गुरु कन्या का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। इसलिये व्यापार, पुजारीपन, कथा, शास्त्रार्थ, कर्मकांड या फिर छोटी सरकारी नौकरी करनी पड़ती है। इनकी प्रकृति रूक्ष या शुष्क होती है। कुशल व्यवहार होने से अपने कार्य सहज कर लेते हैं। इनका विवाह धन के लिए अपने से नीच घराने में होता है। कन्यायें अधिक होती हैं, प्रथम पुत्र हो तो अधिकतर मृत्यु हो जाती है, ये पर-स्त्री रत होते हैं। शरीर स्वस्थ तथा सुन्दर होता है और जब धनु में गुरु हो तो शिक्षा अपूर्ण, समझदारी अधिक होती है। विवाह साधारण घर में होता है, स्त्री लड़ाकू, झगड़ालू, कलिहारी, स्वच्छन्द, पति के विरुद्ध कार्य करने वाली, निर्लज्ज, सास-श्वसुर, देवरादि की द्वेषी होती हैं। हठी इतनी कि घर को तीन-तेरह किये बिना नहीं रहती, सन्तान कम होती है, माता तथा बच्चों से नहीं बनती। घर नरक के समान ही रहता है।

जिसका अष्टमेश गुरु तुला का छठे भाव में होता हैं, उसकी शिक्षा अधूरी रहती है, अनेक कार्य करने के पश्चात् जीवन यात्रा चलती है। मामा का सुख नहीं मिलता, उच्च वर्ण से शत्रुता रहती है, स्त्री बच्चा से अनबन रहती है। शत्रु और चोरों का भय रहता है। अन्तिमावस्था रोगी होती है। मकर का गुरु से शिक्षा बहुत ही कम होती है। जातक मन्द बुद्धि होने से किसी भी कार्य में सफलता नहीं होती, कार्य परिणाम में दुख ही रहता है, ननिहाल का सुख नहीं मिलता, ऋण लेकर गुजारा करना पड़ता है। गुप्त रोग, प्रवास, अपयश, शरीर कष्ट, स्त्री आयु में बड़ी, या नीच जाति की होती है। बच्चों का सुख नहीं के बराबर होता है। ये लोग व्यभिचारी तथा क्रोधी होते हैं, नित्य नया शत्रु होता है।

जब अष्टमेश गुरु वृश्चिक का सप्तम भाव में हो तो जातक साहसी, पुलिस, सेना विभाग में नौकरी करने वाला, हतशिक्षित होता है, इसकी स्त्री कर्कशा होती है, इसलिये दोनों में झगड़ा बढ़ते-बढ़ते प्रवास, या वियोग दुख रहता है। बच्चों का सुख भी नहीं होता, ये स्त्री को तुच्छ समझते हैं, छोटे-छोटे व्यवसाय भी करते देखे जाते हैं। यात्रा में कष्ट पाते हैं, जीवन दुखी रहता है और जब गुरु कुम्भ का होता है तो शिक्षा अच्छी होती है, जातक विज्ञान में उन्नति करता है और इष्ट-मित्रों की सहायता से धन तथा यश पाता है। इसके विवाह में दहेज मिलता है, पति को पत्नी के प्रभाव में रहना पड़ता है। सन्तान सुख बहुत ही कम होता है। विदेश यात्रा में रुकावट के बाद सुख मिलता है, धन काफी खर्च होता है। भ्रातृ सुख रहता है। शरीर पुष्ट रहता है।

यदि अष्टमेश गुरु धनु का अथवा मीन का स्वगृही अष्टम में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण हाती है। खेल-कूद में मन लगता है। ये लोग दयालु, उच्चविचार, दार्शनिक, स्वतन्त्र विचार, स्त्री-बच्चों से विचार-विनिमय न हो सकने के कारण सदैव आपस में झगड़ा रहता है। द्विभार्या योग हो सकता है। माता-पिता का सुख कम होता है। पैतृक सम्पत्ति तथा स्व-उपार्जन जायदाद बहुत थोड़ी होने के कारण गृहस्थी का खर्च कठिनता से चलता है, ऋण लेना पड़ता है, जब चारों तरफ से दुख के बादल छा जाते हैं। स्त्री के स्वर्गवास होते ही ये लोग अपनी इज्जत को बचाने के लिये घर से बाहर कहीं एकान्त स्थान में

निवास कर जैसे-तैसे जीवन-यापन करते हैं। अन्तिमावस्था इनकी बहुत खराब रहती है। क्योंकि इष्ट-मित्रों से दूर, निर्धनावस्था में प्राणान्त होता है किन्तु स्थान शुभ होता है।

जिसका अष्टमेश गुरु मकर का नवम स्थान में होता है तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहता है और क्लर्की करनी पड़ती है। सरकारी या गैरसरकारी, जीवन में उन्नति तथा पदवृद्धि का अवकाश बहुत ही कम मिलता है, विवाह देर, या जल्दी जैसे भी हो सन्तान सुख बहुत कम होता है, पुत्रेच्छा बनी रहती है, पुत्र यदि जीवित हो तो पिता द्वेषी होता है। घर में कलह रहती है, शरीर स्वस्थ, भ्रातृ स्नेह, शत्रु दबे रहते हैं, एकबार अपयश अवश्य मिलता है। और जब मेष का गुरु होता है तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण, शरीर पुष्ट, सरकारी नौकरी होती है किन्तु उन्नति तथा पदवृद्धि बहुत कम होती है, व्यवसाय बदलना पड़ता है, विदेशी मनुष्यों तथा वस्तुओं से लाभ होता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। ये लोग उच्च-विचार, धार्मिक, दयालु, बात को निभाने वाले होते हैं।

जब अष्टमेश गुरु कुम्भ का दशम में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये लोग उच्चविचार तथा धर्मभीरु होते हैं। सरकारी नौकरी में उन्नति कम तथा धीमी होती है, इष्ट-मित्र, माता-पिता का सुख रहता है किन्तु ३६-४८ के बीच पिता से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, स्वतन्त्र विचार होने के कारण विवाह नहीं कर पाते, यदि विवाह हुआ भी तो सन्तान सुख कम होता है। कृपण होते हैं। उदर, दाँतों में रोग होता है। पैतृक सम्पत्ति कम मिलती है। यदि वृष का शुक्र हो तो बुद्धि अच्छी होती है, ये लोग सुशिक्षित, काव्य, कविता तथा लेख, कहानियाँ अच्छी लिखते हैं, शृंगारी होते हैं, नौकरी में उन्नति करते हैं, स्वच्छ रहते हैं, स्त्री बच्चों का पूर्ण सुख होता है, विवाह में दहेज मिलता है, दोनों में विचार विनिमय कम होने पर भी घर तथा बच्चों की उन्नति का विशेष ध्यान रखते हैं। ये लोग ईश्वर भक्त, शत्रु रहित होते हैं।

यदि अष्टमेश गुरु मीन का एकादश हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी पूर्ण-सी प्रतीत होती है, यह सरकारी नौकरी या व्यापार, लेखादि के व्यवसाय को उदर-पूर्ति का साधन बनाता है फिर भी कोई विशेष उन्नति नहीं कर पाता, साधारण जीवन अच्छा रहता है। स्त्री से अनबन रहती है। बच्चों का सुख भी कम ही

रहता है, स्त्री-पुत्र शोक भी हो सकता है। बड़ा भाई हुआ तो कलह रहती है। व्यर्थ के शत्रु रहते हैं। जब मिथुन का गुरु होता है तो शिक्षा चाहे जैसी भी क्यों न हो मनुष्य कायदे-कानून से रहने वाला, एक सफल तथा कुशल व्यापारी, धन-धान्य से पूर्ण होता है किन्तु आवेश में आकर हानि उठाता है। इसका प्रेम निकट सम्बन्धिनी से होता है जिस कारण विवाह में देर होती है, बच्चों का सुख कम, स्वजन त्रास रहता है।

जिसका अष्टमेश गुरु मेष का द्वादश भाव में हो तो उस आदमी की शिक्षा नहीं के बराबर होती है। बुद्धि अच्छी होते हुए भी घर की परिस्थिति या वाणी खोट के कारण मनुष्य बढ़ नहीं पाता, इसलिये छोटी नौकरी या और कोई कार्य तसवीर, मिट्टी के खिलौने बनाना आदि कार्य से जीवन-यापन करना पड़ता है, विवाह होता है, बच्चे होते हैं, जीवित कम रहते हैं। पुत्रेच्छा सदा बनी रहती है, यदि पुत्र जीवित रहे तो बड़ा आदमी होता है, मेहनत से कार्य कर इज्जत बनाये रहते हैं। जब कर्क का गुरु हो तो किशोरावस्था में ही पिता की मृत्यु करता है, पिता जीवित रहे तो बनती नहीं, मातृ सुख पूर्ण रहता है, यह बचपन से रोगी या कोई और अजीब-सी बात इसके साथ रहती है, जिस कारण इसकी शिक्षा रुक-रुक कर हो पाती है, फिर भी धर्म-कर्म रत रहता है। विवाह हुआ तो स्त्री सुख नहीं होता, यात्रा में कष्ट होता है। ये लोग कृपण तथा स्वार्थी-से होते हैं। जीवन में कोई उन्नति विशेष नहीं होती, सरकारी नौकरी, शिक्षक या क्लर्की द्वारा जीवन-यापन करना पड़ता है। ये कलापूर्ण मस्तिष्क रखते हैं जो कि अवकाश मिलने पर चमकता है, समयाभाव में ये भावना दबकर मर जाती है। देखने में सीधे तथा बात करने में चतुर होते हैं, प्रवास में रहना पड़ता है। जल भय रहता है।

अष्टमेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका अष्टमेश शुक्र तुला का लग्न में हो तो जातक सुशिक्षित, कलाकार, कवि या लेखक, शिक्षक आदि होता है, ये तबियत के शौकीन होते हैं। इनके विवाह में दहेज अच्छा मिलता है, स्त्री सुन्दर होती है, ये प्रेम विवाह के शौकीन होते हैं इसीलिए बहुत-सी लड़कियों से छेड़-छाड़ रखते हैं, इष्ट-मित्रों से युक्त धन तथा यश सामान्य अच्छा होता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है और

जब मीन का शुक्र लग्न में होता है तो मनुष्य उच्चविचार, सुशिक्षित, उच्च पद प्राप्त करने वाला, यशस्वी, सरकारी नौकर या व्यापारी भी होता है, स्त्री शिक्षित तथा धनिक होती है, इसके दो या तीन तक विवाह हो जाते हैं। ये लोग लजीले तथा कृपण होते, इनकी स्त्री खर्चीली होती है। ये तैरने तथा जल यात्रा के शौकीन होते हैं। इनको कोई गुप्त रोग, धातु सम्बन्धी किसी स्त्री सम्बन्ध से उत्पन्न हो जाता है।

जब अष्टमेश शुक्र वृश्चिक का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, लेखन कला द्वारा या नौकरी से जीवन निर्वाह करने वाला साधारण व्यक्ति होता है, विवाह के बाद भाग्योदय होता है, धन स्थिर नहीं रहता, इष्ट-मित्रों से कम बनती है, गुप्त रोग होते हैं, नजला, जुकाम रहता है, प्रेम में निराशा तथा किसी कुल्टा के सम्बन्ध से अपयश मिलता है। इन्हें स्त्री मृत्यु पर दूसरी स्त्री से सुख नहीं मिलता, गुरु जनों का निन्दक होता है और जब मेष का शुक्र हो तो मनुष्य शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करता है और एक दम धन कमाने की इच्छा से सट्टा, रेसादि में धन खर्च करता है। पैतृक सम्पत्ति का सुख बहुत कम होता है। उद्योगी तथा पराक्रमी होता है, २० वर्ष से पहले ही विवाह इच्छा उत्पन्न हो जाती है, विवाह न होने पर कई लड़कियों या वेश्यागमन से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। शरीर दुर्बल रहता, वाणी मधुर तथा काम वासना प्रबल होती है।

यदि अष्टमेश शुक्र धन का तृतीय स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग कलापूर्ण कार्यों से धन-यश लाभ करते हैं, पराक्रम के कार्यों में उन्नति कम होती है, भाई-बहनों का सुख अच्छा रहता है। कविता करने या श्रवण का शौकीन होता है। ऐसे व्यक्ति का विवाह देर में होता है, ये लोग पर स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए काफी सुन्दर तथा मधुर वाणी होते हैं, और जब शुक्र वृष का तीसरे घर में हो तो मनुष्य सुशिक्षित होता है। स्वपराक्रम से व्यापार या कला पूर्ण कार्यों से धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसको पैतृक सम्पत्ति तथा विवाह में धन अच्छा मिलता है, पति-पत्नी में प्रेम अच्छा रहता है, फिर ये कई स्त्रियों पर आसक्त रहते हैं। गृह, पशु, तथा भाई-बहनों का सुख अच्छा रहता है। स्त्रियों से धन भी प्राप्त होता है।

जिसका अष्टमेश शुक्र मकर का चतुर्थ हो तो विद्या अपूर्ण रहती है, नौकरी में प्रगति बहुत कम होती है, विवाह के बाद जीवन अच्छा होता है, भाई बहन बहुत होते हैं, सन्तान सुख भी रहता है, माता-पिता से अनबन रहती है। व्यापार चलता है, ये लोग विवाह प्रेम के लिये न करके धन के लिये करते हैं। इसलिये प्रेम में सदा निराश रहते हैं। ये लोग अपनी से बड़ी आयु वाली स्त्री के प्रभाव में धन के लिये रहते हैं। प्रवास में रहना पड़ता है। वाहन कष्ट रहता है और जब शुक्र मिथुन का होता है तो अड़चनों के बाद शिक्षा पूर्ण होती है। और सरकारी नौकरी में भी अड़चनें पड़ती हैं। ये लोग कला कार्यों से कविता तथा लेखों द्वारा अथवा व्यापार, नौकरी आदि से धन कमाते हैं। स्त्री सुन्दर तथा सीधी होती है। माता-पिता का सुख रहता है। भाइयों से नहीं बनती, ये लोग कामी तथा इन्द्रिय लोलुप होते हैं। इन्हें जल से भय रहता है।

जब अष्टमेश शुक्र कुम्भ का पंचम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग प्रोफेसर, लैक्चरर, शिक्षक तथा लेखक वृत्ति से जीवन-यापन करते हैं। स्त्री शान्त, ईमानदार तथा व्यवहार कुशल होती है, किन्तु सन्तान नहीं होती, विवाह भी बहुत देर में होता है। ये कामी तथा पर-स्त्री रत होते हैं। अपनी विद्वत्ता से धन और यश दोनों ही पाते हैं और जब शुक्र कर्क का हो तो मनुष्य पूर्ण विद्वान्, कीर्तिमान्, माता-पिता पुत्रादि के सुख से पूर्ण सुखी होता है, इसे स्त्री सुख कम होता है। रहन सहन सादा तथा घर धन-धान्य से परिपूर्ण होता है। द्विभार्या योग भी हो सकता है। किसी-किसी को सुरापान की आदत होती है।

यदि अष्टमेश शुक्र मीन का छठे घर में हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ऐसे मनुष्य कृपण तथा बुद्धि के तेज होते हैं, उन्नति तथा यश प्राप्ति के लिए अनेक कलाएँ सीखते हैं किन्तु लालची होने के कारण कोई भी कार्य पूर्ण नहीं कर पाते, दर्शनीय होने के कारण स्त्री पुरुषों को आकर्षित करते, इनकी प्रवृत्ति व्यभिचारी होती है और कई लड़कियों से सम्बन्ध रखते हैं। विवाह नहीं करते, इनकी इच्छा अन्तर्जातीय विवाह की होती है किन्तु समाज, इष्ट-मित्रों के भय से नहीं कर पाते, माता-पिता का सुख रहता है। कहीं-कहीं द्विभार्या योग भी दिखाई पड़ता है, सन्तान सुख कम होता है। वैश्य जाति से शत्रुता

होती है और जब सिंह का शुक्र हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ऐसे मनुष्य कवि, लेखक, विश्वसनीय, ईमानदार होते हैं। इनका विवाह सम्पन्न घर में होता है और स्त्री से विचार-विनिमय कम होता है फिर भी श्वसुर से धन मिलता है। शत्रु दबे रहते हैं। यात्रा में काफी खर्च होता है, जीवन सुखमय व्यतीत होता है।

जिसका अष्टमेश शुक्र मेष का सप्तम में होता है तो उस जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। ये लोग कलापूर्ण कार्यों में दक्ष होते हैं। नाटक, कविता, गायनादि में धन तथा यश कमाते हैं। विवाह होता है फिर भी पर स्त्री से गुप्त सम्बन्ध रखते हैं, जिससे धन और यश की हानि होती है। व्यापार तथा यात्रा में सुख मिलता है। धातुक्षीण, प्रमेहादि गुप्त रोग होते हैं। अन्तर्जातीय विवाह में रत रहते हैं। २० वर्ष से पहले ही बिगड़ जाते हैं। स्त्री को रोग होते हैं और यदि कन्या शुक्र हो तो शिक्षा अधूरी ही रहती है, किन्तु स्वतः अध्ययन बना रहता है। ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक या इसी तरह के और कार्य भी नौकरी के साथ करते पाये जाते हैं। माता-पिता से अनबन रहती है। विवाह यदि हो तो देर में, फिर भी अनबन ही रहती है। सन्तान सुख बहुत कम और नीच घर की लड़कियों से सम्बन्धित होते हैं। कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है। अनेक गुप्त रोग होते हैं। अविवाहित तथा द्विभार्या योग दोनों बातें देखने में आती हैं।

जब अष्टमेश वृष या तुला का अष्टम में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण ही रहती है। ऐसे व्यक्ति व्यापार या छोटे अन्य व्यवसाय द्वारा जीवन-यापन करते हैं। बड़े धनी कभी नहीं होते। साधारण तौर पर अच्छे रहते हैं, प्रपंची तथा स्वार्थी होते हैं। व्यभिचारी प्रकृति के होते हैं। किसी विधवा या त्यक्त स्त्री से सम्बन्ध रखते हैं। विवाह भी होता है तो विवाहित जीवन कुछ सुखी नहीं रहता। इनको स्वयं तथा स्त्री को कोई न कोई रोग होता है। सन्तान सुख कम होता है। जलयात्रा तथा तैरते समय प्राणभय उत्पन्न होने पर रक्षा हो जाती है। ये लोग स्वच्छ वस्त्र, सुगन्धित युक्त वस्तुओं के शौकीन होते हैं। श्रृङ्गारी, कविता से प्रेम करते हैं। भाषा मधुर, चेहरा भोला, आँखों में आकर्षण होता है। इनके मित्र बहुत से होते हैं। जो कि समय पर काम आते हैं। नजला, जुकाम या कोई धातु सम्बन्धी रोग इन्हें रहता ही है।

यदि अष्टमेश शुक्र मिथुन का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी विद्वान् लेखक, कवि, सम्पादकादि कार्यं में दक्ष, बुद्धिमान् होता है, स्वतन्त्र विचार होने से धन कम, यश अधिक मिलता है, विवाह के बाद भाग्योदय होता है, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होती है, तीर्थ यात्रा में धन लगता है, भाई-बहनों का सुख होता है। प्रियवादी तथा मिष्ठान्न प्रिय होता है। इन्द्रियलोलुप तथा स्त्री के प्रति श्रद्धालु नहीं होता और जब शुक्र वृश्चिक का हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, किन्तु साहस-पूर्ण कार्यों में यश पाता है, चेहरा रोबदार तथा स्त्रियों को आकर्षित करने वाला होता है, विवाह बहुत देर में होता है, फिर भी दोनों की अनबन ही रहती है, क्योंकि स्त्री के दबाव में रहना पड़ता है। यदि दूसरा विवाह हुआ तो भी सुख नहीं मिलता, किसी कुल्टा के संबंध से अपयश मिलता है।

जिसका अष्टमेश शुक्र कर्क का दशम में हो तो उसकी शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है, चलचित होने के कारण किसी भी व्यवसाय में स्थिर नहीं हो पाते, यदि विदेश यात्रा हुई तो अवश्य ही विदेशी लड़की से सम्वन्ध स्थापित करते हैं। इनका विवाह भी अच्छी सुन्दर स्त्री से होता है। यदि नौकरी की, तो जहाँ स्त्री अधिक हों, वहीं नौकरी होती है, गाने, प्रकृति सौन्दर्य, सिनेमा आदि के शौकीन होते हैं, इनकी श्वसुर से नहीं बनती, ये सुरापी तथा पर स्त्री रत रहते हैं और जब धन का शुक्र हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ज्ञान-विज्ञान की उपाधियाँ मिलती हैं। विचार उच्च होते हैं, नौकरी तथा अन्य व्यवसाय भी चलते रहते हैं, ये जो भी कार्य सीखते हैं, पूर्णरूप से सीखते हैं, विवाह देर में, किसी खास प्रकार की लड़की की तलाश करते हैं। ये लोग मिलनसार, लोकप्रिय, उपकारी तथा व्यसनी होते हैं। जीवन अच्छा व्यतीत होता है।

जब अष्टमेश शुक्र सिंह का एकादश हो तो जातक की शिक्षा बहुत कम होती है। व्यापार कलापूर्ण कार्य जैसे कविता, प्राकृतिक दृश्यों की चित्रकारी, मिट्टी के खिलौने आदि के व्यवसाय से या बड़े भाई की अधीनता से जीवन-यापन करना पड़ता है। ये लोग कृपण तथा मौजी होते हैं। प्रथम विवाह नहीं होता, यदि हुआ तो पुत्र जीवित नहीं रहते। आय बहुत कम होती है, यात्रा भीरु होते हैं और जब शुक्र मकर का एकादश हो तो शिक्षा कम होती है। किन्तु व्यापार

द्वारा धन अच्छा कमाते हैं। ये लोग विवाह धन के लिये करते हैं, इसलिये प्रेम सम्बन्ध में निराश रहते हैं और स्त्री से अनबन रहती है। इनका सम्बन्ध किसी बड़ी अवस्था वाली लड़की से केवल धन पाने की लालच से होता है। सन्तान पुत्र सुख नहीं होता, कन्यायें अधिक होती हैं। तैरने में डुबकियाँ खानी पड़ती हैं, जल यात्रा में कष्ट होता है।

यदि अष्टमेश शुक्र कन्या का द्वादश में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी मनुष्य धन-धान्य पूर्ण होता है। काव्यकला जानने वाला, नाट्य-कला प्रवीण तथा प्रेम विवाह रत होता है। ये लोग अन्तर्जातीय विवाह के शौकीन होते हैं। धर्माधर्म का भेदभाव नहीं होता, यात्रा में काफी खर्च करते हैं। गुप्त रोग-युक्त, शत्रु तथा चोर का भय लगा रहता है। इनकी आँख मन्द दृष्टि होती है और जब शुक्र कुम्भ का द्वादश होता है तो मनुष्य शिक्षित तथा कला-कौशल का जानकार होता है। नौकरी के व्यवसाय में ही उन्नति होती है। फिर भी अन्य स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होता है, विदेश यात्रा में सुख मिलता है। विजातीय कन्या से सम्बन्ध रहता है, धन लाभ साधारण ही रहता है। पैतृक सम्पत्ति नष्ट होती है। गुप्त शत्रु से हानि होती है।

अष्टमेश शनि फल

शनि—जिसका अष्टमेश शनि मिथुन का लग्न में हो तो उसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी कायदे-कानून के जानने वाले, ज्योतिष, हस्तरेखा, होमियो-पैथिक, वैद्यक, डाक्टर, जर्राह कम्पाउण्डर तथा औफिस में क्लर्कादि होते हैं। इनकी प्रगति अधिकारियों से अनबन के कारण बहुत कम होती है फिर भी ३६ या ४२ वर्षोपरि इनका काफी यश अपने गुणों के कारण मिलता है। माता-पिता से अनबन रहती है। स्त्री बच्चों का सुख नहीं होता, प्रथम तो विवाह ही नहीं होता, हुआ तो स्त्री जीवित नहीं रहती, दो तीन विवाह तक भी हो जाते हैं या तो स्त्री बीमार रहती है या फिर विचार विनिमय नहीं होता, भाइयों से कलह रहती है। ये लोग दीर्घायु होते हैं। इनका व्यवहार रूक्ष होता है, मुँहफट उत्तर देते हैं, भक्ति मार्ग पर चलते हैं, संसार से उदास रहते हैं। इनकी अभिलाषायें भटकती रहती हैं। और जब कर्क का शनि होता है तो शरीर पुष्ट, वात रोग, शिक्षा पूर्ण, अपूर्ण चाहे जैसी भी हो इन्हें ३६ वर्षोपरि कीर्ति, यश मिलता है,

विदेश यात्रा, नभ या जलयान द्वारा हो सकती है। माता-पिता, भाई-बहन से कलह रहती है, ये लोग, मकान आदि बनाकर सुख से जीवन व्यतीत करते हैं। स्त्री बीमार रहती है, फिर भी स्त्री-बच्चों का पूर्ण सुख रहता है। बड़ी निराशा के बाद तथा दौड़-धूप के बाद जीवन में सफलता मिलती है। साधारण जीवन अच्छा रहता है, सभी कार्य चलते हैं, विशेष धन नहीं जुटता।

जब कर्क का अष्टमेश शनि दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग विदेशी लोहे के माल के अच्छे व्यापारी हो सकते हैं किन्तु यात्रा में स्वयं को कष्ट होता है। माता जीवित कम रहती है, रही तो बनती नहीं, इष्ट-मित्रों से नहीं बनती, पैतृक सम्पत्ति तथा अपनी जायदाद का सुख कम होता है, ये लोग चंचल वृत्ति तथा नेत्र पीड़ा युक्त होते हैं, शरीर में वायु रोग रहता है, हठी प्रकृति के होने के कारण कष्ट पाते हैं। और जब सिंह का शनि हो तो जातक की चंचल वृत्ति हठी होने के कारण शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी व्यापार, लेखन कला एवं अन्य व्यवसाय द्वारा धन अच्छा कमाते हैं, उससे मकान, जमीन, जायदाद खरीदकर सुखपूर्वक रहते हैं। माता-पिता से कम बनती है, वायु आदि रोग होते हैं, द्विभार्या योग हो सकता है। धन कम टिकता है, ये लोग उपकारी प्रकृति के होते हैं और शरणागत को भरसक सेवा करते हैं।

यदि सिंह का अष्टमेश शनि तीसरे भाव में हो तो जातक पराक्रमी, उद्योगी, क्रूर, हठी, भ्रातृ द्वेषी, पुलिस, सेना विभाग में उन्नति करने वाला, शिक्षा रहित सा ही होता है। इसका भाग्योदय कभी नहीं होता फिर भी ४२ वर्षोपरि स्थिति अच्छी हो जाती है। स्त्री सुख होनेपर भी बच्चों के लिये तरसना पड़ता है, ये लोग स्पष्ट वक्ता तथा बातों ही बातों में रक्तपात कर देने वाले होते हैं और अपने आत्मविश्वास पर बड़े-बड़े कार्य करने में भी नहीं हिचकते, कारखाना स्पाट, लोहे का, बिजली या तांबे का या जंगलात का कार्य भी अच्छा करते हैं और जब कन्या का शनि होता है तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग व्यापार या नौकरी करते हैं, इनकी प्रगति कम ही होती है, विवाह के बाद ही आर्थिक संकट आता है, सन्तान सुख नहीं होता, मन्द भाग्य के कारण विफलता पर विफलता मिलती है, ये लोग उदास ही रहते हैं। इनके जीवन का समस्त भाग संकटमय रहने के कारण इनके जीवन को एकदम भार बना देता है,

इसी समय यदि स्त्री की मृत्यु हुई तो ये लोग अज्ञात वास कर लेते हैं या फिर आत्महनन तक कर लेते हैं : बन्धु रहित, स्त्री द्वेषी हो या स्त्रो पर-पुरुषरत होने से वियोग दुख सहना पड़ता है।

जिसका अष्टमेश शनि कन्या का चतुर्थ भाव में हो तो उस जातक की शिक्षा कभी पूर्ण नहीं होती, ये लोग व्यापारी या अन्य व्यवसाय करने वाले होते हैं। उद्योग में सफलता पाते हैं। इनकी प्रकृति क्रूर, शरीर कृश, वात रोगी होता है। माता-पिता का सुख कम, घर से बाहर अधिक रहना पड़ता है, वहीं उन्नति भी होती है, स्त्री बच्चों का सुख कम रहता है। अन्तिमावस्था में उदासी छा जाती है। एकान्त वास में सुख मिलता है और जब तुला में शनि उच्च का होता है तो जातक उच्च शिक्षा प्राप्त कर डाक्टर, वकील, न्यायाधीश, मिल मैनेजर, कार-खाने या वर्कशॉप का अधीश्वर होता है। द्विभार्या योग होता है। धन-धान्य की कमी नहीं रहती, घर की जायदाद होती है। माता-पिता का पूर्ण सुख होता है, फिर भी शरीर में अनेक प्रकार से वायु विकार रहता है, सरकारी नौकरी में शीघ्र पदवृद्धि होती है। शत्रु दवे रहते हैं। नन्साल का सुख नहीं होता, स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, विवाह देर में होता है।

जब अष्टमेश शनि तुला का पंचम में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग सरकारी नौकरी में विशेष पदाधिकार प्राप्त करते हैं और स्वतंत्र व्यव-साय जैसे वकालत, डाक्टरी, न्यायाधीश और कोई कार्य हो तो धन और यश खूब कमाते हैं, किन्तु ये लोग अविश्वासी होते हैं, अपने कार्य के लिये नव जाते हैं और दूसरे का कार्य करते समय अकड़ जाते हैं। ये लोग हठी होते हैं, माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। स्त्री जीवित रहा तो गुप्त रोगी और प्रथम पुत्र हुआ तो उसका शोक देखना पड़ता है। पैत्रिक सम्पत्ति स्थिर नहीं रहती। मन चिन्तित रहता है, इष्ट-मित्रों से कलह रहती है और जब वृश्चिक का शनि होता है तो मनुष्य की शिक्षा बहुत कम होती है। पुलिस या सेना में नौकरी करते हैं, पुलिस अधिकारी खूब रिश्वत लेते हैं, पर पकड़े नहीं जाते, इनके स्वभाव क्रूर तथा हठी होते हैं और शत्रु से पूर्ण रूप से बदला लिए बिना नहीं रहते, फिर वृद्धावस्था में समाज के लिये लाभदायक रहते हैं। माता-पिता, स्त्री-बच्चों, इष्ट-मित्रों से झगड़ा रहता है। ये लोग नीचों में यश पाते हैं।

इन्हें शस्त्राग्नि तथा शत्रु प्रहार का भय रहता है। शरीर में वायु, पित्त, कफ के कारण विकलता रहती है।

यदि अष्टमेश शनि वृश्चिक का होकर छठे घर में हो तो मनुष्य शिक्षित नाम मात्र को ही होता है। इसलिये छोटे-छोटे व्यवसाय, नौकरी तथा कृषि कार्यादि, दूसरे छोटे-छोटे कार्यों द्वारा जीवन निर्वाह करता है। इसकी प्रगति बहुत धीरे-धीरे होती है। स्त्री, बच्चों का सुख बहुत कम होता है, शत्रु दबे रहते हैं, भाई यदि हों तो उनसे कलह रहती है और यह स्वयं किसी न किसी रोग से सदैव पीड़ित रहते हैं। नन्साल का सुख नहीं होता और जब शनि धन का हो तो जातक की शिक्षा कम होती है। बुद्धि तेज होती है, ये लोग छोटे-छोटे दो-तीन कार्यों द्वारा एक साथ धन कमाते हैं, फिर भी बीमारी आदि के खर्चे के कारण ऋणी तथा दु:खी-से रहते हैं। पैतृक सम्पत्ति थोड़ी-बहुत मिलती है। भाई यदि हो तो झगड़ा रहता है। विवाह होता है, तो कन्यायें होती हैं, पुत्र की अभिलाषा रहती है, यदि पुत्र जीवित रहे तो बड़ा आदमी होता है। शरीर रोगी रहता है। स्नायु पीड़ा, वात, कफ तथा शूल पीड़ा समय-समय पर होती रहती है। मनुष्य का जीवन विशेष सुखकर व्यतीत नहीं होता, एक न एक वस्तु की सदा कमी रहती है। भविष्य के लिये कुछ बचा नहीं सकते, सिवाय किसी फंड या पॉलसी के।

जिसका अष्टमेश शनि धन का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा किसी रूप में पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे वकील, मुख्तार, कानूनगो, तहसीलदार तथा न्यायाधीश तक होकर जीवन में धन और यश अच्छा कमाते हैं, इनकी प्रगति ३६ और ४२ वर्षोपरि होती है। ये लोग उदार, परोपकारी, मिलनसार तथा मन्दगामी होते हैं, इनकी स्त्री सुन्दर तथा हंसमुख होती है और बीमार रहती है। माता तथा पैतृक सम्पत्ति का सुख कम होता है। तीर्थादि यात्रा इन्हें रुचिकर नहीं होते। ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक तथा और फुलवारी आदि लगाने का इन्हें शौक होता है और जब शनि मकर का होता है तो मनुष्य पुष्ट देह, शिक्षित, सरकारी नौकरी में कम प्रगति करने वाला, वहमी, अपने को बड़ा मानने वाला होता है, यह चालाकी, छलछिद्र द्वारा बढ़ना चाहता है किन्तु जीवन उथल-पुथल हो जाने पर उन्नति का पथ खुलता है। इन्हें सौतेली माता से कष्ट पहुँचता है,

विवाह देर में होता है, सगाइयाँ छूट जाती हैं। दूसरे विवाह के बाद प्रगति होती है, मित्रों से विश्वास घात, तथा दुख होता है। बच्चों का सुख कम रहता है। इनका प्रेम सम्बन्ध किसी नीच जाति की स्त्री से रहता है।

जब अष्टमेश शनि मकर का अष्टम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है किन्तु विद्याभ्यास के समय कई अड़चने आती हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है। स्वतन्त्र व्यवसाय खूब चलते हैं। ये लोग अश्लील वक्ता तथा ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, ऋसितादि में अपने को सिद्ध हस्त समझते हैं। माता-पिता, बहन, भाई का सुख होता है किन्तु मनमुटाव बना रहता है। इनको २८ वर्ष के बाद ही सुख होता है। ये लोग अपने को जितना चतुर सोचते हैं, वास्तव में उतने नहीं होते। बच्चों का सुख बहुत कम होता है, उनसे झगड़ा रहता है। दीर्घायु होते हैं। विशेष उन्नति कभी नहीं कर पाते, सदा विदेश यात्रा का स्वप्न देखा करते हैं। मिलाप तथा झगड़ा शीघ्र कर लेते हैं। स्वार्थी होते हैं। शरीर में कोई न कोई रोग रहता है। धार्मिक वृत्ति कम होती है। तैरने या जलयात्रा में प्राण संकट रहता है और जब कुम्भ का शनि होता है तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। ये लोग कलापूर्ण कार्यों में प्रगति करना चाहते हैं किन्तु नहीं कर पाते। क्लर्की, स्टेनोग्राफरी आदि कार्य करने पड़ते हैं। फिर भी विशेष उन्नति नहीं कर पाते। विवाह २७ वर्ष के बाद ही आमतौर पर होता है। प्रथमावस्था कष्टदायक और अन्तिमावस्था सुखप्रद होती है। माता-पिता, बहन-भाई का सुख रहता है। बच्चों का सुख बहुत कम रहता है, पैतृक सम्पत्ति मिलती है।

यदि अष्टमेश शनि कुम्भ का नवम हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण ही रहती है। सरकारी नौकरी करते हैं। स्वतन्त्र व्यवसाय या व्यापार कम फलते हैं। भ्रातृसुख कम रहता है। शत्रु दबे रहते हैं। नन्साल का सुख कम होता है। ये अन्तर्जातीय विवाह को पसन्द करते हैं। यदि विदेश यात्रा हुई तो अवश्य विदेशी स्त्री से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। धार्मिक वृत्ति बहुत कम होती है। भक्षाभक्ष्य पर बहुत कम ध्यान देते हैं। इनकी वृत्ति उदास होती है। लोह, स्पात कार्य में उन्नति होती है और जब मीन का शनि होता है तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है, विचार उच्च होते हैं। विदेश यात्रा सुखकर रहती है।

स्त्री-बच्चों का सुख सामान्य रहता है। शत्रु दबे रहते हैं। मामा आदि का सुख कम रहता है। तीर्थयात्रा, तन्त्र-मन्त्रादि पर खर्च करते हैं। ३६ या ४२ वर्षोपरि इनकी विशेष उन्नति होती है। पैतृक सम्पत्ति का सुख रहता है। जीवन अच्छा रहता है। समय-समय पर वायुविकार होता रहता है।

जिसका अष्टमेश शनि मीन का दशम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अड़चनों के बाद पूर्ण होती है। ये लोग ज्ञान-विज्ञान की उपाधियाँ पाकर क्लर्क, वकील, न्यायाधीश तथा अच्छे वैज्ञानिक होकर धन तथा यश प्राप्त करते हैं। इनके विचार उच्च तथा धार्मिक होते हैं। ये लोग अन्तिमावस्था में धर्माचार, वेदान्त तथा शास्त्र के उदेशक होते हैं। विवाह के शौकीन नहीं होते, यदि विवाह हुआ तो गृहस्थी से लगाव नहीं होता, परोपकारी तथा विनयशील युक्त होते हैं। फिर भी इष्ट मित्र हँसी उड़ाते हैं। स्त्री के मरने पर या बुढ़ापे में शान्ति के लिये निर्जन वास करते हैं और जब मेष का शनि हो तो शिक्षा पूर्ण बहुत ही कम आदमियों की होती है। ये लोग पुलिस, सेना विभाग में छोटे-बड़े सभी पदों पर पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति की पिता से नहीं बनती, यदि पिता जीवित रहे तो कलह रहती है, दोनों साथ रहकर उन्नति नहीं कर पाते, माता बीमार रहती है। कृपण होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, घर में झगड़ा रहता है।

जब अष्टमेश शनि मेष का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी ही रहती है। ये लोग अपने प्रारम्भिक जीवन में बड़े कष्ट सह कर उद्योग और परिश्रम द्वारा अपनी परिस्थिति को बनाते हैं। ये लोग बड़े गप्पी और तार्किक होते हैं। इनका विवाहित जीवन कष्टमय रहता है। स्त्री-बच्चों से कलह रहती है। ये लोग हठी, कृपण होते हैं। स्त्री खर्चीली होती है, पिता से नहीं बनती, वायु, कफादि के रोग होते हैं, ये लोग अन्तिमावस्था में काफी संयमी तथा स्वाध्याय प्रिय हो जाते हैं और विरक्त जीवन व्यतीत करने के लिए एकान्तवास पसन्द करते हैं और जब वृष का शनि होता है तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग सरकारी नौकरी या व्यापारादि में बुद्धि द्वारा धन-धान्य तथा यश लाभ करते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम ही रहता है, बीमारी पर खर्च करना पड़ता है। ये आवेशपूर्ण दयालु, मितव्ययी, उद्योगी, परिश्रमी

तथा अस्थिर को स्थिर करने वाले होते हैं। इनको इष्ट-मित्रों से दुख मिलता है। इनको धातु सम्बन्धी गुप्त रोग, नजला तथा वायु विकार रहता है। मुकदमा तथा चुनाव जीतने में चतुर होते हैं।

यदि अष्टमेश शनि वृष का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग ज्ञान-विज्ञान की उपाधियों से विभूषित होकर, डाक्टर, सर्जन, वकील, न्यायाधीश आदि होकर धन, यश तथा कीर्ति लाभ करते हैं, स्त्री सुख रहता है, पुत्र की चिन्ता बनी रहती है, इष्ट-मित्रों से अनबन रहती है, वे उन्नति से द्वेष करते हैं फिर भी इनके जीवन में ऐसा समय भी आता है कि ऋण लेना पड़ता है, शत्रु दबे रहते हैं, माता-पिता का सुख रहता है, बीमारी में खर्च होता है। जब मिथुन का शनि हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण और अपूर्ण दोनों रूपों में पाई जाती है, पूर्ण शिक्षित वृष के समान ही फल रखते हैं और अपूर्ण शिक्षा वाले व्यक्तियों को जीवन-यापन करने के लिये अनेक व्यवसाय करने पड़ते हैं। ये लोग मिस्त्री, कारीगर, किताबों, लोहे के छापेखाने आदि के काम में लाभ उठाते हैं, इनके अंग-भंग होने का योग होता है। इन्हें यात्रा में कष्ट होता है। माता-पिता का सुख होता है। इनकी वृत्ति विलासी होती है। समस्त जीवन साधारण रहता है और पूर्ण शिक्षित मनुष्यों का जीवन सुखमय व्यतीत होता है।

नवमेश रवि फल

सूर्य—जिसका नवमेश रवि धन राशि का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, वह बड़ा विद्वान्, कायदे कानून का जानने वाला, डाक्टर, वकील, न्यायाधीश, या किसी सरकारी उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला होता है। धार्मिक वृत्ति, तीर्थ यात्रा करने वाला, उदार तथा दयालु होता है, इनको स्त्री सुख कम होता है। चाहे विवाह कितने भी हो जायँ, सन्तान चिन्ता बनी रहती है।

जब नवमेश रवि मकर का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी ही रहती है, इनका नौकरी में दिल नहीं लगता इसलिये स्वतन्त्र व्यवसाय जैसे वैद्यक, कृषि फार्म, या कपड़े का कार्य करना पड़ता है। उत्कर्ष की चिन्ता बनी रहती है। धन का सदुपयोग होता है। संग्रह नहीं हो पाता, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता। स्त्री व्यभिचारिणी या कलह प्रिय होती है, प्रथम पुत्र का सुख रहता है। नेत्र ज्योति क्षीण, पित्त, कफ का रोग होता है।

यदि नवमेश रवि कुम्भ का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, वह बड़ा उद्योगी, परिश्रमी, साहसी कार्यों द्वारा धन यश पाने वाला, लेखन कला प्रवीण, जलयात्रा प्रिय, तैरने में डुबकी खाने वाला, भ्रातृ दोषी होता है। पिता से अनबन रहती है। विवाह का परिणाम कुछ शुभ नहीं होता, ये लोग स्वतन्त्रता प्रिय, जादु, मन्त्र-तन्त्रादि की खोज करते हैं।

जिसका नवमेश रवि मीन का चतुर्थ भाव में हो तो जातक शिक्षित होता है, कलापूर्ण कार्यों का शौक (जैसे, कविता पाठ, गलीचे, दरी आदि बनाना) रखता है। इनको देह सम्बन्धी कोई न कोई रोग रहता है किन्तु बुद्धि तीव्र और जाग्रत् रहती है, ये विवाह के शौकीन कम होते हैं, विवाह यदि हुआ तो काफी देर में होता है। माता बीमार रहती है। पिता से ३६ वर्षोपरि सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। बच्चे आज्ञाकारी तथा प्रसन्न रहते हैं, सरकारी नौकरी करने में उन्नति बहुत कम होती है।

जब नवमेश रवि मेष का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा चाहे रुककर हो किन्तु पूर्ण होती है। ये लोग ज्योतिष, हस्त सामुद्रिक, कविता, संगीत आदि में से किसी कला का अच्छा ज्ञान रखते हैं, सुकृत तथा धार्मिक होते हैं। प्रथम पुत्र यदि जीवित रहे तो बड़ा आदमी होता है। अधिकतर सन्तान चिन्ता ही रहती है। इन्हें जीवन में देर से सफलता मिलती है।

यदि नवमेश रवि वृष का छठे घर में हो तो मनुष्य की शिक्षा अधूरी या नहीं होती, भाग्य सदा मन्द रहता है इसलिये छोटी-छोटी नौकरियाँ या व्यवसाय करने पड़ते हैं, शत्रु बहुत होते हैं किन्तु दबे रहते हैं, नन्साल का सुख नहीं होता, पित्त, गर्मी सम्बन्धी अनेक रोग होते हैं, नेत्र पीड़ा रहती है। बीमारी में काफी खर्च होता है। ये लोग पाक शास्त्र के ज्ञाता होते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, आलसी होते हैं।

जिसका नवमेश रवि मिथुन का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे लेखक तथा सुशिक्षित अध्यापक, इन्सपेक्टर, नाट्यकार तथा कलाकार होते हैं। इनका विवाह देर में होता है, स्त्री बीमार रहती है, सन्तति कम होती है द्विभार्या योग भी होता है, सिर दर्द, नेत्र पीड़ा तथा अनेक रोग होते हैं। ये लोग नौकरी कम पसन्द करते हैं, स्वतन्त्र व्यवसाय में आय कम होने पर भी सुख से रहते हैं।

जब नवमेश रवि कर्क का होकर अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, सरकारी नौकरी में प्रगति बहुत धीमी होती है, ये लोग मिलनसार तथा सामाजिक होते हैं, विवाह देर में होता है, स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है। धार्मिक बनते हैं, किन्तु धर्म का पालन नहीं करते, पिता का ऋण चुकाना पड़ता है। पिता जीवित रहे तो अनबन रहती है। ये लोग छिद्रान्वेषी होते हैं, यात्रा में कष्ट रहता है। नेत्र तथा शरीर में विकलता रहती है। सास-ससुर का पालन करना पड़ता है। इन्हें अन्तिमावस्था में ऋण लेना पड़ता है।

यदि नवमेश रवि सिंह का नवम घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग राज्य भाषा में प्रवीण, पराक्रमी, सेना व पुलिस विभाग में प्रगति करने वाले कुछ अभिमानी नाटयकार, कवि, लेखक तथा उपकारी होते हैं। प्रकृति सौन्दर्य के उपासक, उच्च विचार, भ्रातृ विरोधी तथा प्रवासी होते हैं। ये लोग आत्मविश्वासी, स्पष्ट वक्ता, स्त्री-पुत्रों के सुख से सुखी तथा समाज में आदर पाने वाले होते हैं, ये लोग साहसी, कार्य में सफलता, पारितोषिक पाते हैं। साधारण तौर पर इनका जीवन सुखी रहता है।

जिसका नवमेश रवि कन्या का दशम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, सरकारी नौकरी करनी पड़ती है किन्तु उन्नति कम होती है। ये लोग कायदे कानून के जानने वाले, मर्यादा पालक होते हैं किन्तु अनुचित दबाव न सह सकने के कारण औफीसरों से नहीं बनती, निजी परिश्रम से उन्नति करते हैं, माता-पिता से अनबन रहती है। ये लोग गायन, वादन, ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, कवितादि कलाओं में भी अच्छा ज्ञान रखते हैं। विवाह नहीं होता, यदि हुआ तो विचार नहीं मिलते, कलह रहती है। पैतृक सम्पत्ति का लाभ कम ही रहता है।

जब नवमेश रवि तुला (नीच) का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, ये लोग तार्किक, दयावान्, कलाकार, नीच संगति में यश पाने वाले, व्यापारी तथा सरकारी क्लर्क भी होते हैं, इन्हें विवाह का आनन्द कम मिलता है, स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है, दूसरे विवाह के बाद उन्नति होती है। पुत्र शोक होता है, सन्तान चिन्ता रहती है। बड़ा भाई जीवित रहे तो उससे सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। ये लोग परदेश में सुख पाते हैं, जल यात्रा से लाभ होता है। फिर भी जीवन में विशेष सुख प्राप्त नहीं होता।

यदि नवमेश रवि वृश्चिक का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ऐसा मनुष्य साहसी, पराक्रमी, प्रवासी, शूर-वीर, पुलिस, सेना विभाग में प्रगति करने वाला, स्वार्थी होता है, औफीसरों से झगडा रहता है, जीवन में उथल पुथल देखने के बाद सफलता प्राप्त करता है। निश्चिन्त, खर्चीला, राजनैतिक दण्ड पाने वाला, क्रोधी, यात्रा प्रिय, हिंसक वृत्ति होता है। शत्रु दबे रहते हैं, स्त्री बच्चों का सुख कम होता है, माता-पिता से अनबन रहती है, अग्नि, शस्त्र तथा विष प्रयोग का भय रहता है।

नवमेश चन्द्र फल

चन्द्र -- जिसका नवमेश पूर्ण चन्द्र वृश्चिक का लग्न में हो तो जातक दीर्घायु, शिक्षित, सुन्दर, साहसी, स्वार्थी, विवाहितानन्द को न पाने वाले, प्रेम विवाहरत तथा आपत्तियों का सामना करने वाले होते हैं, क्षीण चन्द्र होने से अशिक्षित, झूठा, नीच जाति कन्या से प्रेमरत, कलंकित, पराधीन, राजदण्डित, स्त्री-बच्चों के सुख से रहित होता है।

जब नवमेश पूर्ण चन्द्र धनु का दूसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग कायदे कानून के जानने वाले, नियमित रूप से कार्य करने वाले, सरकारी नौकरी, डाक्टर, वकीलादि होकर धन तथा यश पाते हैं, स्त्री-पुत्र, कुटुम्बादि सुख रहता है, क्षीण चन्द्र के होने पर जातक की शिक्षा कम, धन कष्ट, राज्य से विरोध, यात्रा में भय, गुप्त रोग, नजला, जुकामादि भी होते हैं, जीवन कष्टमय रहता है।

यदि नवमेश पूर्ण चन्द्र मकर का तीसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी साहसी, कार्य में यश प्राप्त होता है, जलवस्तु, जलयात्रा से लाभ रहता है, सभी बच्चों तथा भ्रातृ सुख रहता है, परदेश में रहना पड़ता है, क्षीण चन्द्र होने पर अशिक्षित, भ्रातृ, माता से अनबन, स्त्री बच्चों की चिन्ता तथा तैरने या जलयात्रा में प्राण संकट रहता है और एक न एक चिन्ता सदा लगी रहती है।

जिसका नवमेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग कलापूर्ण कार्यों से लाभ पाते हैं। माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति से लाभ होता है। राज्य नौकरी मे लाभ रहता, पदवृद्धि होती है, जल-

यात्रा में धन और यश दोनों प्राप्त होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा कम, नौकरी में प्रगति कम, माता-पिता का सुख कम, यदि जीवित रहे तो कलह रहती है। स्त्री बच्चों का सुख नहीं होता, प्रवास में रहना पड़ता है। ऋण चिन्ता बनी रहती है।

जन नवमेश पूर्ण चन्द्र मीन का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग सरकारी नौकर हुए तो शीघ्र पदवृद्धि को प्राप्त होते हैं, डाक्टर तथा वकीलादि के व्यवसाय में धन और यश अच्छा प्राप्त होता है, विदेश यात्रा में सुख रहता है, कन्यायें अधिक होती हैं, क्षीण चन्द्र से शिक्षा कम खर्च अधिक, स्त्री-बच्चों को कष्ट, किसी विधवा या नीच जाति की कन्या से सम्बन्ध करता है, अपनी पुत्री विधवा होती है।

यदि नवमेश पूर्ण चन्द्र मेष का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण अपूर्ण दोनों रूपों में पाई जाती है, ये लोग यदि डाक्टर या वकील हुए तो गरीबों पर दयालु होते हैं। इसलिए यश पाते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख विशेष नहीं होता, शत्रु दबे रहते, नन्साल से माल मिलता है। क्षीण चन्द्र के होने पर शिक्षा नहीं हो पाती इसलिये छोटे-छोटे कार्यों द्वारा जीवन यापन करना पड़ता है। शत्रु बहुत होते हैं, ये मामा के लिये भारी होते हैं, विवाह नहीं होता, धातु क्षीणादि गुप्त रोग होते हैं। इधर-उधर की स्त्रियों से सम्बन्ध रहता है, यदि विवाह हो भी जाय तो उसका परिणाम दुःख ही निकलता है। धन हानि, पराधीन, नेत्र पीड़ा, शरीर में विकलता, आलस्य तथा अपमान होता है।

जिसका नवमेश पूर्ण चन्द्र वृष (उच्च) का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। सरकारी पदाधिकार प्राप्त होता है। विवाह के बाद भाग्योदय होता है, स्त्री बच्चों का सुख तथा प्रेम प्राप्त होता है। चित्त की वृत्ति चंचल होती है, विदेश यात्रा में विधर्मी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होता है। सवारी सुख रहता है। क्षीण चन्द्र होने पर मध्यमायु होती है। शिक्षा अच्छी रहती है, ज्योतिष या हस्तसामुद्रिक में शौक होता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, विदेश यात्रा हुई तो अवश्य विधर्मी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रहता है। अपयश मिलता है। द्विभार्या योग हो सकता है। पत्नी वियोग में ये लोग उदास रहने लगते हैं।

जब नवमेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का अष्टम स्थान पर हों तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। किन्तु ये लोग लेखक, कवि तथा समाज में यश पाने वाले होते हैं, ये सदा ही भाग्यहीन रहते हैं। ये लोग यात्राप्रिय होते हैं, किन्तु यात्राएँ सुखकर नहीं होतीं। स्त्री-बच्चों का सुख साधारण रहता है। माता-पिता की जायदाद थोड़ी-बहुत मिलती है, क्षीण चन्द्र के होने पर अल्पायु होती है, मनुष्य को शिक्षा बहुत कम होती है, विवाह यदि हुआ तो स्त्री से कलह रहतो है। सम्भव है कि वही पति मृत्यु का कारण बन जाय, जल यात्रा में प्राण संकट रहता है। घर से दूर रहना पड़ता है, जहाँ कष्ट होता है, धातुक्षीण, प्रमेहादि रोग, नजला, जुकाम सदा लगे रहते हैं। इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

यदि नवमेश पूर्ण चन्द्र कर्क का स्वगृही नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग कुशल लेखक, सुन्दर कलाकार, गायन-वादन प्रवीण, नृत्य-नाटच के ज्ञाता, धार्मिक, सत्कर्मी, तीर्थ-यात्रा प्रिय, तैराक, जलयात्रा प्रिय, स्त्री-बच्चों के सुख से पूर्ण सुखी, भाग्यवान्, भूमि, वाहन सुख से सुखी, नवीन योजना वाले, यशस्वी होते हैं। इनका प्रेम सम्बन्ध किसी उच्च वर्ण की स्त्री से होता है। क्षीण चन्द्र होने पर उपर्युक्त गुणों में कुछ कमी आ जाती है। स्त्री सुन्दर नहीं होती, उससे अनबन-सी रहती है। भ्रातृ सुख कम होता है। उद्योग में सफलता कम मिलती है, तैरने तथा जल यात्रा में प्राण भय रहता है। जीवन विशेष सुखकर नहीं होता।

जिसका नवमेश पूर्ण चन्द्र सिंह का दशम स्थान पर हो तो उसकी शिक्षा पूर्ण होती है। स्वतन्त्र विचार, प्राकृतिक सौन्दर्य प्रिय, क्रोधी, देव-चिन्तन करने वाला, इष्ट मित्र, माता-पिता का सुख बहुत कम होता है, सरकारी नौकर होता है। स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी रहता है। पैतृक सम्पत्ति छूट जाती है। क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा रुक-रुक कर अड़चनों के बाद पूर्ण होती है। जातक स्व-उद्योग से अपनी उन्नति करता है। माता-पिता, भाई-बन्धुओं से कलह रहती है, उनका सुख नहीं मिलता, माता-पिता बचपन में ही चल बसते हैं। यात्रा में कष्ट महसूस करते हैं, सरकारी नौकरी में उन्नति रुक-रुक कर होती है। ऑफिसरों से नहीं बनती, कोई न कोई रोग लगा रहता है।

जब नवमेश पूर्ण चन्द्र कन्या का एकादश में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग अच्छे लेखक, कलाकार तथा कुशल व्यापारी होते हैं, नौकरी कम पसन्द करते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, कन्यायें अधिक होती हैं। बुद्धिमान् कार्यों द्वारा समाज में आदर पाते हैं। क्षीण चन्द्र के होने पर शिक्षा बहुत कम होती है। छोटे-छोटे कार्यों द्वारा जीवन-यापन करना पड़ता है, सन्तान सुख बहुत हो कम रहता है, यात्रा में कष्ट होता है, बुद्धि पापरत रहती है।

यदि नवमेश पूर्ण चन्द्र तुला का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग सरकारी नौकरी पसन्द करते हैं। शत्रु भय रहता है, मामापक्ष से लाभ होता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। धर्म-कर्म तथा तीर्थ यात्रा में खर्च होता है, तैरने, जलक्रीड़ा, विदेश यात्रा में आनन्द मिलता है। कलापूर्ण कार्यों में धन, यश की वृद्धि होती है। सुगन्धि युक्त वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है। क्षीण चन्द्र होने पर अपूर्ण शिक्षा होती है, धन की कमी रहती है, गुप्त शत्रु से हानि होती है, नन्साल से दुख मिलता है। स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, जल यात्रा में कष्ट, कुसंगति में अपयश तथा हानि होती है। अन्तर्जातीय विवाह का चाव रखते हैं। पत्नी खर्चीली होती है, ऋण बना रहता है।

नवमेश भौम फल

मंगल—जिसका नवमेश मंगल सिंह का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। ऐसे व्यक्ति वैद्यक, डाक्टरी, कम्पाउन्डरी, कृषि आदि उद्योग से जीवन-यापन करते हैं। अभिमानी, न आने पर सभी कुछ आता है, ऐसा प्रदर्शित करते हैं। पुलिस तथा सेना विभाग में उन्नति कर सकते हैं। रिश्वत मिले तो नहीं छोड़ते, रौब से काम लेते हैं, किन्तु विश्वसनीय नहीं होते। पद लोलुपता के लिये समाज सेवा करते हैं। इनका ठोस कार्य कोई नहीं होता। माता-पिता का सुख रहता है, विवाह यदि हुआ तो २८ वर्ष के बाद होता है, पहले हुआ तो स्त्री नहीं जीती, बच्चों का सुख कम होता है। अर्श, पित्त, रक्त-विकारी रोग से पीड़ा होती है, इन्हें क्रोध बहुत आता है। प्रतिशोधपूर्ण भावना रखते हैं। मन्त्र-तन्त्र भावना करने वाले, स्वधर्म पालक होते हैं और जब मीन का मंगल होता है तो मनुष्य उच्चविचार तथा सुशिक्षित होता है, शेष सभी फल

सिंह के समान ही होते हैं, केवल अन्तर यह रहता है कि वे खर्चीले तथा मिलनसार होते हैं और ये कृपण तथा स्वार्थी होते हैं और किसी से मिलना नहीं चाहते, किन्तु मित्र बना लेने पर दुख में भी उसका साथ नहीं छोड़ते।

जब नवमेश मंगल कन्या का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूरी नहीं होती, फिर भी सत्कार्य में श्रद्धा रहती है। कोई बड़ा कार्य न कर सकने के कारण लाभ में सदा कठिनाई रहती है। ३२ वर्षोपरि भाग्योदय होता है। विवाह होता है, किन्तु स्त्री-बच्चों की सदा ही चिन्ता लगी रहती है। कुछ समय के लिए स्त्री वियोग सहना पड़ता है, दोनों ही कामी तथा उद्वेग पूर्ण रहते हैं। मिलाप होने पर अतिशय प्रेम रहता है। नेत्रपीड़ा, पित्तविकार, उष्णता तथा व्यर्थ खर्च लगा रहता है और जब मेष का मंगल हो तो मनुष्य बड़ा विद्वान्, धार्मिक, कर्मकाण्डी, स्पष्टवक्ता, धर्म-कर्म से ही वृत्ति पाने वाला, मातृ-पितृ सुख से सुखी, कीर्तिमान, यशस्वी, स्त्री-पुत्रों के सुख से सुखी, सीधा-सादा जीवन व्यतीत करने वाला होता हैं। यह स्त्री मृत्यु के बाद दूसरा विवाह बहुत कम करते हैं।

मृत्यु समय ये लोग धन-धान्य पूर्ण समृद्धशाली होते हैं, प्राणान्त पर इन्हें बीमारी कष्ट बहुत कम होता है।

यदि नवमेश मंगल तुला का तृतीय स्थान पर हो तो जातक को शिक्षा अपूर्ण रहती है किन्तु आपत्ति को जीतने की शक्ति विशेष रूप से होती है, इसको पुलिस सेना विभाग में यश तथा पद प्राप्त होता है। इसके मातहद के इससे द्वेष करते हैं और यह प्रेम के मामले में निराश हो रहते हैं। इनके विवाह के बाद घरेलू झगड़े बढ़ जाते हैं। स्त्री-बच्चों से अनबन रहती है। शत्रु दबे रहते हैं। मामा से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, अग्नि, शस्त्र, चोर भय रहता है और जब वृष का मंगल होता है तो शिक्षा कम होती है। क्रोध बहुत आता है। अनतृप्त विषय-वासना रहती है। ये धनवान् कन्या से विवाह करना चाहते हैं, धनलिप्सा पूर्ण न होने के कारण स्त्री-बच्चों से झगड़ा रहता है, गुप्त शत्रु से दुख होता है, जल यात्रा में कष्ट होता है, तैरने में प्राण संकट रहता है।

जिसका नवमेश मंगल वृश्चिक राशि का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा किसी न किसी रूप में पूर्ण होती है। सरकारी नौकरी, कृषि आदि क्रय-विक्रय से लाभ रहता है। माता-पिता का सुख तथा लाभ होता है। विवाह

देर में होता है। स्त्री को गर्भपात होते हैं, सरकारी नौकरी मिलने में कठिनाई होती है। व्यापार में हानि होती है, बीमारियाँ लगी रहती हैं और जब मिथुन का मंगल होता है तो शिक्षा अधूरी होती है, काम-वासना प्रबल रहती है। घर का मकान तथा जायदाद होती है, माता-पिता से विरोध रहता है, यात्रा में अड़-चनें होती हैं, फिर भी ये लोग जीवन-पथ को सुलभ बना लेते हैं, वकीलत तथा व्यापार में धन यश मिलता है। द्विभार्या योग होता है, स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, बड़े भाई से नहीं बनती। रक्तविकार, अर्शादिरोग होते हैं और घर से बाहर मृत्यु होती है, उस समय ये लोग जीवन-सुधारक के रूप में होते हैं।

जब नवमेश मंगल धन राशि का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग पुलिस, सेना विभाग में अच्छी प्रगति करते हैं। ये लोग स्वतन्त्र, उद्योगी तथा स्पष्टवक्ता, यात्राप्रिय होते हैं। विवाहित जीवन सुखमय रहता है। द्विभार्या योग रहता है। सन्तान यदि प्रथम पुत्र हो तो जीवित कम रहती है। यात्रा में कष्ट तथा रक्त-पित्त सम्बन्धी अनेक रोग होते हैं, खर्च काफी होता है। बुद्धि स्थिर न होने के कारण आवेशपूर्ण रहते हैं और जब कर्क का मंगल होता है तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। जिस कारण, रंग जर्राही, दर्जीगिरी, भूमि, मकानादि के दलाली आदि का काम करना पड़ता है। ये लोग गप्पी तथा भीरु प्रकृति के होते हैं। जलयात्रा में कष्ट होता है। मन्दाग्नि तथा नेत्र-रोगी होते हैं। माता से कम बनती है। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। किसी नीच स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। जीवनान्त कष्ट मय होता है।

यदि नवमेश मंगल मकर का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी ही रहती है और पराक्रम पूर्ण कार्यों में धन, यश पाते हैं। शत्रु दबे रहते हैं। पुलिस-सेना में अच्छी प्रगति करते हैं। नन्साल का सुख नहीं होता, अग्नि, चोरी तथा शस्त्र भय लगा रहता है। हिंसावृत्ति रखते हैं, आमिष भोजन प्रिय मानते हैं। भाग्य मन्द रहता है। शरीर रोगी रहता है। सिर दर्द, नेत्र-रोग, रक्तविकार, पित्त, कफादि रोग होते हैं और जब सिंह का मंगल होता है तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। ये लोग उद्योग तथा परिश्रम से अपने सम्पूर्ण कार्य सुलभ कर लेते हैं। क्रोधी होते हैं, शत्रु दबे रहते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के

लेखक या कवि भी हो सकते हैं। मामा का सुख नहीं होता, छोटे भाइयों से कलह रहती है। स्त्री-बच्चों से नहीं बनती, रक्त सम्बन्धी अनेक रोग होते हैं जिनमें धन काफी खर्च करना पड़ता है। ऋण लेना पड़ता है।

जिसका नवमेश मंगल कुम्भ का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। फिर भी उसका उपभोग बहुत कम होता है और कोई लोहे, ताँबे सम्बन्धी कार्य से जीवन-यापन करना पड़ता है। माता-पिता जीवित रहते हैं, पिता से विचार नहीं मिलते। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। सन्तान कम, स्त्री बीमार तथा श्वसुर से कलह रहती है। मनुष्य को रक्तचाप-रक्तविकार या अर्शादि में से कोई रोग अवश्य होता है। यात्रा-प्रिय होते हैं फिर भी जलयात्रा या तैरने में प्राण संकट उपस्थित होता है। स्त्री को गर्भपात होते हैं, द्विभार्या योग हो सकता है और यदि मंगल कन्या का हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है फिर भी ये लोग धार्मिक प्रकृति के होते हैं। उपकार में धन लगाते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है। इष्ट-मित्रों से नहीं बनती। स्त्री मृत्यु पर ये लोग साधुवृत्ति प्राप्त करने के लिए निर्जनवास करते हैं। उदास रहते हैं। यौवन में नीच स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। रक्तविकार होता है।

जब नवमेश मंगल मीन राशि का अष्टम स्थान पर होता है तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है फिर भी लोग अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से सरकारी नौकरी में शनैः-शनैः अपनी उन्नति करते ही रहते हैं, बात करने में चतुर होते हैं। माता-पिता का सुख काफी समय तक रहता है। स्त्री के जीवित रहते भी स्त्री-सुख नहीं होता क्योंकि स्त्री झगड़ालू तथा कलहकारिणी होती है। बच्चे कम होते हैं फिर भी बिना झगड़े के कोई दिन नहीं जाता। गृहस्थ जीवन भार रहता है। इन्हें चित्रकोढ़, रक्तविकार, अर्शादि रोग रहता है। पैतृक सम्पत्ति तथा भाई-बन्धुओं का सुख स्त्री के कारण नहीं हो पाता। ये लोग कामी, इन्द्रिय लोलुप, ताक-झांक करने वाले, कपोत की तरह बेचैन रहने वाले होते हैं और जब मंगल तुला का अष्टम में हो तो मनुष्य की शिक्षा साधारण अच्छी होती है। ये लोग परिश्रम तथा उद्योग से ऊँचे उठते हैं और अपने अधीन काम करने वालों के द्वेष के कारण नीचा देखते हैं और व्यापारी, प्रतियोगिता में हानि पाते हैं। ये लोग अच्छे वकील, डाक्टर तथा कलाकार हो सकते हैं।

फिर भी प्रेम सम्बन्ध में निराश रहते हैं। स्त्री से झगड़ा रहता है। मन्दभागी होते हैं।

यदि नवमेश मंगल मेष या वृश्चिक का स्वगृही नवम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण तथा अपूर्ण दोनों रूपों में पाई जाती है। ये लोग कुशल, डाक्टर, वकील, भूगर्भवेत्ता, रासायनिक और कृषि शास्त्रज्ञ तथा कृषक भी होते हैं, माता तथा भ्रातृ सुख कम होता है, कलह रहती है। पैतृक सम्पत्ति सुख कम होता है। खर्चा अधिक होता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है फिर भी दूसरी स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। यात्राएँ खूब होती हैं। ये लोग ऐश्वर्य के साथ रहना पसन्द करते हैं और अपना सुन्दर मकान बनाकर रहना पसन्द करते हैं। तन्त्र-मन्त्र द्वारा किसी भी कार्य को करके बड़ा बनने की इन्हें तीव्र इच्छा होती है।

जिसका नवमेश मंगल वृष का दशम घर में हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है। ये लोग सेना, पुलिस में अच्छी प्रगति करते हैं। मातृ सुख रहता है। पिता जीवित रहे तो अनबन रहता है। पैतृक सम्पत्ति नहीं रहती। अपनी बनाकर रहते हैं। विवाह होता है और पर-स्त्री रत रहते हैं, किन्तु सन्तान कष्ट रहता है। बीमार रहते हैं। क्रोध बहुत आता है और जब मंगल धन का होता है तो जातक उच्च विचार, उच्च शिक्षा पानेवाला, सरकारी नौकर, सत्कर्मी, शत्रुभय से युक्त, माता-पिता के सुख से युक्त तथा स्त्री-बच्चों के सुख से युक्त होता है। ये स्वतन्त्र विचार, स्पष्ट वक्ता, जलयात्रा प्रिय, तथा विवाह से लाभान्वित रहते हैं। ये सुदृढ़ धार्मिक विचार होने के कारण कष्ट पाते हैं। परिश्रम तथा उद्योग से उन्नति करते हैं।

जब नवमेश मंगल मिथुन का एकादश भाव में होता है तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग कवि, लेखक, गायन-वादन में कुशल तथा अभिनेता होते हैं। व्यापार में लाभ पाते हैं, बड़े भाई से अनबन रहती है। इष्ट-मित्र द्वेष करते हैं, किन्तु दबे रहते हैं, नन्साल का सुख नहीं होता, शुभ यात्राएँ होती हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है, बच्चे हुए तो बीमार रहते हैं, पुत्र शोक देखना पड़ता है। द्विभार्या योग हो सकता है और जब मंगल उच्च या मकर का होता है तो जातक सद्‌बुद्धि होता है, शिक्षा पूर्ण होती है और पराक्रम पूर्ण कार्य में

यश, धन मिलता है, शत्रु दबे रहते हैं। नन्साल का सुख होता है, अग्नि, चोर, शस्त्र भय रहता है। स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है। लोहे-तांबे के कार्य में लाभ रहता है, जल-यात्रा में प्राण संकट रहता है। किन्तु बच जाते हैं। इष्ट-मित्रों से मेल रहता है, फिर भी कभी-कभी ऋण लेने की नौबत आ जाती है। नियमित जीवन बहुत अच्छा रहता है।

यदि नवमेश मंगल कर्क का नीच द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा सदा अधूरी रहती है। ये लोग नीच कर्म रत, पर-स्त्री गामी तथा पाप वृत्ति होते हैं। ये लोग भीरु प्रकृति तथा गप्पी होते हैं। गुप्त शत्रुओं से कष्ट या विष पाते हैं, नन्साल सुख नहीं होता, स्त्री को गर्भपात तथा भ्रातृहीन होते हैं। जल यात्रा या तैरने, जलक्रीड़ादि में प्राण संकट रहता है। गृहस्थ जीवन सुख-कर नहीं होता या विवाह होता ही नहीं, किसी नीच स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध रखते हैं और सिरदर्द, आधा शीशी होता है, रक्तचाप, रक्तविकार, अर्शादि रोग होते हैं, मन्दाग्नि तथा नेत्र रोग रहता है। कुम्भ राशि गत मंगल के फल कर्क के बहुत कुछ समान ही हैं। इनका चित्त भ्रमित, अनीतिकर तथा पाप रत रहता है। ये लोग तैरने में सुख पाते हैं। जीवन सुखकर व्यतीत नहीं होता है।

नवमेश बुध फल

बुध —जिसका नवमेश बुध तुला का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग सरकारी नौकर, अच्छे लेखक, कवि, सम्पादक, ३६ वर्षोपरि यश, कीर्ति तथा धन लाभ करते हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है, बच्चों का सुख रहता है, कोई-कोई अपढ़ भी रह जाते हैं। बहुत आयु तक गूँगे भी रहते हैं। मस्तिष्क दुर्बल होता है और उपर्युक्त फल के विपरीत रहता है। चित चचल, झूठ बोलने की प्रवृत्ति होती है। धार्मिक कार्यों में खर्च करते हैं, बड़े भाई से लाभ रहता है और जब मकर का बुध हाता है तो मनुष्य मन्द बुद्धि, पापरत रहता है। शिक्षा पूर्ण नहीं होती इसलिये व्यापार या लोहे के कारखानों में नौकरी से लाभ रहता है, विवाह होता है किन्तु स्त्री से कलह रहती है, पिता से कम बनती है, इनकी प्रकृति नीच होती है, गुप्त रोग होता पर सभी समागम करते हैं, झूठ बोलते हैं।

जब नवमेश बुध वृश्चिक का दूसरे भवन में हो तो शिक्षा में अनेक रुकावटें आती हैं, इनकी बातें निडर, आवेशपूर्ण तथा रोबीली होती हैं, उष्ण, मसालेदार,

चने, मांसादि के भोजन पसन्द करते हैं, पराधीनता, नौकरी में प्रगति कम होती है, फिर भी धन कमा लेते हैं। गुप्त रोग होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है और जब कुम्भ का बुध होता है तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, इष्ट-मित्र, समाज, माता,स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, दहेज में काफी माल मिलता है, स्त्री से विचार-विनिमय नहीं होता, जलयात्रा में कष्ट, प्राणभय रहता है।

यदि नवमेश बुध धन का तीसरे स्थान पर हो तो जातक की स्मरण शक्ति तेज, उच्चविचार, प्रकृति शान्त तथा शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग सरपंच, वकील तथा न्यायाधीश तक होते हैं, ये अपने परिश्रम से भाग्योदय को प्राप्त होते हैं, भाई-बहन का सुख रहता है, धार्मिक कार्यों तथा उपकार में धन खर्च होता है, स्त्री सुशील तथा बच्चों का सुख रहता है और जब मीन का बुध हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी लोग उसे विद्वान् समझते हैं, कभी-कभी गप्पों में अपनी कीर्ति को धब्बा लगा लेते हैं, भाई, बहन, स्त्री के सुख से सुखी रहते हैं, कर्ण रोग होता है, जल यात्रा से सुख मिलता है। स्थिति के अनुसार अपने को बदलने में चतुर होते हैं।

जिसका नवमेश बुध मकर राशि का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। व्यापार में धन मिलता है, माता-पिता से अनबन रहती है इसलिये पैतृक सम्पत्ति बहुत कम मिलती है। सरकारी नौकरी में प्रगति बिलकुल नहीं होती, धर्म-कर्म में धन व्यय होता है और सभी बच्चों का सुख कम होता है और जब मेष का बुध होता है तो मनुष्य क्रोधी, तथा एकाकी रहने वाला, माता-पिता का विरोधी, स्त्री-बच्चों से दुखी होता है। अनुचित प्रवृत्ति तथा दुष्ट संगति होता है, पैतृक सम्पत्ति का मालिक, यात्रा करने वाला, पर स्त्री रत होता है।

जब नवमेश बुध कुम्भ का पंचम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। सरकारी नौकरी के साथ-साथ अन्य कार्य भी करके धन कमाना पड़ता है, भाई बहनें बहुत होती हैं, माता-पिता जीवित रहते हैं, इनकी प्रकृति विशेष प्रकार की होती है। विवाह होता है, बच्चे कम होते हैं, लेखक हुए तो आस-पास में यश मिलता है। और यदि वृष का बुध हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, स्वभाव झगड़ालू, स्त्रियों जैसा होता है, स्त्री सुन्दर तथा बच्चे कम होते हैं, काल्पनिक एवं दार्शनिक भी होते हैं, व्यंग्य पूर्ण ताने देते हैं फिर भी लोग इन्हें चाहते हैं।

यदि नवमेश बुध मीन का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग अच्छे लेखक हो सकते हैं किन्तु मस्तिष्क पीड़ा के कारण अधिक कार्य नहीं कर पाते। नन्साल का सुख रहता है, चित चंचल होता है, स्त्री हितकारी नहीं होती। शत्रु रहते हैं, जलयात्रा, तैरने, जलक्रीड़ा के शौकीन होते हैं। और जब मिथुन में बुध हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, वकीलादि के व्यवसाय या लेखन कला में यश धन मिलता है। मामा से सुख मिलता है। मातृ सुख मिलता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। मन्दाग्नि रोग तथा किसी स्त्री के अनुचित प्रेम सम्बन्ध से अपयश मिलता है।

जिसका नवमेश बुध मेष का सप्तम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। ये छलिया प्रकार के चालाक होते हैं, सरकारी नौकरी करते हैं, विवाह के बाद जीवन में स्थिरता आती है, प्रगति होती है, घर से दूर रहते हैं, यात्रायें सुखकर होती हैं, शरीर रोगी तथा कुसंगति में कष्ट होता है। जब कर्क का बुध हो तो सुशिक्षा होती है, क्लर्की, अध्यापकी या पुस्तक विक्रय कार्य से लाभ रहता है, चित चंचल, स्थिरता रहित होता है, स्त्री-बच्चों से अनबन रहती है, स्त्री का चरित्र ठीक नहीं होता, जल यात्रादि हो तो संकटमय रहती है।

जब नवमेश बुध वृष का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, भाग्य मन्द रहता है, जीवन में विशेष उन्नति नहीं होती, विवाह यदि हो तो स्त्री झगड़ालू मिलती है, शरीर रोगी रहता है और धन खर्च होता है। बच्चों का सुख कम होता है। इष्ट-मित्रों से भिन्नता रहती है। जब बुध सिंह में होता है तो शिक्षा बहुत कम होती है, वन-विनोद, बनैली वस्तुओं से लाभ होता है। स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है। आवेशपूर्ण रहते हैं, व्यवहार ठीक नहीं होता, अपयश तथा रोग होते हैं।

यदि नवमेश बुध मिथुन या कन्या का नवम भाव में हो तो जातक बुद्धिमान् तथा सुशिक्षित होता है। सरकारी नौकरी तथा कलापूर्ण कार्यों, लेखों, कविताओं में धन तथा यश मिलता है, स्त्री सुन्दर तथा सुशील होती है, विवाह के बाद भाग्योदय होता है, स्त्री-बच्चों, भाई-बन्धुओं का सुख रहता है, धार्मिक प्रवृत्ति तथा तीर्थ यात्रा में धन खर्च होता है, ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक तथा गणित में यश मिलता है, यात्राएँ सुखकर होती हैं, भ्रातृ सुख रहता है।

जिसका नवमेश बुध कर्क का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण होती है, कलापूर्ण लेखकों, कविताओं में धन, यश मिलता है, पिता से नहीं बनती, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, मातृ-सुख रहता है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है और जब तुला में हो तो मनुष्य बुद्धिमान् तथा पूर्ण शिक्षित होता है, सरकारी नौकरी में प्रगति करता है, चित्त चंचल, स्वभाव कोमल, कपड़े पहनने का शौकीन तथा श्रृंगारी होता है, दूसरे की स्त्री में रत रहता है, झूठ बोलने की आदत होती है, प्रपंच में कष्ट तथा शरीर में अनेक रोग रहते हैं, शिक्षा कम होने पर सफल वस्त्र विक्रेता या व्यापारी होते हैं। शहर, ग्राम तथा निगमादि में स्थान पाते हैं, यश मिलता है।

जब नवमेश बुध सिंह का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम तथा व्यापार में धन लाभ होता है, बड़े भाई से अनबन रहती है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, विदेश यात्रा तथा शिक्षा में पूर्ण प्रगति होती है और अन्तर्जातीय स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध रहता है, विधर्मी हो सकते हैं, चित्त चंचल, विचार स्वतन्त्र होते हैं, कलाकार होते हैं। वृश्चिक में शिक्षा अपूर्ण होती है, स्वतन्त्र व्यापार करना पड़ता है, बड़े भाई से द्वेष रहता है, स्त्री-बच्चे का सुख कम ही रहता है, यात्राएँ होती हैं, जीवन सुखकर रहता है, कभी-कभी बीमारी के झटके आते हैं।

यदि नवमेश बुध कन्या का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, पढ़ने की इच्छा बनी रहती, मातृ सुख पूर्ण, पिता का कर्ज देना पड़ता है, विवाह में धन मिलता किन्तु खर्च होता है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। ऋण द्वारा शत्रु से दबना पड़ता है, विचार उच्च तथा धार्मिक होते हैं, तीर्थ यात्रा मध्यायु के बाद होती है। और जब धन का बुध हो तो विचार उच्च तथा शिक्षा पूर्ण होती है। व्यापार या अन्य व्यवसाय तथा लेखन कला में धन तथा यश प्राप्त करते हैं, सत्कर्म रत धार्मिक, समाज सेवी तथा स्नेही होते हैं। राजनीति में सफल रहते हैं किन्तु दुष्ट संगति से हानि उठाते हैं, शत्रु दबे रहते हैं। नन्साल से सुख मिलता है। चित्त की वृत्ति चचल होती है इसलिए पर-स्त्री कटाक्ष से अपयश पाते हैं।

नवमेश गुरु फल

गुरु—जिसका नवमेश गुरु मेष का लग्न में हो, तो जिन जातकों की शिक्षा पूर्ण होती है वे शिक्षक, प्रोफेसर, वकील, जज, कवि, लेखक, सम्पादकादि कार्य

में यश तथा धन प्राप्त करते हैं और जिनकी शिक्षा अपूर्ण रहती है वे क्लर्क, मन्दिर के पुजारी, कथा-वार्तादि से जीवन, यापन करते हैं किन्तु विचार सभी के अहंभाव पूर्ण होते हैं, धर्मभीरु तथा शान्त प्रकृति के होते हैं, द्विभार्या योग भी होता है, माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सामान्य सुख रहता है। प्रथम पुत्र का सन्ताप होता है, स्त्री गर्वीले स्वभाव की, धनिक घर की होती है। ४२ से ४८ वर्ष तक भाग्योदय होता है तो शत्रु दबे रहते हैं और जब कर्क या उच्च का गुरु लग्न में होता है तो शिक्षा उच्च होती है ये। लोग कलाकार, नाटचकार, गायनाचार्य आदि होकर नाम तथा धन कमाते हैं। इनका स्वभाव आवेश-पूर्ण तथा घमंडी होता है, व्यवहार कुशल होने के कारण धोखा बहुत ही कम खाते हैं। सरकारी नौकरी में बड़ी पदवी पाते हैं। इनकी मनोवृत्ति नीच प्रकार की होती है। स्वतन्त्र व्यवसाय, डाक्टर तथा बहुत अच्छे वकील होते हैं। स्त्री रोगी तथा बच्चों का सुख होता है। इनका प्रेम सम्बन्ध किसी नीच स्त्री से होता है।

जब नवमेश गुरु वृष राशि का दूसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, पिता की दशा अच्छी नहीं होती, इष्ट-मित्रों से आशा नहीं होती, धनाभाव में पढ़ नहीं पाते, कुटुम्ब वाले ही शत्रु रहते हैं किन्तु दबे रहते हैं। ये लोग स्वाध्याय प्रिय तथा धार्मिक प्रकृति के होते हैं। सरकारी नौकरी में विशेष उन्नति नहीं हो पाती, विवाह अच्छे घर होता है, और विवाह के बाद उन्नति होती है एवं ये दोनों ही घर की उन्नति करते हैं, बच्चों का सुख रहता है और जब सिंह का गुरु हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक होते हैं, शत्रुजित्, पराक्रमशील कार्यों में सेना या पुलिस विभाग में निर्दयता पूर्वक धन कमाते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, ये लोग शक्तिबल तथा विद्या के घमंडी होते हैं, वीररस के कवि, लेखक तथा कुशल गायक भी होते हैं।

यदि नवमेश गुरु मिथुन का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा विशेष न होने पर भी सुशिक्षित से ज्ञात होते हैं, विद्यारत रहते हैं, ये लोग अच्छे शिक्षक या क्लर्क होते हैं। अभिमानी होते हैं। इसलिए भाइयों से नहीं बनती किन्तु कायदे-कानून के पाबन्द होते हैं। आवेशपूर्ण कार्यों में हानि उठाते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। ये किसी निकट सम्बन्धी लड़की के प्रेम में अपयश

पाते हैं, कलापूर्ण कार्यों से लाभ तथा यश मिलता है और जब कन्या का गुरु हो तो बहुत कुछ फल मिथुन के समान ही होता है, ये लोग अपने परिश्रम से अपनी पिछली अवस्था तक यश, कीर्ति तथा धन लाभ में सफल होते हैं, इनका विवाह किसी नीच स्त्री से या फिर किसी आयकर स्त्री से होता है। उसी को कमाई खाते हैं। इनको जिगर, तिल्ली, मन्दाग्नि की शिकायत रहती है।

जिसका नवमेश गुरु कर्क का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा उत्तम तथा विचार उच्च होते हैं, माता का सुख तथा पिता का सुख कम होता है, पैतृक सम्पत्ति नहीं होती, स्व-उद्योग से मकान, जमीन, बाग जायदाद बनानी पड़ती है। विदेश यात्रा या विदेशी वस्तु के व्यापार से लाभ होता है, धार्मिक कार्यों में खर्च होता है। इन्हें सार्वजनिक कार्यों में यश मिलता है, विवाह में दहेज खूब मिलता है। बच्चों का सुख रहता है और जीवन में एक न एक बार अचानक लाट्री, पौंड, सट्टे या रेस से धन अवश्य प्राप्त होता है। बिगड़ी हुई परिस्थिति सुधर जाती है। काल्पनिक दार्शनिकता से लाभ उठाते हैं और यदि तुला का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है और वह अध्यापक, प्रोफेसर, वकील, साहित्यक तथा कला पूर्ण कार्यों से लाभ उठाते हैं, इनका विवाह बड़े घर तथा लाभान्वित जगह होता है, इनके बच्चे आज्ञाकारी तथा कुशाग्रबुद्धि होते हैं और राज्यपदाधिकार प्राप्त करते हैं, इन्हें भ्रातृ सुख रहता है। किन्तु जातक पाण्डु, वात, पित्तादि रोगों से ग्रसित रहता है। जीवन सुखमय व्यतीत होता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु सहायक होते हैं।

जब नवमेश गुरु सिंह का पंचम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग वकील, डाक्टर, प्रोफेसर या बड़े सरकारी नौकर होते हैं। लेखक, कवि, सम्पाकादि कार्य में भी सफलता प्राप्त करते हैं। समाज में सराहना प्राप्त करते हैं। विवाह के बाद भाग्योदय होता है। बच्चे भी बड़े आदमी होते हैं किन्तु उनका सुख पिता को नहीं होता। शरीर निरोग रहता है और वृद्धावस्था में वायु, कफ रोग हो जाता है, ये लोग धार्मिक, तीर्थयात्रा प्रिय तथा सत्कर्मी होते हैं, किन्तु इन्हें क्रोध बहुत होता है जो कि क्षणिक होता है और जब वृश्चिक का गुरु हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, व्यभिचारी प्रकृति होती है, गुस्सा बहुत आता है। विवाह होता है, किन्तु सन्तान नहीं जीती। पैतृक जायदाद होती है। बड़े भाई से अनबन रहती है। किन्तु बुरा नहीं चाहते, यात्रायें होती हैं। पुरुषार्थ तथा पराक्रम फलता है।

यदि नवमेश कन्या का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी ही रहती है। बुद्धि अनुचित कार्यों में लगती है, इसलिये परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहते हैं। माता-पिता का सुख रहता है। नन्साल का सुख नहीं होता। शत्रु होते हैं। नीच स्त्री के सम्बन्ध से बदनामी होती है। घर से भागने तक का योग भी आता है, सरकारी नौकरी कठिनता से मिलती है। पैतृक सम्पत्ति मिलती है और यदि धन का गुरु हो तो जातक कम शिक्षित होने पर भी शिक्षित-सा प्रतीत होता है। शत्रु दबे रहते हैं। मामा का सुख होता है। भाग्य साथ नहीं देता, शराब, जुआ, वेश्यागमनादि के साथ-साथ गुप्त रोग-धातु सम्बन्धी लगे रहते हैं। इन्हें जीवन में अपयश अवश्य प्राप्त होता है। इन्हें अपनी स्त्री से हानि होती है। बच्चों का सुख नहीं होता।

जिसका नवमेश गुरु तुला का सप्तम स्थान पर हो तो उसकी शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग अच्छे डाक्टर, वकील, साहित्यिक तथा कलाकार होते हैं किन्तु इनकी प्रकृति नीच होती है। ये लोग दिखाने के लिये दयालु, उदार, धार्मिक तथा परमार्थी होते हैं, वास्तव में ये लोग बड़े कामी तथा व्यभिचारी होते हैं। द्विभार्या योग होता है। दूसरे विवाह के बाद कुछ स्थिरता आती है। जलयात्रा, विदेशी वस्तु व्यापार से लाभ होता है, भ्रातृ सुख रहता है। अन्तर्जातीय प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। स्वजन विरोध तथा स्त्री-पुत्रों से त्रास को प्राप्त होते हैं, और जब गुरु मकर का होता है तो उपर्युक्त गुण द्विगुणरूप से खराब फल करते हैं। शिक्षा नहीं होती, नीचरत रहते हैं। कुसंगति में अपयश पाते हैं, यदि विदेश यात्रा हुई तो विधर्मी होकर विधर्मी स्त्री से प्रेम-विवाह करके जीवन व्यतीत करते हैं, बल्कि उसे भी प्रपंच से त्याग देते हैं। नास्तिक होते हैं, जीवन में कभी स्थिरता तथा सुख नहीं मिलता।

जब नवमेश गुरु वृश्चिक का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, इसका स्वभाव झगड़ालू होता है, और चालाकी से काम निकालना चाहता है। इसको पैतृक सम्पत्ति तो नहीं मिलती किन्तु रोग अवश्य मिलते हैं। यदि विवाह हुआ तो स्त्री से नहीं बनती, सदा मन्दभागी रहता है। यात्रा में कष्ट पाता है। गर्मी, पित्तादि रोग होते हैं। धन खर्च होता है, जीवन दुखी रहता है। और जब कुम्भ का गुरु हो तो शिक्षा अच्छी होती है, किन्तु उसका उपभोग नहीं होता क्योंकि वह उस शिक्षा का अग्रप्रसार लेता है। इसका विवाह किसी विधवा

या बड़ी अवस्था वाली स्त्री से होता है। उससे धन लाभ अवश्य रहता है। जल-यात्रा में कष्ट तथा तैरने में डुबकी खानी पड़ती है। यदि विदेश यात्रा हुई तो विधर्मी स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध रहता है। ये लोग कामी तथा पाप वृत्ति के होते हैं। सदा कुसंगति तथा नीच आदमियों के संसर्ग में रत रहते हैं।

यदि नवमेश गुरु धन या मीन का स्वगृही होकर नवम स्थान में स्थित हो तो जातक की शिक्षा विशेष रूप से पूर्ण होती है। देश-विदेश में विशेष शिक्षा के लिये जाना पड़ता है, ये लोग डाक्टर, सर्जन, वकील, बैरिस्टर, मिनिस्टर, राज्यप्रमुख आदि होकर धन, यश-कीर्ति लाभ करते हैं। इनके स्वभाव शान्त-विचार, उत्तम, न्यायप्रिय, तथा परोपकारी होते हैं। इनकी स्त्री सुन्दर, शान्त, शिक्षित तथा गृह कार्य दक्ष होती है। फिर भी इन्हें पुत्रों का सुख नहीं होता, प्रथम पुत्र नहीं जीते, यदि जीवित रहे तो वे कुकर्मी होते हैं। और उनसे कष्ट ही मिलता है, ये लोग धार्मिक तथा तीर्थयात्रा प्रिय होते हैं। स्वास्थ्य सुन्दर तथा निरोग रहता है। इष्ट-मित्रों, भाई-बन्धुओं का सुख रहता है, मीन का गुरु मनुष्य को कामी तथा व्यभिचारी बनाता है। ये लोग दानी, वाहनयुक्त, सज्जनों के प्रेमी होते हैं।

जिसका नवमेश गुरु मकर (नीच) का दशम में हो तो जातक नीच प्रकृति, अशिक्षित-सा होता है। सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, बहुत हुए तो क्लर्क तक ही होते हैं। पिता से ४२ वर्षोपरि सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। माता का सुख रहता है, विवाह बहुत कम होता है, जिसका विवाह होता है तो उसकी स्त्री से कलह रहती है। इष्ट-मित्रों से मेल कम रहता है। धन चिन्ता रहती है। अपने ही शत्रु होते हैं, जीवन में निराश रहते हैं। उदासी में बड़ी ठेस पाकर घर-बार छोड़ जाते हैं। और एकान्त-वास में सुख पाते हैं। यदि मेष में गुरु हो तो शिक्षा उच्च होती है। ये लोग वकील, डाक्टर, प्रोफेसरादि बड़े आदमी होते हैं। सरकारी नौकरी, सेना पुलिस विभाग में प्रगति अच्छी होती है। जीवन सुखी रहता है। माता-पिता का सुख रहता है। पैतृक सम्पत्ति मिलती है। स्त्री-बच्चों का सुख साधारण रहता है, किसी नीच स्त्री से गुप्त प्रेम सम्बन्ध होता है, शत्रु दबे रहते हैं।

जब नवमेश गुरु कुम्भ का एकादश स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। जातक स्वतन्त्र विचारों वाला, स्पष्ट वक्ता होता है। उसे अपने

इष्ट-मित्रों से मिलकर प्रसन्नता होती, विदेशी व्यापार से लाभ होता है। जलयात्रा में संकट रहता है। बड़े भाई का सुख कम होता है। स्त्री-बच्चों से अनबन ही रहती है। घरेलू जीवन सुखकर नहीं होता। ये सामाजिक जीवन में प्रगति द्वारा धन तथा यश प्राप्त करते हैं। छोटे मनुष्यों की सहायता करते हैं, और जब वृष का गुरु होता है तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग नौकरी भी करते हैं। स्वतन्त्र व्यवसाय भी करने वाले होते हैं। कायदे-कानून के जानने वाले, वकील, जज आदि होते हैं। विदेशी वस्तुओं के व्यापार से लाभ रहता है, जल यात्रा में सुख मिलता है, विदेश में विदेशी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है।

यदि नवमेश गुरु मीन का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी ये लोग परिश्रम तथा उद्योग से अपनी परिस्थिति को सुधार कर रखते हैं। इनके गुण यद्यपि इन्हें पूर्ण सफलता प्रदान नहीं करते फिर भी विदेशी वस्तुओं, विदेश यात्रा से इन्हें लाभ होता है। ये लोग सत्कर्मी, धार्मिक तथा तीर्थ यात्रा पर धन खर्च करने वाले होते हैं। समाज सेवा में रत रहते हैं। सबसे प्रेम का व्यवहार रखते हैं। और जब मिथुन का गुरु होता है तो शिक्षा अधूरी रहती है। व्यापार में सफलता मिलती है। इनका रहन-सहन सीधा-सादा होता है। कविता, लेखनकलादि में सफलता मिलती है। ये परआ स्त्री प्रेम-रत रहते हैं जिस पर खर्च करते अपयश पाते हैं। दिखाने के लिये धार्मिक यात्रायें करते हैं पर इनके जीवन में बनावट पाई जाती है। बडे प्रेमी से दिखाई देते हैं। कामी होते वे। आँखों में मस्ती, प्रेम की मादकता पाई जाती है।

नवमेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका नवमेश शुक्र कन्या राशि का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। फिर गायन, वादन, नाटक, शृंगारी कवितायें, लेखादि कला-पूर्ण कार्यों में धन तथा यश मिलता है। ये लज्जालु स्वभाव के मधुरभाषी, व्यापारी, अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह रत होते हैं। अभीष्ट पत्नी मिलने तक अविवाहित रहते हैं। दर्शनीय होने के कारण पर स्त्री की वार्ता से आकर्षित करने वाले, नीच तथा सुन्दर लड़की से सम्बन्धित होते हैं। धातु सम्बन्धी रोग (प्रमेह, स्वप्नदोषादि) होते हैं। और कुम्भ का शुक्र होता है तो जातक की शिक्षा कम और उसकी

पत्नी को शिक्षा अधिक होती है। दोनों में प्रेम होता है। फिर भी सड़क चलती लड़कियों से छेड़-छाड़ तथा आवाजें कसने का शौक होता है। और अन्य स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखते हैं। आलसी तथा घर की सम्पत्ति नष्ट करने वाले, सन्तान से सुखी होते हैं। इनको जीवन में किसी स्त्री की सहायता होती है। द्विभार्या योग होता है, गुप्त रोग होते हैं।

जब नवमेश शुक्र तुला का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग सुन्दर कवि, लेखक, साहित्यकार, व्यापारी, कलाकार तथा सुगन्धित वस्त्रों से युक्त होते हैं। दान तथा उपकार के कारण किसी संस्था में प्रधान पद पाते हैं। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। विवाह अच्छे घर होता है। फिर भी स्त्री, बच्चों की ओर से चिन्तित रहना पड़ता है। स्वयं का शरीर रोगी, नेत्र ज्योति क्षीण होती है। और जब मीन का शुक्र हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। उपर्युक्त गुणों के साथ-साथ सवारी सुख, प्रधान पद उत्कर्ष, धन-धान्य पूर्ण, विद्वान्, कुशल लेखक तथा धार्मिक, दानी, परोपकारी होता है। द्विभार्या योग होता है। बच्चों का सुख रहता है। किसी के धोखे में आकर धन नष्ट होता है। जलयात्रा, विदेशी वस्तुओं से लाभ होता है।

यदि नवमेश शुक्र वृश्चिक का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। मनुष्य किसी विषय से पूर्ण परिचित न होने पर भी उस विषय को जानने का अभिमान रखता है। चालाक होता है। विवाह में देर होती है। यदि जल्दी विवाह हुआ तो स्त्री मर जाती है। दूसरे विवाह के बाद स्थिरता आती है। पुत्र चिन्ता रहती है। कन्यायें अधिक होती हैं। गुप्त शत्रुओं से हानि होती है। प्रवास तथा ऋण चिन्ता रहती है। कर्ण रोग तथा किसी कुल्टा के सम्बन्ध से धन, कीर्ति को धब्बा लगने वाला होता है। और जब शुक्र मेष का होता है तो उपर्युक्त फल के समान ही फल होता है। ये लोग विवाह के लिये अनेक लड़कियों को नापसन्द करते हैं। और अति सुन्दर लड़की इन्हें नापसन्द कर देती है। इसलिये विवाह एक साधारण सी लड़की से करना पड़ता है। ये लोग वेश्यागामी, लम्पट, परस्त्री-रत तथा अनेक रोग से रोगी होते हैं। मन्दाग्नि, अपच तथा धातु क्षीण सम्बन्धी रोग होते हैं। इन्हें व्यापार से लाभ रहता है। स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है।

जिसका नवमेश शुक्र धन का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। मनुष्य उच्चविचार, कविता करने वाला, लेखक, सुशील, दयालु तथा परोपकारी होता है, अपने कलापूर्ण कार्यों द्वारा धन तथा कीर्ति लाभ करता है। पैतृक सम्पत्ति मिलती है। माता का सुख कम होता है। यदि जीवित रही तो रोगी रहती है। विवाह के बाद भाग्योदय होता है। अपनी जायदाद होती है। स्त्री सुन्दर तथा चंचल होती है। यह स्वयं पर-स्त्री को आकर्षित करने के लिये काफी दर्शनीय होता है। इसलिये स्त्रियाँ इसे चाहती हैं। और यह व्यभिचारी हो जाता है। जब शुक्र वृष का होता है तो शिक्षा पूर्ण नहीं होतो है। सरकारी नौकरी में प्रगति होती है। माता का सुख तथा पिता से अनबन रहती है। वाहन, जमीन-जायदाद का सुख रहता है। इनके विचार श्रेष्ठ, रहन-सहन सादा होता है। पत्नी सुन्दर नहीं होती, दूसरा विवाह भी होता देखा गया है। ये अपने कलापूर्ण कार्यों द्वारा भी धन कमाते हैं। कभी-कभी विवाह देर में या नहीं भी होता। ये गुप्तरूप से अनेक स्त्रियों पर आसक्त रहते हैं। स्वप्नदोष तथा धातु क्षीण, प्रमेह आदि रोग होते हैं। लोग इन्हें सच्चरित्र समझते हैं।

जब नवमेश शुक्र मकर का पंचम स्थान पर हो तो अधिकतर जातकों को शिक्षा अपूर्ण रहती है और कोई-कोई उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये विदेश यात्रा भी करते हैं। इनका विवाह विशेष सुखकर नहीं होता, कन्यायें बहुत होती हैं, बड़ो अभिलाषा के बाद पुत्रोत्पत्ति होती है। सरकारी नौकरी, व्यापार या अन्य व्यवसाय से साधारण ही लाभ होता है। इन्हें रुपये के लिये किसी वृद्धा के प्रेम-प्रभाव में रहना पड़ता है, चिन्तातुर रहने के कारण इन्हें एकान्त अच्छा लगता है और जब शुक्र मिथुन का होता है तो मनुष्य बुद्धिमान् होता है, किन्तु फिर भी उसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती। ये लोग ज्योतिष, घड़ी-साजी, दर्जीगिरी, कवि, लेखक आदि अनेक कार्य जानने वाले होते हैं, पिता का सुख कम, मातृ सुख अधिक होता है, स्त्री-बच्चों के रहते हुए भी इनका सुख विशेष नहीं होता। ये लोग धार्मिक होते हैं, मिलनसार तथा शान्त होते हैं, किन्तु विश्वसनीय नहीं होते।

यदि नवमेश शुक्र कुम्भ का छठे भाव में होता है तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। कलापूर्ण कार्यों में सफलता मिलती है, नन्साल का सुख रहता

है, गुप्त शत्रु हानि पहुँचाते हैं, स्त्री सुन्दर न होने पर भी हितकारी होती है, तैरने तथा जल यात्रा में कष्ट होता है, विदेश यात्रा में विधर्मी से प्रेम सम्बन्ध होता है। धातु सम्बन्धी रोग होते हैं, नजला, जुकाम होता है। बीमारी में काफी खर्च करना पड़ता है, नेत्र-ज्योति भी क्षीण हो जाती है और जब कर्क राशि में शुक्र होता है तो जातक सुशिक्षित, कलाकार, शान्त, मधुरभाषी, उदार, काल्पनिक, दार्शनिक, कवि, नाटयकारादि होने पर भी सफलता कम मिलती है। सदा परेशानी, चंचलचित्त रहता है। मामा का सुख नहीं होता, स्त्रियाँ आकर्षित होती हैं, किन्तु प्रेम में सफलता नहीं मिलती, बुरी लतों के कारण बिमारियाँ होती हैं। जीवन नीरस तथा भार लगता है।

जिसका नवमेश शुक्र मीन का सप्तम स्थान पर उच्च का हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, विचार उच्च होते हैं। विद्या प्राप्ति के लिये विदेश यात्रा सुखकर रहती है, वह किसी स्त्री के प्रेमरत रहते हैं, कामेच्छा प्रबल होती है। प्रेम-विवाह के प्रेमी, पर स्त्री आकर्षण में तत्पर होते हैं, गुप्त रोग के रोगी होते हैं। इनकी स्त्री प्रभावात्मक, स्वार्थी, खर्चीली तथा व्यवहार कुशल होती है। द्विभार्या योग हो सकता है, ये ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करते हैं। तैरने के शौकीन होते हैं और जब सिंह का शुक्र हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, इनकी स्त्री स्वतन्त्र प्रकृति की वासना-रहित सी होती है, पुत्र-सन्तान चिन्ता रहती है, कन्यायें होती हैं, विवाह सम्पन्न घर होता है, जीवन सुखी रहता है। जल-यात्रा में कष्ट होता है, इन्हें गाने-बजाने, कविता करने तथा कहने का शौक होता है।

जब नवमेश शुक्र मेष का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा बहुत कम होती है, यह आवेशपूर्ण, झगड़ालू होता है, मन्दभागी रहता है, हिंसक पाप-वृत्ति रहती है, धनाभाव रहता है, नौकरी तथा व्यापारादि में सफलता नहीं मिलती, ऋणी रहते हैं, इष्ट-मित्रों के सहयोग से कार्य चलता है, यदि विवाह हुआ तो स्त्री-बच्चों से झगड़ा रहता है, जल यात्रा या तैरने में प्राण-संकट उपस्थित होता है। चोटादि दुर्घटनायें होती हैं और यदि कन्या का शुक्र हो तो मेष की अपेक्षा अधिक सभ्य तथा शिक्षित होता है, फिर स्त्री-बच्चों की ओर से सदा चिन्तित रहता है, इसका सदा किसी न किसी नीच जाति की लड़की से अनुचित सम्बन्ध रहता है, यात्रा में दुःख पाता है। प्रमेहादि गुप्त रोग होते हैं,

यह स्त्री वार्तालाप में चतुर होती है। सदा आर्थिक परिस्थिति खराब रहती है, ऋण बना ही रहता है, जीवन भार-सा लगता है।

यदि नवमेश शुक्र वृष या तुला का स्वगृही नवम भाव में बैठा हो तो जातक की शिक्षा यदि पूर्ण न भी हो तो भी ये लोग पूर्ण विद्वान् से प्रतीत होते हैं, मधुरभाषी, दर्शनीय, हँसमुख, चित्रकार, कलाकार, गायन-वादन प्रवीण, सुगन्धि युक्त रंगीन वस्त्र धारण करने वाले, सबके प्रेमी, मिलनसार, प्रधान पद चाहने-वाले, धन-धान्य पूर्ण, धार्मिक, तीर्थ यात्रा प्रिय, भाई-बहनों के सुख से युक्त, स्त्री-बच्चों वाले, कविता, कहानी, लेख, नाटकादि में धन तथा यश कमानेवाले होते हैं। इनकी स्त्री सुन्दर, धनिक तथा विनम्र होती है। कामी तथा स्वार्थी होती है। यदि विदेश यात्रा हुई तो धर्मादि की चिन्ता न करते हुए विधर्मी कन्या से प्रेम स्थापित करते हैं। जल यात्रा सुखद होती है, पर-स्त्री रत रहते हैं।

जिसका नवमेश शुक्र मिथुन का दशम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग कवि, लेखक, कलाकार, नौकरी के साथ अन्य व्यवसाय करने वाले, ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, चिकित्सा, वनस्पति ज्ञान से पूर्ण गायन-वादन में कुशल होते हैं। शुभ-विवाह से युक्त, दर्शनीय बच्चों के सुख से सुखी, भूमि-धर, सुन्दर मकान से युक्त, पितृ सुख से सुखी, मातृकष्टी होते हैं। ये मिलन-सार, उदार, धार्मिक, लोक-प्रिय, खर्चीले स्वभाव के होते हैं। कामासक्त रहते हैं और जब वृश्चिक का शुक्र हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, व्यवसाय या सर-कारी नौकरी, क्लर्की करनी पड़ती है, विवाह यदि हुआ तो स्त्री से अनबन, बच्चों का सुख कम होता है, द्विभार्या योग भी सुखकर नहीं होता, किसी कुलटा के संसर्ग से धन, हानि तथा अपयश प्राप्त होता है, ऋणचिन्ता तथा प्रवास में कष्ट होता है।

जब नवमेश शुक्र कर्क का एकादश स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण होती है फिर भी ये अपनी बुद्धि प्रखरता के कारण, व्यापार तथा कार-खानादि के कार्यों में अच्छी प्रगति करते हैं, धन और यश पाते हैं, मितव्ययी होते हैं। समझदारी से अच्छे पढ़े-लिखे व्यक्तियों को भी अपनी बात मनवाने में समर्थ हो जाते हैं। रेडियो, मशीन, खेती के औजारादि बनाने में प्रवीण होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, कन्यायें अधिक होती हैं। कभी-कभी ऋण

लेना पड़ता है। पैतृक सम्पत्ति मिलती है। द्विमार्या योग हो सकता है, धार्मिक वृत्ति होती है, काम-वासना प्रवल होती है और जब धन का शुक्र हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग सफल कलाकार, दुहरी आय वाले, पर-स्त्री से सम्बन्धित, पुत्र शोक से युक्त होते हैं। निर्धन, भाई का खर्च उठाने वाले, नौकरी या व्यापार करने वाले, जल यात्रा से सुखी, शत्रु भय से युक्त, कविता प्रेमी होते हैं।

यदि नवमेश शुक्र सिंह का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, वह स्वतन्त्र विचार, सौन्दर्य प्रिय, कलाकार, कवि, गायन जानने वाला, साहसी कार्य से लाभ पाने वाला, अधिक खर्चीला होता है, विवाह होता है, किन्तु स्त्री झगड़ालू होती है, व्यापार में सफलता मिलती है, नौकरी करनी पड़ती है, प्रवृत्ति व्यभिचार मय होती है, सन्तान कष्ट रहता है, विवाह के बाद स्थिरता तथा धन आता है, किसी नीच शत्रु से हानि होती है और जब शुक्र मकर का होता है तो जातक मन्द बुद्धि, रुक-रुक कर शिक्षा प्राप्त करने वाला, सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, क्लर्क ही रहना पड़ता है, विमाता से कष्ट मिलता, प्रवास में रहना पडता है, विदेश व्यापार करने पर सफलता रहती है। प्रेम में विफलता रहती है, ये लोग धन तृषित होते हैं, इसलिये धनिक स्त्री की चाह में विवाह नहीं करते। यदि विवाह हुआ तो आपस में झगड़ा रहता है। अधिकतर किसी नीच स्त्री के प्रभाव में धन के लिये रहना पडता है। मामा से नहीं बनती, गुप्त शत्रु तथा ऋण चिन्ता रहती है, ये चिड़चिड़े स्वभाव के, शक्तिहीन, निर्बुद्धि, क्रोधी होते हैं।

नवमेश शनि फल

शनि—जिसका नवमेश शनि वृष का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी या नहीं भी होती, ये लोग चालाक (डिप्लोमेट), लकड़ी, लोहा, कोयला, खान आदि में कार्य करने वाले या व्यापारी होते हैं। यदि विवाह हो जाय तो स्त्री बीमार रहती है, बच्चों का सुख कम होता है, छोटे भाई तथा पिता से मनमुटाव रहता है। शरीर बचपन में पुष्ट तथा रंग कृष्ण होता है, बीमारियों अवस्था के साथ-साथ वढ़ती जाती हैं, वायु रोग प्रधान रहता है। साधारण वेष-भूषा में उदास वृत्ति रहते हैं। जब मिथुन का शनि हो तो जातक पूर्णापूर्ण

शिक्षा वाले होते हैं। जिनकी शिक्षा पूर्ण होती है, वे लोग वकील, बैरिस्टर, तथा न्यायाधीश तक होते हैं, शेष क्लर्कादि रहकर जीवन व्यतीत करते हैं, ये सभी कृपण, मिलन सार, क्रोधी, हठी, स्वाभिमानी, पर-स्त्री से विमुख, जीवन से उदास, परदेश में रहने वाले, ज्योतिषादि में सिद्धहस्त, एकान्त जीवन व्यतीत करने वाले, माता-पिता, बहन-भाई, इष्ट-मित्र सभी के विरुद्ध रहने वाले होते हैं, ये सर्वत्र अपना ही प्रधानत्व चाहते हैं। प्रथम विवाह नहीं करते, यदि विवाह हो जाय तो स्त्री बीमार, खर्चीली, अभिमानी होने से बच्चों तक का सुख प्राप्त नहीं होता, उदार स्वभाव होने के कारण अपने पर खर्च न करके गरीबों, दुखियों पर खर्च शक्ति से अधिक भी कर देते हैं।

जब नवमेश शनि मिथुन का दूसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा बहुत कम होती है, छोटे-छोटे व्यवसाय या छोटी नौकरी करनी पड़ती है, शरीर दुर्बल, प्रकृति अकड़दार होती है। विवाह होता है, किन्तु स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, पुत्र कम होते हैं, स्त्री या स्वयमेव वायु, कफ, ज्वरादि के रोगी रहते हैं। पैतृक जायदाद मिलती है, फिर भी गुजर कठिनाई से होती है, जीवन निर्धन ही रहता है, और जब कर्क का शनि हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, चालाक होते हैं, किसी के धोखे में नहीं आते, छोटे-छोटे व्यापार कर गुजारा करते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, जीवित रहे तो अनबन रहती है, पिता से सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। वायु रोग, गठिया, टांसिलादि होते हैं। जल-यात्रा या तैरने में कष्ट होता है। बड़े भाई का सुख नहीं होता है।

यदि नवमेश शनि कर्क तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है, जीवन में कोई विशेष उन्नति न होने से जीवन निराश रहता है, और कभी-कभी आत्महत्या तक कर लेते हैं। विवाह के बाद धन संकट आता है, स्त्री-बच्चों से कलह रहती है। भाइयों से अनबन रहती है, उद्योग करने पर भी सफलता नहीं मिलती, कान में, पेट में, पेड़ू में, गुर्दे में, दर्द आदि होते हैं, जल यात्रा में कष्ट होता है, और जब सिंह का शनि हो तो शिक्षा बहुत कम होती है, पुलिस, सेना में पराक्रम द्वारा सफलता मिलती है। पिता-पुत्र की नहीं बनती, लेखन कार्य में कुछ सफलता मिलती है। धन की कमी, यात्रा में दुख होता है, स्त्री-बच्चे, बहन-भाई, इष्ट-मित्रादि से नहीं बनती, स्वयमेव बीमार रहते हैं।

जिसके नवमेश शनि सिंह का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण तथा अपूर्ण दोनों रूपों में पाई जाती है, पूर्ण शिक्षक, लोक डाक्टर, वकील, न्यायाधीश, कुशल लेखक, सम्पादक होते हैं। अपूर्ण शिक्षित, क्लर्कादि होकर नौकरी में विशेष प्रगति नहीं कर पाते, औफीसरों की अनुचित बात नहीं सहते, द्विभार्या योग होता है, कभी वाचाल, कभी उदास रहते हैं। माता पिता से अनबन रहती है। शत्रु दबे रहते हैं, शरीर रोगी रहता है। और जब कन्या का शनि हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, सरकारी नौकरी में प्रगति बहुत कम होती है। व्यापार से लोहे, कोयले का लाभ रहता है, यदि विवाह हुआ तो बच्चों के लिये तरसना पड़ता है। ये लोग जीवन में अधिकतर दुखी तथा उदास रहते हैं, जीवन भार रहता है, वृद्धावस्था में कफ, वात होता है। नेत्र ज्योति क्षीण हो जाती है. पिता से अनबन रहने के कारण पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती, अधिकतर ऋणी रहते हैं। मित्रता अस्थिर होती है।

जब नवमेश शनि कन्या राशि का पंचम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, पढ़ाई में अनेक विघ्न पड़ते हैं, व्यापार में हानि रहती है। नौकरी ही अच्छी रहती है, विवाह दो-तीन तक होते हैं, फिर भी स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, स्वभाव मिलनसार तथा हठी होता है, कुटुम्बियों से अनबन रहती है, बड़े भाई से कलह रहती है, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता, नेत्र ज्योति क्षीण तथा वायु, कफ स्वाँसादि रोग रहते हैं और जब तुला का शनि हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग किसी कार्य में दक्ष होते हैं, वकालत, डाक्टरी खूब चलती है, सफल न्यायाधीश होते हैं। ये लोग मधुरभाषी होने के कारण दूसरों पर प्रभाव डालकर अपने सभी कार्य कर लेते और दूसरे का कार्य पड़ने पर टाल देते हैं, स्त्री-बच्चों तथा बन्धुओं को कष्ट रहता है। पैतृक सम्पत्ति का सुख कम रहता है। कामी, दानी, तार्किक तथा प्रवास में रहने वाले, जल यात्रा में सुख पाने वाले होते हैं।

यदि नवमेश शनि तुला का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, सम्पादक, लेखक आदि कार्य में सफलता मिलती है, नौकरी में प्रगति कम होती है, ये लोग क्रान्तिकारी होते हैं। शत्रु दबे रहते हैं, स्त्री-बच्चों, भाई आदि का सुख कम होता है, उद्योग में सफलता कम मिलती है। गुप्त रोग होते

हैं। मन में उदास रहते हुए ईश्वर प्राप्ति का साधन करते हैं। जलयात्रा या तैरने में प्राण संकट रहता है और जब वृश्चिक में शनि हो तो शिक्षा बहुत कम होती है, कुकर्म रत रहते हैं, नीच स्त्री से प्रेम होता है, अपयश मिलता है, यात्रा में कष्ट होता है। सदा शत्रुओं तथा भाइयों से झगड़ा रहता है। स्त्री-बच्चों से कलह रहती है, जीवन दुखमय व्यतीत होता है। वात, पित्त, कफ, गठिया, मिर्गी आदि रोग होते हैं।

जिसका नवमेश शनि वृश्चिक का सप्तम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर होने पर भी अपूर्ण रहती है, नौकरी भी छोड़-छोड़ कर कई जगह करनी पड़ती है, विवाह होता है, पत्नी से दिखावटी झगड़ा-सा रहता है, स्त्री को गर्भपात होते हैं, बच्चों का सुख कम, पुत्रेच्छा बनी रहती है, सास से स्त्री की कम बनती है। धोखा खाते हैं, पेशाब का रोग होता है, मित्रों की सहानुभूति रहती है, पिता का कर्ज देना पड़ता है और जब धन का शनि होता है तो शिक्षा किसी न किसी रूप में पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे वकील, सफल डाक्टर, कुशल अध्यापक, सम्पादक, गणितज्ञ तथा ज्योतिषादि में प्रवीण होते हैं, स्त्री सुन्दर, शान्त, हँसमुख मिलती है। बच्चों का सुख रहता है, माता-पिता से अनबन रहती है। ये लोग हठी, क्रोधी, मिलनसार, परोपकारी, स्वाभिमानी, शत्रुजित तथा जलयात्रा प्रिय, रोगी तथा अपने लिए कृपण से होते हैं।

जब नवमेश शनि धन का अष्टम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती हैं। नौकरी में प्रगति नहीं होती, स्वतन्त्र व्यवसाय करना पड़ता है, विवाह यदि हुआ तो स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, विवाह के बाद धन संकट रहता है, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता, पिता से विचार-विनिमय नहीं हो पाता, फिर भी चालाकी से उन्नति करते हैं और जब मकर का स्वगृही शनि हो तो जातक की शिक्षा कुछ अड़चनों के बाद पूर्ण हो जाती है, फिर भी उसका उपयोग नहीं होता। योग्यता काम नहीं आती। जीवन स्वप्न बड़े होते, क्लर्की करनी पड़ती है, विवाह देर में होता है, किसी नीच जाति की कन्या से प्रेम सम्बन्धित होते हैं। गप्पी होते हैं, विश्वास योग्य नहीं होते, ज्योतिष, हस्त-सामुद्रिक में शौक रखते हैं। चालाकी से नाम पाने का यत्न करते है, माता-पिता, बहन-भाई का सुख रहता है। समय के मुताबिक मित्रों से मेलकर

अश्लील शब्दों का खूब प्रयोग करने में अपनी शान समझते हैं। विदेश यात्रा के नित्य स्वप्न देखते हैं, किन्तु सफल नहीं होते, ये लम्बे कद के, दीर्घायु होते हैं। इन्हें धातुक्षीणादि गुह्य रोग होते हैं।

यदि नवमेश शनि मकर या कुम्भ का स्वगृही नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती, किन्तु उसका उपयोग कम होता है, ये धर्माधर्म के विचार से अलग रहते हैं, माता-पिता, बहन-भाई, इष्ट-मित्रों से कम बनती है, सरकारी नौकरी में प्रगति बहुत कम होती है, लोह, कोयले, लकड़ी आदि के व्यवसाय या व्यापार में लाभ रहता है, विवाह देर में होता है, ये जाति-पाँति के भेद-भाव से दूर रहकर विवाह करना चाहते हैं, यदि विदेश यात्रा हुई तो अवश्य ही विधर्मी कन्या से विवाह या प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। तीर्थ यात्रा धार्मिक विचार से न करके केवल शौक के लिए करते हैं, इनका प्रत्येक कार्य देर से होता है। ये लोग अनेक व्यसनों से युक्त होते हैं। वृद्धावस्था में इन्हें स्थिरता मिलती है और ये सात्विक वृत्ति पाने के लिए एकान्त सेवन करते हैं।

जिसका नवमेश शनि कुम्भ का दशम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है, सरकारी नौकरी में प्रगति धीरे धीरे ही होती है, ये लोग स्टेनोग्राफर, टाइपिस्ट, क्लर्कादि होकर ही बढ़ते हैं, नीच संगति में रहते हैं, ज्योतिष, हस्तसामुद्रिकादि में शौक रखते हैं, स्वार्थ पूर्ण होने पर बात नहीं करते, कामी होते हैं, विवाह देर में होता है, स्त्री-बच्चों का सुख कम ही रहता है, विदेश यात्रा यदि हो तो अवश्य पर-स्त्री गमन करते हैं। जल यात्रा सुखद रखती है। कहानी आदि भी लिखते हैं। माता-पिता से मनमुटाव ही रहता है। यदि मीन में शनि हो तो शिक्षा पूर्ण, धार्मिक वृत्ति, उपदेशादि करने वाला, दार्शनिक प्रकार का सरकारी नौकर होता है, उदर तथा परोपकारी होता है, विवाह देर में होता है, बच्चों का सुख कम होता है। माता-पिता का सुख कम होता है, विदेश यात्रा सुखकर रहती है।

जब नवमेश शनि मीन का एकादश भाव में हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। इनकी प्रकृति स्थिर नहीं होती, स्थान तथा नौकरी बदलते फिरते हैं। बड़े भाई से विचार नहीं मिलते, कोई न कोई रोग शरीर में लगा रहता है, विवाह देर में होता है, बच्चों का सुख नहीं होता, पुत्र शोक देखना पड़ता है। इन्हें

जीवन के आरम्भ तथा अन्तिम भाग में कष्ट रहता है। मध्यकाल सुखकर रहता है और यदि मेष का शनि हो तो शिक्षा बहुत कम होती है, पिता-पुत्र में अनबन रहती है, भाई से नहीं बनती, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत ही कम रहता है, ये लोग हठी तथा बदला लेने वाले होते हैं। ये लोग धोखे तथा चालाकी से कार्य करने वाले, स्वार्थ पूर्ण, कृपण, या॰ा में कष्ट पाने वाले तथा रोगी होते हैं। मन्दाग्नि, वात, कफ, पित्तादि शूल के रोग होते हैं।

यदि नवमेश शनि मेष का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग वकील, डाक्टर, न्यायाधीशादि होते हैं, ये लोग अपने बुद्धिगत कार्यों द्वारा धन तथा यश प्राप्त करते हैं, राजनैतिक क्षेत्र में प्रधानत्व प्राप्त करते हैं। समाज में आदर पाते हैं, यदि विवाह करें तो देर में होता है, पत्नी शान्त तथा गम्भीर मिलती है, बच्चों का सुख कम होता है। नेत्र ज्योति क्षीण हो जाती है। धन की सदा कमी ही रहती है, इष्ट-मित्रों से नहीं बनती, शत्रु दबे रहते हैं, भाग्योन्नति विशेष नहीं होती और यदि वृष का शनि हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग डाक्टर, बैरिस्टर, जज आदि होकर धन-धान्य से पूर्ण होते हैं और कीर्ति लाभ करते हैं। स्त्रो सुख रहता है। प्रथम पुत्र शोक देखना पड़ता है, कन्या के बाद पुत्र जीवित रहते हैं, ये लोग स्वतन्त्र तथा एकान्त प्रिय होते हैं, शत्रुओं को दबाकर रखते हैं, किन्तु घरेलू या रिश्तेदारों से ही हानि पाते हैं। यदि विदेश यात्रा हुई तो विदेशी कन्या से स्वार्थी प्रेम-सम्बन्ध रखते हैं। कृपण होते हैं।

दशमेश रवि फल

रवि—जिसका दशमेश रवि वृश्चिक का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा साधारण रूप से अच्छी होती है, ये लोग अच्छे डाक्टर, कुशल इन्जीनियर, सफल कैमिस्टादि होते हैं, यदि सरकारी नौकर हुए तो औफीसरों से लड़ते रहते हैं, उन्नति कम होती है, विवाह होता है। स्त्री बिमार रहती है। नेत्र पीड़ा, अग्नि, विष, शस्त्र, भय रहता है। माता-पिता से विरोध रहता है। कृपण होते हैं। साहसी कामों में पराक्रम द्वारा यश तथा धन मिलता है।

जब दशमेश रवि धन का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा कम किन्तु उच्च विचार होते हैं। ये लोग नाम के लिए दान करते हैं। ऐश्वर्य से

रहने वाले, कायदे के साथ रहने वाले, व्यवहार कुशल, उत्साही, ईमानदार, व्यापारी या सरकारी नौकर होते हैं। विवाह में दहेज खूब मिलता है। किन्तु स्त्री से पूर्ण विचार-विनिमय नहीं होता। इन्हें अग्नि या जल से भय रहता है। सेवा, धार्मिक कार्यों में खर्च करते हैं।

यदि दशमेश रवि मकर का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा कम या नहीं भी होती। ये लोग व्यापारी, उद्यमी तथा सेना-पुलिस में पराक्रम पूर्ण कार्यों के लिए पारितोषिक पाने वाले होते हैं। इनके जीवन मार्ग में अनेक बाधायें आती हैं। फिर ये अन्त में विजयी होते हैं। भाइयों से अनबन रहती है, पैतृक संपत्ति-सुख नहीं होता, जलयात्रा में कष्ट होता है, भाग्य मन्द ही रहता है।

जिसका दशमेश रवि कुम्भ का चतुर्थ घर में हो तो जातक की शिक्षा कठिनता से पूर्ण हो पाती है। ये लोग विश्वसनीय, ईमानदार होते हैं। सरकारी नौकरी में उन्नति कम ही होती है। मातृ कष्ट रहता है, ३६ वर्षोपरि पितृ-विरोध भी होने लगता है, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता, स्वतन्त्र विचार होते हैं, पिता से अलग रह कर ही उन्नति होती है, विवाह में अड़चनें पड़ती हैं। यदि विवाह हुआ तो स्त्री से नहीं बनती, हृद्रोग होता है, सन्तानत्रास रहता है। मलिन हृदय, मित्रहीन ही रहते हैं।

जब दशमेश रवि मीन का पंचम भाव में हो तो जातक सुशिक्षित, राज्य पदाधिकारी तथा कुशल व्यापारी, स्वार्थ परायण, कृपण तथा परोपकार वृत्ति से रहित होते हैं। ये लोग कविता, गायन-वादन प्रिय होते हैं। सत्संगी तथा बड़े भाई का द्वेषी होता है। विवाह होता है, संतान कम होती है। अधिकतर मनुष्यों को प्रथम पुत्र शोक देखने को मिता है। पंचम रवि राज्य भाषा का उत्कर्ष करता है, ज्योतिष, हस्तरेखा आदि कलाओं का शौक प्रदान करता है।

यदि दशमेश रवि मेष का छठे स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये अच्छे प्रबन्धकर्ता, सेना, पुलिस विभाग में साहस से कार्य करने वाले होते हैं। अपने जीवन को पूर्ण उथल-पुथल देखने के बाद सफलता पाते हैं। शत्रु सदैव दबे रहते हैं। इन्हें अग्नि, शस्त्र-भय रहता है, गुप्त शत्रु

होते हैं । गर्मी, पित्तादि रोग होते हैं, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र तथा दुर्घटना से चोट लगती है, नन्साल सुख कम होता है ।

जिसका दशमेश रवि वृष का सप्तम स्थान पर हो तो जातक शान्त, उदार, कलाकार होता है । किन्तु शिक्षा अपूर्ण ही रहती है । विवाह होता है, स्त्री से व्यवहार ठीक रहता है, किन्तु वह बीमार रहती है, वह अच्छी हो तो स्वयं को कोई न कोई रोग हो जाता है । इस प्रकार ग्रह परिस्थिति ठीक नहीं रह पाती । विवाह देर में होता है । नौकरी ही हितकर रहती है । ५४ वर्षोपरि गार्हस्थ्य जीवन बिगड़ जाता है । सन्तानाधिक होने से खर्चे की तंगी रहती है । शरीर रोगी, मन उद्विग्न, हृद्रोगादि होते हैं, सप्तम रवि का फल अच्छा नहीं होता ।

जब दशमेश रवि मिथुन का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा कम होती है, सरकारी नौकरी नहीं मिलती, छोटे-छोटे कार्यों द्वारा जीवन-यात्रा चलती, मन उद्विग्न, शरीर रोगी रहता है, पित्त, गर्मी, नेत्र ज्योति क्षीण होती है, विवाह होता है, स्त्री मर जाती, बच्चों का सुख बहुत ही कम होता, पिता से नहीं बनती, कुटुम्बियों से अनबन रहती है, भाई की उन्नति में बाधा पड़ती है ।

यदि दशमेश रवि कर्क का नवम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर अड़चनों के बाद पूर्ण होती है । शरीर कृश तथा पुष्ट होता है, सरकारी नौकरी करनी पड़ती, उन्नति धीमी रहती है, माता-पिता-भाई में से जो भी जीवित रहे उसी से अनबन रहती है, गृहस्थी का भार जल्दी ही सँभालना पड़ता है, अभिमानी तथा कुछ धार्मिक वृत्ति के होते हैं । स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, इन्हें नजला, गर्मी के कारण सिर दर्द तथा सड़क खड़ी चलती लड़कियों को ताकने की आदत होती है ।

जिसका दशमेश रवि सिंह का दशम में स्वगृही हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण तथा अपूर्ण दोनों प्रकार की पायी जाती है, ये लोग सेना, पुलिस विभाग में प्रगति करते हैं, ये निडर, बहादुर होते हैं, कभी-कभी क्लर्की भी करते पाये जाते हैं । इन्हें पिता-माता तथा उनकी सम्पत्ति का सुख बहुत ही कम रहता है, जीवन साधारण रहता है । स्त्री-बच्चों का सुख रहता है । क्रोधी होते हैं, जीवनान्त कष्ट-मय रहता है ।

जब दशमेश रवि कन्या का एकादश स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, सरकारी नौकरी में प्रगति अच्छी होती है। विदेश यात्रा में उन्नति तथा सुख मिलता है, ये लोग कायदे के पाबन्द, गायन, ज्योतिष, हस्तरेखा, कविता आदि का शौक रखते हैं। सभी बच्चों का पूर्ण सुख होता है, इष्ट-मित्र, वाहनादि का सुख रहता है, किन्तु बड़ा भाई यदि जीवित रहे तो अनबन रहती है। अपने पुरा साहित्य के अनुसन्धानकर्ता होते हैं। उपकारी, धार्मिक वृत्ति तथा इन्द्रिय लोलुप, प्रमेहादि रोग से पीड़ित रहते हैं।

यदि दशमेश रवि तुला या नीच राशि का होता है तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भी कलाकार के रूप में अच्छा जीवन व्यतीत करता है, यह उदार, स्वच्छ, वास्तविक बात करने वाला, सभ्य पुरुष होता है, शुभ कार्यों में खर्च करके ख्याति पाने वाला, समाज में अग्रसर रहता है। यद्यपि विवाह देर में होता है, फिर भी बच्चों का सुख बहुत कम होता है। अग्नि, चोर, शत्रु भय रहता है, नेत्र ज्योति मलिन रहती है, नन्साल का कुछ सुख रहता है, शरीर रोगी, ऋण-चिन्ता बनी रहती है। नीच जाति की स्त्री के संसर्ग से अपयश प्राप्त होता है, जल यात्रा या तैरने में जीवन संकट उत्पन्न हो जाता है।

दशमेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका दशमेश पूर्ण चन्द्र तुला का लग्न में होता है तो मनुष्य शिक्षित, धार्मिक, उदार, लज्जा युक्त, कवि, शृङ्गारी, प्रेम विवाह को चाहने वाला, सुन्दर स्त्री वाला, सन्तानकष्टी, अपना प्रभुत्व चाहने वाला, विदेश यात्रा रत, जलक्रीड़ा प्रवीण, मिलनसार तथा दर्शनीय होता है। क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य आलसी, कान्तिहीन, कुसंगति, ऋणी, स्त्री-पुत्र सुख से रहित होता है, चंचलचित्त, किसी नीच कन्या का प्रेमी, जलयात्रा में संकट उठाने वाला, स्वार्थी, गुप्त रोगी तथा उन्मादी-सा होता है।

जब दशमेश पूर्ण चन्द्र वृश्चिक का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है। ये लोग डाक्टरी में कुछ धन तथा यश प्राप्त करते हैं, सरकारी नौकरी में कुछ प्रगति होती है, स्त्री-बच्चों का विशेष सुख नहीं होता, गुप्त रोग तथा नजला, जुकाम होते ही रहते हैं। क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा

बहुत कम होती है, सरकारी नौकरी में औफिसरों से अनबन रहती है। कुटुम्बियों से विरोध रहता है, स्त्री-बच्चों से नहीं बनती, कामी तथा लम्पट होते हैं, धातु क्षीण, प्रमेहादि रोग होते हैं।

यदि दशमेश पूर्ण चन्द्र धन का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग उच्चविचार, मधुरभाषी, कवि, गायन-वाद्य के ज्ञाता, कलाकार, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाले, सरकारी नौकर, उद्योगकर्ता, जलयात्रा, जलविनोद, या विदेशयात्रा में सुख पाने वाले, बन्धुप्रिय, धार्मिक प्रकृति, लज्जा-विनय से युक्त तथा भाग्यवान् होते हैं, जब चन्द्र क्षीण होता है तो जातक दुर्बल हृदय, घमंडी, भ्रातृ द्वेषी, स्त्री-पुत्र के दुःख से दुःखी, मध्यावस्था के बाद ऊँचा सुनने का रोग होता है, जलयात्रा या तैरने में प्राण सकट को प्राप्त होता है, उद्योग सफल नहीं होता।

जिसका दशमेश पूर्ण चन्द्र मकर का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भी ये लोग सरकारी नौकरी में क्लर्की आदि अच्छी तरह करते हैं। माता-पिता का सुख रहता है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। कृषि, जल, वाहनादि का सुख रहता है। स्त्री-बच्चों का सुख मिलता है, घर से बाहर रहना पड़ता हैं, इन्द्रिय लोलुपता के कारण चित्त में स्थिरता नहीं रहती। और जब चन्द्र क्षीण होता है तो अधिकतर लोग अशिक्षित ही रहते हैं, उद्योग सफल नहीं होता, व्यवसाय तथा निवास स्थान बदलते रहना पड़ता है। माता की मृत्यु न हुई तो कलह रहती है, पिता का सुख होता है, जायदाद का नहीं, स्त्री-बच्चों तथा जलयात्रा, तैरने आदि से कष्ट ही मिलता है।

जब दशमेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का पञ्चम स्थान पर हो तो शिक्षा अच्छी होती है और जातक शान्त, मधुरभाषी, अपना कार्य सहज में निकाल लेने वाले, व्यापार तथा बड़े भाई से लाभ उठाने वाले, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, कन्यायें अधिक होती हैं, ये लोग शृङ्गारी, कविता, लेख तथा कहानियों में प्रगति पाते हैं, जलक्रीड़ा से लाभ होता है और जब चन्द्र क्षीण होता है तो मनुष्य की शिक्षा कम होती है, नौकरी, व्यापार में उन्नति नहीं होती, स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, बच्चे होकर मर जाते हैं, तैरने में, जलयात्रा में प्राण संकट होता है, ऋण चिंता, नीच संगति होती है।

यदि दशमेश पूर्ण चन्द्र मीन का छठे स्थान पर हो तो जिस जातक की शिक्षा पूर्ण होती है तो उसे स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता और जिसे स्त्री-बच्चों का सुख होता है उसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है। माता-पिता, बहन-भाइयों का सुख रहता है, किसी स्त्री से गुप्त प्रेम होता है, मामा का सुख नहीं होता, अकारण शत्रु हो जाते हैं, ओफीसरों से नहीं बनती, कृपण तथा अविश्वसनीय होते हैं। क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य गूँगा, बहरा, अनपढ़ तथा व्यवसाय रहित होता है। स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, भ्रातृ भार बनकर रहना पड़ता है। पिता का सुख कम, मातृ सुख अधिक होता है। जल से भय, शरीर रोगी, प्रकृति सनकी या आलसी होती है, उसे आत्मविश्वास नहीं होता।

जिसका दशमेश पूर्ण चन्द्र मेष का सप्तम में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, उसे विवाह के बाद नौकरी या व्यापार तथा दूध, दही, दवाई, किराना आदि व्यवसायों से लाभ होता है, ये लोग ईश्वरभक्त, विदेश यात्रा या विदेशी वस्तु के व्यापार से लाभ उठाते हैं, ये लोग शृंगारी, रसिक तथा प्रेम विवाह रत होते हैं। और क्षीण चन्द्र होने पर कम हिम्मत, काल्पनिक सेतु बांधने वाले, विषय-वासना रत, सदा व्यवसाय बदलते रहने वाले, पापी, कामी, तैरने तथा जल यात्रा में प्राणभय पाने वाले, रोगी, घमंडी, कृश देह, पर-स्त्री रत होते हैं।

जब दशमेश पूर्ण चन्द्र वृष का अष्टम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। सरकारी नौकरी में प्रगति रहती है, माता-पिता से अनबन रहती है, उनकी सम्पत्ति से सुख कम होता है। स्त्री-बच्चों से कलह रहती है, इनका स्वभाव आवेश पूर्ण होता है। तैरने, जलयात्रा में कष्ट होता है, नजला, जुकाम, जलोदरादि रोग होता है, और क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। नौकरी क्लर्की से आगे नहीं बढ़ती, विवाह हुआ तो बहुत देर में होता है, बच्चों का सुख कम रहता है। धार्मिक प्रवृत्ति कम होती है, जल, शत्रु से भय रहता है, पिता-सुख कम होता है।

यदि दशमेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का नवम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा कुछ रुकावटों के बाद पूर्ण होती है, ये लोग सरस, मधुरभाषी, कवि, लेखक या

कलाकार के रूप में प्रगति करते हैं। माता-पिता, भाई-बहन का सुख रहता है, मित्रों में मान मिलता है, ये लोग धार्मिक तथा इन्द्रिय लोलुप होते हैं। सरकारी नौकरी में काफी उन्नति होती है, स्त्री-बच्चों का पूर्ण सुख रहता है। विदेश यात्रा हो सकती है, किन्तु क्षीण चन्द्र शिक्षा पूर्ण नहीं होने देता, पढ़ने की इच्छा बनी रहती है। पिता का सुख कम बल्कि उसका ऋण चुकाना पड़ता है, माता का पालन करना पड़ता है। स्त्री धनिक घर की होती है, बच्चों का सुख रहता है। कविता श्रवण का शौक, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है।

जिसका दशमेश पूर्ण चन्द्र कर्क का स्वगृही दशम में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। वह कविता, गायन-वादन, चित्रकारी आदि कला पूर्ण कार्यों में धन तथा यश प्राप्त करता है, सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करता है। माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति का सुख रहता है। ऐसा मनुष्य वाहन युक्त, सत्कर्मी होता है। समाज में उच्च स्थान प्राप्त होता है। इनको किसी स्त्री से धन प्राप्त होता है। स्त्री सुन्दर तथा शान्त होती है, मित्रों का सहयोग रहती है। जब चन्द्र क्षीण होता है, तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, मात-पिता, स्त्री-बच्चों, इष्ट-मित्रों का सुख कम रहता है। चुनावों में हार होती है, पिता का कर्ज देना पड़ता है।

जब दशमेश पूर्ण चन्द्र सिंह का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग राजनीति जानने वाले, कुशल व्यापारी, परोपकारी, दानी, समाजसेवी, बड़े भाई के सुख से युक्त, सत्ताधारी, धन-यश से युक्त, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होते हैं। अपनी बात तथा मान रखने के लिये सब कुछ त्याग कर सकते हैं, और जब चन्द्र क्षीण होता है, तो शिक्षा कम, आलसी, वनविहार रत, स्त्री-बच्चों के सुख से रहित, बड़े भाई के लिये भार स्वरूप होते हैं।

यदि दशमेश पूर्ण चन्द्र कन्या का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा कलात्मक कार्यों में अच्छी होती है, पिता-सुख कम होता है, उसका ऋण चुकाना पड़ता है। स्त्री सुन्दर तथा खर्चीली होती है, बच्चों की चिन्ता रहती है, प्रेम में निराशा होती है। नजला, जुकाम, जल भय रहता है,

और जब चन्द्र क्षीण हो तो शिक्षा बहुत कम होती है। माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत ही कम होता है, नेत्र ज्योति क्षीण, प्रकृति सनकी, आलसी तथा उन्मादी होती है। यात्रा में कष्ट, स्त्री खर्चीली तथा कलहप्रिय होती है। शत्रु भय रहता है, उद्योग में विफलता तथा किसी नीच स्त्री के संसर्ग से अपयश मिलता है, जीवन संकटमय रहता है।

दशमेश भौम फल

भौम--जिसका दशमेश मंगल कर्क का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती है किन्तु ये लोग पुलिस, सेना विभाग में स्वपरिश्रम से उन्नति करने से धन पाते, घूस आदि लेने में चतुर होते हैं। कुछ धार्मिक-से होते हैं फिर भी लोभ तथा स्वार्थ को नहीं छोड़ते, प्रथम किसी के मित्र नहीं होते और हो गये तो उसका दुख-सुख में पूर्ण साथ देते हैं। विवाह यदि हुआ तो देर में होता है, स्त्री-बच्चों का वियोग होता है। भूमि वाहन सुख होता है। माता से कलह, रक्तविकार, अर्शादि रोग होते हैं और जब कुम्भ का मंगल होता है तो जातक की शिक्षा अधिक न होने पर भी शिक्षित-सा जचता है यह तार्किक, किसी बात को समझने तथा समझाने की शक्ति रखने वाला, जन सेवा से धन-यश प्राप्त करने वाला, स्त्री-बच्चों के सुख से रहित, पाप वृत्ति, भ्रमित चित्त, रोगी, रक्त चाप, रक्तविकार, अर्शादि रोग से ग्रसित, चोरी करने वाला, लोभी, स्वार्थी तथा व्यभिचारी प्रकृति का होता है।

जब दशमेश मंगल सिंह का दूसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, सरकारी क्लर्क होते हैं, प्रगति बहुत कम होती है, खेल-कूद का शौक होता है। शरीर पुष्ट तथा सुडौल होता है। इसे स्त्रियों से धन प्राप्त होता है, फिर भी धनलिप्सा नहीं जाती, माता-पिता, भाई आदि से नहीं बनती, भाग्योदय में रुकावटें रहती हैं। स्त्री-बच्चे रोगी रहते हैं। जीवन में दुर्घटना वश भारी चोट लगती है। जीवन साधारण ही रहता है, पैतृक जायदाद न होने पर भी अपनी जायदाद होती है और जब मीन का मंगल हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग डाक्टर, वकीलादि होकर धन और यश प्राप्त करते हैं, स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है। जन्म स्थान से बाहर रहना पड़ता है। हृदय रोग, नेत्र ज्योति क्षीण,

उष्ण रक्ता विकार के साथ-साथ धन अधिक खर्च होता है। अशुभ ज्योतिष फलादेश ठीक बंठते हैं।

यदि दशमेश मंगल कन्या का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, यह अपने उद्योग से धन कमाता है। भाइयों से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, शत्रु होते हैं, किन्तु दवे रहते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, वीमार रहते हैं, रक्त, पित्त विकार रहता है, इष्ट-मित्रों से झगड़ा रहता है। इनका प्रेम सम्बन्ध किसी नीच जाति की स्त्री से रहता है, स्नायु पीड़ा होती है, इन्हें जूआ, रेस, सट्टा, लाट्रो आदि में कभी धन अवश्य प्राप्त होता है और जव मेष का मंगल हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, कलापूर्ण कार्य जैसे घड़ी साजी, दर्जी गिरी आदि कार्यों द्वारा सरकारो औफिसों से सम्बन्धित होकर धन प्राप्त होता है। पिता का सुख कम मातृ सुख अधिक होता है, स्त्री-बच्चों के धन का सुख नहीं होता। इन्हें खेल-कूद, कुश्ती लड़ना, तैरना, कबड्डी आदि खेलों का शौक होता है। मुकदमे में विजय होती, विशेष धन नहीं हो पाता, जीवन साधारण हो रहती है।

जिसका दशमेश मंगल तुला का चतुर्थ हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी या अन्य व्यवसाय से जीवन-यापन करना पड़ता है। माता-पिता का सुख रहता है। घर से बाहर रहने के कारण पैतृक जायदाद का विशेष लाभ नहीं होता और अपने पुरुषार्थ द्वारा मकान आदि बनाकर रहने का वृद्धावस्था में सौभाग्य मिलता है। स्त्री को गर्भपात होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। ऋण लेना पड़ता है। कुकर्म में रुचि रहती है और जब वृष का मंगल होता है, तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग तार्किक, स्पष्ट वक्ता, क्रोधी, माता-पिता के सुख से रहित होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख भी कम हो रहता है, तैरने में प्राण भय, व्यभिचारी प्रवृत्ति क होते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा हानि उठाने वाला, द्विभार्या योग हो सकता है। ये लोग धनिक स्त्री से विवाह करना चाहते हैं। फिर भी सुख नहीं होता, वायु, पित्त, कफादि रोग से पीड़ित रहते हैं।

जब दशमेश मंगल वृश्चिक का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा चीर-फाड़ करने की होती है, ये लोग कुशल डाक्टर, इतिहास लेखक अथवा रंगादि

के कार्य करने वाले, कामी, शृंगारी, पर-स्त्रीरत, विवाह देर में करने वाले तथा प्रथम पुत्र सन्तापी, व्यभिचार में धन खर्च करने वाले, कुशल गायक, छलिया, अनेक लड़कियों से प्रेम करने वाला, जुए, रेस, सट्टे आदि में हानि उठाने वाला होता है और जब मिथुन का मंगल हो तो जातक वकील, मुख्तार, डाक्टर, कम्पाउण्डरादि की शिक्षा से धन, यश पाने वाला, माता-पिता का विरोधी, स्त्री-बच्चों से सुखी, अनेक रोग का रोगी तथा रोग पर धन खर्च करने वाला, बड़े भाई का घातक, इष्ट-मित्रों का द्वेषी, निजी सम्बन्धी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, इन्द्रियलोलुप होता है।

यदि दशमेश मंगल धन का छठे स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, अनेक व्यवसाय करने पड़ते हैं, शत्रु दबे रहते हैं, ननसाल का सुख नहीं होता, अग्नि, विष, जलादि से भय रहता है, पाप में रुचि रहती है, स्त्री-पुत्रादि का सुख कम रहता है। सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती। व्यभिचारी प्रवृत्ति होने के कारण अपयश मिलता है। द्विभार्या योग हो सकता है। यात्रा में इन्हें दुर्घटना का भय रहता है और जब मंगल कर्क का होता है तो जातक मलिन मन, शिक्षा विमुख पाप रत होता है। इसे मामादि का सुख न होकर शत्रुओं, जल से भय रहता है। व्यभिचारी होता है, दुष्ट स्त्रियों के संसर्ग से शराब, नशा पानादि से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिसमें काफी धन खर्च करना पड़ता है, नेत्र ज्योति क्षीण, रक्त, पित्त विकारादि, मन्दाग्नि, रक्तातिसारादि रोग से दुर्बल शरीर रहता है।

जिसका दशमेश मंगल मकर का उच्च का सप्तम स्थान पर हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, फिर भी इनका दिल नौकरी पर नहीं जमता, बड़े घर की लड़की या स्वयं नौकरी करने वाली लड़की से विवाह होता है, द्विभार्या योग हो सकता है, स्त्री को गर्भपात, रक्त, पित्त, आर्शादि रोग स्वयं को होते हैं, इष्ट-मित्रों तथा कुटुम्बियों से नहीं बनती, पिता से अनबन रहती है। इसलिए इन्हें अपनी स्थिति अपने उद्योग से बढ़ाने के लिए अत्यन्त परिश्रम करना पड़ता है, ३२ वर्षोपरि हर योजना सफल होती है और विदेश यात्रा या विदेशी वस्तु व्यापार से काफी लाभ रहता है। आजीवन सुख का अनुभव करते हैं और सिंह का मंगल हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती, मनुष्य आवेशपूर्ण रहता है, ये लोग अच्छे प्रबन्धक, पुलिस,

सेना में नौकरी करने वाले, प्रेम-सम्बन्ध में निराशा तथा दुःख उठाने वाले, यात्रा में कष्ट तथा स्त्री वियोग सहने वाले, पुत्र सन्ताप से दुखी होते हैं, इनकी अन्तिमावस्था विरक्त होती है, ये सुख से मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

जब दशमेश मंगल कुम्भ का अष्टम भाव में होता है तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, यह कई विषयों में प्रवीण होता है, फिर भी सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है। जीवन में निराशा अधिक रहती है, भाइयों तथा कुटुम्बियों से अनबन रहती है, व्यापार में हानि होती है, स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है। रक्तविकार, रक्तचाप, अतिसार, रक्तादि की अर्श से पीड़ित रहते हैं। इनके विवाह में कठिनाई पड़ती है, स्त्री कलहकारी मिलती है, धन का खर्च व्यर्थ बातों में होता है और जल यात्रा में जीवन भय रहता है और जब मंगल कन्या राशि का हो तो जातक बुद्धिमान्, शिक्षित तथा कलापूर्ण कार्यों में दक्ष होता है, प्रथम स्त्री का सन्ताप देखना पड़ता है। बच्चों को कष्ट होता है और स्वयं को किसी नीच स्त्री का आश्रय लेना पड़ता है, गर्मी, पित्त, प्रमेहादि गुप्त रोग होते हैं, बीमारी में धन खर्च होता है। व्यापार स्थिर नहीं रहता, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धुओं से नहीं बनती है, जीवन दुखमय रहता है। मन में मलिनता तथा लाभ में कठिनता रहती है।

यदि दशमेश मंगल मीन का नवम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग डाक्टर, कृषिविज्ञान वेत्ता तथा रासायनिक, खनिज पदार्थज्ञाता तथा मूंगादि पत्थरों के व्यापारी होते हैं। सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करते हैं, विदेश यात्रा में सुख मिलता है, उन्नति होती है। विचार उत्तेजना पूर्ण, धार्मिक होते हैं, समाज में प्रधानत्व प्राप्त होता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, भाइयों से कलह रहती है, माता रोगी रहती है। पैतृक सम्पत्ति सुख नहीं होता और जब मंगल तुला का हो तो शिक्षा अच्छी होती है, नौकरी में प्रगति रहती है, मातृ सुख कम, पितृ सुख रहता है। विदेश, जल यात्रा सुख से होती है, विदेश में विधर्मी कन्या से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। इनका स्वेच्छाचारी धर्म समाज में प्रगति लाने के लिए होता है। ये व्यभिचार को बढ़ावा देते हैं और अन्त में दुःखी होते हैं।

जिसका दशमेश मंगल मेष या वृश्चिक का दशम में स्वगृही होता है वे लोग शिक्षित, धैर्यवान्, उत्साही, स्वतन्त्र विचार, परिश्रमी, पुलिस तथा सेना

विभाग में पदाधिकार प्राप्त करने वाले, देशभक्त, समाज में प्रभुता प्राप्त करने वाले, लड़ाई में सुयश प्राप्त करने वाले, मातृ-सुख से रहित, पैतृक सम्पत्ति का उपभोग करने वाले, रक्त-पित्त विकारी, शत्रुजित्, सन्तानकष्टी होते हैं। सवारी, भूमि आदि सम्पत्ति से सुखी, जल विनोद, जल यात्रा करने वाले प्रतापी होते हैं। कामाशक्त, इन्द्रिय लोलुप होने के कारण अनेक दूषित स्त्रियों से सम्बन्धित होते हैं, शराबादि पीकर मस्त रहते हैं।

जब दशमेश मंगल वृष का एकादश भाव में हो तो जातक शृङ्गारी, कलाकार, अपूर्ण शिक्षित होता है। व्यापारी हो तो राज्य के ठेके आदि से लाभ होता है, नहीं तो सरकारी नौकरी में लाभ होता है। पदवृद्धि होती है, बड़े भाई से नहीं, किन्तु बन्धु, कुटुम्बियों से कलह रहती है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। तार्किक होने के कारण अक्सर झगड़ा रहता है। धन को कमी के कारण ऋण लेना पड़ता है। शत्रु होते हैं, किन्तु दबे रहते हैं, जीवन साधारण अच्छा रहता है और जब धन का मंगल हो तो मनुष्य पढ़ा-लिखा, उच्च विचार, कुशल व्यापार, बड़े भाई का सेवक, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, स्त्री स्वच्छन्द तथा खर्चीली होती है, किसी स्त्री की शत्रुता से अपयश प्राप्त होता है, बन्धु-बान्धओं से अनबन रहती है। बड़े-बड़े ऑफीसरों से मेल होने के कारण कार्य सुगमता से हो जाते हैं।

यदि दशमेश मंगल मिथुन का द्वादश भाव में हो तो जातक अपूर्ण शिक्षित, कलापूर्ण कार्यों को कीमत देने वाला, छोटे-छोटे व्यवसाय करने वाला, यात्राप्रिय, नवमत वादी, कामी, व्यभिचार में चित्त रखने वाला, कुकर्मी होता है। विवाह में अनेक अड़चनें पड़तो हैं, द्विभार्या योग हो सकता है। भ्रातृ द्रोही, शत्रुजित, स्त्री के गर्भ पात, स्त्री जनित रोग तथा स्त्री के पेट में दर्द होता है। इन्हें पर-स्त्री की ताक-झाँक की आदत होती है और जब मंगल मकर का होता है तो जातक की शिक्षा अच्छो होती है, ये लोग बहादुर, तार्किक, स्पष्टवक्ता, मातृ सुख से सुखी, शत्रुओं को जीतने वाले, स्त्री-बच्चों के रोगों से दुःखी, स्त्री मृत्यु पर प्रलाप करने वाले, सन्तप्त हृदय होते हैं। विदेश या जलयात्रा में सुख पाने वाले, विदेशी कन्या से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाले, नवमत वादी, समाज सुधार के रूप में अग्रसर होते हैं। नेत्र ज्योति क्षीण, आधा शीश के दर्द से

पीड़ित, रक्तविकार, रक्तचाप, अर्श, रक्तातिसारादि गुप्त रोगों से पीड़ित, अति खर्चीले होते हैं। उधार लेकर नहीं देते, स्वभाव सनकी, चिड़चिड़े, विमाता से कष्ट पाने वाले, सदा दुखो रहने वाले होते हैं। कभी विवाह की इच्छा करते-करते ही मर जाते हैं किन्तु विवाह नहीं हो पाता।

दशमेश बुध फल

बुध--जिसका दशमेश बुध कन्या का स्वगृही (उच्च) लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग बड़े बुद्धिमान्, विचार कर कार्य करने वाले, इन्हें गणित, साहित्य, ज्योतिष, हस्त सामुद्रिक का बड़ा शौक होता है। ये लोग धनी न होने पर भी यशस्वी होते हैं। ये लोग अच्छे वैज्ञानिक या कुशल व्यापारी, अच्छे कवि, लेखक, बात की तह तक पहुँचने वाले, चंचल प्रकृति के होते हैं। इनकी स्त्री सुन्दर तथा उच्च विचार की होती है, ये स्वयं दर्शनीय होने के कारण पर स्त्रियों को भी प्रिय होते हैं और जब धन का बुध होता है तो ये लोग अच्छे समालोचक, निर्भीक वक्ता, स्पष्ट तथा मर्मभेदी बात लिखने वाले, कलाकार, उदार, दानी, सुन्दर स्त्री से युक्त, कामासक्त, पर-स्त्रीरति में लोक-विरोध पाने वाले, धन से हीन तथा स्वयं या स्त्री गुप्त रोगी होती हैं।

जब दशमेश बुध तुला का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है या नहीं होती, फिर भी ये लोग विद्वान्, कवि, अच्छे लेखक, शिल्पज्ञ समझे जाते हैं। इनके पास धन तो नहीं होता किन्तु यश अच्छा पाते हैं, कुटुम्बियों से मिलकर रहते हैं, व्याख्यान शक्ति अच्छी होती है, चलचित्त होते, स्त्री-बच्चों का सुख विशेष नहीं होता, रोगी रहते हैं और जब मकर का बुध हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, कम शिक्षित होता है। छोटे-छोटे कार्यों द्वारा जीवन-यापन करना पड़ता है। विवाहित जीवन साधारणतया दुखी रहता है। ये लोग दुष्ट संगति में प्रसन्न रहने वाले, धोखे बाज, गुप्त रोगी, तथा पर स्त्री रति से अपयश प्राप्त करने वाले, शक्तिहीन तथा दुर्व्यसन होते हैं।

यदि दशमेश बुध वृश्चिक का तृतीय स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग चालाकी, धोखा देकर या किसी और कारण से अपना कार्य बनाते हैं, साहसी कार्यों में निराशा प्राप्त होती है, स्वार्थ के पूरे होते हैं। प्रवास में रहना पड़ता है। कर्ण पीड़ा होती है, यात्रा प्रिय होते हैं, भ्रातृ सुख रहता है,

शरीर रोगी तथा मित्रों को कष्ट होता है। विवाह होता है, किन्तु बच्चों का सुख कम होता है, और जब कुम्भ का बुध हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, फिर भी विद्वानों से मित्रता रहती है। इनका विवाह धनिक लड़की से होता है। किन्तु अनबन रहती है, जलयात्रा होती है। धन, धर्म, शक्ति आदि से हीन ही रहते हैं।

जिसका दशमेश बुध धन का होकर चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी रहती है। जिसका इन्हें अभिमान होता है। अपने ही शहर में नौकरी करने वाला या विदेशी वस्तुओं का व्यापारी होता है। माता से अनबन रहती है, स्त्री सुशीला किन्तु घमण्डी होती है, अत्यधिक परिश्रम से भाग्योदय होता है, किसी कार्य में लोक विरोध होता है। पैतृक सम्पत्ति तथा वाहन सुख रहता है और जब बुध मीन का होता है तो शिक्षा पूर्ण होती है, नौकरी में प्रगति कम होती है। गप्पों में अपनी दशा बिगाड़ लेते हैं। ये विश्वसनीय नहीं होते, यहाँ तक की अपनी स्त्री से भी धन ठग लेते हैं, विवाह देर में होता है। बच्चों तथा पैतृक सम्पत्ति सुख कम होता है। माता-पिता, बहन-भाई जीवित रहते हैं, मित्रों के साथ यात्रा को तत्पर रहते हैं।

जब दशमेश बुध मकर का पंचम स्थान में हो तो जातक मन्दबुद्धि, अपूर्ण शिक्षित होता है और कल्पना के आधार पर बड़ी-बड़ी बातें कर इष्ट-मित्रों से लड़ता है। खतरे के कार्यों में दूसरों को आगे कर स्वयं आपत्ति से बच जाता है। विवाह होता है, किन्तु स्त्री अभिमानी तथा बच्चे कुकर्मी होते हैं, बड़े भाई से अनबन रहती है, सरकारी नौकरी करनी पड़ती है, और जब बुध मेष का होता है तो जातक तीव्र बुद्धि, पूर्ण रूप से शिक्षित रुक-रुक कर होता है। ये लोग उदार तथा आवेश पूर्ण होते हैं, ये लोग गणित, ज्योतिष, नृत्य, लेख, कविता, कहानियाँ लिखने में चतुर होते हैं, छल, प्रपंच से उन्नति करते हैं। चंचल चित्त, किसी नियम का पालन न करने वाले, पर-स्त्री से छेड़-छाड़ करने वाले, दुष्ट संगति, म्यादी ज्वर के रोगी, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होते हैं, कन्यायें अधिक होती हैं।

यदि दशमेश बुध कुम्भ का छठे स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, फिर भी लेखन कला प्रवीण होते हैं, अन्य व्यवसाय भी करने पड़ते

हैं, नन्साल का सुख नहीं होता, शत्रु बहुत होते हैं, चोरी, विष प्रयोगादि भय रहता है, जल यात्रा में प्राण संकट होता है, स्त्री-बच्चों का सुख कम, राज्य दण्ड भय रहता है और जब वृष का बुध हो तो मनुष्य कलाकार, लेखक तथा नाट्यकारादि होता है, विवाहित सुख होता है। ये लोग चलचित्त, पर-स्त्रीरत, गुप्त रोगी, मन्दाग्नि, अण्डकोष वृद्धि रोग से पीड़ित, किसी कार्य में अपयश पाने वाले होते हैं।

जिसका दशमेश बुध मीन का सप्तम भाव में हो तो जातक की भावना उच्च तथा शिक्षा कम होती है, ये लोग सरकारी क्लर्क, कम्पाउण्डरादि होते हैं। शरीर स्वस्थ तथा दर्शनीय होता है, विवाह देर में होता है, स्त्री सुन्दर तथा अभिमानी होती है, बच्चों का सुख कम होता है, उसकी प्रवृत्ति धार्मिक, तीर्थ यात्रा प्रिय होती है और जब मिथुन का बुध होता है, तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग वकील, अध्यापक, प्रोफेसर, प्रकाशक, सम्पादक, ज्योतिषी, गणितज्ञादि होते हैं। इनकी स्त्री अद्वितीय सुन्दरी होती है। स्त्री-बच्चों का सुख होता है। स्त्री जाति से लाभ होता है, विलासी प्रकृति के होते हैं, मधुर वाणी और शृंगारी कवि भी हो सकते हैं।

जब दशमेश बुध मेष का अष्टम स्थान में हो तो जातक क्रोधी तथा अशिक्षित-सा होता है। सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, राज्य दण्ड मिलता है, मस्तिष्क में उन्माद रहता है, विवाह हुआ तो स्त्री कलहकारी मिलती है। बच्चों का सुख नहीं मिलता, करुणहीन तथा ऋणी होते हैं और जब कर्क का बुध हो तो शिक्षा अच्छी होती है, मनुष्य विक्षिप्त-सा रहता है, पिता से नहीं बनती। स्त्री झगडालू, वाचाल तथा खर्चीली मिलती है, इन्हें मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों के अतिरिक्त भी और रोग होते हैं।

यदि दशमेश बुध वृष का नवम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, सरकारी या किसी बड़ी फर्म में नौकरी करनी पड़ती है, अच्छी उन्नति होती है। माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, तीर्थ यात्रा में सुख मिलता है, जलवस्तुओं से लाभ होता है, धार्मिक, उदार तथा प्रणयशील होते हैं और जब सिंह का बुध हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, मनुष्य साहसी, वीर, क्रोधी, सेना, पुलिस विभाग में प्रगति करने वाला, हिंसक वृत्ति, प्रवासी, भ्रातृ द्वेषी, कुबुद्धि, इन्द्रिय लोलुप तथा विलासी एवं पापरत रहता है।

जिसका दशमेश बुध मिथुन या कन्या का दशम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण-सी ही होती है, ये लोग गणितज्ञ, ज्योतिषाचार्य, व्यापारी, साहित्यिक, कवि, लेखक, सम्पादक, स्टेशनरी आदि का कार्य करने वाले, व्यवहार कुशल, माता-पिता के सुख से सुखी, राज्य प्रवेशी, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, धार्मिक, उदार तथा दयालु होते हैं, मकान-भूमि, सवारी का सुख होता है।

जब दशमेश बुध कर्क में हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, स्वतन्त्र कार्य करना पड़ता है, पिता से विचार नहीं मिलते, बड़ा भाई हुआ तो अनबन रहती है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, कन्यायें अधिक होती हैं, बुद्धि तीव्र होती है। प्रगति में अड़चनें पड़ती हैं और जब तुला का बुध हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग अच्छे शिक्षक, व्यापार में लाभ पाने वाले, स्त्री-बच्चों के सुख से रहित जैसे होते हैं।

यदि दशमेश बुध सिंह का हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, क्रोध बहुत आता है। छोटे व्यापारी या सरकारी नौकर होते हैं, ऋणी रहते हैं, विलासी या पाप वृत्ति होते हैं, बात को पूर्ण करने के लिए सब कुछ दे देते हैं। शत्रु बहुत होते हैं, नन्साल सुख नहीं होता। जब वृश्चिक का बुध हो तो पुलिस, सेना में प्रगति होती है, स्त्री-बच्चों का सुख कम तथा किसी के द्वारा अपमान होता है। शत्रु पर विजय पाते हैं, विलास में खर्च अधिक होता है। यात्रा में कष्ट रहता है, गुप्त रोग होते हैं।

दशमेश गुरु फल

गुरु—जिसका दशमेश गुरु मिथुन का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग अच्छे वकील, डाक्टर, सरकारी क्लर्कादि होते हैं, इनका जीवनारम्भ आपद्मय तथा अन्तिमावस्था सुख से व्यतीत होती है, विवाह होता है, किन्तु प्रथम स्त्री-शोक देखना पड़ता है, दूसरी स्त्री-बच्चों का सुख अच्छा रहता है। यदि प्रथम स्त्री जीवित रही तो घर की स्थिति ठीक नहीं रहती, ऋणी रहते हैं। ये लोग विनोदी, मित्रों को प्रिय होते हैं, स्वाभिमानी, धैर्यवान्, नियमानुकूल रहने वाले होते हैं और जब मीन का गुरु हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग पढ़-लिखकर, डाक्टर, वकील, जज, शिक्षक, प्रोफेसरादि होते हैं, पिता का सुख कम, माता-स्त्री-बच्चों का सुख अच्छा रहता है। मान-प्रतिष्ठा, पद लाभ

होता है। उद्योग में सफलता, उदार, दानी, सत्संगी तथा काम वासना से पीड़ित रहते हैं, कवि, लेखक तथा जल यात्रा प्रिय होते हैं।

जब दशमेश गुरु कर्क का (उच्च) दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग सरकारी नौकरी में ऑफीसर, पदाधिकारी होते हैं। दार्शनिक, कवि, लेखक, स्वदेश-विदेश से सम्बन्धित व्यापार करने वाले, अपनी योग्यता से सार्वजनिक कार्यों में यश तथा धन प्राप्त करने वाले, विवाह में धन पाने वाले, शत्रुजित्, बच्चों से सुखी, कलाओं के जानने वाले, धार्मिक, मन्त्रादि में विश्वास रखने वाले, जल यात्रा प्रिय, वाहनादि से युक्त बड़े आदमी होते हैं और जब मेष का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग दो कार्य एक साथ कर धन कमाते हैं। इष्ट-मित्रों तथा माता-पिता का सुख रहता है, पैतृक सम्पत्ति मिलती है, विवाह के बाद गार्हस्थ्य जीवन सुखी नहीं रहता। मनुष्य क्रोधी तथा स्वाभिमानी होता है। सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति होती हैं, शत्रु उत्पन्न होते हैं, किन्तु दबे रहते हैं, जीवन सुखी रहता है।

यदि दशमेश गुरु सिंह का तीसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा अधिक न होने पर भी ये लोग गम्भीर विद्वान्-से प्रतीत होते हैं, ये लोग शिक्षक, पुलिस, सेना विभाग में प्रगतिशील होते हैं, भ्रातृ सुख रहता है, किन्तु उन्नति दबी-सी रहती हैं। स्त्री उच्च विचार तथा सुन्दर होती है, स्वाभिमान में बढ़ी-चढ़ी होने के कारण खर्चीली होती है। ४२ वर्षोपरि भाग्य में परिवर्तन होता है, बच्चों का सुख रहता है। ये लोग प्रेम और ईमानदारी चाहते हैं, जो कि इन्हें मित्रों से प्राप्त हो जाती है और जब वृष का गुरु हो तो मनुष्य कुछ पूर्ण शिक्षित और कुछ अशिक्षित होते हैं, शिक्षित मनुष्य राज्य-नौकरी में धन और यश पाते हैं, इनकी अपने भाइयों से नहीं बनती, स्त्री सुन्दर तथा बच्चों से पूर्ण सुखी होते हैं, इन्हें स्त्री जाति से धन प्राप्त होता है। ३२ वर्षोपरि इनकी स्थिति बहुत अच्छी हो जाती है, ये दम्पति घर की उन्नति, बच्चों की शिक्षा के लिए पूर्णोद्यम करते हैं, किन्तु इन्हें किसी शत्रु द्वारा हानि या अपयश मिलता है।

जिसका दशमेश गुरु कन्या का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति का सुख रहता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, विवाह यथासमय हो जाय अन्यथा नहीं। सरकारी नौकरी या

व्यापार, खेती, मकान, या जमीन का किराया आदि आता है, इन्हें अपनी परिस्थिति को सँभालने में बहुत समय लगता है और ये अन्त में सफलता प्राप्त कर ही लेते हैं। जहाँ सन्तान अधिक होती है वहाँ धन की कमी रहती है, और जहाँ धन अधिक है वहाँ सन्तान की चिन्ता रहती है और मिथुन का गुरु हो तो जातक के अधिकतर फल उपर्युक्त से ही रहते हैं, ये लोग बड़े व्यापारी तथा बहु सन्ततिवान् होते हैं, इन्हें स्वजनों से त्रास होता है, इनका प्रेम सम्बन्ध समीप सम्बन्धिनी से होता है जो कि अपयश का कारण बन जाता है, विवाह धनिक घर होता है, गुप्त रोग होते हैं, खर्च काफी होता है। शृंगारी, कविता, कहानियों का शौक होता है।

जब दशमेश गुरु तुला का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा कुछ अड़चन के बाद पूर्ण होती है और ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, साहित्य, इतिहासादि का अच्छा अध्ययन होता है किन्तु सरकारी नौकरी में विशेष प्रगति नहीं होती, पिता से अनबन रहती है, इनकी इच्छाएँ बड़ा बनने के लिये विदेश जाने की बहुत होती है किन्तु जा नहीं पाते। ये लोग अच्छे वकील, प्रोफेसर तथा कलापूर्ण कार्यों में सफलता पाते हैं। इनको मित्रों से लाभ रहता है, इन्हें स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, ये लोग स्वार्थी तथा विद्याभिमानी होते हैं। और जब कर्क का गुरु हो तो उपर्युक्त सभी फलों के साथ-साथ माता-पिता, बच्चों का पूर्ण सुख होता है, स्त्री-सुख कम मिलता है। ये लोग धार्मिक, कथावाचक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, वकीलादि होकर देश-विदेश में धन, यश, कीर्ति लाभ पाते हैं। रहन-सहन सादा होता है, उच्च विचार तथा प्रवास में ही रहना पड़ता है। जीवनान्त सुखमय होता है।

यदि दशमेश गुरु वृश्चिक का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, वह झगड़ालू प्रकृति का होता है और शक्ति के स्थान पर चालाकी का प्रयोग करता है। सरकारी नौकरी नहीं मिलती, दूसरे व्यवसाय करने पड़ते हैं, शत्रु बहुत होते हैं, किन्तु सामने दबे-से रहते हैं, ननसाल का सुख नहीं होता, पिता का ऋण देना पड़ता है जुआ, शराब, परस्त्री गमनादि में अपयश मिलता है। विवाह यदि हो भी जाय तो स्त्री-बच्चों का सुख नहीं मिलता, इनको पैतृक रोग लगे रहते हैं, और जब सिंह का गुरु हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं

होती, प्रकृति से प्रेम होता है। सरकारी नौकरी तथा दूसरे व्यवसाय करने पड़ते हैं, ये लोग पुलिस तथा सेना विभाग में प्रगति करते हैं, ये अच्छे मित्र और अच्छे शत्रु होते हैं। विवाहित जीवन अधिक सुखमय नहीं रहता। लाभ होता है किन्तु खर्च भी खूब होता है। शत्रु पर विजय पाते हैं, पिता तथा पैतृक सम्पत्ति का सुख रहता है।

जिसका दशमेश गुरु धन का सप्तम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ऐसे मनुष्य बड़े वकील, बैरिस्टर, डाक्टर, न्यायाधीश, साहित्य तथा इतिहास के योग्य प्रोफेसर होकर सरकारी नौकरी में भी धन तथा यश प्राप्त करते हैं। इनका विवाह देर में होता है, और पत्नी इच्छानुकूल प्राप्त होती है, बच्चों का सुख रहता है। ये लोग धार्मिक, उदार तथा दयालु होते हैं, गरीबों की सहायता करते हैं, शरीर स्वस्थ रहता है, धन-धान्य की कमी नहीं होती, इष्टमित्र, भाई-बन्धुओं का सहयोग रहता है, केवल दुख यह रहता है कि ये लोग स्त्री की मृत्यु पर दुखी होकर वृद्धावस्था में एकान्त वास में दिन व्यतीत करते हैं और जब गुरु कन्या का होता है, तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, इसलिये छोटी नौकरी, क्लर्की या अन्य व्यवसाय करके जीवन-यापन करना पड़ता है। सांसारिक सुख कम होता है, यदि विवाह हुआ तो स्त्री से कलह रहती है, बच्चों से त्रास मिलता है, शत्रुओं से भय रहता है, यात्राएँ होती है, किसी स्त्री संसर्ग से अपयश मिलता है।

जब दशमेश गुरु मकर का अष्टम स्थान में होता है तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, ये लोग क्रोधी, झूठे, दुष्ट प्रकृति, मनोरथ से हीन, सरकारी, नौकरी रहित होते हैं। इसलिए अन्य व्यवसाय से जीवन निर्वाह करना पड़ता है, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है, यदि विवाह हुआ तो स्त्री से झगड़ा रहता है। इन्हें नीच जाति की स्त्री के प्रेम सम्बन्ध में अपयश मिलता है, तैरने में तथा जलयात्रा, जलविहार में प्राण संकट उत्पन्न होता है, अनेक रोग होते हैं, और जब तुला का गुरु हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भी जीवन सुखमय रहता है, इन्हें किसी स्त्री की धरोहर या जायदाद प्राप्त होती है। विवाह होता है, स्त्री से विचार-विनिमय कम होता है, वह खर्चीली होती है। व्यापार करना पड़ता है। वात या धातु विकार सम्बन्धी रोग लगे रहते हैं, शरीर को

कष्ट होता है, शत्रु त्रास देते हैं, जल यात्रा में कष्ट होता है, इन्हें पर स्त्री गमन से अपयश प्राप्त होता है।

यदि दशमेश गुरु कुम्भ का नवम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग अनुसन्धान, आविष्कारादि के पीछे पड़े रहते हैं। ये लोग कुशल सम्पादक, पुस्तक विक्रेता तथा छापने वाले होते हैं। सरकारी नौकरी में प्रगति होती है, ये लोग विवाह सुख और शान्ति के लिये करते हैं और सफल होते हैं तथा जीवन में एक बार अपने समाज, शहरादि में नाम पैदा करते हैं, और व्यभिचार होने के बाद अपयश भी प्राप्त करते हैं। जल यात्रा या विदेश यात्रा में लाभ उठाते हैं। और जब वृश्चिक का गुरु होता है, तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है तथा मनुष्य वकील, बैरिस्टर, डाक्टर, जल पुलिस और सेना विभाग में बड़ा अधिकारी होता है। अपूर्ण शिक्षित, साहसी कार्यों में धन तथा नाम पाते हैं। स्त्री सुख रहता है किन्तु बच्चों का सुख नहीं होता, प्रथम पुत्र होकर जीवित नहीं रहते, जीवित रहे तो कुपुत्र होते हैं। पर स्त्री गमन करते हैं। यात्राएँ होती हैं, भाई से कम बनती है। जीवन साधारण ही रहता है।

जिसका दशमेश गुरु धन और मीन राशियों में हो तो जिन मनुष्यों की शिक्षा पूर्ण होती है, वे लोग उच्च विचार, सत्यवक्ता, न्यायी होते हैं और सरकारी नौकरी में उच्च पद प्राप्त करते हैं, निरक्षर कोई नहीं हो तो अपूर्ण शिक्षित, क्लर्की आदि करते हैं। ये लोग छोटे-बड़े चाहे जैसे भी हों परोपकारी, दयालु, दूसरों की सहायता करने वाले, दानी, उदार, क्रोधी, अपने समाज, इष्ट-मित्रों में मान तथा नाम हैं। ४२ वर्षोपरि यदि पिता जीवित रहे तो बिल्कुल नहीं बनती, माता से सबन्ध अच्छे होते हैं। शत्रु होते हैं किन्तु दबे रहते हैं, ये लोग अधिकतर अविवाहित रहना पसन्द करते हैं, यदि विवाह हो जाय तो स्त्री से झगड़ा रहता है, क्योंकि स्त्री धनिक, खर्चीली तथा स्वाभिमानी होती है, बच्चों का सुख कम रहता है। ये लोग दार्शनिक होते हैं, तीर्थ यात्रादि में खर्च करते हैं। अधिकार पूर्ण बोलते हैं, स्त्री मृत्यु पर दूसरा विवाह कठिनता से ही करते हैं, ४८ वर्षोपरि लिखने, कवितादि में यश प्राप्त करते हैं।

जब दशमेश गुरु मकर का एकादश स्थान पर हो तो मनुष्य मन्दमति, अपूर्ण शिक्षित होता है, सन्तान और सम्पत्ति दोनों में से किसी एक की कमी अवश्य रहती है, भाइयों का सुख नहीं होता, स्त्री सुख रहता है, पैतृक सम्पत्ति पर झगड़ा होता है। विदेश यात्रा या व्यापार में हानि होती है, द्विभार्या योग हो सकता है, यदि विवाह एक ही हुआ तो अवश्य नीच स्त्री से प्रेम संवन्ध रहता है, और जब मेष का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। जातक सरकारी नौकरी के साथ दूसरे व्यवसाय भी करके धन कमाता है और किसी योग्य कन्या की प्रतीक्षा से देर में विवाह करता है। बड़े भाई का सुख रहता है, विचार नहीं मिलते, स्त्री-बच्चे होते हैं, पर सुख कम होता है।

यदि दशमेश गुरु कुम्भ का द्वादश में हो तो जातक को शिक्षा पूर्ण नहीं होती किन्तु प्रकृति धार्मिक होती है। तीर्थ यात्रा में धन खर्च होता है, माता-पिता से सुख मिलता हैं। शत्रु होते हैं किन्तु दबे रहते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख होता है, जल यात्रा या विदेशी व्यापार में पूर्ण लाभ नहीं होता। अग्नि, शस्त्र भय रहता हैं, कोई दुर्घटना हो सकती है और जब वृष का गुरु हो तो शिक्षा अच्छी होती है, माता-पिता से सम्बन्ध अच्छे रहते हैं, स्त्री सुन्दर, खर्चीली तथा उग्र स्वभाव की होती है। सन्तान कम तथा अच्छी होती है, द्विभार्या योग हो सकता है, वायु, कफ, पीलिया, जलोदर, नजला, जुकामादि रोगों में खर्च करना पड़ता है। जीवन साधारण तथा अच्छा व्यतीत होता है। जल यात्रा में कष्ट मिलता है, पर स्त्री गमन की इच्छा रखते हैं।

दशमेश शुक्र फल

शुक्र--जिसका दशमेश शुक्र सिंह राशि का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, न होने पर भी जातक में कविता, गायन, वादन, नृत्यादि कलाओं का समावेश होता है और इन्हीं कलाओं के आश्रय से जीवन-यापन होता है, ये लोग बड़े ही स्नेही-ईमानदार, सामाजिक, इष्ट-मित्रों से युक्त, पर-स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए काफी सुन्दर होते हैं। इनकी स्त्री सुन्दर, शान्त, प्रसन्न, कीर्ति तथा सन्तोष देने वाली होती है। इनके पुत्र कम तथा कन्यायें अधिक होती हैं। या एक भी नहीं होती, इनकी काम-वासना २० वर्ष से प्रबल हो जाती है और जब मकर का शुक्र होता है तो

मनुष्य मन्द बुद्धि, अधूरी शिक्षा पाने वाला और व्यापार में धन कमाने वाला होता है, ये लोग विवाह से पहले कई लड़कियों को नापसन्द कर देते हैं, अन्त में साधारण लड़की से विवाह होता है, इनका प्रेम सम्बन्ध किसी बड़ी आयु वाली स्त्री से होता है जो कि प्रेम के लिए नहीं बल्कि धन के लिए। इसलिए प्रेम में हताश रहते हैं और विवाहितानन्द को प्राप्त नहीं होते, व्यभिचारी प्रवृत्ति के होते हैं और छिपकर रहते हैं, इन्हें गुप्त रोग होते हैं, धातु क्षीण, प्रमेह, स्वप्नदोषादि रोग सदैव लगे रहते हैं।

जब दशमेश शुक्र कन्या का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये लोग मधु भाषी, शृंगारी, सरस कवि, लेखक तथा नाटचकार होते हैं, पैतृक सम्पत्ति यदि मिलती भी है तो उसका उपभोग नहीं होता, सरकारी नौकरी में प्रगति होती है, विवाह होता है, तो स्त्री बीमार रहती है। ये लोग वाणी की सरसता के कारण पर स्त्रियों में घुल-मिल जाते हैं और किसी सुन्दर तथा नीच घराने की लड़की के प्रेम में फँस जाते हैं, इनका स्वभाव व्यभिचारी होता है और धातु विकार से सम्बन्धित रोग होते हैं। नजला, जुकाम, जलोदर आदि रोग होते हैं, जल यात्रा में कष्ट होता है और जब कुम्भ का शुक्र होता है, तो मनुष्य विद्या, कला-कौशल तथा लेखनादि में प्रवीण होता है और इन्हीं में धन तथा यश लाभ करता है, कुटुम्बियों से मेल रहता है, इनकी उन्नति धीरे-धीरे होती है और अन्त में अच्छी स्थिति हो जाती है। इनका विवाह देर में होता है, सन्तान से सुख मिलता है, इनका सम्बन्ध अन्य स्त्रियों से भी रहता है और इन्हीं में से किसी एक से धन की प्राप्ति भी होती है, इनकी स्त्री घर की शुभ चिन्तक होती है, ये किसी न किसी रोग से सदैव पीड़ित रहते हैं।

यदि दशमेश शुक्र तुला का तीसरे स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, यद्यपि इनकी मस्तिष्क शक्ति अच्छी होती है, बहन-भाई, माता-पिता का अच्छा सुख रहता है। ये लोग सरकारी नौकरी तथा स्वतन्त्र व्यवसाय दोनों ही क्षेत्रों में प्रगति करते पाये जाते हैं, इनकी इच्छा सदैव किसी संस्था का प्रधानत्व प्राप्त करने की रहता है, स्वाभिमान अधिक होता है, विवाह की इच्छा कम होती है और देर में शादी होती है, यदि शनि का योग हो तो जातक की शादी २० वर्ष तक हो जाती है, स्त्री कलहकारी होती है और नित्य नया झगड़ा

करती रहती है, सन्तान कम होती है फिर भी बच्चों से रोज का झगड़ा रहता है, निलज्जता का भाव अधिक रहता है। पति को नौकर के समान समझती है, अपने-पराये की बुराई ही करना उसका काम रहता है, खान-पान की तनिक भी शुद्धि नहीं होती, कपड़े धोने का शौक होता है और जब मीन का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है, वह साहसी कार्यों द्वारा अपने पराक्रम से राज्य पद तथा पारितोषिक पाने वाला होता है, इष्ट-मित्रों, भाई-बन्धुओं से सुखी रहता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, ३२ वर्षोपरि भाग्योदय होता है, कन्यायें अधिक होती हैं, द्विभार्या योग हो सकता है, इनका जीवनान्त सुखमय रहता है।

जिसका दशमेश शुक्र वृश्चिक का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग प्रथम नौकरी करते हैं, किन्तु प्रगति न पाकर व्यापार या अन्य व्यवसाय प्रारम्भ कर देते हैं, विवाह के बाद स्थिरता मिलती है, भाग्योदय होता है, पिता या पैतृक सम्पत्ति का थोड़ा सुख रहता है, मातृ सुख नहीं होता, वाहन से कष्ट होता है, इन्हें सदैव पैसा एकत्रित करने की लगी रहती है, कृपण होते हैं, गुस्सा आता है, इनका अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी कुलटा से अवैध सम्बन्ध रहता है, जिसके झगड़े से धन-मान की हानि होती है, निन्दनीय कार्यों में अपयश मिलता है। अनेक रोग लगे रहते हैं और जब मेष का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा अधूरी रहती है, माता रोगी तथा पैतृक सम्पत्ति का सुख रहता है किन्तु भ्रातृ कलह रहता है और निजी उद्योग से धन-धान्य पूर्ण घर को रखते हैं, स्त्री-बच्चों को सुख से रखते हैं, फिर भी इ का गुप्त प्रेम-सम्बन्ध किसी दूसरे की स्त्री से होता है, या मनुष्य वैश्यागामी होता है जिस कारण किसी लड़ाई-झगड़े या मुकदमे में धन हानि होती है, अपयश प्राप्त होता है। व्यापार से लाभ होता है। यात्रा प्रिय तथा शत्रुजित होता है।

जब दशमेश शुक्र धन का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी पूर्ण सी लगती है, ये लोग धार्मिक, भाषा ज्ञान से पूर्ण कुशल कलाकार तथा अच्छे नट होते हैं, जिसके द्वारा धन और कीर्ति दोनों प्राप्त करते हैं। लावण्यमयी आकृति होने के कारण पर स्त्रियों को सहज अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। ये लोग विवाह देर में करते हैं, पदवृद्धि में अड़चनें पड़ती हैं फिर भी स्त्री-बच्चों का सुख अच्छा रहता है। इनका प्रेम किसी विधवा अथवा

अपने से बड़ी अवस्था वाली स्त्री से रहता है और जब वृष का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है। ज्ञान-विज्ञान, भाषा आदि की उपाधियों से विभूषित होते हैं। रंगीन वस्त्र धारण कर सुगन्ध युक्त रहते, शृंगारी, कविता तथा कहानियाँ लिखते हैं, स्त्री सुन्दर तथा आज्ञाकारी होती है। पुत्र चिन्ता रहती है, कन्यायें अधिक होती हैं, इनका प्रेम सम्बन्ध अवैध रूप से अन्य स्त्रियों से भी रहता है। सरकारी नौकरी में प्रगति होती है, विद्याभिमान रहता है।

यदि दशमेश शुक्र मकर का छठे भाव में हो तो जातक दुर्बुद्धि, मन्द भागी, पाप रत, अशिक्षित होता है। सरकारी नौकरी नहीं होती, अन्य व्यवसाय करने पड़ते हैं। शत्रु अधिक होते हैं, नन्साल का सुख कम होता है, जल यात्रा या तैरने में प्राण कष्ट होता है, विवाह होता है पर स्त्री झगडालू मिलती है। खर्च कठिनता से चलता है, ऋण लेना पड़ता है, सन्तान सुख कम होता है, पेटार्थी होने से मन्दाग्नि, जिगर तिल्ली में खराबी रहती है, ये लोग अपने से बड़ी आयु वाली स्त्री के प्रभाव में अधिक रहते हैं, इनका यह प्रेम धन के लिये होता है। और जब शुक्र मिथुन का हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग लेख, कविता, कहानियाँ लिखकर या शिक्षा देकर, एक साथ धन कमाने वाले होते हैं। यदि विवाह हुआ तो देर में होता है, बच्चों का सुख रहता है। नन्साल का सुख कम रहता है, पिता का सुख कम तथा मातृ सुख अधिक होता है, खर्च अधिक रहता है, ये लोग कामी या इन्द्रिय लोलुप अधिक होते हैं, मन्दाग्नि, जिगर, धातु क्षीणादि रोग रहते हैं।

जिसका दशमेश शुक्र कुम्भ का सप्तम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, इनको सरकारी नौकरी तथा अन्य व्यवसाय भी करते देखा जाता है। अधिकतर स्त्री भी नौकर या अन्य कार्य दक्ष मिलती है, स्त्री कुछ सुन्दर नहीं होती। वह संसार में मग्न तथा कामासक्त होती है। जल वस्तुओं का व्यापार, विदेश की यात्रा, जलक्रीड़ा सभी सुखकर या लाभप्रद रहते हैं। विदेशी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रहता है, धन की प्राप्ति होती, यद्यपि बच्चों का सुख कम रहता है, फिर भी ये अपनी आशाओं को धीरे-धीरे पूर्ण करने में समर्थ हो जाते हैं और जब कर्क का शुक्र हो तो जातक सुशिक्षित, प्रतिशोध पूर्ण होता

है । यह श्रृङ्गारी, कवि, लेखक तथा कलाकार होता है । इसके कार्यों में अश्लीलता होती है। सदा प्रेम विवाह में तत्पर रहता है, लड़कियों को छेड़ता है, जलयात्रा में कष्ट, तैरने में डुबकी तथा विदेश यात्रा में विधर्मी से अवैध प्रेम सम्बन्ध होता है । इन्हें पर-स्त्री रति के अथवा मदिरादि पान के कारण अनेक धातु,वीर्य सम्बन्धी रोग लग जाते हैं, नजला, जुकाम खूब होता है, इनकी अपनी स्त्री कलह कारिणी, घर की बागडोर अपने हाथ में रखने वाली डायन रूप होती है ।

जब दशमेश शुक्र मीन का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी प्रपंच द्वारा अपनी स्थिति को धन-धान्य पूर्ण रखते हैं । विवाह होता है, बच्चों का सुख कम होता है । द्विभार्या योग भी हो सकता है । ये लोग सुरापी भी होते हैं, जल यात्रा या तैरने में प्राण संकट रहता है । विजाती स्त्री के प्रेम में धर्म तक बदल देते हैं और धातु सम्बन्धी अनेक गुप्त रोगों पर धन खर्च करते हैं और जब शुक्र सिंह राशि का होता है तो शिक्षा बहुत कम होती है और गायन, वादन, कवितादि कलाओं द्वारा कठिनता से जीवन निर्वाह करना पड़ता है । स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता । आये दिन झगड़ा रहता है, किन्तु किसी अन्य स्त्री के द्वारा धन और सुख की प्राप्ति होती रहती है । यात्रा में कष्ट होता है, अन्तिमावस्था सुखकर नहीं होती, ये कामी तथा पाप रत रहते हैं । गुप्त रोगी होते हैं ।

यदि दशमेश शुक्र मेष का नवम स्थान में हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लेखन-कला में प्रवीण तथा कुशल कलाकार होते हैं और सिनेमा क्षेत्र, साहित्य क्षेत्र अथवा सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करते हैं, ये लोग धार्मिक, उदार तथा परोपकारी होते हैं, इनका जीवन सुखमय रहता है, स्त्री सुन्दर, प्रभावशाली तथा कामासक्त नहीं होती, बच्चे कम होते हैं इसलिए जातक दूसरी स्त्रियों से गुप्त प्रेम सम्बन्ध रखता है या वेश्यागामी होता है । विदेश की यात्रायें खूब होती हैं और जब कन्या का शुक्र हो तो जातक शिक्षित, काव्य कला का जानने वाला, विवाह के बाद स्थिरता को प्राप्त होने वाला, सुन्दर स्त्री वाला होता है किन्तु स्त्री का स्वभाव तेज होता है, यह स्वार्थी तथा कृपण होती है, बच्चों का सुख रहता है, भाई से विशेष प्रेम नहीं होता । जातक पर-स्त्री वार्ता में चतुर

तथा नीच घराने की लड़कियों से सम्बन्धित होता है और गुप्त रोगों के कारण दुख उठाता है ।

जिसका दशमेश शुक्र वृष या तुला का स्वगृही दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है । ये लोग सरकारी नौकरी में पदाधिकार प्राप्त करते हैं, गायन, वादन, कविता, लेख, कहानियाँ, नाटक, उपन्यासकार के रूप में भी पाये जाते, चित्रकार, अभिनेता, सिनेमा नायक आदि होने के साथ-साथ सभी कलाओं में इन्हें हस्तक्षेप करते हुए पाते हैं, इनका जीवन सुखमय तथा कलापूर्ण रहता है । इन्हें स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, केवल शौक के लिए अन्य स्त्रियों से प्रेम-वार्ता में रत रहते हैं, पिता का सुख रहता है, उनसे सम्बन्ध अच्छे रहते हैं, माता से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते । देश-विदेश की यात्रायें होती हैं । भूमि, वाहन, रहन-सहन का सुख रहता है । स्वच्छ तथा शानदार वस्त्र धारण करते हैं, कामासक्त होते हैं, सुरादि व्यसनों में आसक्त रहते हैं । परोपकारी होते हैं, धर्मार्थ का ज्ञान नहीं रखते । आस्तिक-नास्तिकता से दूर अपना संसार बनाते हैं ।

जब दशमेश शुक्र मिथुन का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण होती है, कलापूर्ण कार्यों में दिलचस्पी रखते हैं, सीधे-सादे रहते हैं, सरकारी नौकरी या शिक्षक, प्रोफेसर आदि क्षेत्र में प्रगति करते हैं, ये लोग विवाह के सम्बन्ध में अपने विचार दूसरे से ही रखते हैं, यदि विवाह हुआ तो देर में होता है, सन्तान अच्छी होती है, भाइयों का खर्चा उठाना पड़ता है, पिता का सुख कम तथा मातृ-सुख अधिक होता है, पैतृक जायदाद का सुख कम मिलता है, ये लोग इन्द्रिय लोलुप होते हैं, विदेश यात्रा की इच्छा रखते हैं और जब वृश्चिक का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती । शरीर सुन्दर, स्वस्थ-सा प्रतीत होता है, वस्त्र-व्यापार तथा अन्य व्यवसायों में खूब प्रगति होती है, स्त्री सुन्दर, आकर्षित तथा आवेशपूर्ण होती है, बच्चों एवं भाइयों का पूर्ण सुख रहता है, माता-पिता का सुख रहता है । देश-विदेश के व्यापार में खूब लाभ होता है । देश में अनेक यात्रायें तथा निगमादि के चुनाव में जीत तथा मान प्राप्त होता है, पैतृक सम्पत्ति का पूर्ण सुख रहता है, अपने शहर से बाहर जाकर ये लोग कुकर्म रत रहते हैं । वेश्यागमन, आमिष भोजन तथा अन्य पाप करना बुरा नहीं समझते ।

यदि दशमेश शुक्र कर्क का द्वादश भाव में हो तो जातक को शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग श्रृंगारी, कवि, लेखक इत्यादि का व्यापार करने वाले तथा सरकारी क्लर्क भी होते हैं, स्त्री सुन्दर तथा खानदानी होती है, फिर भी उससे विचार-विनिमय नहीं हो पाता, खर्चा अधिक होता है, इसलिए बचत नहीं होती, शत्रु होते हैं, जलयात्रा में जीवन भय रहता है, तैरने में डुबकियाँ खानी पड़ती हैं, चोरी का भय रहता है, सन्तान होती है, और जब धन का शुक्र हो तो मनुष्य उच्च विचार, कवि, लेखक, चित्रकार, संगीत प्रिय, नाटचकारादि में प्रगति करने वाला, झगड़ालू स्त्री से विवाह करने वाला, कामी, व्यभिचारी तथा धन पाने वाला होता है। द्विभार्या योग भी हो सकता है। जल यात्रा में कष्ट होता है। उच्च वर्ण के लोगों से जातक की नहीं बनती, किसी स्त्री के द्वारा चोरी होती है जिससे मनुष्य का अवैध सम्बन्ध होता है।

दशमेश शनि फल

शनि—जिसका दशमेश शनि मेष का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। सरकारी नौकरी में विशेष प्रगति नहीं होती, पिता से अनबन रहती है, इसलिये पैतृक सम्पत्ति सुखकर नहीं होता, विवाह होता है तो स्त्री रोगी रहती है, उसका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है, भाइयों से नहीं बनती और भाई की उन्नति सीमित रहती है। मनुष्य स्वयं वात रोगी होता है। पुत्र की चिन्ता रहती है, कभी-कभी क्वांरा भी रहना पड़ जाता है। यद्यपि जातक स्वभाव का उदार, दयालु, परोपकारी तथा मिलनसार होता है, फिर भी अत्यधिक उसके समीप गये बिना उसके गुण ज्ञात नहीं होते और जब वृष का शनि हो तो मनुष्य शिक्षित होता है और नौकरी करना हितकर समझता है। कभी-कभी लोहादि कारखानों का मालिक या मजदूर भी होता है, विवाहितानन्द प्राप्त नहीं होता या तो स्त्री का स्वर्गवास असमय पर हो जाता है, या फिर उससे सदा अनबन या वियोग हो रहता है। ये लोग घमंडी तथा एकान्त प्रिय होते हैं। माता-पिता यदि जीवित रहें तो उनसे सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते या वे दोनों बीमार रहते हैं। ये लोग धूर्त, झूठे, कुसंगति, निजी स्वार्थ पूर्ति के लिए दूसरों को हानि पहुँचाने वाले, कलुषित हृदय होते हैं।

जब दशमेश शनि वृष का दूसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी ये लोग अच्छे लेखक, राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्र के पथ-दर्शक, हठी, निश्चिन्त, उद्योगी तथा परिश्रम और त्याग से धन और यश को प्राप्त करने वाले होते हैं। विवाह तो कर लेते हैं किन्तु घर की चिन्ता नहीं करते, धन का संग्रह नहीं होता, इन्हें अपने इष्ट-मित्रों तथा घर के मनुष्यों से ही हानि होती है। पुत्रों के दुख से दुखी रहते हैं, माता रोगी रहती, वायु, कफ का रोग होता है। बड़े भाई का सुख नहीं होता, व्यापार में हानि रहती है। लोहादि से लाभ होता है, और जब मिथुन का शनि होता है तो शिक्षा कम होती है। पैतृक जायदाद से लाभ उठाते हैं, भाई-बहन काफी होते हैं। चल-चित होते हैं, द्विभार्या योग हो सकता है। सन्तान सुख कम होता है, शरीर रोगी रहता है। बड़े भाई का सुख नहीं होता, यात्रा में कष्ट होता है। ये प्रवासी, विलासी तथा कुटुम्ब सुख से रहित होते हैं।

यदि दशमेश शनि मिथुन का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा प्रयत्न करने पर भी अधूरी ही रहती है। और ये लोग मशीनादि कार्यों में प्रगति करते हैं, भ्रातृ मृत्यु या भाइयों से कलह रहती है, भाग्योदय में अड़चनें पड़ती हैं। धार्मिक कार्यों तथा तीर्थ यात्रा में रुकावटें आती हैं, घर से भागने का योग बनता है। काँणा या नेत्र ज्योति क्षीण हो सकती है। विवाह, बच्चों का सुख कम होता है, उद्दण्ड तथा अभिमानी होते हैं। माता-पिता का सुख रहता है, खेती-बारी के कार्य से लाभ होता है। शरीर पुष्ट, पराक्रमशील होता है और जब कर्क का शनि हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग स्वार्थी, कृपण, उद्दण्ड, कुकर्मी तथा सावधान होते हैं, भाइयों से शत्रुता, स्त्री-बच्चों से कलह, निन्दित कर्मों में खर्च करने वाले, पापरत, पैतृक सम्पत्ति का सुख भोगने वाले, शत्रुजित, आत्मविश्वासी, विलासी, जलक्रीड़ा में आनन्द पाने वाले होते हैं।

जिसका दशमेश शनि कर्क का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग सरकारी नौकरी, डाक्टरी, वकालत आदि में अच्छा धन और यश पाते हैं, माता का सुख नहीं होता, पैतृक सम्पत्ति सुख रहता है, स्त्री-सुख होता है, किन्तु बच्चों से अनबन रहती है, शत्रु दबे रहते हैं, जल यात्रा या तैरने

में जीवन भय रहता है। मन्दाग्नि, जिगर में खराबी तथा वात रोग की पीड़ा होती है, धार्मिक कार्यों में सफलता कम मिलती है। शरीर रोगी रहता है, शब्द-ध्वनि भारी तथा गम्भीर होती है और जब सिंह का शनि होता है, तो मनुष्य का स्वभाव क्रोधी, विद्या कम, माता-पिता से अनबन, नौकरी में प्रगति नहीं होती, छोटे कार्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम, हिंसक वृत्ति होती है, किसी स्त्री द्वारा विष प्रयोग या अपयश मिलता है। मामा का सुख नहीं होता, शरीर रोगी रहता है, धन की कमी रहती है, कुटुम्ब से विरोध रहता है। द्विभार्या योग हो सकता है, इन्हें नीच वर्ग से हानि होती है।

जब दशमेश शनि सिंह राशि का पंचम स्थान में हो तो जातक बुद्धिमान् तथा पूर्ण शिक्षा कुछ अड़चनों के बाद प्राप्त करने वाला होता है। इन्हें विद्या-भिमान रहता है, ये लोग सरकारी नौकरी तथा लेखन कला में अच्छी प्रगति करते हैं। ३६ वर्षोपरि भाग्योदय होता है, माता-पिता से सम्बन्ध अच्छे रहते हैं, यदि वे जीवित रहें अन्यथा स्वयं का पालन-पोषण दूसरों के हाथ से होता है। ये लोग स्त्री-बच्चों के दुख से दुखी रहते हैं, कलहप्रिय तथा शील हीन होते हैं। व्यापार में हानि तथा स्वजनों से विरोध रहता है और जब कन्या का शनि हो तो शिक्षा बहुत ही कम तथा निरुद्यमी होते हैं। माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत ही कम होता है, यदि जीवित रहे तो सभी किसी न किसी रोग के रोगी होते हैं। स्त्री को गर्भपात तथा स्वयं को पेटपीड़ा, व्यापार में लाभ कम, बड़े भाई से अनबन, सम्बन्धियों से झगड़ा रहता है और किसी नीच स्त्री से प्रेम रहता है।

यदि दशमेश शनि कन्या का छठे भाव में हो तो जातक की शिक्षा सर्वथा अपूर्ण रहती है। लोहा, कोयला तथा भैंसादि के व्यापार से अच्छा जीवन चलता है, नन्साल का सुख नहीं होता, शत्रु दबे रहते हैं। पर-स्त्री संसर्ग में अपयश होता है, ये लोग उदास तथा निराश रहते हैं, विवाहितानन्द प्राप्त कम होता है, सन्तान चिन्ता बनी रहती है। पराक्रम कम फलता है, गठिया, वात-शूलादि का रोग होता है, इनका चित्त किसी कार्य में स्थिर नहीं रहता है और जब तुला का शनि हो तो शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग डाक्टर, वकील तथा अच्छे वैज्ञानिक या लोहे, कोयले, मशीनादि के थोक व्यापारी होते हैं। फिर भी विवाह

का सुख कम होता हैं, सन्तान चिन्ता बनी रहती है। नाना, मामा का सुख कम होता है, तैरने तथा जलयात्रा में जीवन संकट और किसी शृंगारिक स्त्री द्वारा अपमान होता है। शत्रुओं पर तथा मुकदमों में विजय पाते हैं, बीमारी में खर्च करना पड़ता हैं, भाइयों से शत्रुता रहती हैं। पुलिस-सेना में प्रगति होती है।

जिसका दशमेश शनि तुला का सप्तम घर में उच्च का हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग सरकारी नौकरी, उच्च पद तथा स्वतंत्र व्यवसायों में धन तथा यश प्राप्त करते हैं। ३६ वर्षोपरि भाग्योदय में रुकावटें आती हैं, उद्योग से ये लोग बढ़ते हैं। धर्म-कर्म में रुचि कम होती है, स्त्री-बच्चे बीमार रहते हैं। माता की यदि मृत्यु न हुई तो सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता, जलयात्रा में सुख मिलता है, विदेश यात्रा यदि हुई तो पर-स्त्री गमन होता है। और जब शनि वृश्चिक का हो तो शिक्षा बहुत कम होती है, ये लोग साहसी, पुष्ट तथा उद्योगी होते हैं। लोहे, कोयले तथा खानों में कार्य करने वाले मजदूर या व्यापारी होते हैं। विवाह होता है तो स्त्री झगड़ालू होती है, उसकी सास से नहीं बनती, स्त्री को गर्भपात होते हैं। पुत्र चिन्ता बनी रहती है, बादी अर्श होती, पिता का कर्ज देना पड़ता है। पैतृक सम्पत्ति सुख नहीं होता, माता जीवित रहती है। चन्द्र योग से नौकरी भी करनी पड़ती है, भ्रातृ सुख रहता है। दोस्तों से काम निकलते हैं।

जब दशमेश शनि वृश्चिक का अष्टम हो तो जातक झगड़ालू, रोगी तथा अशिक्षित होता है। सरकारी नौकरी नहीं होती, अन्य छोटे व्यवसायों द्वारा अच्छा धन प्राप्त करते हैं। विवाह कठिनता से होता है, सन्तान कष्ट रहता है, पिता से अनबन रहती है। जलयात्रा तथा तैरने में जल भय रहता है, किसी दुर्घटना से चोट लगती है और जब धन का शनि हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। और मनुष्य स्वतंत्र व्यवसाय से जीवन-यापन करता है, भाग्योदय नहीं होता। विवाहितानन्द होता है, सन्तान चिन्ता रहती है। माता-पिता का सुख कम, इष्ट-मित्रों से नहीं बनती, शत्रु दबे रहते हैं, परिश्रमाधिक्य से शरीर रोगी रहता है, चित्त खिन्न रहता है। इनको मध्यायु तक कष्ट रहता है, तत्पश्चात् जीवन में स्थिरता आती है और सच्चे सुख का अनुभव होता है।

जिसका दशमेश शनि धन का नवें भाव में हो तो जातक को शिक्षा अड़चनों के बाद पूर्ण होती है। ये लोग लेखन तथा पुस्तक प्रकाशनादि कार्य भी करते देखे गये हैं। सरकारी नौकरी के साथ ये लोग दूसरा व्यवसाय भी सुगमता से करते देखे गये हैं। स्त्री-बच्चों के सुख के लिए तथा अपने घर की दशा सुधारने का प्रयत्न करते हैं। समय काफी लगता है, अन्तिमावस्था तक अपना मकान, जमीनादि खरीद कर सुख से रहते हैं। माता-पिता का सुख रहता है, भाइयों से अनबन रहती है। शत्रु दबे रहते हैं, धर्म की आड़ में पाप करते हैं। विदेश यात्रा में निश्चय विजातीय युवती के प्रेम-सम्पर्क में रहकर अपयश पाते हैं और जब शनि मकर का होता है तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी जातक चालाकियों से, बदमाशियों से ऊँचा उठना चाहता है और अन्त में सफलता पाता है। माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सुख होते हुए भी इनका प्रेम-सम्बन्ध किसी नीच जाति की स्त्री से होता है। जिस कारण इन्हें बहुत ऊँच-नीच देखनी पड़ती है और अपयश के साथ कष्ट बहुत होता है, भ्रातृ द्वेष, लोहे, कोयले के विदेशी व्यवसाय से लाभ होता है।

जब दशमेश शनि मकर या कुम्भ का दशम स्थान में स्वगृही हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण नहीं रहती। यद्यपि रुकावटें आती हैं, फिर भी एक समय के पश्चात् पूर्ण हो ही जाती हैं। फिर भी लेखन कला, सरकारी नौकरी, लोहे, कोयले के कारखाने तथा फर्मों के या विदेशी माल के क्रय-विक्रय में अच्छा लाभ उठाते हैं, विदेश यात्रा मे पथभ्रष्ट होकर आते हैं, माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति का सुख कम होता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, उनकी बिमारी में खर्च करना पड़ता है। द्विमार्या योग होता है, स्त्री मृत्यु के पश्चात् ये लोग एकान्त सेवन करते हैं। दूसरों को शास्त्र या धर्म का उपदेश करते हुए दिखाई देते हैं, यद्यपि स्वयं उन बातों पर आचरण नहीं करते। ये अच्छे तार्किक होने के कारण दूसरों की सहानुभूति सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, विदेश यात्रा केवल शौक के लिए करते हैं और विधर्मी स्त्री के प्रेम रत रहकर पापाचारी हो जाने में सुख मानते हैं। ये भक्षाभक्ष का विचार नहीं रखते, व्यभिचारी होते हैं, नीचों में कीर्ति तथा यश पाते हैं। सरकारी नौकरी में स्टेनो, टाइपिस्ट तथा दूसरे प्रकार की मशीन पर कार्य करने वाले अपूर्ण शिक्षित भी होते हैं।

यदि दशमेश शनि कुम्भ का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग बातूनी होते हैं और न जानने वाले लोग विद्वान् समझते हैं, चतुर इतने होते हैं कि ठगाई में नहीं आते। नौकरी में प्रगति नहीं होती। अन्य व्यवसाय में फर्मों के मालिक तथा सोल एजेण्ट तथा कारखानों और खानों में कार्य करते हुए भी पाये जाते हैं। चुनाव में जीतने का पूर्ण योग रखते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, यदि विवाह हुआ तो बहुत बड़ी अवस्था में होता है। पिता का सुख कम, मातृ सौख्य रहता है। प्रतिशोध पूर्ण प्रकृति होती है और जब मीन का शनि हो तो शिक्षा अच्छी होती है, नौकरी करनी पड़ती है, पिता का सुख कम, माता का सुख होता है, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है, शरीर रोगी होता है। यात्रा में कष्ट होता है, व्यर्थ शत्रुता होती है। धर्म से दूर, हठी होते हैं। भाइयों से नहीं बनती।

जब दशमेश शनि मीन का द्वादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग किसी विषय में पूर्ण अधिकार रखते हैं। राजनैतिक क्षेत्र तथा अन्य स्वतन्त्र विषयों में धन तथा यश प्राप्त करते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, पिता का पालन करना पड़ता है, माता से कलह रहती है, शत्रु दबे रहते हैं। नन्साल का सुख रहता है, जल यात्रा या तैरने में प्राण संकट होता है और जब मेष का शनि हो तो शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है, इन्हें डाक्टरी, वकालतादि में धन तथा कीर्ति मिलती है, माता-पिता से नहीं बनती, शत्रु दबे रहते हैं, कुटुम्बियों से मनमुटाव रहता है, ४२ वर्षोपरि भाग्योदय होता है, फिर जीवन सुखी रहता है, जलयात्रा में सुख मिलता है। विदेश यात्रा शायद राजनैतिक कारणों से न हुई तो मनुष्य विधर्मी स्त्री के प्रेम-रत रहकर अपकीर्ति को प्राप्त होता है।

एकादशेश रवि फल

रवि · जिसका एकादशेश रवि तुला (नीच) का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा कम होती है और कलाकार, दयालु तथा स्वच्छता पसन्द होता है और निन्द्य कर्म रत रहता है, विवाह होता है किन्तु विवाहितानन्द से दूर रहता है। स्त्री बीमार रहती है। बच्चों की चिन्ता रहती है। अग्नि-चोर भय रहता है, धन कष्ट, नेत्र पीड़ा, क्रोधी, रोगी तथा किसी स्त्री द्वारा अपमानित होकर कलंकित होता है।

जब एकादशेश रवि वृश्चिक का दूसरे भाव में हो तो जातक शूर-वीर होता है, सेना, पुलिस विभाग की नौकरी में प्रगति करता है। शिक्षा बहुत कम होती है, फिर कोई-कोई व्यक्ति कुशल व्यापारी होते हैं, बड़े भाई का सुख होता है, कुटुम्ब वालों से नहीं बनती, रक्तविकार, नेत्र पीड़ा, पित्तादि ग्रसित, माता-पिता का विरोधी, कृपण, विषाग्नि, शस्त्र आदि से भय रहता है, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। ये लोग लोहे, तांबे तथा कैमिस्ट्री के कार्य में चतुर होते हैं।

यदि एकादशेश रवि धन का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग उच्चविचार, डाक्टर, वकील, सम्पादक, लेखक, अध्यापक तथा प्रकाशक भी होते हैं। भाई से विचार विनिमय नहीं होता, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। यातायात सुख रहता है। ये लोग धार्मिक, उदार, सत्संगी, सन्तोषी तथा कर्ण रोगी होते हैं।

जिसका एकादशेश रवि मकर का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, गुरु से दृष्ट होने पर शिक्षा पूर्ण होती है। माता बीमार रहती है, पिता से ३६ वर्षोपरि सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, इनकी इच्छा बहुत बड़ा बनने की होती है, जो कि सफल नहीं होती, नौकरी में प्रगति नहीं होती, बड़े भाई का कर्ज देना पड़ता है, स्त्री-बच्चों का सुख विवाह होने पर भी नहीं होता।

जब एकादशेश रवि कुम्भ का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में खास प्रगति नहीं होती, विवाह होता है किन्तु स्त्री से झगड़ा रहता है। प्रथम पुत्र शोक हो सकता है। द्विभार्या योग हो सकता है, भ्रातृ सुख रहता है। स्त्री को रोग होता है। इनको नौकरी के साथ और कार्य भी करके जीवन-यापन करना पड़ता है।

यदि एकादशेश रवि मीन का छठे स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। ये लोग सेवा कार्य अच्छी तरह कर सकते हैं, इनको माता-पिता, भाई, स्त्री-बच्चों तथा नन्सालादि का सुख नहीं होता, ये लोग स्वतन्त्र विचारक होते हैं। इसलिए मालिक से लड़ते रहते हैं, जीवन दुखित तथा अवनति पूर्ण रहता है, पेटार्थी होने के कारण रोगी रहते हैं।

जिसका एकादशेश रवि मेष (उच्च) का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग डाक्टर, वकील, मैनेजर, डाइरेक्टरादि होते

हैं, भाइयों का सुख रहता है, द्विभार्या योग हो सकता है। यदि एक ही विवाह हो तो बहुत देर में होता है। किन्तु बच्चों का सुख कम होता है। यात्रा में सुख मिलता है। स्त्री और आप को गर्मी, पित्तादि का रोग होता है।

जब एकादशेश रवि वृष का अष्टम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, नौकरी में प्रगति नहीं होती, बच्चे बहुत होते हैं, जीवन दुखी रहता है। स्त्री का जार योग होता है, हो सकता है इनके प्राण उसी के द्वारा हरण हो, रुधिर प्रकोप रहता है।

यदि एकादशेश रवि मिथुन का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग लेखक, सम्पादक, शिक्षकादि होते हैं, कम पढ़े होने पर भी विद्वान् से जँचते हैं, साहित्यिक प्रेम होता है, धन और यश पाते हैं, गणित, ज्योतिष अच्छा जानते हैं। धर्म करते हैं, किन्तु श्रद्धा नहीं होती। तीर्थ यात्रा करते हैं, जिसमें सैर की भावना होती है। स्त्री-बच्चे, बहन-भाई, माता-पितादि सुख सामान्य रहता है। ये लोग स्वाभिमानी तथा अमिलनसार होते हैं।

जिसका एकादशेश रवि कर्क का दशम स्थान में हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग सरकारी नौकरी, नहर विभाग, जलवायु निरीक्षण औफीस में करते हैं। माता-पिता से अनबन तथा स्त्री-बच्चों से अनबन रहती है।

जब एकादशेश रवि सिंह का स्वगृही एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी विद्वान् सा जँचता है, सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, दूसरे कार्य भी धन के लिये करने पड़ते हैं। भ्रातृ-सुख रहता है, पिता का सुख कम और मातृ सुख रहता है। स्त्री धनिक घर की होती है। दहेज में धन मिलता है, बच्चों का सुख रहता है। ये उपकारी, मिलनसार होते हैं।

यदि एकादशेश रवि कन्या का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुकावटों के बाद पूर्ण होती है, ये लोग ध्येय की पूर्ति के लिए प्राण पर खेल जाते हैं, स्वतन्त्र विचार तथा धन लिप्सा लिप्त होते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख होते हुए भी यदि विदेश यात्रा हुई तो विजातीय युवती के प्रेम-सम्बन्ध में

अपना धर्म तक त्याग देते हैं और उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऐश्वर्य से रहते हैं। माता-पिता, बहन-भाई का मोह नहीं करते। क्रूर पाप ग्रह के संयोग से मनुष्य निरक्षर रह जाता (मंगल राहु) है और मन्दमति के कारण आयु भर कष्ट पाता है।

एकादशेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका एकादशेश पूर्ण चन्द्र कन्या का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग कुछ शर्मीली प्रकृति के होते हैं। स्त्री-सुख रहता है। कवि, लेखक तथा प्रेम विवाहरत रहते हैं, विलासी स्वभाव होता है, धन की कमी रहती है। कन्यायें होती हैं, पुत्र-चिन्ता रहती है। क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य पाप बुद्धि, कुकर्मी, अशिक्षित होने पर भी अपने को विद्वान् समझने वाला, आलसी, उन्मादी, इन्द्रियलोलुप, पर-स्त्री गामी, सदा नयो लड़कियों से छेड़-छाड़ करने वाला, ऋणी, स्त्री-बच्चों के सुख से रहित, उदास, धातु विकार युक्त, उतावला होता है।

जब एकादशेश पूर्ण चन्द्र तुला का दूसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे वकील तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ता होते हैं जो कि सभाओं या सर्व साधारण को सहायता से धन और यश पाते हैं, स्त्री-बचचों का सुख रहता है, ये लोग विलासी तथा विनोदी होते हैं और क्षीण चन्द्र के होने पर शिक्षा कम तथा धन की कमी रहती है, स्त्री-बच्चों तथा कुटुम्बियों से नहीं बनती, किसी स्त्री-द्वेष के कारण इन्हें अपमानित होना पड़ता है, नजला, जुकाम, वीर्य विकारादि रोगों से शरीर को कष्ट पहुँचता है।

यदि एकादशेश पूर्ण चन्द्र वृश्चिक (नीच) का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग साहसी कार्य में कुछ धन तथा यश पाते हैं। प्रवास में रहना पड़ता है, भाइयों का सुख होता है, ३२ वर्ष बाद भाग्य में उत्कर्ष होता, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, धर्म-कर्म में कुछ रुचि होती है, तीर्थ यात्रा होती है और जब चन्द्र क्षीण होता है तो मनुष्य क्रोधी, विद्याहीन, भ्रातृ-सुख से रहित, मन्दभागी, स्त्री-बच्चों के दुख से दुखी, पापरत, पर-स्त्री गमन में राज्यदण्ड पानेवाला, यात्रा में कष्ट उठाने वाला, प्रवास में दुख पाता है।

जिसका एकादशेश पूर्ण चन्द्र धन का चतुर्थ स्थान में हो तो जातक उच्च विचार तथा पूर्ण शिक्षित होता है। धार्मिक शिक्षा का कार्य सफलता पूर्वक कर

सकता है, अध्यापकादि से वृत्ति चलती, सरकारी नौकरी हो सकती है, विवाह धनिक घर होता है, माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, पैतृक सम्पत्ति मिलती है, तरल पदार्थों के क्रय-विक्रय से लाभ होता है और क्षीण चन्द्र होने पर, मस्तिष्क ठीक न होने से शिक्षा नहीं हो पाती, सरकारी नौकरी में राज्य-विरोध रहता है। धन का सदा कष्ट रहता है, माता-पिता, स्त्री-बच्चों तथा उनकी जायदाद, सवारी आदि का लाभ नहीं हो पाता, जीवन-कष्टमय रहता है, यात्रा में कष्ट होता है। उच्च वर्ण की स्त्री-संसर्ग से अपयश मिलता है।

जब एकादशेश पूर्ण चन्द्र मकर का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा मन्द बुद्धि होने के कारण पूर्ण नहीं होती, इसलिए रेल, बैंक, नहर, जलवायु निरीक्षक, ऑफिसों में नौकरी कर सन्तोष करना पड़ता है, विवाहितानन्द प्राप्त कम होता है, कन्यायें अधिक होती हैं। इन्हें किसी कार्य में थोड़ा यश प्राप्त होता है, यदि बड़ा भा हुआ तो उससे सुख मिलता है, जल यात्रा में सुख रहता है, तैरने की प्रतियोगता में प्रथम पारितोषिक मिलता है और क्षीण चन्द्र होने पर उपर्युक्त फलो की हानि होती है। जल-विनोद प्रतियोगिता में प्राण संकट उपस्थित हो जाता है, शिक्षा नहीं होती भाई-बन्धु, स्त्री-बच्चों से सुख नहीं मिलता, मनुष्य का जीवन भार हो जाता है, वह दुख में कभी-कभो रो उठता है।

यदि एकादशेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग कवि-लेखन कला में प्रवोण होते हैं। नन्साल का सुख कम होता है, शत्रु उत्पन्न होते किन्तु बिगाड़ नहीं कर पाते, जल यात्रा में कष्ट होता है। किन्तु प्राण भय नहीं होता, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है, क्षीण चन्द्र होने पर अशिक्षित रहना पड़ता है। शत्रु, जल, चोर से सदा भय रहता है, मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली, नजला, जुकाम, अण्डकोष वृद्धि के रोग होते हैं, बीमारी उपचार में धन खर्च होता है, सदा ऋणी रहना पड़ता है। पाप वृत्ति, काम वासना प्रबल होती है, मनुष्य आलसी तथा स्नेह शून्य होता है।

जिसका एकादशेश पूर्ण चन्द्र मीन राशि का सप्तम भाव में हो तो मनुष्य दुर्बल हृदय, अपूर्ण शिक्षित होता है, फिर भी कुशल व्यापारी होने के नाते धन-धान्य पूर्ण रहता है, स्त्री-पुत्र के सुख से सुखी रहता है। विदेशी वस्तुओं का व्यापारी होता है, विदेश यात्रा में विधर्मी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रखता है। दर्शनीय तथा गुप्त रोगी होता है और क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य शिक्षा रहित, जीवन

में अनेक उथल-पुथल देखने वाला, धूर्त, कुकर्मी, पापरत, प्रेम वार्ता चतुर, प्रेम विवाहरत, सड़क चलती लड़कियों को छेड़ने वाला, स्त्री-बच्चों के दुःख से दुखी, वीर्य विकार युक्त, गिनोरिया, प्रमेहादि रोगों से युक्त, क्षीण काय होता है।

जब एकादशेश पूर्ण चन्द्र मेष का अष्टम घर में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग कल्पना के संसार में बसने वाले, आत्मविश्वास से रहित होते हैं, चित्त चंचल होता है, इसलिए किसी भी व्यवसाय में स्थिर रहकर कार्य नहीं कर सकते, किन्तु स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखो होते हैं, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा बहुत कम होती है, उन्मादी तथा गप्पी हाते हैं, आलसी, धनहीन, चंचल प्रकृति, पापरत, साहस रहित, स्त्री-बच्चों से हीन, अस्थिर, भाग्य से मिल जाने पर निर्वाह करने वाले, निरुद्यमी होते हैं।

यदि एकादशेश पूर्ण चन्द्र वृष या उच्च का नवम स्थान में हो तो जातक सत्कर्म करने वाला, पूर्ण रूप से शिक्षित होता है, कविता, कला तथा गायन-वादन में निपुण होता है, माता-पिता, बहन-भाई, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, धार्मिक, उदार, परोपकारो, दयालु, तीर्थ यात्रा करने वाला, शान्त, निर्मल हृदय, समाजसेवी, धन-धान्य पूर्ण तथा सब प्रकार से सुखी होता है, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा पूर्ण नहीं हो पाती, उपर्युक्त फलों की हानि होती है, इसके सत्कर्मों में दिखावट पाई जाती है। यदि विदेश यात्रा हुई तो ये लोग विधर्मी (प्रेमालिंगन) में पथभ्रष्ट हो जाते हैं, तैरने तथा जल-विनोद में कष्ट मिलता है।

जिसका एकादशेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का दशम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग कविता कामिनी का सेवन करने वाले, बड़े कलाकार होते हैं। सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करते हैं, माता-पिता के आज्ञाकारी तथा उनकी सम्पत्ति से लाभ उठाने वाले, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, वाहनादि के शौकीन, जलयात्रा प्रिय, शान्त, समाज में आदर पाने वाले, सत्कर्मी होते हैं और क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा अपूर्ण रहती है, माता-पिता का सुख कम होता है। स्त्री-बच्चों से विचार विनिमय कम होता है। जल यात्रा में कष्ट वाहन से दुर्घटना का डर रहता है। पैतृक सम्पत्ति का सुख कम होता है।

जब एकादशेश पूर्ण चन्द्र कर्क का स्वगृही एकादश भाव में होता है तो जातक की शिक्षा पूर्ण रुक-रुककर होती है, ये लोग काल्पनिक, दार्शनिक, ज

यात्रा करने वाले, भाई-बहनों के सुख से सुखी, समाजसेवी, मिलनसार, उद्यमी, पैतृक सम्पत्ति से युक्त, सरकारी नौकरी तथा अन्य व्यवसाय में प्रगति करने वाले, धर्माधर्म को जानने वाले होते हैं, विवाह देर में होता है, कन्यायें अधिक होती हैं, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा पूर्ण नहीं होती, पिता सुख कम, मातृ सुख अधिक होता है, बड़े भाई से नहीं बनती, स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, विदेश व्यापार तथा जल यात्रा में हानि होती है, घर में झगड़े रहते हैं।

यदि एकादशेश पूर्ण चन्द्र सिंह का द्वादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा कम होती है फिर भी स्वबुद्धि-अनुसार शुभ कार्य रत, समाज सेवी, मिलनसार, स्त्री जाति को आकर्षित करने वाला, स्वाभिमानी, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाला, भाई से धन प्राप्त करने वाला, तीर्थ यात्रा प्रिय होता है, क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य क्रोधी, अशिक्षित, दूसरों से ठग कर धन पाने वाला, दूसरे की स्त्री पर धन खर्च करने वाला, अपयशी, शत्रु, चोर तथा जल से हानि उठाने वाला, पापरत, कुकर्मी होता है। इसकी स्त्री श्यामवर्ण तथा झगड़ालू होती है, द्विभार्या योग हो सकता है, किसी निर्वंशी का धन इन्हें प्राप्त होता है।

एकादशेश भौम फल

मंगल—जिसका एकादशेश मंगल मिथुन का लग्न में हो तो उसकी शिक्षा अपूर्ण रहती है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है। ये लोग धार्मिक, रूढ़िवादी, मन्त्र-तन्त्र पर विश्वास रखने वाले, माता-पिता से अनबन रखने वाले, ध्येयवादी, विवाह यदि हो भी जाये तो स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, स्त्री को गर्भपात, रक्तविकार, अर्शादि रोग स्वयं को होते हैं। क्रोधी, हठी, अपने को ठीक समझने वाले, धमकी से कार्य लेने वाले, झगड़े से डरने वाले, मन्दभागी होते हैं। सीमित समाज में आदर पाते हैं, पुलिस से डरते हैं, किन्तु अपनी हठ की पूर्ति में प्राणों पर खेल जाते हैं और मनुष्य क्या ईश्वर से भी नहीं डरते और जब मकर (उच्च) का मंगल होता है, तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग पुलिस, सेना विभाग में अपने साहस और उद्योग से उच्च पदवी प्राप्त करते हैं, माता-पिता से कलह रहती है, उनको सम्पत्ति का सुख कम होता है। द्विभार्या योग होता है, किसी दुर्घटना से चोट लगती है, किसी गुप्त शत्रु द्वारा हानि होती है। इनका प्रेम-सम्बन्ध किसी नीच स्त्री से होता है, इनके जीवन का उत्तरार्ध भाग सुखमय होता है।

जब एकादशेश मंगल कर्क (नीच) का दूसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा बहुत कम होती है, फिर भी ये लोग, ठगी, धोखा, चालाकी आदि से अच्छा धन प्राप्त कर लेते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, कुटुम्बियों से नहीं बनती, भाग्य मन्द रहता है। ये लोग बातूनी तथा डरपोक होते हैं, जलयात्रा से हानि होती है, इन्हें मन्दाग्नि, पित्त, आँख पीड़ा होती ही रहती है, इनका किसी नीच स्त्री से सम्बन्ध होने के कारण अपमान होता है। ये लोग किसी स्त्री के वक्षभाग से आकर्षित होते हैं, जीवनान्त दुख मय व्यतीत होता है और जब कुम्भ का मंगल हो तो मनुष्य की शिक्षा उच्च न होने पर भी वह ज्योतिषादि का ज्ञाता, प्रबल वक्ता, अपनी बात समझा देने वाला, तार्किक होता है। जल-यात्रा में कष्ट पाने वाला, इष्टमित्रों से युक्त, कृपण, धनी, पापरत, व्यवहार कुशल, जनता से लाभान्वित, विवाह में धन पाने वाला, नव विचारों वाला होता है।

यदि एकादशेश मंगल सिंह का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये लोग मुस्तैद, इन्डस्ट्रियस, सत्याग्रही, प्रधान पद पाने वाले होते हैं। सेना, पुलिस विभाग में पराक्रम के लिए पारितोषिक तथा कीर्ति पाते हैं और उत्तरार्धायु में धनवान् होते हैं। प्रेम के सम्बन्ध में निराश तथा उदास रहते, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। द्विभार्या योग हो सकता है। शत्रु दबे रहते हैं, माता का सुख होता है। जब मीन का मंगल हो तो विद्या अच्छी होती है, किन्तु ये लोग स्वार्थी, कृपण तथा धूर्त होते हैं। स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है। पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती, व्यापार में धन से अधिक यश पाते हैं, जलयात्रा में संकट, प्रेम में निराशा तथा विवाह देर में होता है, भ्रातृ सुख नहीं होता, इन्हें किसी स्त्री से विष या चोरी अथवा गुप्त शत्रु से हानि होती है।

जिसका एकादशेश मंगल कन्या का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती है। फिर भी जमीन-जायदाद, खेती-बारी से लाभ रहता है। माता-पिता से कम बनती है, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, बड़े भाई का सुख रहता है, स्त्री को गर्भपात तथा द्विभार्या योग होता है। सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, और जब मेष का मंगल हो तो शिक्षा अच्छी होती है,

मनुष्य माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति का लाभ कम उठाता है, मकान में आग लग सकती है, किन्तु अपने उद्यम से मकान, जमीन-जायदाद का सुख उपभोग करता है। किसो दुर्घटना से घाव पाते हैं, खिलाड़ो होते हैं, आवेशपूर्ण रहते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, गर्भपात होते हैं। इनका प्रेम सम्बन्ध किसी नीच स्त्री से होता है, जिससे धन और मान की हानि होती है। द्विभार्या योग भी सुखकर नहीं होता है।

जब एकादशेश मंगल तुला का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छो होती है। ये लोग अच्छे डाक्टर, वकील, गायनाचार्य अथवा कलाकार होते हैं। इन्हें विदेश यात्रा तथा व्यापार में हानि होती है, प्रेम के मामले में निराशा तथा कष्ट होता है। द्विभार्या योग हो सकता है, स्त्री से अनबन रहती है, बच्चे बुद्धिमान् होते हैं, किसी दुर्घटना या चोट से हानि होती है। बोमारी में खर्चा होता है, कामी होते हैं, किसी उच्च वर्ण की स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रहता है और जब वृष का मंगल हो तो मनुष्य कृषि, दर्जी गिरी, भूमि की नापादि के कार्य में तथा सरकारी नौकरी में सफलता मिलती है। ये लोग पिता के लिये भारी होते हैं, स्त्री को कष्ट रहता है। सत्कर्म में द्रव्य खर्च होता है, रक्त, कफ विकार रहता है। इन्हें जब क्रोध आता है तो पागल हो जाते, गुप्त शत्रु या किसी स्त्री के प्रेम में कष्ट उठाते हैं।

यदि एकादशेश मंगल वृश्चिक का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा किसी विषय में पूर्ण होती है, ये लोग डाक्टर, वकील, डैन्टिस्ट, सरकारी नौकर या कैमिस्टादि होकर कार्य करते हैं। शत्रु दबे रहते हैं, इन्हें अग्नि, शस्त्र तथा विष भय होता है, नन्साल का सुख कम रहता है। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, शरीर रोगी रहता है और उस पर बहुत कुछ धन खर्च होता है, सेना, पुलिस विभाग में प्रगति होती है और जब मंगल मिथुन राशि का होता है तो शिक्षा अच्छी होती है, मनुष्य काव्य तथा काम कला में निपुण तथा चिबल्ला, मजाकिया जैसा होता है। पिता का सुख कम होता है, वह कृपण तथा स्वार्थी, अविश्वासी, आवेशपूर्ण होता है। स्त्री अच्छी होती है और पुत्र चिन्ता रहती है, शरीर दुर्बल होता है, कामी होते हैं, पर स्त्री-रत रहते हैं। हो सकता है कि उनकी स्त्री पर-पुरुषगामिनी हो सकती है। किसी-किसी मनुष्य के फल मिथुन के छठे घर के मंगल होने पर उपर्युक्त फल के बिलकुल प्रतिकूल भी होते हैं।

जिसका एकादशेश मंगल धन का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है, इन्हें व्यापार द्वारा लाभ होता है, ये लोग अपनी धार्मिक वृत्ति के कारण हानि उठाते हैं। इन्हें जलयात्रा में हानि होती है, विवाह में दहेज मिलता है, किन्तु बच्चों का सुख कम होता है, स्त्री व्यभिचारिणी हो सकती है। सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती। शरीर रोगी, रक्तविकार, अर्श, कफादि रोग होते हैं, कुटुम्बियों से शत्रुता रहती है और जब कर्क का मंगल हो तो मनुष्य की शिक्षा बहुत कम होती है, इन्हें खेती तथा अन्य व्यवसायों से लाभ रहता है। ४२ वर्ष तक खूब मेहनत करनी पड़ती है और फिर आयु भर सुख रहता है। स्त्री-बच्चों से अनबन रहती है, स्वयं दुराचारी तथा इनकी स्त्री दुराचारिणी होती है, इनकी माता-पिता से नहीं बनती, इनका गृहस्थ जीवन बड़ा जटिल रहता है, अनेक रोग होते हैं, ये दुर्बुद्धि, पापी, शत्रुओं से पीड़ित तथा इष्ट-मित्रों से कलह रखने वाले होते हैं, जलयात्रा में कष्ट होता है।

जब एकादशेश मंगल मकर का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग पराक्रमी, शूर-वीर, पुलिस, सेना विभाग में पारितोषक तथा पद पाने वाले होते हैं, स्त्री गरीब घर की होती है। पुत्र की सदा चिन्ता रहती है, बड़े भाई से सुख रहता है, कुटुम्बियों से कलह रहती है, जलयात्रा में सुख रहता है फिर भी इन्हें रक्तविकार, रक्तचाप, पित्त, कफ, अर्शादि रोग रहते हैं, विवाह में देर होती है और जब सिंह का मंगल हो तो मनुष्य की शिक्षा कम होती है, ये लोग कारीगर तथा कलाकार होते हैं, एवं क्रोधी, हठी, सत्याग्रही तथा परिश्रमी होते और अन्त तक धन-धान्य पूर्ण होकर सुख से रहते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। द्विभार्या योग हो सकता है। स्त्री से भाई तथा कुटुम्बियों से झगड़ा रहता है। किसी पराक्रम पूर्ण कार्य में यश मिलता है। उपर्युक्त सभी रोग इन्हें हो सकते हैं, ये लोग निर्दय तथा हिंसारत होते हैं।

यदि एकादशेश मंगल कुम्भ का नवम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा कानून, डाक्टरी आदि की होती है, ये लोग तार्किक, प्रबल वक्ता तथा किसी भी परिणाम में शीघ्र पहुँचने वाले होते हैं, मातृ सुख कम रहता है, भ्रातृ सुख रहता है, ये लोग प्रेम विवाह के अनुकूल होते हैं और विदेश यात्रा में अवश्य विधर्मी

लड़की से विवाह या प्रेम सम्बन्ध रखते हैं, कोई-कोई इसी चक्कर में विवाह नहीं करते और कोई-कोई दो-तीन विवाह भी कर लेते हैं। खर्च बहुत करते हैं और जब कन्या का मंगल हो तो उपर्युक्त फलों का बहुत कुछ समावेश रहता है और साथ ही ये लोग शृंगारी, लेखक तथा व्यभिचारी भी होते हैं, निराशावादी होने के कारण किसी से मित्रता नहीं करते, एकान्त में रहते हैं, इनका प्रेम किसी नीच स्त्री से होता है, ये स्नायु पीड़ा के रोगी होते हैं।

जिसका एकादशेश मंगल मीन का दशम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, उसके विचार उच्च होते हैं, ये लोग पुलिस, सेना विभाग में अच्छी प्रगति करते हैं, अच्छे व्यापारी भी हो सकते हैं, पिता से अनवन तथा माता से सुख मिलता है, कीर्ति प्राप्त करते हैं, बच्चों का सुख कम होता है, घर में कलह रहती है। शरीर रोगी रहता है, रक्तविकार, रक्तप्रकोप, अर्शादि रोग होते हैं, जल यात्रा, तैरने में जीवन भय रहता है, स्त्री बीमार रहती है और जब तुला का मंगल होता है, तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे डाक्टर, वकील, कलाकार तथा दूसरों को आज्ञा देने वाले स्थान पर होते हैं। व्यापार में इन्हें हानि होती है, प्रेम सम्बन्ध में निराश रहते हैं, स्त्री से कलह रहती है, द्विभार्या योग हो सकता है, बच्चों का सुख कम होता है, पुत्र चिन्ता रहती है। पैतृक सम्पत्ति से रहित, पर स्त्री से सम्बन्धित, कामी तथा अग-भंग होने का डर रहता है, किन्तु किसी कार्य में यश मिलता है।

जब एकादशेश मंगल मेष या वृश्चिक का एकादश स्थान पर स्वगृही हो तो जातक शूर-वीर तथा प्रतिद्वन्द्वी होता है। शिक्षा पूर्ण नहीं होती है इसलिये व्यापारी, प्रतियोगिता में अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं, ये लोग हठी, उद्योगी तथा क्रोधी होने के कारण जीवन में अपनी उथल-पुथल देखने के पश्चात् अपनी उन्नति देखते हैं, शत्रु सभी दब जाते हैं कृषि कार्य में, पशु व्यापार में लाभ रहता है। इसको स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता क्योंकि इनके साथ झगड़ा रहता है, कुटुम्बियों से कलह रहती है, शत्रु दबे रहते हैं फिर भी अग्नि, विष, चोर, शस्त्र तथा किसी दुर्घटना द्वारा चोट भय रहता है, कभी-कभी साहसी कार्यों में धन तथा यश भी प्राप्त होता है, ४२ वर्षोपरि शरीर में कष्ट रहने प्रारम्भ हो जाते हैं। रक्त-पित्त, मन्दाग्नि रोग हो जाते हैं।

यदि एकादशेश मंगल वृष का द्वादश स्थान में हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, ये लोग कामी तथा लम्पट होते हैं, धनिक घर में विवाह करते हैं, स्त्री कलह रहती या स्त्री मर जाती है, या गर्भपात होते हैं, इन्हें गुप्त शत्रुओं द्वारा हानि होती है सन्तति अधिक नहीं होती, विदेश यात्रा में पर स्त्री गमन करते हैं। विवाह में रुकावटें आती हैं। आधा शीशी दर्द, नेत्र पीड़ा, रक्तविकार, अर्शादि रोग होते हैं। बीमारी में धन खर्च होता है और जब धन का मंगल होता है तो जातक की शिक्षा अच्छी रहती है, उच्च विचार, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों में खर्च करने वाला उत्साही, पुलिस, सेना विभाग में प्रगति करने वाला होता है, स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है, हृद्रोग, उष्णविकार, रक्तचाप, रक्तविकार, अर्शादि रोगों में खर्च करना पड़ता है, प्रवास में रहने वाला, पर स्त्री से भी न तृप्त होने वाला, सदा ऋणी होता है, इसकी स्त्री रोगी तथा गर्भपात युक्त होती है, स्वाभिमानी अधिक होते हैं।

एकादशेश बुध फल

बुध--जिसका एकादशेश बुध सिंह का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी संगीतज्ञ, कलाकार, प्राकृतिक कवि, थियेटरादि में मैनेजर भी होते हैं। चित्त चंचल होने के कारण अपयश पाते हैं, स्त्री अच्छी मिलती है, किन्तु बच्चों का सुख कम होता है। इष्ट-मित्रों से अनबन तथा सुरापी होने से हृदय दुर्बल रहता है और जब वृश्चिक का बुध हो तो मनुष्य का स्वभाव कुछ अच्छा होता है। ये लोग ग्रामीण डाक्टर, कम्पाउण्डर, प्रूफ संशोधकादि होते हैं, इन्हें पराधीन रहकर कार्य करना पड़ता है, शरीर उत्तरायु में रोगी रहता है। कृपण तथा पापरत रहते हैं, अविश्वासी, चालाक, स्त्री-बच्चों को प्रिय, इन्हें चोरी, धोखे तथा नीच के प्रेम और गुप्त रोगों से कष्ट होता है।

जब एकादशेश बुध कन्या का दूसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अड़चनों के बाद पूर्ण होती है। ये बुद्धिमान् लेखक, कवि, गणितज्ञ तथा साहित्यकार होते हैं,इन्हें अपने जीवन में यश प्राप्त होता है किन्तु धन नहीं, धार्मिक तथा सत्कर्मी होते हैं, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी रहते हैं, गुप्त रोगी होते हैं, इष्ट-मित्रों से मिलकर रहते हैं और जब धन का शनि हो तो जातक कम पढ़े होने पर भी विद्वान् सा जंचता है। इन्हें विदेश यात्रा या व्यापार में लाभ रहता है,

अध्यापक वृत्ति से भी लाभ रहता है, स्त्री-बच्चों की चिन्ता कम होती है, धन कष्ट तथा मृत्यु के बाद अपनी कला कृतियों के लिए यश प्राप्त होता है।

यदि एकादशेश बुध तुला का तीसरे भाव में हो तो मनुष्य की स्मरण शक्ति तीव्र होती है, शिक्षा पूर्ण होती है, शृंगारी कविता, अश्लील कहानियों, उपन्यासों, राजनैतिक क्षेत्रों आदि में अच्छी सफलता मिलती है, पर स्त्री रत रहते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख सामान्य रहता है, झूठ बोलते हैं, भाग्योदय ३२ वर्षोपरि होता है। भ्रातृ सुख रहता है और जब मकर का बुध हो तो मनुष्य मन्दबुद्धि, शिक्षा रहित सा होता है। छोटे-छोटे कार्यों से जीविका चलती है, स्त्री-बच्चों, भाई-बहनों का सुख नहीं होता, भाग्य मन्द रहता है। पापी, कुबुद्धि, कुचाली तथा नीच स्त्री के प्रेम से अपयश पाता है।

जिसका एकादशेश बुध वृश्चिक का चतुर्थ स्थान में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर भी पूर्ण नहीं होती, कृषि तथा थोक व्यापार, सट्टे आदि में लाभ रहता है, माता-पिता से सम्बन्ध सामान्य रहता है। इन्हें अपनी शक्ति तथा ज्ञान का घमंड होता है। प्रवास में रहना पड़ता है, स्त्री-बच्चों से अनबन सी रहती है, इन्हें मित्रों से धोखा मिलता है। और जब कुम्भ का बुध हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। विद्याभिमानी, मातृ सुख, पिता से कलह रखते हैं। धनिक घर विवाह होता है, किन्तु स्त्री से अनबन रहती है, बच्चों का सुख रहता है। द्रव्य चिन्ता रहती है, मित्रों से कष्ट, शत्रुओं से भय, चंचल वृत्ति, पाप रत, किसी स्त्री द्वारा विश्वास घात होता है।

जब एकादशेश बुध धन का पंचम स्थान में हो तो जातक तत्त्व को समझने वाला, बात को गुप्त चालाकी से करने वाला, अपूर्ण शिक्षित होता है, नौकरी में प्रगति होती है। स्त्री चिव्वल्लि, निर्लज्ज, बच्चों से कलह रखने वाली, दूसरों को अपनी चालाकी से कष्ट देने वाली, गृहद्वेषी, पररत, बनावटी भक्ति दिखाने वाली, कुल्टा, दुष्टा होती है, मेहमानों से जलती है और जब मीन का बुध हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ज्योतिषी, हस्तसामुद्रिक, गणित भाषा का अच्छा ज्ञान हो सकता है। ये स्त्री के शुभ-चिन्तक नहीं होते, जल-यात्रा या विदेशी व्यापार से लाभ उठाते हैं।

यदि एकादशेश बुध मकर का छठे घर में हो तो जातक मन्द बुद्धि तथा अशिक्षित होता है। नन्साल का सुख नहीं होता, शत्रु, विष, जल से प्राण भय रहता है, व्यर्थ पाप कार्यों में खर्च होता है। ये लोग कृपण, चालाक तथा स्त्री-बच्चों के सुख से रहित होते हैं। किसी नीच स्त्री के प्रेम सम्बन्ध से अपयश प्राप्त होता है और जब मेष का बुध हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, चालाक, चंचल, कानून के नियन्त्रण से रहित, लेखक, कवि आदि होते हैं। स्त्री-बच्चों से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, बाल्यकाल में मियादि ज्वर, स्नायु पीड़ा, चेचकादि होते हैं, बड़े होकर मन्दाग्नि, अजीर्ण, अण्डकोषवृद्धि रोग से पीड़ित हो सकते हैं। कुकर्मी, दुष्ट संगति, क्षोभित तथा पाप रत चित्तवृत्ति रखने वाले होते हैं।

जिसका एकदशेश बुध कुम्भ का सप्तम स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग छोटी सरकारी नौकरी अथवा छोटे-छोटे व्यापार करके माता-पिता का सुख रहता है, विवाह होता है, किन्तु स्त्री से सदा कलह रहती है। बच्चों पर पूर्ण ताड़ना रहती है, फिर भी बच्चे बिगड़ जाते हैं। धन संकट तथा शरीर कष्ट रहता है। जलयात्रा में जीवन भय रहता है, शत्रुभय, इन्द्रिय लोलुप तथा कुबुद्धि होता है और जब वृष का बुध हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग क्लर्क, छोटे व्यापारी, चलचित्त, श्रृंगारी, सड़क में लड़कियों को छेड़ने वाले, अपयशी होते हैं, स्त्री अच्छी मिलती है, बच्चे चतुर होते हैं, कामवासना प्रबल होती है, गुप्त रोग होते हैं।

जब एकादशेश बुध मीन का अष्टम घर में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग उच्चविचार, चपल, खिलाड़ी, गप्पी तथा समयानुकूल बदल जाने वाले, स्वाभिमानी तथा छलिया प्रकृति के होते हैं, विवाह सुन्दर स्त्री से होता है, उसको भी धोखा दिये बिना नहीं रहते, बच्चे सुन्दर तथा चंचल होते हैं और जब मिथुन का बुध हो तो शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है, स्त्री साधारण पढ़ी-लिखी, रोगी, बच्चों के सुख से सुखी होती है। सरकारी नौकरी के साथ दूसरी आय भी रहती है। मनुष्य सच्चाई पसन्द तथा कामुक होता है।

यदि एकादशेश बुध मेष का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा प्रयत्न करते रहने पर रुक-रुक कर पूर्ण होती है। शिक्षक, प्रोफेसरादि का व्यवसाय फलता है, धर्म-कर्म में अधिक प्रवृत्ति नहीं होती, पिता का सुख कम, माता से

नहीं बनती, यात्रायें होती हैं, विवाह देर में होता है। बच्चों का सुख रहता है और जब कर्क का बुध होता है तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, व्यापार में अड़चनें पड़ती हैं, पिता यदि जीवित रहे तो अनबन रहती है। स्त्री सुख कम रहता है, बच्चों का सुख रहता है, धार्मिक वृत्ति होती है, फिर भी धर्म नहीं कर पाते।

जिसका एकादशेश बुध वृष का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग साहित्य का अच्छा ज्ञान रखते हैं, लेखन कला, सम्पादक, सरकारी नौकरी तथा व्यापार में अच्छी प्रगति करते हैं। माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति का सुख रहता है, स्त्री-बच्चों का सुख पूर्ण नहीं होता, पर-स्त्री से प्रेम रत रहने से अपयश मिलता है। जलयात्रा में कष्ट होता है और जब सिंह का बुध होता है तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग गणित, ज्योतिष आदि जानने वाले, छोटे अध्यापक, ग्राम शिक्षक तथा सरकारी क्लर्क तक होते हैं, किसी मित्र की सहायता से उन्नति करते हैं, पिता से प्रेम रहता है, माता से अनबन रहती है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता, समाज में आदर होता है।

जब एकादशेश बुध मिथुन या कन्या का स्वगृही एकादश स्थान में हो और सूर्य भी (साथ हो) तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, सरकारी नौकरी में पदाधिकार प्राप्त होता है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। विदेश यात्रा होती है, वहाँ किसी विधर्मी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होता है, जीवन सुखी रहता है, हस्तरेखा, कविता, नाटकादि का शौक होता है, ये लोग उपकारी, दयालु, मिलनसार तथा साझे के व्यापार में लाभ उठाने वाले होते हैं।

यदि एकादशेश बुध कर्क का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, नौकरी तथा व्यापार में प्रगति साधारण होती है, नीतिज्ञ होते हैं, समझदारी से चलते हैं, धर्म-कर्म में इच्छा कम होती है। जलयात्रा में कष्ट होता है, स्त्री से अनबन रहती, किसी दूसरी स्त्री के प्रभाव में रहते हैं, गुप्त शत्रुओं से हानि तथा नन्साल सुख नहीं होता और जब बुध तुला का हो तो शिक्षा अच्छी होती है, स्वभाव श्रृंगारी, चपल होता है, अपनी स्त्री के अतिरिक्त पर-स्त्री से अधिक प्रेम होता है, धन मिलता है, कुकर्म में खर्च

होता है। शत्रु दबे रहते हैं, नन्साल से सुख मिलता है। अग्नि या किसी दुर्घटना से चोट भय रहता है।

एकादशेश गुरु फल

गुरु—जिसका एकादशेश गुरु वृष का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, इनकी उन्नति ३२ वर्षोपरि होती है, सरकारी नौकरी अच्छी रहती है, स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानी होती है, बच्चों का सुख रहता है, किसी स्त्री से धन भी प्राप्त होता है, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति रहती है, जल यात्रा में कष्ट होता है, विद्वानों का सत्संग होता है, स्त्री को कष्ट, स्वयं को शत्रु भय रहता है, कवि, कलाकार, संगीतज्ञ हो सकते हैं, किन्तु धन की कमी रहती है और जब कुम्भ का गुरु हो तो शिक्षा कम होती है, फिर भी व्यर्थाभिमान रहता है, स्वभाव अच्छा नहीं होता, स्त्री गम्भीर, झगड़ालू प्रकार की होती है, फिर भी इन्हें वैज्ञानिक या अन्य कार्यों के लिए थोड़ा हर्ष प्राप्त होता है, बच्चों का सुख रहता है, उत्कर्ष में अड़चनें आती हैं, यदि विदेश यात्रा हुई तो विजातीय स्त्री से प्रेम सम्बन्ध में अपयश मिलता है, ये लोग कृपण, उदार तथा दाँत रोग से पीड़ित रहते हैं।

जब एकादशेश गुरु मिथुन का दूसरे भाव में हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी व्यापार में अच्छी धन राशि कमाते हैं, सभी कार्यों में कायदे-कानून के वर्तने से इष्ट-मित्रों में सत्कार पाते हैं और कभी आवेश पूर्ण कार्यों के लिए कष्ट भी उठाते हैं, ये लोग जिस लड़की को चाहते हैं, उससे विवाह नहीं कर पाते, काव्य, कलाकृतियों तथा साहित्य से प्रेम होता है, पिता से अनबन तथा शत्रुओं से त्रास मिलता है, शरीर में रोग होते रहते हैं और जब मीन का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, मनुष्य दयालु, उदार, परोपकारी, उद्योगी, प्रतिष्ठित, दानी तथा समाज में आदर पाने वाला, सट्टे, रेसादि में धन लगाने वाला, द्विभार्या योग से युक्त होता है, किसी स्त्री-संसर्ग से अपयश मिल सकता है, पैतृक सम्पत्ति या पोष्य पुत्र के रूप में धन, जायदाद की प्राप्ति होती है, व्यापार या सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति होती है, पदाधिकार प्राप्त होता है, कुटुम्बियों का सहयोग रहता है, दूसरे विवाह से सन्तति सुख भी प्राप्त हो जाता है।

यदि एकादशेश गुरु कर्क का तीसरे स्थान में हो तो जातक अधिकतर पूर्ण रूप से सुशिक्षित होते हैं, ये लोग सरकारी नौकरी छोड़कर भी स्वतन्त्र व्यवसाय करने वाले होते हैं, भ्रातृ कलह रहती है, पैतृक सम्पत्ति के लिये झगड़ा होता है, ये लोग काम, कला में निपुण कलाकार भी हो सकते हैं, इन्हें सट्टे, रेस, लाट्री आदि से भी धन प्राप्त हो सकता है, देश-विदेश में इन्हें धन तथा ऐश्वर्य प्राप्त होता है, जल यात्रा से लाभ होता है, विवाह में धन मिलता है, समाज में आदर मिलता है, धर्म-कर्म में रुचि रहती है, तीर्थ यात्राएँ होती हैं और जब मेष का गुरु हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी विद्वान् का साथ करने वाला, सरकारी नौकरी या अन्य व्यवसाय से धन तथा यश प्राप्त करने वाला, भ्रातृ सुख से सुखी होता है, विवाह देर में होता है, किन्तु इसकी इच्छा की पूर्ति हो जाती है, इनके सम्बन्धी ही इनकी उन्नति में बाधक रहते हैं, यात्राएँ होती हैं।

जिसका एकादशेश गुरु सिंह का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग सरकारी नौकरी में पदाधिकार प्राप्त कर, जमीन, बाग आदि बनाकर सुन्दर मकान में सुख से जीवन व्यतीत करने के इच्छुक होते हैं, जो कि ४२ वर्षोपरि पूर्ण हो जाती है, माता-पिता, बहन-भाई, इष्ट-मित्र सभी का सुख रहता है। धार्मिक कार्यों, तीर्थ यात्राओं तथा उत्सवों में प्रेम से खर्चा होता है, स्त्री बच्चों का सुख रहता है, वृद्धावस्था में कफिलादि रोग होते हैं और जब वृष का गुरु हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, कवि, लेखक, नाट्य-कारादि होने के साथ-साथ सरकारी नौकरी में कुछ प्रगति होती है, खेती, जल-पदार्थों से लाभ होता है, तैरने तथा विदेश यात्रा में कष्ट होता है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, पिता की सम्पत्ति प्राप्त होती है, माता से कम बनती है, किसी स्त्री से शत्रुता होती है, धन तथा मानहानि होती है। सम्पत्ति तथा सन्तति में से एक सुख अवश्य रहता है, किसी दुर्घटना से चोट का भय रहता है।

जब एकादशेश गुरु कन्या का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी ये लोग व्यवहार कुशल, कार्य दक्ष तथा स्वाभिमानी होते हैं, सरकारी नौकरी की अपेक्षा व्यापारादि में अच्छी प्रगति करते हैं, कितनी अड़-चनों के बाद परिस्थिति सुधर जाती है, विवाह होता है, पुत्र चिन्ता रहती है, कन्यायें बहुत होती हैं, यदि पुत्र हुआ भी तो अपयशी होता है, इनकी अपनी

स्वयं की प्रकृति व्यभिचारी होती है, वायु रोग से मध्यायु से ऊपर रोगी हो जाते हैं, इनके जिगर में खराबी आ जाने से भोजन न पचने की शिकायत रहती है और जब मिथुन का गुरु होता है, तो मनुष्य सुशिक्षित, लेखक, शिक्षक, सम्पादक, कवि, दार्शनिक, ज्योतिषी तथा सुयोग्य साहित्यिक होता है, पिता से अनबन रहती है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, किन्तु बड़े होने पर वही बच्चे पिता की बात नहीं पूछते, इष्ट-मित्रों से त्रास मिलता है।

यदि एकादशेश गुरु तुला का छठे घर में हो तो मनुष्य की शिक्षा रुक-रुक कर किसी विषय में पूर्ण हो जाती और वे उसी से अपना जीवन-यापन करते हैं। नन्साल का सुख बहुत कम होता है, पानी तथा विषका भय रहता है, तैरने, जल-यात्रा में जीवन-संकट उपस्थित होता है। स्त्री धनिक घर की होती है, तो अनबन रहती है, बच्चों से व्यवहार अच्छा रहता है, डाक्टर वैद्य, वकीलादि होने के कारण मिलनसार होते हैं, खर्चा अधिक करना पड़ता है, इसलिये धन-लिप्सा में लगे रहते हैं, ये किसी स्त्री के प्रेम सम्बन्ध में लगे रहते, में अपयश मिलता है, जब कर्क का गुरु हो तो शिक्षा अच्छी होती है, इन्हें जन-साधारण से धन तथा यश की प्राप्ति होती है, मामा से सुख प्राप्त होता है, देश-विदेश के व्यापार से लाभ होता है। स्त्री योग्य मिलती है, सन्तान में कन्यायें अधिक होती हैं, फिर भी पर-स्त्री से प्रेमालिंगन के कारण अपयश मिलता है और कितने ही रोग लग जाते हैं। इष्ट-मित्रों की सहायता से वह कलंक धो दिया जाता है।

जिसका एकादशेश गुरु वृश्चिक का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, ये लोग झगड़ालू प्रकृति के घमंडी होते हैं और चालाकी से औरों को लड़ाकर आप स्वयं बच जाते हैं, विवाह होता है, तो स्त्री से कलह रहती है, उसका वियोग सहन करना पड़ता है, सन्तान सुख नहीं के बराबर ही होता है, ये लोग अधिकतर अविवाहित ही रहकर जीवन व्यतीत करते हैं, व्यापार में लाभ रहता है, यात्रा में दुर्घटना हो सकती है, किन्तु बच जाते हैं, भ्रातृ सुख रहता है। गप्पी तथा कामी होते हैं, अनेक गुप्त रोगों के रोगी होते हैं और जब सिंह का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग कुशल डाक्टर, यशस्वी, वकील, श्रद्धेय अध्यापक, माननीय न्यायाधीश तथा पहुँचे हुए विद्वान् होकर धन और

कीर्ति का लाभ करते हैं। स्त्री इच्छानुकूल पाकर पूर्ण विवाहितानन्द को प्राप्त
होते हैं, सन्तान सुख रहता है, ये लोग मिलनसार तथा इष्ट-मित्र, भ्रातृ सुख से
सुखी होते हैं।

जब एकादशेश गुरु धन का अष्टम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा बड़े
प्रयत्न द्वारा ही पूर्ण होती है, नहीं तो अपूर्ण रहती है, देश-विदेश के व्यापार से
लाभ रहता है, तैरने, जल-विनोद तथा विदेश यात्रा में कष्ट होता है, खर्चा अधिक
होता है। ये लोग स्वतन्त्र प्रकृति, सौन्दर्य के प्रेमी, कुछ दार्शनिक स्वभाव के
होते हैं,इसलिए जीवन में उन्नति कम करते हैं, स्त्री अच्छी तथा धनिक मिलती
है, बच्चों से विशेष प्रेम नहीं होता। स्त्री की मृत्यु होते ही ये लोग सभी कार्य
छोड़ देते हैं और जगल में जाकर अपना शान्त जीवन व्यतीत करते हैं और
जब कन्या का गुरु हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भी चतुरता या
धरोवर धन से उन्नति करता है, स्त्री-बच्चों का सुख सामान्य रहता है, माता से
विचार-विनिमय नहीं हो पाता। शरीर रोगी रहता है, इसलिये धन का खर्च
अधिक रहता है, कुटुम्बियों की सहानुभूति रहती है, किन्तु सहायता कम करते
हैं। जल यात्रा में कष्ट होता है। पैतृक सम्पत्ति का पूर्ण सुख नहीं होता है।

यदि एकादशेश गुरु मकर का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा
पूर्ण नहीं होती, फिर भी मनुष्य दूसरों पर हुकूमत करना चाहता है, ये लोग
तैरने वाले, जलविनोदी तथा जलयात्रा, तीर्थयात्रा करने वाले होते हैं।
देश-विदेश की वस्तुओं के व्यापार से लाभ उठाते हैं, नौकरी से जीविका चलती
है। स्त्री-सुख होता है, पुत्र-चिन्ता बनी रहती है। पुत्र यदि जीवित रहे तो
पिता को दुख देने वाले होते हैं। भ्रातृ सुख रहता है। कन्यायें होती हैं और
जब तुला का गुरु हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग कुशल लेखक, प्रकाशक
तथा सम्पादक होते हैं। डाक्टर, वकील, कलाकार तथा साहित्यिक हो सकते
हैं। ये लोग मिलनसार, इष्ट-मित्रों से युक्त होते हैं, इनका विवाह धनिक घर में
होता है, पुत्र सुयोग्य उत्पन्न होते हैं, ये लोग परोपकारी, उदार, दयालु, धार्मिक,
तीर्थयात्रा करने वाले, वृद्धावस्था में रोगी हो जाते हैं और भाई साथ छोड़ देते हैं।

जिसका एकादशेश गुरु कुम्भ का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा
अच्छी होती है। ये लोग वैज्ञानिक रूप में अच्छे आविष्कार कर सकते हैं।

स्वतन्त्र विचार होने के कारण प्रगतिशील, मित्रों से सहायता पाते हैं। सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है। विदेशी वस्तुओं के व्यापार से लाभ हो सकता है। ज्योतिषादि में अच्छा ज्ञान होने पर भी स्वाभिमानी होने के कारण लाभ नहीं उठा पाते, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है। स्त्री रोगी रहती है। पैतृक सम्पत्ति नहीं होती, पिता का सुख नहीं होता। पुरुषार्थ पर जीवन चलता है और जब वृश्चिक का गुरु हो तो शिक्षा साधारण होती है, छोटी नौकरी, छोटे व्यवसाय करने पड़ते हैं, पुलिस, सेना विभाग में प्रगति अच्छी होती है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, कुटुम्ब से मेल रहता है, माता से लाभ रहता हैं, कामी प्रकृति के होने के कारण किसी स्त्री के प्रेम में अपयश मिलता है। शत्रु दबे रहते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है।

जब एकादशेश गुरु मीन या धन का स्वगृही एकादश स्थान में विद्यमान हो तो जातक सुशिक्षित, कवि, लेखक तथा कलाकर, राज्यपदाधिकारी अथवा कुशल व्यापारी वर्ग के प्रधान होते हैं और सदा धन-धान्य से पूर्ण रहते हैं। दयालु, उदार, दानी तथा परोपकारी, धार्मिक कार्यों में खर्च करने वाले, देश-विदेश की यात्रा से सुख पाने वाले, प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं। शुभ विवाह से युक्त होते हैं, किन्तु सन्तान चिन्ता बनी रहती है। पुत्र यदि जीवित रहे तो पिता को कलंकित करते हैं, बड़े भाई का सुख नहीं होता। यदि वह जीवित रहे तो उसका पालन करना पड़ता है। छोटे भाई का सुख रहता है।

यदि एकादशेश गुरु मेष का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा बहुत कम होती है। किन्तु वह बुद्धिमान् होता है, समझाई हुई बात को याद रखता है, छोटी सरकारी नौकरी या अन्य छोटे कार्यों द्वारा जीवन निर्वाह करता है। प्रगति विशेष आजीवन नहीं होती, स्त्री रोगी तथा पुत्र-चिन्ता बनी रहती है, पैतृक सम्पत्ति जायदाद के रूप में मिलती है, फिर भी उसका लाभ कम उठाते हैं। बीमारी पर काफी खर्च करना पड़ता है। शत्रुओं की चिन्ता रहती है, हानि होती है। कष्टमय यात्रायें होती हैं। स्वाभिमान की मात्रा अधिक होने के कारण मिलनसार नहीं होते, जीवन साधारण ही रहता है और जब गुरु का होता है तो जातक की विद्या अधूरी रहती है, वह मन्द-बुद्धि, पाप रत रहता है, ये लोग आय से अधिक खर्च करने वाले, स्वार्थी,

कृपण तथा ऋणी होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है। पुत्रों की चिन्ता रहती है, जल-विनोद, तैरने, नौका-विहार में प्राण भय रहता है। नजला, जुकाम, कफ का रोग होता है। बिमारी पर धन खर्च होता है। किसी कुलटा के प्रेम में अपयश मिलता है, तथा धन की हानि होती है, माता से अनबन रहती है। पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता।

एकादशेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका एकादशेश शुक्र कर्क का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा साधारण होती है, व्यापार या सरकारी नौकरी में प्रगति कुछ कम होती है, ये लोग शृंगारी, कवि, लेखक, नाट्यकार, स्त्रीपात्र का अभिनय दिखाने वाले, अच्छे कलाकार, देखने में सुन्दर, पर-स्त्रियों को आकर्षित करने वाले, मधुरवाणी, लज्जा युक्त, प्रेम विवाह रत होते हैं। इनको विवाहितानन्द अच्छा मिलता है। मदिरापानादि के कारण तथा अन्य स्त्री रति के कारण गुप्त रोग, धातु, वीर्य सम्बन्धी प्रमेहादि होते हैं। और जब धन का शुक्र हो तो जातक को शिक्षा पूर्ण नहीं होती। फिर भी ये कविता तथा अन्य कलापूर्ण कार्यों में अच्छा नाम, धन तथा यश प्राप्त करते हैं। दो प्रकार से धन कमाते हैं, विवाह देर में होता है, तब तक पर-स्त्रियों से मनोविनोद करते हैं, और किसी वृद्धा से, उससे धन प्राप्ति के लिए प्रेम रत रहते हैं, गुप्त रोग होते हैं। शत्रु भय रहता है, पदवृद्धि में रुकावटें आती हैं, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, कवि, लेखक के रूप में कीर्ति पाते हैं।

जब एकादशेश शुक्र सिंह का दूसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, उसे गाने, नाचने तथा कविता का प्राकृतिक गुण प्राप्त होता है। नौकरी में अच्छी प्रगति करता है, पैतृक सम्पत्ति का सुख कम प्राप्त होता है। धन लिप्सा के कारण रेस, लाट्री, सट्टा आदि खूब लगाते हैं, मिलन-सार होने के कारण समाज में, मित्रों में आदर पाते हैं, पर-स्त्रियों को आकर्षित करने में चतुर होते हैं, उसका विवाह शुभ घर में होने से धन, प्रसन्नता तथा कीर्ति प्रदान करता है, सन्तान की चिन्ता रहती है, धातु पीड़ा रहती है, और जब मकर का शुक्र हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी लेखन कला प्रवीण होते हैं, सम्पादकीय तथा सत्यालोचन से यश पाते हैं। स्त्री सुख कम होता

है, सन्तान में लड़कियाँ अधिक होती हैं, अनेक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध होता है। व्यभिचारी प्रकृति है, किसी कुलटा के सम्बन्ध में धन तथा कीर्ति की हानि होती है, द्विभार्या योग होता है।

यदि एकादशेश शुक्र कन्या का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ज्योतिष, सामुद्रिक शास्त्र, कविता आदि का शौक होता है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती, है भ्रातृ सुख कम होता है, ४० वर्षोपरि भाग्योन्नति होती है। यदि विवाह हुआ तो स्त्री की चिन्ता रहती है। ये लोग जाति-पाँति बन्धन मुक्त विवाह पसन्द करते हैं, पत्नी वियोग, पुर्नविवाह तथा किसी नीच घराने की स्त्री से प्रेम सम्बन्ध में अपयश पाते हैं। गुप्त रोगों के कारण कष्ट उठाते हैं, और जब कुम्भ का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग कला-कौशल के कार्यों से लाभ उठाते हैं विवाह मध्यावस्थोपरि होता है। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, फिर भी अन्य स्त्री प्रेम में रति रहती है, उससे धन मिलता है, इसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति धीरे-धीरे हो हो जाती है। ये लोग आलसी तथा रोगी होते हैं।

जिसका एकादशेश शुक्र तुला का स्वगृही चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग श्रेष्ठ कवि, लेखक तथा गायक, शृंगारी होते हैं। साहित्यिक पुस्तकों, स्टेशनरी आदि से लाभ पाते हैं, इष्ट-मित्रों से युक्त होते हैं। माता से सम्बन्ध अच्छा नहीं रहता, विवाह अच्छे घर होता है, किन्तु स्त्री सुन्दर नहीं होती, द्रव्य लाभ, सन्तान सुख रहता है, विवाह के बाद भाग्य में उन्नति होती है और जब मीन का शुक्र होता है, तो शिक्षा अच्छी होती है, विचार उच्च होते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति होती है, शत्रु दबे रहते हैं, माता-पिता से सुख मिलता है, सवारी तथा जलयात्रा एवं पैतृक सम्पत्ति सुख रहता है। द्विभार्या योग होता है, बच्चों का सुख रहता है, इसे अपने इष्ट-मित्रों द्वारा ही धोखा मिलता है। ये लोग पर स्त्री प्रेम में विकल रहते हैं।

जब एकादशेश शुक्र वश्चिक का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा किसी न किसी रूप में पूर्ण होती है। सरकारी नौकरी या विज्ञान-सम्बन्धी कार्यों में धन और यश प्राप्त करते हैं, विवाहित सुख कम होता है। प्रथम स्त्री से

झगड़ा या कलह रहती है, उसकी मृत्यु पर दूसरा विवाह अधिक सुखकर होता है, पुत्र चिन्ता रहती है, कन्यायें अधिक होती हैं, किसी कुलटा के प्रेम में अपयश तथा धन मान की हानि होती है और जब मेष का शुक्र हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, फिर भी बुद्धिमानों जैसी बातें कर अनेक व्यवसायों द्वारा धन प्राप्त करते हैं। विवाह होता है, स्त्री से प्रेम रहते हुए भी अन्य स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं, गुप्त रोग होते हैं, वेश्यागमन से धन तथा यश की हानि होती है। बच्चों में कन्यायें अधिक होती हैं, घर की चिन्ता से रहित रहते हैं, काम वासना प्रबल होती है।

यदि एकादशेश शुक्र धन राशि का छठे घर में हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी ये लोग बड़े कलाकार, चित्रकार, कवि, प्राकृतिक सौन्दर्य होने के कारण अनेक पारितोषिक धन तथा कीर्ति प्राप्त करने वाले होते हैं। नन्साल का सुख कम होता है, स्त्री-बच्चों से झगड़ा रहता है, सुख कम होता है, तैरने तथा जलयात्रा में कष्ट होता है। प्रवास में गुप्त शत्रुओं से त्रास होता है और जब वृष का शुक्र होता है तो शिक्षा अच्छी होती है। शृङ्गारी कविता, कहानियों, नाटकों आदि में प्रगतिशील रहते हैं, स्त्री सुन्दर मिलती है, फिर भी विचार-विनिमय नहीं रहता है। दोनों कामुक होते हैं, दोनों पर प्रेम रत रहते हैं, मामा का सुख नहीं होता, जलवस्तुओं से लाभ होता है। फिर भी धातु विकार, प्रमेहादि रोगों में धन खर्च करना पड़ता है, ऋण लेना पड़ता है। किसी स्त्री की शत्रुता से हानि तथा अपकीर्ति प्राप्त होती है।

जिसका एकादशेश शुक्र मकर का सप्तम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। फिर भी ये लोग थोक व्यापार में देश-विदेश से अच्छा धन कमाते हैं, ये लोग विवाह केवल विषय-वासना तृप्ति तथा धन के लालच से करते हैं। प्रेम के लिये नहीं करते, पर स्त्री प्रेम से निराश रहते हैं। किसी बड़ी आयु वाली स्त्री के प्रभाव में रहकर पतन को प्राप्त होते हैं। यदि विदेश यात्रा हुई तो विजातीय स्त्री के प्रेम सम्बन्ध में धन और यश की हानि उठाते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है और जब मिथुन का शुक्र हो तो स्त्री की शिक्षा पुरुष से अधिक होती है। और पुरुष कुशल व्यापारी, चतुर कलाकार, यशस्वी कवि या गानाचार्य होता है, स्त्री सुन्दर तथा पति को अपने

प्रभाव में रखने वाली होती है। द्विभार्या योग हो सकता है और पुरुष अविवाहित भी रह सकता है, ये लोग अत्यधिक कामासक्त तथा व्यभिचारी होते हैं।

जब एकादशेश शुक्र कुम्भ का अष्टम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं हो पाती और अनेक कलाकृतियों, ज्योतिषादि से जीवन-यापन करता है। तैरने तथा जलयात्रा करने में प्राण संकट उपस्थित होता है। इनका विवाह देर में होता है, स्त्री अच्छी मिलती है, फिर भी अत्यन्त कामी होने के कारण पर-स्त्रियों के प्रेम में रत रहते हैं। जिनमें किसी एक से धन की प्राप्ति होती है, ये लोग अफीमची, आलसी तथा पैतृक सम्पत्ति को नष्ट करने वाले होते हैं। और जब कर्क का शुक्र हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग मधुर भाषी, शृङ्गारी, कामी तथा पापी होते हैं। विदेश व्यापार में हानि होती है, स्त्री झगड़ालू मिलती है, सन्तान सुख कम होता है। इनका प्रेम सम्बन्ध दो-तीन स्त्रियों से होता है, मदिरापानादि के कारण इन्हें धातु क्षीण, प्रमेहादि रोग होते हैं। उसमें धन और कीर्ति की हानि होती है। ये लोग विदेश यात्रा के समय विधर्मी स्त्री के सम्बन्ध में आकर पतन को प्राप्त होते हैं।

यदि एकादशेश शुक्र मीन का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा कुछ अड़चनों के बाद पूर्ण होती है, सरकारी नौकरी तथा काव्य-नाटकादि लेखन कला में अच्छी प्रगति होती है, ये लोग धार्मिक विचार, सत्कर्मी, दयालु, उदार, दानी, तीर्थव्रतों के करने वाले, सुन्दर स्त्री तथा बच्चों के सुख से सुखी होते हैं। भ्रातृ सुख अच्छा होता है। स्त्री स्वाभिमानी तथा प्रभावशाली होती है, घर की बागडोर हाथ में रखती है, नहीं तो कलह करती है, विदेश यात्रा में ये लोग पर-स्त्री प्रेम में पथभ्रष्ट होकर अपयश को प्राप्त होते हैं और जब शुक्र सिंह राशि का हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये लोग गायन-वादन, नाट्य, काव्यादि कलापूर्ण कार्यों में अच्छा धन तथा कीर्ति प्राप्त करते हैं। ये लोग अन्य स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए अधिक सुन्दर होते हैं, इनका अपने विवाह से ही प्रगति होती है, सन्तान चिन्ता रहती है, साहसी कार्यों में लाभ तथा वाहन कष्ट होता है।

जिसका एकादशेश शुक्र मेष राशि का दशम स्थान में विद्यमान हो तो जातक यदि अनेक आने वाली अड़चनों से न घबराये तो शिक्षा अवश्य पूर्ण होती है और ये लोग डाक्ट्री, वकालत, पुरातत्त्व, खान, जंगलादि के कार्य में

धन और कीर्ति पाते हैं। इसके साथ-साथ कोई अन्य कलापूर्ण कार्यों में भी अच्छी जानकारी रखते हैं, ये लोग उदार तथा मिलनसार होते हैं। पिता यदि जीवित रहें तो उनसे झगड़ा रहता, माता तथा उसके धन का पूर्ण सुख रहता है, स्त्री-बच्चों का परदेश में भी सुख रहता है, इनका गुप्त प्रेम सम्बन्ध अन्य स्त्रियों से भी होता है। किसी स्त्री के प्रेम में इन्हें धन, कीर्ति की हानि होती है और जब कन्या का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये लोग कविता, ज्योतिष, गायन, चित्रकारी आदि कलापूर्ण कार्यों के जानने वाले होते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति बहुत कम होती है, जीवन दुखी रहता है, स्त्री सुख नहीं होता, यदि विवाह हो भी जाय तो स्त्री जीती नहीं, यदि जीती रही तो कलह रहती है, किसी नीच स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रहता है। द्विभार्या योग भी हो सकता है। माता-पिता से विचार-विनिमय नहीं होता, इसीलिए उनकी सम्पत्ति का सुख नहीं होता, जीवन दुखी ही रहता है।

जब एकादशेश शुक्र वृष या तुला का स्वगृही एकादश भाव में विद्यमान हो तो जातक की शिक्षा सब तरह से पूर्ण होती है, कोई अपूर्ण शिक्षित भी मिलते हैं, ये लोग नौकरी, व्यापार तथा अन्य व्यवसायों में अच्छी प्रगति करते हैं और खर्च करने में भी तेज होते हैं। गायन, कविता, नाटक आदि में स्त्री पात्र का पाठ अच्छा करते हैं। स्वार्थी तथा निश्चिन्त होते हैं। बड़े भाई का सुख रहता है। उसे ठगते रहते हैं। विवाह होता है, कन्यायें अधिक होती हैं, अस्थिर प्रकृति होती है। अभिमानी तथा पुत्र चिन्ता से चिन्तित होते हैं। अन्य स्त्रियों पर आसक्त रहते हैं और बिना खर्च किये ही प्रधान पद चाहते हैं, घर वालों से व्यवहार ठीक नहीं रहता, हर समय लड़ते हैं, अन्धविश्वासी, रूढ़िवादी, धार्मिक होते हैं, खान-पान की शुद्धि नहीं रखते, कामी होते हैं।

यदि एकादशेश शुक्र मिथुन का द्वादश स्थान पर हो तो जातक की शिक्षा पूर्णापूर्ण दोनों प्रकार की पायी जाती है, ये लोग कवि, गायक, नतर्क, चित्रकार, फोटोग्राफर, गल्प लेखक तथा अन्य कलापूर्ण कार्यों में शौक रखने वाले होते हैं, विवाह देर में होता है, तब तक ये कई लड़कियों को दूषित कर चुकते हैं। कामी तथा इन्द्रियलोलुप, व्यभिचारी होते हैं। सरकारी नौकरी में प्रगति करते हैं। इनकी स्त्री से अनबन रहती है। गुप्त रोग धातु सम्बन्धी होते हैं और जब

वृश्चिक का शुक्र हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, कई कार्य करने पड़ते, पर-स्त्री आकर्षण करने के लिए सुन्दर होते हैं, विवाह में देरी होती है, स्व-स्त्री से द्वेष करते हैं, पर-स्त्री के प्रेम में कष्ट, अपमान तथा धन हानि पाते हैं, दूसरा विवाह प्रथम से सुखकर रहता है। सदा ऋणी रहते हैं, प्रवास में दुख होता है। ये लोग गुप्त रोगी, व्यसनी तथा निन्द्य जनों के संसर्ग में रहने वाले होते हैं। पापी होते हैं।

एकादशेश शनि फल

शनि—जिसका एकादशेश शनि मीन का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग सरकारी नौकर होते हैं, सचाई पसन्द होने के कारण ऑफीसरों से कम बनती है, इसलिये विशेष प्रगति नहीं कर पाते, पिता यदि जीवित रहें तो अनबन रहती है, प्रथम तो विवाह नहीं होता, यदि हुआ तो पुत्र जीवन की चिन्ता बनी रहती है। इनको जीवन पथ के पग-पग पर निराशा का सामना करना पड़ता है। इसलिये थके-थके-से उदास रहते हैं, आयु के बढ़ने के साथ-साथ इनके विचार भी धार्मिक होते हैं, कितने ही यौवन में आत्म-हत्या तक कर लेते हैं और जब मेष का शनि हो तो प्रयत्न करने पर भी शिक्षा कम तथा नौकरी में प्रगति बहुत कम होती है, पिता से सदा अनबन रहती है, विवा-हितानन्द प्राप्त बहुत कम होता है, इनका स्वभाव कुछ अच्छा होता है, ये लोग अपने जीवन की उथल-पुथल अपनी आँखों से देखते हैं, स्त्री से द्वेष रहता है, सन्तान तथा धन चिन्ता रहती है। शरीर रोगी तथा कृश रहता है, डिपलोमेट तथा छिद्रान्वेषी होते हैं, रक्तदोषी, भ्रमणशील होते हैं।

जब एकादशेश शनि मेष का दूसरे घर में हो तो जातक की शिक्षा न होने पर भी ये लोग व्यापार तथा अन्य व्यवसाय द्वारा काफी धन तथा यश प्राप्त करते हैं। द्विभार्या योग होता है, सन्तान अधिक होती है, अस्थिर प्रकृति होने के कारण इन्हें खाना-पीना आदि कोई भी काम अच्छा नहीं लगता, सदा असन्तुष्ट से रहते हैं। दूसरों से कार्य पड़ने पर दास बनकर करा लते हैं, किन्तु स्वयं किसी का कार्य नहीं करते, इनका विवाहित जीवन दुखित रहता है, घर में कलह रहती है, माता यदि जीवित हो तो झगड़ा रहता है, बड़े भाई का सुख रहता है, किसी दुर्घटना से या वायु, रक्त, कफादि रोगों से कष्ट होता है और जब वृष का शनि

हो तो मनुष्य कम शिक्षित होने पर भी लेखन कला प्रवीण होता है, ये लोग राजनैतिक, सार्वजनिक कार्य क्षेत्रों में प्रगति करते हैं, इनका प्रारम्भिक जीवन दुखमय रहता है, उत्तरोत्तर उन्नति होती है। ये लोग कठोर तथा हठी होने के कारण प्रतिशोध की भावनागत अपनी ही हानि कर लेते हैं, स्त्री सुन्दर सन्तान कम होती है, इष्ट-मित्रों से दुखित रहते हुए निजी श्रम से उन्नति करते हैं।

यदि एकादशेश शनि वृष का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, छोटी नौकरी, छोटे कार्यों द्वारा जीवन-यापन करना पड़ता है, भ्रातृ सुख कम होता है, विवाह देर में होता है, सन्तान चिन्ता रहती है, पुत्र होकर जीवित बहुत ही कम रहते हैं, भाग्य मन्द रहता है। व्यर्थ कार्यों में खर्च होता है, पराक्रम पूर्ण कार्यों में धन और यश मिलता है, सेना, पुलिस विभाग में देश-भक्त सिपाही होते हैं और जब शनि मिथुन का हो तो जातक की शिक्षा सतत प्रयत्न करने पर भी अपूर्ण ही रहती है, माता-पिता, बहन-भाइयों का सुख रहता है, विवाह में रुकावटें पड़ती हैं, स्त्री को गर्भपात भी होते हैं, पुत्र यदि जीवित रहे तो कहल रहती है, मन्दभागी होते हैं, घर से भागने तथा आत्म-हत्या का योग होता है। व्यर्थ कार्यों में खर्च करते हैं, अकड़कर चलते हैं, अभिमानी तथा एक आँख से दूषित हो सकते हैं, व्यवहार कुशल नहीं होते, खेती-बारी से लाभ होता है।

जिसका एकादशेश शनि मिथुन का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा किसी न किसी विषय में पूर्ण होती है, ये लोग सरकारी क्लर्क, डाक्टर, वकील तथा साहित्यिक उपाधियों से विभूषित होते हैं, माता-पिता यदि जीवित रहें तो बीमार रहते हैं, स्त्री-पुत्र सुख रहता है, शत्रु दबे रहते हैं, मामा का सुख नहीं होता, वे निर्धन होते हैं, शरीर वायु, कफादि से रोगी रहता है, विषाद आदि का प्रयोग शत्रुओं द्वारा हो सकता है। द्विभार्या योग हो सकता है, सरकारी नौकरी में विशेष प्रगति नहीं होती और जब कर्क का शनि हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी रुक-रुककर होती है, खेती होती है, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है, माता से कलह रहती है, पिता से सम्बन्ध अच्छे रहने के कारण पैतृक सम्पत्ति से लाभ रहता है, जल यात्रा में जीवन भय तथा तैरने में डुबकी खानी पड़ती है। शत्रु दबे रहते हैं, किसी स्त्री की शत्रुता से हानि रहती है, शरीर रोगी तथा

स्वभाव चिड़चिड़ा होता है, स्वार्थी, कृपण तथा अपने मतलब के पूरे झूठे होते हैं, धोखा दे सकते हैं, किसी की दुर्बलता का लाभ उठा लेते हैं।

जब एकादशेश शनि कर्क का पंचम भाव में स्थित हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, अस्थिर प्रकृति होने के कारण अनेक व्यवसाय करने पड़ते हैं। स्त्री सुन्दर नहीं होती, उसके पेट में दर्द या और कोई शिकायत रहती है, सन्तान अधिक होती हैं, पुत्र-शोक जीवन में देखना पड़ता है, झगड़ालू होने पर भी मनुष्यों पर प्रभाव रखते हैं, आदर पाते हैं, ३६ वर्षोपरि उन्नति होती है, माता का सुख कम होता है, जल यात्रा में प्राण संकट उपस्थित होता है और जब सिंह का शनि हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग जब गप्प करते हैं तो बेपर की किये जाते हैं और कभी एकान्त शान्त उदास हो बैठे रहते हैं। पिता से अनबन रहती है, स्त्री भार स्वरूप हो रहती है, द्विभार्या योग होता है, इष्ट-मित्रों से नहीं बनती, स्त्री को गर्भपात या कोई और पेट की बीमारी रहती, किसी नीच स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं, स्वपरिश्रम से अपनी परिस्थिति को सँभालते हैं, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता। धन की कमी रहती है।

यदि एकादशेश शनि सिंह का छठे घर में विद्यमान हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। इसलिए लोहे, कोयले, पशुपालन आदि के कार्यों से उन्नति होती है छोटी-छोटी नौकरी करनी पड़ती है, नन्साल का सुख बहुत कम होता है, किसी दुष्ट के द्वारा विष प्रयोग हो सकता है, यदि विवाह हो तो पत्नी अच्छी मिलती है, भ्रातृ सुख कम होता है, मुकदमे में खर्च होता है, किन्तु विजय होती है, किसी दुर्घटना द्वारा चोट, वात, कफादि रोग के कारण अन्तिमावस्था में ऋण लेना पड़ता है और जब कन्या का शनि हो तो शिक्षा साधारण अच्छी होती है, फिर भी इनका जीवन पथ दुख और संकटों से भरा रहता है। ये लोग जीवन से सन्तुष्ट नहीं रहते, एकान्त शान्त उदास होते हैं, विवाहित जीवन और भी अभागी रहता है, इनके बच्चे यदि हुए तो जीवित नहीं रहते। शत्रु दबे रहते हैं, इन्हें हृदय विकार का रोग होता है।

जिसका एकादशेश शनि कन्या का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। फिर भी लोहे, कोयले, काठादि के व्यवसाय में अच्छा धन

कमाते हैं। स्त्री सुन्दर हो तो झगड़ालू होती है, नहीं तो रोगी, कृष्ण वर्ण की होती है, प्रथम स्त्री सुख नहीं होता, दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय होता है, धर्म-कर्म में रुचि होते हुए भी सत्कर्म में अड़चनें आती हैं। शरीर वायु, पित्त, कफ से रोगी रहता है, माता का सुख कम होता है, पैतृक सम्पत्ति नहीं रहती और जब तुला का शनि होता है तो किसी विषय की शिक्षा पूर्ण होती है। लोहे, कोयले, लकड़ी आदि के तथा देश-विदेश के सर्किल, मोटर आदि के थोक व्यापारी, मिल, कारखानों के मैनेजर आदि होकर धन तथा यश पाते हैं, स्त्री सुन्दर, उच्चविचार तथा स्वाभिमानी होती है, घर में पूर्णाधिकार रखती है, जातक का स्वभाव उदार, मिलनसार, धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला, विदेश यात्रा करने वाला होता है।

जब एकादशेश शनि तुला का अष्टम भाव में हो तो जातक को शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग अपनी विद्वत्ता के बल पर जीवन-यापन करते हैं। दीर्घायु होते हैं, माता का पूर्ण सुख रहता है, पिता से दूर रहने में सुख मिलता है, रहन-सहन सादा होता है, स्त्री सुन्दर, बच्चों का पूर्ण सुख रहता है, किन्तु स्त्री की मृत्यु जल्दी होने से वियोगी रहना पड़ता है, दूसरा विवाह नहीं करते। पर-स्त्री से विमुख रहते हैं, कुछ हठी तथा क्रोधी, स्वाभिमानी होते हैं और जब वृश्चिक का शनि हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, स्वभाव क्रोधी तथा प्रतिशोध पूर्ण होता है, विवाह हो तो स्त्री से झगड़ा रहता है, सन्तान कष्ट रहता है, पिता से विचार नहीं मिलते, इष्ट-मित्रों से कम बनती है, व्यवसाय में रुकावटें आती हैं, रुधिर प्रकोप, वात, पित्त, कफादि का रोग होता है, गठिया, अण्डकोष वृद्धि से पीड़ा होती है।

यदि एकादशेश शनि वृश्चिक का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी जातक चुस्त, चालाक तथा परिश्रम द्वारा अपनी स्थिति को सँभाल कर रखता है। ये लोग धर्माधर्म के मध्य में चलने वाले विचित्र प्राणी होते हैं, भाई-बहनों का सुख नहीं होता। यदि विदेश यात्रा हुई तो अवश्य विजातीय युवती के प्रेमालिंगन में धन और यश की हानि उठाते हैं। विधर्मी तक हो जाते हैं, प्रेम में अनेक कष्ट तथा निराशा का सामना करते हैं। मन्दभागी बनकर रहना पड़ता है, फिर भी शत्रु दबे रहते हैं और जब धन का

शनि हो तो जातक विद्या से पूर्ण न होने पर भी एक साथ दो व्यवसायों से धन कमाने वाला होता है, यद्यपि प्रारम्भिक जीवन संकट ग्रस्त रहता है, फिर भी अन्तिमावस्था सुख से व्यतीत होता है, जलयात्रा में कष्ट रहता है, धार्मिक होते हुए भी कृपणता के कारण सत्कर्म नहीं कर पाते, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, शत्रु दवे रहते हैं, स्नायु पीड़ा, वात, कफादि रोग होते हैं।

जिसका एकादशेश शनि धन का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है, ये लोग पुलिस-सेना, वकालत, आवकारी आदि विभाग में अच्छी प्रगति करते हैं। कार्य की अधिकता से खिन्न चित्त रहते हैं। शत्रु दवे रहते हैं, ये लोग उदार, सहायक तथा घर की उन्नति के लिए प्रस्तुत रहते हैं, स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानी होती है, खर्च करते हैं, माता से अनबन रहती है, स्त्री बीमार रहती है और जब मकर का शनि हो तो अड़चनों के बाद शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग सफल स्टेनोग्राफर तथा टाइपिस्ट होते हैं। सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करते हैं, नीच जाति में यश पाते हैं। वैद्यक, डाक्टरी आदि में धन नीच जाति से ही अधिक पाते हैं। विवाहित जीवन सुखकर नहीं होता, घर में कलह रहती है। किसी नीच स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होने के कारण धन तथा यश की हानि होती है, बदनामी होती है, विश्वासघात होता है। ज्योतिष, हस्तरेखादि में शौक रखते हैं, निगम, नोटीफाइडेरिया आदि की सदस्यता प्राप्त हो सकती है। अन्त में दुखी होकर स्त्री वियोग हो जाने पर ये लोग घर से दूर भाग जाते हैं, एकान्तवासी साधु बनकर धार्मिक उपदेश कर लोग को ठगने की प्रवृत्ति हो जाती है।

जब एकादशेश शनि मकर, कुम्भ का स्वगृही होकर एकादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग कवि, लेखक, सम्पादक आदि भी होते हैं, चुनाव जीतते हैं, लोहे, कोयले, काष्ठादि के फर्नीचर, फर्म, बड़े कारखानों के मालिक, देश-विदेश के लोहे के पुर्जों के थोक व्यापारी भी होते हैं। ये लोग अच्छे तार्किक, उदार तथा परोपकारी जीवन के अन्तिम भाग में विशेष उन्नति करने वाले मिलनसार व्यक्ति होते हैं। स्त्री सुन्दर तथा सुशील होती है, बच्चों का सुख कम होता है, विदेश यात्रा में विजातीय स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होने के कारण रोग तथा अपयश मिलता है। यदि भाई हों तो सुख मिलता है,

शरीर में वायु, रक्तविकार, गठिया तथा पेट के निचले भाग में पीड़ा रहती है, अनुचित कर्मरत, विषयाक्त होते हैं।

यदि एकादशेश शनि कुम्भ का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। एम. ए., बी. ए., वकील, डाक्टर, क्लर्क, औफीसर होकर धन तथा यश पाते हैं, माता-पिता का सुख तथा उनकी जायदाद का सुख रहता है। घर से बाहर सुख मिलता है, अपने शहर में नहीं मिलता। विवाह अच्छे घर होता है, स्त्री सुन्दर सुशील होती है, कुटुम्बियों से नहीं बनती, शत्रु दबे रहते हैं, भाग्य परिश्रम से विपरीत चलता हैं। ये कलाकार तथा लेखक भी हो सकते हैं, सन्तान में कन्यायें अधिक, पुत्र चिन्ता रहती है और यदि मीन का शनि हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। वकील, बैरिस्टरादि होकर राजनैतिक क्षेत्र में अच्छा यश प्राप्त करते हैं, कारावास हो सकता है, समाज में अग्रसर रहते हैं, रूढ़िवादी धार्मिक होते हैं, स्त्री सुख प्राप्त होता है। बच्चों की उन्नति नहीं होती, मित्र धोखा देते हैं, जीवन में कष्ट बहुत उठाते हैं। कोई-कोई विवाह रहित रह जाते हैं, बड़े होने पर नेत्र-ज्योति क्षीण होकर कांण हो सकते हैं, किसी स्त्री शत्रुता से विदेश में कष्ट तथा कलंक मिलता है। जलयात्रा कष्टमय रहती है।

द्वादशेश रवि फल

रवि—जिसका द्वादशेश रवि कन्या का लग्नगत हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ऐसा व्यक्ति संगीत, कविता, ज्योतिषादि प्रिय होता है, सरकारी नौकरी में सुख पाता है। विवाह होता है, स्त्री सुख कम होता है, क्योंकि बीमारी के कारण स्त्री का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, स्वयं को नेत्र पीड़ा, रुधिर प्रकोप, पित्तादि रोग होते हैं, यात्रा में धन हानि होती है।

जब द्वादशेश रवि तुला (नीच) का दूसरे घर में हो तो जातक नीच कर्म रत, अशिक्षित सा होता है। वैद्यक आदि में धन तथा यश पाता है, कृपण होने के कारण खर्च नहीं करता, इसलिये गार्हस्थ्य जीवन दुखदायी रहता है, बच्चे योग्य होते हैं, किसी स्त्री द्वारा अपमान होता है, अग्नि, चोर भय रहता है, रुधिर विकार, पित्तादि रोग होते हैं।

यदि द्वादशेश रवि वृश्चिक का तीसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी कैमिस्ट्री आदि में दवाइयां आदि बेचकर, पुलिस, सेना

विभाग में पराक्रम से उन्नति करता है, बड़े भाई का सुख नहीं होता, माता-पिता, स्त्री-बच्चों का विरोधी होता है, विष, अग्नि, शस्त्र भय रहता है, कर्ण रोग होता है, स्त्री द्वारा अपमानित होता है।

जिसका द्वादशेश रवि धन का चतुर्थ स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग उत्साही, कायदे से रहने वाले, आराम-तलब होते हैं, माता-पिता से नहीं बनती, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, यदि विवाह किया तो स्त्री अच्छी मिलती है, ये लोग धार्मिक, उदार, देवाराधक, हठी तथा क्रोधी होते हैं।

जब द्वादशेश रवि मकर का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, व्यापार में प्रगति होती है, पिता की पुत्र से नहीं बनती, सन्तति तथा सम्पत्ति दोनों ही पर्याप्त होते हैं, स्त्री सुख रहता है, ये लोग कृपण, स्वार्थी तथा अमिलनसार होते हैं, चित्त भ्रान्त तथा चिन्ता-ग्रस्त रहता है, महत्त्वपूर्ण कार्य में अपयश होता है।

यदि द्वादशेश रवि कुम्भ का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, ये स्वतन्त्र विचार, मन्त्रवादी, पाक-कार्य-कुशल, सेवक, नौकरी से असन्तुष्ट रहने वाले, शत्रु, अग्नि, विषादि से भयभीत, नन्साल सुख से रहित, चौर कर्म निपुण, दयारहित, स्त्री बच्चों के सुख से रहित, मलिन हृदय होते हैं।

जिसका द्वादशेश रवि मीन का सप्तम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्णापूर्ण दोनों प्रकार की होती है, ये लोग कुशल डाक्टर, वकील तथा साधारण व्यापारी भी होते हैं। स्त्री गुणवान् तथा स्वच्छन्द प्रकृति की होती है, जल वस्तुओं, जल यात्राओं से लाभ रहता है, रक्त-पित्तादि रोग होते हैं, सभी व्यवहार कुशल होते हैं।

जब द्वादशेश रवि मेष उच्च का अष्टम घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती है, किन्तु उसका उपयोग नहीं होता, रक्त-पित्त विकार रहता है, मृत्यु सहसा हो जाती है, खर्च होता है, इनकी स्त्री चरित्रहीन हो सकती है।

यदि द्वादशेश रवि वृष का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, कृषि व्यापार से लाभ रहता है, स्त्री अच्छी मिलती है, भ्रातृ सुख कम रहता है, सन्तान-चिन्ता रहती है। हृदय रोग तथा जल से पीड़ा होती है।

जिसका द्वादशेश रवि मिथुन का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी ये सरकारी नौकरी या अन्य व्यवसायों में लाभ पाते हैं, विवाह देर में होता है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, माता या पिता में से किसी एक का पूर्ण सुख रहता है, ये लोग धार्मिक, मिलनसार, चतुर तथा विनीत होते हैं।

जब द्वादशेश रवि कर्क का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग अच्छे कलाकार, कवि, काल्पनिक, दार्शनिक, नैसर्गिक वस्तुओं से प्रेम करने वाले, मिलनसार, ऐश्वर्य-पसन्द तथा पिता, भाई से अनबन रखने वाले, स्त्री-चिन्ता से युक्त, पर-स्त्री प्रेम में खर्च करने वाले, अधिकारी वर्ग से प्रेम करने वाले, तैरने तथा जलयात्रा प्रिय होते हैं। अस्थिर विचारों के कारण सफलता कम होती है।

यदि द्वादशेश रवि सिंह का द्वादश भाव में स्वक्षेत्री हो तो जातक अशिक्षित होने पर भी स्वयं को विद्वान् समझने वाला घमण्डी होता है। कृपण, स्वार्थी, स्पष्ट वक्ता, अनेक शत्रुजित् होता है, अपने मित्रों की सहायता से किसी वर्ग का प्रधानत्व प्राप्त करता है, और बुरे कार्य के लिये दण्डनीय होता है। यात्रा में कष्ट पाता है, ऋण चिन्ता रहती है, शरीर रोगी होता है, शोक तथा अपयश भी जीवन में होता ही रहता है। रक्त-विकार, पित्त प्रकोप से कष्ट होता है।

द्वादशेश चन्द्र फल

चन्द्र—जिसका द्वादशेश पूर्ण चन्द्र सिंह का लग्नगत हो तो जातक स्वतन्त्र विचारों वाला, दर्शनीय तथा अपूर्ण शिक्षित, जीवन स्तर को उठाने वाला, उत्साही, बुद्धिमान्, स्वाभिमानी, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, सत्तात्मक कार्य द्वारा धन तथा यश प्राप्त करने वाला, मिलनमार, परस्त्री प्रेमासक्त होता है, क्षीण चन्द्र होनेपर मनुष्य स्वच्छन्द, निरुत्साही, चंचल मन, कामासक्त, प्रेम-विवाहरत, गले और पेट के रोगों से युक्त, चलती लड़कियों को छेड़ने वाला, वाचाल, स्त्रीवान्, कन्यायें अधिक होती हैं, जल से भय पाने वाला, कान्तिहीन, विषयासक्त होता है।

जब द्वादशेश पूर्णचन्द्र कन्या का दूसरे भाव में हो तो जातक की बुद्धि तेज होती है। डाक्टर, वकील, कवि, श्रृंगारी लेखकादि होकर धन तथा यश पाते हैं, ये लोग सुशील, उत्तम कर्म करने वाले, चतुर, विलास-प्रिय, स्त्रीसुख से सुखी, पुत्र-चिन्ता से चिन्तित, तैरने में डुबकी खाने वाला होता है, क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य मलिन बुद्धिवाला, अशिक्षित, कामासक्त, अनेक स्त्रियों से रति करने वाला, निजी स्त्री-बच्चों के दुख से दुखी, जलविनोद, जलयात्रा में कष्ट पाने वाला, नजला-जुकाम, जलोदरादि रोगों से पीड़ा पाने वाला, उत्तम कर्म से हीन होता है।

यदि द्वादशेश पूर्ण चन्द्र तुला का तीसरे स्थान में हो तो जातक को शिक्षा कम होती है, प्रवास में रहना पड़ता है, पुलिस-सेना विभाग में प्रगति होती है, भाई-बहनों का सुख रहता है, धार्मिक वृत्ति होती है, ये लोग सामाजिक तथा कम्पनीज के साथ कार्य करने में सुखी रहते हैं, स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है, राजनैतिक क्षेत्र में यश पाते हैं, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षाहीन, स्त्री-बच्चों, भाई-बहनों के सुख से हीन, विवादी, कुसंगति, आलसी तथा ऋणी रहता है।

जिसका द्वादशेश पूर्णचन्द्र वृश्चिक (नीच) का चतुर्थ हो तो जातक को शिक्षा नहीं होती, इनका स्वभाव उग्र, विषय-वासना से पूर्ण, माता-पिता से अन-बन रहती है, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता, स्त्री-बच्चों की चिन्ता रहती है, पर-स्त्री प्रेमासक्त रहते हैं, क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य निरक्षर होता है, माता-पिता की मृत्यु न हुई तो सदा कलह रहती है, पराधीन रहना पड़ता है, स्त्री की मृत्यु सन्तान उत्पत्ति के समय ही हो जाती है, जीवनभर दुख रहता, अपना मकान नहीं बन पाता, पर-स्त्री प्रेम में अपयश तथा राज्य भय प्राप्त होता है।

जब द्वादशेश पूर्ण चन्द्र धन का पंचम स्थान में हो तो जातक का शिक्षा पूर्ण होती है, कोई अपूर्ण शिक्षित भी रह जाते हैं, ये लोग सरकारी नौकरी के साथ अन्य कार्य से भी धन कमाते हैं, पुष्ट अंग, हंसमुख होते हैं, विवाह के बाद भाग्यो-दय होता है, स्त्री-बच्चों, माता-पिता, बहन-भाई सभी का सुख रहता है, ये लोग नौकरी छोड़कर, इन्स्योरेन्स कम्पनी आदि में काफी धन कमाते हैं, और जब क्षीण चन्द्र होता है तो मनुष्य अपूर्ण शिक्षित रहता है। धन की कमी रहती

है, कृपण होता है, स्त्री सुन्दर होती है, पुत्र चिन्ता रहती है, कन्यायें अधिक होती हैं, व्यापार में हानि, किसी स्त्री द्वारा अपमान होता है।

यदि द्वादशेश पूर्ण चन्द्र मकर का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी संगीत-कला का जानने वाला होता है, कामासक्त रहता है, मामा का सुख कम होता है, जल से भय रहता है। शरीर रोगी होता है, बीमारी में खर्च करना पड़ता है, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, जब क्षीण चन्द्र होता है तो शिक्षा बहुत ही कम होती है, रुधिर विकार से रोग होते हैं, स्त्री सुख कम, कन्यायें अधिक होती हैं, प्रवास में रहना पड़ता है, नजला-जुकाम, गुप्त चिन्तायें रहती हैं, जल यात्रा में प्राण संकट उत्पन्न होता है।

जिसका द्वादशेश पूर्ण चन्द्र कुम्भ का सप्तम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, किन्तु उसका उपयोग कम होता है, सरकारी नौकरी कम करते हैं। विचार धार्मिक होते हैं। कमीशन एजेण्टी, बेकरी, इन्श्योरेन्स, निजी कारखाने आदि के कार्य में सफलता ४२ वर्षोपरि पाते हैं, स्त्री सुन्दर नहीं होती, हँस मुख होती है, सन्तान कम होती है, शरीर में रोग रहता है, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा अपूर्ण रहती है, चंचल वृत्ति होने से किसी भी कार्य में सफलता नहीं होती, नास्तिकों जैसे विचार रखते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। जलयात्रा में भय रहता है, परस्त्रियों पर खर्च करते हैं। ऋणी, रोगी, कुसंगति तथा अपयशी होते हैं।

जब द्वादशेश पूर्ण चन्द्र मीन का अष्टम भाव में हो तो जातक को शिक्षा अपूर्ण रहती है, किसी की मृत्यु उसकी पढ़ाई के छूटने का कारण बनता है, इनको तरल पदार्थों, दवाइयों, इत्रादि के व्यापार, गन्ने आदि रसीले पदार्थों की खेती से लाभ रहता है, ये लोग स्वाभिमानी, वेदान्ती, योगाभ्यास करने वाले; बात के पक्के, ऋण से दूर रहने वाले, देर में विवाह करने वाले, ३६ वर्षोपरि स्वास्थ्य को खराब कर देने वाले, अपनी योग्यता के घमण्डी होते हैं। इनकी कोई योजना ही सफल होती है, प्रधानत्व चाहते हैं, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा बहुत कम होती है, झूठे, घमण्डी, छल-प्रपंच से धन एकत्रित करने वाले, अवधूती प्रचार कर ठगने वाले, घर की सम्पत्ति नष्ट करने वाले, रोगी, स्त्री-पुत्रादि के रोगों के कारण ऋण लेने वाले, धातु विकार से युक्त, जलोदर, अण्डकोष वृद्धि का रोग होता है।

यदि द्वादशेश पूर्ण चन्द्र मेष का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी विद्वान् से जंचते हैं। ज्योतिष, गणित, हस्तरेखा का अच्छा अभ्यास होता है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, धार्मिक विचार, तीर्थ यात्रा प्रिय, कविता, लेखन कला में यश पाने वाले, देवाराधक होते हैं, यदि विवाह हुआ तो स्त्री-बच्चों का पूर्ण सुख रहता है, तपस्वी होते हैं, यदि क्षीण चन्द्र हो तो मनुष्य के उपयुक्त गुणों को ह्रास कर देता है, मनुष्य की वृत्ति चंचल हो जाती है, केवल कल्पना के आधार पर बात करने वाले आत्मविश्वास से रहित होते हैं, किसी भी कार्य में स्थिर नहीं रहते, व्यवसाय बदलते रहते हैं, स्त्री-बच्चों, भाई-बहनों का सुख कम होता है।

जिसका द्वादशेश पूर्ण चन्द्र वृष उच्च का दशम स्थान में हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि होता है, शिक्षा पूर्ण बहुत ही जल्दी होती है, ये लोग डाक्टर, वकील, बड़े राज्यपदाधिकारी तथा राजनैतिक क्षेत्र में उन्नतशाली भाग्यवान् होते हैं, स्त्री-पुत्र, वाहनादि सुख से सुखी, धार्मिक, तीर्थ यात्रा प्रिय, देश-विदेश के व्यापार से लाभ पाने वाले बड़े ही निपुण होते हैं, पराक्रम पूर्ण कार्यों से राज्यपारितोषिक पाने वाले, सब प्रकार से सुखी होते हैं और क्षीण चन्द्र होने पर उपयुक्त फलों का ह्रास हो जाता है, और मनुष्य वृद्धावस्था में योगाभ्यास में लगता है। यौवन में पिता का कर्ज चुकाना पड़ता है, माता-पिता से विचार-विनिमय नहीं होता। जलयात्रा में कष्ट होता है।

जब द्वादशेश पूर्ण चन्द्र मिथुन का एकादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पुर्ण नहीं होती फिर भी मनुष्य साहित्य, कविता, ड्रामादि का शौकीन होता हैं, ये लोग अपने गुणों के कारण जन-साधारण में यश, मान, प्रतिष्ठा प्राप्त करते है। माता-पिता के आज्ञाकारी रहते हैं, उनकी सम्पत्ति से लाभ उठाते हैं। परदेश में रहते हैं, छोटी-छोटी यात्राओं के शौकीन होते हैं, व्यापार में भी लाभ रहता है, क्षीण चन्द्र होने पर शिक्षा अपूर्ण रहने के साथ-साथ किसी भी गुण या कला में निपुण नहीं हो पाते। माता-पिता से विमुख रहकर पैतृक सम्पत्ति को नष्ट करते हैं। परदेश में कष्ट उठाते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, कन्यायें अधिक होती हैं, पुत्र चिन्ता बनी रहती है, परस्त्री प्रेम में अपयश प्राप्त होता है।

यदि द्वादशेश पूर्ण चन्द्र कर्क का स्वगृही द्वादशभाव में हो तो जातक की मस्तिष्क शक्ति उत्तम होती है। शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग कविता, कहानी,

गायन-वादन तथा स्त्री-पात्र का पाठ, ड्रामे आदि में कुशल होते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति कम ही होती है, शत्रुओं से भय रहता, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, माता या स्त्री से धन प्राप्त होता है, नजला, जुकाम आदि रोग होते हैं, जल-यात्रा में सुख मिलता है, क्षीण चन्द्र होने पर मनुष्य बातूनी बहुत होता हैं, गुण-हीन होने पर भी अपने को गुणी समझता है, परस्त्री आसक्त रहता है, विदेश यात्रा हुई तो विजाती के प्रेम में धन, यश की हानि करता है। स्त्री-बच्चों का सुख नहीं होता, किसी स्त्री द्वारा विष प्रयोग हो सकता है, नन्साल से कष्ट मिलता है, गुप्त शत्रुओं से हानि, चोरी आदि हो सकती है। जीवन रोग ग्रस्त तथा दुखी रहता है।

द्वादशेश भौम फल

मंगल—जिसका द्वादशेश वृष का लग्न में मंगल हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करते हैं। पटवारी, कानूनगो, सर्वे इन्सपेक्टर आदि होते हैं, इन्हें क्रोध बहुत आता है, ये किसी धनिक स्त्री से धन के लिए विवाह करते हैं, कभी-कभी अविवाहित भी रह जाते हैं, माता को कष्ट या अनबन रहती है, इनको स्वतन्त्र मकान बनाने की बड़ी इच्छा होती है। ये लोग मन्त्रजापी देवभक्त होते हैं। ये लोग दुर्बल हृदय, पुलिस से डरने वाले होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है, बीमार रहते हैं, स्वयं रक्त, पित्त, कफ, अर्श, रक्त विकारादि के रोग से पीड़ित रहते हैं, इन्हें चोरी की आदत भी होती है और जब धन का मंगल हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग पुलिस-इन्सपेक्टर तथा सेना विभाग में कैप्टन आदि बड़े औफीसर होते हैं, उदार तथा धार्मिक वृत्ति होते हैं, फिर भी रिश्वत नहीं छोड़ते, ये स्वतन्त्र विचार, बहादुर, हठी तथा यात्राप्रिय होते हैं, द्विभार्या योग हो सकता है, बच्चों का सुख रहता है, मातृ सुख रहता है, जलयात्रा में कष्ट होता है, रक्त चाप (ब्लड प्रेशर), रक्त-विकारादि रोग होते हैं, शत्रुओं से घावादि लगते हैं, सुन्दर स्त्रियों के साथ विलास में रत रहते हैं, अत्यन्त कामी होते हैं।

जब द्वादशेश मंगल मिथुन का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग अच्छे व्यापारी, सरकारी नौकर, लेखक तथा अनेक कलाओं के ज्ञाता होते हैं, ये लोग निजी परिश्रम से उन्नति करते हैं, ये तार्किक तथा स्पष्ट

वक्ता होते हैं, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी रहते हैं, हो सकता है प्रथम पुत्र का सन्ताप देखना पड़े। ये लोग पिता तथा बन्धुओं के विरोधी होते हैं, खर्च अधिक नहीं करते हैं, स्त्री जाति की शत्रुता में अपयश पाते हैं, धार्मिक होते हैं, तीर्थ-यात्रा में सुख होता है और जब मकर का (उच्च) मंगल होता है, तो शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग उद्योगी, परिश्रमी, बहादुर तथा प्रयत्नशील होते हैं और अपने विभाग में उच्च पद प्राप्त करते हैं और सेना, पुलिस में पारितोषिक पाते हैं, विवाह होता है, किन्तु स्त्री के जीते-जी वियोग दुःख होता है, सन्तान होती है, आत्मिक ही इनसे द्वेष करते हैं, ये लोग भाग्यवान् तथा सम्पत्तिशाली तथा खर्चीले होते हैं।

यदि द्वादशेश मंगल कर्क (नीच) का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा नहीं होती फिर भी सरकारी नौकरी तथा छोटे-छोटे कार्यों द्वारा अच्छी तरह गुजर करता है। माता-पिता, भाई-बन्धुओं का सुख बहुत कम होता है, भाई से कलह रहती है, विवाह होता है, पुत्र चिन्ता रहती है, स्त्री बीमार रहती है, मन्दभागी होता है, ऋण लेना पड़ता है, किसी स्त्री से अपयश मिलता है, स्वार्थी तथा बीमार होते हैं और जब कुम्भ का मंगल हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ज्योतिष, कानून के जानने वाले तथा जन-साधारण को मजमूए या दवाई आदि बेचकर धोखे से धन कमाने वाले होते हैं। विनय हीन, रोगी, भाई-बन्धु, स्त्री-बच्चे के सुख से रहित होते हैं। चित्त स्थिर न होने के कारण भ्रमित रहते हैं। पाप कर्म-रत रहते हैं।

जिसका द्वादशेश मंगल सिंह का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग स्वतन्त्र विचार, साहसी, उद्योग तथा पराक्रम पूर्ण कार्यों के लिये राज्यपक्ष से पारितोषिक पाने वाले, धन, कीर्ति से युक्त, प्रधान पद पानेवाले, स्त्री-बच्चों की चिन्ता से चिन्तित, माता का भक्त, पिता द्वेषी, शुभ कार्यों में धन खर्च करने वाले, भ्रातृकष्टी होते हैं, स्त्री बीमार रहती है, कभी अविवाहित ही रह जाते हैं, विवाहितों के गर्भपात भी होते हैं और जब मीन का मंगल हो तो शिक्षा अच्छी होती है, करकारी नौकरी में प्रगति होती है, विवाह देर में होता है, स्त्री सुन्दर तथा कामी होती है, सन्तान की चिन्ता रहती है, प्रवास में रहना पड़ता है, ऋणी रहते हैं, स्त्री बीमार होती है, द्विभार्या योग

होता है, माता-पिता का सुख कम होता है। रक्त विकार, रक्त चाप, अर्शादि रोग से पीड़ित रहते हैं, उनका स्वभाव चिड़चिड़ा, क्रोधी, पापरत तथा कुमार्ग पर जाने वाला होता है।

जब द्वादशेश मंगल कन्या का पंचम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। फिर भी ये लोग कृषि, जल, सर्वे आदि विभागों में अच्छी प्रगति करते हैं, जलवायु निरीक्षण, दर्जी आदि का कार्य कुशलता पूर्वक करते हैं। पिता की यदि मृत्यु न हुई तो अनबन रहती है, स्त्री बच्चों का सुख कम होता है, मन में उद्वेग रहता है, लाभ में कठिनता होती है, श्रृङ्गारी, कवि या लेखक हो सकते हैं, पर-स्त्री कटाक्षादि के प्रेम में सुख अनुभव करते हैं और जब मेष का मंगल हो तो मनुष्य शिक्षा के पूर्ण न होने पर भी पुलिस, सेना विभाग में पोत-यान, मोटर आदि की इन्जीनियरिंग का कार्य बड़ी सफलता से करते हैं, अपनी बहादुरी द्वारा उच्च पद प्राप्त करते हैं, धन और कीर्ति पाते हैं, भूमि और स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी रहते हैं, प्रथम पुत्र सन्ताप होता है। रक्त सम्बन्धी रोग होते हैं। बड़े भाई से कलह रहती है।

यदि द्वादशेश मंगल तुला का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। फिर भी व्यापार या साहसी कार्यों द्वारा धन, यश पाते हैं, इनकी कल्पनाएँ असम्भव ही होती हैं, शत्रु बहुत होते हैं। किन्तु दबे रहते हैं, जल, अग्नि, विष, चोरादि से हानि होती ही रहती है, नन्साल का सुख नहीं होता, किसी श्रृङ्गारी स्त्री के सम्पर्क से विष, चोटादि दुर्घटना हो सकती है। अंगहीन हो सकते हैं, स्त्री-पुत्रों के दुख से दुखी रहते हैं, किसी एक शुभ कार्य में काफी धन खर्च करते हैं और जब वृष का मंगल हो तो उपर्युक्त फलों के साथ-साथ शत्रु की वृद्धि, पराधीनता, अनीति में रुचि, मन्दाग्नि, स्त्री-पुत्रादि के दुख से दुखी, महा क्रोधी, पैतृक सम्पत्ति को नष्ट करने वाला, गुप्त शत्रुओं द्वारा पराजित होता है।

जिसका द्वादशेश मंगल वृश्चिक का सप्तम स्थान में स्वगृही हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। ये लोग कृषि, लकड़ी, इमारत आदि बनाने तथा क्रय-विक्रय करने वाले होते हैं और अच्छा धन कमाते हैं। ये लोग चतुर, चालाक होते हैं, सरकारी नौकरी भी करते हैं, जिनकी शिक्षा पूर्ण होती है,

वे अच्छे डाक्टर, सर्जन, दातों के डाक्टर, इन्जीनियर तथा कैमिस्ट भी होते हैं, विवाहितानन्द लेने वाले पापरत, पर-स्त्री से प्रेम में तल्लीन, स्त्री से धन पाने वाले, पूर्ण स्वस्थ हृष्ट होते हैं, यदि विवाह हुआ तो इनकी स्त्री बीमार रहती है, उसे गर्भपात होते हैं, इनको स्वयं रक्तचाप, रक्त विकार, फोड़े-फुन्सियाँ, खुजली तथा अर्शादि रोगों में कोई भी रोग हो सकता है, अग्नि, चोर, शस्त्रादि से भय रहता है और जब मिथुन में मंगल हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग वकील, वैरिस्टर, जज तक हो सकते हैं, ये लोग कलापूर्ण कार्यों के शौकीन होते हैं। पिता-भाई-बन्धु वर्ग से अनबन रखते हैं, स्त्री-पुत्र आदि सुख कम होता है, सम्भव है कि इनको स्त्री व्यभिचार रत रहती हो और ये स्वयं पर-स्त्री के प्रेम रत रहते हों। इनके मित्र कम होते हैं।

यदि द्वादशेश मंगल, धन का अष्टम भाव में हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है। अनेक कार्यों द्वारा जीवन-यापन करना पड़ता है, भ्रातृ सुख कम होता है, यदि जीवित रहें तो अनबन रहती है, कुटुम्बियों से कलह रहती, बड़े व्यापार में प्रगति नहीं होती, घर के भेद बाहर प्रकट हो जाते हैं, ससुराल निर्धन मिलती है, स्त्री खर्चीली होती है और यह अपना खर्च व्यभिचार से पूर्ण करती है, सन्तान सुख कम होता है, रक्त दूषित होकर अनेक रोग होते हैं, विवाह में अड़चनें पड़ती हैं, शरीर को कष्ट लगा रहता है। रक्तचाप से मृत्यु, हृदयगति रुक कर होती है और जब कर्क का मंगल हो तो मनुष्य की शिक्षा, इच्छा बनी रहने पर भी पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, पिता का सुख नहीं होता, माता का पालन करना पड़ता है, ये लोग मिलनसार, पर-स्त्री के कटि तथा स्तन भाग से आकर्षित होने वाले पापरत होते हैं, अपना विवाह यदि हुआ तो २८ वर्ष के बाद ही होता है। भ्रातृ सुख रहता है। रूढ़िवाद से बाहर विचित्र तरह के धार्मिक होते हैं, इन्हें भी जलोदर, रक्तदूषित तथा रक्तविकार आदि रोग होते हैं। तैरने तथा जलयात्रा में कष्ट होता है, कृपण तथा बातूनी होते हैं।

जब द्वादशेश मंगल मकर (उच्च) का नवम भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे डाक्टर, सर्जन, कुशल वकील, न्यायाधीशादि होकर अच्छा धन तथा यश प्राप्त करते हैं, इनका विवाह के बाद भाग्योदय होता

है, ये लोग धार्मिक विचार, उदार, परोपकारी तथा न्यायप्रिय होते हैं, तीर्थयात्रा तथा सत्कार्यों में धन खर्च करने वाले होते हैं, राज्य सम्मान तथा समाज में प्रधान पद से सुशोभित होते हैं, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी रहने के कारण स्वजन द्वेषी हो जाते हैं, और जब सिंह का मंगल हो तो मनुष्य शिक्षा के अपूर्ण रहने पर भी कारीगर, कलाकार, गायकादि अच्छा होता हैं, शत्रु होते हैं, किन्तु दबे रहते हैं, विवाह देर में होता है, किन्तु स्त्री धनिक मिलती है, उसके विचार स्वच्छन्द होते हैं, प्रेम के सम्बन्ध में ये लोग निराश रहते हैं, कष्ट उठाते हैं, द्विभार्यायोग हो सकता है, ये लोग जीवन-पथ पर आने वाली अनेक आपत्तियों को पछाड़कर उन्नति पथ पर अग्रसर होकर सफलता पाते हैं।

जिसका द्वादशेश मंगल कुम्भ का दशम स्थान में हो तो शिक्षा पूर्ण न होने पर भी कीर्ति से युक्त होता है, ये लोग सरकारी नौकरी न करके अधिकतर व्यापार या अन्य स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं, धन होता है तो सन्तति नहीं होती, पुत्र हों तो जीवित कम ही रहते हैं, पिता से कलह रहती है, मातृ सुख रहता है, शरीर रोगी रहता है, रक्त-पित्तादि रोग होते हैं, स्त्री उग्र स्वभाव की होती है, और जब कन्या का मंगल हो तो मनुष्य कामी, कलाकार, पूर्ण कार्यों में दक्ष, रोबीला, पर-स्त्रियों को आकर्षित करने वाला, सरकारी नौकर, माता-पिता का आज्ञाकारी, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होने पर भी नित नई स्त्री का संसर्ग चाहने वाला, पापरत, दुश्चरित्र होता है, इसको हृद्रोग से पीड़ा होती है, ये लोग निराशावादी तथा इष्ट-मित्रों के सुख से रहित होते हैं, इनका प्रेम सम्बन्ध किसी नीच स्त्री से होने के कारण मानहानि देता है, इन्हें स्नायु पीड़ा से कष्ट होता है।

जब द्वादशेश मंगल मीन का एकादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग व्यापार तथा सरकारी नौकरी में चाहे जैसे भी हो अपनी उन्नति करने तथा कीर्ति पाने, पदाधिकार पाने की बड़ी इच्छा रहती है, इसके लिये ये अपनी स्त्री, बच्चों का शील तक बेचकर सफलता प्राप्त करते हैं, अन्यथा जिनकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती, छोटी नौकरी करते, अपना मन घोटकर हताश ही रहते हैं। इसी तरह शत्रुओं पर विजय पाते हैं, दोनों वर्गों में मनुष्य स्वाभिमानी पाये जाते हैं, स्त्री रोगी और सन्तान अधिक होती है, घर की स्थिति ठीक नहीं होती, माता-पिता का सुख थोड़े समय ही रह पाता है, और जब तुला का मंगल

हो तो उपर्युक्त फल ही अधिकतर होते हैं, ये योग किसी स्त्री की शत्रुता से अपयश तथा हानि पाते हैं, कुटुम्बियों से अनबन रहती है, माता-पिता से नहीं बनती। विवाह होता है, स्त्री को गर्भपात हो सकते हैं, पुत्र जीवित कम रहते हैं।

यदि द्वादशेश मंगल मेष या वृश्चिक का स्वगृही द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, कई जगह सर्विस करनी पड़ती है, पिता का सुख कम, उसका ऋण चुकाना पड़ता है, माता जीवित रहती है, विवाह होता है तो माता से अलग रहना पड़ता है, भाइयों से ४२ वर्षोपरि सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, स्त्री को गर्भपात होते हैं, पुत्र चिन्ता बनी रहती है। इष्टमित्रों से सहयोग मिलता है, किसी के द्वारा ऋण लिये जाने पर अपयश मिलता है, कलह होती है, भाग्योदय कम होता है, पुलिस से मिले रहते हैं, दृष्टि कमजोर होती है। रक्तचाप, रक्तविकार, रुधिर प्रकोप, अर्शादि रोग होते हैं, आपरेशन (शल्यचिकित्सा) करानी पड़ती है। धर्म-कर्म करने की इच्छा रखते हैं, तन्त्र-मन्त्र जाप करने को तत्पर रहते हैं, यदि विदेश यात्रा हुई तो परस्त्री गमन करते हैं। आधाशीशी, नेत्रपीड़ा, मन्दाग्नि, गिरकर चोट आदि भी लगते हैं।

द्वादशेश बुध फल

बुध—जिसका द्वादशेश बुध कर्क का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण अड़चनों के बाद होती है। ये लोग पीत वर्ण, देखने में सुन्दर होते हैं, लेखन कला में प्रवीण होते हैं, इनकी पिता से नहीं बनती, विवाह देर में होता हैं, किन्तु स्त्री सुन्दर मिलती है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, पर स्त्रियों पर आसक्त रहते हैं और विवाह से पहले कई लड़कियों से कृष्णमुख किये होते हैं, इनका प्रेम सम्बन्ध किसी वृद्धा से धन के लिये होता है, अनेक गुप्त रोग होते हैं, प्रवास में रहना पड़ता है, जल यात्राओं में कष्ट तथा हानि होती है, और जब तुला का बुध हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, कविता, नाटकादि में से किसी एक में अच्छी सफलता मिलती है, धार्मिक विचार, उदार तथा आवेशपूर्ण होते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है। झूठ बोलने की आदत होती है, काम-वासना प्रबल होती है। चित्तवृत्ति चंचल होती है, द्रव्य की कमी रहती है, यदि विवाह हुआ तो स्त्री सुन्दर तथा शृंगारी होती है, शरीर रोगी रहता है।

जब द्वादशेश बुध सिंह का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण हो जाती है, ये लोग अच्छे कवि, लेखक, प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक होते हैं, आत्मविश्वासी, स्वतन्त्र, निर्भीक तथा भाषा गर्वयुक्त होती है, इन्हें क्रोध शीघ्र आता है, किन्तु ठहरता नहीं, ये सुरापानादि का शौक रखते हैं, इसलिये हृद्रोग से पीड़ित रहते हैं, और इष्ट-मित्रों के सहयोग से ठियेठरादि कम्पनियों की मैनेजरी सफलता पूर्वक करते हैं। सरकारी नौकरी किसी के सम्बन्ध से छोड़नी पड़ती है, ये स्त्री-शील बेचकर भी ऐश्वर्य पाने की इच्छा रखते हैं। किन्तु धन संग्रह नहीं होता, शत्रु पीड़ा रहती है, पर-स्त्री प्रेम में अपयश मिलता है और यदि वृश्चिक का बुध हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती और ये लोग स्वार्थी, कृपण, मतलवी, अविश्वासी, निराश ओर उद्योग में असफल रहते हैं, फिर भी छल-कपट, चालाकी द्वारा धन संग्रह करने में सफल होते हैं, निन्द्य कर्म तथा पराधीनता में सुख पाते हैं, स्त्री क्रोधी तथा व्यभिचारिणी होती है, स्वयं पर-स्त्री प्रेम में अपयश पाते हैं, कुटुम्बियों से कलह रहती है, और पैतृक सम्पत्ति को शीघ्र नष्ट करने वाले होते हैं।

यदि द्वादशेश बुध कन्या का तीसरे स्थान में हो तो बुद्धि अच्छी होने पर भी नैसर्गिक कारणों द्वारा पढ़ाई पूर्ण नहीं होती इसलिये लेखन कला, पुस्तक विक्रेता या जिल्दसाजी आदि कार्यों द्वारा सफलता मिलती है, ये लोग धार्मिक विचार, उपासना रत होते हैं, इन्हें गणित तथा साहित्य में अच्छा ज्ञान होता है, ये लोग अपने दायरे में समाज में, यशस्वी होते हैं, किन्तु ये धनवान् नहीं हो पाते, भ्रातृ स्नेह रहता है, ये लोग नई खोज करने के शौकीन, स्त्री सुख से सुखी रहते हैं और जब धन का बुध हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है, वह ज्योतिष शास्त्र, रेखागणित आदि में कुशल होता है, ये लोग दानी, उदार, स्नेही तथा समाज में कीर्ति पाने वाले, ३२ वर्षोपरि भाग्योदय से लाभ पाने वाले, सुन्दर स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होते, एक बार जीवन में लोक-विरोध पाकर यशस्वी होते हैं, मातृ-सुख से सुखी रहते हैं।

जिसका द्वादशेश बुध तुला का चतुर्थ भाव में हो तो उसकी शिक्षा पूर्ण नहीं होती, जीवन पर्यन्त ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, कवितादि लेखन, पठन-पाठन का शौक होता है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, माता से मनमुटाव

रहता है, पिता से नहीं बनती, ये लोग ज्ञानाभिमानी होते हैं, खेती-बारी या पैतृक सम्पत्ति से कार्य चलता रहता है, राजनैतिक कार्यों में यश मिलता है। स्त्री-बच्चे का सुख कम रहता है, और जब मकर का बुध होता है तो जातक की शिक्षा अधूरी रहती है, माता-पिता से सम्बन्ध अच्छे न रहने के कारण उन्नति नहीं कर पाते और यदि माता-पिता से किसी ग्रह के प्रभाव से सम्बन्ध अच्छे रहे तो शिक्षा पूर्ण होती है, किन्तु सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती। प्रथम तो विवाह ही नहीं होता और यदि हुआ तो स्त्री से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। ये लोग स्त्रियों से गुप्त प्रेम करने वाले, स्वार्थी, कृपण तथा धर्मभीरु तथा पापरत रहते हैं।

जब द्वादशेश बुध वृश्चिक का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। ये लोग खिलाड़ी प्रकृति के होते हैं, माता-पिता, भाई-बन्धुओं से अनबन रहती है, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, इष्ट-मित्रों का सहयोग रहता है, वायुयान से विदेश यात्रा हो सकती है, हाथ तंग रहता है, फिर भी कार्य सभी हो जाते हैं। सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है और जब कुम्भ का बुध होता है, तो भी शिक्षा पूर्ण नहीं होती है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, समय-समय पर अपने कला पूर्ण कार्यों से धन मिलता है, अधिकतर ये लोग टाइप-मशीनादि लोह कार्य में लाभ पाते हैं, इन्हें इष्ट-मित्र, भाई-बहन, माता-पिता, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, इनके विचार स्वतन्त्र, तार्किक होते हैं, स्त्री धनिक मिलती है, जिससे विचार विनिमय नहीं होता, जल यात्रा सुखकर नहीं होती। कामी होते हैं, पाप रत रहते हैं।

यदि द्वादशेश बुध धन का छठे घर में होता है तो शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी लेखन कला में प्रवीण होते हैं, मामा, नानादि से विरोध रहता है, सरकारी नौकरी सुखकर नहीं होती, विदेश व्यापार से लाभ रहता है। चोरी, जल से हानि होती है, इनका प्रारम्भिक जीवन सुखकर होता, यौवन के बाद मन्दाग्नि, अण्डकोष वृद्धि आदि के रोग हो जाते हैं। धन की कमी रहती है, निन्द्य कर्म के लिये बदनामी मिलती है, स्त्री अच्छी मिलती है, किन्तु उससे अनबन रहती है और जब मीन का बुध हो, तो जातक को सभी फल धन जैसे प्राप्त होते हैं, सिर्फ ये लोग अत्यधिक गप्पें उड़ाकर अपनी स्थिति से गिर जाते हैं, इन्हें कभी-कभी

उन्माद का रोग भी हो जाता है, ये लोग तैरने, जल-विनोद तथा जल यात्रा के शौकीन होते हैं, जिसमें इन्हें हानि ही होती है, धन संचय में कमी रहती है, कामी होते हैं, समयानुकूल अपने को बदल लेते हैं।

जिसका द्वादशेश बुध मकर का सप्तम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। इसलिये ये लोग स्टैनोग्राफर, टाइपिस्ट, क्लर्क तथा व्यापारी होते हैं, ये लोग चतुर, कृपण और उद्योगी होते हैं, स्त्री अच्छी नहीं मिलती, बच्चों का सुख कम होता है, जल यात्रा में कष्ट होता है, दुष्ट संगति में रहते हैं, झूठ बोलते हैं, किसी नीच स्त्री से रति को इच्छा रखते हैं और जब मेष का बुध होता है, तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है, जिसका दुरुपयोग होता है, छल-कपट से धन जमा करते हैं, इनका चित्त और शरीर दोनों चंचल होते हैं, स्वच्छ प्रकृति होने के कारण कायदे-कानून की परवाह नहीं करते, इनको स्नायु तथा म्यादी बुखार, चेचकादि का बचपन में भय रहता है, किन्तु विवाह अच्छे घर होने के कारण विवाह के बाद भाग्योदय होता है, प्रवास में सुख रहता है, अनुचित कार्य रुचिकर होते हैं।

जब द्वादशेश बुध कुम्भ का अष्टम घर में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, अन्य व्यवसाय करने पड़ते हैं, इष्ट-मित्रों के सहयोग से कुछ धन कमाते हैं, स्त्री अच्छे धनिक घर की होती है, जिससे विचार-विनिमय न होने के कारण गार्हस्थ्य जीवन संकटमय रहता है, ये लोग तार्किक, बातूनी तथा उन्मादी होते हैं। धर्महीन होते हैं, किसी के विश्वास घात के कारण चोरी आदि से धन नाश होता है, जल यात्रा में तथा तैरने में प्राण संकट उत्पन्न होता है और जब बुध वृष का अष्टम हो तो शिक्षा कम होने पर भी ये लोग, कविता, चित्रकारी आदि कला पूर्ण कार्यों से धन कमाते हैं, और पास-पड़ोस तथा सम्बधियों में प्रसिद्ध होते हैं, इनकी स्त्री अपनी विशेष बातों के लिए प्रसिद्ध होती है, इनका अनुमान ठीक बैठता है। दूसरे व्यवसायों में सफलता कम होती है। बीमारी में धन खर्च होता है, पीलिया, पेट दर्द तथा म्यादी बुखारादि होते हैं, यदि विदेश यात्रा हुई तो विधर्मी स्त्री-प्रेम के कारण अपयश पाते हैं। स्त्री-बच्चों, भाइयों का सुख कम रहता है।

यदि द्वादशेश बुध मीन का नवम स्थान में हो तो जातक की सद्बुद्धि तथा शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग डाकखाने, रेलवे, टेलीग्राफ, टेलीफोन तथा सर-

कारी नौकरी में क्लर्की का कार्य अच्छी तरह से करते हैं, फिर भी विशेष उन्नति नहीं कर पाते, धार्मिक, सत्कर्मी, उपकारी तथा निजी मकान बनाकर रहने के शौकीन होते हैं, किन्तु गप्पी होने के कारण अपनी हँसी उड़वाते हैं, ये लोग तैरने, नाव चलाने आदि जल-विनोद कार्यों के शौकीन होते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख देर से होता है, भाई-बहनों का सुख रहता है और जब मिथुन का बुध हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी वह विद्वान्-सा जँचता है। ज्योतिष, कविता, लेखों, सम्पादकीय तथा शिक्षक कार्य में उन्नति करता है। इसको अपने किसी कलापूर्ण कार्य के लिए धन और यश खूब मिलता है, स्त्री सुन्दर तथा गुणवती मिलती है, सरकारी नौकरी भी करनी पड़ती है, किन्तु मन कम लगता है, दो मातायें हो सकती हैं, व्याख्यान दे सकते हैं, किन्तु प्रपंच द्वारा उन्नति की रुचि रहती है।

जिसका द्वादशेश बुध मेष का दशम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी मनुष्य अपने पराक्रम पूर्ण कार्यों के लिए पारितोषिक पाने वाला, उत्तम प्रकार का खिलाड़ी, पुलिस-सेना विभाग में प्रगति करने वाला, माता-पिता की सम्पत्ति से लाभ पाने वाला, क्षणिक, आवेशपूर्ण बात करने वाला, स्वतन्त्र विचार, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, स्नायु तथा म्यादी बुखार, पित्तादि पीड़ा से विकल रहने वाला, परस्त्री रत, चंचल, उत्पाती होता है, और जब बुध कर्क का हो तो शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी अनेक कलापूर्ण कार्यों का जानने वाला, लोभी, माता-पिता से अनबन रखने वाला, सरकारी नौकरी में उन्नति न कर सकने वाला तथा पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहने वाला होता है। स्त्री सुन्दर, दुश्चरित्र तथा घर में कलह करने वाली होती है, तरल पदार्थों, इत्रों, तेलों, शृंगारी, अश्लील कविताओं द्वारा लाभ उठाते हैं।

जब द्वादशेश बुध वृष का एकादश स्थान में हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग चित्रकार, शिल्पकार, बजाज, कवि तथा अच्छे लेखक होते हैं, सरकारी नौकरी तथा किसी कार्य में प्रसिद्धि पाते हैं, लोग इन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं। तैरने, जल-विनोद तथा विकास क्रिया में शौक रखते हैं, विवाह धनिक जगह होता है, स्त्री सुन्दर तथा चरित्र हीन मिलती है, भ्रातृ सुख रहता है, बच्चे सुन्दर होते हैं, कन्यायें अधिक होती हैं।

और जब सिंह का बुध हो तो शिक्षा रुक कर पूर्ण हो जाती है। ये लोग आत्मविश्वासी, आवेशपूर्ण तथा सुरापी होते हैं, और विदेश यात्रा आदि हो तो विदेशी स्त्री के प्रेम में स्वधर्म त्याग तक कर सकते हैं। और बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त कर आराम से रहते हैं, स्त्री-बच्चों का वियोग इन्हें नहीं अखरता, पर-स्त्री मोह में तल्लीन रहते हैं। यदि बड़ा भाई हुआ तो उससे नहीं बनती, इन्हें व्यसनों, सराब आदि से रोग लगते हैं।

यदि द्वादशेश बुध मिथुन या कन्या का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी बुद्धि बड़ी तीव्र होती है, ये लोग ज्योतिष, हस्तरेखा, गणित तथा साहित्य भाषा का अच्छा ज्ञान रखते है, और यश पाते हैं, किन्तु धन की कमी रहती है। अच्छे वैज्ञानिक तथा आविष्कारकर्ता हो सकते हैं, ये लोग हंसमुख, समाज में आदर पाने वाले, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, शत्रु युक्त, धार्मिक कार्यों में शक्ति भर खर्च करने वाले, तीर्थयात्रा प्रिय, मामा के सुख से थोड़े सुखी, चोरी आदि भय से भयभीत रहते हैं। इनका प्रेम सम्बन्ध अनेक स्त्रियों से गुप्त रूप में रहता है, जिस कारण धातु क्षीण, पीलिया आदि रोग होते हैं।

द्वादशेश गुरु फल

गुरु---जिसका द्वादशेश गुरु मकर का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी गायन, वादन, नाटक आदि खेलने का शौक होता है। ये लोग अभिमानी तथा चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, बुकबाइण्डर तथा ऐसे ही पुस्तक विक्रेता, प्रकाशक आदि हो सकते हैं। प्रवास में रहकर निन्द्य कर्म करते हैं, तैरने तथा जलयात्रा में कष्ट उठाते हैं। विदेश यात्रा में निश्चय ही किसी विजातीय लड़की के प्रेम में उन्मादी जैसा व्यवहार करते हैं, स्त्री सुन्दर, शुभ गुणों से युक्त तथा स्वाभिमानी मिलती है, कलह रहती है। बच्चे सुन्दर तथा बुद्धिमान् होते हैं। और जब मेष का गुरु होता है तो शिक्षा अच्छी होती है, इनका स्वभाव उदार, परोपकारी तथा प्रधानत्व लिये हुए होता है। सरकारी नौकरी के साथ दूसरा कार्य भी करके लाभ पाते हैं, धार्मिक तथा देवाराधक होते हैं, स्त्री-बच्चों का पूर्ण सुख होता है। बच्चे सेना, पुलिस

विभाग में प्रगति करते हैं। ४२ वर्षोंपरि भाग्योदय होता है, जलयात्रा-तीर्थयात्रा सम्बन्धी होती है, इनके विवाह में एक-दो अड़चनें पड़ती हैं।

जब द्वादशेश गुरु कुम्भ का दूसरे भाव में हो तो ये लोग वैज्ञानिक प्रकृति के आविष्कारक, लेखक, समालोचक तथा स्वतन्त्र विचारक होते हैं। सरकारी नौकरी में प्रगति कम, छापेखाने तथा अन्य लोहे के कार्य विद्या से सम्बन्ध रखने वाले, टाइपिस्ट आदि में भी प्रगति करते हैं। इष्ट-मित्रों से सुख मिलता है, धन खूब कमाते तथा खर्च भी खूब करते हैं। स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, नाना के घर से आय होती है। किसी स्त्री के अनुचित सम्बन्ध से विष, चोरी, अपयश आदि की हानि होती है। पिता से सम्बन्ध अच्छे तथा कम ही रहते हैं, जलयात्रा से लाभ रहता है। और जब वृष का गुरु हो तो जातक की शिक्षा अड़चनों के बाद पूर्ण होती है। ये सरकारी नौकरी, गायन, वादन, कविता, नाटक, फिल्मादि सभी क्षेत्रों में प्रगतिशील रहते हैं। ये लोग कामासक्त तथा आकर्षक होते हैं। इसलिए स्त्रियों से धन की प्राप्ति भी कर लेते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, पर स्त्री रति में अपयश मिलता है।

यदि द्वादशेश गुरु मीन का तीसरे स्थान में हो तो जातक अधिकतर सुशिक्षित होते हैं। ये लोग सरकारी नौकरी में अच्छे ऑफीसर बनते हैं, धार्मिक शास्त्रों के ज्ञाता, कर्मकाण्डी पण्डित तथा शिक्षक होते हैं। भाई-बहनों, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी रहते हैं, स्त्री सुन्दर तथा गुणवान् होती है, जलयात्रा से सुख मिलता है। इनका स्वभाव स्वाभिमानी, धार्मिक, उदार तथा परोपकारी होता है, द्विभार्या योग हो सकता है, ये लोग अत्यधिक कामासक्त होते हैं। और जब मिथुन का गुरु हो तो मनुष्य की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, इनका स्वभाव चंचल, मैकेनिक प्रकार का होता है। कविता, नाटक, सिनेमा आदि के श्रवण, देखने का शौक होता है। स्त्री सुन्दर तथा शृंगारी होती है। बच्चों का सुख रहता है, किसी स्त्री से लाभ तथा तीर्थयात्रा संयोग बनता है। भाइयों की प्रगति कम होती है, अभाग्य वश निन्द्य कार्य से अपयश मिलता है।

जिसका द्वादशेश मेष का चतुर्थ भाव में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, ये लोग सरकारी नौकरी में पुलिस सेना, कृषिविज्ञान आदि में पदाधिकार प्राप्त करते हैं। इन्हें बाग आदि लगाने तथा निजी सुन्दर मकानादि में रहने

का बड़ा शौक होता हैं। इन्हें वस्त्रादि व्यापार में लाभ रहता है, इच्छा पूर्ण भी हो जाती है, स्त्री सुन्दर तथा उग्र स्वभाव की होती है, सन्तान होती है, माता-पिता से सम्बन्ध अच्छे रहते हैं, धार्मिक कार्यों में खर्च खूब करते हैं। और जब कर्क का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग राज्य में प्रधान पद प्राप्त करते हैं, शस्त्र-शास्त्र विद्या में निपुण, पैतृक सम्पत्ति से सुखी तथा जलयात्रा में कष्ट होता है। स्त्री-बच्चों का पूर्ण सुख रहता है, पिता से अनबन रहती है। हो सकता है, ये उपर्युक्त फल जातक को गोद लिये जाने के बाद प्राप्त हो, इन्हें पेट का रोग होता है, चाहे जैसे भी हो जीवन सुखी रहता है।

जब द्वादशेश गुरु वृष राशि का पंचम हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी ये लोग कलापूर्ण कार्यों में दक्ष होते हैं, सरकारी नौकरी के साथ शास्त्रीय ज्ञान से भी रुपया कमाते हैं, इन्हें विद्या का अभिमान होता है, स्त्री अच्छी होती है, फिर भी पुत्र-चिन्ता बनी रहती है, प्रथम पुत्र का सन्ताप भी देखना पड़ जाय तो सम्भव ही है। इनकी प्रकृति व्यभिचार की ओर झुकी होती है, पर-स्त्री द्वारा अपयश मिलता है, भ्रातृ सुख रहता है, शरीर को कोई न कोई रोग रहता है, और जब सिंह का गुरु हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग रेखा गणित, अर्थ-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता होने के साथ-साथ अच्छे लेखक, सम्पादक, शिक्षक तथा प्रोफेसर भी होते हैं, इनकी स्त्री सुन्दर तथा शृंगारी प्रकृति की होती है, पुत्र होते हैं जो कि विद्या से पूर्ण रहते हैं, फिर भी पिता से कलह रखते हैं, इनका भाग्योदय ४२ वर्षोपरि होता है, भ्रातृ सुख कम रहता है, शरीर पुष्ट होता है, ये लोग क्षणिक आवेशपूर्ण रहते हैं, इनका द्विभार्या योग हो सकता हैं, ये लोग दया तथा सहानुभूति से रहित होते हैं।

यदि द्वादशेश गुरु मिथुन का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती, फिर भी ये लोग कविता, चित्रकारी, वैद्यक तथा ऐसे ही कार्यों से अच्छा धन तथा यश प्राप्त करते हैं. विवाह देर में होता है, स्त्री से अनबन रहती है। नन्साल का सुख नहीं होता, सुरापान, वेश्यागमनादि तथा किसी नीच स्त्री के प्रेम-सम्बन्ध में अग्नि, चोरी तथा अपयश से हानि होती है, पिता से सम्बन्ध अच्छे रहते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, इष्ट-मित्रों से अनबन रहती है, और जब कन्या का गुरु हो तो शिक्षा अधूरी रहती है, परीक्षा में अनु-

त्तीर्ण रहते हैं, घर से भागने का योग बनता है, मामादि का सुख नहीं होता, सदा शत्रुओं से भय रहता है, विवाह में अड़चनें पड़ती हैं, नीच कामरत रहते हैं, चालाक तथा धोखेबाज होते हैं और इन्हीं कार्यों द्वारा अन्तिम समय तक अपनी परिस्थिति अच्छी कर लेते हैं, इनका प्रेम-सम्बन्ध किसी नीच जाति की लड़की से होता है, जिसके द्वारा चोरी या विष पानादि का भय रहता है।

जिसका द्वादशेश गुरु कर्क का सप्तम स्थाम में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग सरकारी नौकरी की अपेक्षा व्यापार या अन्य व्यवसाय में अच्छा धन तथा यश कमाते हैं, विवाह होता है, स्त्री सुन्दर मिलती हैं, किन्तु आपसी कलह के कारण घर नरक बना रहता है, पत्नी वियोग सहना पड़ता है, यदि विदेश यात्रा हुई तो अपनी प्रेयसी को शपथ त्याग करना पड़ता है, कभी-कभी उच्च के गुरु होने पर मनुष्य अविवाहित ही रह जाते हैं, ये लोग कलापूर्ण कार्यों की सराहना करने वाले, पुत्र-चिन्ता से चिन्तित होते हैं, और जब तुला का गुरु हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, लेखन-कला या कलापूर्ण कार्यों में यश मिलता है, विवाह के बाद स्त्री शोक हो सकता है, दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय होता है, भ्रातृ सुख कम होता है, जल यात्रा में प्राण संकट रहता है, विदेश में पर-स्त्री गमन का योग बनता है।

जब द्वादशेश गुरु सिंह का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण होती है, ये लोग लेखनकला प्रवीण, चंचल, हस्तरेखादि के जानने वाले, पाप-रत रहते हैं, कृपण होते हैं, विवाह होता है, स्त्री व्यभिचारिणी हो सकती है, पुत्र चिन्ता रहती है, माता-पिता का सुख कम होता है, इष्ट-मित्रों से पृथक् रहते हैं। झूठ बोलकर अपना कार्य बना लेते हैं, दूसरों के काम नहीं आते, आवेशपूर्ण चिवल्ले जैसे होते हैं, इन्हें किसी की जायदाद या सम्पत्ति प्राप्त होती है, और जब वृश्चिक का गुरु हो तो मनुष्य क्रोधी होता है, शिक्षा पूर्ण नहीं होती। इन्द्रिय लोलुप तथा पर स्त्री-रत रहते हैं। माता-पिता तथा उनकी जायदाद का सुख नहीं होता, स्त्री-बच्चों का सुख कम रहता है, दम्भी तथा रोगी होते हैं, विदेश यात्रा में कष्ट पाते हैं।

यदि द्वादशेश गुरु कन्या का नवम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग वैज्ञानिक, प्रोफेसर तथा व्यापारी भी होते हैं, किन्तु व्यापार में

प्रगति कम होती हैं, ये लोग दानी, उदार, धन-धान्य पूर्ण, विवाहितानन्द से पूर्ण सुखी होते हैं, किन्तु इनके पुत्र कम जीते हैं और यदि जीवित रहें तो पिता को कलंकित करते हैं, तीर्थ-यात्रा तथा धार्मिक कार्यों में खर्च करने वाले, भ्रातृ सुख से सुखी, रोगी शरीर होते हैं, उत्तरोत्तर पद वृद्धि होती है, किसी-किसी कार्य में लोकापवाद पाते हैं और जब गुरु धन राशि का हो तो भी जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग डाक्टर, वकील, जज, प्रोफेसर प्रिन्सिपल आदि होकर धन-धान्य से पूर्ण हुए अनेक उपाधियों से विभूषित होते है, लोक सभादि राजनैतिक क्षेत्र में प्रगति करते हैं स्त्री सुन्दर, सुशील होती है, पुत्र-चिन्ता सदा लगी रहती है, यदि जीवित रहे तो कुप्रवृत्ति होते हैं, विदेश यात्रा हो तो यश मिलता है ।

जिसका द्वादशेश गुरु तुला का दशम भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण होती है, ये लोग अच्छे लेखक तथा कलाकार होते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, पिता से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, मातृ-सुख रहता है, प्रथम तो विवाह नहीं हो, और बडी देर के बाद हुआ तो स्त्री से कलह रहती है, स्वजनों से विरोध रहता है, किसी स्त्री के प्रेम विरोध में चोरी और अपयश का भय रहता है, जल-यात्रा में प्राण संकट उत्पन्न होता है, और जब मकर का गुरु हो तो विद्या अपूर्ण रहती है, छापेखाने, कारखाने, मिल्स-मशीन, टाइप तथा विदेश व्यापार की वस्तुओं से लाभ रहता है और यदि विदेश यात्रा हुई तो विजाती से प्रेम के कारण धन-हानि होती है, अपयश मिलता है, उसके संसर्ग से गुप्त रोग होते हैं, स्वदेश में किसी नीच जाति की स्त्री के प्रेम में यही फल होता है, तैरने, नौका-विहार में प्राण संकट होता है, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है ।

जब द्वादशेश गुरु वृश्चिक का एकादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी इसे स्वाभिमान अधिक होता है और सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं कर पाता, साझे के व्यापार, लाल वस्त्रादि के व्यापार से लाभ होता है, बड़े भाई से अनबन रहती है, छोटे भाई-बहनों से मेल रहता है, स्त्री सुन्दर तथा सुशील मिलती है । बच्चों का सुख रहता है । यात्रायें सुखकर रहती हैं । प्रवास में रहना पड़ता है, इन्द्रिय लोलुपता तथा व्यभिचार के कारण गुप्त रोग होते हैं, स्वभाव क्रोधी होता है, पैतृक बीमारी में काफी धन खर्च होता है और

यदि कुम्भ का गुरु हो तो शिक्षा अच्छी होती है, नौकरी तथा व्यापार में लाभ रहता है, इष्ट-मित्रों के सहयोग से कार्य चलते हैं, विवाह देर में होता है, फिर भी स्त्री-बच्चों का सुख रहता है, इन्हें अपने किसी विशेष कार्य के लिये यश प्राप्त होता है, इनका प्रेम सम्बन्ध दो स्त्रियों से होता है, जिसमें एक से कलह के लिये अपमानित होना पड़ता है, विदेश यात्रा विशेष सुखकर नहीं होती, दाँतों तथा उदर और कान में रोग होते रहते हैं।

यदि द्वादशेश गुरु धन या मीन का द्वादश भाव में हो तो जातक की शिक्षा अच्छी होती है और उससे कहीं अधिक उसका गर्व होता है, नौकरी सुखकर रहती है, उसके साथ ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक, कविता, नाटकादि लिखने-पढ़ने आदि का शौक होता है। ये लोग उदार, दयालु, कृपण तथा इष्ट-मित्रों के सहयोग से उच्चपद प्राप्त करने वाले होते हैं, फिर भी धनिक नहीं हो पाते। माता का सुख रहता है, विवाह यदि किया तो काफी देर में होता है, या २० वर्ष से पहले ही हो जाता है, स्त्री सुन्दर होती है, बच्चों का सुख कम ही रहता है, यदि विदेश यात्रा हुई तो निश्चय से पर-स्त्री गमन करते हैं। द्विभार्या योग हो सकता है। शत्रु होते हैं, किन्तु दबे रहते हैं। पोलिया, स्नायु-पीड़ा, मन्दाग्नि, पित्तादि रोग से कष्ट होता है। द्वादश गुरु का फल विशेष सुखकर नहीं होता है।

द्वादशेश शुक्र फल

शुक्र—जिसका द्वादशेश शुक्र मिथुन का लग्न में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती फिर भी कविता आदि कलापूर्ण कार्यों के जानने वाले होते हैं, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, दूसरे कार्यों में यश पाते हैं। ये लोग अपनी स्त्री के प्रति सहानुभूति कम रखते हैं, अत्यधिक इन्द्रिय लोलुपता के कारण पर-स्त्रियों से छेड़-छाड़ रखते हैं, और सदा किसी न किसी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं। प्रेम विवाह के शौकीन होते हैं, किसी गाने-बजाने वाली तथा अभिनेत्री के साथ रहने के लिये घर भी त्याग देते हैं, और जब वृश्चिक का शुक्र हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, स्वभाव क्रोधी होता है, फिर भी दर्शनीय होने के कारण पर स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो जाते हैं, विवाह देर में होता है, स्त्री सुन्दर होती है, फिर भी झगड़ा रहता है, स्त्री आग लगाकर या वैसे ही मर जाती है, दूसरे विवाह

से भी सुख प्राप्त नहीं होता, किसी अन्य स्त्री के प्रेम-सम्बन्ध के कारण धन और यश की हानि होती है, प्रवास में ऋण चिन्ता रहती है, धातु विकार, प्रमेह आदि अनेक गुप्त रोग होते हैं।

जब द्वादशेश शुक्र कर्क का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी वह कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि की लेखन कला में प्रवीण होता है। अच्छा धन तथा यश कमाता है, किन्तु धन रुकता नहीं, विवाह के बाद भाग्योदय होता है, स्त्री सुन्दर, शिक्षित मिलती है, किन्तु विचार विनिमय न होने के कारण सुख कम मिलता है, कन्यायें होती हैं, पुत्र चिन्ता रहती है इनका गुप्त प्रेम किसी विधवा अथवा वैश्यादि से होता है, मदिरा आदि के कारण अनेक रोग लग जाते हैं, चित्त चंचल होता है, फिर भी व्यापार में काफी धन कमाते हैं, और जब धन का शुक्र हो तो विद्या अच्छी होती है। सरकारी नौकरी तथा कलापूर्ण कार्यों द्वारा धन और यश की वृद्धि होती है, ये लोग अपनी मधुरवाणी तथा शृंगार द्वारा पर स्त्रियों को आकर्षित कर लेते हैं, ये लोग धन के लिये किसी विधवा या वृद्धा से प्रेम करते हैं, विवाह देर में होता है, पैतृक सम्पत्ति सुख कम रहता है, कामी होते हैं।

यदि द्वादशेश शुक्र सिंह का तीसरे स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण न होने पर भी ये लोग गायन, वादन, कविता, नृत्य आदि कलापूर्ण कार्यों द्वारा अच्छा धन तथा यश प्राप्त करते हैं, दर्शनीय होने के कारण पर स्त्रियों को मोहित कर लेते हैं, और उनसे धन प्राप्त कर आनन्द करते हैं, विवाह एक तथा सम्पन्न घर में होता है, सन्तान चिन्ता रहती है, उदार होते हैं। जल यात्रा, धार्मिक कार्यों में अड़चनें पड़ती है, और जब मकर का शुक्र हो तो शिक्षा अपूर्ण रहने पर भी ये लोग थोक व्यापार तथा अन्य व्यवसाय से अच्छा धन कमाते हैं, विवाहित स्त्री से अनबन रहती है, किसी वृद्धा के प्रभाव में धन प्राप्त करते हैं, विदेश यात्रा में विजाती नीच स्त्री के प्रेम सम्बन्ध में धन, मान हानि पाते हैं, प्रेम में सदा निराश रहते हैं।

जिसका द्वादशेश शुक्र कन्या का चतुर्थ घर में हो तो जातक की शिक्षा, पढ़ने की इच्छा रहने पर भी पूर्ण नहीं होती, सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, कविता, नाटक, ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक आदि कार्यों में यश ४० वर्षो-

चरि मिलता है, प्रेम में हताश रहते हैं, यदि विवाह हुआ तो स्त्री से अनवन रहती है, सूर्य शुक्र के साथ होने से ये लोग स्त्री को घृणा करने वाले होते हैं, और कोई-कोई स्त्री वार्ता में रत रहने के कारण नीच घर की लड़कियों से प्रेम सम्बन्ध में अपयश पाते हैं। माता-पिता जीवित रहते हैं, किन्तु सुख कम होता है। जब कुम्भ का शुक्र हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है, कला-कौशल से सुख मिलता, स्त्री सुन्दर तथा उन्नति-शील होती है। सन्तान सुख रहता है, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता। विवाह देर में होता है, सत्कर्मों में आलस्य रहता है, नीच घर की लड़कियों से अनुचित सम्बन्ध रहता है, विदेश यात्रा में विजाती स्त्री प्रेम धर्म भ्रष्ट कराता है। पाप कृत तथा कुकर्मी होते हैं। नौकरी में प्रगति कम और विदेशी लोहे के माल, मशीन, पुर्जों के थोक व्यापार से लाभ रहता है।

जब द्वादशेश शुक्र तुला का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है, ये लोग विश्वविद्यालयों से बड़ी-बड़ी डिगरियाँ तथा उपाधियाँ लेकर निकलते हैं, वकील, डाक्टर, कवि, लेखक, गायन, वादन, नृत्यादि में निपुण होते है, इनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है, ये लोग कुशल न्यायाधीश होते हैं, ये जिस क्षेत्र को अपनाते हैं पूर्ण सफलता पाते हैं, समाज में आदर पाते हैं, दयालु, धार्मिक तथा परोपकारी होते हैं, उसमें इन्हें इष्ट-मित्र, भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त रहता है, स्त्री सुन्दर होती है, धनिक घर विवाह होने से लाभ रहता है, बच्चों का सुख रहता है, शत्रु नहीं होते, कामी होने के कारण पर-स्त्री प्रेम-रत रहते हैं, और जब मीन का शुक्र हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, और उपर्युक्त फलानुसार धन-धान्य पूर्ण रहकर यश पाते हैं, विवाह होता है, पर स्त्री से नहीं बनती, कन्यायें अधिक होती है, यदि पुत्र जीवित रहा तो यशस्वी होता है, ये लोग तैरने, जल क्रिया में तथा विदेश यात्रा में सफल होते हैं, और किसी वृद्धा से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं और धनादि लेकर बात नहीं करते, यह एक दुर्गुण इनमें पाया जाता है। पुत्र द्वेषी होते हैं।

यदि द्वादशेश शुक्र वृश्चिक का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुककर पूर्ण होती है, सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती, विदेश जाने की इच्छा सफल नहीं होती, माता-पिता, भाई-बहिनों से अनबन-सी रहती है, विवाह देर में होता है,

विवाह से पहले ये स्वयं पर-स्त्रीरत रहते हैं तो पत्नी भी इन्हें पुरुष-रत ही प्राप्त होती है, मामा का सुख कम होता है, अग्नि, चोरी तथा विष प्रयोग भय किसी स्त्री द्वारा हो सकता है, ये लोग अश्लील वक्ता तथा स्वार्थी मित्र होते हैं। यदि २० वर्ष से प्रथम विवाह हुआ तो दूसरा विवाह भी हो सकता है और जब मेष में शुक्र हो तो शिक्षा पूर्ण नहीं होती इसलिये कई व्यवसाय करने पड़ते हैं, किन्तु सफलता कम होती है, विवाह होता है, किन्तु स्त्री झगड़ालू होती है, इसलिये अन्य स्त्री से गुप्त प्रेम रखते हैं या वेश्यागमन करते हैं, इस बात पर जब झगड़ा होता है तो मुकदमे या अन्य लेन-देन में धन-हानि होती है, मामा से शत्रुता रहती है, ४० वर्षोपरि नेत्र ज्योति कम हो जाती हैं, अत्यधिक इन्द्रिय लोलुपता के कारण वीर्य विकार, प्रमेह आदि रोग हो जाते हैं, कभी-कभी अविवाहित भी रहना पड़ता है, उन्हें स्वप्नदोष, वीर्यपात, धातु क्षीण, श्रवण, दृश्य मात्र से स्खलित हो जानादि रोग हो जाते हैं।

जिसका द्वादशेश शुक्र धन का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा के पूर्ण न होने पर भी विद्वान् सा दिखाई पड़ता है, कलापूर्ण कार्यों के लिये यशस्वी होता है, किन्तु लोग उसकी पदवृद्धि से द्वेष करते हैं, स्त्री सुन्दर, शिक्षित मिलती है, जो कि दुःख-विपत्ति के समय धैर्य तथा सान्त्वना देती है और घर की बागडोर हाथ में लेकर घर को सुव्यवस्थित रखती है, इसे वासना कम होती है, इनकी मिलनसार प्रकृति पर-स्त्री को मोह जाल में फँसा लेती है, जल यात्रा में कष्ट होता है, और जब वृष का शुक्र हो तो शिक्षा अच्छी होती है, ये लोग व्यापार तथा कलापूर्ण कार्यों में धन तथा यश प्राप्त करते हैं, स्त्री सुन्दर, आज्ञाकारी, प्रिय, गृहभार संभालने वाली होती है, किन्तु कामासक्त होती है, ये लोग स्वयं कई स्त्रियों से सम्बन्धित होते हैं, विदेश यात्रा में विजाती प्रेयसी से धन-लाभ करते हैं, वह नर्स, अभिनेत्री या परिचायक हो।

जब द्वादशेश शुक्र मकर का हो तो जातक पूर्ण-अपूर्ण दोनों प्रकार के शिक्षित होते हैं, ये लोग थोक व्यापार, शिक्षा-विभाग में प्रधानत्व प्राप्त करते हैं, किसी संस्था के प्रधान हो सकते हैं, विवाह होता है, स्त्री-बच्चों से झगड़ा रहता है, इनको पर-स्त्रियों से धन प्राप्त होता है, विदेश यात्रा में कष्ट होता है और किसी विधर्मी स्त्री के प्रेम में पागलपन आता है, मित्रों से धोखा मिलता है, और कई

गुप्त रोग होते हैं और जब मिथुन का शुक्र हो तो मनुष्य की शिक्षा अपूर्ण रहती है, अस्थिर प्रकृति कामासक्त होने के कारण किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती, स्त्री भी कामासक्त मिलती है, व्यभिचार-रत रहती है, इसलिये घर में झगड़ा रहता है, बदनामी होती है, इन्हें स्त्री से गर्मी, सुजाकादि रोग लगते हैं, किसी स्त्री द्वारा चोरी का लांछन लगता है या फिर किसी परिवर्तनशील यात्रा में पर-स्त्री संसर्ग से धन की प्राप्ति होती है।

यदि द्वादशेश शुक्र कुम्भ का नवम स्थान में हो तो जातक सुशिक्षित तथा कला-कौशलपूर्ण कार्यों द्वारा धन तथा यश पाने वाला, शान्तिप्रिय, शुभ कर्मों में आलस्य करने वाला, पैतृक सम्पत्ति से वंचित होता है। यह शनैः-शनैः उद्योग द्वारा अपनी स्थिति को सँभालने वाला होता है, इनका विवाह देर में होता है, और ये लोग पुत्रोत्पत्ति के बाद स्थिरता को प्राप्त हो भाग्योदय को प्राप्त होते हैं, ये अपनी स्त्री के भाग्य से ही अपनी आशाओं को पूर्ण करने में सफल होते हैं, विदेश यात्रा या लोहे या कृष्ण वस्त्रादि ऊनी कपड़ों के व्यापार से लाभ पाते हैं और जब कर्क का शुक्र होता है तो अनेक गुणों तथा कलापूर्ण कार्यों से युक्त होने पर भी शिक्षा पूर्ण नहीं होती, स्त्री सुशील होती है, फिर भी इन लोगों की पर-स्त्री गमन के घर में कलह रहती है। बनावटी धर्म-कर्म तथा तीर्थ नियम व्रत करते हैं, मदिरा पान के कारण मन्दाग्नि तथा धातुक्षीणादि रोग होते हैं। चंचल प्रकृति होते हैं और किसी विधवा से प्रेम सम्बन्ध रखते हैं, जिस स्त्री से धन मिलता है उसके मरते ही समस्त वैभव नष्ट हो जाता है। इनकी अपने स्वसुर से अनबन रहती है। निन्द्य कर्म से प्रसन्न रहते हैं।

जिसका द्वादशेश शुक्र मीन का दशम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अड़चनों के बाद पूरी होती है। ये लोग गायक, ज्योतिषी तथा अन्य प्रकार के कलाकार हो सकते हैं, इन्हें नौकरी तथा अन्य व्यवसायों में धन तथा यश की प्राप्ति होती है। माता-पिता तथा उनकी सम्पत्ति का सुख रहता है। यदि विवाह -० वर्ष के निकट हुआ तो दूसरा विवाह स्त्री मृत्यु पर करना पड़ता है, बच्चों का पूर्ण सुख रहता है। हो सकता है प्रथम पुत्र से अनबन रहे सम्भव है कि धन की प्राप्ति के लिए किसी स्त्री से अनुचित सम्बन्ध भी रहे और जब सिंह का शुक्र हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, सरकारी नौकरी में प्रगति होती है।

विवाह सम्पन्न घर में होता है। ज्योतिष, हस्त सामुद्रिक तथा अन्य कलापूर्ण कार्य, फुलवारी लगाने आदि का शौक होता है, यदि विदेश यात्रा हुई तो पर-स्त्री गमन करते हैं, माता-पिता का सुख कम होता है, पुत्रों से कन्यायें अधिक होती हैं। ये लोग लोकप्रिय होना चाहते हैं। मित्रों को धोखा नहीं देते। पैसा बहुत कमाते हैं, फिर भी धन तृषा नहीं त्यागते।

जब द्वादशेश शुक्र मेष का एकादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। फिर भी ये लोग नौकरी के साथ व्यापार अथवा कलापूर्ण कार्यों द्वारा अच्छा धन तथा यश प्राप्त कर लेते हैं, विवाह देर में होता है, इसलिए पर-स्त्री प्रेम में अथवा वेश्यागमन में किसी झगड़े या मुकदमे में धन तथा मान हानि को प्राप्त होते हैं। किन्तु स्त्री सुलक्षणा प्राप्त होती है, बड़े भाई से अनबन रहती है, या उनका पालन करना पड़ता है, सन्तान चिन्ता रहती है, ये लोग स्वार्थी, धन तृषित तथा नीच जाति की स्त्रियों के प्रेम में पतित होते हैं और जब कन्या का शुक्र हो तो मनुष्य अपूर्ण शिक्षित तथा कामी होता है, ये लोग प्रेम-विवाह के अनुयायी, विधर्मी, विजाती स्त्री के परिचायक होते हैं और सदा श्रृंगारी, पतित कन्या को चाहते हैं, इन्हें गुप्त रोग तथा अनेक चिन्तायें होती हैं। पर-स्त्री वार्ता में निपुण होते हैं और चतुरता से वार्ता माधुर्य द्वारा विना खर्च किये उसे भगा ले जाते हैं। लेखन सहयोगी परिपाटी अपनाते हैं।

यदि द्वादशेश शुक्र वृष या तुला का स्वगृही द्वादश भाव में हो तो जातक श्रृङ्गारी कवि, कलाकार, अभिनेता, अभिनेत्री का ड्रामे में पार्ट करने वाला, फिल्म में गायन-वादन कार्य करने वाला, सुन्दर स्त्रियों से प्रेम करने वाला, इष्ट-मित्रों में यशस्वी होता है। इसको अपने विवाह में अच्छा धन तथा यश प्राप्त होता है, ये अत्यधिक कामी तथा व्यभिचारी होते हैं। इसलिए विवाहिता स्त्री से कलह रहती है, घर में सुख-शान्ति कभी नहीं होती, फिर भी इनमें उदारता की मात्रा अधिक पाई जाती है और किसी योग्य निर्धन की सहायता पूर्ण रूप से कर उसे किसी योग्य बना देने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। धन खूब कमाते हैं और खर्च भी खूब करते हैं। इनका जीवन सांसारिक दृष्टि से सुखमय रहता है। इनमें परमार्थ दृष्टि कम पाई जाती है। परोपकार कर्त्तव्य समझकर नहीं बल्कि मौज में किया जाता है। जल क्रीड़ा, जल यात्रा, जलविनोद के

शौकीन होते हैं, पर-स्त्री रति को पाप नहीं मानते, विदेश यात्रा यदि हो तो पर धर्म तक पर-स्त्री के लिए अपनाने में संकोच नहीं करते।

द्वादशेश शनि फल

शनि—जिसका द्वादशेश शनि कुम्भ का लग्नगत हो तो जातक सुशिक्षित तथा ऊँचे विचारों वाला होता है। ये लोग मिल्स फर्म्स कारखानों के मालिक तथा नौकर दोनों रूपों में पाये जाते हैं। ये लोग अच्छे तार्किक होनेके नाते सबकी सहानुभूति प्राप्त कर लेते हैं। अक्सर ये लोग विवाह नहीं कर पाते, यदि विवाह हो जाय तो पत्नी से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते, भाई और पिता से अनबन रहती है। सरकारी नौकरी में प्रगति कम होती है, स्त्री अच्छी मिली तो बीमार रहती है। ये लोग झूठे, गम्भीर, धूर्त होते हैं, और निजी स्वार्थ के लिए दूसरों को कष्ट तथा हानि पहुँचाते हैं, और जब मीन का शनि हो तो मनुष्य की प्रकृति अच्छी होती है। व्यवहार कुशल होनेके कारण अपना मतलब सहज हल कर लेते हैं, फिर भी भाग्य से प्रसन्न न होने के कारण जीवन से हताश तथा उदास रहते हैं। विवाह देर में होता है, प्रेयसी वियोग में आत्महत्या तक कर लेते हैं। अधिकतर सरकारी नौकरी करते रहते हैं, किन्तु अप्रसन्न हैं, पुत्र चिन्ता बनी रहती है, कन्याओं की वैसे चिन्ता रहती है, पिता की सम्पत्ति का सुख नहीं होता।

जब द्वादशेश शनि मीन का दूसरे भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है, फिर भी व्यापार द्वारा विपुल धन राशि कमाते हैं, विदेशी माल से लाभ होता है। जलयात्रा से हानि होती है, धन परोपकार में लगाते हैं, शत्रुओं को दबाकर रखते हैं, स्त्री-बच्चों का सुख सामान्य रहता है। जलोदर, वायु-विकार होते हैं। बड़े भाई का सुख नहीं होता, और जब मेष का शनि हो तो, मनुष्य की शिक्षा अधूरी रह जाती है, मनुष्य क्रोधी, हठी तथा दृढ़ प्रतिज्ञ होता है। जीवन के पूर्वार्ध में अपनी उथल-पुथल देख लेने के बाद अपनी परिस्थिति को सुधार कर रहता है। द्विभार्या योग होता है, स्त्री से अनबन रहने के कारण सुख नहीं मिलता, स्त्री द्वेष के कारण धन-मान हानि होती है, बन्धु तथा कुटुम्बियों से झगड़ा रहता है। प्रयास में रहना पड़ता है। शान्ति प्राप्त नहीं होती, सदा प्रबल शत्रुओं से वास्ता पड़ता है, रक्तवायु विकार के कारण शरीर रोगी रहता है, और स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

यदि द्वादशेश शनि मेष का तीसरे स्थान में हो तो जातक शेर के समान गम्भीर तथा बहादुर होता है। शिक्षा अपूर्ण रहती है, ये लोग सेना-पुलिस विभाग में पूर्ण रूप से सफल होते हैं और वीरता के लिए पारितोषिक पाते हैं। भाइयों से कलह रहता है, विवाह होता है, पर सुख कम होता है, प्रवास में रहना पड़ता है, सन्तान चिन्ता रहती है, प्रथम पुत्र शोक देखना पड़ता है, भाग्य समय पर साथ नहीं देता। धर्म-कर्म में रुचि कम होती है, जल यात्रा में सुख मिलता है, मैनेजरी कार्य में भी सफलता मिलती है और जब वृष का शनि हो तो मनुष्य की शिक्षा अच्छी होती है। ये लोग क्रोधपूर्ण तथा दुराग्रही होते हैं फिर भी निजी परिश्रम से अपनी स्थिति को सुधार कर उन्नत मस्तक करते हैं इसलिये इष्ट-मित्र द्वेष करते हैं और हानि पहुँचाते हैं, इन्हें स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम मिलता है, पाप वृत्ति के कारण धर्म-कर्म से दूर रहते हैं, यात्रा में कष्ट पाते हैं, रोगों के कारण खर्च काफी होता है।

जिसका द्वादशेश शनि वृष का चतुर्थ भाव में हो, तो शिक्षा अच्छी होने पर भी सरकारी नौकरी में विशेष उन्नति नहीं होती। औफीसरों से झगड़ा रहता है, इनके स्वतन्त्र विचार इन्हें झुकने नहीं देते, शत्रु होते हैं, किन्तु दबे रहते हैं, पिता यदि जीवित रहे तो झगड़ा रहता है, माता बीमार रहती है। वायु रोग होने के कारण स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। पिता से दूर रहना पड़ता है इसलिये पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं होता, भाई स्वार्थी होते हैं, व्यापार में उन्नति नहीं होती, यदि विवाह हुआ भी तो स्त्री-बच्चों का सुख कम ही होता है और मिथुन का शनि हो तो जातक शिक्षित होता है, किन्तु उसकी बुद्धि मैकेनिक होती है, उसकी उन्नति से उसके इष्ट-मित्र जलते हैं। यदि विवाह हो तो दो तक हो सकते हैं, प्रवास में रहना पड़ता है, सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ता है, प्रबल शत्रु से वास्ता पड़ता, मुकदमे में विजय होती है। नन्साल सुख नहीं होता। वायु, रक्त, कफ, स्वाँस सम्बन्धी रोगों से शरीर पीड़ित रहता है। पाप कर्म को ओर रुचि बढ़ती है।

जब द्वादशेश शनि मिथुन का पंचम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण हो जाती है और ये लोग वकील, डाक्टर तथा अन्य सरकारी

नौकरियों में प्रगति शनैः-शनैः कर अच्छी स्थिति प्राप्त कर लेते हैं। झूठ बोलकर, विनय द्वारा अपना कार्य बना लेते हैं, माता-पिता, स्त्री-बच्चों, का सुख कम होता है, पैतृक सम्पत्ति प्रथम तो प्राप्त नहीं होती, यदि प्राप्त हुई तो त्यागनी पड़ती है। पत्नी बीमार रहती है, कुटुम्बियों से नहीं बनती, व्यापार में हानि होती है और जब कर्क का शनि हो तो शिक्षा में अनेक रुकावटें आती हैं, इनकी प्रकृति अच्छी नहीं होती। नौकरी करनी पड़ती है। अन्त में चुनाव आदि जीत कर यश तथा धन प्राप्त करते हैं। स्वार्थी तथा कृपण होते हैं, स्त्री से विरोध रहता है, सन्तान अधिक होती है, कन्यायें ही विशेष होती हैं। गर्भ गिराने आदि की प्रवृत्ति होती है, स्त्री बीमार रहती है। जलयात्रा में प्राणभय रहता है। ये लोग चलचित्त होने के कारण अपना निवास स्थान तथा व्यवसाय बदलते रहते हैं।

यदि द्वादशेश शनि कर्क का छठे घर में हो तो जातक की शिक्षा बहुत कम होती है। इसलिए छोटे-छोटे व्यवसायों द्वारा आजीविका कमानी पड़ती है। शत्रु दबे रहते हैं, मुकदमे तथा चुनावों में जीत होती है। प्रथम तो विवाह में अड़चनें पड़ती हैं। यदि विवाह सम्पन्न हो भी गया तो स्त्री से कलह रहती है, बच्चों का सुख नहीं होता, भ्रातृ कष्ट रहता है, नेत्र पीड़ा रहती है, जल-यात्रा, तैरने तथा जल विनोद, नौका विहार आदि में प्राण संकट उत्पन्न होता है। मामा से विरोध रहता है, किसी सुन्दर स्त्री का प्रेम, चोरी, विष तथा आत्महत्या का कारण बनता है और यदि सिंह का शनि हो तो मनुष्य क्रोधी, प्रतिशोधपूर्ण, पिता द्वेषी, नन्साल रहित तथा अग्नि, चोरी का भय होता है, यह सब कार्य गुप्त प्रबल शत्रु द्वारा होने शक्य है फिर भी ये लोग इन सभी स्थितियों पर विजय पाते हैं, विदेश यात्रा, विदेशी व्यापार से लाभ होता है। नेत्र शक्ति क्षीण करता है। भाइयों की शक्ति ह्रास करता है। भ्रातृ सुख नहीं होता।

जिसका द्वादशेश शनि सिंह का सप्तम भाव में हो तो जातक की शिक्षा रुक-रुक कर पूर्ण होती है। ये लोग अच्छे वकील, न्यायाधीश तथा कानून गो, तहसीलदार आदि होते हैं। इनकी प्रकृति गम्भीर, मिलनसार तथा बदला लेने की होती है, ये लोग परिश्रम तथा एकान्तप्रिय होते हैं। अपने क्रोध को दबाये

रखने के कारण कृशगात रहते हैं, वायु रोग होता है, स्त्री सुन्दर, गर्वीली तथा खर्चीली होती है, मातृ सुख कम मिलता है, अभाग्यवश आपत्तियाँ आती रहती हैं, पैतृक सम्पत्ति का सुख नहीं मिलता और जब कन्या का शनि हो तो शिक्षा अपूर्ण रहती है। लोह, लकड़ी, पत्थर, कोयले के कार्य में सफलता मिलती है। ३६ वर्षोपरि भाग्य में उन्नति होती है, इसके पहले शत्रुओं से झगड़ा रहता है। माता-पिता, बहन-भाई, स्त्री-बच्चों का सुख सामान्य रहता है, ये लोग बीमार रहते हैं या उनसे अनबन रहती है।

जब द्वादशेश शनि तुला का अष्टम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अड़चनों के बाद पूर्ण होती है और ये लोग परिस्थिति के अनुसार वकील, डाक्टर, वैज्ञानिक तथा खानों के ओफीसर तक होते हैं। यद्यपि सरकारी नौकरी में प्रगति नहीं होती, फिर भी उपर्युक्त कार्यों द्वारा धन और यश प्राप्त करते हैं। इन्हें स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, तैरने, जलविनोद, जलयात्रा में सुख मिलता है और जब कन्या का शनि हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। ये लोग चालाकी तथा जोर के साथ धन कमाते हैं, प्रेम के सम्बन्ध में कष्ट मिलता है। विवाह हुआ तो स्त्री से नहीं बनती, बच्चों का सुख नहीं होता, अनेक रोग होते हैं, वायु, पित्त, कफ, स्वांसादि रोगों के उपचार में धन खर्च होता है। श्वसुर से, पिता से कलह रहती है, यात्रा में प्राण संकट उत्पन्न होता है, चोरी का माल धरने के अपराध में कारावास तक की नौबत आ जाती है। यह सब किसी स्त्री पक्ष से होता है।

यदि द्वादशेश शनि तुला का नवम स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग कानून के जानने वाले बड़े वकील, डाक्टर, जज तथा वैज्ञानिक अनुसन्धान कर्ता के रूप में यशस्वी होते हैं, ये लोग उपकारी, दानी तथा काम शास्त्र प्रवीण होते हैं, इनके समस्त कार्य धार्मिक विचारों द्वारा न होकर उमंग या संसर्ग द्वारा होते हैं। इनमें नास्तिकता की पुट पाई जाती है, विदेश यात्रा के समय ये अवश्य ही विजाती स्त्री से व्यभिचार करते हैं, इनका विवाह देर में होता है, यदि बच्चे हुए तो बीमार रहते हैं। भाई से कलह रहती है, किसी स्त्री शत्रु द्वारा अपमानित होना पड़ता है और यदि वृश्चिक का शनि हो तो

मनुष्य शूर-वीर, शत्रुओं को जीतने वाला हठी होता है, शिक्षा कम होती है फिर भी धर्म-कर्म में कुछ रुचि अवश्य पाई जाती है। ४२ वर्ष तक भाग्य से अनबन रहती है। तत्पश्चात् व्यवसाय से लाभ होता है, भ्रातृ सुख बहुत कम होता है, विवाह देर में होता है, शत्रु दबे रहते हैं फिर भी अग्नि, चोरी के मामले में फँसाने का प्रयत्न करते हैं। जलयात्रा में प्राण संकट रहता है। विवाह या प्रेम का परिणाम कष्टमय होता है।

जिसका द्वादशेश शनि वृश्चिक का दशम भाव में हो तो जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। फिर भी इन्हें ज्योतिष, हस्तसामुद्रिक तथा अन्य शास्त्रों का अच्छा अभ्यास होता है, या ये लोग सेना, पुलिस विभाग में अच्छी प्रगति करते हैं और अपने शूरता पूर्ण कार्यों के लिए पारितोषित तथा पदक पाते हैं, देश-विदेश की यात्रा में धन तथा यश मिलता है, पिता से अनबन रहती है, उसकी सम्पत्ति का सुख नहीं होता, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है। ये बीमार रहते हैं, स्त्री की मृत्यु के पश्चात् ये लोग ढोंगी साधु के रूप में धर्म का उपदेश करते हैं। इनकी वासना प्रबल होती है और जब धन का शनि हो तो शिक्षा पूर्ण होती है। ये लोग अच्छे वकील, सरकारी डाक्टर, न्यायाधीश तथा बड़े क्लर्क आदि होते हैं। ये लोग बड़े दयालु, उदार तथा घर की परिस्थिति सुधारने को तत्पर रहते हैं, किन्तु कृपण होते हैं, माता-पिता का सुख कम रहता है। स्त्री अच्छी होती है किन्तु बीमार रहती है, गर्भपात हो सकते हैं, सन्तान चिन्ता रहती है।

जब द्वादशेश शनि धन का एकादश स्थान में हो तो जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। सरकारी नौकरी तथा व्यवसाय दोनों में अच्छी प्रगति रहती है, देश-विदेश की यात्रा में सुख मिलता है। भ्रातृ सुख कम होता है, स्त्री सुन्दर तथा स्वच्छन्द स्वभाव की होती है, सन्तान सुख बहुत कम होता है, शरीर रोगी रहता है, वायु, स्नायु, स्वांसादि की पीड़ा रहती है, मितव्ययी तथा लोभी होते हैं, धन के कारण समाज में आदर पाते हैं और जब मकर का शनि होता है तो लोहे, कोयले, पत्थर आदि के व्यवसाय में लाभ रहता है। भ्रातृ सुख रहता है, ये लोग चालाकी और धोखे द्वारा खूब उन्नति करते हैं, विवाहित जीवन इनके

लिए सुखकर नहीं होता। इनका प्रेम सम्वन्ध किसी निम्न जाति की स्त्री से होता है, जलयात्रा में सुख मिलता है, विदेश में पथभ्रष्ट हो जाते हैं।

यदि द्वादशेश शनि मकर कुम्भ का द्वादश भाव में स्वगृही हो तो जातक की शिक्षा किसो न किसी विषय में पूर्ण होती है। ये लोग वकील, डाक्टर, लोहे, कोयले, पत्थर आदि की खानों में ऑफीसर या क्लर्क भी होते हैं, वनस्पति तथा जल विभाग में पदाधिकार प्राप्त कर अच्छा धन तथा यश कमाते हैं, पत्नी गुणवतो तथा समझदार होती है, घर में शान्ति रहती है, मितव्ययी होते हैं, ये लोग रूढ़िवादी होते हैं, सन्तान कम होती है किन्तु विवाह के बाद नेत्र ज्योति क्षीण होने लगती है। कुटुम्बियों से नहीं बनती, शत्रु दबे रहते हैं, भाग्योदय देर में ३६ से ४२ तक होता है। धार्मिक कार्यों में अड़चनें आती हैं। तैरने, जल-विनोद में कष्ट होता है। विदेश यात्रा में किसी नीच स्त्री के प्रेम-सम्वन्ध से गुप्त रोगों को प्राप्त होते हैं और लोकापवाद को प्राप्त होते हैं। कुम्भ का शनि विप्लव कराने वाला होता है।

लग्न

लग्नेश—उदार, चंचल, पर-स्त्रीरत, कामी तथा उदण्ड होता है।

धनेश—धनी, निष्ठुर, कामी, परसेवक, कुटुम्ब द्वेषी।

सहजेश—नौकर, साहसी, सैनिक, विद्याहीन, पौरुषयुक्त कार्य में धन पाने वाला होता है।

सुखेश—विद्वान्, ज्ञानी हो तो भी अपने पर विश्वास न करे, सभा में चुप-रहे अन्त में त्यागी हो जाय।

सुतेश—विद्वान्, चतुर, सत्कर्मी, भक्त, यशस्वी, सन्तानकष्टी, द्विभार्या, स्वाभिमानी हो।

अरीश—शिक्षा कम, साहसी, घमंडी, धन-हीन, शत्रु युक्त, रोगी, अपयशो होता है।

कामेश—चंचल, कलह, यात्रा प्रिय, दुष्ट, कामी, लंपट, चतुर, स्वतन्त्र जीविका, वात रोगी होता है।

निधनेश--नास्तिक, उद्विग्न मन, स्त्री को कष्ट हो, स्वयं भी रोगी रहे, किसी दुर्घटना से चोट लगे, द्विभार्या योग हो।

भाग्येश--गुणी, कीर्तिमान्, धार्मिक, सत्कार्य में खर्च करने वाला, उदार, कार्यसिद्धि कठिनता से ही होती है।

कर्मेश--साहसी, विद्वान्, साहित्य कविता से धन प्राप्ति हो, बचपनमें रोगी रहता है।

लाभेश--धनवान्, सात्त्विक, समदृष्टि, हँसाने वाला, क्रीडारत, सुयशी तथा आरोग्य होता है।

व्ययेश--धन, विद्याहीन, दुर्बल, कफ-वात रोगी, सन्तापी, स्त्री रोगी, ऋणी, होता है।

धन

लग्नेश--उदार, अभिमानी, धार्मिक, कृपण, दुखी, पर सेवक होता है।

धनेश-धनिक, स्वाभिमानी, कामी, दो-तीन स्त्री वाला, पुत्र सुख से रहित होता है।

सहजेश--आलसी, स्थूल शरीर, कामी, दुश्चरित्र, पर धन, पर-स्त्री की कामना करने वाला, पापी होता है।

सुखेश--कृषक, व्यापारी, साहसी, धनी, कुटुम्ब से सुखी, मातृ सुखी, जायदाद सहित होता है।

सुतेश--विद्या-बुद्धिसे युक्त, स्त्री पुत्रवान्, धन-धान्यपूर्ण, क्रोधी, स्वांस रोगी, इष्ट मित्र युक्त, उदार प्रकृति होता है।

अरीश--शत्रु युक्त, इष्ट मित्र सम्पत्ति पर झगड़ा करने वाला, प्रवासी, साहसी, अचल वक्ता तथा निन्दक होता है।

कामेश--दीर्घसूत्री, विलासी, व्यापारी, स्त्रियों से धन पाने वाला, अनेक स्त्री प्रेमरत, कुटुम्ब सुख से सुखी होता है।

निधनेश--अकल्पित धन लाभ हो, चोरी से धन नष्ट हो, इष्ट-मित्रों से कलह रहे, अनेक रोगों पर खर्च हो, चोट लगे।

भाग्येश---लोक प्रियवक्ता, धन का सदुपयोगी, स्वजनसुखी, भाग्योदय की सदा चिन्ता रहती है, धन कई प्रकार से आता है ।

कर्मेश---नौकरी से धन पाने वाला, धार्मिक, गुणवान्, प्रबल वक्ता, उत्सवों में धन व्यय करने वाला होता है ।

लाभेश---धनिक, व्यापारी, स्त्रीपुत्र कुटुम्ब से सुखी, धार्मिक, सत्कर्मी, उदार, उपकारी, तपस्वी तथा समाज में आदर पाने वाला होता है ।

व्ययेश---शुभ गुण युक्त, प्रियवादी, कुटुम्ब पर खर्च करने वाला, ऋणी, अतिथि सेवक होता है, भक्ति तथा सत्कर्मों द्वारा यश पाता है ।

भ्रातृ

लग्नेश---पराक्रमी, सुखी, दो स्त्री वाला, धनिक, बुद्धिमान्, भ्रातृ सुख से सुखी होता है ।

धनेश---बुद्धिमान्, उद्यमी, शूर, लोभी तथा पर-स्त्री सेवन करने वाला होता है ।

सहजेश---उद्यमी, पराक्रमी, सैनिक, धन-धान्य, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी तथा अनेक भोग युक्त, भ्रातृ सुखी होता है ।

सुखेश---जमीन-जायदाद से धन पाने वाला, उदार, दानी, गुणवान्, रोग-युक्त, कामी होता है ।

सुतेश---उद्यमी, मायावी, उपकारी, सत्कर्मी, लोभी, भक्त, चुगलखोर, पुत्र पराक्रम से युक्त होता है ।

अरीश---विद्यारहित, चल-चित्त, साहसी, उदार, परसेवी, बन्धु कलह युक्त तथा इन्द्रियलोलुप होता है ।

कामेश---पराक्रमी, रिश्वत खानेवाला, भ्रातृ सुख से सुखी, पुत्र सुख से रहित, कन्या उत्पन्न हो, जीवित भी रहती है ।

निधनेश---कुकर्म द्वारा धन लाभ रहे जो कि चोरों द्वारा हरण हो, पराधीनता का दुख रहे भ्रातृ, सुख न हो । दन्त-कर्ण रोगी हो ।

भाग्येश---पराक्रमपूर्ण कार्यों के लिये सम्मान मिलता है, भ्रातृ सुख प्राप्त होते रहने पर भी प्रगति उत्कर्ष की नित नई चिन्ता रहती है ।

कर्मेश--पराक्रमी, सैनिक तथा व्यापार से लाभ पाने वाला, स्वतन्त्र विचार, प्रगतिशील, उत्साही होता है।

लाभेश--भाई को सुख देने वाला, स्वतन्त्र व्यवसाय, तीर्थ यात्रा में तत्पर, कार्य कुशल, कर्ण-दन्त, शूल रोगी होता है।

व्ययेश—स्वतन्त्र व्यवसाय करने वाला, साहसी, हिंसक, गुरुद्रोही, द्विभार्या, स्त्री-बन्धु द्वेषी, यात्रा में कष्ट पाने वाला होता है।

मातृ

लग्नेश--सुन्दर, गुणवान्, कामी, माता-पिता, भाई-बहन के सुख से सुखी होता है।

धनेश--गुणवान्, धन-धान्य युक्त, नास्तिक, मकान बनाने वाला, सुखी होता है।

सहजेश--अपूर्ण विद्या, दुखी, रोगी, स्त्री सुख से रहित, बुद्धिमान्, दुर्बल हृदय, उदार होता है।

सुखेश--माता-पिता से सुखी, धन-धान्य पूर्ण, चतुर, प्रियवादी, शान्त, पैतृक सम्पत्ति से युक्त, घर से प्रेम करने वाला होता है।

सुतेश--शिक्षित, बुद्धिमान्, उपासना रत, मातृ संमुखी, व्यवहार कुशल, बड़ा होकर गर्व करने वाला, लोभी होता है।

अरीश--शिक्षा शून्य, मातृ द्वेषी, पैतृक सम्पत्ति रहित, पशु-चोट भय, गुरुजन द्वेषी, चुगलखोर होता है।

कामेश--धार्मिक, सत्कर्मी, सत्य वक्ता, दन्त रोगी, विलासी, पतित स्त्री का पति होता है।

निधनेश--बन्धु सुख रहित, चुगलखोर, माता-पिता से कलह, अनायास धन पाने वाला, बीमारी पर खर्च करने वाला होता है।

भाग्येश--शिक्षित, पदवृद्धि, माता-पिता की सम्पत्ति का सुख रहता है, अपना बागादि या नया मकान बनाकर रहने की चिन्ता रहती है। एकान्त सुखी रहता है।

कर्मेश--राज्य सेवा से धन पाने वाला, धन-धान्य पूर्ण, गुरुजनों का सत्कार करने वाला, प्रगतिवान्, जायदादवान, साहसी होता है।

लाभेश--धन-धान्य पैतृक सम्पत्ति, मातृ सुख से युक्त, राज्यसेवी, प्रगतिशील, हर्ष, यश से युक्त, विनीत होता है।

व्ययेश--माता-पिता का विरोधी होते हुए भी उन पर खर्च करने वाला, यात्रा करने वाला, घर से बाहर रहने वाला, मन्दगति, अपूर्ण इच्छाओं वाला होता है।

सुत

लग्नेश--ज्ञानी, मानी, ध्यानी, क्रोधी, नौकर, पुत्र सुख कम, स्त्री सुख कम, गर्व युक्त होता है।

धनेश--धनवान्, दयालु, कामी, स्त्री पुत्र सुख से सुखी, मित्रद्वेषी, जार योग रहता है।

सहजेश--क्रूरकर्मी, धनिक, भ्रातृ द्वेषी, पराक्रमी, विद्याहीन, पुत्र कलह रखने वाला होता है।

सुखेश--सुख से विद्या पाने वाला, स्वाभिमानी, सत्कर्मी, स्त्री-पुत्र से सुखी, धनवान तथा शान्त होता है।

सुतेश--चंचल-चित्त, पुत्र विद्या में एक हो, धार्मिक, उपासनारत, गर्वयुक्त, विद्वान् होता है।

अरीश--शिक्षित, नास्तिक, इष्टमित्र, सन्तान का शत्रु, धन-हीन, पापी होता है।

कामेश—धनी, मानी, गुणी, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, इसकी स्त्री ईश्वर भक्त होती है।

निधनेश--बुद्धि-हीन, स्त्री-पुत्र, मकानादि सुख से रहित, दुर्गुणी, सट्टादि लगाने वाला होता है।

भाग्येश—विद्वान्, कवि, सत्कर्मी, उत्साही, स्त्री-पुत्र से सुखी, समाज में आदर पाने वाला, भाग्यवान्, गुणग्राही, अभिमानी होता है।

कर्मेश--शिक्षित, शिक्षा से लाभ पाने वाला, सुप्रबन्धक, स्त्री-बच्चों से सुखी, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान् होता है।

लाभेश--शिक्षित, विद्वान्, धार्मिक, सत्कर्मी, स्त्री-पुत्र सुख से सुखी, हँसमुख, धन-धान्य से सुखी, गर्वयुक्त होता है।

व्ययेश--अशिक्षित, मन्दबुद्धि, स्त्री, सन्तान कष्ट, कलह प्रिय, ऋण चिन्ता ग्रसित, यात्रा युक्त, दुखी सा रहता है।

अरि

लग्नेश--पराक्रमी, शत्रुवान्, मातुल सुखी, दो स्त्री युक्त, धन हीन, बुद्धिमान्, पापरत, शत्रु युक्त होता है।

धनेश--पराक्रमी, शत्रुजित, धनवान, गुदा, जांघ में रोगवान, मामा द्वेषी या सुख से रहित होता है।

सहजेश--विद्या रहित, मामा के सुख से रहित, मामी प्रेमरत, शत्रुयुक्त, गुप्त रोगी होता है।

सुखेश--चौरकर्म रत, क्रोधी, दुष्ट संगति, जादूगर, मातृद्वेषी, नन्साल सुख से रहित, नशे पान करने वाला होता है।

सुतेश--विद्या-बुद्धि हीन, पुत्र से कष्ट, गोद लेने का योग भी होता है।

अरीश--शिक्षाहीन, गर्वयुक्त, शत्रुयुक्त, मुकदमेबाज, ऋणी, चोर, कुकर्मी होता है।

कामेश--क्रोधी, कलहप्रिय, रोगी, स्त्री, कष्ट हो, किसी स्त्री विरोध में धन खर्च हो।

निधनेश--अनेक चिन्तायुक्त, जल, सर्प, विष, चोर या शत्रु द्वारा दुर्घटना से शरीर कष्ट हो, विचार अपयशी होता है।

भाग्येश--अशिक्षित, शत्रुयुक्त, मातुल सुख से रहित, बड़े भाई को कष्टदा होता है, यात्रा में स्वयं कष्ट पाता है।

कर्मेश--उद्योग में अड़चनों से युक्त, शत्रु युक्त, चोरी में दंड पाने वाला, अपयशी, दुखित, भयभीत होता है।

लाभेश--मामा से सुख पाने वाला, शत्रु युक्त, चोर-अग्नि से हानि उठाने वाला, प्रवासी, पर सेवक, रोगी होता है।

व्ययेश--क्रोधी, दुखी, मातृ पक्ष विरोधी, शत्रु, चोर, नौकर, अग्नि, विष आदि से हानि पाने वाला, लम्पट होता है।

जाया

लग्नेश–धनिक, कृपण, स्त्री सुख कम, पर-स्त्री प्रेम-रत, स्त्री मृत्यु पर विरक्त, साधु वृत्ति हो जाता है।

धनेश–वैद्य, डाक्टर, पर स्त्री प्रेम तथा धन पाने वाला, माँ या स्त्री व्यभिचारिणी होती है, पापरत रहता है।

सहजेश–चौरकलापूर्ण, पर स्त्री रत, बाल्य रोगी, गुप्त रोगी, दंडित, नीच कर्म रत रहता है।

सुखेश–शिक्षित, शान्त, त्यागी, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, यात्राप्रिय, झूठे लांछन से युक्त होता है।

सुतेश–स्त्री शिक्षा से लाभ पाने वाला, धर्माभिमानी, सन्तान युक्त, यात्रा प्रिय, तार्किक, विवादी होता है।

अरीश–शिक्षा शून्य, स्त्री-पुत्र से शत्रुता रखने वाला, प्रवासी, धनहीन, रोगी, चोरी के माल को रखकर अपयश पाने वाला होता है।

कामेश–विलासी, चंचल बुद्धि, वात, धातुरोगी, कामी, लंपट, स्त्री सुख से सुखी तथा यात्रारत रहता है।

निधनेश–कामी, इन्द्रियलोलुपता से गुप्त रोगी, स्त्री पुत्र सुख से रहित, वात रोगी, यात्रा में कष्ट पाने वाला, दुष्कर्मी होता है।

भाग्येश–शिक्षित, अनेक यात्राएँ करने वाला, स्त्री से यश तथा उत्साह पाने वाला, विवाह के बाद प्रगति पाने वाला, कभी-कभी कार्य विफल हो जाता है।

कर्मेश–विद्वान्, कवि, लेखक, विदेश यात्रा से लाभ पाने वाला, साझे के व्यापार से लाभान्वित, उदार, सत्कर्मी होता है।

लाभेश–अशिक्षित, गुणी स्त्री वाला, कामी, उदार, स्त्री से लाभान्वित, रोगी स्त्री वाला, उद्यमी, पर स्त्री रत रहता है।

व्ययेश–विलासी, पर स्त्री के शृंगार पर मुग्ध रहने वाला, सभी सुख से रहित, मुकदमे में खर्च करने वाला, झगड़ालू होता है।

निधन

लग्नेश–चंचल, चालाक, चोर, जुआरी, क्रोधी तथा पर स्त्री भोगी होता है, रोगी तथा पापी होता है।

धनेश–कम पढ़ा, मकान, कृषि से धन कमाने वाला, रोगी, भाई, कुटुम्ब तथा स्त्री सुख से रहित होता है।

सहजेश-ज्ञानशून्य, चोरी का माल धरने वाला, पापरत, कामी, व्यभिचार में दंड पाने वाला, कुटुम्ब दोषी होता है।

सुखेश-अशिक्षित, मातृद्वेषी, अविकामी, क्लीव तथा जार जात हो सकता है, दुष्ट संगति, पापरत, प्रवास में कष्ट होता है।

सुतेश-शिक्षारहित, क्रोधी, रोगी, सन्तान सुख से रहित, प्रवास यात्रा में कष्ट पाने वाला, धर्मरहित होता है।

अरीश–अशिक्षित, साहसी, हिंसक, श्वसुर द्वेषी, रोगी, झगड़ालू कुकर्मी होता है, चोरों का माल रखता है।

कामेश-आदेशपूर्ण, रोगी, यात्रा में कष्ट, वात, पित्त, कफ से युक्त, ऋणी श्वसुर से कलह, चोरी का माल रखने वाला होता है।

निधनेश–रोगी, गुरु निन्दक, पापी, दुर्घटना से यात्रा में चोट खाने वाला, चोरी करने वाला, दुष्ट स्त्री के प्रेम में कष्ट, अपयश पाने वाला, होता है।

भाग्येश–शिक्षा रहित, भाई, मामा को कष्ट देने वाला, दुखी, पीड़ित, भाग्यहीन, यात्रा में कष्ट तथा अपयश पाने वाला निन्दक होता है।

कर्मेश–पैतृक संपत्ति से रहित, दुखी, चिन्तित, उद्विग्न मन, अपयशी, इसके उद्योग विफल रहते हैं।

लाभेश–चंचल चित्त, पर-स्त्री रति से अपयश पाने वाला, स्त्री स्वयं को शरीर कष्ट होता है। सट्टा, लाटरी, वैराज्ञ आदि जुए से लाभ होता है।

व्ययेश–द्यूत, सट्टा, रेस में धन-हानि पाने वाला, अनेक चिन्ताओं से युक्त, विलास प्रिय, रोगी, पापरत होता है।

धर्म

लग्नेश- भाग्यवान्, धन-धान्य युक्त, आस्तिक, धर्म-कर्मरत, स्त्री पुत्र, सुख से सुखी होता है।

धनेश–उद्यमी, धार्मिक, यात्राप्रिय, स्त्री-बच्चों से सुखी, बालरोगी, दुर्घटना से मृत्यु हो।

सहजेश–ज्ञानी, सत्कर्मी, विवाह के बाद भाग्योदय को प्राप्त हो, फिर भी दुखी सा रहे, इसके पिता को चोरी की लत होती है।

सुखेश–विद्या युक्त, सत्कर्मी, तीर्थयात्रारत, माता-पिता की सम्पत्ति से युक्त, उदार, धनवान्, शान्त, स्वतन्त्र विचार होता है।

सुतेश-विद्वान्, कवि, धन-धान्यपूर्ण, सत्कर्मी, तीर्थ यात्राप्रिय, यशस्वी, शान्त, उदार होता है।

अरीश–शिल्पज्ञ, काष्ठ-पाषाण व्यापारी, अल्पलाभी, अपयशी, चोट खाने वाला, नास्तिक होता है।

कामेश–धर्म कर्मरत, स्त्रीपुत्र सुख से सुखी, तीर्थयात्रा करने वाला, पर-स्त्री से प्रेम करने वाला, गुप्त रोगी होता है।

निधनेश–नास्तिक, पापरत कुकर्मी, धन तृषित, पुत्र सुख से रहित, किसी की वसीयत पाने वाला होसा है।

भाग्येश–गुणी, धार्मिक, यात्रा प्रिय, साहसी, सैनिक, धनी, भाग्यवान्, समाज में आदर पाने वाला, सुखी मनुष्य होता है।

कर्मेश–स्वतन्त्र व्यापार तथा नौकरी से लाभ हो, धार्मिक, सत्कर्मी, यात्रा प्रिय, भाग्योदय देर में, अति परिश्रम से हो।

लाभेश–नौकरी में भाग्योदय प्राप्त करने वाला, उद्यमी, धर्म-कर्मरत, तीर्थ यात्रा प्रिय, धनी, शुभ कार्यों में खर्च करता है।

व्ययेश–कुकर्म पर खर्च करने वाला, पापरत, रोगी, धन-धान्यहीन, सन्तान-कष्टी, अनेक चिन्ता से ग्रसित होता है।

राज्य

लग्नेश–राज्यसेवी, सुन्दर, गुणी, माता-पिता के सुख से सुखी, कामी, धन-धान्य युक्त, प्रतापी होता है।

धनेश–सरकारी नौकर, धन-धान्य युक्त, अभिमानी, स्वतन्त्र विचार, पुत्र-सुख से रहित होता है।

सहजेश–अपूर्ण विद्या, पराक्रमी, सैनिक, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित; पितृ-द्वेषी, कलह प्रिय, धनिक होता है।

सुखेश–शिक्षित, राज्यसेवी, रसायनादि का ज्ञाता, माता-पिता के धन का भोगने वाला, नीतिज्ञ, सुखी होता है।

सुतेश–सुशिक्षित, प्रतापी, पुत्रवान्, राज्य सेवी, उन्नतिशील, कुलदीपक होता है।

अरीश–साहसी, विदेश में सुख पाने वाला, कलहप्रिय, अप्रतिष्ठित, चोट खाने वाला होता है।

कामेश–उद्यमी, स्त्रीपक्ष से व्यवसाय या नौकरी में उत्कर्ष पाने वाला, धार्मिक, दन्तरोगी, स्वाभिमानी होता है।

निधनेश–प्रतापी, नित्य लाभ की योजना बनाने वाला गुरुजनोंका निन्दक, राजदण्डित होता है।

भाग्येश–पराक्रमी, साहसी, सैनिक, प्रबलवक्ता, क्रोधी, धार्मिक, पारितोषिक पाने वाला, उच्च पदाधिकारी होता है।

कर्मेश–विद्वान्, साहसी, नौकरी, राज्य सम्मान, पदवृद्धि कम, धार्मिक, सत्कर्मी, रोगी तथा चिन्तित होता है।

लाभेश–राज्यपद या व्यापार से लाभ उठाने वाला, चिन्तारहित, धन-धान्य से सुखी, निडर, सत्यवक्ता, चतुर, मानी, चिन्ता रहित होता है।

व्ययेश–धन, स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, मित्रों की सहायता से कार्य चलता है। व्यापार तथा नौकरी में प्रगति नहीं होती, पिता से अनबन रहती है।

लाभ

लग्नेश–व्यवसाय युक्त, कृपण, धार्मिक, यात्रा प्रिय, अभिमानी, उपकारी, चलचित्त तथा धन से युक्त होता है।

धनेश–उद्यमी, सत्कर्मरत, तीर्थयात्रा प्रिय, स्त्री-बच्चों से सुखी, व्यापार शिरोमणि, अचानक धन पाने वाला, भ्रातृ द्वेषी होता है।

सहजेश–नौकरी या व्यवसाय युक्त, उद्यमी, स्त्री-बच्चों से सुखी, धनवान्, लोभी, भ्रातृ द्वेषी होता है।

सुखेश–गुणवान्, सराफे या मकान-जमीन के कार्य से लाभ पाने वाला, दानी, उदार, रोगी तथा समाज में यश पाता है।

सुतेश–पण्डित, चतुर, लेखक, स्त्री-पुत्रादि सुख से युक्त, धन-धान्य पूर्ण, यशस्वी, वक्ता या व्यापारी होता है।

अरीश–मित्रों, भाइयों से वैर रखने वाला, सन्तानकष्टी, घमण्डी, उद्यमहीन, रोगी होता है।

कामेश–कुशल व्यापारी, मिलनसार, समाज में आदर पाने वाला, स्त्रीसुख से सुखी, पुत्र चिन्ता युक्त, धनी होता है। उपाय करने पर पुत्र होता है।

निधनेश–व्यापारमें उद्योग द्वारा कम धन पाने वाला, इष्ट-मित्रों से लाभ पाने वाला, यात्रा में कष्ट उठाने वाला, मातृद्वेषी होता है।

भाग्येश–विद्या विनय विपन्न, सत्कर्मी, गुरुभक्त, व्यापार, नौकरी से लाभान्वित, गम्भीर, भ्रातृ सुख से सुखी, उदार होता है।

कर्मेश–नौकरी या व्यापार से लाभ पाने वाला, स्त्री-पुत्र-भाई से सुखी, धनी, मानी, ज्ञानी, साहसी, सुखी होता है।

लाभेश–विद्वान्, कवि, लेखक, साहित्यिक, यशस्वी, धन, यश से पूर्ण, प्रेमी, समाज-सभाओं में सम्मानित होता है।

व्ययेश–मित्रों की सहायता से रत्न, पत्थर व्यापार से कुछ लाभ होता है। पैतृक सम्पत्ति से कार्य चलता है, भाई से कलह रहती है। सन्तान कष्ट होता है।

व्यय

लग्नेश–रोगी, खर्चीला, चोर, चंचल, जुआरी, क्रोधी तथा पर-स्त्रीरत रहता है।

धनेश–नौकर, उद्यमी, साहसी, घमण्डी, ऋणी, प्रथम पुत्र सन्तापी, सुरापी तथा पापरत रहता है।

सहजेश–बुद्धिमान्, धार्मिक, तीर्थ-यात्रा प्रिय, विवाह के बाद उन्नति पाने वाला, धनी तथा खर्चीला होता है, गुप्त चिन्तित रहता है।

सुखेश–शिक्षा कम, पैतृक सम्पत्ति नष्ट करने वाला, सुरापी, क्रोधी, पर-स्त्री रत, खर्चीला, रोगी तथा मातृ द्वेषी हो ऋणी रहे।

सुतेश–शिक्षा रहित, अहंकारी, ऋणी, सन्तान द्वेषी, प्रवास में कष्ट पाने वाला, रोगी, कुकर्म रत होता है।

अरीश–शिक्षा रहित, रोगी, हिंसक, ऋणी, राजदण्डित, शत्रुयुक्त, मुकदमे से तग रहने वाला होता है।

कामेश–कपड़े का व्यापार, कृपण, अपयशी, विलास में खर्च करने वाला, स्त्री पुत्र सुख अल्प हो, इसकी स्त्री जार कन्या होती है।

निधनेश–चिन्तित, जलयात्रा में कष्ट, रोग, उपचार में खर्च करने वाला, विवाह रहित, विलास में अपयश को प्राप्त होकर ऋणी रहता है।

भाग्येश–अपढ़, मामा, भाई का द्वेषी, भाग्यहीन, ऋणी, पापवृत्ति, चोरी में साझा करने वाला, अपयशी, कुकर्म में खर्च करने वाला होता है।

कर्मेश–चालाक, व्यापारी, दिवालिया, राजदण्ड पाने वाला, शत्रुयुक्त, दुखी, पीड़ित तथा यात्रा में कष्ट उठाने वाला होता है।

लाभेश–नीच संगतिरत, आलसी, कामी, लम्पट, विलासी, ऋण लेकर अधिक खर्च करने वाला दुष्ट प्रकृति होता है।

व्ययेश–मातृ द्वेषी, नीच संगति, पापी, क्रोधी, पर-स्त्री प्रेमरत, सन्तानकष्टी, खर्चीला, ऋणी, यात्रा में कष्ट उठाने वाला, मूर्ख होता है।

नोट—प्रत्येक पाठक का यह प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि इस पुस्तक को आद्योपान्त समाप्त करते ही इस पुस्तक में लिखे गये समस्त नोटों का फिर से ध्यान पूर्वक अध्ययन करे और शान्ति से एकान्त में उसका मनन करने के पश्चात् किसी निर्णय पर पहुँचकर अपने लक्ष्य का विचार करते हुए इस पुस्तक की सहायता से किसी भी मनुष्य के जीवन फलादेशों का वर्णन, निर्भय होकर करने में किसी भी प्रकार का संकोच न करे। प्रत्येक ज्योतिषी या ज्योतिष कार्य करने वाले व्यक्ति को यह सर्व प्रथम अपना ध्येय बना लेना चाहिये कि फलादेश

कहते समय परिस्थिति चाहे जैसी भी उत्पन्न क्यों न हो जाय, उसको, अपना धैर्य, शान्ति तथा सन्तोष कदापि किसी अवस्था में भी नहीं खोना चाहिये, और सभी अवस्थाओं में अपने कर्तव्य तथा सत्यपरायणता का पालन करते रहना चाहिये। और किसी की दीन-हीन, सुखी-दुखी तथा ऐश्वर्य युक्त दशा के प्रभाव से प्रभावित होकर अपने सत्य-कर्तव्य पथ से किसी भी दशा में विचलित न होना चाहिये। क्योंकि मेरे साथ कई वार ऐसा समय व्यतीत हुआ है कि जिनमें से मैं एक घटना का संक्षेप में वर्णन करके अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होऊँगा। जो कि इस प्रकार है कि एक मनुष्य फटे-पुराने तथा मैले-कुचैले कपड़े पहनकर मेरे पास आया और अपना जन्मपत्र मेरे हाथ में देकर अपने आगामी जीवन के फलादेशों के श्रवण हेतु हठ पूर्वक आग्रह करने लगा। मैंने उस जन्मपत्र को हाथ में लेकर विचार आरम्भ कर दिया और ध्यान पूर्वक देखने के बाद एक तीव्र दृष्टि उस मनुष्य पर डाली तो जन्मपत्र उस व्यक्ति के पहनावे से मेल नहीं खाती थी। इस बात पर मैंने उससे पूछा कि यह जन्म-पत्र क्या आपका है? उसने उत्तर दिया 'जी हाँ मेरा ही हैं उसके इन शब्दों में बड़ी दीनता थी, फिर भी मुझे विश्वास न हुआ और मैंने कहा कि इसके फलादेश कहने के १२५) होंगे, क्या आप उन्हें देने को तत्पर हैं, तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज मेरे पास तो ५) भी आपके देने को नहीं हैं तो मैंने उससे कहा कि यदि आपके पास इतने रुपये मुझे देने को नहीं हैं तो यह जन्मपत्र भी आपका नहीं है क्योंकि जिसका यह जन्मपत्र है वह मनुष्य इतना निर्धन नहीं हो सकता। वह तो अवश्य ही १२५) देकर सुनने योग्य है। इतना कहकर मैं जन्मपत्री उसको लौटा दी और कहा कि कृपया आप उस आदमी को ही भेज दें जिसकी यह पत्री है, किन्तु वह टस से मस न हुआ और दृढ़ता से बैठा रहा, यह देखकर मैं समझ गया कि माजरा क्या है और वह भी समझ गया कि वास्तविकता क्या है। कुछ देर देखते रहने के पश्चात् उसने कहा कि अच्छा आपको १२५) ही मिलेंगे, आप फलादेश तो कहें, मैंने तुरन्त जन्मपत्र लेकर समस्त फलादेश कह दिये, जिसकी सत्यता पर मुग्ध होकर उन्होंने कहा कि यह ढोंग मैंने आपकी परीक्षा के लिये ही किया था, मुझे क्षमा करियेगा, मैं एक ऑफीसर हूँ जैसा कि आपने अभी कहा है, सब ठीक ही है। मैं समझ गया

हूँ कि ज्योतिष में सत्यता कहाँ तक है, न बता सकने की कमी ज्योतिषियों में है, न कि ज्योतिष में, अच्छा मैं आपके रुपये भिजवा दूँगा, क्योंकि इस समय तो मैं लाया नहीं हूँ, कहकर खड़े हो गये, और नमस्कार कहकर चल पड़े। और कुछ समय पश्चात् उन्होंने १२५) मेरे पास भिजवा दिये।

इसी प्रकार एक लड़का अपने दो मित्रों के साथ, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद मेरी परीक्षा के लिये एक खुला अनार, कुछ खिले फूल तथा फल हाथ में लेकर हँसता हुआ सा आकर मुझसे बोला, महाराज, मेरा परीक्षा परिणाम आज-कल में आने वाला है, कृपया बतलाइये कि मैं पास होऊँगा या नहीं, यह सुनकर मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया और प्रश्न कुण्डली तैयार की और विचार किया तो परीक्षा परिणाम अच्छा न आया, मैं उसकी उत्सुकता तथा प्रसन्नता देखकर कुछ देर ठहरकर बोला कि अच्छा एक बात बतलाओ, उसने उत्सुकता से कहा कि क्या? तब मैंने उससे कहा कि यह बताइये कि परीक्षा परिणाम आना है या आ चुका है। वह सुनते ही लड़का सहम गया, और कुछ देर, कुछ भी न बोल सका, इतनी ही देर में, मैंने उससे कहा कि देखा, आपका परीक्षा परिणाम आ चुका है, और आप उसमें फेल हो चुके हैं, आपने केवल मेरी परीक्षा के लिये ही यह सब ढोंग किया है, इतना सुनते ही उन सबके चेहरे उतर गये और उनकी समस्त हँसी, खिसियानी सी हो गई। इसके पश्चात् उनमें से एक लड़के ने कहा कि हम तो अपने को ही समझते थे, किन्तु आप हमारे वास्तव में ही गुरु निकले। उसने कहा, हम तीन-चार दिन से यही खेल करके दसों ज्योतिषियों को बेवकूफ बना चुके हैं, किन्तु आज पहली बार ही मात खानी पड़ी है। हम शर्मिन्दा हैं, हाथ जोड़कर बोला, हमें क्षमा करना, हमसे बड़ी भूल हुई है, यह बात सुनकर मैंने उनसे कहा कि ज्योतिष विद्या खेल के लिये नहीं बल्कि जीवन पथ का प्रदर्शन करने के लिये होती है। इसलिये जब कभी किसी विशेष समस्या को अपने जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिये सुलझाना हो तो आप अवश्य पधारें किन्तु मजाक उड़ाने के लिये नहीं। इसपर उन्होंने भविष्य में किसी की भी हँसी न उड़ाने की शपथ ली, और घर जाने के लिये खड़े हो गये। अन्तिम नमस्कार के बाद वे लोग वहीं से चले गये और उस दिन से अभी तक वे सभी बड़े प्रेम भाव से मिलते रहते

हैं। और भी न जाने कितनी ही घटनायें इस प्रकार की मेरे साथ घट चुकी हैं, जिनमें ईश्वर की कृपा से प्रतिद्वन्द्वियों को ही हार खानी पड़ी है। इन दोनों घटनाओं का उल्लेख इस स्थान पर करने का मुख्य तात्पर्य यही है कि इस संसार में भले-बुरे सभी प्रकार के मनुष्य रहते हैं। इसलिए प्रत्येक ज्योतिषी का यह प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि वह प्रश्न लग्न द्वारा जातक की यह परीक्षा अपने मन में ही कर ले कि जातक कहीं ज्योतिषी ही की परीक्षा लेने तो नहीं आ रहा है। इतना ज्ञात हो जाने पर ज्योतिषी को सचेत होकर बात करनी चाहिये और उसकी हँसी उड़ाने से प्रथम ही उसे किसी न किसी रूप से चुप किया जा सकता है, फिर भी अपनी जानकारी के लिये प्रश्न लगाना अच्छा है। बहुत मनुष्य किसी मृत, पशु-पक्षी, स्त्री, पुरुष आदि की कुण्डलियाँ, उलट-पलट कर परीक्षार्थ ज्योतिषी को दिखाकर, उसका उपहास उड़ाते हैं, और गलत होने पर कुत्सा तथा निन्दा करते हैं। इन सबकी परीक्षा करने का गुरु हम प्रश्न चन्द्र प्रकाश में स्पष्ट रूप से ज्योतिषियों की सहायता के लिए लिखेंगे जिनके द्वारा परीक्षा कर लेने पर कोई भी ज्योतिषी उपहास पात्र बनने से मुक्त हो सकता है। इसलिये आवश्यक है कि सत्य का हनन किये बिना जातक की सभी बातों को मधुर शब्दों में प्रत्यक्ष रूप से इस प्रकार कह देनी चाहिये कि आगामी कलह-कुत्सा सभी उसी समय उसी दिन मिट जाय। जीवन क्षणिक है, विषय अगणित हैं, इसलिये जो कुछ भी पढ़ा-लिखा तथा कहा जाय वह नपा-तुला और सत्य ही हो ताकि मनुष्यों में अपनी बात जहाँ की तहाँ ही बनी रहे।

ज्योतिष शास्त्र के प्रत्येक पाठक तथा विद्यार्थी से मेरा अपना जातीय परामर्श यह है कि किसी भी जन्मपत्र का फलादेश कहने से प्रथम यदि निम्न-लिखित बातों पर विचार पूर्वक, विशेष रूप से ध्यान देकर, शान्ति तथा धैर्य के साथ किसी भी जातक का फलादेश कहने पर किसी भी प्रकार की त्रुटि रह जाने की सम्भावना को स्थान शेष नहीं रह जाता। यह बात निर्विवाद रूप से सभी कहते आये हैं कि, ज्योतिष शास्त्र ही सर्वशास्त्रों में शिरोमणि है। क्योंकि इसकी ही सहायता से मनुष्य, भूत, भविष्य तथा वर्तमान का ज्ञाता होकर ही त्रिकालज्ञ कहलाता है। इस शास्त्र का पूर्ण सम्बन्ध योग से है, योग द्वारा इष्ट-

सिद्धि होती है। इष्ट सिद्धि होने पर ज्ञान या विवेक उत्पन्न होता है और ज्ञानी साक्षात् ब्रह्म ही है, ऐसा गीता में कहा गया है। ब्रह्म सर्वत्र सभी कालों में सर्वाधिकार होकर समान रूप से विद्यमान है, उसी के गर्भ से सबका प्रादुर्भाव होता है और अन्त समय प्रलय काल में सभी उसमें मकड़ी के जाले के समान लय हो जाते हैं। अर्थात् मकड़ी जैसे अपने जाले को उगल कर फिर निगल जाती है। उसी प्रकार ब्रह्म भी प्रभवकाल में सृष्टि उत्पन्न करता है, और प्रलय काल में उसे अपने अन्तर में लय कर लेता है। इससे सिद्ध होता है कि जैसे मकड़ी का जाला और मकड़ी कोई दो भिन्न वस्तुएँ नहीं है, उसी प्रकार यह संसार और ब्रह्म दो भिन्न वस्तुएं नहीं है। पृथक्-पृथक् नाम की, एक ही वस्तु है जिसके अन्तर्गत कोटिशः ब्रह्माण्डों से लेकर, अणु, परिमाणु तक सामूहिक रूप से विद्यमान है, जो इस बात को तत्व से जानता है वह अपने को साक्षात् ब्रह्म पहचानता है। वही वास्तव में ज्ञानी है और इस बात को न जानने वाला अज्ञानी है। माया के आवरण में लिप्त प्राणी अपने को ब्रह्म से पृथक् समझ रहा है। वास्तव में ज्ञानी और अज्ञानी दोनों ही एक शक्ति दिव्यलोक के अराधना मात्र है। फिर भी जिसने परिधान को स्वच्छता से धारण किया है, ज्ञानी कहलाता है। और अपने ज्ञान द्वारा समस्त वस्तुओं को एक ही रूप में देखकर भले-बुरे का ज्ञान कर लेने पर तीनों कालों का आँखों देखा, जैसा वर्णन कर यशस्वी हो जाता है, और श्रोताओं को चकित तथा हैरान कर अपना जीवन-यापन करता है। अब प्रश्न यह होता है कि क्या सभी ज्यौतिषी इतने ही बड़े ज्ञानी हैं, मैं तो कहूँगा कि नहीं, और कभी नहीं, कोई नहीं क्योंकि इतना बड़ा ज्ञानी हो जाने के पश्चात् उसे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती, वह तो निर्विकल्प होकर स्वतन्त्र से समस्त संसार में विचरण करता है। शेष सभी ज्ञानी नाम से कहलाये जाने वाले व्यक्ति न्यूनाधिक ज्ञान की रूपरेखा का विभिन्न कक्षाओं द्वारा प्रतिपादन कर अपने उदर पूर्ति का साधन बनाए हुए हैं। और आधुनिक विज्ञापनों द्वारा अपनी कृत्रिम दूकानदारी को सजाए हुए हैं। जो कि जातक को देखते ही अपने कल्पित स्वर्णिम रत्न जटित सुगन्धमय पुष्प वृद्धि द्वारा मनमुग्ध कर उसे मरुस्थल का वह रुपहला, पल्लवित, किसलय कुसुमों से लदा हुआ सब्ज

बाग दिखाते हैं, कि श्रोता खुशी से फूल जाता है और प्रसन्न होकर ज्योतिषी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है। ज्योतिषी का तो नित्य का यही कार्य है। दक्षिणा प्राप्त हुई कि उसकी बला से कोई मरे या कोई जिये। दोनो ही मुक्त भार होकर अपने-अपने कार्यों में लग जाते हैं। बस यहीं तक रह गयी है आधुनिक ज्योतिषी और जातकों की परिभाषा।

तनिक विचार की तीव्र तथा गहरी दृष्टि से देखा जाय तो क्या कोई भी मनुष्य त्रिकालज्ञ होने का दावा कर सकता है, और क्या कोई भी व्यक्ति त्रिकालज्ञ होकर अपनी त्रिकाल दर्शिता को इस प्रकार थोड़े से मूल्य पर बेच कर अपने जीवन का सहज यापन करने को ही सब कुछ समझकर क्या इन निरर्थक बातों में ही अपने अमूल्य समय को नष्ट करेगा, मेरी समझ में तो नहीं आता। यह तो केवल धन तृषित मनुष्यों का ही काम हो सकता है। जो कि घटिया माल को नये लेबिल लगा-लगा कर अच्छे मूल्य पर बेचने का साहस करते हैं। मनुष्य जीवन की विशेषता यही है कि वह जीवन की क्षणिकता का ध्यान रखते हुए किसी को भी धोखा न दे, और छलछिद्र को अपना कर, अपनी उदर पूर्ति का साधन न बनाये, किसी को भी धोखा देना स्वयं को धोखा देना है। इसलिए सभी ज्योतिषी तथा जातक पूर्ण रूप से सावधान रहें और अपने-अपने कर्तव्य का यथाशक्ति पालन करें, किन्तु यहाँ तो सभी अपनी स्वार्थपरायणता में लगे हुए हैं। "जैसी उल्टी देवी तैसे ऊत पुजारी"। लोग कहते हैं कि हमने ज्योतिषी जी को भी ठग लिया। ज्योतिषी जी कहते हैं कि हमने भी खूब बहकाया। यदि यही भावना रही तो भविष्य में मानव का विश्वास अन्धकारमय हो जायगा। लोग अपने मतलब को कहते हैं कि हमें तो पण्डितों की सेवा करनी ही है, मैं पूछता हूँ कि क्या कोई किसी की सेवा कर सकता है? और क्या मनुष्य सेवा के लिए ही उत्पन्न हुआ है, नहीं और कभी नहीं, मनुष्य का तो कर्तव्य है कि, ज्ञान की वृद्धि तथा आत्मा का पूर्ण विकास प्राप्त करे, सेवा के लिए तो पशु-पक्षी और भी बहुत से जानवर उत्पन्न हुए हैं। इसलिए सेवा की दास भावना को त्यागकर, प्राणिमात्र को अपना समझकर, परापर का भेद त्याग कर अभेद रूप से ज्ञान का आदान-प्रदान करना मनुष्य का कर्तव्य होना चाहिये न कि

किसी की विवशता से लाभ उठाकर अपने ध्येय की पूर्ति का। समय की न्यूनता के कारण हम इस बात को यहीं समाप्त करते हैं और अपने यथेष्ट विषय की पूर्ति का विशेष रूप से ध्यान रख कर आगे बढ़ने का सफल प्रयास करेंगे। क्योंकि जो बात ठीक समय पर उचित रूप से कही जाती है वही सर्वमान्य रहती है और उसी का कुछ मूल्य रहता है और जो बात समय के व्यतीत होने पर स्थिति के प्रतिकूल कही जाती है उसका उपहास होता है और वही उपहास मनुष्य के मरण तक का कारण बन जाता है।

विशेष रूप से कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रत्येक ज्योतिषी का फलादेश कहने का अपना ही ढंग होता है जो कि स्थान या भाव-विशेष का फल ही विशेषरूप से कहकर जातक को मन्त्रमुग्ध की भाँति मौन बनाये रहता है। समस्त भावों के फलादेशों में विशेषता रखने वाले बिरले ही ज्योतिषी होते हैं जो कि स्पष्ट रूप से फलादेश कहकर जातक को तृप्त कर सकते हैं। फिर भी प्रत्येक ज्योतिषी को इस बात से पूर्णरूपेण परिचित रहना चाहिए कि समस्त ग्रह अपनी शक्ति, स्वभाव, गुण और कर्मानुसार स्त्री-पुरुष, नपुंसक, उदयी, वक्री, मार्गी, ऊँच-नीच, स्वगृही, मित्र, सम, शत्रु, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्रादि वर्गों में बटे हुए हैं, जिनका प्रभाव भी यथा नाम तथा गुण ही प्रतीत होता है। पुरुष ग्रहों का प्रभाव सबमें अधिक होता है। स्त्री ग्रहों का प्रभाव पुरुष ग्रहों से कम होता है और नपुंसक ग्रहों का प्रभाव सबसे कम होता है। उदयी ग्रहों का प्रभाव हल्का होता है। वक्री ग्रह अपना विलोम ही प्रभाव रखते हैं और मार्गी ग्रहों का विशेष प्रभाव नहीं होता है। ऊँच के ग्रह शुभ स्थानों के स्वामी होकर शुभ स्थानों में पूर्ण बली हो तो पूर्ण शुभ फल करते हैं। इसी प्रकार अपूर्ण या क्षीण बली होने पर उत्तम फल नहीं करते। शुभेश, अशुभ स्थानों में मध्यम फल करते हैं, हीन बली होने पर बुरा फल करते हैं, क्रूर और मारक स्थानों में निकृष्ट फल करते हैं। अशुभेश, शुभ स्थानों में कुछ शुभ और अशुभेश, अशुभ स्थानों में अत्यन्त अशुभ फल करते हैं। पापी क्रूर ग्रह त्रिक या अशुभ स्थानों में शुभ फल करते हैं और शुभ स्थानों में अशुभ फल करते हैं। इन समस्त शुभाशुभ ग्रहों के शुभाशुभ फल बहुत कुछ उनके अंशों पर पूर्ण रूप से अवलम्बित रहते हैं। जो ग्रह अपने न्यूनांशों पर होते हैं उनका प्रभाव कम होता है। पूर्णांश वाले ग्रहों

का प्रभाव पूर्ण होता है और अधिकांश ग्रहों का प्रभावपूर्ण की अपेक्षा न्यून होता है। न्यूनांश में ग्रह अपने से प्रथम भाव तथा राशि के प्रभाव से प्रभावित रहता है। पूर्णांश में अपने भाव तथा राशि के प्रभाव से प्रभावित रहता है और अधिकांश में अपने से आगे आने वाले भाव तथा राशि के प्रभाव से प्रभावित रहता है। केन्द्रेश शुभ ग्रह होने पर शुभ फल नहीं करते, त्रिकोण में मध्यम फल करते हैं। ६–८–१२ में अशुभ फल करते हैं। केन्द्रेश क्रूर ग्रह होने से केन्द्र में शुभ फल करता है। ६–८–१२ में मध्यम फल करता है। किन्तु अष्टमेश और द्वादशेश क्रूर ग्रह होने पर शुभ फल नहीं करते।

मित्र ग्रहों के साथ मित्र ग्रहों का प्रभाव मित्र ग्रहों की राशियों में अधिक शुभ होता है। सम ग्रहों के साथ सम ग्रहों का प्रभाव समग्रह की राशियों में सामान्य ही रहता है। शत्रु ग्रहों के साथ शत्रु ग्रहों का प्रभाव शत्रुग्रहों की राशियों में प्रतिकूल प्रभाव होता है। इसी प्रकार स्वगृही ग्रहों का प्रभाव शुभ स्थानों में शुभ और अशुभ स्थानों में अशुभ ही रहता है और नीच ग्रहों का प्रभाव यदि नीच भंग राजयोग नहीं है तो सर्वत्र अशुभ ही फल होता है। क्योंकि नीच भंग होने पर दूषित फल नहीं होता। तीन ग्रहों के नीच भंग होने पर पूर्ण राजयोग होता है और मनुष्य उन ग्रहां के शुभ प्रभाव से ऊँचा उठकर एक बड़ा आदमी बन जाता है। यह नीच भंग राजयोग शुभ स्थानों पर शुभ दृष्टि या युक्त होने पर किसी भी मनुष्य के लिए अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। इसी प्रकार अशुभ पापी क्रूर ग्रह अशुभ स्थानों में बुरा प्रभाव नहीं करते और शुभ स्थानों में अपना कुप्रभाव दिखाये बिना नहीं रहते। बुध, राहु और केतु के अतिरिक्त सभी ग्रह सूर्य के साथ होने पर अपनी प्रतिभा से हीन हो जाते हैं और ये प्रभाहीन ग्रह ही अस्त ग्रह कहलाते हैं और इस प्रकार के अस्त ग्रह अपने शुभाशुभ फलों से वंचित हो जाते हैं। मित्र और सम ग्रह दृष्ट तथा युक्त होने पर बल पाते हैं और उनका प्रभाव बढ़ जाता है। अशुभ शत्रु ग्रहों के दृष्ट तथा युक्त होने पर उनका प्रभाव घट जाता है। पुरुष ग्रहों के साथ शत्रु स्त्री ग्रह होने पर भी अपना बुरा प्रभाव नहीं करते। किन्तु दो शत्रु पुरुष या स्त्री ग्रह एक स्थान में होने पर अपना कुप्रभाव दिखाये विना नहीं रहते। मित्र

सम, पुरुष २, स्त्री २ ग्रह शुभ फल की वृद्धि शुभ स्थानों में करते हैं, अशुभ स्थानों में ग्रहों के अपने प्रभाव प्रधान रहते हैं। ग्रहों का प्रभाव चर राशियों में कम, स्थिर में अधिक और द्विस्वभाव में भी कम होता है। पूर्ण चन्द्र शुभ स्थानों में शुभ और क्षीण चन्द्र शुभ स्थानों में भी अशुभ फल करता है और अशुभ स्थानों में पूर्ण चन्द्र का फल अपूर्ण और प्रभाहीन चन्द्र का फल अशुभ स्थानों में अत्यन्त अशुभ होता है। मारक स्थानों में हानिकारक तथा रोग वृद्धि करता है। पूर्ण चन्द्र वाले मनुष्य का जन्म यदि दिन में हो तो शुभ और रात्रि में अशुभ होता है। इसी प्रकार क्षीण चन्द्र का प्रभाव रात्रि जन्म में शुभ और दिवस में अशुभ होता है। ऐसा विचार सूर्य के लिए उत्तरायण तथा दक्षिणायन के लिए किया गया है। उत्तरायण का जन्म तथा मृत्यु दोनों ही सुखकर होतो है और दक्षिणायन में जन्म लेने से तथा मृत्यु होने पर मनुष्य रोगी तथा कष्टमय जीवन व्यतीत करता है।

शुभ ग्रह	६–८–१२	स्थानों	में	अशुभ	फल	करते	हैं।
शुभ ग्रह	२–५–९–१०, ११	,,	,,	शुभ	,,	,,	,,।
अशुभ ग्रह	६–८–१२	,,	,,	,,	,,	,,	,,।
अशुभ ग्रह	२–५–९–१०–११	,,	,,	अशुभ	,,	,,	,,।
शनि, राहु	३–६–११	,,	,,	शुभ	,,	,,	,,।
केतु सहित:सभी ग्रह एकादश स्थान में				शुभ	,,	,,	,,।
केन्द्रेश त्रिकोण में				शुभ	,,	,,	,,।
त्रिकोणेश केन्द्र में				शुभ	,,	,,	,,।

केन्द्रेश केन्द्र में त्रिकोणेश त्रिकोण में विशेष शुभ फल नहीं करते हैं। बल्कि उल्टा शुभ फल का ह्रास ही करते हैं। शुभ-अशुभ पाप तथा क्रूर ग्रहों की दृष्टि तथा युति के साथ स्थान और मित्र शत्रु राशि का प्रभाव भी किसी भी जन्म पत्र को देखते समय अवश्य कर लेना चाहिए और इसके साथ-साथ जन्मपत्र दिखलाने वाले मनुष्य के देश, काल, रीति-रिवाज, रहन-सहन, व्यवहार तथा सामाजिक नियमों का पूर्ण परिचय प्राप्त किये विना अज्ञानी की भाँति फलादेश कह कर अपना उपहास कराने से तो किसी भी जन्म पत्र का फलादेश न कहना

ही अति उत्तम है। अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल तथा आकाश तल वाले ग्रहों, राशियों का विचार करने के साथ-साथ निम्नांकित बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि गोचर में किस प्रकार शुभा अशुभ ग्रह, शुभा अशुभ स्थानों में लग्न के प्रभाव से किस प्रकार अपना शुभ अशुभ तथा उभयचारी प्रभाव दिखलाकर मनुष्य को आशातीन फल प्रदान करते हैं। ज्योतिषी अनजान में जिन ग्रहों का फल शुभ तथा अच्छा बतलाकर जातक को प्रसन्न करता है, वही शुभ ग्रहों का फल जातक के रोदन का कारण बन जाता है और इसी प्रकार अशुभ ग्रहों का कुप्रभाव, मनुष्य की उन्नति, उत्कर्ष तथा प्रगति का मार्ग प्रदर्शन कर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य करता है। कारण ज्योतिषियों की अभिज्ञता से ही ऐसा होता है। इसलिए प्रत्येक पाठक का कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने कर्तव्य का यथाशक्ति पालन करे और सचेत रहे।

मेष—लग्न वाले मनुष्य के लिए शनि-बुध और शुक्र अशुभ फल करते हैं, गुरु और सूर्य शुभ फल करते हैं। शनि-गुरु, संयोग राजयोग कारक होते हुए भी प्रकारान्तर में अशुभ फल करते हैं। शनि-शुक्र सम्बन्ध भी अशुभ फल दायक ही रहता है।

वृष - लग्न वाले मनुष्यों को शनि, सूर्य शुभ फल करते हैं। गुरु-शुक्र-चन्द्र अशुभ फल करते हैं। बुध अपनी दशा में अशुभ फल करता है। केवल शनि राज योग करता है।

मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को मंगल, सूर्य, गुरु, सपाप चन्द्र तथा शुक्र दूषित फल करते हैं। बुध-शुक्र संयोग, राजयोग करता है।

कर्क - लग्न वाले जातकों के लिए मंगल व गुरु शुभ फल करते हैं, अन्य सभी ग्रह कष्टी हैं।

सिंह—लग्न वालों के लिए बुध-शुक्र, गुरु-शुक्र संयोग अशुभ फल करता है, केवल मंगल ग्रह शुभ फल दायक होता है।

कन्या—लग्न वालों के लिए शुक्र-बुध संयोग शुभ फल करता है। मंगल, गुरु, चन्द्र, एकाकी शुक्र, स्वान्तर्दशा गत अशुभ फल करते हैं।

तुला—लग्न वालों के लिए शनि-बुध शुभ फल करते हैं। गुरु, सूर्य, मंगल अशुभ फल करते हैं। चन्द्र-बुध संयोग राजयोग करता है।

वृश्चिक--लग्न वालों के लिए गुरु-चन्द्र शुभ फल करते हैं। बुध, मंगल, शुक्र अशुभ फल करते हैं, सूर्य-चन्द्र योग राजयोग कारक हैं, गुरु, बुधादि योग मारक फल कारक होते हैं।

धन--लग्न वालों के लिए बुध, सूर्य शुभ फल करते हैं। इनका संयोग राजयोग करता है, शुक्र मारकेश होने से अशुभ फल करता है।

मकर--लग्न वालों के लिए बुध, शुक्र शुभ फल करते हैं। मंगल, गुरु, चन्द्र अशुभ फल करते हैं।

कुम्भ--लग्न वालों के लिए शुक्र शुभ फल करता है। मंगल, शुक्र योग, राजयोग कारक है। गुरु, चन्द्र, मंगल अशुभ फल कारक होते हैं।

मीन--लग्न वाले जातकों के लिए मंगल, चन्द्र शुभ फल करते हैं। मंगल गुरु संयोग राजयोग कारक है। शनि, शुक्र, सूर्य, बुधादि ग्रह अशुभ फल कारक होते हैं।

ये उपर्युक्त शुभ-अशुभ ग्रहों के फल अपनी-अपनी दशान्तर्दशा में ही मारक फल करते हैं, या शुभ फल करते हैं, किन्तु इनका विशेष फल स्वदशान्तर्दशा गत जब वर्ष फल में वही दशा अन्तर-प्रत्यन्तर दशागत होती है, तब ही निश्चित रूप से प्रत्यक्ष दिखाई देने लगती है।

सूर्य से नवमें अशुभ या पाप ग्रह पिता को, चन्द्र से चतुर्थ माता को, मंगल से तीसरे भाई को, बुध से चतुर्थ या छठे मामा को, गुरु से पंचम पुत्र को, शुक्र से सप्तम स्त्री को और शनि से अष्टम, क्रूर तथा पाप ग्रह जातक स्वयं को अरिष्ट तथा शोक, भय, क्लेशादि प्रदान करता है। लग्न राशि कैसी है, लग्न में ग्रह कैसे हैं, लग्नेश कहाँ कैसा है, उसका दूसरे ग्रहों से क्या सम्बन्ध है, लग्न तथा लग्नेश पर पाप क्रूर ग्रहों की दृष्टि तो नहीं है, बृहस्पति से लग्न तथा लग्नेश का क्या सम्बन्ध है। लग्न, लग्नेश के साथ-साथ द्वादश भावों तथा भावेशों का फल एक दूसरे के सम्बन्ध जाने बिना कदापि न कहना चाहिये।

विशेष भाव-विचार

ज्योतिष शास्त्र में भाव विचार द्वारा मानव जीवन पर प्रकाश डालना सर्वथा विशेष रूप से ग्राह्य रहा है, जिसको अनेक आचार्यों ने, अनेक प्रकार से

वर्णित कर अपने विषय का यथार्थ रूप से प्रतिपादन किया है। किसी-किसी आचार्य ने राशियों के स्वरूप, गुण, दोष तथा तत्त्व विचार द्वारा द्वादश भावों का वर्णन किया है, तो किसी-किसी ने ग्रहों के स्वरूप-गुणादोषादि का विवेचन कर अपने द्वादश भाव, फलादेश का प्रचुर मात्रा में विवेचन कर अपने ज्ञान का यथार्थ प्रतिपादन किया है। जैसा कि ज्योतिष प्रेमियों को ज्ञात ही है। समय के प्रभाव से वह सभी घटना चक्र कहाँ तक समयानुकूल ठीक फल वाला बैठता है, यह एक दूसरी ही बात है, क्योंकि ज्योतिष ग्रन्थों का समूह सुमेरु पर्वत के समान है और उनका ज्ञान अगाध समुद्र के समान गम्भीर विषय वाला है। इसलिए किसी भी एक मनुष्य के लिए यह सम्भव नहीं कि वह अपने जीवन में यह समस्त ज्ञान स्मृत रखकर किसी के जीवन फलादेशों का यथार्थ वर्णन कर उसे सदा-सदा के लिए कृतकृत्य करके अपने ज्ञान का विकास कर सके। कोई न कोई त्रुटि का रह जाना अवश्यम्भावी ही है। यदि सौभाग्य से कोई आचार्य किसी मनुष्य के जीवन की सभी घटनाओं तथा दुर्घटनाओं का यथासमय वर्णन करने में सफल भी हो जाय तो यह न समझ लेना चाहिए कि वह सभी के घटना काल को यथार्थ रूप से वर्णन करने में अवश्य सफल हो ही जायगा। मेरे देखने में अभी तक यही आया है कि अधिकतर ज्योतिषी लोग द्वादश भाव फलों में भी किसी विशेष स्थान फल कहने में ही विशेषता रखते हैं और उसी के आश्रय, यश और धन प्राप्त करके अपना सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त फलादेश ग्रन्थ इस समय भी बाजारों में सहस्रों की संख्या में उपलब्ध हो सकते हैं, जिनको पाठक क्रय कर अपना तात्पर्य निकाल सकते हैं, फिर भी मनुष्य की शान्ति, बुद्धि की प्रखरता और उसके उत्साही मन का विकास उसको पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय यह सम्भव नहीं है, क्योंकि ज्यों-ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उससे अधिक ज्ञान की जिज्ञासा और भी बलवती होती जाती है। इन्हीं विचारों के अन्तर्गत कुछ विशेष भाव-विचार लिखने की धृष्टता इस पुस्तक में की जा रही है। आशा है, पूर्ण रूप से समझ लेने पर और यथार्थ जन्म पत्र का मिलान करने पर इस पुस्तक के फलादेशों से लाभ उठाने में समर्थ हो सकेंगे। यद्यपि ये फलादेश मेरे

निजी बनाये हुए नहीं हैं, फिर भी अधिकतर आजमाये हुए होने के कारण लोक-हितार्थ यहाँ लिखना अपना कर्तव्य समझता हूँ। मेरे जीवन का ध्येय सदा से यही रहा है कि प्रत्येक मनुष्य इस ज्योतिष भ्रम जाल से निकल कर साधारण ज्ञान द्वारा हिन्दी में अपना कार्य चला सके। और अपने अच्छे-बुरे समय को विचार कर कार्य करे ताकि जितनी बुराइयों से सम्भव हो बच सके। यद्यपि मैं भावेश फलादेशों द्वारा राशि और ग्रह दोनों पर पूर्ण रूप से यथा सम्भव प्रकाश डाल दिया है, फिर भी कुछ विशेषताएँ, फलादेशों की ग्रह प्रभाव से हो जाने वाली परिस्थिति के अनुसार लिखते रहना अपना कर्तव्य समझता हूँ। ताकि पाठकों को किसी निर्णय पर पहुँचने में विशेष कष्ट न उठाना पड़े। अक्षरशः सत्यता तो प्रत्येक मनुष्य को अपने ही अनुभव से प्राप्त हो सकती है। इसलिए पूर्ण रूप से अध्ययन कर लेने के पश्चात् मनुष्य को अनेक जान-पहचान के जन्म पत्रों द्वारा अपना अनुभव बढ़ाकर, सत्यता तथा निर्भीकता से किसी भी जन्म पत्र के फलादेशों को कहने में न हिचकना चाहिये।

प्रथम भाव फल

लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टः, केन्द्रस्थितः शुभग्रहैरवलोक्यमानः।
मृत्युं विधूय विदधाति स दीर्घमायुः, सार्धं गुणैर्बहुभिरूर्जितराजलक्ष्म्या॥

यदि लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और अशुभ ग्रहों से किसी प्रकार भी सम्बन्धित न हो तो मनुष्य आयुष्मान्, दीर्घायु, अनेक शुभ गुणों से युक्त, सम्पत्तिवान्, ऐश्वर्य से युक्त तथा सब प्रकार से सुखी होता है।

यदि लग्नेश त्रिक स्थान (६–८–१२) में हो तो शरीर दुर्बल तथा रोगी होता है।

यदि राहु-मंगल और शनि तीनों लग्न में हो तो मनुष्य को लघुशंका या पेशाब करते समय पेड़ू या ब्लेडर में पीड़ा या दर्द होता है और अण्डकोष सूज जाते हैं।

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में लग्नस्थ सूर्य मंगल से दृष्ट हो तो उस मनुष्य को स्वांस, दमा, पित्त, खांसी तथा राजयक्ष्मा या क्षयादि का रोग अवश्य होता है।

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में शुक्र प्रथमार्ध अर्थात् (१–७) तक हो तो उस मनुष्य को बाल्यकाल में सुख, यौवन में कष्ट, तृतीयावस्था में सुख, वृद्धावस्था में कष्ट होता है। और यदि द्वतीयार्ध में अर्थात् ७ से १२ तक के भावों में शुक्र हो तो मनुष्य को बाल्यकाल में कष्ट, यौवन में सुख, तृतीयावस्था में कष्ट तथा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है।

द्वितीय भाव फल

कुटुम्बभावे बहुखेटयुक्ते धनप्रदव्योमचरे बलाढ्ये।
स्वतुङ्गमित्रस्वगृहोपगे वा धनं समेत्यामरणान्तमाहुः॥

जबकि दूसरा स्थान कई शुभग्रहों से युक्त हो और बली धन कारक ग्रह (गुरु) स्वगृही उच्च तथा मित्र क्षेत्री धन स्थान में होने से मनुष्य मृत्युपर्यन्त धन पाता है।

यदि द्वितीयेश बुध, बृहस्पति तथा शुक्र में से किसी के भी साथ केन्द्र में हो तो ऐसे ग्रहों से युक्त जन्मपत्र वाला मनुष्य धनवान् तथा बड़ा आदमी होता है।

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में लग्नेश दूसरे भाव में हो और द्वितीयेश, स्वगृही एकादशेश के साथ एकादश स्थान में या फिर लग्न में स्थित हो तो उस मनुष्य को दबा हुआ धन मिलता है।

यदि किसी के जन्मपत्र में धनेश, भाग्येश, लाभेश तथा लग्नेश अपने परमोच्चांश या वैशेषिकांश में हो तो वे उस मनुष्य को करोड़पति नहीं तो लखपति अवश्य ही बना देते हैं।

यदि सुखेश और भाग्येश दोनों ही मित्रग्रह धन भाव में हो तो मनुष्य आजन्म धन से सुखी रहता है। यदि लाभेश गुरु धनेश और भाग्येश के साथ चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो मनुष्य धन से सुखी रहता है।

यदि धनेश बली होकर धन या दशम स्थान में शुभ दृष्ट हो तो मनुष्य धनी होता है। यदि धनेश नीच या अस्त राशि में हो, ६, ८, १२ भाव में अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य ऋणी रहता है।

यदि शुभ ग्रह बुध, बृहस्पति और शुक्र नीच या अस्त के होकर किसी भी स्थान में बैठे तो मनुष्य को धनहीन बनाते हैं और दुखी रखते हैं।

यदि किसी मनुष्य के जन्मपत्र में कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र और त्रिकोण में न हो और अशुभ ग्रह इन स्थानों में स्थित हो तो मनुष्य धनहीन होता है।

यदि धनेश का योग षष्ठेश या व्ययेश से हो तो मनुष्य धनहीन होता है।

द्वितीयस्थो यदि कविः क्षीरभक्ष्यादिभूक् भवेत् ।
तत्रस्थो राहुकेतौवा समयोचितभुक् भवेत् ॥

दूसरे भाव का शुक्र दूध से बने पदार्थ खाने को देता है। राहु केतु और शनि निम्न प्रकार भोजन देते हैं।

यदि लग्नेश मंगल या शनि से युक्त तथा पाप दृष्ट लग्न में हो तो मनुष्य के सिर में चोट लगती है, या अर्श, रक्तविकार, रक्तचाप तथा रुधिर प्रकोप का रोग होता है।

जिसका सूर्य लग्न में और लग्नेश उच्च का दशम में हो तो वह मनुष्य सुप्रसिद्ध होता है।

जब लग्नेश गुरु और केन्द्र में पापयुक्त तथा दृष्ट नहीं हो तो मनुष्य स्वस्थ, धर्मात्मा तथा सुखी होता है।

जिसके द्वितीयेश शुभग्रह शुभग्रहों से युक्त होकर केन्द्र में, उच्च, स्वगृही, मित्र गृह में बली होकर बैठा हो तो वह मनुष्य कुटुम्बयुक्त, इष्ट-मित्रों से सुख पाने वाला, धर्मात्मा प्रकृति का, शान्त चित्त होता है।

यदि द्वितीयेश गुरु शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट दूसरे भाव में हो तो मनुष्य धन-धान्यपूर्ण, स्त्री-पुत्रादि से सुखी होता है। जिसका द्वितीयेश शुभ ग्रह उच्च का सूर्य, मंगल तथा गुरु से दृष्ट तीसरे भाव में हो तो वह मनुष्य धनी, यशस्वी होता है।

जिसके दूसरे भाव में पापग्रह हो और द्वितीयेश पापग्रहों से युक्त या दृष्ट अस्त, नीच, अबली या क्षीणचन्द्र हो या क्षीणचन्द्र से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य कुटुम्ब सुख से रहित, क्रोधी, स्पष्ट वक्ता, झगड़ालू होता है।

यदि बुध उच्च का दूसरे और गुरु उच्च का दशम हो और शुक्र उच्च का पंचम नवम में या गुरु-शुक्र उच्च के केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य नीतिज्ञ होता है।

जिसका द्वितीयेश एकादश भाव में, एकादशेश लग्न में और लग्नेश दूसरे स्थान में हो तो वह बड़ा धनी होता है। ये तीनों शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर केन्द्र त्रिकोण में बली हो तो मनुष्य धन-धान्ययुक्त ऐश्वर्यशाली होता है।

जिसका भाग्येश और सुखेश धन भाव में हो तो वह जीवन भर सुखी रहता है।

तृतीय भाव फल

भ्रातृणां ज्येष्ठसज्ञानाद्धभावः प्रोच्यते बुधैः।
षष्ठाष्टमे भ्रात्रधीशः भ्रात्रारिष्टंतु कथ्यते॥

यदि तृतीयेश ६ या ८ वें स्थान में हो तो किसी भाई की मृत्यु हो जाती है। और तृतीयेश तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थराशीश की दशा में छोटे भाई का जन्म होता है।

तीसरे भाव में यदि सूर्य उच्च या नीच, घर का बैठा हो तो बड़े भाई का मारक या कष्टदा होता है। और यदि शनि उच्च या नीच या शत्रु घर का हो तो छोटे भाई का मारक या कष्टदा होता है।

सूर्य स्वगृही यदि भाग्य स्थान में हो तो भ्रातृ मारक होता है, यदि भाई दीर्घायु में हो तो वह भाई धन-धान्य से पूर्ण बड़ा ही यशस्वी होता है।

यदि तृतीयेश बारहवें स्थान में हो तो मनुष्य का भाग्योदय विवाह के बाद होता है और यदि वह पापी तथा क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य भीरु प्रकृति, स्त्री के वशीभूत रहता है। और यदि तृतीयेश सूर्य के साथ दशम में हो तो मनुष्य की मस्तिष्क शक्ति प्रखर होती है और वह उत्साही कार्यों का करने वाला सेनाध्यक्ष होता है।

यदि लग्नेश, तृतीयेश अन्योन्य (एक दूसरे से) केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उस मनुष्य को भ्रातृ प्रेम होता है और त्रिक स्थान में अन्योन्य हो तो भाई से वैर रहता है।

यदि दो भाइयों का चन्द्रराशीश आपस में मित्र हो तो दोनों में प्रेम रहता है। यदि तृतीयेश राहु या केतु के साथ ६–८, १२ स्थान में हो तो भ्रातृमारक या कष्टी होता है।

तृतीयस्थो यदि गुरुं स्वक्षेत्रस्था तृतीयकम् ।
एक एव च भ्राता स्याज्जात कस्य वदन्ति हि ॥

यदि स्वगृही बृहस्पति ९ या १२ राशि का होकर तीसरे भवन में स्थित हो तो जातक के एक ही भाई जीवित रहता है ।

यदि किसी के जन्म पत्र में मंगल छठे घर में हो और राहु के साथ शनि आठवें स्थान में हो तो उसका बड़ा भाई जीवित नहीं रहता ।

जिसके जन्म पत्र में तृतीयेश और मंगल शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर त्रिकोण अथवा केन्द्र में स्थित हो तो उस मनुष्य को भ्रातृ सुख प्राप्त होता है ।

जिसके तृतीयेश स्त्रीग्रह तोसरे हो उसे बहिन सुख और पुरुषग्रहों के तृतीयेश होकर तीसरे स्थान में विद्यमान होने से भाई या भाइयों का सुख होता है । यदि वह पापयुक्त पाप दृष्ट न हो (३-६-८-१२) में होने से कष्ट मिलता है । और नीच, अस्त, पापयुक्त क्षेत्र में होने पर शत्रु या क्रूर ग्रहों से दृष्ट होने पर भाई की मृत्यु तक कर देते हैं ।

जिसका तृतीयेश लग्नेश का मित्र होकर शत्रु भाव में बैठे तो भाई-बहिनों में मेल, शत्रु होने पर कलह या अनवन रहती है । यदि तृतीयेश सूर्य युक्त हो तो मनुष्य पराक्रमी, स्थिर प्रकृति, चन्द्रयुक्त होने पर शान्त, कामी, मंगलयुक्त होने पर क्रोधी, बुध युक्त होने पर चंचल, ज्ञानी, गुरु युक्त होने पर नीतिज्ञ, विद्वान्, शुक्र युक्त होने पर चतुर, कामासक्त, शनि, राहु, केतु से युक्त होने पर मनुष्य पुष्टांग, रोगी, अनपढ़ तथा जड़ प्रकार का होता है ।

यदि तृतीयेश चन्द्र सहित (६-८-१२) में से किसी एक में भी हो तो उपमाता का दूध पीना पड़ता है ।

चतुर्थ भाव फल

विलग्नस्थौ चन्द्रभौमौ वा मृति भाग्यवान् भवेत् ।
चतुर्थेशयुतो भौमः क्षेत्रवान्भवति ध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में चन्द्रमा और मंगल लग्न या अष्टम में हो वह मनुष्य भाग्यशाली होता है और यदि चतुर्थेश मंगल के साथ मित्र या शुभ ग्रह हो तो मनुष्य जायदाद वाला होता है ।

यदि सूर्य नवम स्थान में नीच राशि का हो तो पिता की अल्पायु होती हैं, चतुर्थ में चन्द्रमा नीच राशि का हो तो माता की अल्पायु करता है, और यदि चतुर्थेश चन्द्रमा के साथ ५, ६, १०, ११ भावों में हो तो माता की दीर्घायु होती है।

यदि चतुर्थेश लग्नेश के साथ केन्द्र या त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य को अनेक मकान में रहने को मिलते हैं। और यदि चतुर्थेश शुभ ग्रह उच्च या स्वगृही होकर केन्द्र में बुध और वृहस्पति के साथ बैठा हो तो मनुष्य हाकिम या धनवान् होता है।

यदि चतुर्थेश बारहवें स्थान में हो तो पैतृक सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ता है। जिस मनुष्य के चतुर्थ भाव में पूर्णचन्द्र शनि के साथ वृहस्पति से दृष्ट हो तो वह व्यक्ति बाल्यावस्था से ही कविता करने वाला, राज्य भाषा प्रवीण, माता को भारी होता है।

यदि सूर्य, मंगल और शनि सप्तमभाव में हो तो माता रोगी रहती है और यदि क्षीण चन्द्र राहु या केतु के साथ सप्तम में हो तो माता को किसी न किसी प्रकार का दुख लगा रहता है।

यदि चतुर्थेश, नवमेश और लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण अथवा दोनों ही में हो तो इन ग्रहों की दशान्तर्दशा में पिता के पश्चात् माता की शीघ्र मृत्यु होती है।

यदि चतुर्थेश गुरु लग्न में हो तो अनेक प्रकार की सवारी सुख होता है। और यदि दशमेश धन भाव में, धनेश लग्न में तथा दोनों चतुर्थ भाव में उच्च, स्वगृही, मित्र क्षेत्री, मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो साइकिल, स्कूटर, मोटर, घोड़ा आदि की सवारी प्राप्त होती है।

यदि सुखेश, लग्नेश के साथ, लग्न, चतुर्थ तथा नवम भाव में हो तो इनकी दशान्तर्दशा में अवश्य ही किसी शुभ वाहन की सवारी प्राप्त होती है।

यदि पुत्रेश, सुखेश का अन्योन्याश्रय योग हो तो अवश्य किसी विशिष्ट सवारी का सुख होता है। और यदि सुखेश, लग्नेश का अन्योन्याश्रय योग हो तो कई तरह की सवारी प्राप्त होती है।

यदि सुखेश, भाग्येश, राज्येश तथा धनेश का आपस में अन्योन्याश्रय योग हो

तो मनुष्य को मोटर, जलयान, नभयान, तथा मोटर साइकिलादि की सवारी का सुख प्राप्त होता है।

चतुर्थ स्थान का राहु जिसके हो उसकी माता को दीर्घायु करता है और वर्ष फल में अन्तर्दशा का राहु उस मनुष्य को उस वर्ष कारावास कराता है।

जिसका चतुर्थेश चन्द्र, राहु या केतु के साथ लग्न में हो तो वह लड़का नीच से उत्पन्न होता है। यदि शनि, चतुर्थेश या चन्द्रमा के साथ हो तो मातृ मारक योग होता है।

जिसका चतुर्थेश लग्न में लग्नेश के साथ पाप युक्त तथा दृष्ट न हो तो उसको मकान बनाना पड़ता है या बना-बनाया मिलता है, विपरीत इसके यदि ६-८-१२ में ये ग्रह हों, तो लगातार रहने को भी मकान कठिनता से मिलता है। यदि चतुर्थेश मंगल दशम में हो, दशमेश चतुर्थ में हो, पाप दृष्ट युक्त न होने पर मनुष्य बड़ा भूमिधर तथा सवारी युक्त होता है। पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर भूमि सुख नहीं होता।

जिसका चतुर्थेश, नीच, अस्त, शत्रुराशि का होकर ६-८-१२ में निर्बली हो तो पैतृक सम्पत्ति का भी ह्रास हो जाता है।

यदि चतुर्थ भाव में बलवान वृहस्पति शुभ लग्नेश से युक्त या दृष्ट हो अथवा मित्र शत्रुग्रहों से दृष्ट-युक्त हो तो पाप रहित होने पर मनुष्य धन-धान्यपूर्ण, वाहन युक्त रहकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

जिसका चतुर्थेश शत्रुग्रहों से दृष्ट युक्त होकर, चतुर्थ भाव में हो तो उसकी माता बीमार रहती है, पैतृक सम्पत्ति, वाहनादि का सुख नहीं होता, बन्धु-बान्धव, स्त्री, मित्र आदि का सुख नहीं होता।

जिसका शनि, मंगल, सूर्य चतुर्थ भाव में शुभ दृष्ट-युक्त हो तो वह मनुष्य कपटी होता है।

चतुर्थस्थानपतिना सम्बन्धो यदि विद्यते।
मातृकारकचन्द्रस्य मात्रायुष्यं विनिर्दिशेत्॥

यदि चतुर्थेश पूर्ण चन्द्र के साथ शुभ स्थान में विद्यमान हो तो माता को दीर्घायु करता है।

पंचम भाव फल

क्रूराधिपत्ययुक्तस्तु कुजः पञ्चमगो यदि ।
कुजदायेषु संप्राप्ते करोति निधनं कुजः ॥

यदि मंगल पाँचवें स्थान में नीच या शत्रु भाव या राशि का हो तो अपनी दशा में मृत्यु करता है ।

बुध-शुक्रौ पञ्चमस्थानान्योन्यौ मारकौ स्मृतौ ।
बुधदाये तु शुक्रस्तु शुक्रदाये बुधस्तथा ॥

यदि बुध शुक्र किसी जन्मपत्र में पञ्चम स्थान में एक साथ हों तो वे दोनों आपस में मारक होते हैं । जिसका सूर्य नीच का होकर पञ्चम में हो उसके पिता की अल्पायु होती है ।

जिसके पञ्चमस्थ शनि को लग्नेश या गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस आदमी को स्वदशान्तर में पागल करता है ।

जिसका पञ्चमेश शनि या बुध लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे तो उसका विवाह नहीं होता, यदि विवाह हुआ तो बच्चे किसी और से होते हैं ।

यदि लग्नेश गुरु बलवान् होकर पञ्चम भाव में हो तो पुत्र सुख अवश्य होता है, यदि लग्नेश से दृष्ट हो ।

यदि पञ्चम स्थान स्वगृही, उच्च राशि के चन्द्र या शुक्र से दृष्ट या युक्त हो तो सन्तान अवश्य होती है ।

यदि पञ्चम स्थान और पञ्चमेश दोनों ही शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो सन्तान काफी होती है । पुरुष ग्रहों के होने पर पुत्र, और स्त्री ग्रहों के होने पर कन्यायें अधिक होती हैं ।

यदि पञ्चमेश तथा लग्नेश स्वगृही, मित्रगृही या उच्च के होकर एक दूसरे से युक्त या दृष्ट हों तो या फिर बलवान् होकर केन्द्र में या पञ्चम स्थान में एकत्रित हों ता सन्तान अवश्य उत्पन्न होती है ।

यदि धनेश लग्न में हो और लग्नेश, भाग्येश के साथ सप्तम स्थान में हो तो सन्तान अवश्य होती है

यदि पराक्रमेश १–२–४–५ में से किसी एक भाव में हो तो प्रथम सन्तान नहीं रहती। पञ्चमेश, सप्तमेश, लग्नेश तथा गुरु के निर्बली होने पर स्वसन्तान नहीं होती।

यदि सप्तम में शुक्र, दशम में चन्द्र, क्षीण नीच शत्रु क्षेत्री हो और चतुर्थ में दो या दो से अधिक पाप ग्रह हों तो मनुष्य की मृत्यु से प्रथम ही सब सन्तान समाप्त हो जाती है।

यदि लग्न-लग्नेश, सप्तम-सप्तमेश, नवम-नवमेश, द्वादश-द्वादशेश, सभी पाप ग्रह हों या पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त शत्रु राशि के हों तो मनुष्य निर्वंश मृत्यु को प्राप्त होता है।

यदि लग्नस्थ गुरु चन्द्र पर मंगल शनि की पूर्ण दृष्टि हो और शुक्र हीन बली छठे हो तो वंश नहीं चलता। लग्न, सप्तम, द्वादश भाव में यदि सभी पाप तथा क्रूर ग्रह हों और पंचम चन्द्रमा नीच राशि का हो तो मनुष्य स्त्री-पुत्रों से हीन रहता है।

यदि पञ्चमेश, सप्तमेश गुरु तथा शुभ दृष्ट पञ्चम अन्तर्दशागत हो तो पुत्रोत्पन्न होता है।

यदि पंचमेश शुभ पुरुष ग्रह पंचम में हो अथवा पंचम को देखता हो तो प्रथम सन्तान पुत्र उत्पन्न होती है।

यदि गुरु से पञ्चम स्थान का स्वामी बलहीन, पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो अथवा षष्ठेश, अष्टम स्थान में हो और लग्नेश या पञ्चमेश छठे भाव में हो तो मनुष्य निपुत्र ही रहता है।

जिसका सूर्य पुत्रभाव में हो या उसे देखता हो तो मनुष्य शिवोपासक होता है। इसी प्रकार पंचम भाव चन्द्रमा से या शनि या शुक्र से या बुध से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य क्रमशः देवी, काली, चामुण्डा तथा सरस्वती की उपासना करता है। गुरु के होने पर मनुष्य विष्णु, ब्रह्म, राम, कृष्ण, हनुमानादि की पूजा में तत्पर रहता है।

जब पंचमेश पुरुष शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में शुभ या मित्र पुरुष ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो उस मनुष्य को विवाह के पश्चात् प्रथम पुत्र का सुख अच्छा रहता है। इसके प्रतिकूल होने पर पुत्र सुख बहुत कम प्राप्त होता है।

जिसका पञ्चमेश नीचास्त हो और पञ्चम भाव में बुध या केतु हो और भाग्येश भी यदि लग्न में हो तो उस मनुष्य का यदि विवाह किसी न किसी प्रकार हो भी जाय तो भी स्वपुत्र की प्राप्ति नहीं होती।

यदि उच्च का गुरु लग्नेश होकर पञ्चम स्थान में शत्रु-पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त न हो तो मनुष्य को निस्सन्देह शुभ पुत्र का सुख प्राप्त होता है। या पञ्चमेश गुरु को लग्नेश देखे तब भी पुत्र की प्राप्ति होती है और पञ्चमेश लग्नेश के युक्त या दृष्ट होने पर भी पुत्र की प्राप्ति होती है। शुभ मित्र ग्रहों के योग से शुभ पुत्र और अशुभ-शत्रु ग्रहों के युक्त दृष्ट होने पर, कलह प्रिय, शत्रु तथा पाप रत पुत्र की प्राप्ति होती है।

जिसका शनि लग्न में, बृहस्पति अष्टम में और मगल द्वादश भाव में हो तो उसे प्रौढ़ावस्था में पुत्र सुख होता है।

जिसके पञ्चम भाव में स्वगृही या उच्च का शुभ ग्रह या पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वह तीव्र बुद्धि का होता है या पञ्चमेश उच्च के मित्र ग्रह के साथ केन्द्र में हो तो मनुष्य कुशाग्र बुद्धि होता है।

पञ्चम स्थान स्थित शनि की लग्नेश पर पूर्ण दृष्टि हो और पञ्चमेश अशुभ-ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य मूर्ख होता है या नीचास्त पाप ग्रह पञ्चम हो तो भी मनुष्य मूर्खों जैसी वार्ता करता है।

यदि लग्नेश पञ्चम में हो या उसे देखे अथवा पञ्चमेश लग्न में हो या उसे देखे और शत्रु ग्रहों से या शत्रु राशि से दृष्ट युक्त न हो तो पिता पुत्र का आपस में मेल रहता है अन्यथा नहीं।

जिसका पञ्चमेश व्ययेश से युक्त द्वादश भाव में नीच या शत्रु राशि का अस्तंगत हो तो मनुष्य को हृदय रोग होता है।

षष्ठ भाव फल

षष्ठेश्वरे क्रूरयुते विलग्ने रन्ध्रस्थिते वा व्रणदः शरीरे।
कर्मस्थिते तादृशखेचरेन्द्रे व्रणप्रदोऽङ्गे शुभदृष्टियुक्ते ॥

यदि छठे भाव का स्वामी लग्न, अष्टम तथा दशम में पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट

या युक्त हो तो उस मनुष्य को (अस्त्र-शस्त्र अथवा विस्फोटादि फदार्थों से) उसके जीवन में अवश्य ही घाव होता है।

यदि चन्द्रमा, बुध, लग्नेश, सूर्य तथा राहु सभी छठे भाव में एकत्रित हों तो उस मनुष्य को सुज़ाक या गर्मी का रोग होता है। और यदि लग्नेश तथा षष्ठेश चन्द्रमा के साथ छठे भाव में हों तो मनुष्य को जल से भय रहता है। या जल में डूबकर मृत्यु होती है। इसके अतिरिक्त लग्नेश और षष्ठेश मंगल के साथ छठे स्थान् में विद्यमान हों तो युद्ध में, लड़ाई में, अस्त्र-शस्त्र या विस्फोटक पदार्थ या रक्तविकार द्वारा मृत्यु की सम्भावना होती है, यदि षष्ठेश-लग्नेश, शनि के साथ केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उस मनुष्य को कारावास होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा शनि और राहु के साथ (६-८-१२) में हो, और लग्नेश उसे पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उसकी मृत्यु अकस्मात् किसी दुर्घटना द्वारा होती है।

यदि सप्तमेश मंगल छठे स्थान में शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो स्त्री से कलह या शत्रुता रहती है।

यदि छठे घर में सूर्य, मंगल हों तो अनल से, शुक्र, चन्द्र हों तो जल से और यदि शनि, राहु-केतु हों तो विषपान या सर्पादि के काटने से मृत्यु भय रहता है।

यदि वृहस्पति के साथ षष्ठेश-लग्नेश दोनों हों तो मनुष्य नीरोग तथा स्वस्थ रहता है। और शुक्र के साथ होने पर स्त्री को रोग होता है। शनि के साथ होने पर मन्दाग्नि, उदरविकार तथा वात रोग होता है। बुध के साथ षष्ठेश लग्न में हो तो गुह्येन्द्रिय में व्याधि होती है, मंगल के साथ होने पर चेचक, फोड़ा, रक्तविकार या चीर-फाड़, आपरेशन आदि से ठीक होने वाले रोग होते है।

तृतीय-षष्ठ-लाभेषु स्थिताश्चेत् क्रूरखेचराः।
जातस्य योगो भाग्यस्य वक्तव्यस्सूरिभिस्तथा॥

तीसरे, छठे और एकादश स्थान में राहु और शनि (क्रूर) ग्रह शुभ फल करते हैं।

यदि बलहीन षष्ठेश किसी पाप या क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो शत्रुओं से कष्ट मिलता है।

यदि षष्ठेश किसी पाप या अशुभ ग्रह के साथ अष्टम, द्वादश या लग्न में हो तो उस मनुष्य को बवासीर, भगन्दर, नासूर, फोड़ा या घाव से कष्ट होता है। दूसरे घर में होने से किसी भी कुटुम्बी को कष्ट होता है, तीसरे घर में होने से छोटे भाई, बहन को, चतुर्थ में होने से माता या दादी को, पंचम में होने से सन्तान को, छठे और नवम में होने से मामा को, सातवें में होने से स्त्री या प्रेयसी को, दशम में पिता या बाबा को, एकादश में होने से बड़े भाई को या बड़ी बहन को किसी न किसी प्रकार का रक्त-पित्तादि या शूगर सम्बन्धी विकार होता है।

जिस मनुष्य का षष्ठेश सूर्य लग्न में हो तो उसके सिरमें, चन्द्र हो तो मुख में, मंगल हो तो सिर, बाहों या मुँह में, बुध हो तो नाभि से ऊपरी भाग में, गुरु हो तो नाक, कान, कनपटी में, शुक्र हो तो आँखों में, शनि, राहु-केतु से नाभि से नीचे के भाग में, ग्रह दशान्तर्दशा में अवश्य चोट लगकर घाव होता है और यदि पाप ग्रह, पाप ग्रहों के और शुभ ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त हो तो यह दोष नहीं होता।

जिसका षष्ठेश, नीचास्त या शत्रु राशि का ६-८-१२ भाव में हीनबली हो और लग्नेश उच्च स्वगृही तथा मित्र राशि पर बलवान हो तो वह मनुष्य अपने शत्रु पर विजय पाता है।

यदि भाग्येश छठे स्थान में षष्ठेश से दृष्ट हो और षष्ठेश स्वयं पाप युक्त हो तो मनुष्य को बिष, अनल या चोरों से कष्ट मिलता है।

सप्तमभाव फल

सप्तमस्थः सैंहिकेयः जातेन निपुणो भवेत्।
सप्तमस्थो यदि ध्वजः भार्या धूर्येति कथ्यते॥

जिस मनुष्य के जन्म पत्र में सप्तमभाव में राहु बैठा हो तो वह मनुष्य प्रत्येक कार्य में निपुण होता है और केतु के सप्तम होने से स्त्री चालाक होती है।

* दूसरा भाव

सप्तमेश - कुटुम्बेश - कर्मेशास्तु चतुर्थगाः।
परस्त्रीरतो जात इत्यूचुर्गणिका बुधाः॥

यदि सप्तमेश, द्वितीयेश और दशमेश, चतुर्थ भाव में हो तो वह मनुष्य पर से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमस्थो यदि बुधः परस्त्रीसक्त उच्यते ।
सप्तमस्थो यदि गुरुर्भार्या पतिपरायणा ॥

जिस मनुष्य के जन्म पत्र में सप्तम भाव में बुध होता है वह मनुष्य दूसरे की स्त्री से प्रेम करने वाला होता है और यदि गुरु सप्तम हो तो उसकी स्त्री उस मनुष्य को छोड़ देती है ।

सप्तमस्थो यदि भृगुः सौरिणा संयुतो यदि ।
स्वस्त्रीसक्त इति प्रोक्तो जातो ज्योतिषकोत्तमैः ॥

जिसका शुक्र, शनि के साथ सप्तम भाव में हो तो वह अपनी ही स्त्री से प्रेम करने वाला होता है ।

यदि सप्तमेश लग्न में हो और द्वितीयेश के साथ षष्ठेश छठे भाव में हो तो वह मनुष्य दुश्चरित्र होता है । यदि शुक्र उच्च, स्वगृही तथा नीच का सप्तम में हो तो मनुष्य अत्यन्त कामी होता है । और यदि बुध के साथ शुक्र सप्तम में हो तो मनुष्य पर-स्त्री से विषय करने वाला लम्पट होता है । और यदि इनके साथ मंगल भी हो तो मनुष्य अप्राकृतिक नियमों द्वारा अपना वीर्य नष्ट करता है ।

यदि गुरु सप्तम में नीच का हो तो मनुष्य मुख-सौन्दर्य से आकर्षित न होकर स्तन भाग से आकर्षित होता है । यदि सप्तमेश शुक्र नीच का चतुर्थ हो और पंचमेश सप्तम में हो तो उसकी स्त्री गर्भ जनित मरती है । यदि सप्तमेश, व्ययेश शुक्र भाग्य स्थान में शनि से दृष्ट हो तो उसे अनेक स्त्री सहवास प्राप्त होता है । जिसके नीच का सूर्य सप्तम हो तो उसकी स्त्री बाँझ होती है और चन्द्र के नीच होने पर नीच स्त्री से सम्बन्ध होता है । मंगल के नीच होने पर विधवा या क्वाँरी लड़कियों से मनुष्य प्रेम रत रहता है । पापी क्रूर ग्रहों के दृष्ट युक्त होने पर मनुष्य को स्त्री सुख प्राप्त नहीं होता ।

सप्तमेश के व्यय में, तथा लग्नेश और राशीश के सप्तम होने पर अविवाहित रहना पड़ता है । शुक्र चन्द्र युक्त भाव को यदि शनि, शनि युक्त मंगल सप्तम भाव से देखे या लग्न में शनि, मंगल हो तो विवाह नहीं होता । यदि शुक्र, मंगल एक साथ पंचम या सप्तम में हों तो पुत्र-स्त्री सुख नहीं होता ।

यदि सप्तमेश शुक्र के साथ हो तो सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है। राज्येश भाग्येश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है या धनेशस्थ राशीश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

यदि सप्तमेश, दशमेश, द्वितीयेश दशम भाव में एकत्रित हो तो वह पर स्त्री रमण करता है और यदि इनमें से कोई भी चतुर्थ में हो तो यही फल होता है। और यदि सप्तमेश पाप ग्रहों से युक्त लग्न में हो या क्षीण चन्द्र पाप युक्त सप्तम में मंगल से दृष्ट हो तो मनुष्य पर स्त्री गामी होता है।

जितने ग्रह सप्तमेश से सप्तम स्थान में या अन्य स्थानों में पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य के उतने ही विवाह होते हैं किन्तु इसका यह अर्थ कदापि न लेना चाहिये कि सप्तमेश से किसी भी ग्रह के दृष्ट न होने पर विवाह ही न हो, दृष्ट न होने पर भी विवाह होते देखे गये हैं।

जायाधीशे निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकण्टके।
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत्॥

जिस मनुष्य का सप्तमेश स्वक्षेत्री या उच्च का होकर त्रिकोण (५-९) या केन्द्र (१-४-७-१०) स्थान में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बैठा हो (पाप ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित हो) तो उस मनुष्य का विवाह छोटी अवस्था में ही हो जाता है।

यदि किसी के सप्तम स्थान में शुक्र पुरुष ग्रहों या ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य शृंगारी स्त्री से प्रेम विवाह करने की इच्छा रखता है और यही शुक्र अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उस मनुष्य को प्रेम-वियोग का दुख उठाना पड़ता है अर्थात् प्रेम विवाह न होने के कारण क्लेश होता है।

जिसका सप्तमेश चतुर्थ भाव में पुरुष ग्रह हो; या लग्नेश पुरुष ग्रह १-२-७ भाव में हो तो उसका विवाह कठिनता से होता है और वह पर स्त्री गमन की इच्छा रखता है। समय पर चूकता नहीं।

यदि सप्तमेश शुक्र, धनेश और दशमेश के साथ दशम स्थान में हो तो मनुष्य पर स्त्री गमन किये बिना नहीं रहता। या इन तीनों भावों के अधिपतियों

में से, यदि एक भी चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य पर-स्त्री गमन किये बिना नहीं रहता।

जिसका सप्तमेश, पंचमेश से युक्त सप्तम में हो और षष्ठेश से दृष्ट भी हो तो मनुष्य पुत्र रहित रहता है। इसी योग में यदि ये ग्रह, पुरुष ग्रहों से दृष्ट हों तो उसकी सन्तान जार से होती है।

क्षीण चन्द्र सप्तम में, और सप्तमेश शुक्र लग्न में, मंगल से या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो वह मनुष्य प्रेम विवाह रत पर स्त्री गमन करने वाला होता है।

यदि सप्तमेश चतुर्थ में, चतुर्थेश लाभ में, लाभेश धन में और धनेश सप्तम में, हो तो उस मनुष्य को अनेक स्त्रियों से धन की प्राप्ति होती है।

जिसके सप्तम भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तथा सप्तमेश शुभ ग्रह मित्र-शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो मनुष्य का विवाह शुभ होता है। यदि बली बुध यह योग कारक हो तो मनुष्य की स्त्री परम सुन्दर या दर्शनीय होती है, यदि उपर्युक्त योग पाप या अशुभ ग्रहों द्वारा किया गया हो तो मनुष्य का विवाह नहीं होता। यदि विवाह हुआ तो स्त्री कलहकारिणी तथा कुरूप मिलती है।

जिस मनुष्य का सप्तमेश चन्द्रमा या शुक्र, नीच, अस्त, शत्रु, पाप दृष्ट, पाप युक्त द्वादश भाव में हो तो उसकी पत्नी, अपने पति के प्राण घात करने वाली होती है।

अष्टम भाव फल

रन्ध्रभाग्याधिपत्योश्च सम्बन्धो यदि विद्यते।
अष्टमाधिपतेर्दाये संप्राप्ते योगमादिशेत् ॥

यदि अष्टमेश और नवमेश एक दूसरे से दृष्ट या युक्त हों तो अष्टमेश की दशा में धन, यश, शक्ति मिलती है।

यदि लग्नेश अष्टमेश नीच का होकर छठे भाव में हो तो मनुष्य अल्पायु और उच्च का होने पर या स्वगृही छठे भाव में होने पर, एक या दोनों के केन्द्रस्थ होने पर पूर्णायु होती है।

यदि द्वितीयेश, षष्ठेश या अष्टमेश शनि के साथ (३, ६, १२) में हो तो मनुष्य की मृत्यु किसी कैमिकल गैस की अधिकता से या विषैली दूषित वायु के प्रभाव से होती है।

यदि अष्टमेश शनि, षष्ठेश, राहु, केतु के साथ पशु राशि में हो तो मनुष्य की मृत्यु पशु द्वारा होती है। गुरु के साथ होने पर हाथी, बैल, घोड़ा, भैंसादि की दुर्घटना से होती है। यदि सूर्य के साथ हो तो कुत्ते द्वारा काटे जाने पर, चन्द्र के होने पर शल्यचिकित्सा द्वारा (आपरेशन के समय) और मंगल के साथ होने पर, हथियार द्वारा मृत्यु होती है।

यदि अष्टमेश चर राशि का स्वामी होकर चर राशि में ही बैठा हो तो परदेश में मृत्यु होती है। यदि दोनों ही स्थिर राशि हों तो अपने ही घर पर मृत्यु होगी और यदि अष्टम स्थान में द्विस्वभाव राशि हो और अष्टमेश द्विस्वभाव राशि में हो तो मनुष्य की मृत्यु यात्रा या सफर में होती है। इसके अतिरिक्त यदि मंगल भी अष्टमेश के साथ हो तो मोटर, रेलगाड़ी, स्कूटरादि अग्नि से सम्बन्धित दुर्घटना से मृत्यु होगी। बुध के साथ होने पर वायुयान, पैराच्यूट, या फिर ऊँचे स्थान से गिर कर मृत्यु होगी। शुक्र के होने पर जल से, ड्राइंगरूम, वेश्या के घर पर, सीनेमा या थियेटर हाल में भी मृत्यु हो सकती है। शनि के होने पर जल से या लोहे के किसी हथियार से, वर्कशॉप या कारखाने में या फिर अस्पताल में लोहे की खाट पर मृत्यु होना सम्भव है और सूर्य के साथ होने पर देवमन्दिर, राज्यदण्ड, आत्महत्या, म्यूजियमआदि मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करते रहने पर, मस्तिष्क नली के फट जाने पर भी मृत्यु हो सकती है। यदि मृत्यु उस समय न भी हो तो इन दुर्घटनाओं का होना या निमित्त बनना अत्यधिक सम्भव है।

यदि कन्या राशि का सूर्य, चन्द्र अष्टम में हो तो स्वजन द्वारा मृत्यु सम्भव है और यदि मीन राशि के सूर्य, चन्द्र लग्न में हो तो पाप ग्रहों से दृष्ट और युक्त हो और साथ हो अष्टम में पाप ग्रह हों तो स्त्री द्वारा मृत्यु होती है। यदि लग्नेश, सप्तमेश, अष्टमेश सभी अष्टम में हों तो मनुष्य की मृत्यु स्त्री सहित होती है।

यदि स्वगृही शनि, चन्द्र ६, ८, १२ में हों, अष्टमेश अष्टम में पाप ग्रहों से दृष्ट

युक्त तथा उनके बीच में होने से मनुष्य की मृत्यु जलाशय, नदी, सिन्धु, कुआँ आदि से होती है।

यदि किसी का शनि कर्क राशि में, चन्द्र मकर राशि का हो तो उसकी मृत्यु जलोदर रोग से होती है। यदि स्वगृही अष्टमेश बली, मंगल की पूर्ण दृष्टि क्षीण चन्द्र पर हो तो मनुष्य की मृत्यु, अर्श, रक्त विकार, रक्त चाप या किसी शस्त्र दुर्घटना द्वारा होती है।

नीच का शुक्र अष्टम में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य की मृत्यु धातु क्षीण, क्षय द्वारा होती है। या लग्नेश अष्टम में, सूर्य, मंगल, शनि, राहु से दृष्ट छठे भाव में हो तो क्षय द्वारा मृत्यु होती है।

अष्टमेश तथा लग्नेश अन्य पाप ग्रहों के साथ यदि अष्टम स्थान में हों तो मनुष्य की मृत्यु बिजली, भूकम्प, खान के गिरने, रेल, टैक्सी, जहाजादि की दुर्घटना से होती है।

यदि अष्टमेश, पंचमेश से सम्बन्धित धन कारक शुभ ग्रहों के योग से बली होकर दूसरे, चौथे या एकादश में अपने उच्च या स्वगृह में विद्यमान हो तो मनुष्य को उसकी दशान्तर्दशा में लाट्री, बौण्ड, रेस, जुआ, गड़ा हुआ किसी प्रकार का भी अकल्पित लाभ होता है।

जिसका अष्टमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या स्वगृही शुभ दृष्ट शुभ युक्त बली हो तो उस मनुष्य की दीर्घायु होती है और यदि ६-१२-२ में नीच, अस्त, क्षीण तथा शत्रु राशि का ग्रह बलहीन हो तो मनुष्य अल्पायु होता है और जिसका अष्टमेश शुभाशुभ युक्त दृष्ट तथा अस्तंगत स्थानों में किसी भी परम्परा गत न होने पर मनुष्य मध्यायु होता है।

यदि अष्टमेश-लग्नेश और दशमेश तीनों ग्रह केन्द्रों में या शनि से युक्त लग्न या तीसरे भाव में एकत्रित हों तो मनुष्य की दीर्घायु करते हैं।

जिसके अष्टम भाव में एक ग्रह उच्च का एक स्वगृही और एक मित्र राशि का बैठा हो, तीनों ही यदि बल से युक्त हों, अस्त क्षीण कोई भी न हो तो दीर्घायु होता है।

यदि अष्टमेश शनि लग्न या तीसरे भाव में हो तो मनुष्य की दीर्घायु होती है। और यदि राहु अष्टम स्थान में हो तो उसकी मृत्यु ८।। वर्ष न हुई तो मरणासन्न बीमारी से अच्छा होने के पश्चात् ६४ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

अष्टमगत यदि चर राशि में दशमेश हो तो पिता के परोक्ष में मृत्यु होती है, अन्य राशियों में यदि दशमेश अष्टमगत हो तो पिता के सम्मुख पुत्र की मृत्यु होती है।

यदि अष्टम स्थान में शुभ ग्रह हों, अष्टमेश शुभग्रह शुभ स्थान में, शुभ दृष्ट, शुभ युक्त हो तो मनुष्य निरोगी तथा दीर्घायु होता है और यदि अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों, अष्टममेश पाप ग्रह त्रिक स्थानों में पाप दृष्ट, पाप युक्त हो तो मनुष्य की अल्पायु होती है। इसके विपरीत यदि शुभाशुभ ग्रहों का मिश्रण, दृष्टि तथा युति में हो तो मध्यायु आदि ग्रहों के शुभाशुभ बलाबल का पूर्ण विचार करके कहना चाहिये।

नवम भाव फल

भाग्याधिपे शुभयुते शुभग्रहनिरीक्षिते।
तद्भावे शुभसम्बन्धे सत्कीर्ति धनभाग्यवान्॥

यदि शुभ ग्रह भाग्येश होकर नवम में शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यवान्, धनवान तथा सत्कीर्तिवान् होता है।

यदि बलवान भाग्येश शुभ राशीश होकर शुभ स्थान में शुभ राशि का होकर बृहस्पति या शुक्र से दृष्ट या युक्त होकर यदि चर राशि में हो तो अजपा करने वाला, स्थिर राशि में हो तो तपस्वी या ध्यानी और द्विष्भाव में होने पर समाधिस्थ होता है।

भाग्यस्थो यदि भानुः स्यादल्पायुष्यं पितुस्तथा।
चतुर्थे यदि चन्द्रस्तु मातुस्तदल्पं जीवितम्॥

जिसके भाग्य स्थान में रवि (नीच का) हो तो उसके पिता की मृत्यु उसकी अल्पायु (३२ वर्ष) में ही हो जाती है। इसी प्रकार चतुर्थ भाव में (नीच का क्षीण) चन्द्रमा उसकी माता की मृत्यु उसकी अल्पायु में करता है।

भाग्यस्थो भानुभाग्येशो आयुर्हीनो भवेत्पिता ।
लाभस्थो यदि भाग्येशो दीर्घायुर्योगवान् पिता ॥

जिसका सूर्य (नीच का) भाग्येश के साथ नवम स्थान में विराजमान हो तो उसके पिता की आयु उसकी अल्पायु में ही क्षीण हो जाती है । यदि सूर्य नवम न हो और भाग्येश ग्यारहवें भाव में (शुभ ग्रह) हो तो उसका पिता उसकी दीर्घायु होने तक जीवित रहता है ।

भाग्याधिपो लाभगे वा लाभेशो भाग्यगो यदि ।
लाभ-भाग्याधिपत्योश्च सम्बन्धे भाग्यमादिशेत् ॥

जिसका नवमेश एकादश स्थान में हो या एकादशेश नवम में हो या दोनों ही नवम या एकादश में हो या एक दूसरे को देखते हों या किसी प्रकार भी एक दूसरे के अन्योन्याश्रय होने पर वह भाग्यवान् होता है ।

जिसका क्षीण या नीच का चन्द्रमा शुक्र के साथ नवम भाव में हो या नवमेश बलहीन अस्त तथा नीच का शनि से युक्त होकर पंचम में हो तो वह मनुष्य गुरु पत्नीगामी होता है ।

यदि नवमेश, चर राशि का अष्टमभाव में हो तो बच्चे के जन्म समय उसका पिता घर पर नहीं होता है । जिसके जन्म पत्र में मीन का मंगल नवम में हो, बृहस्पति दूसरे भाव में हो, बुध सूर्य शुक्र क्रमशः पंचम-षष्ठ और सप्तम में हो तो वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली तथा धनवान् होता है ।

जिसके भाग्य स्थान में, केन्द्र में, त्रिकोण में पापी या क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य आजन्म दुखी रहता है, जिसका भाग्येश पापी, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य दुखी रहता है ।

यदि भाग्येश नीच, अस्त तथा शत्रु ग्रह की राशि में होकर (६-८-१२) में हो तो मनुष्य दुखी रहता है । यदि कोई भी शुभ ग्रह उच्च का बली होकर नवम में हो या पंचमेश से दृष्ट कोई भी शुभ ग्रह स्वगृही होकर नवम भाव में बलवान् बैठा हो तो मनुष्य धर्मात्मा, धनवान तथा यशस्वी, विद्वान् होता है ।

जिसके नवम स्थान में तीनों शुभ ग्रह पूर्ण बली पंचमेश से दृष्ट होकर स्थित हों तो वह शुभ कर्म करने वाला, धन-धान्य पूर्ण यशस्वी तथा बड़ा आदमी

होता है। विपरीत इसके यदि नवमेश नीचास्त, क्षीण तथा शत्रु राशि का त्रिक स्थान में बैठा हो तो मनुष्य अभागी होता है। सतत प्रयत्न करने पर भी उसकी उन्नति नहीं होती है।

जब सूर्य नवम स्थान में उच्च या स्वगृही शुभ दृष्ट गुरु या बुध से हो तो मनुष्य सरकारी पुस्तक लेखन, वैद्यक, डाक्टरी तथा विदेशी वस्तुओं के व्यापार से लाभ पाता है।

यदि चन्द्र नवम स्थान में उच्च या स्वगृही वृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी, जल से निकाली गई वस्तुओं के व्यापार, कृषिकार्य या किसी स्त्री के संसर्ग से धन की प्राप्ति होती है। जब मंगल नवम स्थान में उच्च का हो तो, सोने से, सेना में पराक्रम से, स्वगृही होने पर लाल वस्त्र, गेहूँ, मूँगादि के व्यापार से, मूलत्रिकोण में खेती से लाभ होता है। नीच, शत्रु-अस्त गृही होने से आग, अतिसार, चित्रकोढ, गुल्मादि रोगों में धन खर्च होता है।

यदि उच्चराशि का बुध नवम में हो तो मनुष्य, दीक्षा, लेखन, खेलने के कार्य (एथलीस्ट) से लाभ पाता है। स्वगृही होने पर शिल्पकला, पीतवस्त्र, स्वर्ण, या फिर किसी स्त्री से लाभ होता है।

मित्रगृही होने पर कृषि या साहुकारा करने से लाभ होता है। नीच का होने से मुकदमे में धन खर्च होता है, शत्रु राशि का होने पर, कोढ़, पथरी, हड्डी का टूटना, वृक्षादि से गिर पड़ना आदि में धन खर्च होता है।

जब गुरु उच्च का नवम में हो तो मनुष्य अनुसन्धान करने वाला, प्रतापी, सेनाध्यक्ष, सभापति, पण्डित, धार्मिक गुरु तथा प्रधान होता है, स्वगृही गुरु, लेखक, प्रोफेसर, अध्यापक, सरकारी नौकर बनाता है, मित्रगृही गुरु, दान लेने वाला, पुजारी, परोपकारी, पुरोहित कर्म करनेवाला होता है।

यदि शुक्र नवम में उच्च का या स्वगृहो हो तो सरकारी नौकरी, शिक्षा सम्बन्धी कार्यों, दीक्षाकार्यों, कृषि तथा जल विभाग के कार्यों से लाभ पाता है। शत्रुगृही होने पर, नीच या अस्त का होने पर अतिसार, धातुक्षीण, मन्दाग्नि, पीलियादि रोगों में धन खर्च होता है।

जब शनि उच्च का या स्वगृही नवम में हो तो मनुष्य, लोहे, कोयले के कारखानों में कार्य करने वाला, इंजन तथा यान, टैक्सी, ड्राईवर, बड़े-बड़े कारकारखानों का मालिक, शुक्र से युक्त या दृष्ट होने पर जलयान चालक, मल्लाह या कोई ऐसा ही कार्य-कर्ता होता है। शत्रु राशि नीच या अस्त का होने पर झगड़ालू, नीच की सेवा करनेवाला तथा पापरत रहता है। रिक्शा, झल्ली, डलियादि से कार्य करने वाला मजदूर होता है।

जिसका नवमेश दूसरे भाव में हो, द्वितीयेश एकादश भाव में और एकादशेश नवम भाव में, राज्येश से दृष्ट पूर्ण बली, उच्च, स्वगृही तथा मित्र क्षेत्री हो तो पाप ग्रहों से दृष्ट-युक्त न होने पर वह मनुष्य वहुत बड़ा धनिक, धार्मिक तथा तीर्थ यात्रा प्रिय होता है।

यदि भाग्येश, लग्नेश का मित्र क्षेत्री तथा पूर्ण बली होकर उच्च, स्वगृही होकर, केन्द्र, त्रिकोण, पराक्रम तथा धर्म स्थान में शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बड़ा आदमी होता है। भाग्येश जिस भाव के स्वामी के साथ शुभ युक्त तथा दृष्ट होकर शुभ स्थान में नीचास्त, शत्रु क्षीणादि दोषों से रहित होकर बैठा हो तो उसी भाव कारक सम्बन्धी से सुख पाता है।

यदि भाग्य स्थान में पाप, क्रूर, नीचास्त, शत्रु क्षीणादि ग्रहों का समूह हो और नवमेश इन्हीं दोषों से युक्त-दृष्ट होकर (६-८-१२) भाव में हीन बल पड़ा हो तो मनुष्य सदा भाग्यहीन रहता है। भाग्येश, धनेश, लाभेश तथा राज्येश के अन्योन्याश्रय होने पर मनुष्य धन-धान्य पूर्ण रहता है।

दशम भावफल

पापेक्षिते कर्मणि पापयुक्ते मानाधिपे हीनबलोपयाते।
जातोऽपवादी विगताभिमानः स्वकर्मतेजोबलकीर्तिहीनः॥

जिस मनुष्य के जन्म पत्र में दशम स्थान में पाप ग्रह हों और दशम स्थान पाप ग्रहों से दृष्ट हो और दशमेश बलहीन हो तो वह दुर्बल, स्वाभिमान रहित, पुरुषार्थ शक्ति, यश, बल, कीर्ति से हीन होता है।

जिस मनुष्य के चार ग्रह एक स्थान में हों, यदि उस स्थान का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो संन्यास नहीं होता। इसी प्रकार (५-६-७-८) ग्रहों की एकत्रित राशि से समझना चाहिये।

जिसका दशमेश सूर्य केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट बैठा हो तो उस मनुष्य की आय या आजीविका दवाइयों या कैमिकल्स से होती है। स्वर्ण, तृण, ऊनादि से भी हो सकती है।

यदि चन्द्र, मंगल से दृष्ट दशम में हो तो जौहरी, खेती, जलवस्तुओं या स्त्री आश्रय से आजीविका हो।

यदि दशमेश मंगल दशम में हो या उच्च का दशम में सूर्य से दृष्ट हो तो मनुष्य कमाण्डर इन चीफ होगा, शस्त्रादि, धातु, अग्नि कर्मादि से जीविका पायेगा, यदि शनि, मंगल से दृष्ट होगा तो प्रसिद्ध डाकू बनेगा, बुध से दृष्ट होने पर डाक्टर, वैद्य या हकीम बनेगा।

यदि स्वगृही बुध दशम में पंचमेश से सम्बन्धित हो तो मनुष्य अध्यापक, पुजारी, कवि होता है, यदि स्वगृही गुरु दशम हो या दशमेश गुरु दशम को देखता हो तो मनुष्य प्रोफेसर, अध्यापक, कवि, नाटचकार, कविता प्रेमी, धार्मिक विचार का होता है।

यदि शुक्र दशमेश होकर दशम में हो या दशम को देखता हो तो मनुष्य जल धातुओं, चाँदी आदि का कार्य करने वाला किसी बड़े फर्म का मैनेजर होता है।

यदि शनि दशमेश दशम में हो तो निगम, जमादार मनुष्य होता है। बुध युक्त होने पर शिव पुजारी, मंगल युक्त होने पर बोझा ढोने वाला, कारखाने का नौकर होता है।

यदि दशमेश चन्द्र केन्द्र में वृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य सिचाई जल विभाग में नौकर होता है, यदि उपर्युक्त ग्रह मित्र राशि अंश में हो तो मित्र की सहायता से, स्वराशि गत होने पर निजी पराक्रम से, उच्च के होने पर किसी बड़े मनुष्य की सिफारिश से, शत्रु राशि का होने पर शत्रु की विनय से कार्य चलता है।

जिसके जन्म पत्र में सूर्य उच्च या स्वगृही हो तो पैतृक सम्पत्ति मिलती है, शुभ युक्त, शुभ दृष्ट होने पर मनुष्य अपने पराक्रम से धन कमाता है, अशुभ दृष्ट होने पर पैतृक सम्पत्ति पर कलह रहती है। यदि चन्द्रमा लग्न या सूर्य से दशम हो तो माता से धन प्राप्त होता है।

यदि कन्या राशि का बुध दशम में मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट होने पर राज्योन्नति कराता है। जिसका राज्येश शुभ ग्रह लाभ-धन तथा पराक्रम में शुभ दृष्ट शुभ युक्त हो या राज्येश, लाभेश, धनेश तथा पराक्रमेश अन्योन्याश्रय से बल पाने वाले होकर शुभ दृष्ट तथा युक्त हो। नीचास्त शत्रु तथा क्षीणतादि दोषों से रहित होने पर मनुष्य राज्योन्नति को पाता रहता है। इसके प्रतिकूल यदि दशम में पाप ग्रह सदोष हों और दशमेश सदोष ६-८-१२ में बैठा हो तो मनुष्य अवनति को प्राप्त होता है, नौकरी तक छूट जाती है, केन्द्र त्रिकोण में होने से उन्नति में रुकावटें पड़ती हैं।

एकादश भाव फल

लाभस्थो यदि देवेड्यः ज्येष्ठभ्रातृस्तु दुःखदः।
लाभे च संस्थितो भौमः शनिना वीक्षितो यदि ॥

यदि ग्यारहवें भाव में बृहस्पति या मंगल शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो बड़े भाई से दुख प्राप्त होता है। जिसके जन्मपत्र में एकादशेश उच्च या स्वगृही होकर केन्द्र में बैठा हो और साथ ही बुध द्वितीयेश होकर केन्द्र या त्रिकोण में विराजमान हो तो मनुष्य व्यापार द्वारा धन कमाता है।

जिसका बृहस्पति उच्च या स्वगृही एकादश स्थान में बुध से दृष्ट बैठा हो तो वह मनुष्य दर्शन शास्त्र का जानने वाला, दार्शनिक, वेदान्ती, धार्मिक प्रवक्ता या प्रोफेसर होता है।

यदि शनि, मंगल, राहु, सूर्यादि पापी क्रूर ग्रह एक साथ एकादश स्थान में हों तो मनुष्य दुखी रहता है, जिसका लाभेश सूर्य, चन्द्रमा और मंगल में से कोई भी केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो तो वह मनुष्य सरकारी नौकरी से आजीविका चलाता है, उसकी इच्छा जमीन, जायदाद बनाकर रहने को अवश्य होती किन्तु ऐसा करना ग्रह के बलाबल, स्थान तथा दृष्टि युक्ति पर बहुत कुछ निर्भर है। बुध के लाभेश होने पर मनुष्य कविता, नाटकादि लिखकर, सम्पादकीय कार्य द्वारा अथवा इसी प्रकार के कार्य द्वारा वाचनालय तथा जिल्दबन्दी के कार्य द्वारा धन कमाता है, जब गुरु लाभेश होकर शुभ दृष्ट केन्द्र में हो तो मनुष्य

वाचनालय, सम्पादकीय कार्य, धार्मिक प्रवक्ता, कथावाचक, तथा इसी प्रकार के और कार्य अध्यापकी, प्रोफेसरी आदि से आजीविका चलता है। जब शुक्र लाभेश होकर शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य शृंगारी कविता करने वाला, स्त्रियों से धन पाने वाला, जौहरी, गन्ने की मिल में कार्य करने वाला, जल विभाग, जलवायु निरीक्षक, दफ्तर में कार्य करने वाला, फर्नीचर, खिलौने आदि के क्रय-विक्रय से लाभ पाने वाला होता है और जिसका शनि लाभेश होकर केन्द्र त्रिकोणादि में मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य लोहे का कार्य करने वाला, फर्म का मैनेजर, नीचों में वैद्यक या डाक्ट्री करने वाला होता है।

धर्मेश-लाभेश-धनेश्वराणामेकोऽपि शातद्युतिकेन्द्रवर्ती।
स्वयं च लाभाधिपतिः गुरुश्चेदखण्डसाम्राज्यपतित्वमेति॥

भाग्येश, लाभेश, धनेश यदि चन्द्रमा से केन्द्र स्थानों (१-४-७-१०) में हो और बृहस्पति स्वयं लाभेश हो तो वह मनुष्य एक बड़ा भूमिधर, धन-धान्य से पूर्ण ऐश्वर्य युक्त जीवन व्यतीत करने वाला (मन्त्री, मिनिस्टर, सेक्रेट्री आदि) बड़ा आदमी होता है।

यदि लाभेश, धन भाव में और धनेश लाभ स्थान में बली हों या ये दोनों ही भावेश चन्द्रमा या लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो तो उस मनुष्य को जीवन में धन का अच्छा लाभ रहता है। या लाभेश जिस-जिस राशि में हो, यदि वही राशीश केन्द्र में शुभ दृष्ट या युक्त हो तो भी अच्छा लाभ रहता है।

लाभेश जिस दिशा का स्वामी हो तो मनुष्य को उसी दिशा से लाभ होता है या लाभेश राशि दिशा से लाभ होता है। जिसका लाभेश पूर्ण बली, उच्च स्वगृही तथा मित्र क्षेत्री होकर शुभ स्थान में शुभ राशि का होकर शुभ दृष्ट-युक्त अन्य पाप ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर अपने ही नवांश में हो तो उस मनुष्य के पास आवश्यकता से कहीं अधिक धन होता है, विपरीत इसके पाप ग्रह, पाप युक्त, पाप दृष्ट, शत्रु राशि का नीचास्त यदि हो तो, पैतृक सम्पत्ति का भी ह्रास हो जाता है।

द्वादश भाव फल

शुभग्रहाः प्रयच्छन्ति व्ययस्था विपुलं धनम् ।
विपरीतं खला जन्तोर्जन्मकाले विशेषतः ॥

जिस मनुष्य के बारहवें स्थान में शुभ ग्रह सुशोभित हों, उसको (शुभ कार्यों में खर्च करने के लिए) काफी धन प्राप्त होता है, इसके प्रतिकूल यदि पाप या क्रूर ग्रह हों तो उसको आजीवन विशेष रूप से प्रतिकूल फल देते हैं अर्थात् अशुभ ग्रहों के होने पर मनुष्य दुखी रहता है ।

जिसके द्वादशेश को, सप्तमेश पूर्ण दृष्टि से देखे तो उसका धन स्त्रियों पर व्यय होता है । यदि स्वगृही मंगल व्यय स्थान में हो तो मनुष्य को खूनी बवासीर, रक्त चाप या रक्तविकार को बीमारी होती है । यदि व्ययेश बुध नीच का होकर छठे स्थान में पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य की मृत्यु हृदय गति रुकने से होती है ।

जिसका बृहस्पति व्यय भाव में हो तो उसको १६ वर्ष से ही गृह कार्य संभालना पड़ता है । यदि सूर्य, शुक्र और मंगल में से कोई भी १२ वें भाव में हो तो नेत्र पीड़ा या नेत्र कमजोर होते हैं, व्ययेश, भाग्येश और पंचमेश का बृहस्पति से शुभ सम्बन्ध होने पर मनुष्य का धन विद्या, पुत्र, पुस्तक, परोपकार तथा धार्मिक संस्थाओं के ऊपर खर्च होता है ।

यदि व्ययेश की दृष्टि से युक्त कोई भी शुभ ग्रह भाग्य स्थान में हो तो मनुष्य का धन तीर्थ यात्रा में खर्च होता है और अशुभ ग्रह होने पर यात्रा में कष्ट होता है या यात्रा में अड़चनें आती हैं ।

व्ययेश जिस भाव में हो और जिस भाव को अपनी पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो, उसी भाव सम्बन्धी मनुष्य का खर्च होगा, जैसे, व्ययेश सूर्य लग्न में हो तो मनुष्य को अपनी तथा स्त्री की बीमारी पर खर्च करना होगा, यदि व्ययेश और अष्टमेश की दृष्टि-युति सम्बन्ध अष्टम स्थान में हो तो मनुष्य की अत्यधिक रोग के कारण मृत्यु हो सकती है और यही सम्बन्ध द्वादश भाव में हों तो गुरुतर रोग भी खर्च से अच्छा हो जायेगा ।

जिसका क्षीण चन्द्र क्रूर या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट द्वादश भाव में हो तो उसे देशान्तर में जुर्माना देना पड़ता है, हृदय बेचैन और शरीर में विकलता रहती है और यदि अपने उच्च का शुभ ग्रह व्यय भाव में मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो या दशमेश गुरु व्यय भाव में अपने मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य ऐश्वर्य युक्त जीवन व्यतीत करता है। जब बुध, बृहस्पति और शुक्र तीनों ही शुभ ग्रह से व्ययभाव में मीन राशि के एकत्रित बैठे हों तो उस मनुष्य को मोटर, जलयान, नभयान आदि की खूब सैर करने को मिलती है।

यद्भावकारको लग्नाद् व्यये तिष्ठति चेद्यदि।
तस्य भावस्य सर्वस्य भाग्ययोग उदीरितः॥

जिस भाव का भी कारक यदि लग्न से द्वादश भाव में हो तो मनुष्य का भाग्योदय होता है और वह भाग्यवान् समझा जाता है। कारक भाव स्वामी नहीं होते।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु	धनु	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	शत्रु	कलत्र	आयु	पितृ	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	गुरु	कुज	शशि	गुरु	शनि	शुक्र	शनि	सूर्य	गुरु	गुरु	शनि

कोई आचार्य नवम स्थान को और कोई आचार्य दशम स्थान को पितृ कारक मानता है इसलिये प्रत्येक फलादेश कहने वाले को देश-काल की रीति, रिवाज के मुताबिक समयानुसार पितृ कारक का स्थान निर्धारित कर अपने फलादेश की पुष्टि करनी चाहिये। क्योंकि सूर्य बारहवें स्थान में, नवम की अपेक्षा चन्द्र चतुर्थ की अपेक्षा और शुक्र सप्तम की अपेक्षा द्वादश भाव में शुभ फल करता है। यदि चन्द्र द्वादश हो तो चौथे घर से नवम हुआ, मंगल तृतीय से दशम हुआ इसी प्रकार लग्न से द्वादश भाव में प्रत्येक भाव कारक अपने स्थान से कुछ शुभ, फल दायक ही पड़ता है, ज्योतिषियों के अनुभव की बात है।

जिस मनुष्य के व्यय भाव में शुभ ग्रह, शुभ दृष्ट तथा शुभ युक्त हो तो उस मनुष्य का धन परोपकारादि शुभ कार्यों में खर्च होता है, यदि व्ययेश शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में बली, उच्च, मित्र राशि या स्वगृही शुभ दृष्ट-युक्त हो तो उस मनुष्य का धन विद्याध्ययन, चिकित्सा, निर्धनादि की सेवा, तीर्थयात्रादि में परोपकार के

लिए व्यय होता है। क्रूर ग्रह तथा पाप ग्रह, या पाप क्रूर व्ययेश शुभ दृष्ट युक्त हो तो मनुष्य का धन अपनी या अपनी स्त्री-बच्चों की रोग चिकित्सा, चोट, दुर्घटना, मुकदमादि में व्यय होता है, पाप ग्रह यदि नीच, शत्रु राशि के, पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट-युक्त हो या फिर व्ययेश पाप ग्रह त्रिक स्थानों में पाप युक्त तथा दृष्ट हो तो उस मनुष्य का धन नीच या पाप कर्मों द्वारा नष्ट हाता है, जैसे वेश्या-गमन, सुरापान, चरस, भंग, गाँजादि दुर्व्यसनों में लम्पटता के साथ, चोरी, डकैती या किसी लड़की को लेकर भाग जाने वाले मुकदमें में खर्च होता है।

जिस मनुष्य का व्ययश बलहीन हो और वह जिस क्रूर या पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या जिसके कारक से या जिस भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस मनुष्य का धन उन्हीं ग्रहों के प्रभाव द्वारा निर्धारित कार्यों में व्यय होगा। जैसे सूर्य पितृ कारक क्रूर ग्रह है, दशम स्थान पितृ स्थान है तो यदि दशमेश पाप ग्रह हो तो सूर्य और दशमेश पाप ग्रह के प्रभाव से उस व्यक्ति का धन पिता के कारण किसी न किसी कार्य में खर्च होगा। इसी प्रकार मंगल, शनि आदि ग्रहों का विचार भी करना चाहिये।

जिसके व्यय भाव में अष्टमेश, शनि, राहु या केतु, षष्ठेश से दृष्ट बैठे हों तो उस मनुष्य को जीवन में कभी सुख प्राप्त नहीं होता।

यस्मिन् भावे स्थितो मन्दो यं भावं वीक्षितेऽथवा।
तस्य तस्यापि भावस्य न्यूनतां च वदन्ति हि॥

शनि जिस भाव में बैठता है या जिस भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है उसकी हानि ही करता है।

विक्रमो भाग्यराशिश्च शनिना वीक्षितो यदि।
तस्य भावस्य प्राबल्यमित्यूचुर्गणकोत्तमाः॥

तृतीय (पराक्रम), नवम (भाग्य) भाव यदि शनि द्वारा पूर्ण दृष्ट हो तो इन दोनों स्थानों की हानि नहीं होती बल्कि वृद्धि ही होती है।

स्थानहानिः करोति जीवः स्थानवृद्धि; करोति शनिः।

जिस स्थान में बृहस्पति बैठा हो उस स्थान का उत्तम फल नहीं होता बल्कि हानि ही होती है किन्तु जिन स्थानों को बलवान गुरु देखता हो उन भावों के

फलादेशों की वृद्धि करता है, इसी प्रकार शनि जिन भावों में बैठता है उनका फल उसकी पूर्ण दृष्टि से देखे जाने वाले भावों की अपेक्षा अत्यन्त शुभ होता है।

त्रिषटे एकादशे राहुः त्रिषटे एकादशे शनिः।

(३–६–११) तीन, छै और ग्यारह भावों में राहु और शनि अशुभ फल नहीं करते। राहु जिस राशि पर होता है उसी राशि के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करता है। पंचम स्थान का राहु मनुष्य को गूढ रहस्य समझने की शक्ति प्रदान करता है और वह मनुष्य डिप्लोमेट (द्वयर्थक) बातें करने वाला होता है।

न शुभं योगमात्रेण प्रवदेत् शनिजीवयोः।

बृहस्पति और शनि का एक स्थान में बैंठना शुभ नहीं होता है। इनकी युति अशुभ फल दायक है। द्वितीयेश, तृतीयेश, सप्तमेश, अष्टमेश और द्वादशेश मारक ग्रह होते हैं।

लग्नस्थ - रन्ध्रनाथस्य दशाकाले तु मारकः।
रन्ध्रेश एव भवतीत्याहुर्जातककोविदाः॥

जिस मनुष्य का अष्टम स्थान का स्वामी लग्न में बैठा हो तो उस मनुष्य की मृत्यु अष्टमेश की दशा में होती है।

राहुर्दशायां संप्राप्ते राहुकेतोस्तथा शनेः।
रवेरन्तर्भुक्तिकाले पितामरणमाप्नुयात्॥

राहु की अन्तर्दशा में राहु, केतु, शनि और सूर्य में से किसी एक की दशा में उसके पिता की मृत्यु हो जाती है, जिसकी राहु में उपर्युक्त अन्तर्दशायें चल रही हों।

केतुर्दशायां संप्राप्ता पितुर्मरणमुच्यते।
भौम-मन्द-रवीणां च राहोरन्तर्दशासु च॥

जिस मनुष्य को केतु की दशा हो और उसमें मंगल, शनि, सूर्य और राहु की अन्तर्दशा में से किसी एक में अवश्य उसके पिता की मृत्यु हो जाती है।

जो ग्रह लग्न या सप्तम में हो, या नवमेश सप्तम भाव में हो तो इनमें से किसी एक की दशान्तर्दशा में मनुष्य अपने परिश्रम द्वारा धन कमाता है।

जिसके जन्म पत्र में गुरु या शुक्र अथवा ये दोनों ही मंगल से पूर्ण दृष्ट हों तो उस मनुष्य को अपने पुत्र, स्त्री या इन दोनों में से किसी से भी सुख प्राप्त नहीं होता।

द्वन्द्वी भूपग्रहाश्चाष्टौ वेदसंख्यासु राशिषु।
स्थिताश्चेद् बहुभाग्यस्तु वक्तव्यो जातकस्य हि॥

जिस मनुष्य के चार स्थानों में आठ ग्रह दो-दो के हिसाब से (केन्द्र और त्रिकोण में) बैठे हों तो वह मनुष्य भाग्यवान् होता है।

द्वन्द्वी भूपग्रहाः षष्ठ गुणसंख्यासु राशिषु।
स्थिताश्चेद्भाग्ययोर्यस्तु वक्तव्यो जातकस्य हि॥

जिस मनुष्य के तीन स्थानों में छै ग्रह दो-दो के हिसाब से (केन्द्र और त्रिकोण में) बैठे हों तो वह मनुष्य भाग्यवान् होता है।

यहाँ भाग्यवान् का अर्थ समझना यथार्थ है कि भाग्यवान् किसे कहते हैं। प्रथम वह जो पैतृक सम्पत्ति का उपभोग सुख से करता है, दूसरे वे जो निजी पुरुषार्थ से धन-धान्य तथा अनेक प्रकार की सम्पत्ति से सम्पन्न होकर व्यापारादि के द्वारा यश कमाते हैं या ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करते हैं। तीसरे वे होते हैं जो सरकारी नौकरी में उच्च कर्मचारी होकर मोटर, स्कूटरादि में शानदार कपड़े पहन कर निकलते हैं। चौथे प्रकार के वे भी मनुष्य हैं जो कि अपने इष्ट-मित्र, माता-पिता, बहन-भाई, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होते हैं, भाग्यवान् समझे जाते हैं। मेरे देखने में यही आया है कि जिन मनुष्यों के चारों केन्द्रों या चार-पांच, नौ-दस भावों में दो-दो ग्रह बैठे हों वे मनुष्य सरकारी उच्च कर्मचारी होते हैं और वे सुख से जीवन व्यतीत करते हैं (६-८-१२) या और किसी स्थान पर दो-दो के हिसाब से आठ ग्रह हों तो मनुष्य साधारण सरकारी नौकर होता है और उसकी बातें ऊँची हवाई किले की तरह होती हैं। और जब दो-दो ग्रह के हिसाब से छै ग्रह, लग्न, द्वितीय और द्वादश भाव में हों या लग्न-चतुर्थ-दशम या पांच-नवम दशम में हों तो मनुष्य बड़ा सरकारी कर्मचारी होता है और मृत्यु समय तक उसके पास काफी धन तथा सम्पत्ति हो जाती है। इसके अतिरिक्त 'त्रक स्थानों में छै ग्रह होने पर मनुष्य साधारण सरकारी कर्मचारी होकर साधारण जीवन व्यतीत करते देखे गये हैं।

यदि भाग्येश स्वगृही भाग्य स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो और अन्य अशुभ ग्रहों से किसी प्रकार भी सम्बन्धित न होने पर भाग्येश की दशा में पूर्ण भाग्योदय होता है।

यदि नवमेश और लग्नेश दोनों ही स्वगृही या उच्च के होकर लग्न या भाग्य या केन्द्र त्रिकोण में अशुभ दृष्ट-युति से रहित हो तो वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यवान् होता है।

जिसके समस्त शुभ ग्रह त्रिक स्थानों में पाप, अशुभ, क्रूर, वक्री और शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो उसकी अल्पायु होती है।

लग्नेश अष्टम में, अष्टमेश लग्न में, या दोनों ही ६–१२ भाव में गुरु से सम्बन्धित न होने पर अशुभ-क्रूर ग्रहों से दृष्ट होने पर अल्पायु करते हैं।

लग्नेश अष्टम में, अष्टमेश द्वादश में दोनों ही अशुभ ग्रह यदि किसी प्रकार से गुरु चन्द्र से सम्बन्धित न हो तो अल्पायु करते हैं।

जिस मनुष्य का लग्नेश सौम्य ग्रह हो और वह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो या फिर लग्न दो शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य धन-धान्यपूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। इसके अतिरिक्त यदि लग्न अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उस मनुष्य का जीवन कष्टमय व्यतीत होता है।

जिसके लग्न में अशुभ पापग्रह हो और लग्नेश निर्बल हो, अस्त, नीच तथा शत्रुराशि हो या ६-८-१२ स्थान में बैठा हो तो मनुष्य सदा अस्वस्थ तथा रोगी रहता है।

जब किसी भाव का स्वामी ६-८-१२ में से किसी एक स्थान में हो और इन तीनों स्थानों में से किसी एक स्थान का स्वामी उपर्युक्त भाव में हो तो उस स्थान के शुभफल की हानि ही होती है। और जब वह ग्रह अपने मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उसके फल की हानि नहीं होती बल्कि कुछ शुभ ही फल होता है।

नोट :—प्रत्येक ज्योतिष का कार्य करनेवाले मनुष्य को उचित है कि फलादेश कहने से प्रथम निम्नांकित बातोंपर विशेष रूप से ध्यान देकर और विवेक

द्वारा प्रत्येक बात को पूर्ण रूप से विचार कर अपने फलादेश की पुष्टि करे और सर्वप्रथम जिस भाव का फल कहना हो उसकी स्थिति पर ध्यान दे फिर उस भावगत शुभाशुभ राशि का विचार करे। और भावस्थ ग्रहों के शुभाशुभ ग्रहों के परिणाम का विचार करे। तत्पश्चात् भावेश की स्थिति, बलाबल, शुभाशुभ राशि के संयोग के साथ-साथ भाव, तथा भावेश पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि-युति को विचार कर शान्ति से इस पर भी तीव्र दृष्टि रखे कि दूसरे घर में मंगल तो नहीं है। चतुर्थ में बुध, पंचम में बृहस्पति, छठे में शुक्र और सप्तम स्थान में शनि तो नहीं है क्योंकि उपर्युक्त भौमादि ग्रह, अंकित घरों में अशुभ फल करते हैं। यदि चन्द्रमा भी इन ग्रहों के साथ इनके दूषित फल स्थान में हो तो उसका फल भी निष्फल ही रहता है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों लग्न में एक साथ बैठे हों तो अशुभ फल करते हैं।

राजयोग

ज्योतिषशास्त्र में योगों का विशेष स्थान है। ये योग अनेक प्रकार के होते हैं, ये योग दृष्ट-युति तथा अन्योन्याश्रय के सम्बन्ध से प्रत्यक्ष फल के प्राप्त होने में एक क्रान्तिकारी विप्लव या परिवर्तन उत्पन्न कर देते हैं जो कि सर्वसाधारण ज्योतिषियों को तुरन्त समझ में न आ सकने के कारण ग्रह फलादेश कुछ से कुछ हो जाता है। और ज्योतिषी अपने उपहास से खिसियाना होकर भीगी बिल्ली की तरह दुम दबाकर अपने स्थान से भागने का प्रयत्न करता है। इसलिए यह आवश्यक सा हो जाता है कि दरिद्र, रेका, प्रव्रज्या, राजयोगादि का वर्णन कर इस कठिन उलझन को सुलझाने का सफल प्रयत्न किया जाय ताकि सभी पाठक या ज्योतिष में रुचि रखनेवाले व्यक्ति पर्याप्त लाभ उठा सकें। ये उपर्युक्त सभी योग यथा नाम तथा गुणाः की कहावत को पूर्णरूप से चरितार्थ करते हैं। इन योगों का वर्णन अनेक ग्रन्थों में अनेक प्रकार से मिलता है जिनमें राजयोगों को महत्त्व विशेष रूप से दिया गया है। इसलिए हम भी इस पुस्तक में राजयोगों का महत्वपूर्ण वर्णन करके, और दूसरे योगों का वर्णन किसी दूसरी ही पुस्तक में करेंगे।

माननीय ज्योतिष ग्रन्थों में ३२ प्रकार के राजयोगों का वर्णन है। जिस मनुष्य के जन्म-पत्र में ३२ प्रकार के सभी योग पूर्ण रूप से ज्योतिषशास्त्र के कथनानुसार पूर्ण बैठ जाते हैं वह मनुष्य चक्रवर्ती राजा होता है जिनमें नीच भंग राजयोग भी अपना विशेष स्थान रखते हैं। ये राज योग शुभ ग्रहों से शुभ स्थानों में शुभ राशि, शुभावेश की दृष्टि युति अन्योन्याश्रय से उत्पन्न होते हैं जो कि विचार की गहरी दृष्टि से प्रत्यक्ष दिखाई दे जाते हैं। सर्व-साधारण ज्योतिषियों को इनका आभास भी नहीं होता है। इसलिये हम सर्व-प्रथम नीच भंग राजयोग का वर्णन कर अन्य राज योगों का वर्णन करेंगे। यह तो सभी ज्योतिष के कार्य करने वाले भली भांति जानते हैं कि कोई भी शुभ से शुभ, पाप से पाप तथा क्रूर से क्रूर ग्रह नीचास्त होने पर अपने फल की हानि करता है। नीच ग्रह वे होते हैं जो अपने उच्च से सप्तम स्थान में बैठे होते हैं और सूर्य के साथ बैठने से बुध को छोड़ कर सभी ग्रह प्रभाहीन या अस्त कहलाते हैं। अर्थात् सूर्य के साथ होने से प्रत्येक ग्रह का प्रभाव न्यून हो जाता है जिससे शुभ ग्रह की सौम्यता, पाप ग्रह की पाशविकता और क्रूर ग्रहों की क्रूरता दूर हो जाती है और सौम्य ग्रह अशुभ तथा पाप-क्रूर ग्रह कुछ शुभ फल करने लगते हैं। इसी प्रकार नीच भंग होने पर भी शुभाशुभ ग्रहों के फलों में भारी परिवर्तन आ जाता है।

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्, तद्राशिनाथश्च तदुच्चनाथः।
भवेत्त्रिकोणे यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥ (लग्नचन्द्रिका)

जिसके जन्म समय में जो भी ग्रह अपनी नीच संज्ञा वाली राशि में स्थित हो या बैठा हो, यदि उस राशि का स्वामी और उसकी उच्च संज्ञा राशि का स्वामी त्रिकोण (५–९) या केन्द्र (१, ४, ७, १०) में बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है या फिर चारों दिशाओं में भ्रमण करने वाला यशस्वी, धार्मिक होता है। अर्थात् देश-विदेश में दार्शनिकता के लिए यश प्राप्त करता है (ये नीच भंग यदि तीन या चार ग्रहों के एक ही जन्म पत्र में पड़ जायें तो अवश्य ही उपर्युक्त फल के द्योतक होते हैं। ऐसा व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्य भोगने वाला राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, मन्त्री या फिर कर्मकांडी, दार्शनिक, योगी, धार्मिक स्वामी विवेकानन्द की तरह होता है। एक मात्र नीच भंग से केवल धार्मिक प्रवृत्ति ही पाई जाती है।)

नीचस्थितो जन्मनि यद् ग्रहस्य तद्राशिनाथश्च: यदुच्चनाथ: ।
यदि केन्द्रवर्ती भवेत्त्रिकोणे दूषितफलं तद् ग्रहो न विद्यते ॥

जो ग्रह किसी जन्मपत्र में नीच राशि में बैठा हो, यदि उस राशि का स्वामी और उसका उच्च का ग्रह केन्द्र और त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ६) में से किसी भी एक या दोनों ही पृथक्-पृथक् बैठा हो तो उस जन्म पत्र वाले मनुष्य नीचस्थ ग्रह का दूषित फल हानि कारक नहीं होता है बल्कि यह नीच भंग कुछ लाभदायक ही रहता है ।

प्रत्यक्ष रूप से देखने में अभीतक यही आया है और पुस्तकावलोकन का सार भी यही है कि सभी शुभाशुभ ग्रह समय पर केन्द्र और त्रिकोण में अन्योन्याश्रय से राजयोग कारक हो जाते हैं किन्तु कुण्डली के सभी स्थान राज्ययोग कारक स्थान नहीं होते । चाहे उनमें कितने ही सौम्य ग्रह अपनी प्रभा से युक्त ही क्यों न बैठे हों । इनमें त्रिक (६, ८, १२) स्थान बहिष्कृत से ही रहते हैं और उपर्युक्त स्थानों में भी (१, २, ५, ६, १० ११) इन स्थानों का महत्त्वपूर्ण फलादेश मिलता है जैसा कि पाठकों को आगामी श्लोक से प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होने लगेगा ।

नीचस्थो रिपुराशिस्थ: खेटो भावविनाशक: ।
मूलस्वतुङ्गमित्रस्थो भाववृद्धिकरो भवेत् ॥ (जातकपारिजात)

जो भी ग्रह नीच (अस्त) शत्रु राशि का जन्मपत्र में होता है वह अपने स्थान के फल का नाश करता है और जो ग्रह केन्द्र त्रिकोण में स्वगृही उच्च तथा मित्र राशि का होता है वह अपने स्थान के फल की वृद्धि करता है ।

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रह: स्यात्तद्राशिनाथोऽथ यदुच्चनाथ: ।
स चेद्विलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥ (सर्वार्थचिन्तामणि)

जन्मपत्र में जो ग्रह नीच राशि में है उस राशि का स्वामी तथा उसके उच्च राशि का स्वामीकेन्द्र (१-४-७-१२) त्रिकोण (५-९) में बैठा हो, वह मनुष्य राजा होता है या धार्मिक होता है । (चक्रवर्ती यहाँ राजा शब्द का विशेषण नहीं है) अत: सम्राट् नहीं कह सकते ।

नीचस्थितो जन्मनि ये ग्रहेन्द्राः स्वोच्चांशगा राजसमानभाग्याः ।
उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वन्ति तथैव भाग्यम् ॥

जन्मपत्र में जो नीच ग्रह अपने उच्चांश में (बली) हो तो राजा के समान ऐश्वर्य या सुख-सम्पत्ति या धन-धान्य प्रदान करते हैं और उच्च के ग्रह अपने नीचांशों में होने पर उनके विपरीत फल प्रदान करते हैं । अर्थात् नीचांशों पर उच्च ग्रह अशुभ फल प्रदान करते हैं । ज्योतिषियों को उच्च ग्रह देखकर प्रसन्नता से शुभ फल ही न कहने चाहिये बल्कि नीचांश पर उच्च ग्रहों का अशुभ फल कहना ही उचित है ।

निशाकरे केन्द्रगते विलग्नं त्यक्त्वा त्रिकोणे यदि जीवदृष्टे ।
शुक्रेण दृष्टे बलपूर्णयुक्ते जातो नरो भूपतितुल्यभाग्यः ॥

जिस मनुष्य का पूर्ण बली चन्द्रमा लग्न को छोड़ कर शेष केन्द्र या त्रिकोण (४-७-१०-५, ९) में यदि पूर्ण बली शुक्र या बृहस्पति से पूर्ण दृष्ट हो तो वह मनुष्य राजा के समान भाग्यवान् होता है अर्थात् सुख से ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला होता है ।

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि तदुच्चनाथः ।
केन्द्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूता प्रकीर्तितौ भूपतिसम्भवाय । (जातकाभरण)

जिस जन्म पत्र में जो भी ग्रह नीच का पड़ा हो, यदि उस राशि का स्वामी और नीचस्थ ग्रह का उच्चाधिपति केन्द्र (१, ४, ७, १०) में बलवान् बैठा हो तो मनुष्य ऐश्वर्यवान्, धन-धान्य से युक्त राजा या राजाके समान आधुनिक युग का मन्त्री आदि के समान बड़ा आदमी होता है ।

नीचग्रहेशोच्चेशः केन्द्रे नृपतुल्यः । (जातकतत्त्व)

जिसका नीचस्थ ग्रह राशिपति यदि उच्च का होकर केन्द्र में बैठा हो तो वह मनुष्य राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है ।

नीचगा स्वोच्चांशगाः नृपतुल्यः । (जातकतत्त्व)

नीचस्थ ग्रह यदि अपने उच्चांश राशि के नवांश में हो तो मनुष्य राजा के समान होता है ।

नीचे जीवेऽङ्गे धर्मपे रन्ध्रे शुभांशे नृपतुल्यः ॥ (जातकतत्त्व)

मकर राशिगत नीचस्थ बृहस्पति लग्न में हो और नवमेश, अष्टमभावगत शुभ राशि के नवांश में स्थित हो तो भी मनुष्य राजा के समान ही होता है।

नीचस्थितो जन्मनि ये ग्रहेन्द्राः स्वोच्चांशगा राज्यसमानभाग्याः ।
उच्चस्थिता चेदपि नीचभागा ग्रहा न कुर्वन्ति तथैव भाग्यम् ॥

जन्मपत्र में जो ग्रह नीच के बैठे हों, यदि वे नवांश में उच्च के हो जांय तो ऐसे योग वाले मनुष्य राजाओं के समान भाग्यशाली होते हैं, इसके प्रतिकूल जो ग्रह अपनी उच्च राशि पर हों और नवांश में नीच के हो जायं तो ऐसे योग वाले मनुष्य प्रत्यक्ष में शुभ ग्रह होते हुए भी भाग्यहीन ही रहते हैं।

नीचङ्गतो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः ।
सचन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिक-चक्रवर्ती ॥ (जातकशिरोमणि)

जन्म समय जो ग्रह नीच राशि में हो, उस राशि का स्वामी अथवा उसको उच्चराशि का स्वामी लग्न में हो या चन्द्रमा से केन्द्र (१, ४, ७, १०) हो तो वह मनुष्य बड़ा ही धार्मिक चक्रवर्ती राजा होता है।

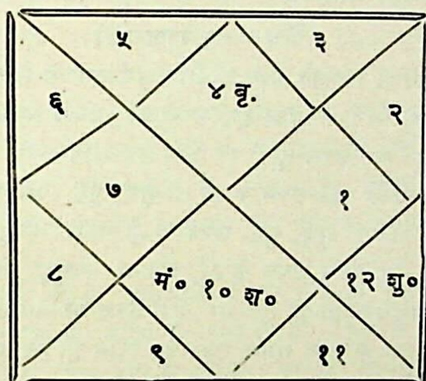
नीचस्थितग्रहनवांशपतौ त्रिकोणे, केन्द्रेऽथवा चरगृहे यदि जन्मलग्ने ।
तद्भावपे चरगृहांशसमन्विते वा, जातो महीपतिरतिप्रबलोऽथवा स्यात् ॥

नीच राशि में गये हुए ग्रह के नवांश का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में हो या जन्म लग्न चर राशि में हो या लग्नेश चर राशि के नवांश में हो तो वह मनुष्य प्रतापी राजा होता है।

कर्कलग्ने सुराचार्यो धर्मस्थो भृगुनन्दनः ।
सप्तमे भूमिजः शौरी राजराजो भवेन्नरः ॥

जिस मनुष्य का कर्क लग्न बृहस्पति से सुशोभित हो, शुक्र धर्म स्थान में विराजमान हो, शनि और मंगल सप्तम स्थान में बैठें हों तो वह मनुष्य सम्राट् होता है। अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि उच्च का गुरु लग्न में हो और उच्च का शुक्र भाग्य स्थान में हो, इनके अतिरिक्त उच्च का मंगल स्वगृही शनि के साथ सप्तम भाव में हो तो मनुष्य राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री या कोई और मन्त्री होता है। जिन देशों में राज्य प्रथा है वहाँ राजा का पुत्र उपर्युक्त ग्रह फलों से युक्त मनुष्य अवश्य ही राजा होता है (भारत में राजा, सम्राट् प्रथा अब नहीं हैं)

पाठकों की सुविधा के लिए इसकी कुंडली खींच कर दिखाई जाती है, शेष राजयोगों के लिए पाठक स्वयं परिश्रम कर अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं। कर्क का गुरु उच्च का होता है, मीन का शुक्र उच्च का होता है, मकर का मंगल उच्च का होता है और मकर का शनि स्वगृही होता है। इस प्रकार तीन ग्रह उच्च के हुए और एक ग्रह स्वगृही हुआ। जिसकी कुंडली निम्नलिखित प्रकार से है।



अब हम यहां मेष से लेकर मीन राशि लग्न पर्यन्त राज योग लिखने का सफल प्रयत्न करेंगे। साधारणतः सभी मनुष्य राजयोग नाम श्रवण से ही प्रफुल्लित हो जाते हैं। राज योग में प्राचीन काल में हो सकता है कि सभी मनुष्य राजा हो जाते हों क्योंकि उस समय दो चार गाँव का जमीदार भी राजा ही कहलाता था। प्राचीन काल में भारत सहस्रों रियासतों में विभक्त था और छोटे-बड़े सैकड़ों ही राजा थे जो कि अपने राज्य वृद्धि के लिये नित्य प्रति लड़ते रहते थे। देहली और अजमेर का स्वामित्व धारण करने वाला पृथ्वी राज चौहान उस समय चक्रवर्ती राजा या सम्राट् कहलता था किन्तु अब यह बात नहीं है। सभी रियासतें समाप्त हो गईं और राजराजेश्वर केवल राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, उप प्रधान (मिनिस्टर), सेक्रेट्री, डिप्टी सेक्रेट्री आदि बड़े आदमी ही शासनसत्ता के कर्णधार माने जाते हैं। उच्चादि ग्रह अपना फल

दिये बिना तो नहीं रहते। इसलिये उन ग्रहों के प्रभाव स्वरूप मनुष्य राजा, सम्राट् न होकर राष्ट्रपति से लेकर अच्छे सरकारी नौकर तक होते हैं। युग के प्रभाव से ग्रहों के फलादेश इसी प्रकार के देखने में आते हैं। ऐसे ही राजाओं की आपसी लड़ाई आजकल केवल आपसी मुकदमों की हारजीत तक ही सीमित रह गई है। इसलिये पाठकों को राजयोग तथा हार-जीत का फल समयानुसार विभिन्न रूप से कहना चाहिये।

मेष लग्न राजयोग

पूर्ण मेष लग्न में जिसका जन्म हो और सूर्य लग्न में उच्च का हो, उच्च का गुरु कर्क का चतुर्थ भाव में बैठा हो, उच्च का मंगल मकर का दशम स्थान में हो, तो या सूर्य-गुरु के उच्च होने पर तुला का शनि सप्तम में उच्च हो तो, या सूर्य-मंगल-शनि तीनों ग्रह उच्च के हों तो सूर्य, गुरु, मंगल और शनि चारों ही उच्च के हो तो या सूर्य, गुरु उच्च के हों और स्वगृही चन्द्रमा गुरु के साथ हो तो, या सूर्य-शनि उच्च के हों, चन्द्रमा स्वगृही हो तो या सूर्य मंगल उच्च के हों चन्द्रमा स्वगृही हो तो, या सूर्य उच्च का चन्द्रमा स्वगृही हो तो या शुक्र स्वगृही सूर्य बुध के साथ मंगल उच्च का दशम हो तो, या उच्च का मंगल, नीच का सूर्य बुध के साथ, कर्क का शनि हो तो, या गुरु भाग्य स्थान में, सूर्य बुध सप्तम में, मंगल रिपु भाव में हो तो, या सूर्य, बुध, शुक्र सप्तम में गुरु भाग्य स्थान में हो तो, या सूर्य-शुक्र सप्तम में मंगल दशम में शनि चतुर्थ में हो, सूर्य सप्तम में, गुरु नवम में, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में हो या शुक्र सूर्य सप्तम में मंगल दशम में गुरु पंचम भाव में हो तो, या सूर्य-शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में और बृहस्पति पंचम स्थान में हो तो, या सूर्य शुक्र बुध सप्तम में शनि चतुर्थ में हो या सूर्य-बुध सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हों तो, या मेष का मंगल लग्न में उच्च का बृहस्पति चतुर्थ में हो या शुक्र बुध सप्तम में, मंगल दशम से बृहस्पति पंचम में हो तो, शुक्र बुध सप्तम, शनि एकादश में मंगल रिपु भाव में हो तो या बुध सप्तम में मंगल दशम में शनि एकादश में गुरु पंचम में हो, या बुध, शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में गुरु पंचम में हो तो या सूर्य, बुध, शुक्र, सप्तम में, मंगल दशम में गुरु पंचम में, हो तो या शुक्र सप्तम में, मंगल

दशम में, शनि चतुर्थ में, बृहस्पति पंचम में हो तो या सूर्य, बुध-शुक्र सप्तम में, मंगल दशम में शनि एकादश में हो तो, या सूर्य शुक्र सप्तम में, गुरु नवम, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में हो तो या सूर्य बुध सप्तम में, गुरु नवम में, शनि एकादश में, मंगल छठे स्थान में हो तो या सूर्य शुक्र बुध सप्तम में, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में, गुरु पंचम में हो तो या सूर्य-बुध-शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हो या शनि बुध सप्तम में, शनि एकादश में, मंगल छठे भाव में हो तो या मेष का मंगल लग्न में हो, उच्च का बृहस्पति चतुर्थ में हो तो या मेष का गुरु लग्न में, स्वगृही चन्द्रमा चतुर्थ में, मकर का शुक्र दशम में हो तो, या मेष का सूर्य गुरु लग्न में, मकर का मंगल दशम में तथा चन्द्रमा, शुक्र और बुध भाग्य स्थान में हो तो या उच्च का सूर्य लग्न में, उच्च का गुरु चतुर्थ में, उच्च का शनि चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में हो तो मनुष्य निश्चय से बड़ा आदमी होता है और राजा का पुत्र एवं अपने पिता का राज्याधिपति पाता है।

यदि उच्च का सूर्य, गुरु के साथ लग्न में हो, वृष का शुक्र दूसरे धन भाव में हो, शनि उच्च का तुला में मंगल के साथ सप्तम स्थान में हो और मीन का चन्द्रमा बुध के साथ द्वादश भाव में हो तो मनुष्य भाग्यवान् तथा राज्य होता है।

यदि मेष का सूर्य लग्न में, वृष का चन्द्रमा धन में, मिथुन का राहु पराक्रम में और कर्क का गुरु चतुर्थ में हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी में बहुत बड़े पद को प्राप्त करता है।

वृष लग्न राजयोग

पूर्ण वृष लग्न में जिसका जन्म हो और पूर्ण चन्द्रमा लग्न में उच्च का बैठा हो और साथ ही चार, पाँच, छै ग्रह उच्च के, या स्वगृही, या मित्र क्षेत्री, शुभ नवांश में, केन्द्र त्रिकोण में बली हो तो या उच्च का चन्द्रमा लग्न में, सिंह का सूर्य चतुर्थ में, कुम्भ का शनि दशम में और वृश्चिक का बृहस्पति सप्तम स्थान में हो तो या वृष का चन्द्रमा लग्न में हो, सिंह का सूर्य चतुर्थ भाव में हो, वृश्चिक का बृहस्पति सप्तम भाव में हो, कुम्भ का शनि राज्य

में हो तो या उच्च का चन्द्रमा लग्न में, उच्च का गुरु भ्रातृ स्थान में, उच्च का बुध विद्याभवन में और उच्च का मंगल भाग्यस्थान में हो तो या मिथुन, बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, वृश्चिक का मंगल, कुम्भ का शनि, मीन का बृहस्पति और वृष का शुक्र हो तो ये सभी ग्रह स्वगृही हैं, इनमें से यदि चार भी ग्रह स्वगृही बलवान् बैठे हों तो राजयोग करते हैं।

यदि वृष लग्न में बृहस्पति, मिथुन में चन्द्रमा, मकर में उच्च का मंगल, सिंह में शनि, कन्या में बुध सूर्य और तुला का शुक्र हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

यदि वृष लग्न में स्वगृही शुक्र हो, मिथुन का चन्द्रमा दूसरे स्थान में बलवान् हो और कर्क का गुरु अपने उच्चांश में तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, धनवान्, यशस्वी तथा आदरणीय होता है।

यदि लग्न में, उच्च का चन्द्रमा, चतुर्थ में स्वगृही सूर्य, सप्तम में वृश्चिक का गुरु और दशम में कुम्भ का शनि हो तो मनुष्य पुलिस या सेना, नेकी आदि में निज पराक्रम के लिए धन, यश, पारितोषिक पाता है। और यदि उच्च का चन्द्रमा लग्न में, मिथुन का गुरु धन स्थान में, शनि या सूर्य छठे स्थान में, मीन का शुक्र एकादश स्थान में हो तो मनुष्य धनी होता है।

मिथुन लग्न राजयोग

मिथुन लग्न वाले मनुष्य के यदि लग्न में राहु और सिंह का मंगल पराक्रम स्थान में बैठा हो और उच्च या मेष का सूर्य एकादश स्थान में विराजमान हो या लग्न में बुध, कर्क का धन भाव में चन्द्रमा, पराक्रम में सिंह का सूर्य और दशम में मीन का बृहस्पति हो या उच्च का गुरु दूसरे भाव में, उच्च का बुध चतुर्थ में और उच्च का सूर्य एकादश भाव में हो तो या उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ पंचम भवन में हो, स्वगृही बृहस्पति सप्तम में हो, और स्वगृही सूर्य तृतीय स्थान में बैठा हो तथा उच्च का बृहस्पति स्वगृही चन्द्रमा के साथ धन भाव में हो, उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ पंचम स्थान में हो और उच्च के सूर्य के साथ स्वगृही मंगल एकादश भवन में हो तो या उच्च का

शुक्र दशम, उच्च का सूर्य एकादश, उच्च का बुध चतुर्थ और उच्च का शनि पंचम में हो तो राजयोग करता है।

यदि मिथुन का शुक्र लग्न में हो, कर्क का स्वगृही पूर्ण चन्द्रमा धन (दूसरे) स्थान में हो, सिंह का वृहस्पति तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य अपने पराक्रम से धनी होता है तथा कीर्ति पाता है।

कर्क लग्न राजयोग

पूर्ण कर्क लग्न वाले मनुष्य के यदि उच्च का वृहस्पति लग्न में हो, साथ ही उच्च का मंगल स्त्री भाव में, उच्च का सूर्य राज्यस्थान में और उच्च का शनि मातृ स्थान में हो या उच्च का वृहस्पति लग्न में हो, उच्च का चतुर्थ हो और उच्च का सूर्य दशम हो या उच्च का गुरु लग्न में हो, उच्च का मंगल सप्तम स्थान में और उच्च का सूर्य दशम में हो तथा उच्च का गुरु लग्न में हो, उच्च का शनि चतुर्थ हो और उच्च का मंगल सप्तम भाव में हो तो या उच्च का गुरु स्वगृही चन्द्र के साथ लग्न में हो और उच्च का सूर्य दशम में हो या उच्च का गुरु स्वगृही चन्द्र के साथ लग्न में हो और उच्च का शनि चतुर्थ स्थान में हो तो या उच्च का गुरु स्वगृही चन्द्र के साथ लग्न में और उच्च का मंगल सप्तम स्थान में हो तो या उच्च का गुरु पूर्ण चन्द्र के साथ लग्न में हो या कर्क का स्वगृही पूर्ण चन्द्र लग्न में हो और उच्च का शनि चतुर्थ स्थान में हो तो, या उच्च का वृहस्पति लग्न में हो एवं उच्च का सूर्य राज्य स्थान में हो और बुध, शुक्र और शनि लाभ स्थान में हो तो या उच्च का गुरु लग्न में और स्वगृही मंगल राज्य स्थान में हो या उच्च का वृहस्पति लग्न में हो, उच्च का शनि चतुर्थ में हो, उच्च का मंगल दशम में हो और शुक्र सप्तम स्थान में हो तो या उच्च का गुरु लग्न में हो, उच्च का मंगल दशम में हो और स्वगृही शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो या उच्च का गुरु लग्न में, स्वगृहो शुक्र चतुर्थ में और स्वगृही शनि सप्तम में और उच्च का चन्द्रमा एकादश स्थान में हो या सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र तीनों उच्च के हों तो या गुरु उच्च का लग्न में और शुक्र मेष का राज्य में हो एवं उच्च का गुरु लग्न में, उच्च का सूर्य दशम में और चन्द्र-बुध-शुक्र एकादश में हो या तुला का शनि मंगल के साथ चतुर्थ स्थान में हो और राज्यस्थान में उच्च का

सूर्य तीनों शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य बहुत बड़ी प्रतिष्ठा वाला होता है।

यदि कर्क का पूर्ण चन्द्रमा स्वगृही लग्न में हो और स्वगृही मीन का बृहस्पति मित्र मंगल के साथ भाग्य या नवम स्थान में हो तो मनुष्य धन-धान्य से युक्त बड़ा आदमी होता है।

यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा और बृहस्पति हो, सिंह राशि में सूर्य, बुध और शुक्र दूसरे स्थान में हो, मकर का मंगल सप्तम स्थान में हो और मिथुन राशि का शनि बारहवें स्थान में हो तो या कर्क का चन्द्रमा लग्न में हो, सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र सिंह राशि में दूसरे स्थान में हो, मकर का शनि स्वगृही सप्तम स्थान में हो, मिथुन का स्वगृही बुध व्यय या द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य राजमान्य, बहुत बड़ा सरकारी नौकर होता है।

यदि लग्न में कर्क का गुरु, चतुर्थ में तुला का शुक्र, सप्तम स्थान में मकर का शनि दशम स्थान में, मेष का मंगल हो तो मनुष्य बड़ा पराक्रमी, पुलिस सेना में उच्चाधिकारी होता है।

सिंह लग्न राजयोग

जिसका जन्म लग्न सिंह के पूर्णांश पर हो और लग्न में स्वगृही सूर्य पूर्णांश पर हो, गुरु स्वगृही पंचम स्थान में हो, उच्च का मंगल शत्रु भाव में हो, स्वगृही शनि स्त्री स्थान में हो और उच्चाभिलाषी चन्द्रमा मेष का भाग्य स्थान में हो तथा सिंह का लग्न में बृहस्पति, कन्या या नीच का शुक्र दूसरे या धन भाव में, मिथुन का शनि पराक्रम में और स्वक्षेत्री वृश्चिक का मंगल भी यदि चतुर्थ हो तो, या उच्च का शुक्र, उच्च का मंगल तथा शनि चन्द्रमा कन्या के धनभाव में हो तो या सिंह का गुरु लग्न में हो और शेष सभी ग्रह पराक्रम या तृतीय, पंचम, छठे तथा द्वादश भाव में हो तो या लग्न में सूर्य, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में मंगल तथा पंचम भाव में गुरु हो या भाग्य स्थान में मेष का सूर्य, राज्य स्थान में वृष का चन्द्रमा, लाभ स्थान में मिथुन का बुध और कुम्भ का शनि सप्तम स्थान में हो, या उच्च का बुध धन स्थान में, धन का गुरु पुत्र भाव में, मेष का मंगल

भाग्य स्थान में तथा वृष का शुक्र कर्म स्थान में हो, तो या सिंह का सूर्य लग्न में, वृश्चिक का मंगल चतुर्थ में, कुम्भ का शनि सप्तम और वृष राशि का शुक्र दशम में हो तथा सिंह का सूर्य लग्न में, धन का गुरु पंचम में, कुम्भ का शनि सप्तम में, मेष का मंगल भाग्य स्थान में और वृष का चन्द्रमा राज्य स्थान में हो तो या उच्च का सूर्य नवम स्थान में हो, उच्च का शनि तीसरे स्थान में हो, उच्च का मंगल छठे भाव में हो और वृष का स्वगृही शुक्र यदि दशम स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

यदि सिंह का स्वगृही सूर्य लग्न में पूर्णांश में बलवान् हो और धन में गुरु स्वगृही, मंगल के साथ पंचम स्थान में हो तो मनुष्य बहुत धनवान होता है।

यदि सिंह लग्न में स्वगृही सूर्य के साथ चन्द्रमा और वृहस्पति बैठे हों, कन्या में उच्च का बुध नीच के शुक्र के साथ दूसरे स्थान में बैठा हो, स्वगृही कुम्भ का शनि सप्तम में हो और कर्क में नीच का मंगल द्वादश स्थान में हो तो या सिंह का गुरु, शुक्र, स्वगृही सूर्य के साथ लग्न में हो, कन्या का बुध, मंगल के साथ दूसरे भाव में हो, कुम्भ का स्वगृही शनि सप्तम स्थान में और कर्क का स्वगृही चन्द्रमा द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य का भाग्योदय विदेश में होता है।

यदि सिंह लग्न वाले मनुष्य के जन्मपत्र में मेष या उच्च का सूर्य भाग्य स्थान में हो, वृष में उच्च का चन्द्रमा राज्य स्थान में हो और मिथुन का राहु लाभ स्थान में तो वह मनुष्य सुप्रसिद्ध राज्याधिकारी होता है। यदि लग्न में सिंह का सूर्य हो, धन का गुरु पंचम हो, नवम स्थान में मेष का चन्द्रमा, छठे स्थान में मकर का मंगल हो और सप्तम स्थाम में कुम्भ का शनि हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

कन्या लग्न राजयोग

जिसका जन्म लग्न पूर्णांश पर कन्या हो, उसमें उच्च का बुध विराजमान हो, चतुर्थ स्थान में गुरु शुक्र चन्द्रमा और पंचम स्थान में शनि मंगल हो तो या उच्च का बुध लग्न में, उच्च का मंगल शनि के साथ पंचम स्थान में, स्वगृही मीन का गुरु चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में तथा मिथुन का शुक्र दशम स्थान में

हो तो या मकर का शनि मंगल के साथ पंचम स्थान में हो, मीन का शुक्र सप्तम में हो, मिथुन का बुध दशम स्थान में हो और कर्क का बृहस्पति लाभ या एकादश स्थान में हो तो या उच्च का बुध लग्न में, स्वगृही शुक्र धन भाव में, वृश्चिक का मंगल पराक्रम या तीसरे स्थान में और धन का स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो या उच्च का मंगल पंचम स्थान में, कुम्भ का शनि छठे स्थान में, मीन का गुरु सप्तम स्थान में और वृष या उच्च का चन्द्रमा भाग्य स्थान में हो तो या मीन का गुरु सप्तम में, वृष का शुक्र नवम में, मिथुन का बुध दशम में तथा कर्क का चन्द्रमा एकादश में हो तो या उच्च का शुक्र सप्तम में, उच्च का चन्द्रमा नवम में, स्वगृही बुध दशम तथा उच्च का गुरु एकादश में हो तो या उच्च का बुध लग्न में, उच्च का शनि धन में, स्वगृही गुरु चतुर्थ में तथा उच्च का मंगल पंचम में हो तो एवं उच्च का शनि धन में, स्वगृही गुरु सप्तम में, उच्च का चन्द्रमा भाग्य स्थान में और स्वगृही बुध दशम या राज्य स्थान में हो और उच्च का शनि धन में, उच्च का चन्द्रमा भाग्य स्थान एवं उच्च का गुरु लाभ में और उच्च का शुक्र सप्तम में हो तो या उच्च का बुध लग्न में हो, तीसरे भाव में स्वगृही मंगल के साथ सूर्य हो, कुम्भ का स्वगृही शनि छठे स्थान में हो और मीन का स्वगृही बृहस्पति सप्तम स्थान में हो तो उसके शत्रु दबे रहते हैं और वह स्वयं बड़ा आदमी होता है।

यदि कन्या लग्न में उच्च का बुध हो, पंचम स्थान में मकर का मंगल या शनि हो, सप्तम स्थान में गुरु चन्द्रमा मीन राशि में हो और वृष राशि का शुक्र भाग्य स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा राज्य कर्मचारी होता है। कन्या लग्न में बुध हो मकर का मंगल पंचम में शुक्र मीन का सप्तम, गुरु और चन्द्रमा धन राशि का चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

तुला लग्न राजयोग

यदि तुला लग्न अपने पूर्णांश पर उच्च के शनि से युक्त हो और साथ ही उच्च का एकाकी मंगल चतुर्थ स्थान में हो, उच्च का सूर्य सप्तम स्थान में हो और उच्च का वृहस्पति दशम में अपने उच्चांश पर हो तो या उच्च का शनि लग्न में, सप्तम में तथा उच्च का गुरु दशम में हो तो या उच्च का शनि लग्न में,

उच्च का मंगल चतुर्थ में और उच्च का सूर्य सप्तम में हो तो या उच्च का शनि लग्न में, उच्च का मंगल चतुर्थ में और उच्च का गुरु दशम में हो तो या उच्च का शनि लग्न में उच्च का सूर्य सप्तम में और स्वगृही कर्क का चन्द्रमा दशम में हो तो उच्च का शनि लग्न में और उच्च का वृहस्पति स्वगृही चन्द्र के साथ दशम में हो तो या उच्च का शनि लग्न में उच्च का मंगल चतुर्थ और स्वगृही कर्क का चन्द्रमा दशम में हो तो या उच्च का मंगल चतुर्थ स्वगृही शनि पंचम, उच्च का सूर्य सप्तम तथा स्वगृही बुध नवम स्थान में हो तो या वृश्चिक का मंगल धन स्थान में, मकर का शनि चतुर्थ स्थान में, कर्क का चन्द्रमा दशम स्थान में और सिंह का सूर्य एकादश या लाभ स्थान में हो तो या वृश्चिक का मंगल धन भाव में, मेष का सूर्य सप्तम भाव में, कर्क का वृहस्पति दशम में और उच्च का शनि लग्न में हो तो या तुला लग्न में, शुक्र शनि कर्क का, गुरु दशम में, कन्या का सूर्य द्वादश में, बुध के साथ, मेष का मंगल सप्तम स्थान में, वृष का चन्द्रमा अष्टम स्थान में पूर्ण हो तो मनुष्य बड़ा आदमी होता है ।

वृश्चिक लग्न राजयोग

यदि वृश्चिक लग्न अपने पूर्णांश पर स्वगृही मंगल से युक्त हो, शनि और सूर्य से युक्त तथा उच्च के वृहस्पति से दृष्ट हो तो या धन का गुरु धन भाव में, मंगल पराक्रम स्थान में, कुम्भ का शनि चतुर्थ में और उच्च का शुक्र पंचम में हो तो या उच्च का मंगल तीसरे स्थान में, मीन का वृहस्पति पंचम भाव में, स्वगृही शुक्र वृष का सप्तम में, कर्क का चन्द्रमा नवम और सिंह का सूर्य दशम में हो तो या मकर का शनि पराक्रम स्थान में, उच्च का वृहस्पति भाग्य स्थान में, उच्च का बुध लाभ स्थान में, वृश्चिक का मंगल लग्न में हो तो या स्वगृही मंगल लग्न में, स्वगृही शनि चतुर्थ में, स्वगृही शुक्र सप्तम में, स्वगृही चन्द्रमा नवम में और स्वगृही सूर्य दशम में हो तो या उच्च का मंगल तीसरे भाव में, उच्च का शुक्र पंचम स्थान में, उच्च का बृहस्पति नवम स्थान और उच्च का बुध एकादश में हो तो मनुष्य अधिक भाग्यमान् होता है ।

धन लग्न राजयोग

यदि धन लग्न अपने पूर्णांश पर हो जिसमें स्वगृही बृहस्पति अपने उच्चांश

पर विराजमान हो, उच्च या मीन का शुक्र चतुर्थ स्थान में हो और उच्च या कन्या का बुध दशम स्थान में हो तो या उच्च का या मकर का मंगल दूसरे या धन स्थान में हो, कुम्भ का शनि पराक्रम या तीसरे स्थान में हो, मीन का स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ में हो, उच्च का सूर्य पंचम स्थान में हो या धन का स्वगृही लग्न में हो, उच्च का मंगल स्वगृही शनि के साथ मकर का धन भाव में हो, स्वगृही सूर्य सिंह का भाग्य या नवम स्थान में हो और कन्या का बुध दशम में हो तो या उच्च का शुक्र, स्वगृही मीन के बृहस्पति के साथ चतुर्थ में हो, उच्च का सूर्य मेष के स्वगृही मंगल के साथ पंचम स्थान में हो, सप्तम में मिथुन का स्वगृही बुध हो तो या सिंह का स्वगृही सूर्य भाग्य स्थान में हो, उच्च का बुध कर्म या राज्य स्थान में हो और तुला में उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ लाभ स्थान में हो और लग्न में स्वगृही बृहस्पति हो तो या उच्च का मंगल धन स्थान में, उच्च का शुक्र चतुर्थ स्थान में, उच्च का सूर्य पंचम स्थान में, उच्च का बुध राज्य स्थान में, और उच्च का शनि एकादश स्थान में हो तो इनमें से कोई भी चार ग्रह अपने उच्च के उच्चांश पर होने से राजयोग करते हैं। अथवा स्वगृही शनि पराक्रम स्थान में, स्वगृही गुरु चतुर्थ स्थान में, स्वगृही मंगल पंचम स्थान में, स्वगृही बुध सप्तम स्थान में, स्वगृही सूर्य नवम स्थान में, स्वगृही बुध दशम स्थान और स्वगृही शुक्र एकादश स्थान में हो तो या इनमें से कोई चार या पाँच या छह ग्रह स्वगृही पूर्णांश में होने से पूर्ण राजयोग करते हैं।

मकर लग्न राजयोग

यदि मकर लग्न अपने पूर्णांश पर हो और उच्चांश पर उच्च का मंगल बैठा हो, साथ ही उच्च का सूर्य चतुर्थ में, उच्च का बृहस्पति सप्तम में, उच्च का शनि दशम स्थान में बैठा हो तो या इन चारों में से कोई भी तीन ग्रह उच्च के बैठे हों तो राजयोग कारक होते हैं। इनके अतिरिक्त यदि उच्च का मंगल लग्न में हो, उच्च का सूर्य चतुर्थ में और स्वगृही कर्क का चन्द्रमा सप्तम में हो तो या कोई से दो ग्रह उच्च के केन्द्र में हों और साथ ही स्वगृही चन्द्रमा सप्तम में हो तो राजयोग होता है उच्च का मंगल लग्न

में हो और स्वगृही चन्द्र से दृष्ट हो या मकर का स्वगृही शनि लग्न में हो, मेष का स्वगृही मंगल चतुर्थ में हो, कर्क का स्वगृही चन्द्रमा सप्तम में हो, और तुला का स्वगृही शुक्र दशम में हो तो या इन चारों के साथ यदि मिथुन का स्वगृही बुध छठे स्थान में और सिंह का स्वगृही सूर्य अष्टम स्थान में हो तो या मकर का स्वगृही शनि वृहस्पति के साथ लग्न में हो, मीन का चन्द्रमा तीसरे स्थान में हो, उच्च का बुध नवम स्थान में हो तथा मंगल वृश्चिक का एकादश स्थान में, या वृश्चिक का शुक्र एकादश में हो तो या दो ग्रह उच्च के दो ग्रह स्वगृही केन्द्र या त्रिकोण में हो तो या तीन ग्रह उच्च के एक ग्रह स्वगृही केन्द्र त्रिकोण में हो तो या तीन ग्रह स्वगृही के साथ एक ग्रह उच्च का केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हों तो राजयोग न्यूनाधिक से होते ही रहते है।

यदि लग्नगत मकर राशि में स्वगृही शनि हो, मीन का चन्द्रमा तीसरे भाव में हो, मिथुन का मंगल छठे भाव में हो, उच्च या कन्या का बुध भाग्यस्थान में हो और धन का वृहस्पति द्वादश भाव में हो तो मनुष्य बड़ा ही गुणवान् तथा कीर्तिवान मनुष्य राजा के समान होता है।

यदि मकर लग्न हो और लग्नेश शनि उच्च या तुला का होकर राज्य स्थान में चन्द्रमा से युक्त बैठा हो तो मनुष्य २० वर्ष की अवस्था में बड़ी पदवी प्राप्त करता है। राज्य कर्मचारी होते हुए भी धन-धान्यपूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि मकरलग्न में मंगल शनि, दशम स्थान में तुला का शुक्र तथा धन का सूर्य और चन्द्रमा द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा सरकारी नौकर होता है।

यदि मकर का शनि लग्न में, कर्क का सूर्य चन्द्रमा सप्तम में, वृश्चिक का मंगल एकादश स्थान में, सिंह का शुक्र अष्टम में, और उच्च का बुध, वृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य बहुत ही बड़ा आदमी होता है।

कुम्भ लग्न राजयोग

यदि कुम्भ लग्न अपने पूर्णांश पर हो और शनि उसमें उच्चांश पर बैठा हो, बृहस्पति मीन का स्वगृही धन स्थान में बली हो, मंगल मेष का पराक्रम स्थान में हो और शुक्र वृष का स्वगृही चतुर्थ स्थान में हो तो राजयोग होता है। इसके

अतिरिक्त उच्च का शुक्र धन भाव में, उच्च का सूर्य पराक्रम स्थान में और उच्च का शनि भाग्य स्थान में तथा उच्च का शुक्र स्वगृही गुरु के साथ धन स्थान में हो, उच्च का सूर्य स्वगृही मंगल के साथ पराक्रम स्थान में हो तो या उच्च का चन्द्रमा स्वगृही शुक्र के साथ चतुर्थ में हो, उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ भाग्य स्थान में हो तो या स्वगृही मिथुन का बुध पंचम स्थान में, स्वगृही सिंह का सूर्य सप्तम स्थान में, स्वगृही मंगल वृश्चिक का राज्यस्थान में और स्वगृही गुरु धनराशि का लाभ स्थान में हो या तो चार, पांच, छै स्वगृही ग्रह या उच्च के ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में अथवा केन्द्र और त्रिकोण दोनों में बलवान् हों अस्त न हों तो राजयोग कारक होते हैं।

मीन लग्न राजयोग

यदि मीन लग्न अपने पूर्णांश पर हो, उसमें उच्च का शुक्र हो, उच्च का सूर्य धन स्थान में हो, उच्च का बुध सप्तम में हो और उच्च का मंगल लाभ स्थान में हो तो या बुध को छोड़कर उपर्युक्त तीनों ग्रह उच्च के हों तो राजयोग होता है। मीन का चन्द्रमा लग्न में, सिंह का स्वगृही सूर्य शत्रु भाव में, कुम्भ का स्वगृही शनि द्वादश में तथा मकर में उच्च का मंगल लाम स्थान में हो तो, या उच्च का सूर्य स्वगृही मंगल के साथ धन स्थान में, उच्च का चन्द्रमा स्वगृही शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में, स्वगृही बुध चतुर्थ में और स्वगृही वृश्चिक का मंगल भाग्य स्थान में हो तो या कर्क का चन्द्रमा पंचम स्थान मे, उच्च का बुध सप्तम स्थान में, धन का स्वगृही गुरु राज्य स्थान में और मकर का मंगल स्वगृही शनि के साथ एकादश भाव में हो तो या चार, पाँच, छै, तीन उच्च के ग्रह यदि अपने उच्चांश या मित्रांश पर केन्द्र त्रिकोण में बलवान् हो या चार, पाँच, छै स्वगृही ग्रह पूर्णवली होकर केन्द्र त्रिकोण में मित्रराशि के होकर बैठे हों तो राजयोग करते हैं। शुक्र, बुध मीन के लग्न में हों, वृहस्पति, चन्द्रमा धन के दशम में हों, उच्च का मंगल एकादश लाभ में हो तो या मीन का चन्द्रमा लग्न में हो, मिथुन का शनि चतुर्थ स्थान में हो, बुध, शुक्र, सूर्य कन्या के सप्तम में हो, वृश्चिक का वृहस्पति नवम भाव में हो और धन का मंगल राज्य स्थान में हो तो या मीन का शुक्र लग्न में और कर्क का बृहस्पति पंचम में हो तो भी राजयोग होता है।

मीन लग्न में पूर्ण चन्द्रमा, मित्र, शुभ समस्त ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य को बड़ा आदमी बनाता है।

यदि मीन का बृहस्पति स्वगृही लग्न में हो और स्वगृही चन्द्रमा कर्क का लग्न में हो तो ऐसे योग वाला व्यक्ति बढ़ा धनी होता है।

यदि मीन लग्न का स्वामी गुरु स्वगृही होकर दशम स्थान में हो, चन्द्रमा उच्च का पराक्रम या तीसरे भाव में बैठा हो और सप्तमेश बुध स्वगृही मिथुन का चतुर्थ स्थान में हो और लग्न में उच्च का शुक्र निष्पाप बैठा हो तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, बड़ा सरकारी कर्मचारी, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

यदि मीन लग्न में चन्द्रमा हो, सिंह का सूर्य छठे स्थान में हो, मकर का मंगल एकादश स्थान में हो और कुम्भ का शनि द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा पराक्रमी तथा ऐश्वर्यवान होता है।

यदि मीन लग्न में शुक्र, धन स्थान में सूर्य, या मंगल, पंचम स्थान में गुरु या चन्द्र हो तो मनुष्य बहुत बड़ा राज्य कर्मचारी होता है।

भावेश राजयोग

यदि राजयोग होने से सभी मनुष्य राजा हो जाते तो आज सर्वत्र राजा ही राजा दृष्टि गोचर होते किन्तु प्रकृति का नियम कुछ भिन्न है, अवस्था, जाति, वंश तथा घराने के अनुसार ही अधिकतर फल देखने में आता है। राजयोग न्यूनाधिक फल भी करते हैं तिसपर भी कुछ राजयोगों का प्रभाव अलौकिक तथा चमत्कारिक देखने में आता है जिनके प्रभाव से निर्धन से निर्धन वंश, नीच से नीच घराने में उत्पन्न हुआ बालक भी अपनी वंश परम्परा को तोड़ कर बहुत ऊँचा उठ जाता है और यशस्वी होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत कर सर्व-साधारण को आनन्दित करता हुआ उनका स्नेह भाजन बन जाता है। यद्यपि ये सभी बातें पूर्वसंचित शुभ कर्मानुसार ही होती हैं फिर भी ग्रहों का प्रभाव ही माना जाता है। किसी अशुभ कर्मानुसार छोटे तथा निर्धन घर में अपने पूर्व संचित फल का निवारण करने के लिए जन्म हो जाता है, अवधि के समाप्त होने पर फिर अपने शुभ कर्मों का उपभोग करता हुआ वह मानव सभी को अच्छा लगता

है और कुछ ईर्ष्या तथा कुछ द्वेष भी करने लगता है। यह विषय बड़ा ही गम्भीर तथा विवेक पूर्ण है इसलिए इसपर अधिक प्रकाश न डालकर यहीं समाप्त करते हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सफल प्रयास करने की चेष्टा करते हैं।

भाग्या राज्याधिपौ राज्ये भाग्ये वा यदि संस्थतौ।
राजयोगमवाप्नोति महतीं कोर्तिमश्नुते ॥

यदि भाग्येश राज्यस्थान (दशम) में हो और राज्येश भाग्य स्थान (नवम) में हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ बालक समय आने पर एक बड़ा आदमी होता है और उसे अपने जीवन में अधिक यश प्राप्त होता है।

राज्यस्था यदि भाग्येश: राज्येशो भाग्यगो यदि।
राजयोगमवाप्नोति महतीं कीर्तिमश्नुते ॥

उपर्युक्त फल का ही द्योतक है फिर भी कुछ लोग प्रथम श्लोक का अर्थ इस प्रकार से करते हैं कि राज्येश राज्य में और भाग्येश भाग्य स्थान में हो तो उसे राज्य के साथ-साथ अत्यधिक यश प्राप्त होता है। किन्तु श्लोक स्पष्ट है कि भ'ग्याधिपौ राज्ये राज्याधिपौ भाग्ये वा यदि संस्थितौ।' यहाँ तर्क को स्थान न देकर पाठकों की इच्छा पर ही यह बात छोड़ देते हैं कि वे जैसे समय पर उचित समझें अपने अर्थ की पूर्ति कर फलादेश को यथेष्ट रूप से कहकर अपने भाव को स्पष्ट कर अपना कार्य सिद्ध कर लें। क्योंकि निम्नांकित श्लोक अपने अर्थ का स्पष्ट द्योतक है।

भाग्याधिपो भाग्यगतो राज्येशो राज्यगो यदि।
राजयोगमवाप्नोति महतीं कीर्तिमश्नुते ॥

यदि भाग्येश भाग्य स्थान में हो और राज्येश राज्य स्थान में हो तो इस प्रकार का राजयोग मनुष्य को एक बड़ी कीर्ति प्रदान करता है।

राज्येश-पञ्चमेशौ तु राज्ये वा पञ्चमेऽथवा।
स्थितौ राजयोगंच महतीं कीर्तिमश्नुते ॥

यदि राज्येश और पंचमेश दोनों ही राज्य स्थान अर्थात् लग्न से दशम में हों या दोनों ही लग्न से पंचम भवन में बैठे हों तो इस प्रकार जो राजयोग बनता है वह जातक को बड़ी ही कीर्ति (यश) पाने वाला होता है।

नवमभावपतिस्तनयालये सुतपतिर्नवमे यदि जन्मिनः ।
अतिविचित्रमणिव्रजमडितो वसुमती विभुतां स नरो व्रजेत् ।।

यदि किसी के जन्मपत्र में भाग्येश पञ्चम स्थान में हो और पञ्चमेश नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य बहुमूल्य रत्नों तथा धन-धान्य युक्त राजा होता है, कहने का तात्पर्य यह है कि वह व्यक्ति आभूषणादि से युक्त धनवान, सम्पत्ति-शाली भूमिधर या जायदादी और मालदार होता है।

कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेशः कर्मगो यदा ।
त्रिकोणपतिना दृष्टो राजा भवति निश्चितम् ।।

जिसके जन्मपत्र में राज्येश पञ्चम स्थान में हो और पुत्रेश दशम स्थान में हो तथा ये दोनों ही भाग्येश से दृष्ट हों तो वह मनुष्य निश्चय भाग्यशाली होता है। (यहाँ राजा का अर्थ भाग्यशाली भूमिधर या बड़े आदमी से है) ।

राज्येशाङ्गपवाहनेशसुतपा धर्मालये स्वामिना ।
संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवेन्मानवः ।।

जिस मनुष्य का राज्येश (दशमपति) लग्नेश, वाहनेश (चतुर्थपति), पुत्रेश (पञ्चमपति) बलवान् हों और साथ हो भाग्येश से दृष्ट तथा युक्त भी हों, केन्द्र तथा त्रिकोण में उनको युति या दृष्टि सम्बन्ध होने से वह मनुष्य राजा होता है अर्थात् वह बड़ा आदमी होता है ।

पुत्रेशो यदि धर्मपेन सहितो लग्नाधिपे नाङ्गगो ।
दृष्टो वा सहितः सुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम् ।।

जिस मनुष्य का सुतेश (पञ्चमेश) यदि भाग्येश (नवमेश) तथा लग्नेश के साथ लग्न में हो या चतुर्थ में हो अथवा दशम में हो या उनसे दृष्ट हो, कहने का तात्पर्य यह है कि सुतेश का दृष्टि युति सम्बन्ध उपर्युक्त अधिपतियों से केन्द्र (१, ४, १०) में हो तो वह मनुष्य राजा या बड़ा आदमी होता है ।

यत्र कुत्रापि केन्द्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः ।
सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ।।

जिस मनुष्य का केन्द्रेश (१, ४, ७, १०) (के अधिपति) यदि त्रिकोणेश (५, ९ स्थान के अधिपतियों) से बलवान् होकर (केन्द्र-त्रिकोण, १, ४, ७,

१०, ५, ६) मिलते हों तो मनुष्य राजा होता है, बलहीन होने पर मनुष्य साधारणतः धनिक ही रहता है।

पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमे भृगुणा युते।
पञ्चमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः।।

जिसका लग्नेश भाग्य या राज्य स्थान में उच्च के शुक्र (मीन १२ शुक्र) युक्त हो और सुतेश से दृष्टिगत हो तो राजा के पुत्र को ही राज्य की प्राप्ति होती है। अर्थात् किसी भी बड़े आदमी के पुत्र को अपने पिता की सम्पत्ति प्राप्त होती है।

यदि किसी के जन्म पत्र में सूर्य, चन्द्रमा, गुरु और शुक्र चारों ही उच्च के होकर केन्द्र या त्रिकोण में शत्रु दृष्टि से रहित होकर बैठे हों तो वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली होता है।

यदि जन्मपत्र में एक भी शुभ ग्रह बलवान् उच्चांश पर उच्च का केन्द्र में सूर्य से युक्त तथा दृष्ट न हो, अशुभ दृष्टि से रहित हो किन्तु पञ्चम स्थान स्थित बृहस्पति से दृष्ट हो तो वह मनुष्य को सौभाग्य प्रदान करता है।

यदि कन्या का राहु राज्यस्थान में हो, तुला में उच्च का शनि लाभ स्थान में यदि भाग्येश से दृष्ट हो, तो लग्नेश के नीचस्थ ग्रह से युक्त होने पर भी मनुष्य सौभाग्यशाली ही रहता है।

यदि उच्चांश पर उच्च का गुरु केन्द्र या त्रिकोण में पाप ग्रहों से युक्त भी हो और शुक्र या बुध की पूर्ण दृष्टि उस पर हो तो मनुष्य विद्वान् ही होता है। शुद्धाचरण ही रहता है।

यदि समस्त शुभ ग्रह बलवान् होकर उच्च या स्वगृही होकर नीचास्त तथा अशुभ शत्रु ग्रहों की दृष्टि से रहित बैठे हों और पाप ग्रह त्रिक या एकादश में बैठे हों तो मनुष्य भाग्यवान् होता है।

यदि नवमेश, चतुर्थ में और चतुर्थेश नवम भाव में हो, बृहस्पति और शुक्र मीन के दशम भाव में हों तो ऐसे योग वाला मनुष्य एक बहुत बड़ा आदमी होता है।

यदि शुभ स्वगृही दशमेश दशम स्थान में शेष केन्द्रेशों के सहित, भाग्येश से युक्त बैठा हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला धर्मात्मा होता है।

यदि शुभ ग्रह लग्नेश, मित्र नवमेश ग्रह के साथ बैठा हो और धनेश, सुखेश और लाभेश अपने-अपने स्थान में सुशोभित हो तो ऐसे मनुष्य को किसी वस्तु की कमी नहीं होती और सदा ही स्वेच्छा वस्तुओं को प्राप्ति सुलभता से होती रहती है।

यदि भाग्येश के नवांश का अधिपति बलवान् होकर केन्द्र या त्रिकोण में शत्रु तथा अशुभ पाप ग्रहों की दृष्टि युति से रहित होकर अपने या स्वगृह में बैठा हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य राजा के समान पदवी वाला होता है।

यदि समस्त केन्द्रेश एक ही केन्द्र में या सभी त्रिकोणेश, एक ही त्रिकोण में या एक ही त्रिकोण या केन्द्र में बलवान् बैठे हों तो ऐसे योग वाला मनुष्य निश्चय रूप से बड़ा आदमी होता है।

यदि लग्न में पूर्ण चन्द्र अस्त, नोच, शत्रु राशि का न हो, इसी प्रकार चतुर्थ में गुरु, दशम में शुक्र और उच्च या स्वगृही शनि, ८, १२ को छोड़कर चाहे कहीं भी हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य राजा के समान जीवन व्यतीत करता है।

यदि केन्द्रस्थ स्वगृही बृहस्पति बुध से दृष्ट या युक्त हो तो ऐसे योग वाला व्यक्ति प्रगाढ़ पण्डित होता है, जो कि सर्वमान्य समझा जाता है।

यदि भाग्येश शुभ ग्रह अपने मित्र चन्द्रमा के साथ दूसरे घर में उच्च या स्वगृहो पाप दृष्टि युति से रहित बैठा हो तो मनुष्य राज्यमान होता है।

यदि चन्द्राधीश का नवांशपति, केन्द्र त्रिकोण या लाभ (१, ४, ७, १०, ५, ९, ११) में बुध के साथ बैठा हो तो मनुष्य राजाओं द्वारा पूजित होता है।

यदि नवमेश अपने नवांशनाथ के साथ केन्द्र में पञ्चमेश से दृष्ट या युक्त हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य राज्यपूजित होता है अर्थात् बड़ा सरकारी नौकर होता है।

यदि मीन राशि में शनि राहु नवमेश से दृष्ट या युक्त केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हों और लग्नेश यदि नीच ग्रह से युक्त भी हो तो भी मनुष्य बड़ा आदमी होता है।

यदि लग्न में शनि, चन्द्रमा, पञ्चम स्थान में गुरु, नवें स्थान में सूर्य और दशम स्थान में उच्च का मंगल हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

यदि मेष में गुरु, धन में शनि और चन्द्रमा, दशम में राहु-शुक्र बैठे हों तो भी मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है और जब सभी ग्रह (२, ६, ८, १२) स्थानों में विराजमान हों तो भी मनुष्य बड़ा आदमी होता है।

यदि सभी उच्च के अशुभ ग्रह केन्द्रों में हों तो मनुष्य धनहीन होने पर भी विख्यात होता है। इसी प्रकार यदि धन का मंगल और शुक्र, मीन का गुरु, तुला का बुध तथा वृश्चिक का चन्द्रमा और नीच का शनि हो, तो भी मनुष्य धन रहित, बड़ा आदमी होता है।

लग्नाधिपोऽतिवलवान् शुभैरदृष्टः
केन्द्रस्थितः शुभग्रहैरवलोक्यमानः।
मृत्युं विधूय विदधाति स दीर्घमायुः
सार्धं गुणैर्बहुभिरुर्जितराजलक्ष्म्या ॥

यदि बलवान् लग्नेश अशुभ ग्रहों की दृष्टि (युति) से रहित होकर केन्द्र में शुभ ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य बड़ी अवस्था वाला, अनेक शुभ गुणों से युक्त, धन, ऐश्वर्य के सुख से सुखी होता है।

धनेशे लाभसंयुक्ते लाभेशे धनलाभगे।
तावुभौ केन्द्रगौ वाऽपि धनवान् ख्यातिमान् भवेत् ॥

जिस मनुष्य का धनेश (धन स्थानाधिपति) लाभ (ग्यारहवें भाव) में हो और लाभेश (एकादशेश) धन (दूसरे) लाभ (एकादश) में हो, या धनेश और लाभेश अन्योन्याश्रय हों या वे दोनों (धनेश और लाभेश) केन्द्र में (बलवान्) बैठे हों तो ऐसे योग वाला मनुष्य अत्यन्त धनी तथा प्रसिद्ध प्रतिष्ठावान् यशस्वी होता है।

जिस मनुष्य का धनेश बलवान् होकर धनभाव में या राज्यस्थान में शुभ दृष्ट, अशुम दृष्टि-युति तथा शत्रु राशि से रहित बैठा हो तो वह अपने कमाये धन का सुख भोगने वाला होता है।

यदि सुखेश (चतुर्थेश), भाग्येश (नवमेश) दोनों ही दूसरे या एकादश स्थान में बली मित्र शुभ ग्रहों से दृ या युक्त हों तो मनुष्य जीवन भर अपने धन की अधिकता का सुख पूर्ण रूप से भोग करता है।

धर्मेश-लाभेश-धनेश्वराणामेकोऽपि शातद्युतिकेन्द्रवर्ती।
स्वयं च लाभाधिपतिः गुरुश्चेदखण्डसाम्राज्यपतित्वमेति ॥

यदि धर्मेश (नवम भाव पति-भाग्येश), लाभेश (एकादश भावपति), धनेश्वर (दूसरे भाव का स्वामी) चन्द्रमा से केन्द्र (४, ७, १०) में हो, इसमें विशेषता और भी तब आ जाती है जबकि बृहस्पति स्वयं लाभेश (ग्यारहवें भाव का स्वामी) होकर उपर्युक्त योग को परिपूर्ण करता हो तो निश्चय पूर्वक मनुष्य किसी बड़े राज्य के किसी सूबे का आधिपत्य करता है। अर्थात् गवर्नर या मन्त्री होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह एक बड़ा आदमी होता है।

यदि लग्नेश, धन या दूसरे स्थानों में शुभ ग्रह हो और लाभेश या एकादशेश गुरु से दृष्ट राज्य या दशम स्थान में हो तो मनुष्य धनवान् होता है।

यदि धनेश, भाग्येश और लाभेश ये तीनों ही शुभ ग्रह हों और एक दूसरे की दृष्टि-युति से पूर्ण मैत्री योग का निर्वाह बल पूर्वक करते हुए केन्द्र स्थानों में अशुभ, नीचास्त से रहित हों तो मनुष्य अधिक धनवान् होता है।

यदि धनेश और भाग्येश दोनों ही केन्द्र में, लग्नेश के नवांशपति से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य आद्यान्त धनवान ही रहता है।

जिसके जन्मपत्र में वृष राशि का बृहस्पति, मिथुन का चन्द्रमा, मकर का मंगल, सिंह का शनि, कन्या का सूर्य-बुध और तुला का शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में बलवान बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य निश्चय ही बहुत बड़ा आदमी होता है।

जिसके धन राशि में शुक्र, मकर में बृहस्पति, कुम्भ में सूर्य और मीन राशिगत मंगल बलवान केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो तो वह मनुष्य निश्चय से बड़ा आदमी होता है।

यदि लग्न में कर्क का बृहस्पति, सप्तम में मकर का मंगल, नवम में मीन का शुक्र और मेष में उच्च का सूर्य दशम में और वृष का चन्द्रमा एकादश में हो तो वह व्यक्ति निःसन्देह बहुत ही बड़ा आदमी राजा के समान यशस्वी होता है।

जिसका भाग्येश लग्न में बैठकर भाग्य स्थान को देखता हो और चतुर्थेश चतुर्थं में हो या चतुर्थं स्थान को देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही धनी होता है।

जिसके दूसरे, पाँचवें और नवम में, या एकादश में समस्त शुभ ग्रह बली बैठे हों तो मनुष्य धनवान होता है। या लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त होकर केन्द्र त्रिकोण में उच्च या स्वगृही बैठा हो तो मनुष्य को धनवान बनाता है।

यदि धनेश, लग्नेश शुभ ग्रह बृहस्पति से दृष्ट या युक्त होकर केन्द्र या त्रिकण में से अपनी उच्च या स्वगृह या मित्र क्षेत्र में हों तो धनिक बनाते हैं।

जिसका धनेश्वर केन्द्र त्रिकोण में बलवान होकर दशमेश से युक्त हो और लाभेश या पूर्ण बली चन्द्रमा से दृष्ट हो तो वह बहुत धनवान होता है।

यदि लग्नेश, धनेश, चतुर्थेश, पंचमेश दशमेश और एकादशेश में से किसी भी चार, पाँच या सभी अधीश्वरों का किसी न किसी रूप में भाग्येश से दृष्टि-युति शुभ ग्रह के साथ सम्बन्ध हो तो मनुष्य को धनवान बनाता है।

जिसका भाग्येश और चतुर्थेश लग्न में बैठकर अपने-अपने घर को देखते हों तो मनुष्य बहुत धनवान होता है और यदि केन्द्र त्रिकोण में लाभेश तथा धनेश शुभ ग्रह या ग्रहों से दृष्ट हों, और लाभ स्थान में शनि हो तो मनुष्य धनवान होता है।

वित्ताधीशी लग्नगे लग्ननाथे वित्तस्थानेऽयत्नतो वित्तमेव।
यद्भावस्थौ लग्नवित्तेश्वरौ चेत् तन्मूला तु द्रव्यवृत्तिर्नराणाम्॥ (जातकपारिजात)

जिसका धनेश (दूसरे भाव का स्वामी) लग्न में हो और लग्नेश (लग्न का स्वामी) दूसरे स्थान में (शुभ ग्रह बलवान) बैठा हो तो उसको परिश्रम या उद्योग किये बिना भी धन की प्राप्ति होती रहती है। इसके अतिरिक्त चाहे जिस

भाव में भी लग्नेश और धनेश (भिन्न राशि के होकर) एकत्रित ही बैठे हों तो उस मनुष्य को उसी भाव के कारक द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

इसी भाव में ज्योतिस्तत्त्वे--धनाधिपेऽङ्गगेहगे फलेवदेधि कोशगे।
धनस्य लब्धिरीरिता तनूभृतामयत्नतः ॥

जिसका लग्नेश तृतीय स्थान में हो और तृतीयेश लग्न में हो तो वह मनुष्य बड़ा ही बहादुर, उद्यमी, पराक्रमी, क्रोधी, इष्ट-मित्र भाई-बहनों के सुख से युक्त, अपने पराक्रम से धनोपार्जन करने वाला, शूर-वीर, उत्तम सैनिक, धन-धान्य से परिपूर्ण, भाग्यवान, नाम तथा यश के लिये दान करने वाला, दो स्त्रियों से प्रेम करने वाला होता है।

जिसका लग्नेश चतुर्थ स्थान में हो और चतुर्थेश लग्न में हो तो वह मनुष्य विद्वान्, सरकारी नौकरी तथा खेती करने वाला, भूमिधर, धन-धान्य तथा माता के सुख से युक्त, स्निग्ध तथा उत्तम भोजन करने वाला, भाई-बन्धुओं को प्रिय, माता की अचल सम्पत्ति को पाने वाला, सुखी, धार्मिक प्रवृत्ति तथा विलासी होता है।

जिसका लग्नेश पंचम हो और पंचमेश लग्न में हो तो वह मनुष्य गुणवान्, क्रोध युक्त, अनेक भाषाओं का जानने वाला, कवि, लेखक, सरकारी नौकर, धार्मिक, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, स्त्री-सन्तान सुख से रहित-सा होता है। स्वाभिमानी, स्वतन्त्र विचार वाला, शास्त्र का ज्ञाता, अपनी इच्छा पूर्ति में विफल रहने वाला, संगीतादि का शौकीन, शत्रु युक्त होता है।

जिसका लग्नेश छठे भाव में और षष्ठेश लग्न में हो तो वह मनुष्य कृपण, रोगी, स्वाभिमानी, देखने में सुन्दर, झूठ बोलने वाला, कामी, कार्य सिद्धि के लिए तत्पर, ईर्षालु, शत्रुजित्, ननसाल तथा मित्र सुख से रहित, कठोर वचन होने के कारण किसी का अपना नहीं होता. अग्नि, विष तथा चोर पीड़ा सहित होता है।

जिसका लग्नेश सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश लग्न में हो तो वह मनुष्य घर से बाहर रहकर उद्योग द्वारा धन कमाने वाला और उसका व्यय पर-स्त्रियों पर करने वाला होता है। अपनी विवाहित स्त्री का सुख उसे बहुत कम होता है। यद्यपि उसकी अपनी स्त्री अच्छी सुन्दर होती है तो भी वह पर स्त्री विलास में

रत रहता है। ऐश्वर्यमय सामग्री के जुटाने में या विषय-वासना की तृप्ति में ही धन समाप्त कर देने पर निर्जन वास की सोचता है। ऋणी होकर गुप्त वास भी करते देखा गया है।

जिसका लग्नेश अष्टम स्थान में और अष्टमेश लग्न में हो तो मनुष्य घर से बाहर नौकरी द्वारा आजीविका कमाने वाला, बाल्यकाल से वृद्धावस्था तक किसी न किसी रोग से पीड़ित रहने वाला, कठोर वचन, दीर्घायु, इष्ट-मित्र सुख से रहित, नित्य झगड़ा करने वाला, स्वतन्त्र विचार, कामी, नीच कलायें जानने वाला, मानसिक पाप करने वाला, लालची, परोपकारी होता है।

जिसका लग्नेश नवम स्थान में हो और नवमेश लग्न में हो तो वह मनुष्य पराक्रमी, वीर, उद्योगी, बुद्धिमान्, सरकारी कर्मचारी, धार्मिक, पवित्र, परोपकारी, तीर्थयात्रा करने वाला, अपने से बड़े मनुष्यों का मान करने वाला तथा दूसरों से मान चाहने वाला, अनेक इच्छावाला, किन्तु सफलता कम मिलती है। आस्तिक, शुभ कर्म में धन व्यय करनेवाला, अपनी परिधि में यशस्वी, तथा मान पाने वाला होता है। धर्म-कर्म भीरु होता है। विदेश यात्रा में तत्पर, न्यून इष्ट-मित्रों वाला, सदैव चिन्तातुर रहता है। निज पर धन न खर्च करके परोपकार में खर्च करता है। वासनाओं को दबाकर रखता है। झगड़ालू प्रवृत्ति न होने पर भी इष्ट-मित्रों से बहुत कम प्रेम रखता है। स्वाध्याय प्रिय होता है।

जिसका लग्नेश दशम स्थान में हो और दशमेश लग्न में हो तो वह मनुष्य बड़ा पराक्रमी, शूर-वीर, सेना-पुलिस विभाग में उत्तम कर्मचारी, उन्नतिशील, उत्तम पद पाने वाला, माता पिता का आज्ञाकारी, देशभक्त, क्रान्तिकारी, गुणवान्, विद्वान्, सुन्दर लेखक तथा कवि होता है, शत्रुओं को परास्त करने वाला, बाल्यरोगी तत्पश्चात् स्वस्थ रहता है। राज्यकार्य से पारितोषिक पाने वाला, संग्राम विजयी, भूमिधर तथा धन-धान्यपूर्ण होता है।

जिसका लग्नेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश लग्न में विराजमान हो तो वह मनुष्य बड़ा ही गुणवान्, कलाकार, उद्योगी, परिश्रमी, कुशल व्यापारी, धनवान्, धार्मिक, दान शीलता में प्रसिद्ध, धन को कमाने वाला, स्त्री-पुत्रों, इष्ट-मित्रों, भाई-बन्धुओं के सुख से सुखी होता है, तीर्थ यात्रा प्रिय, परदेश में रहने

वाला, विनयविपन्न, शर्त का जीतने वाला, स्वस्थ तथा ओजस्वी भाषण करने वाला, सेवकों से युक्त होता है।

जिसका लग्नेश द्वादश स्थान में और द्वादशेश लग्न में स्थित हो तो वह मनुष्य रोगी, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, बीमारी में सदा ही धन व्यय करने वाला, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धुओं का सदा विरोध करने वाला, कठोर वचन बोलने वाला, विवादरत, आवेशपूर्ण स्वभाव वाला, सदा भ्रमणशील, घर से बाहर रहने वाला, ऋणग्रस्त रहनेवाला होता है। ये लोग क्लीब प्रकृति के होते हैं धातु विकार से पीड़ित रहते हैं :

जिसका द्वितीयेश तीसरे स्थान में हो और तृतीयेश दूसरे स्थान में हो तो जातक पराक्रमी, उद्योगी, चलचित्त, दुष्ट संगति में प्रसन्न रहने वाला, नीच कर्मों में धन व्यय करने वाला, उग्र स्वभाव, बड़े-बड़े मनुष्यों से मित्रता रखने वाला, भ्रातृ विरोधी होता है। अप्राकृतिक नियमों को वर्तने वाला, धन-धान्य गृहादि से सम्पन्न होता है।

जिसका द्वितीयेश चतुर्थ में और चतुर्थेश दूसरे स्थान में हो तो मनुष्य, व्यापार, नौकरी या कृषि कर्म द्वारा धन कमाने वाला, माता-पिता की सेवा करने वाला, साक्षर, उपकार में बहुत सा धन व्यय करने वाला, बड़ा परिश्रमी, दया-धर्म से युक्त, विलासी तथा रोग मुक्त होता है और स्वजनों में आदर पाने वाला अत्यन्त चतुर सामर्थ्यवान होता है।

जिसका द्वितीयेश पंचम हो और पंचमेश दूसरे स्थान में बैठा हो तो वह मनुष्य स्वतन्त्र प्रकृति, विद्या-विनय से युक्त, संगीत, कला निपुण, कवि, लेखक, नाटचकारादि में से किसी कला को जानने वाला, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी, शुभ कर्म में यशस्वी होता है। बन्धु-बान्धव, इष्ट-मित्र से मिलकर नहीं रहता।

जिसका द्वितीयेश छठे स्थान में हो और षष्ठेश दूसरे भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति कठोर हृदय, दुर्बल शरीर, क्रोधयुक्त, निन्द्य कर्मरत, रोगी, कुटुम्ब का विरोध करने वाला, राज्य कर्मचारी, चौरकला निपुण, ईर्ष्यालु तथा मुकदमे में विजय पाने वाला होता है।

जिसका द्वितीयेश सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश दूसरे स्थान में विराजमान

हो तो वह मनुष्य, डाक्टरी, वैद्यकादि स्वतन्त्र कार्य द्वारा आजीविका प्राप्त करने वाला, दर्शनीय, चिन्ताग्रसित, कामी तथा पर-स्त्रीरत, वेश्यागामी तथा पर-स्त्री से धन पाने वाला, यात्राप्रिय, परदेश में अपयश प्राप्त करने वाला होता है। इसकी स्त्री भी पर पुरुष गमन करने वाली होती है।

जिसका द्वितीयेश अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश दूसरे स्थान में हो तो ऐसे योग वाला व्यक्ति चोरी का माल धरने वाला, स्त्री-बच्चों, भाई-बन्धुओं के सुख से रहित, कलह प्रिय, आवेश पूर्ण, विलासी, गुप्त रोग ग्रस्त, बीमारी में द्रव्य व्यय करने वाला, कृपण, क्रूर कर्म करने वाला, गड़े हुए धन को पाने वाला होता है।

जिसका द्वितीयेश नवम स्थान में हो और नवमेश दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य धन-धान्य से युक्त, ऐश्वर्य संपन्न, धर्मात्मा, तीर्थ यात्राप्रिय, इष्ट-मित्रों के सुख से सुखी, उपकारी, उद्योगी, दानी, अचानक धन पाने वाला, प्रसिद्ध तथा पशु पीड़ा से युक्त, भाग्यवान् होता है।

जिसका द्वितीयेश दशम और दशमेश दूसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य उद्योगी, परिश्रमी, राज्य कोष से धन पाने वाला, ऑफीसर, मातृ-पिता की धन से सहायता करने वाला, साक्षर, यशस्वी, अतिथि को भोजन देने वाला, रोब से कार्य लेने वाला, स्त्री-बच्चों का सुख मध्यम होता है।

जिसका द्वितीयेश एकादश में और एकादशेश दूसरे स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा कुशल व्यापारी, इष्ट-मित्र, भ्रातृ सुख से सुखी, ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला, स्वच्छन्द, उपकारी, दानी, यशस्वी, तीर्थ यात्रा प्रिय, देव भक्त, नीतिवान, शूल रोग से रोगी रहता है।

जिसका द्वितीयेश द्वादश में हो और द्वादशेश दूसरे स्थान में हा तो मनुष्य पराक्रमी, साहसी, सरकारी नौकर, घर से बाहर रहने वाला, यात्रा-प्रिय, गुप्त रोगी, घमंडी, ऋणी, हतबुद्धि, पाप रत, इष्ट-मित्र, बन्धुओं से द्वेष करने वाला, स्त्री-बच्चों का सुख मध्यम होता है। ऐसे मनुष्य विदेश में रहकर उन्नति करते हैं, स्वदेश में अवनत ही रहते हैं।

जिसका तृतीयेश चतुर्थ में हो और चतुर्थेश तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य अपने पराक्रम से धन कमाकर जमीन, जायदाद, मकान, वाहनादि के सुख से ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। माता-पिता की सम्पत्ति का उपभोग करने वाला, शूर-वीर, इष्ट-मित्रों के सुख से सुखी, पिता द्वेषी, कृषि कर्म में चतुर, साक्षर, समाज में यशस्वी, पशुपालक, शान्तवृत्ति होता है।

जिसका तृतीयेश पञ्चम स्थान में और पंचमेश तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य स्वपराक्रम से विद्याभ्यास करने वाला, विद्वान्, अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण, धार्मिक, पुत्रों के सुख से सुखी, उपकारी, दानी, शान्त, विनीत, लेखक, कवि, नाटयकार और कलाकार में से कुछ न कुछ कार्य करने वाला, स्त्री-भूमि, भ्रातृ सम्पत्ति से लाभ उठाने वाला होता है।

जिसका तृतीयेश छठे स्थान में और षष्ठेश तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य उग्र स्वभाव, पापी, शत्रुभय से युक्त, नन्साल के सुख से रहित, चोराग्नि, विषादि से कष्ट पाने वाला, नेत्र कर्णरोगी, इष्ट-मित्र भाई-बन्धुओं से कलह करने वाला, नीच संगति, ऋणयुक्त होता है।

जिसका तृतीयेश सप्तम भाव में हो और सप्तमेश तीसरे स्थान में हो तो जातक साक्षर, अपने विचारो में तल्लीन रहने वाला, पराक्रम से स्त्री जाति से धन पाने वाला, काम वासना से अतृप्त, पर-स्त्री रत, जिसकी स्त्री चंचल हृदय तथा पर पुरुष गामिनी होती है। घर में कलह रहती है, जीवन दुखी रहता है फिर भी परोपकार की भावना रहती है।

जिसका तृतीयेश अष्टम स्थान में और अष्टमेश तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य आलस्ययुक्त, कर्णादि का रोगी होता है। भ्रातृ वर्ग से कलह रखने वाला, सग्राम या आपसी लड़ाई में चोट खाने वाला, चोरादि की संगति करने वाला, दुष्ट प्रकृति, पशु व्यापार से लाभ पाने वाला होता है, जिसे जीवन में यश नहीं प्राप्त होता।

जिसका तृतीयेश नवम स्थान में और नवमेश तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, भाई-बन्धु, स्त्री-बच्चों के मोह से रहित, तप करने वाला, धार्मिक, तीर्थयात्रा में पराक्रम दिखाने वाला, गृहत्यागी, परोपकारी, स्वतन्त्र विचार, एकान्त सेवी-सा होता है।

जिसका तृतीयेश दशम स्थान में और दशमेश तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य शूर-वीर, पराक्रमी, सैनिक, पुलिस, शिक्षा से युक्त, बहादुरी के लिए राज्य से पारितोषिक पाने वाला, धर्म भीरु, आस्तिक, स्त्री, मित्र, पुत्रादि से युक्त, मातृ विरोधी, पितृ सेवक, शत्रुजित, स्वजन समुदाय तथा देश रक्षा में तत्पर रहने वाला होता है।

जिसका तृतीयेश एकादश स्थान में और एकादशेश तृतीय स्थान में हो तो जातक सुख से विद्याध्ययन करने वाला, नीतिज्ञ, कुशल व्यापारी, स्त्री-पुत्र, भ्रातृ-वर्ग से सुखी तथा उनके पराक्रम से लाभ उठाने वाला, दीनों का रक्षक, दानी, देवी-देवता को मानने वाला, धन-धान्य युक्त, उपकार में धन व्यय करने वाला, सबका प्रिय, प्रतिष्ठित होता है।

जिसका तृतीयेश द्वादश और द्वादशेश तीसरे स्थान में हो तो वह मनुष्य अपने पराक्रम से धन कमाकर उसे व्यय करने वाला, सदा घर से बाहर रहने वाला, संग्राम विजयी, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, साहसी, पर-स्त्रियों पर आसक्त, विवाह के बाद उन्नति करने वाला, रोग से युक्त तथा चपलगति होता है।

जिसका चतुर्थेश पंचम में हो और पंचमेश नवम में हो तो अपनी विद्या की अपेक्षा अधिक ज्ञानवान्, उद्यमी, परिश्रमी, लेखक, कवि तथा कई भाषाओं का ज्ञान रखने वाला होता है, उसके माता-पिता दीर्घायु होते हैं, ऐसा मनुष्य धार्मिक, स्वाध्याय प्रिय, वित्त समान दान करने वाला, आस्तिक विचार, राज्यकर्मचारी, कृषि कर्म में रुचि रखनेवाला, पुत्रादि सुख कम होता है, अपने समाज तथा पड़ोस में आदर-सत्कार पाने वाला, कीर्ति युक्त होता है।

जिसका चतुर्थेश छठे भाव में हो और षष्ठेश चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य स्वच्छन्द, क्रोधी, माता-मामादि से द्वेष रखनेवाला, अग्नि-चोर-पशु आदि से हानि उठाने वाला, पिता का विरोधी, मुकदमे में धन-व्यय करने वाला, शत्रुजित्, चंचलचित्त, शील-रहित होता है। उसका जीवन लोक-निन्दा, लोक विरोध तथा झगड़ों में ही व्यतीत होता है।

जिसका चतुर्थेश सप्तमभाव में और सप्तमेश चतुर्थ में विराजमान हो तो मनुष्य राज्यकर्मचारी, अपने ससुर से धन-सम्पत्ति पाने वाला, विवाह के पश्चात् उन्नति करनेवाला, देश-विदेश से धन लाने वाला, वस्त्र-विक्रेता, कृषि से लाभ उठाने वाला, पर-स्त्रियों को प्रिय, आलस्ययुक्त, मातृभक्त, कामी, वाहन सुख से युक्त होता है।
सम्पत्ति सुख से सुखी, लक्ष्मीवान्, ऐश्वर्य युक्त, साहसी, धर्म-कर्म में रत, शत्रुजित्, उपकारी बात का पक्का, कथित वचन को पूर्ण करने वाला, इष्ट-मित्रों का पालक होता है।

जिसका चतुर्थेश अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य स्वाभिमानी, वायु रोग से पीड़ित, माता-पिता यदि जीवित भी रहें तो भी उनका सुख नहीं होता, जल से भय पाने वाला, स्वाध्याय प्रिय, शत्रुजित, यात्रा को तत्पर रहता है।

जिसका चतुर्थेश नवम स्थान में और नवमेश चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य, माता-पिता, वाहनादि के सुख से सुखी, बुद्धिमान्, विद्वान्, धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला, अनेक ऐश्वर्य से युक्त, घर से बाहर और भी सुख पाने वाला, इष्ट-मित्रों से युक्त, आस्तिक विचार, पापरहित, परोपकारी, दानी, निर्धनों का सहायक होता।

जिसका चतुर्थेश दशम भाव में और दशमेश चतुर्थ भाव में हो तो वह मनुष्य पराक्रमी, उद्यमी, राजकर्मचारी, राजा से पारितोषिक पाने वाला, माता-पिता की

जिसका चतुर्थेश एकादश भाव में और एकादशेश चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य कृषि-विज्ञान का जानने वाला, कुशल व्यापारी, माता-पिता, बड़े भाई का आज्ञाकारी तथा उनसे लाभ पाने वाला, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, नम्र तथा विनीत होता है, धार्मिक, परोपकारी, दयालु, अनेक मनुष्यों का भरण-पोषण करने वाला, यशस्वी होता है।

जिसका चतुर्थेश द्वादश स्थान में और द्वादशेश चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य घर से बाहर रहनेवाला, माता के सुख से रहित, रोगी, अनेक प्रकार से धन का खर्च करने वाला, कृषि कर्म से रहित, ऋणग्रस्त, पाप-कर्मरत, नीच

संगति में प्रसन्न, अनेक स्त्रियों से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला, वाहन से कष्ट पाने वाला, वाचाल, कठिन परिश्रम करके भी लाभ कम पाने वाला, कठोर तथा दुखी होता है।

जिसका पंचमेश छठे स्थान में और षष्ठेश पंचम स्थान में हो तो वह मनुष्य दुर्बल देह, शत्रुओं से भयभीत, स्त्री-पुत्रों का सुख कम होता है। क्रोधी, रोगी तथा स्वच्छन्द होता है। पुलिस-सेना में अच्छा कार्य करने वाला, अग्नि, चोर, विष तथा पुत्र शत्रुता से कष्ट पाने वाला, आस्तिक बुद्धि वाला होता है। मातृवंश का द्वेषी होता है। गुप्त धन पाता है।

जिसका पंचमेश सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश पंचम स्थान में हो तो वह मनुष्य सत्य पर विश्वास करने वाला, धार्मिक तथा दयालु होता है और एक पत्नी व्रत का पालन करने वाला, विनय शील तथा स्वतन्त्र विचार, समाज में प्रतिष्ठा पाने वाला, स्त्री-पुत्रों के सुख से सुखी होता है। इसके स्त्री-बच्चे आज्ञाकारी तथा सुशील होते हैं और बड़े आदमी बनते हैं। ये सभी गुरु जनों का आदर करने वाले, यात्रा प्रिय, देव भक्त तथा गुणवान् होते हैं।

जिसका पंचमेश अष्टम स्थान में और अष्टमेश पंचम स्थान में हो तो मनुष्य नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला तथा नीच कर्म द्वारा चोरी का माल धर कर धनोपार्जन करने वाला, निर्लज्ज, दुष्ट पुत्रों वाला, सन्तप्त, भाग्य-हीन, धोखे के कार्य से धन पाने वाला, छिद्रान्वेषी तथा प्रथम पुत्र शोक से युक्त, दुष्ट चित्त होता है।

जिसका पंचमेश नवम स्थान में हो और नवमेश पंचम स्थान में हो तो मनुष्य संयमी, विद्वान्, धार्मिक, परोपकारी, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, जिसके पुत्र यशस्वी पण्डित होते हैं, जल तथा तीर्थ यात्रा करने वाला, उदार, विनय युक्त, शान्त, अतिथि, गुरुजनो का आदर-सत्कार करने वाला, लेखक, कवि, गायन-वादन जानने वाला, कलाकार, आस्तिक, स्वाध्याय प्रिय, ईश्वर भक्त तथा समाज प्रिय, इष्ट-मित्रों तथा देश-देशान्तर में यश पाने वाला प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

जिसका पंचमेश दशम भाव में और दशमेश पंचम भाव में हो तो वह मनुष्य वड़ा पराक्रमी, साहसी, विद्वान्, राज्यकर्मचारी, उत्तम कार्य के लिये राज्य पारितोषिक पाने वाला, दीन रक्षक, स्त्री-पुत्र, माता-पिता, भाई-बन्धु आदि के सुख से सुखी, विदेश में यश प्राप्त करने वाला, धन-धान्य, सम्पत्ति से युक्त, ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला, द्यूत कर्मरत होता है। यह अपने साहसी कार्यों के लिए प्रसिद्ध होता है।

जिसका पंचमेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश पंचम स्थान में हो तो वह मनुष्य वड़ा ही नीतिवान्, विद्वान्, लेखक, कवि, कलाकार, कुशल व्यापारी, देश-विदेश की यात्रा करने वाला, राज्यकुल से पारितोषिक पाने वाला, औफीसर, सामर्थ्ययुक्त, मधुरभाषी, जन-साधारण को प्रिय, मिष्ठान्न प्रिय, सुसन्तति वाला, दानी, परोपकारी, दयालु, अतिथि सत्कार करने वाला, आज्ञाकारी पुत्रों का एकमात्र पिता होता है।

जिसका पंचमेश द्वादश भाव में हो और द्वादशेश पंचम भाव में हो तो मनुष्य वड़ा हो परिश्रमी, विद्यादान, तीर्थयात्रा करने के लिए तत्पर रहने वाला, पुत्रों के सुख तथा विद्याभ्यास के लिए अधिक धन व्यय करने वाला, अचल कीर्ति वाला, सरकार तथा समाज से मान पाने वाला, अपने मान को रखने के लिए धन को व्यय करने में ही ऋणी हो जाता है, फिर भी अपने बात से पीछे नहीं हटता।

जिसका षष्ठेश सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य प्रत्येक कार्य में द्विचित्त हाता है, किसी वात का शीघ्र निश्चय नहीं कर सकता, किसी भी कार्य में सफलता कठिनता से मिलती है। स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है, घर में कलह रहती है। जिगर, तिल्ली आदि रोगों से पीड़ा रहती है। नीच संगति में रहता है। छोटे-छोटे कार्यों से आजीविका चलती है। प्रपंच तथा विवाद में ही रहता है, हृदय सदा सन्तप्त ही रहता है।

जिसका षष्ठेश अष्टम भाव में और अष्टमेश छठे स्थान में हो तो वह मनुष्य, सदा ही किसी न किसी रोग से पीड़ित रहता है, मन्दाग्नि रहती है। इसमें ग्रह प्रभाव प्रवल है। पृथक्-पृथक् ग्रहों से पृथक् रोग उत्पन्न होते हैं। शत्रुओं से

सदा भय रहता है, नन्साल का सुख नहीं होता, विष या चोरी आदि से हानि होती है। अण्डकोष वृद्धावस्था तक बढ़ जाते हैं। ये लोग स्वार्थी, तथा प्रपंच प्रवीण होते हैं। जीवन में उन्नति कम होती है, स्त्री सुख नहीं होता ।

जिसका षष्ठेश नवम में और नवमेश छठे स्थान में हो तो ऐसा योग वाला मनुष्य पाषाणादि का क्रय-विक्रय करने वाला, धर्मरहित, सत्कर्म से दूर, पाप-वृत्ति, दूसरों की निन्दा करने वाला, छिद्रान्वेषी, प्रत्येक कार्य में अड़चनों वाला, कुकर्मों में धन व्यय करने वाला, इष्ट-मित्रों का विरोधी, अंगहीन, भ्रष्टाचार से युक्त, धन-सम्पत्ति, पुत्रादि सुख से रहित होता है।

जिसका षष्ठेश दशम स्थान में हो और दशमेश छठे भाव में हो तो मनुष्य, शत्रुजित्, पराक्रमी, उद्योगी, राज्य कर्मचारी, पुलिस, सेना विभाग से लाभ पाने वाला, कम उन्नति करने वाला, संग्राम में चोट से घायल होता है। माता-पिता तथा राजा के विरुद्ध कभी उनके अनुसार कार्य करने वाला, स्त्री-पुत्रादि के न्यून सुख वाला, साधारण जीवन व्यतीत करने वाला, क्रोधी तथा हठ का पक्का होता है। स्वच्छन्द विचार होने के कारण जीवन में विशेष उन्नति नहीं कर पाता, मित्रों की अपेक्षा शत्रुओं की संख्या अधिक होती है।

जिसका षष्ठेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश छठे स्थान में बैठा हो तो वह मनुष्य व्यापार तथा सरकारी कार्य से अल्प लाभ वाला, पराक्रमी, झगड़ालू, होड़ शर्त लगाने वाला, जुए, रेस,सट्टे से कमाने तथा खोने वाला, बड़े भाई का द्वेषी, स्त्री-बच्चों से कम सुख वाला, लालची, अग्नि तथा चोर से नष्ट कराने वाला, यात्रा में धन व्यय करने वाला, पशु व्यापार से लाभ पाने धन वाला, शत्रुयुक्त होता है।

जिसका षष्ठेश द्वादश भाव में और द्वादशेश छठे स्थान में हो वह मनुष्य उद्यमी, पराक्रमी, पशु, खेती, व्यापारादि से धन कमाने वाला, मुकदमे, देश-विदेश की यात्रा में धन खर्च करने वाला, चोरों, डाकुओं से धन पाने वाला, रोगी, नेत्र मलिन, पर-स्त्री के प्रेम में रत, दुर्जन संगति में सुख मानने वाला, शत्रुओं से पीड़ित रहता है और सदा किसी न किसी का ऋण उसे देना ही पड़ता है।

जिसका सप्तमेश अष्टम भाव में और अष्टमेश सप्तम स्थान में हो तो वह मनुष्य राज्य कर्मचारी, समय पर पराक्रम दिखाने वाला, अनेक प्रकार के रोगों से युक्त, अर्श, भकन्दर, रक्त-पित्तादि रोगों से सन्तप्त, स्त्री रहित, वेश्या गमन करने वाला, अशुभ कर्म करने वाला, पापी होता है। अनेक शत्रुओं से युक्त, लोभी, पर-स्त्री की इच्छा वाला होता है। पर उपदेश करने में कुशल, धूर्त, प्रपंची प्रकार का होता है। यदि येन-केन प्रकारेण विवाह हो भी जाय तो शीघ्र स्त्री शोक होता है।

जिसका सप्तमेश नवम स्थान में हो तो मनुष्य, सुशील स्त्री वाला, पुण्य कार्य में रत, तीर्थ यात्रा करने वाला, विवाह के बाद भाग्योदय को प्राप्त होता है। धातु क्षीण, प्रमेहादि रोगों से युक्त, विलासी, आलसी तथा हँसमुख और विनोदी होता है। स्वदेश की अपेक्षा, विदेश में उन्नति तथा विजाती स्त्री का प्रेमी होता है।

जिसका सप्तमेश दशम में हो और दशमेश सप्तम स्थान में हो तो वह मनुष्य उद्यमी, राज्य कर्मचारी, कृषि विज्ञान, उद्यानादि कला में निपुण, उच्च वंश की स्त्रियों से सम्बन्धित राज्यवंश से गुप्त धन पाने वाला, धूर्त, निन्द्य कर्म करने वाला, आखेट प्रिय, अपनी स्त्री के अतिरिक्त अनेक स्त्रियों से व्यभिचार सम्बन्ध रखने वाला, दुराचारी, माता-पिता, सास, श्वसुर आदि से ईर्ष्या रखने वाला, राज्य न्यायालय से दंड पाने वाला होता है

जिसका सप्तमेश एकादश स्थान में और एकादशेश सप्तम स्थान में हो तो वह मनुष्य उत्तम विचार, कविता, नाटकादि का लेखक, संगीत प्रिय, विविध कलापूर्ण कार्यों का ज्ञाता, देश-विदेश की यात्रा करने वाला, नीति-निपुण, व्यापारी, परोपकारी, सुशील, विनीत स्त्री के सुख सेसुखी, सत्सन्तति के सुख से प्रसन्न रहने वाला, धार्मिक उत्सवों तथा तीर्थयात्रा में धन व्यय करने वाला, दीनों को दान देने वाला, स्वाध्याय प्रिय, वीर्य-विकार से युक्त, स्त्री के कारण बड़े भाई से कलह रखने वाला, रोगी सा होता है।

जिसका सप्तमेश द्वादश भाव में और द्वादशेश सप्तम स्थान में हो तो वह मनुष्य आलसी, कृपण, नित्य रोगी, ऋणी, मुकदमे द्वारा पर-स्थान हरण करने वाला, देश-विदेश की समुद्री यात्रा करने वाला, चलचित्त, नीच संगति, मद्य

युक्त, पशु संग्रह में तत्पर, कपड़े के व्यापार में लाभ पाने वाला, शत्रुजित्, शुभ सुन्दर स्त्री से युक्त, किन्तु इसको स्त्री रोगी रहती है, उसके उपचार में धन व्यय करने वाला होता है और इसे स्त्री वियोग सहना पड़ता है और जीवन में अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं।

जिसका अष्टमेश नवम भाव में हो और नवमेश अष्टम स्थान में हो तो उस मनुष्य का क्रूर स्वभाव, जीव हिंसक, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, स्त्री-बच्चे आदि के सुख से रहित, वात-पित्त-कफादि रोगों से युक्त, दुष्ट संगति, धर्म-कर्म-तीर्थादि से रहित, व्यर्थ विवाद करने वाला, नास्तिक, अपर वस्तु का संग्रह करने वाला, पर स्त्री, पर धन में इच्छा रखने वाला, दुष्टात्मा, निराधार बातों को उड़ाने वाला होता है।

जिसका अष्टमेश दशम स्थान में हो और दशमेश अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य राज्य कर्मचारी होता है और विशेष उन्नति को कभी प्राप्त नहीं होता, मातृ पालित पिता के सुख से रहित, प्रपंची, नीच कर्म से यश का अभिलाषी, लड़ाई में चोट खाने वाला, राज्यदण्ड पाने वाला, चोरी, द्यूत, सुरा आदि निर्दयता के कार्यों में दण्ड पाने वाला, देश, जाति बहिष्कृत, जलयान में कार्य करने वाला नाविक हो तो अच्छा काम कर सकता है। घर की चिन्ता से युक्त, किसी न किसी रोग से पीड़ित रहता है।

जिसका अष्टमेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश अष्टम स्थान में हो तो मनुष्य अल्पलाभ वाला, पुष्ट शरीर, पत्थर, लकड़ी, कोयले आदि का कार्य या व्यापार करने वाला, बड़े भाई का विरोधी, सदा रोगी, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, शत्रु समूह से भी भय न मानने वाला, कभी-कभी पराक्रम द्वारा नाम अपने वर्ग में पाने वाला या पारितोषिक रूप में कुछ पाने वाला, साधारण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जिसका अष्टमेश द्वादश भाव में हो और द्वादशेश अष्टम स्थान में बैठा हो तो वह मनुष्य, मूर्ख, धूर्त, नीच कर्म करने वाला, चंचल प्रकृति, चोरी का माल घर में धरने वाला, दुश्चरित्र, भक्ष्याभक्ष्य का खाने वाला, हिंसक वृत्ति, सदा रोगोपचार में धन व्यय करने वाला, स्वार्थी, भिक्षावृत्ति, दीर्घसूत्री, कफ-पित्तादि

रोगों से ग्रसित, शुभ कर्म करने वालों का द्वेषी, सदा ऋणग्रसित रहने वाला, नित्य यात्रा में निष्ठा रखने वाला, स्त्री-बच्चों के सुख से रहित होता है।

जिसका नवमेश दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य उत्तम कर्म करने वाला, राज्यकर्मचारी, पुलिस-सेना विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, धर्म-कर्म, तीर्थ-यात्रा में तत्पर, सुशील, रोब से काम लेने वाला, नीतिज्ञ, भाग्यवान्, माता-पिता, भाई-बहन, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, भान्जे-भतीजे आदि सभी के सुख से सुखी, दयावान्, परोपकारी, दीनवन्धु कुलीन, सच्चरित्र, पुत्रों के सुख, ऐश्वर्य से पूर्ण सुखी, स्पष्ट वक्ता, शस्त्र-शास्त्र का ज्ञाता, शूर-वीर, पराक्रमशाली, बिना उद्योग पारितोषिक पाने वाला, सर्वत्र विजयी होता है।

जिसका नवमेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य ग्रह कारकानुसार व्यापार में अतुल धन कमाने वाला, कुशल, सत्ताधारी, राज्यकर्मचारी, धर्मात्मा, दान-पुण्य में रुचि रखने वाला, अनेक तीर्थों में यात्रा करने वाला, देश-विदेश, समुद्र पर्यन्त यात्रा करने वाला, धर्मशाला, अनाथालय, अस्पताल, पाठशाला, विद्यालय आदि बनवाने वाला, कुएँ, जलाशय, वृक्ष, बागादि परमार्थ लगाने वाला, स्वाध्याय प्रिय, देव-पितरभक्त, बड़े भाई का पालन करने वाला, पुण्यात्मा, प्रसिद्ध दानी, सुशील, विनीत, स्त्री-पुत्रों के सुख से अत्यन्त सुखी, शास्त्र का ज्ञाता, देवताओं जैसा आचरण करने वाला, सर्व प्रकार से भला आदमी होता है।

जिसका नवमेश द्वादश स्थान में हो और द्वादशेश नवम स्थान में हो तो वह मनुष्य स्वस्थ-सुन्दर, जप-तप करने वाला, एकान्तप्रिय, शान्त चित्त, धर्म-कर्म तथा तीर्थ यात्रा, परोपकार के लिये ऋण लेने वाला, देश-विदेश की यात्रा करने वाला, पराक्रमी, शत्रुजित्, उद्योगी, विद्या-विनय से सम्पन्न होता है। समाज इष्ट-मित्र राजनैतिक क्षेत्र में आदर पाता है। ऐसे मनुष्य के पास धन स्थिर नहीं नहीं रहता फिर उसके सभी कार्य धनवानों जैसे होते हैं। यद्यपि ऐश्वर्य से दूर रहता है फिर भी अनेक मनुष्य उसकी सेवा को तत्पर रहते हैं। यदि अशुभ नवमेश और द्वादशेश अन्योन्याश्रय हो तो मनुष्य सब प्रकार से दुखी रहता है। ऋणी रहने के कारण छल-प्रपंच, कपट-धोखादि से उदर पूर्ति करता है और

सर्वत्र तिरस्कृत दृष्टि से देखा जाता है, स्त्री-बच्चे, भाई-बन्धु, स्वजन, परिजन सभी उसका साथ छोड़ देते हैं।

जिसका दशमेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, उद्यमी, संग्राम विजयी, पुलिस-सेना विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, देश भक्त, दीनों का रक्षक, शत्रुजित्, स्त्री पुत्र नौकर वाहनादि से युक्त, माता तथा बड़े भाई के सुख से सुखी, नीति कुशलता के कारण राज्य कोष से धन पाने वाला, पिता द्वेषी, धर्मात्मा, परोपकारी, धन-धान्य के ऐश्वर्य से युक्त होता है। दान तथा जनहितकारी कार्यों द्वारा समाज, देश तथा विश्व में सामर्थ्यानुसार ग्रहों से यश पाने वाला, यात्रा प्रेमी एक बड़ा आदमी होता है।

जिसका दशमेश द्वादश स्थान में और द्वादशेश दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य सरकारी कर्मचारी, उद्यम से धन कमाने वाला और उस धन को अच्छे कार्यों में खर्च करने वाला तथा देश-देशान्तर की सैर करने वाला, कभी आलसी तो कभी शीघ्र कार्य करने वाला मनमौजी होता है। लड़ाई में शत्रु से चोट खाने वाला तथा विशेष प्रकार का रोगी होता है और अतिथि सेवा में तत्पर रहता है।

जिसका एकादशेश द्वादश स्थान में हो और द्वादशेश एकादश स्थान में हो तो वह मनुष्य, सत्यवक्ता, कुशल व्यापारी या राज्य कर्मचारी, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, पाप युक्त, ऋणी, द्यूतकर्मी, व्यर्थ यात्रा में धन बरबाद करने वाला, व्यभिचारी, लड़ाई-झगड़े में तत्पर, कफ, वात, पित्तादि रोग से पीड़ित, किराये के मकान में रहने वाला, लोभी तथा प्रपंची होता है और पशु व्यापार से लाभ पाता है। जीवन चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है।

नोट--यदि लग्नेश लग्न में, धनेश धन में, पराक्रमेश पराक्रम में, चतुर्थेश चतुर्थ में, पचमेश पंचम में, भाग्येश भाग्य में, राज्येश राज्य में, लाभेश लाभ स्थान में से कोई भी चार स्वगृही ग्रह बलवान् हो तो मनुष्य बहुत ही बड़ा आदमी होता है। इन उपर्युक्त समस्त योगों में यदि सभी शुभ ग्रह हों तो मनुष्य निश्चय से बड़ा आदमी होता है। अस्त, नीच, नीचास्त शत्रुक्षेत्री तथा पाप और

क्रूर ग्रह, इन योगों का ह्रास करते हैं और शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल करते हैं, नीचोन्मुख, नीचांश पर प्रत्येक ग्रह चाहे वह शुभ ही ग्रह क्यों न हो अशुभ फल करता है। उच्चाभिलाषी तथा उच्चांश पर स्थान प्रभाव के कारण अशुभ ग्रह भी कभी कभी शुभ फल प्रदान करते हैं तो शुभ ग्रहों की शुभ्रता की क्या कहना है। इसलिए प्रत्येक ज्योतिष कार्य करने वाले को इन उपर्युक्त बातों पर विशेष रूप से ध्यान देकर प्रत्येक फल को बड़ी ही गम्भीरता से सोच विचार कर कहना चाहिये।

राजयोग रसायनम्

स्वांशवर्गोत्तमे केन्द्रे पुण्येशः कारकोऽथवा।
राज्यरूढपदे वापि तदा सिद्धय रसायनम्॥

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में किसी शुभ स्थान का अधिपति या उसी स्थान का कारक अपने नवांश अथवा स्वक्षेत्र में उच्चांश का होकर केन्द्र (१, ४, ७, ८) भाव में बलवान् बैठा हो तो उसे राज्य से बड़े पद को प्राप्ति होती है या फिर रसायन (कीमियाँ) सोना, चाँदी बनाने की करामात (चमत्कार) प्राप्त हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह एक उच्चपदाधिकारी या बहुत बड़ा धनवान मनुष्य होता है।

कारके कारकारूढे धने स्वर्क्षेत्रगे खगे।
ऋद्धिसिद्धिश्च संयुक्ते तथातेत्र रसायनम्॥

यदि कोई शुभ ग्रह स्वक्षेत्री होकर अपने कारक ग्रह के साथ धन स्थान में बलवान बैठा हो तो ऐसे योग वाले मनुष्य को आठों सिद्धियाँ तथा नौ ऋद्धियाँ रासायनिक पदार्थों के साथ प्राप्त होती हैं अर्थात् वह मनुष्य धन-धान्य-सम्पत्ति गृह, भूमि आदि का स्वामी होता है। सभी प्रकार से सुखी होता है।

धर्म-कर्माधिपै धिपौ स्वोच्चे तथा वर्गोत्तमे यदि।
नवमे पंचमे लाभे राज्यप्राप्ति रसायनम्॥

जिस मनुष्य का भाग्येश (नवमेश) और राज्येश (दशमेश) अपने उच्च स्थान में या स्वगृही होकर अपने उच्चांश में होकर यदि (५, ९, ११) भावों में

विराजमान हों तो उस मनुष्य को राज्य की प्राप्ति होती है अर्थात् उस मनुष्य को सरकारी बड़ी नौकरी या किसी फार्म का आधिपत्य प्राप्त होता है।

मूलत्रिकोणगे लग्ने कारकेशो द्विजोत्तम।
मन्त्रनाथेन संयुक्तः कीर्तियुक्त-रसायनम्॥

यदि लग्न कारकेश मन्त्राधिपति (वृहस्पति) के साथ लग्न में मूल (१, ४, ७, १०) त्रिकोण (५, ९) में बलवान् बैठा हो तो ऐसे योग वाले मनुष्य को कीर्ति (यश-प्रसिद्धि), धन-दौलत के साथ प्राप्त होती है अर्थात् उसे धन-धान्य, सम्पत्ति के साथ-साथ यश, मान, बड़ाई की प्राप्ति होती है।

धर्मेशो धर्म लाभस्थः पंचमेशोऽपि पंचमे।
कारकेन्द्र-युते-दृष्टे स्वेच्छापूर्ण धनं लभेत्॥

जिस मनुष्य का भाग्येश (नवमेश) भाग्य या लाभ (९-११) स्थान में हो और पंचमेश भी पंचम स्थान में हो और पंचम स्थान का कारक ग्रह उपर्युक्त ग्रहों के साथ केन्द्र में बैठा हो या उसे पूर्ण दृष्ट हो या (१, ४, ७, १०) स्थान में वे दोनों ग्रह कारक से दृष्ट युक्त हो तो उस मनुष्य को अपनी इच्छा की पूर्ति के अनुसार धन की प्राप्ति होती है अर्थात् उसे किसी समय भी धन की कमी नहीं होती या ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने के लिये पूर्ण सामग्री प्राप्त रहती है।

स्वोच्चादि पद संयुक्ते कारकेशे शुभालये।
सततं सुखं माप्नोति धातु भस्म रसायनम्॥

यदि किसी मनुष्य के जन्म पत्र में लग्न का कारकेश अपने उच्च या स्वगृह का होकर किसी शुभ स्थान में बैठा हो तो उसको धातु फूँककर रसायन बनाने की विधि सहज ही आ जाती है। जिसके द्वारा उपार्जित धन से वह मनुष्य आजीवन लगातार सुख ऐश्वर्य का अनुभव करता है।

सुखेशे भाव भावस्थे मानेशे सुख संयुते।
लग्न कारकयोर्दृष्ट मिषग्योगेति संयतः॥

जिसके जन्म पत्र में सुख स्थान का स्वामी (चतुर्थेश) स्वगृही होकर सुख या चतुर्थ स्थान में दशमेश के साथ बैठा हो और लग्न के कारक से पूर्ण दृष्ट

हो तो वह मनुष्य भिषगाचार्य (बड़ा वैद्य, डाक्टर, हकीम आदि में से कोई न कोई) अवश्य होता है।

कर्मेशो नवमे यस्य सुखेशः पंचमेपिवा।
परस्परं तदीशो वा स्वर्णाह्विस्तत्र कर्मतः ॥

जिसका दशमेश भाग्य स्थान में हो और चतुर्थेश पंचम स्थान में हो या ये दोनो एक दूसरे के अधिश्वरों के साथ अन्योन्याश्रय से सम्बन्धित हों तो वह मनुष्य स्वर्णकार (सुनार) या सोने, चाँदो का कार्य करने वाला जोहरी होता है।

वागीशः कारके लग्ने स्वोच्चादि पद संयुत।
भौमांशे मृत्युशेदृष्टो व्यशः काल संज्ञक ॥

जिसका द्वतोयेश और उसका कारक लग्न में अपने उच्च का होकर अष्टम कारक से युक्त हो और अष्टमेश मंगल के अंशो से देखता हो तो ऐसे योग वाले मनुष्य की कालसंज्ञा कहनो चाहिये अर्थात् उसको शोघ्र मृत्यु हो जाती है।

पंचमेतु भृगु क्षेत्र तस्मिच्छुझेण संयुतः।

यदि लग्न से पंचम स्थान में तुला राशि हो और उसमें स्वगृही शुक्र के साथ शनि बैठा हो (उच्च का शनि) तो मनुष्य बहुत बड़ा धनवान् होता है।

लाभेशनैश्चर युते बहुद्रव्य नायकः।

यदि लाभ (एकादश) स्थान में शनि हो तो मनुष्य बहुत बड़ा धनी होता है।

पंचमे सौम्यक्षेत्रे तस्मिन्सौम्य युते यदि।

यदि पंचम स्थान में शुभ ग्रह का क्षेत्र हो और उसमें कोई शुभ ग्रह वैठा हो (शत्रु सौम्य ग्रह न हो) तो इस योग वाला लनुष्य धन वान होता है।

लाभे च चन्द्र भौमीत बहु द्रव्यस्यनायकः।

यदि एकादश स्थान में चन्द्रमा और मंगल हो तो मनुष्य बहुत बड़ा धनी होता है, यह उपर्युक्त योग मेष के मंगल के साथ पूर्ण चन्द्रमा का ही उचित है क्योंकि स्वगृही मंगल होने के साथ २ उच्चाभिलाषी चन्द्रमा पूर्ण होने से योग

पूरा होता है। वृश्चिक राशि में मंगल तो स्वगृही होता है किन्तु चन्द्रमा नीच का होने से योग भ्रष्ट हो जाता है।

पंचमेतु शनि क्षेत्रे तस्मिन्सूर्य युतो यदि

यदि पंचम स्थान में शनि की राशि कुम्भ हो और उसमें सूर्य बैठा हो तो धन मिलता है।

लाभे सोमात्रजस्थेवा बहु द्रव्यस्य नायकः

यदि एकादश स्थान में बुध हो (मिथुन या कन्या-मीन) तो बहुत धन मिलता है।

पंचमेतु रविक्षेत्रे तस्मिन्नवियुतो यदि।

यदि स्वगृही सूर्य पंचम स्थान में हो तो बहुत धन प्राप्त होता है।

लाभे रविहु पूज्यस्थे बहुद्रव्यस्य नायकः।

यदि एकादश स्थान में उच्च का सूर्य हो तो बहुत धन प्राप्त होता है।

पंचमेतु शनि क्षेत्रे तस्मिन्छनि युतो यदि—

यदि स्वगृही शनि पंचम स्थान में हो तो बहुत धन मिलता है।

लाभे भौमेन संयुक्ते बहु द्रव्यस्य नायकः।

यदि एकादश स्थान में मंगल (मकर का) हो तो बहुत धन होता है।

पंचमेतु गुरुक्षेत्रे तस्मिन्गुरू युतो यदि—

यदि पंचम स्थान में स्वगृहो वृहस्पति हो तो मनुष्य धन वान होता है।

लाभेतु चन्द्र भौमौचे बहुद्रव्यस्य नायकः—

यदि एकादश स्थान में चन्द्रमा मंगल स्थित हों तो बहुत धन होता है।

भानु क्षेत्र गते तस्मिन्लग्ने भानौ स्थिते यदि—

यदि लग्न में स्वगृही सिंह का सूर्य हो तो बहुत धन मिलता है।

भौमेन गुरूणांयुक्ते दृष्टोवास्यदिनो धनैः।

यदि मंगल, वृहस्पति से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे योग में धन नहीं होता है।

चन्द्र क्षेत्र गते लग्ने तस्मिश्चचन्द्रयुतो यदि—
जीव भौमयुतेयस्तु दृष्टे जातो धनी भवेत।

यदि स्वगृही कर्क का चन्द्रमा लग्न में बैठा हो और मंगल वृहस्पति एक ही साथ शुभ स्थान में बैठे हो या एक दूसरे को देखते हो तो इस योग वाला जातक धनवान होता है।

भौम क्षेत्र गते लग्ने तस्मिन्भौम युतो यदि—
सौमशुक्रार्कजै युक्ते दृष्टे श्रीमान् नरोभवेत्।

यदि स्वगृही मंगल लग्न में हो और चन्द्रमा, शुक्र और सूर्य से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य बहुत धन से युक्त होता है।

गुरु क्षेत्रगते लग्ने तस्मिन्गुरु युतो यदि—
सौम्य भौम युते दृष्टे जातोयस्तु धनीश्वरः।

यदि स्वगृही वृहस्पति लग्न में विराजमान हो और (मित्र) सौम्य (शुभ) ग्रह या मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य बहुत बड़ा धनी होता हैं।

बुध क्षेत्र युते तस्मिन्दृष्टे सौम्य युते यदि—
शनि शुक्र युते दृष्टे जातो यस्तु धनीश्वरः।

यदि बुध स्वगृही लग्न में हो और कोई शुभग्रह (गुरू) उसके साथ हो या उसे देखता हो और शनि-शुक्र एक दूसरे से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला जातक अत्यन्त धनवान होता है।

भृगु क्षेत्र गते लग्ने तस्मिन्भृगु युते यदि —
शनि भौम युते दृष्टे जातो यस्तु धनीश्वरः।

यदि स्वगृही शुक्र लग्न में हो और वह शनि-मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला जातक अत्यन्त धनवान होता है।

जिसका पंचमेश, चतुर्थ में, चतुर्थेश, तृतीय में, तृतीयेश धन या दूसरे भाव में और द्वितीयेश पंचम स्थान में हो तो ऐसे योग में यदि कोई भी लग्नेश से मित्र-समक्षेत्री होकर दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

यदि पंचमेश दूसरे स्थान में द्वितीयेश, तृतीय स्थान में तृतीयेश चतुर्थ में और चतुर्थेश पंचम स्थान में हो और इनमें से कोई भी ग्रह लग्नेश से मित्र सम-क्षेत्री होकर पूर्णरूप से दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य बहुत ही बड़ा आदमी होता है।

यदि पंचमेश, चतुर्थ में, चतुर्थेश पंचम स्थान में हो, लाभेश, पराक्रम में पराक्रमेश लाभ में हो तो या लाभेश--चतुर्थ में, चतुर्थेश लाभ में, पराक्रमेश पंचम में, पंचमेश पराक्रम स्थान में बली हो तो या लाभेश पंचम में, पंचमेश लाभ में और पराक्रमेश चतुर्थ में और चतुर्थेश पराक्रम स्थान में बली हो और इन योगों में से किसी एक को भी यदि बलवान लग्नेश मित्र-समक्षेत्री स्थित ग्रह को देखता हो या उससे युक्त हो तो ऐसे योगों वाला मनुष्य बड़ा ही यशस्वी, भूमिधर, विद्वान, इष्ट-मित्र, पुत्रादि के सुख से सुखी होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि पंचमेश, चतुर्थ में, चतुर्थेश पंचम स्थान में हो, लाभेश-पराक्रम में पराक्रमेश लाभ में हो तो या लाभेश-चतुर्थ में; चतुर्थेश लाभ में, पराक्रमेश पंचम में, पंचमेश पराक्रम स्थान में बली हो तो या लाभेश पंचम में, पंचमेश लाभ में और पराक्रमेश चतुर्थ में और चतुर्थेश पराक्रम स्थान में बली हो और इन योगों में से किसी एक को भी यदि बलवान लग्नेश मित्र-सम क्षेत्री स्थित ग्रह को देखता हो या उससे युक्त हो तो ऐसे योगों वाला मनुष्य बड़ा ही यशस्वी, भूमि-धर विद्वान, इष्ट-मित्र पुत्रादि के सुख से सुखी होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि भाग्येश, लाभ में और राज्येश राज्य में बली हो तो या लाभेश भाग्य में हो या राज्येश लाभ में, लाभेश राज्य में और भाग्येश भाग्य स्थान में बली बैठा हो तो या लाभेश राज्य में, राज्येश लाभ में और भाग्येश भाग्य स्थान में बली हो या भाग्ये राज्य में राज्येश भाग्य स्थान में हो और लाभेश लाभ-स्थान में वही हो और इनमें से कोई भी योग कारक ग्रह यदि लग्नेश का मित्र या सम होकर पूर्ण दृष्ट हो या उसके साथ बैठा हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यवान, धार्मिक, पराक्रमी, नीतिज्ञ, क्रय-विक्रय कार्य में चतुर, भूमिधर, बड़ा सरकारी कर्मचारी होता है।

यदि भाग्येश, राज्य में, राज्येश लाभ में, लाभेश भाग्य में क्रमशः बैठे हों या राज्येश भाग्य में, भाग्येश लाभ में, लाभेश राज्य में क्रमशः बैठे हो अस्त नीच, शत्रु राशि के न हो और लग्नेश के मित्र या सम राशियों में उससे पूर्णदृष्ट या युक्त बैठे हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य, पराक्रमी, उत्तम कर्मकांडी, बड़ा

राज्य कर्मचारी, मंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उपमंत्री, राज्यमन्त्री, सेक्रेट्री डिप्टी सेक्रेट्री, अन्डर सेक्रेट्री आदि में से कोई न कोई बड़ा आदमी अवश्य होता है। जितने अधिक शुभ ग्रहों का संमोग राज्य योगों में होगा मनुष्य उतना ही बड़ा पद प्राप्त करेगा और जितने क्रूर-पाप अशुभ ग्रहों का सायुज्य होगा मनुष्य क्रमशः उतने ही छोटे पद की प्राप्ति करेगा। ऐसे योगों में लग्नेश का शुभ मित्रादि होना अत्यन्त आवश्यक है। अस्त-नीच-नीचास्त तथा अशादि में निर्बल ग्रह अशुभ फल प्रदान करते है और शुभ राजयोगों के फल को भी अशुभ बना देते है। इसी प्रकार लग्न, धन, पराक्रम, चतुर्थ, पंचम, भाग्य, राज्य और लाभादि स्थानों द्वारा बनाये गये राजयोगों का शुभाशुभ फल, विद्वान् ज्योतिष को विवेक द्वारा सावधानी से कहना चाहिये।

जिसका लग्नेश शुभ ग्रह अपनी उच्च राशि में केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९,) अपने मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट या हो अथवा स्वगृही होकर (१, ४, ७, १०, ५, ६) में साज्येश से युक्त हो तो वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यवान, दीर्घायु, धन-धान्य से पूर्णतया सम्पन्न, उज्वल कीर्ति से युक्त, ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। इसके प्रतिकूल यदि लग्नेश, अशुभ या शत्रु ग्रह की राशि में अशुभ-पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर त्रिक स्थान (६, ८-१२) में से किसी एक में, नीच, अस्त, नीचास्त तथा निर्बली बैठा हो तो उस मनुष्य की मृत्यु अपकीर्ति सहित होती है। और वह मृत्यु समय बहुत कष्ट पाता है।

जिसका द्वितीयेश उच्च का दशम स्थान में हो और दशमेश शुभ ग्रह अपने उच्च का होकर लग्न में हो और लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में पाप या अशुभ ग्रहों की दृष्टि युति से रहित हो तो वह मनुष्य विशेष रूप से यशस्वी तथा धन सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है।

यदि भाग्य स्थान में चर राशि हो और भाग्येश चर राशि का होकर द्वादश स्थान में बैठा हो और अपने मित्र चर ग्रह से जो कि चर राशि में बैठा हो दृष्ट हो तो मनुष्य का भाग्योदय अपनी जन्म भूमि से बाहर होता है। यदि यही योग जल राशि पर जल चर ग्रह द्वारा प्रतिपादित किया गया हो तो सिन्धु

यात्रा से विदेश में भाग्योदय होता है और स्थिर राशि में स्थिर ग्रह द्वारा उपर्युक्त योग प्रतिपादित किया गया हो स्वदेश अर्थात् अपनी ही जन्मभूमि में उस मनुष्य का भाग्योदय होता है जिसके ये योग जन्मपत्र में दृष्टिगोचर होते हैं।

यदि लग्न में शुभ ग्रह हों, लग्नेश शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य स्वस्थ्य, सुन्दर, निरोग रहता है प्रतिकुल इसके लग्न में पाप ग्रह हों, लग्नेश पाप ग्रह हो और वह पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो, वह मनुष्य रोगी रहता है।

यदि दूसरे घर का स्वामी (६-८-१२) भाव में हो और एकादशेश भी (६-८-१२) भाव में से किसी एक में हो तो, चाहे षष्ठेश-अष्टमेश और द्वादशेश क्रमशः धन और लाभ स्थान में ही क्यों न बैठे हो धन को क्षीण करते हैं।

जिस मनुष्य का लग्नेश, धन स्थान में हो, धनेश लाभ स्थान में हो और लाभेश लग्न में बिना पाप दृष्टि युति के सौम्य ग्रह बैठा हो तो, वह बड़ा धन पाता है।

जिसका तृतीयेश, बुध और बृहस्पति ये तीनों ग्रह यदि अष्टम भाव में हो वह मनुष्य निराक्षर होता है। अर्थात् परिश्रम करने पर भी उसे विद्या नहीं आती, विपरीत इसके यदि उपयुक्त तीनों ग्रह केन्द्र-त्रिकोण में उच्चस्वगृही, मित्र क्षेत्री हो तो, उसे सब प्रकार की विद्यायें आ सकती है और यदि ये ग्रह पाप, क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो, परिश्रम करने पर विद्याध्ययन में सफलता प्राप्त होती है। और उसी के द्वारा मनुष्य को भाग्योदय होता है और धन की प्राप्ति होती है।

जिस मनुष्य का तृतीयेश शुभ ग्रह हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट-युक्त होकर शुभ स्थान केन्द्र त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में बैठा हो, अतिरिक्त इसके दूसरे स्थान में यदि कोई शुभ ग्रह बैठा हो तो, वह मनुष्य आजीवन सुखी रहता है। विपरीत इसके यदि वह नीच अस्त, शत्रु गृही होकर, त्रिक स्थान (६-८-१२) में बैठा हो तो, वह मनुष्य भिक्षुक या दूसरों के आश्रय जीवित रहने वाला होता है।

यदि द्वितीयेश दूसरे भवन में शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो, और ये शुभ ग्रह बलवान् भी हो, तो ऐसे योग वाला मनुष्य धन-धान्य युक्त होने के साथ-साथ दानी भी होता है।

जिसका भाग्येश बलवान् होकर, शुक्र के साथ चतुर्थ स्थान में बैठा हो तो, वह मनुष्य मरणपर्यन्त ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है, विपरीत इसके यदि ६-८-१२ स्थानों में से किसी एक में बैठा हो तो ऐसे योग वाला, मनुष्य अल्प सुख को प्राप्त होता है।

यदि बलवान् चतुर्थेश बलवान् चर राशि में किसी मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो, मनुष्य को सवारी का पूर्ण सुख रहता है। या चतुर्थेश, चन्द्रमा के साथ लग्न में हो तो या लग्नेश, चतुर्थेश, शुक्र और चन्द्रमा ये चारो ग्रह चतुर्थ स्थान में हो तो या चतुर्थेश जिस केन्द्र में हो, उसका अधिपति लग्न में हो तो सकरी सुख होता है।

यदि बुध उच्च का या स्वगृही होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो, इसी प्रकार यदि चतुर्थेश, लग्नेश, भाग्येश और राज्येश ये चारों केन्द्र या त्रिकोण में गुरु से दृष्ट हों तो वह मनुष्य विद्या, वाहन, धेन सम्पत्ति तथा भूमि आदि से परिपूर्ण रहता है।

जिस मनुष्य का द्वितीयेश, चतुर्थेश, पंचमेश, नवमेश, दशमेश और एकादशेश बली होकर किसी न किसी रूप में लग्न या लग्नेश में पूर्णतया सम्बन्धित हों तो वह मनुष्य इष्टमित्र, बन्धु बान्धव से सत्कार पाने वाला, माता-पिता के सुख से सुखी, स्त्री-पुत्र युक्त धन धान्य पूर्ण भाग्यवान, राज्यकर्मचारी या राज्य से पारितोषिक पाने वाला, कीर्तिवान्, लेखक समाज में आदर-सत्कार पाने वाला, व्यापार में कुशल तथा लाभान्वित और भ्रातृ सुख से सुखी होता है। ये उपर्युक्त भावेश तथा कारकेश जितने अधिक बली होंगें, मनुष्य उतना ही अधिक सुखी, विद्वान ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, निरोग तथा स्वस्थ्य होता है किन्तु विपरीत इसके यदि ये ग्रह नीच, अस्त, नीचास्त, शत्रुक्षेत्री, दुर्बल तथा निम्नांश पर होंगे, वह मनुष्य उतना ही अधिक कष्टमय जीवन व्यतीत करेगा। इसमें लग्न तथा लग्नेश का विचार विशेष रूप से करना चाहिए।

जिस किसी के जन्मपत्र में चतुर्थेश और दशमेश दोनों बली होकर लाभ में बैठे हों या लाभ स्थान को देखते हो या चतुर्थेश राज्येश केन्द्र त्रिकोण में लाभेश से दृष्ट या युक्त हो और किसी पाप-शत्रु ग्रह से किसी प्रकार भी सम्बन्धित न हो तो वह मनुष्य अपने में प्रत्येक प्रकार का सुख पाता है।

जिस मनुष्य का चतुर्थेश और भाग्येश या राज्येश बलवान् होकर शुभ स्थान में शुभबलवान् वृहस्पति से युक्त हों तो वह मनुष्य धन धान्य पूर्ण उच्चाधिकारी होता है।

जिसका चतुर्थेश नवम स्थान में बली होकर शुभ मित्र शुभ राशि मीन का गुरु और शुक्र के साथ बैठा हो, और राज्येश पंचम स्थान में अशुभ ग्रह की दृष्टि युति से रहित बैठा हो तो वह मनुष्य धन धान्य पूर्ण भूमिघर तथा सवारी सुख से युक्त होता है।

यदि लग्न में स्वगृही शुभ ग्रह हो और उच्च शुभ ग्रह भाग्य स्थान में हो, दूसरे भाव का अधिपति केन्द्र त्रिकोण में लाभेश से दृष्ट या युक्त हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य एक बड़ा राज्याधिकारी होता है।

१—यदि धन स्थान में उच्च का कोई शुभ ग्रह हो, लग्न और दशम स्थान में भी शुभ ग्रह, धनेश से युक्त तथा दृष्ट हों, और भाग्य स्थान भी किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो या २—लग्नेश, चतुर्थेश और नवमेश ये तीनों अशुभ-दृष्टि रहित होकर दशम स्थान में सुशोभित हो, और दशमेश लग्न में हो या लग्न को देखता हो तो, या ३—लग्नेश-चतुर्थेश तथा दशमेश ये तीनों ग्रह दशम स्थान में हों, और लग्न दशमेश से दृष्ट हो तो या, ४—चतुर्थेश दशम स्थान में हो और दशमेश चतुर्थ स्थान में हों या दोनों चतुर्थ में हों या दशम में हो, बली हो, नीचास्त से रहित हों, और बलवान् भाग्येश से पूर्णतया दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य एक बहुत ही बड़ा राज्याधिकारो होता है।

१—यदि लग्नेश और भाग्येश, चतुर्थ स्थान में हों और चतुर्थेश लग्न में मित्र क्षेत्री या उच्च का हो तो या २—चतुर्थेश उच्च मित्र क्षेत्री या शुभ राशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण में किसी मित्र शुभ ग्रह से युक्त हो तो वह मनुष्य धन-धान्य पूर्ण भूमिघर होता है।

१—जिसका चतुर्थेश, धनेश से युक्त होकर, भाग्य स्थान में मित्र राशि के हों शत्रु राशि के न हों और किसी शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट भी हो तो या २—धनेश लाभेश चतुर्थ स्थान में हो और चतुर्थेश शुभ ग्रह किसी शुभ ग्रह से युक्त होकर भाग्य स्थान में हो तो या ३—भाग्येश और लाभेश दोनों शुभ ग्रह राज्य स्थान में किसी मित्र ग्रह से दृष्ट हों तो उस मनुष्य को गढा हुआ धन प्राप्त होता है या लाट्री आती है या सट्टे और रेस से धन प्राप्त होता है ।

१—जिसका चतुर्थेश मंगल, स्वग्रही लाभ स्थान में हों, और पराक्रमेश गुरु से पूर्ण दृष्ट हो और गुरु भाग्येश से पूर्ण दृष्ट हो तो या २—तृतीयेश शुभ ग्रह भाग्य स्थान में हो, चतुर्थेश लग्न में हो, और लग्नेश राज्य स्थान में हो, और बलवान् राज्येश चतुर्थ भाव को देखता हो तो उस मनुष्य को राज्य प्रासाद की प्राप्ति होती है ।

जिसके दशम स्थान में तीनों शुभ ग्रह (बुध, वृहस्पति और शुक्र) बैठे हो, और दशमेश बलवान् होकर राज्य स्थान या दशम स्थान को देखता हो तो वह मनुष्य बड़ा राज्य कर्मचारी तथा राजकृपापात्र होता है ।

१—जिस मनुष्य के पंचम स्थान में शुभ-बलवान् पुरुष ग्रह हो, और वह किसी शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो या २—पंचमेश पुरुष ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में किसी शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो या ३—वृहस्पति किसी शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर पंचम स्थान से सम्बन्धित हो तो या ४—लग्नेश पंचम स्थान में बलवान् पुरुष ग्रह हो या पंचमेश बलवान् होकर केन्द्र में हो या पूर्ण बली वृहस्पति पंचम स्थान को देखता हो तो या ५—पूर्ण बली गुरु पंचम स्थान में हो, और वह लग्नेश से पूर्ण दृष्ट हो तो उस मनुष्य को निसन्देह पुत्र की प्राप्ति होती है । और वह पुत्र जीवित रहता है ।

जिसका पंचमेश शुभांश में स्थित होकर वृहस्पति के साथ भाग्य स्थान में बैठा हो और मंगल किसी शुभ ग्रह से युक्त होकर केन्द्र स्थान में वृहस्पति से दृष्ट बैठा हो तो उस मनुष्य के हाथ से सदावर्त चलता है या अन्नदान होता रहता है ।

जिस जन्मपत्र में लग्नेश बलवान् होकर शुभ स्थान केन्द्र त्रिकोण (१,४,७, १०,५,९) में पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि युति से रहित बैठा हो, और षष्ठेश बलहीन

(नीच, अस्त, नीचास्त, शत्रु क्षेत्री और नीचोन्मुख, नीचांश) होकर ८ वें या १२ वें स्थान में बैठा हो तो ऐसे योग वाला, मनुष्य सदा मुकदमें या संग्राम में विजय पाता है। उसके शत्रु सदा उससे दबे रहते हैं।

यदि सप्तमेश शुक्र के साथ अशुभ ग्रहों की दृष्टि रहित होकर सप्तम स्थान में मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट बैठा हो तो वह मनुष्य बहुत बड़ा धनवान् तथा भूमिधर होता है। और यदि चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये चारों ग्रह सप्तम स्थान में हों, और शुक्र इन सबमें बलवान् हो तो ऐसे योग वाले, मनुष्य अनेक स्त्रियों से अनुचित प्रेम सम्बन्ध होता है।

जिसका सप्तमेश उच्च, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री में से कोई भी क्षेत्रों को अपना कर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०; ५, ९) में बैठा हो, और वह दशमेश से पूर्ण दृष्ट हो तो वह मनुष्य अनेक स्त्रियों को प्रेम करने वाला, स्त्रियों द्वारा ही नौकरी पाने वाला होता है। या सप्तमेश उपर्युक्त प्रकार से केन्द्र में मित्र शुभ ग्रह से; शुभ राशि या शुभ नवांश में बैठकर पूर्ण रूप से दृष्ट हो तो उस मनुष्य की स्त्री पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली होती है।

यदि अष्टमेश स्वगृही अष्टम स्थान में किसी मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट-युक्त हो तो या अष्टमेश उच्च का किसी मित्र शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो या अष्टमेश और लग्नेश दोनों बलवान् होकर केन्द्र या त्रिकोण में अशुभ पाप ग्रहों की दृष्टि युति से रहित होकर बैठे हो तो मनुष्य स्वस्थ्य सुन्दर-सुखी और चिरायु होता है।

यदि नवमेश, नवम स्थान में हो या उच्च का स्वक्षेत्री, मित्रगृही होकर केन्द्र त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में हो, और किसी शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त हो अथवा लग्नेश से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा ही धार्मिक, यात्रा प्रिय, भाग्यवान् तथा सदा प्रसन्न रहने वाला परम सुखी होता है।

यदि भाग्येश भाग्य स्थान (नवम) में हों या भाग्येश द्वारा भाग्य स्थान (नवम) दृष्ट हो यह भाग्येश शुभ ग्रह होना चाहिये और पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि युति से रहित हो तो ऐसे योग वाला, मनुष्य भाग्यवान् होता है।

यदि कर्क (उच्च) का बृहस्पति भाग्य स्थान में पूर्णांशबली बैठा हो और सूर्य चन्द्रमा सहित पराक्रम (तीसरे) स्थान में बैठकर पूर्ण दृष्टि से देखते हो तो

मनुष्य बड़ा धनी तथा विद्वान होता है। और यदि उपर्युक्त बृहस्पति सूर्य-मंगल से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य हीरे रत्नों को एकत्रित करके रखने वाला, जौहरी अनेक सेवकों से युक्त, वाहन आदि के सुख से सुखी कोई बड़ा भूमिधर या पुलिस सेना विभाग में उच्चाधिकारी होता है। सूर्य और बुध द्वारा पूर्ण दृष्ट होने पर मनुष्य वेद-शास्त्र का ज्ञाता, कुशल तार्किक, विद्वान्, प्रवल वक्ता तथा धन धान्य सम्पन्न होता है। और यदि यही वृहस्पति सूर्य और शुक्र द्वारा पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य सुशील, शान्त तथा नम्रता पूर्वक अपने कार्यों को पूर्ण करने वाला मधुर वाणी प्रवल वासना वाला होता हैं। और यदि यह गुरु सूर्य शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा बुद्धिमान् ग्रामाधीश तथा निम्नवर्ग में सुप्रसिद्ध होता है।

जिस मनुष्य के जन्मपत्र में तोनों शुभ ग्रह (बुध, वृहस्पति और शुक्र) चन्द्रमा के सहित नीचास्त से रहित होकर, नवम स्थान में बली बैठे हो तो वह मनुष्य धनवान, बुद्धिमान, कीर्तिमान, धार्मिक, यात्राप्रिय, परोपकारो तथा दानी होता है।

यदि भाग्येश शुभग्रह भाग्य स्थान में अपने मित्र शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट और युक्त हों, पाप क्रूर तथा शत्रु ग्रहों की दृष्टि युति से रहित हो तो वह मनुष्य धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त होने के साथ-साथ यशस्वी भी होता है। और ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि भाग्येश उच्च का होकर केन्द्र त्रिकोण, सूर्यास्त न हो और साथ ही लग्नेश और दशमेश मित्र ग्रहों की दृष्टि उस पर पूर्णरूप से हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य अपने पराक्रमशील शुभ कर्मों के लिये राज्यपारितोषिक पाने वाला होता है। धार्मिक, यात्रा प्रिय, शुभ कर्म करने वाला, भेदभाव से रहित, सर्व-जन मान्य होता है।

जिसका वृहस्पति अपने ही नवांश का होकर भाग्य स्थान में विराजमान हो और बलवान शुभग्रह नवमेश से दृष्ट हो तो मनुष्य धनवान, दानी, गुरू, आचार्य, विद्वान पंडितों की आज्ञा पालन करने वाला होता है। और यदि दशमेश शुभग्रह से दृष्ट हो तो वह मनुष्य देशभक्त, राजाज्ञा पालन करने वाला उच्चाधिकारी माता-पिता का अनुचर होता है और यदि एकादशेश मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो

वह मनुष्य व्यापारीवर्ग का हितु तथा प्रधान होता है और बड़े भाई की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहता है।

जिस मनुष्य का वृहस्पति और शुक्र, बुध के नवांश में बैठकर नवमेश को देखते हो और नवमेश शुभग्रहों के मध्य में स्थित हो अर्थात् नीचास्त, शत्रुराशि पर न हो और पाप क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होने पर वह मनुष्य धर्म-कर्मरत रहता है।

यदि बलवान नवमेश अशुभ ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर केन्द्र-त्रिकोण में बैठा हो और लग्न अपने ही अधिपति (लग्नेश) से दृष्ट हो या राज्येश, वृहस्पति के नवांश में स्वयं वृहस्पति से दृष्ट हो तो वह मनुष्य प्रारम्भ में राज्य-पारितोषिक से विभूषित होकर जनसाधारण में यशस्वी होकर धर्म-कर्म, परोपकार से धन-व्यय करता हुआ अन्त में रागद्वेषादि का त्याग करके ईश्वर प्राप्ति के साधनों में संलग्न रहता है, तपस्या करता है।

यदि नवम स्थान किसी मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो, नवमेश दशम स्थान में हो दशमेश लग्न में हो और लग्नेश का दृष्टि-युति सम्बन्ध नवमेश या दशमेश से किसी प्रकार भी हो और किसी प्रकार भी अशुभ ग्रहों से सम्बन्धित न होने पर मनुष्य सब प्रकार से सुअवसरवादी होता है धन-धान्य, सम्पत्ति-भूमि आदि से युक्त होकर शुभ कर्मों के लिये यशस्वी होता है। और जनसाधारण में सम्मान तथा सुयश पाता है।

यदि भाग्येश शुभ ग्रह पूर्णबली हो या पूर्ण चन्द्रमा नीचास्त-रहित होकर भाग्य स्थान के पूर्णबली बैठा हो, भाग्येश केन्द्र त्रिकोण में गुरु और शुक्र से पूर्ण-दृष्ट हो तो वह ममुष्य स्वाध्यायप्रिय, धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला दानी, कर्मकांडी, जपतप द्वारा समाविष्ट होकर जीवन व्यतीत करने वाला, होता है। या भाग्येश भाग्य स्थान में वृहस्पति के साथ बैठा हो और लग्नेश, गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो भी मनुष्य बड़ा दानी तथा ईश्वरोपासना करने वाला होता है।

यदि लग्नेश और दशमेश वृहस्पति या बुध हो या लग्नेश और दशमेश दोनों ही शुभ ग्रह हों और वे केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में शत्रु दृष्टि से रहित होकर नीचास्त से अलग होकर एक ही स्थान में बैठे हों तो,

मनुष्य बड़ा राज्यकर्मचारी होता है और उत्तम प्रकार से उपार्जित धन को परोपकार में लगाकर यशस्वी होता है।

जिसके जन्मपत्र में पूर्ण चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक्र ये चारो शुभ ग्रह दशम स्थान में नीच, पाप, क्रूर दृष्टि से रहित होकर लग्नेश से दृष्ट हों तो वह मनुष्य बड़ा ही गुणवान, धनवान, कर्मकांडी, धार्मिक, स्वाध्यायप्रिय, परोपकार में धन लगाने वाला, राज्यकृपापात्र होता है और राज्यकोष से धन पाने वाला होता है।

यदि बलवान पूर्ण चन्द्रमा वृष राशि में स्थित होकर दशम स्थान में पाप, क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित बैठा हो और लग्नेश या धनेश, लाभेश तथा पंचमेश में से किसी एक भी शुभ ग्रह को दृष्टि-युति से सुशोभित हो तो, वह अनुष्य निस्सन्देह एक बड़ा राज्य कर्मचारी होता है और इष्टमित्र, बन्धु-बान्धव, समाजादि में यश पाता है।

जिस जन्म-पत्र में स्वगृही मीन का वृहस्पति दशम स्थान में हो और लग्नेश बुध कन्या का उच्च स्थान (चतुर्थभाव) से उसे देखता हो, या स्वगृही, उच्च कन्या का बुध दशम स्थान में पूर्ण बली बैठा हो और लग्नेश वृहस्पति, चतुर्थ स्थान मीन का स्वगृही होकर उसे सप्तम दृष्टि से देखता हो और ये दोनों ही शुभ ग्रह नीचास्त, पाप, क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित हो तो, वह मनुष्य बड़ा ही विद्वान्, यशस्वी, धर्म-कर्मरत एक बड़ा सरकारी कर्मचारी, या एक बड़ा भूमिधर, पंचायत प्रधान, निगम प्रधान, मन्त्री, उपमन्त्री या इसी प्रकार का कोई बड़ा आदमी होता है।

यदि दशमेश अपने उच्च का होकर केन्द्र में बुध से युक्त हो और दशमेश उच्चाधिपति, नीचास्त, पाप, क्रूर, शत्रु राशि से रहित होकर, भाग्य स्थान में हो और भाग्येश दशम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो, वह मनुष्य बहुत बड़ा राज्यकर्मचारी, धार्मिक, उपकारी, दूसरों की भलाई के लिये तन-मन-धन प्रदान करने वाला होता है।

यदि नवम तथा दशम स्थान में शुभ ग्रह पूर्ण बली बैठे हो, नवमेश तथा दशमेश पाप, क्रूर, दृष्टि-युति से रहित, बलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में

बैठे हों, लग्नेश और वृहस्पति भी बलवान होकर नवमेश और दशमेश को देखते हों या उनसे युक्त हों तो ऐसे योग वाला मनुष्य बहुत ही भाग्यवान, धनवान, विद्वान, धनधान्य युक्त, सम्पत्तिशाली, उच्च औफीसर, यशस्वी तथा विदेश गामी होता है। इसी प्रकार जिसके सभी केन्द्रेश और त्रिकोणेश एक दूसरे के अन्योन्याश्रय हों अर्थात् समस्त केन्द्रेश त्रिकोण में और त्रिकोण केन्द्र में बलवान बैठे हो और अपने २ स्थान को या स्थानेश को देखते हों तो, ऐसे योग वाला मनुष्य सभी प्रकार से बड़ा आदमी होता है उसे जीवन में किसी की कमी नहीं होती और वह मरण पर्यन्त ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है और लोग उसकी मृत्यु के उपरान्त भी उसका गुण गायन करते हैं।

यदि दशम स्थान में मीन का वृहस्पति स्वगृही, उच्च के शुक्र के साथ बैठा हो, उच्च का बुध पूर्ण दृष्टि से उन्हें देखता हो और पूर्ण चन्द्रमा दशम स्थान में धनेश बैठा हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य अद्वितीय विद्वान, या धनवान या तपस्वी होता है।

जिसका पूर्णवली चन्द्रमा वृष या कर्क का, भाग्य या राज्य स्थान में किसी भी शुभाशुभ ग्रह की दृष्टि-युति से रहित बैठा हो किन्तु केमद्रुम योग से रहित होने पर मनुष्य आज्ञा देने वाला राज्य कर्मचारी होता है केमद्रुम योग होने पर मनुष्य पचास वर्षोपरि निर्धन हो जाता है उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।

यदि चारों केन्द्र शुभ ग्रहों से युक्त हो तो मनुष्य धन-धान्य-सम्पत्ति शाली होता है और अशुभ-पाप क्रूर ग्रहों से युक्त होने पर मनुष्य दुखी रहता है।

जिसके जन्मपत्र में शनि और शुक्र, चन्द्रमा से दशम स्थान में बैठे हों और बुध से दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य इत्र, पूर्ण तरल पदार्थ का विक्रेता होता है और चित्रकारी में सिद्धहस्त होता है।

यदि दशमेश शूभ ग्रह हो और वह किसी शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त होकर केन्द्र में किसी शुभ ग्रह के नवांश में नीचास्त शत्रु राशि से रहित होकर पूर्ण वली बैठा हो तो वह मनुष्य दूसरों को आज्ञा करने वाला किसी बड़ी पदवी का अधिकार होता है विपरीत इसके यदि दशम स्थान का शनि अष्टमेश तथा षष्ठेश

से दृष्ट या युक्त होकर किसी पापग्रह के नवांश में बैठा हो तो वह मनुष्य निर्दयता पूर्ण कार्यों को करने वाला होता है।

यदि कर्क का स्वगृही पूर्ण चन्द्रमा दशम स्थान में, गुरु और शुक्र से पूर्ण दृष्ट हो अस्त पाप ग्रहों की दृष्टि से रहित हो तो मनुष्य अपने सुव्यवहार तथा सुशील के कारण समाज तथा राज्य कार्य में यश प्राप्त करता है। इसी प्रकार यदि दशमेश शुभ ग्रह किसी शुभ ग्रह से युक्त हो और दो शुभ-मित्र ग्रहों के मध्य में हो और शुभ ग्रह के नवांश में होने से मनुष्य को कीर्ति, यश, पारितोषिक, प्रसिद्धि तथा मान प्राप्त होता है।

जिसका लग्नेश एकादश भाव में और एकादशेश लग्न में शुभ मित्र ग्रह हो तो या एकादशेश धन भाव में और धनेश लाभ स्थान में मित्र लग्नेश से दृष्ट और युक्त हों तो मनुष्य धनवान् धार्मिक तथा परोपकार में धन व्यय करने वाला होता है।

यदि एकादश स्थान (लाभ) में सूर्य या चन्द्रमा पूर्ण बली होकर स्वगृही या अपने उच्च भाव में अपने ही नवांश में बैठे हों तो वह मनुष्य सरकारी नौकरी द्वारा अपना जीवन-यापन करता है, मंगल के लाभ में होने से मनुष्य खेती, कृषि, विज्ञान, सैनिक, पुलिस, वाद्यादि के बनाने से लाभ पाता है। उसके भाइयों का उसे पूर्ण सहयोग रहता है। बुध के एकादश स्थान मे उच्च या स्वगृही होने पर यदि वह बृहस्पति से दृष्ट हो या बृहस्पति के उच्च या स्वगृही होने पर वह यदि बुध से दृष्ट हो तो मनुष्य विद्या पढ़ाकर, व्याख्यान देकर, पूजा-पाठ कर्मकांड, कविता, ड्रामा, उपन्यास, कहानियाँ, लेखकादि कर्म से धन तथा यश पाता है। शुक्र के होने पर, कविता, लेख, गायन-वादन, नृत्य, कीमती पत्थरों के क्रय-विक्रय, फर्नीचर, अभिनेता-नेत्री के पाठ करने से लाभ होता है। और शनि के होने पर लोहे के कारखाने से, कम्पोजीटरी, ड्राइवरी, नीचों में वैद्यकादि करने से, जुए-सट्टा, रेसादि तथा ठकादि की कुप्रवृत्ति से धन लाभ होता है।

यदि एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में स्वगृही उच्च या मित्रक्षेत्री बैठा हो और स्थानस्थ-राशीश एकादश स्थान में स्वांश में पाप दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो मनुष्य को प्रकथित ग्रहानुसार कार्य द्वारा या व्यापार द्वारा धनवान् बनाता है। इसके अतिरिक्त कारक तथा कारकेश का प्रभाव भी देखना चाहिये।

यदि लाभेश, लाभ स्थान में पाप ग्रह से भी युक्त हों तो मनुष्य को लाभान्वित करता है। यदि वह ग्रह अस्त तथा नीच शत्रुक्षेत्री न हो और यदि लाभेश्वर केन्द्र-त्रिकोण में शुभमित्र ग्रह के नवांश में शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो, नीचास्त शत्रु दृष्टि-युति से रहित हो तो मनुष्य को धनवान् बनाता है।

जिसका लाभेश्वर पंचम स्थान में हो और पंचमेश लाभ स्थान में हो, या एक दूसरे का मित्र होकर अपने उच्च स्थान में बैठे हों और साथ ही मित्र लग्नेश से पूर्णदृष्ट या युक्त हों अथवा लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो उस मनुष्य को अपने पुत्रों तथा अपने शिष्यों से धन का पूर्ण सुख होता है। इसी प्रकार द्वितीयेश से सम्बन्धित होने पर मनुष्य बन्धु-बान्धवों, इष्ट-मित्रों एवं अपने कुटुम्बों से लाभ पाता है। तृतीयेश या पराक्रम स्थान से सम्बन्धित होने पर भाइयों से, सप्तमेश या सप्तम स्थान से सम्बन्धित होने पर स्त्री से नवम स्थान तथा नवमेश से सम्बन्धित होने पर विदेश यात्रा, धार्मिक प्रवृत्ति तथा अचानक सट्टा, लाट्री, वौराडादि, रेसादि, गड़ा हुआ या पड़ा हुआ धन मिलने से भाग्योदय होता है। राज्य या राज्येश से सम्बन्धित होने पर सरकार द्वारा या पिता, मामा, नाना, बड़ा भाई या किसी बड़े राज्य कर्मचारी की कृपा से धन-मान, यश-कीर्ति का लाभ होता है।

यदि व्ययेश स्वराशि गत या उच्च का होकर शुभ वर्ग या मित्र राशि में केन्द्र या त्रिकोण में शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य को मखमली गद्दों में शयन प्राप्त होता है।

जिसका द्वादशेश परमोच्चांश का या उच्च का शुभ स्थान में बैठा हो, और भाग्येश शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उसको अमूल्य वस्तुएँ पारितोषिक में मिलती हैं।

यदि बृहस्पति धनराशि में स्वगृही लग्न में बैठा हो और सप्तम स्थान में शुक्र उदयी बैठा हो और साथ ही कन्या का चन्द्रमा दशम में पाप दृष्टि रहित पूर्णबली बैठा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य यशस्वी होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

जिसके जन्म-पत्र में मेष या उच्च का सूर्य भाग्य स्थान में, वृष या उच्च का चन्द्रमा राज्य स्थान में और मिथुन का राहु उच्च का लाभ स्थान में और कर्क या उच्च का गुरु व्यय स्थान में हो तो या इसी क्रम से मेष का सूर्य लग्न में

वृष का चन्द्रमा धन में, मिथुन का राहु पराक्रम में और कर्क का बृहस्पति मातृ स्थान में हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य राज्य का बड़ा कर्मचारी, मन्त्री, उप-मन्त्री, सेक्रेटरी आदि होता है, धन-धान्य से पूर्ण रहता है।

जिसके दशम स्थान में मिथुन का राहु हो तथा दशमेश बुध, कन्या का लग्न में हो और धनेश शुक्र स्वगृही भाग्य स्थान में पाप-क्रूर दृष्टि-युति रहित हो तो वह मनुष्य २१ वर्षोपरि भाग्योदय को प्राप्त होता है। राज्य से मान, कीर्ति, पारितोषिक पाता है और सुखी जीवन व्यतीत करता है।

दशमेश यदि केन्द्र त्रिकोण में हो या जिस-किसी राशि में हो, उसका स्वामी लग्नेश से युक्त या दृष्ट केन्द्र त्रिकोण में पाप-रहित हो तो मनुष्य १८ वर्ष से आगे सर्वमान्य विद्वान्, धन-धान्य युक्त, बड़ा राज्यकर्मचारी तथा सबका आदरणीय होता है।

यदि लग्नेश बृहस्पति भाग्य स्थान में पूर्ण, चन्द्र या लाभेश से युक्त पाप-क्रूर दृष्टि युति से रहित हो तो मनुष्य २१ वर्षोपरि विद्या, धन, धर्मादि के लिये जन-साधारण में पूजनीय होता है।

यदि लाभेश, धन स्थान में, उच्च का उच्चांश पर, राज्येश से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य परोपकारी, धार्मिक साधु, अपने से बड़ों का आदर करने वाला, ३५ वर्षोपरि भाग्योदय को प्राप्त होता है।

जिसके लग्नेश, भाग्येश, चन्द्रमा और शुक्र ये चारों, शुभ-मित्रग्रह नीचास्त, पाप, क्रूर, दृष्टि-युति से रहित होकर, बलवान्, भाग्य स्थान में बैठे हों तो मनुष्य २५ वर्षोपरि बड़ा राज्यकर्मचारी, धनवान् तथा धार्मिक, देशाटन प्रिय, परोप-कारी तथा दानी होता है।

लग्नेश जिस स्थान में हो उस राशि का स्वामी जिस स्थान में हो तो उस राशि का स्वामी यदि उच्च का होकर धन स्थान में शुभ ग्रह, अपने मित्र से दृष्ट हो और चन्द्रमा केन्द्र में अपने उच्च या स्वगृह में पूर्ण बलवान्, पाप-क्रूर दृष्टि से रहित बैठा हो तो मनुष्य २८ वर्ष की अवस्था में भाग्योदय को प्राप्त होता है। धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्यादि से युक्त बहुत बड़ा मनुष्य हो जाता है।

यदि लग्नेश और भाग्येश, राज्येश से युक्त होकर केन्द्र में बलवान् बैठे हों और बली गुरु से पूर्ण दृष्ट हों तो ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य अपनी वृद्धावस्था में सर्व सुखी होता है।

यदि लाभाधिपति उच्च के उच्चांश में स्थित होकर शुक्र से युक्त हो और इसी स्थान का स्वामी केन्द्र में बलवान हो और अशुभ दृष्टि रहित हो तो मनुष्य ४२ वर्षोपरि धन-सम्पत्ति से युक्त होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि लग्नेश शुभ ग्रह हो और वह किसी मित्र शुभ ग्रह से युक्त होकर केन्द्र-त्रिकोण या लग्न में ही लाभेश में पूर्ण दृष्ट हो, अशुभ ग्रह की दृष्टि-युति से रहित हो तो मनुष्य ५० वर्षोपरि, धन-धान्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है और यश-कीर्ति लाभ करता है।

जिसका धनेश, भाग्येश, राज्येश, लाभेश में से कोई भी ग्रह चन्द्रमा से (४, ७, १०) केन्द्र में अशुभ दृष्टि रहित बलवान बैठा हो और पंचमेश गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य सोलह वर्ष के उपरान्त ही विद्या, धन, राज्यपद से युक्त हो सुसन्तति वाला होकर ऐश्वर्य से रहता है।

यदि राज्येश, अपने ही नवांशपति से युक्त होकर बृहस्पति के साथ धन स्थान में बैठा हो और भाग्येश गुरु या किसी अन्य मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वह मनुष्य बड़ा ही धनाढ्य-राज्य तुल्य ऐश्वर्य भोगने वाला राज्यपदाधिकारी होता है।

राहु स्थित राशीश यदि त्रिकोण में बलवान बैठा हो और बलवान मंगल स्वगृही या उच्च का होकर चतुर्थ स्थान में हो, राज्येश सप्तम स्थान में पाप दृष्टि युति रहित बलवान बैठा हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य बड़ा भारी भूमिधर, जमीदार, पक्के मकानों, पशुओं से युक्त होता है।

यदि धनेश और सुखेश (२-४ भाव के स्वामी) भाग्य या नवम स्थान में मित्रग्रह बलवान, अशुभ दृष्टि रहित बैठे हों और बली राज्येश दूसरे स्थान में अशुभ दृष्टि-युतिरहित बैठा हो और साथ ही लग्नेश लाभ (एकादश) स्थान में उच्च का पाप रहित हो तो ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य, बड़ा ही पराक्रमी, धन-धान्य युक्त, सम्पत्तिशाली तथा यशस्वी होता है।

यदि तृतीयेश उच्च का होकर जिस शुभ स्थान में हो उसका स्थानाधिपति दशम स्थान में बैठा हो और लग्नाधिपति भाग्य स्थान में बलवान पराक्रमेश से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य सेना, पुलिस विभाग का उच्चाधिकारी होता है।

जिसका पञ्चमेश और एकादशेश भाग्य स्थान में पाप-क्रूर, दृष्टि-युति से रहित होकर बलवान् बैठे हों और राज्येश (दशमेश) पञ्चम स्थान में नीचास्त शत्रु दृष्टि-यति से रहित बैठा हो और वह लग्न या लग्नेश से सम्बन्धित हो, अर्थात् दृष्टि-युति सम्बन्ध रखता हो तो, मनुष्य बड़ा ही वैभवशाली, पराक्रमी, गुणी, विद्वान् तथा सुसन्तति से युक्त होता है।

यदि राज्येश, धन स्थान में, भाग्येश के नवांश में भाग्येश से युक्त बैठा हो और लग्नेश शुभ ग्रह से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा विद्वान्, धर्म-कर्म करने वाला, तीर्थ यात्रा प्रिय, धन-सम्पत्ति से युक्त, भाग्यवान्, इष्ट-मित्रों से आदर पाने वाला, समाज में आदरणीय होता है।

जिसका ३, ६, १२ स्थान में से किसी एक में वृहस्पति हो (२, ५, ८) स्थान में से किसी एक में शुक्र हो या शुक्र, गुरु के क्षेत्र में और साथ ही भाग्येश भाग्य स्थान में लग्नेश से दृष्ट या युक्त हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य चिरंजोवि, पराक्रमी, लोकमान्य, राज्यपदाधिकारी, इष्ट-मित्रों से युक्त, समाज में सर्वत्र सत्कार पाने वाला यशस्वी होता है।

यदि राज्येश अपने ही नवांश में बैठा हो और नवांशक राशि का अधिपति उच्च का होकर दशम स्थान में बलवान् लग्नेश से युक्त होकर बैठा हो तो मनुष्य ५० वर्ष की आयु में धन, धान्य, कीर्ति, सम्पत्ति आदि से युक्त बहुत बड़ा आदमी होता है।

नवांश कुण्डली में भाग्येश जिस राशि में बैठा हो उस राशि का स्वामी यदि उच्च का होकर भाग्य या नवम स्थान में बैठा हो और पञ्चमेश से युक्त हो और बलवान् लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य बहुत बड़ा धनाढ्य होकर दीर्घायु तक ऐश्वर्य भोग करता है।

नवांश कुण्डली में लाभेश (एकादशेश) जिस राशि पर हो उस राशि का अधिपति यदि एकादश (लाभ) में भाग्येश से युक्त और लग्नेश से दृष्ट पाप क्रूर दृष्टि युति से रहित बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ बालक अत्यन्त दर्शनीय, अनेक स्त्रियों को प्रिय, धनवान्, भाग्यवान् तथा अनेक प्रकार से सुखी होता है।

जिसका पराक्रमेश और लाभेश सप्तम स्थान में बलवान् उच्च का बैठा हो, सप्तमेश उच्च का द्वादश स्थान में पाप क्रूर दृष्टि-युति से रहित हो और व्यय

स्थान का स्वामी, बृहस्पति, भाग्य स्थान में स्वगृही विकार रहित वलवान् बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य पराक्रमी, धन-धान्य युक्त, स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, समुद्री यात्रा प्रिय, शत्रुजित्, पुलिस, सेना विभाग में उच्च पद पाने वाला, राजा के समान ऐश्वर्यवान् होता है।

यदि बलवान् लग्नेश स्थिर लग्न में स्वगृही बैठा हो, धनेश (द्वितीयेश) राज्य या दशम स्थान में वलवान् हो और राज्येश (दशमेश) दूसरे भाव में बलवान् बैठा तो और लाभेश (एकादशेश) लग्न में बलवान् पाप क्रूर दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य ४५ वर्ष के उपरान्त बड़ा ही धनवान्, गुणवान्, बहुत बड़ा भूमि घर, राज्य से पारितोषिक पाने वाला, बड़ा ही यशस्वी होता है।

यदि दशमेश शुभ ग्रह शुक्र से युक्त होकर लग्न में नीचास्त, पाप-क्रूर दृष्टि युति से रहित बैठा हो और लाभेश, लाभ स्थान (एकादश) में उच्च का (बुध) बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य तीस वर्ष की अवस्था तक धन-सम्पत्ति से युक्त होकर राजा के समान ऐश्वर्य भोगने लगता है।

यदि भाग्येश, बृहस्पति के साथ चर लग्न में बलवान् बैठा हो, पंचमेश पञ्चम स्थान में, और राज्येश (दशमेश) लाभ (एकादश) में पाप-क्रूर दृष्टि युति, नीचास्त से रहित होकर बलवान् बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य २५ वर्ष की अवस्था में ही राजपदवी को प्राप्त कर धन-धान्य से युक्त, हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, बड़ा ही भाग्यवान्, इष्ट-मित्रों से युक्त, समाज में आदरणीय होता है।

यदि बृहस्पति से तीसरे स्थान में शुक्र स्वगृही हो और शुक्र से नवम स्थान में पूर्ण चन्द्रमा हो और चन्द्रमा से दशम स्थान का स्वामी लग्न से तीसरे स्थान में हो, जो कि शुभ लग्नेश से दृष्ट या युक्त होने पर ३० वर्षोपरि मनुष्य को सब प्रकार का सुख प्रदान करता है।

यदि धनेश (द्वितीयेश) धन (दूसरे) स्थान में हो और भाग्येश (नवमेश) भाग्य (नवम) स्थान में बलवान् बैठा हो और लाभेश (एकादशेश) लाभ या एकादश स्थान में पूर्ण बली पाप क्रूर नीचास्त दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य एक बड़ा राज्य कर्मचारी, पुलिस या सेना-

विभाग में ४० वर्ष के समीप होता है। मन्त्री, उपमन्त्री, उपराष्ट्रपति आदि तक हो सकता है।

यदि मकर का मंगल दशम स्थान में उच्च का बलवान् बैठा हो और उच्च का सूर्य पराक्रम स्थान में मेष राशि में बैठा हो और बृहस्पति स्वगृही, चन्द्रमा के साथ भाग्य या नवम स्थान में पूर्ण बलवान् बैठा हो तो मनुष्य ३५ वर्षोपरि धन-धान्य से युक्त होता है।

भाग्येश जिस राशि पर हो उस स्थान का स्वामी उच्च का होकर लग्न में बैठा हो और लग्नेश से युक्त भी हो तो मनुष्य धार्मिक, गुरुजनों का आज्ञाकारी तथा पराक्रमशाली होता है।

यदि लाभेश (एकादशेश) पञ्चम स्थान में हो और पंचमेश लाभ या एकादश स्थान में हो और चतुर्थेश पूर्ण चन्द्रमा के साथ केन्द्र या त्रिकोण में बलवान् बैठा हो और लग्नेश की पूर्ण दृष्टि उस पर हो अथवा ये दोनों ही लग्न में हों तो मनुष्य २४ वर्ष के समीप कीर्ति, धन, लाभ करता है।

यदि दूसरे भाव में उच्च का चन्द्रमा स्वगृही शुक्र के साथ बृहस्पति से युक्त बैठा हो और भाग्येश से दृष्ट हो साथ ही लग्नेश से किसी प्रकार भी सम्बन्धित होने पर मनुष्य २५ वर्षोपरि धन-सम्पत्ति, कीर्ति, यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

भाग्येश जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी, जिस राशि पर उसका स्वामी यदि शुभ ग्रह अपनी उच्च राशि पर हो उसका भी अधिपति और लग्नेश यदि शुभ केन्द्र स्थान में पाप क्रूर नीचास्त दृष्टि युति से रहित बैठा हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला मनुष्य बड़ा ही राजनीतिज्ञ, विद्वान्, धार्मिक तथा कीर्तिमान होता है।

यदि सप्तम स्थान में कर्क का बुध हो, अष्टम स्थान में सिंह का बृहस्पति हो, वृष या उच्च का चन्द्रमा पञ्चम स्थान में हो, वृश्चिक राशि में शनि लाभ स्थान में बैठा हो, कर्क का सूर्य सप्तम से लग्न को पूर्ण रूपेण देखता हो तो ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है, लोक में अपने गुणों के लिए प्रसिद्ध होता है तथा जीवन भर सुखी रहता है।

यदि लग्नेश (एकादशेश) भाग्येश (नवमेश) और चन्द्रमा लाभ (एकादश) स्थान में एकत्रित हुए यदि लग्नेश से पूर्ण दृष्ट हों तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य ४० वर्षोपरि प्रसिद्ध राज्य कर्मचारी, मन्त्री, उपमन्त्री, सेक्रेटरी, डिप्टी सेक्रेटरी आदि में से किसी एक स्थान पर सुशोभित होता है।

जिसका पंचमेश नवम स्थान में हो और चन्द्रमा दूसरे स्थान में लाभेश से युक्त बैठा हो और लग्नेश से दृष्ट या युक्त होकर सम्बन्धित हों तो मनुष्य, स्त्री-पुत्र के सुख से सुखी, धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

एकादशेश शुक्र से युक्त होकर अपने उच्चांश उच्च पर, केन्द्रवर्ती लग्नेश से यदि युक्त या दृष्ट हो तो, मनुष्य २२ वर्ष की अवस्था में ही प्रसिद्ध, गुणवान्, धनिक, पराक्रमी, समाज में आदरणीय तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला बहुत बड़ा आदमी होता है।

यदि धन स्थान में कर्क का चन्द्रमा उच्च के बृहस्पति से युक्त होकर, शुभ ग्रह लग्नेश से दृष्ट हो और लाभेश लाभ स्थान में बैठ कर दूसरे स्थान को देखता हो तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य का ३२ वर्षोपरि भाग्योदय होता है और वह पूर्णरूप से धनवान् होकर प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश तथा सत्कार को प्राप्त होता है।

लग्नेश जिस राशि पर हो उस राशि का अधिपति दशम स्थान में हो और दशमेश की पूर्ण दृष्टि यदि लग्नेश या लग्नेश राशि पर हो तो मनुष्य ४५ वर्ष के समीप अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त होकर राजा के समान जीवन व्यतीत करता है।

मंगल जिस राशि पर बैठा हो उससे अगले घर में यदि बुध बैठा और बुध से पाँचवें अथवा नवें स्थान में शुक्र पूर्ण बली बैठा हो और साथ ही दशम स्थान में शनि उच्च का सूर्य की दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य अत्यन्त पराक्रमी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, सम्पत्ति शाली, राजतुल्य, आदरणीय होता है।

दशमेश जिस राशि पर हो उस राशि का अधिपति शुभ ग्रह, शुभ स्थान में, शुभ राशि पर, शुभ ग्रह के साथ बैंठा हो और चतुर्थेश स्वगृही या अपनी

उच्च राशि में बैठ कर लग्न को देखता हो या फिर लग्नेश से दृष्ट हो तो, मनुष्य वृद्धावस्था में पूर्ण सुख का अनुभव करता है।

त्रिकोण (५-९) में पाप ग्रह बैठे हों, दशमेश गुरु से युक्त लग्नेश केन्द्र में बैठा हो और उच्च के बलवान् सूर्य से नवें स्थान में चन्द्रमा पाप रहित हो तो मनुष्य १५ वर्ष की अवस्था तक विद्वान् होकर प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है, और समाज में आदर पाता है।

जिसके लग्न स्थान में कोई भी उच्च का ग्रह मित्र मंगल को पूर्ण दृष्ट हो, तृतीयेश और नवमेश एक साथ केन्द्र में लग्नेश से दृष्ट हों या युक्त हों या फिर लग्न या लग्नेश को दोनों में से कोई भी ग्रह देखता हो तो मनुष्य ५० वर्षोपरि सैन्य-पुलिस विभाग में उच्च पद पाता है।

यदि सप्तमेश नवम स्थान में हो, नवमेश लग्न में हो और ये दोनों ही पूर्ण बली बृहस्पति से दृष्ट हो तो, मनुष्य बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि होता है और पढ़-लिखकर बड़ा विद्वान् होता है, और धन, यश लाभ कर आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि दूसरे स्थान का स्वामी नवम स्थान में हो और नवमेश एकादश स्थान में और लग्नेश उच्च का उच्चांश पर केन्द्रवर्ती हो तो उस मनुष्य की वृद्धावस्था में राज्य की ओर से सुख की प्राप्ति करता है।

यदि स्थिर लग्न षष्ठेश से दृष्ट हो और षष्ठेश अपने ही नवांशपति के साथ भाग्य स्थान में सूर्य से युक्त बैठा हो तो मनुष्य २५ वर्ष से प्रथम ही सरकारी बड़ा पद प्राप्त करके राज्यतुल्य सुख का अनुभव प्राप्त करता है।

यदि लग्न में मित्र राशि का शुभ ग्रह उपस्थित हो, और लग्नेश बृहस्पति राज्य स्थान में पाप रहित बैठा हो, और पूर्ण चन्द्रमा से दूसरे स्थान में सप्तमेश बलवान् हो तो मनुष्य किशोरावस्था से ही विद्वत्ता के लिये यशस्वी होकर आनन्द-मय जीवन व्यतीत करता है।

जिस राशि पर राहु हो, उस राशि का अधिपति जिस राशि पर हो, उस राशि से ५ या ८वें स्थान में सूर्य यदि मंगल के साथ मित्र राशि का बैठा हो तो मनुष्य छोटी अवस्था में २८ वर्ष से प्रथम ही पुलिस या सैनिक विभाग में पराक्रम के लिये पारितोषिक प्राप्त करता है।

यदि दशमेश, भाग्य (नवम) स्थान में हो, धनेश (दूसरे स्थान का स्वामी) स्वगृही दूसरे स्थान में बैठा हो, और लग्नाधिपति चतुर्थ स्थान में मित्र राशि का बलवान्, पाप क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होने पर मनुष्य बड़ा ही विद्वान्, धार्मिक, पुरुषार्थी, शत्रुजित् तथा परोपकारी होता है और किशोरावस्था से ही यश पाता है।

यदि दशमेश उच्च का केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में शनि से दृष्ट हो, और दशम स्थान में राहु स्वगृही हो, और लग्नेश लग्न में बलवान् बैठा हो तो १८ वर्ष की अवस्था से देश-विदेश के व्यापार में बहुत सा धन कमा लेता है।

यदि लग्न से पंचम स्थान में मंगल मित्र राशि का बलवान् हो, और भाग्येश अपने उदित नवांश में बैठा हो, और उस नवांश राशि का स्वामी यदि लग्नेश के साथ केन्द्र में या दशम स्थान में पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो मनुष्य ३० वर्षोपरि बड़ा आदमी होता है।

यदि तृतीय स्थान में उच्च का गुरु हो, और तृतीयेश पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो, और लग्नेश शुक्र उच्च का एकादश या लाभ स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा आदमी होता है।

यदि शुक्र द्वादश स्थान में हो, और द्वादशेश अपने उच्च में उच्चांश पर हो और यह लग्नेश से दृष्ट या युक्त और चतुर्थेश, शुक्र को पूर्ण दृष्टि से देखता हो, तो मनुष्य वृद्धावस्था में जीवन का सुख अनुभव करता है।

जिसका चतुर्थेश उच्च का स्वगृही अथवा शुभ मित्र राशि का केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में लग्नेश से युक्त और बृहस्पति से दृष्ट बैठा हो तो वह मनुष्य धन-धान्य युक्त बड़ा भूमिधर होता है और सदा स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करता है।

जिसका नवमांश कुंडली में पंचम स्थान का स्वामी जन्मपत्र में उच्च का होकर दशमेश से युक्त हो, और लग्नेश से दृष्ट हो अथवा लग्न को देखता हो, केन्द्र त्रिकोण में यदि मित्र राशि का बैठा हो तो मनुष्य जन्म से लेकर मरण पर्यन्त भाग्यवान् ही रहता है।

जिसका जन्म पूर्ण चन्द्रमा दशम स्थान में बलवान् हो, और दशमेश उच्च का होकर केन्द्र या त्रिकोण में और भाग्येश दूसरे स्थान में शुभग्रह हो, और किसी मित्र शुभ ग्रह जो कि लग्नेश भी हो, उससे दृष्ट या युक्त हो तो वह मनुष्य बहुत ही बड़ा धनवान् होता है।

यदि किसी मनुष्य का जन्म शुक्लपक्ष में दिन के समय १२ बजे से पहले हो, उसकी नवमांश कुंडली का स्वामी यदि जन्मपत्र में उच्च, स्वगृही होकर किसी मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त होकर लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य २५ वर्ष के उपरान्त बहुत बड़ा आदमी होता है।

जिसके भाग्य स्थान में गुरु-शुक्र और लाभेश होकर बुध या पूर्ण चन्द्रमा सब प्रकार से पाप रहित धनेश से दृष्ट बैठा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुए मनुष्य का २८वें वर्ष में भाग्योदय होता है और वह मनुष्य धन-सम्पत्ति, भूमि आदि से युक्त होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यवतीत करता है।

द्वादशांश कुंडली में भाग्येश जिस राशि में बैठा हो उस राशि का अधिपति यदि जन्मपत्र में पंचम स्थान में पूर्ण चन्द्रमा के साथ बैठा हो, और वह लग्न को देखता हो या स्वयं लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य २० वर्ष की अवस्था तक धन, कीर्ति, भूमि, यशादि से युक्त हो जाता हैं।

यदि गुरु शुक्र और पूर्ण चन्द्रमा तीनों ही भाग्य स्थान में हों, और इनमें से कोई एक लग्नेश भी हो, और लग्न के नवांश में बुध बलवान् हो, तो मनुष्य बुद्धिमान्, विद्वान्, निगम या ग्राम पंचायत का प्रधान चुना जाता है और समाज में आदर पाता है।

यदि शुभ राशि का लग्न हो, लग्नेश, पूर्ण चन्द्रमा और बृहस्पति कर्क का भाग्य स्थान में निर्द्वन्द्व बैठा हो तो मनुष्य एक बड़ा राज्यकर्मचारी होता है एवं पुत्र सन्ताप रहता है।

जिसका धनेश (द्वितीयेश) सप्तमेश के साथ मूल (केन्द्र-त्रिकोण) (१, ४, ७, १०, ५, ९) में से किसी एक में बलवान् बैठे हों, और लग्नेश अपने उच्च या स्वगृह में बैठ कर इनको देखता हो या इन दोनों से लग्न या लग्नेश पूर्ण दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला मनुष्य धन-सम्पत्ति तथा जायदाद का स्वामी होकर ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करता है और २० वर्ष में भाग्योदय होता है।

यदि तृतीयेश, भाग्य स्थान में शुभ ग्रह मित्र-उच्च राशि का बैठा हो, अष्टम स्थान में शुक्र हो, और सूर्य जिस राशि पर हो, उस राशि का अधिपति यदि कोई शुभ ग्रह लग्न में हो या, लग्नेश के साथ हो या, लग्नेश से दृष्ट हो या लग्न को देखता हो तो मनुष्य २२ वर्षोपरि भाग्योदय को प्राप्त होता है और राजसी ढंग से निवास करता है।

यदि लग्न में बृहस्पति लग्न के ही नवांश में निर्दोष बैठा हो, और शुक्र से पूर्ण दृष्ट हो, भाग्येश अपने उच्च स्थान में बैठकर लग्न या लग्नेश को देखता हो या उससे देखा जाता हो या उनसे युक्त हो तो मनुष्य २८वें वर्ष में भाग्योदय को प्राप्त होता है और प्रत्येक प्रकार की उन्नति कर यश को प्राप्त होता है तथा समाज में आदर पाता है।

जन्मपत्र में चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी यदि लग्न में बलवान् हो, और द्वादशेश, तीसरे भाव में हो, और अष्टमेश उच्च का लग्न में हो, और एकादशेश, दूसरे स्थान में बलवान् हो और लग्नेश की दृष्टि या युति से सम्बन्धित हो तो मनुष्य १६ वर्षोपरि भाग्योदय को प्राप्त होकर सब प्रकार से सुखी रहता है।

जन्म कुंडली में यदि मंगल, चन्द्रमा से केन्द्र में हो, और बृहस्पति चन्द्रमा से नवें स्थान में हो, और शुक्र एकादश (लाभ) स्थान में बलवान् हो, इनमें से कोई भी शुभ ग्रह लग्न या लग्नेश से सम्बन्धित हो (दृष्टि-युति से सम्बन्धित हो) तो मनुष्य ४० वर्ष के लगभग भाग्योदय को प्राप्त होता है और इष्ट-मित्रों के सुख से सुखी रहता है।

यदि भाग्य स्थान का स्वामी दशम स्थान में बलवान् हो, और दशमेश पंचम स्थान में हो, और पंचमेश लग्न में बलवान् हो, और लग्नेश, भाग्येश से दृष्ट या युक्त मित्र भाव में हो तो मनुष्य ४२ वर्षोपरि भाग्योदय को प्राप्त होकर ऐश्वर्य-मय जीवन व्यतीत करता है।

यदि भाग्येश, चतुर्थेश के साथ लग्न में बलवान् बैठा हो, और तृतीयेश उच्च का होकर लग्न को देखता हो, लग्नेश को देखता हो, उसके साथ हो या लग्नेश से देखा जाता हो तो मनुष्य ३२ वर्ष की अवस्था में भाग्योदय को प्राप्त होकर अपने पराक्रम से धन-धान्य पूर्ण भूमि का उपभोग करता है।

यदि लग्नेश लग्न में बलवान् हो और समस्त शुभ ग्रह केन्द्र में उच्च के, स्वगृही या मित्रक्षेत्री, एक दूसरे की दृष्टि सम्बन्ध से सम्बन्धित हों, पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि युति से रहित होने पर मनुष्य धनवान्, धर्मात्मा, विद्वान्, सात्विक, पराक्रमी, पुलिस-सेना विभाग में उच्चाधिकारी, समाज में आदर पाने वाला, सबका प्रिय, विनीत तथा मिलनसार होता है।

यदि लग्नेश, चतुर्थ स्थान में चर्थेश के साथ बैठा हो और वे दोनों ही मित्र शुभ ग्रह हों तो मनुष्य को अचानक ही सुन्दर भवन या मकान की प्राप्ति होती है।

यदि धनेश और लाभेश दोनों ही शुभ ग्रह हों ओर पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में बलवान् बैठे हों, साथ हो दूसरे स्थान पर शुभ लग्नेश की मित्र-दृष्टि हो तो मनुष्य को धन का पूर्ण लाभ होता है।

यदि लग्नेश पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित, नीचास्त से बचकर लाभ (एकादश) स्थान में बलवान् बैठा हो और द्वितीयेश दूसरे स्थान में स्वगृहो पूर्ण रूप से बलवाद् बैठा हो तो मनुष्य धन-धान्य से युक्त ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

यदि दूसरे और एकादश भवन के स्वामी शुभ ग्रह, अपने उच्च के होकर, स्वगृही होकर या मित्रगृही होकर केन्द्र या त्रिकोण में लग्नेश से दृष्ट या युक्त हों तो मनुष्य धनवान् होता है।

यदि चतुर्थेश अपने उच्च का या स्वगृही या मित्रगृही होकर, चतुर्थ स्थान अथवा केन्द्र में बलवान् किसी मित्र शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट बैठा हो तो उस मनुष्य को मकान, भूमि तथा सम्पत्ति की कमी नहीं रहती बल्कि वृद्धि ही होती है।

यदि दशमेश अपने उच्च का होकर लग्न में हो या स्वक्षेत्री दशम स्थान में हो और मित्र शुभ ग्रह लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा राज्य कर्मचारी होता है।

यदि लाभेश परमोच्चांश पर उच्च का शुभ मित्र ग्रहों के मध्य में केन्द्रवर्ती हो और साथ ही लाभ स्थान किसी मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य अत्यधिक लाभ से युक्त होता है।

यदि गुरु लग्न में हो, मंगल द्वितीय स्थान में बुध के साथ में हो, शुक्र पंचम, सूर्य चतुर्थ में, पूर्ण चन्द्रमा दशम और एकादश स्थान में शनि हो तो या लग्न में मंगल, या शनि, चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा, दशम स्थान में सूर्य, सप्तम स्थान में वृहस्पति, नवम स्थान में शुक्र तथा एकादश स्थान में बुध हो तो बड़ा ही धार्मिक, धन-धान्य पूर्ण तथा आदरणीय मनुष्य होता है।

शुक्रो यस्य बुधो यस्य, यस्य केन्द्रे वृहस्पतिः।
दशमोंगारको यस्य स भवेत्कुलदीपकः ॥

जिस मनुष्य के जन्म में बुध-वृहस्पति और शुक्र केन्द्र में उपस्थित और दशम स्थान में मंगल वैठा हो तो मनुष्य अपने कुल (खान्दान) में दीपक के समान प्रकाश करने वाला एक बड़ा आदमी होता है। उपर्युक्त श्लोक का अपने अर्थ से जन्मपत्र के फलादेश का पूर्णरूपेण प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता क्योंकि देखने में अब तक यही आया है कि कोई भी शुभ ग्रह (बुध-गुरु-शुक्र) चाहे वह उच्च का ही क्यों न केन्द्र में बैठा हो, किसी भी मनुष्य को एकाकी शक्ति से कुलदीपक बनाने में समर्थ नहीं हो सकता। इसलिये यहाँ यह कह देना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि यदि उपर्युक्त तीनों ही शुभ ग्रह उच्च, स्वगृही तथा मित्रक्षेत्री होकर, पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर, शुभ मित्र ग्रहों की दृष्टि-युति से बल पाकर यथायोग्य केन्द्रों में सुशोभित हों तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य निश्चय ही कुल दीपक होता है अर्थात् अपने वंश में अपने समय का प्रसिद्ध आदमी होता है और यदि मकर का मंगल (उच्च का मंगल) राज्य स्थान में वलवान् वैठा हो, सूर्य से अस्त न हो तो सोने में सुगन्धि का कार्य करता है अर्थात् उपर्युक्त योग पूर्ण रूप से अपना फल प्रदान करता है। अर्थात् इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य निश्चयपूर्वक स्वकुलानुसार विद्वान्, यशस्वी, धनवान् तथा प्रभावशाली व्यक्ति होता है।

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति, नास्ति केन्द्रे वृहस्पतिः।
दशमोऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥

यद्यपि यह श्लोक प्रथम श्लोक के प्रतिकूल फल वाला कहा गया है। क्योंकि प्रथम श्लोक में तीनों शुभ ग्रह केन्द्र में होने से और विशेष रूप से मंगल के दशम स्थान में होने से मनुष्य को कुल दीपक कहा गया है और दूसरे श्लोक

में इन चारों ही ग्रहों के पूर्वोक्त प्रकार से केन्द्रवर्ती न होने पर जातक को विवशता दिखाई गई है कि वह मनुष्य जिसका बुध-बृहस्पति और शुक्र इन तीनों शुभ ग्रहों में से कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) में नहीं है और मंगल भी दशम में नहीं है तो ऐसा अभागी मनुष्य संसार में कर ही क्या सकता है अर्थात् कुछ भी उन्नति करने में समर्थ नहीं है। क्योंकि मैंने देखा है कि जिनके तीन ग्रह उच्च के हैं वे भी विशेष उन्नति नहीं कर पाते, केन्द्र में उच्च का गुरु, केन्द्र में मकर का मंगल होने पर भी कोई विशेष उन्नति नहीं होती। फिर इसके प्रतिकूल केन्द्र में कोई भी शुभ ग्रह न होने पर मनुष्य सब प्रकार से समर्थ पाये जाते हैं। यह स्पष्ट है कि यदि शुभ ग्रह केन्द्रों में नीच-अस्त तथा शत्रु राशि के हों और पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त बैठे हों तो अशुभ फल प्रदान करते हैं और वही शुभ ग्रह उच्च स्वगृही, मित्रक्षेत्री, शुभ, मित्र ग्रहों से दृष्ट-युक्त होकर यदि त्रिकोण (५, ६) में बलवान् बैठे हों तो अवश्य ही शुभ फल प्रदान करेंगे। इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है। अपवाद दोनों हो श्लोकों में प्रत्यक्ष रूप से है। अब रही बात केवल मंगल की, यदि मंगल अस्त का होकर अर्थात् सूर्य के साथ मकर राशि में उच्च का होकर केन्द्र में क्यों न बैठा हो अपने पूर्ण फल को नहीं देता। यदि मंगल मकर राशि का उच्चांश पर दशम स्थान (राज्यस्थान) में, अस्त, पाप-क्रूर, शत्रु ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर स्वतन्त्र बैठा हो तो मनुष्य शुभ मित्र ग्रहों के संयोग तथा दृष्टि योग से शुभ स्थित ग्रहों की राशियों पर शुभ फल प्रदान करता है। गुरु के सहयोग से विशेष फल होता है अन्यथा मंगल का फल भी निष्फल हो जाता है। पाठकों को समस्त ग्रहों का फल इसी प्रकार से स्वबुद्धि-अनुसार समझना चाहिये।

सूर्यो भौमस्तथा राहुः शनिर्मूर्तौ यदा स्थितः।
सन्तापं रक्तपित्तं च सौम्यैः सर्वैर्निरोगता॥

यदि लग्न में सूर्य, मंगल, राहु और शनि में से कोई एक भी पाप-क्रूर ग्रह बैठा हो तो सूर्य तथा मंगल से रक्त विकार, पित्त विकार तथा मन में उद्विग्नता या अशान्ति, बेचैनी रहती है। इसके अतिरिक्त यदि शनि और राहु हों तो हृदय में अशान्ति, कुत्सित विचार तो रहते ही हैं साथ ही वायु विकार की प्रधानता रहती है। गठिया, दर्द, गुर्दा या इसी प्रकार का कोई दर्द शरीर के किसी भाग

में रहता है। इन पाप-क्रूर ग्रहों की यदि लग्न में दृष्टि हो तो भी उपर्युक्त रोग हो सकते हैं। इनके विपरीत यदि शुभ ग्रह, पूर्ण चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र लग्न में बलवान् हों या लग्न को देखते हों तो मनुष्य का स्वास्थ्य सुन्दर रहता है और वह निरोग रहता है। यह उपर्युक्त श्लोक का भावार्थ है किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। लिखा है कि "शरीरं व्याधि-मन्दिरम्" इसलिये मानव जन्म पाकर कोई भी मनुष्य ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता जो कि कभी भी न तो किसी रोग से पीड़ित हुआ हो और न उसको किसी प्रकार से मानसिक कष्ट ही पहुँचा हो। देखने में यही आया है कि चाहे जितने भी अच्छे शुभ ग्रह लग्न में पड़े हों किन्तु जीवन में प्रत्येक मनुष्य को अनेक वार आर्थिक, मानसिक, आत्मिक, आध्यात्मिक सन्ताप सहना ही पड़ता है और किसी न किसी रोग से पीड़ित होकर कष्ट भोगना ही पड़ता है। न्यूनाधिक कष्टों का होना, ग्रहों की अपनी क्रूरता, अशुभता, शुभता आदि की अवस्था परिपूर्ण रूप से निर्भर है। रोग, शुभाशुभ सभी ग्रहों की प्रेरणा से होते रहते हैं। इसलिये पाठकों को चाहिये कि प्रत्येक ग्रह की शुभाशुभ अवस्था का ज्ञान प्राप्त कर स्वास्थ्यादि के बारे में बहुत सोच-विचार कर प्रत्येक ग्रह के रोग का विवेचन कर अपने फलादेश की पुष्टि करें।

क्रूराः सर्वे धनस्थाने धनहानिः प्रजायते।
धने सौम्ये सुखं सर्वं ऋद्धि-बुद्धि-समागमः॥

यदि धन स्थान (दूसरे भाव) में समस्त पाप ग्रह एकत्रित हों तो धन की हानि होती है और शुभ या सौम्य (पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र) ग्रहों के दूसरे स्थान में होने से मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती है और लक्ष्मी (धन) की प्राप्ति होती है और सब प्रकार से सुख मिलता है। उपर्युक्त श्लोक का अर्थ इस प्रकार से है किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या शुभ ग्रह, नीच, अस्त, शत्रु-क्षेत्री, शत्रु पाप-क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति पर बुद्धि तथा धन प्रदान करेंगे। मैं तो कहूँगा कि नहीं और कभी नहीं क्योंकि धन देना कार्य, धन कारक ग्रहों का है और बुद्धि प्रदान करना बुद्धि कारक ग्रहों का है। इसलिये धन और बुद्धि कारक ग्रहों का दूसरे घर में बलवान् होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि धन कारक ग्रह उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री अपने उच्चांश पर अपने मित्र शुभ ग्रहों

से दृष्ट या युक्त होकर नीच, अस्त, शत्रु, पाप, क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति तथा उनकी राशियों से किसी भी प्रकार सम्बन्धिन न होकर बलवान् बैठे हों तो मनुष्य धन-बुद्धि सम्बन्धी सुख को प्राप्त हो सकता है अन्यथा नहीं।

क्रूरास्तृतीयगाः सर्वे बान्धवै रहितो भवेत्।
सौम्या भ्रातृभिः सम्पूर्णैः कीर्तिवांश्च जितेन्द्रियः॥

यदि तीसरे स्थान में समस्त क्रूर तथा पाप ग्रह एकत्रित होकर बैठे हों तो मनुष्य भ्रातृ प्रेम से रहित होता है अर्थात् उसका अपना कोई सगा भाई जीवित नहीं रहता, प्रतिकूल इसके यदि सभी शुभ ग्रह तीसरे स्थान में बैठे हों तो मनुष्य को अपने सगे भाइयों के सुख के साथ-साथ कीर्ति तथा यश भी प्राप्त होता है और वह मनुष्य जितेन्द्रिय अर्थात् सुचरित्र होता है।

यह एक निर्विवाद-सी बात है कि जो भी ग्रह जिस भाव का कारक हैं वह चाहे शुभ ग्रह हो या अशुभ, पाप ग्रह हो या क्रूर, अपने कारकत्व भाव में, उच्च का स्वगृही तथा मित्रगृही होने से अपने मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त होने पर शुभ फल ही प्रदान करता है, इसके विपरीत यदि शुभ ग्रह बल-हीन, शत्रुक्षेत्री अथवा नीचास्त का होकर पाप, शत्रु, क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो कोई भी शुभ ग्रह, शुभ फल प्रदान करने में समर्थ नहीं हो सकता अर्थात् अशुभ ही फल प्रदान करेगा। इसलिये पाठकों को शुभाशुभ ग्रहों का किसी भी स्थान में फल कहते समय उसके कारक के शुभाशुभ भाव पर तथा उसके शुभाशुभ स्थान पर शुभाशुभ दृष्टि-युति, मित्र शत्रुता पर अवश्य ध्यान देना चाहिये क्योंकि त्रिक स्थानों में अशुभ ग्रहों का भी शुभ फल होता दिखाई देता है।

तुर्यस्थाने स्थिताः क्रूरा बालके मातृकष्टदा।
सौख्यं सौम्याः प्रकुर्वन्ति राजसम्मानदायकाः॥

यदि चतुर्थ स्थान में किसी बालक के जन्मपत्र में क्रूर (पाप) ग्रह बैठे हो तो उस बच्चे की माता को बहुत कष्ट होता है अर्थात् उसकी माता रोगी रहती है और यदि शुभ ग्रह बलवान् हों तो माता को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता बल्कि सुख ही प्राप्त होता है और बड़ा होकर वह बालक बड़ा सर-कारी कर्मचारी होता या फिर अपनी कलाकृतियों के लिए सरकार से पारि-

तोषिक पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि मातृकारक ग्रह शुभ हो या कोई दूसरा शुभग्रह अपने उच्च का स्वगृही मित्रक्षेत्री, नीचास्त से रहित बलवान् बैठा हो, अपने मित्र शुभ ग्रहों की दृष्टि-युति से बल पाता हो तो निश्चय पूर्वक मनुष्य बड़ा आदमी होगा, मोटर आदि वाहन से युक्त होकर सबको सुख पहुँचायेगा। यदि वही शुभ ग्रह नीच का या अस्त होकर शत्रुक्षेत्र में बैठ जाय तो उपर्युक्त सुख के साधन किसी प्रकार भी प्राप्त नहीं हो सकते। इसी प्रकार क्रूर ग्रहों की भी प्रकृति समझनी चाहिये क्योंकि शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि-युति का प्रभाव कभी व्यर्थ नहीं जाता।

सुतस्थाने शुभाः सर्वे पुत्रसन्तानकारकाः।
क्रूराः सन्ततिमृत्युं च कुपुत्रं वा धरासुतः॥

यदि पंचम स्थान में शुभ ग्रह बलवान् बैठे हों तो सभी पुत्र सन्तान के देने वाले होते हैं और क्रूर ग्रह पंचम स्थान में सन्तान को मृत्यु करते हैं। यदि मंगल पंचम स्थान में हो तो कुपुत्र उत्पन्न होते हैं। इस श्लोक के लिखने वाले का तात्पर्य चाहे जो कुछ भी रहा हो किन्तु यहाँ इतना बता देना अत्यन्त आवश्यक समझता हूँ कि साधारणतया यह देखने में आया है कि पुरुष ग्रह, पुत्रों के देने वाले हैं और स्त्री ग्रह, कन्यायें उत्पन्न करते हैं। गुरु शुभ ग्रह भी है और पुरुष ग्रह भी, यदि यह अशुभ पाप ग्रहों से दृष्ट-युक्त न हो तो अवश्य अच्छे पुत्र उत्पन्न होते हैं। वृष राशि का गुरु पुत्रों को घातक होता है, पूर्ण चन्द्रमा, बुध और शुक्र शुभ ग्रह हैं और स्त्री या नपुंसक ग्रह माने गये हैं। इनके पंचम स्थान में होने पर कन्यायें उत्पन्न होती हैं, यदि ये शुभ ग्रह अपने मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो सन्तान जीवित रहती है। यदि ये ही शुभ ग्रह मंगल और शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो सन्तान प्रथम तो होती ही नहीं और यदि हुई तो शल्य चिकित्सा (आपरेशन) कराना पड़ता है और फिर भी सन्तान जीवित नहीं रहती।

अब रही बात क्रूर ग्रहों की सो सूर्य और मंगल क्रूर ग्रह माने जाते हैं। ये दोनों ही पुरुष ग्रह हैं। यदि ये दोनों ही पंचम स्थान में बलवान् बैठे हों तो सन्तान के लिये भारी होते हैं किन्तु सन्तान में पुत्र ही अधिक उत्पन्न होवे हैं। यदि एक-एक करके बैठे हों, बृहस्पति से दृष्ट हों तो सुपुत्र उत्पन्न होते हैं। शनि

से दृष्ट या युक्त होने पर पुत्र क्रोधी तथा पिता से कलह रखने वाला होता है। उच्च का सूर्य पंचम में सुपुत्र कारक होता है। इसी प्रकार मंगल का फल जानना चाहिये। पंचमेश पर गुरु की दृष्टि होने से सुपुत्र उत्पन्न होते हैं। इसलिये पंचम स्थान का फल कहते समय पंचमेश और पंचम स्थान पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि-युति का पूर्ण ध्यान रखकर अपने फलादेश की पुष्टि करनी चाहिये।

षष्ठे पापा नरं कुर्युः शत्रुपक्षं विदारितम्।
सौम्याः कष्टं महारोगं षष्ठे चन्द्रे च मृत्युदः॥

यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बैठे हों तो मनुष्य अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। प्राचीनकाल में जबकि छोटे-छोटे भूमिधर भी राजा कहलाते थे और एक दूसरे की भूमि पर अपना अधिकार कर विजय प्राप्त करते थे, अब वह समय व्यतीत हो गया, अब तो केवल मकान-दुकान, कृषि-भूमि अथवा चोरी, डकैती, ठगी आदि के मुकदमों में अपने प्रति-द्वन्द्वी को हराकर नीचा दिखाने में अथवा उसे राजकीय न्यायालयों द्वारा दंड दिलाने में ही शत्रुपक्ष का विनाश समझा जाता है। जिसके छठे भाव में शनि उच्च, स्वगृही तथा मित्र-क्षेत्री बलवान् बैठा हो, उसको मुकदमें में अवश्य सफलता प्राप्त होती है और यदि शनि नीच या अस्त का सूर्य के साथ हो तो अवश्य हार ही होती है। इसी प्रकार अन्य पाप ग्रहों का भी प्रभाव होता है और अपने-अपने गुण, स्वभाव और प्रकृति के अनुसार प्रत्येक पाप या क्रूर ग्रह मनुष्य को वायु, पित्त, कफ, स्वांस, रक्तविकार, रक्तचाप, अर्श, विसूचिका आदि के रोगों से पीड़ित करता है। सौम्य या शुभ ग्रहों के लिए कष्ट और रोग देने वाला कहा गया है किन्तु निरीह ही यह बात नहीं है शुभ ग्रह, (बुध, बृहस्पति, शुक्र) कभी-कभी अच्छा फल भी प्रदान करते हैं। किन्तु चन्द्रमा का फल मृत्यु प्रदान करने वाला कहा गया है। मेरे अनुभव में अभी तक यह फल नहीं आया कि छठे स्थान में चन्द्रमा पूर्ण हो या क्षीण मृत्यु ही प्रदान करता है। बल्कि, नजला, जुकाम, स्वांस, जलोदर, दर्द गुर्दा, पेड़ू में दर्द आदि में से कोई न कोई रोग अवश्य उत्पन्न करता है, जैसा कि शुभाशुभ सभी ग्रह अपने गुण कर्मानुसार कोई न कोई रोग अवश्य उत्पन्न करते हैं। यदि पूर्ण चन्द्र छठे स्थान पापग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर गुरु या मित्र शुभ लग्नेश से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य को रोग

मी कम ही होते हैं किन्तु वासना प्रवल होती है और शुक्र भी अभाग्यवश छठे हीं स्थान में चन्द्रमा के साथ हो तो काम वासना प्रबल होती है। विवाह में देरी होती है, शनि की दृष्टि इन दोनों पर होने में भी कभी-कभी अविवाहित ही रह जाना पडता है और मंगल की दृष्टि हो तो विवाह होता ही नहीं, बृहस्पति की दृष्टि सदा समीप आशा बनाये रहती है। और ३२ से ४५ वर्ष की आयु तक में विवाह होते देखा गया है अन्यथा अविवाहित हो रहना पड़ता है। मन्दाग्नि, जलभय, अतिसार-प्रमेह, नजला, जुकाम आदि रोग सदा पीड़ित करते ही रहते हैं।

कुमार्या सप्तमे क्रूरः सौख्यं सौम्या मनःप्रिया
गुरुशुक्रयुतायां च रूपलावण्यशालिनी ॥

यदि सप्तम स्थान में क्रूर ग्रह (सूर्य और मंगल पापग्रह, शनि, राहू या केतु) सौम्य ग्रहों से अदृष्य बैंठे हों, तो जिस पुरुष की कुण्डली में यह योग हों, तो उस मनुष्य की स्त्री लड़ने वाली, दुष्ट स्वभाव, कर्कशा, दुराचारिणी आदि से विभूषित होती है, यदि सप्तम स्थान मित्र शुभ लग्नेश से दृष्ट हो तो यह दोष बहुत कम प्रभावशाली रह जाता है। सौम्य ग्रह (बुध-बृहस्पति और शुक्र के सप्तम स्थान में होने से स्त्री मन को लुभाने वाली तथा सुख प्रदान करने वाली होती है किन्तु वास्तव में यह बात नहीं है क्योंकि अनुभव में जहाँ तक आया है वह इस प्रकार से है कि यदि बुध स्वगृही मिथुन या कन्या का सप्तम स्थान में हो, तो स्त्री अत्यन्त सुन्दर, चपल, विनोदी, हँसमुख होती हैं। यदि बुध सप्तम स्थान में शनि से दृष्ट हो तो स्त्री का वर्ण कुछ कृष्ण पड़ जाता है और सन्तान का रंग भी काला सा ही रहता है, शुक्र के उच्च या स्वगृही होने पर मनुष्य की स्त्री श्यामवर्ण तथा रंग-बिरंग धारण करने वाली, चटक-मटक से रहने वाली, अप्राकृतिक नियमों से अपने सौन्दर्य को बढ़ा कर आकर्षित करने वाली, गाने-बजाने तथा किसी कला को जानने वाली, बुनाई-सिलाई आदि कार्य में दक्ष-सी होती है। गुरु के उच्च या स्वगृही सप्तम में होने से प्रथम तो विवाह के ही लाले पड़े रहते हैं यदि विवाह हुआ तो स्त्री अत्यधिक आत्मविश्वासी, किसी को अपने समान बुद्धिमान् न समझने वाली, गर्वयुक्त, घमण्डी, गौरवर्ण, रोगी होती है। यहाँ गुरु और शुक्र के साथ होने पर स्त्री लावण्ययुक्त अत्यन्त सुन्दर कहा गया है किन्तु इतना अवश्य होगा कि ऐसे योग

में स्त्री-पुरुष का मनमुटाव अवश्य रहेगा, कभी घर में शान्ति नहीं रह सकती, चन्द्रमा और शुक्र एक साथ या पृथक्-पृथक् सप्तम स्थान में, नीच, अस्त, उच्च, स्वगृही चाहे जैसे भी बैठे हों, मनुष्य को कामी बनाते हैं। और प्रेम-विवाह के लिए विवश करते हैं। यदि प्रेम-विवाह न भी हुआ तो मनुष्य २० से २४ वर्ष की अवस्था तक किसी न किसी युवती के प्रेम में अपयश पा लेता है और यही बात लग्न में इन दोनों ग्रहों के होने से पायी जाती है, किन्तु मैंने स्त्री के सम्बन्ध में आने वाले विवरण को अधिकतर सप्तमेश के अधीन ही पाया है। यदि सप्तमेश या सप्तम स्थान शनि की दृष्टि-युति से सम्बन्धित हो तो स्त्री के स्वभाव में कुमार्या होने के पूर्ण लक्षण पाये जाते हैं, जिसकी सास-स्वशुर-पति आदि किसी से भी नहीं बनती, पाठक निजी अनुभव को भी अपनाये और सब प्रकार से फल की पुष्टि करे।

खेटाः सर्वे महादुष्टा अष्टमस्थानसंस्थिताः।
शशाङ्कश्च विशेषेण जन्मकाले च मृत्युदः॥

इस उपर्युक्त श्लोक में ग्रन्थकर्ता ने अष्टम स्थान में सभी ग्रहों को अत्यन्त दुष्ट प्रभाव वाला कहकर अपने उद्देश्य की पूर्ति की है और चन्द्रमा को विशेष रूप से बुरे प्रभाव वाला कहा है कि यह कुण्डली के अष्टम स्थान में मृत्यु प्रदान करता है किन्तु इतनी ही बात के कहने से क्या हमारे लक्ष्य की पूर्ति हो जाती है। मैं कहता हूँ कि नहीं होती इस लिये पृथक्-पृथक् ग्रह का पृथक्-पृथक् प्रभाव यहाँ दिखलाकर हम अपने ध्येय की पूर्ति का सफल प्रयास करेंगे, यदि सूर्य उच्च स्वगृही, मित्र क्षेत्री शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य कृश, रक्तविकारी, रोगी, इष्ट-मित्रों से दुःखी रहता है। नीच शत्रु राशि का होकर पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को मृत्यु भय उत्पन्न करता है और जीवन में सदा रोगी रखता है। यदि पूर्ण चन्द्रमा उच्च या स्वगृही होकर अष्टम स्थान में बलवान् हो और लग्नेश शुभ ग्रह या बृहस्पति से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य दीर्घायु होता है, क्षीण चन्द्रमा, ग्रहण का चन्द्रमा, अमा का चन्द्रमा, अस्त-नीच का चन्द्रमा यदि अष्टम स्थान में पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो, जलभय, जलोदर रोग, नजला, जुकाम, जिगर, तिल्ली में खराबी, मन्दाग्नि, वायु आदि रोग से पीड़ित कर मृत्यु प्रदान करता है। यदि अष्टम स्थान में

मंगल चाहे उच्च-नीच-अस्त, स्वगृही मित्रक्षेत्री चाहे जिस राशि का भी हो मनुष्य को उन्माद, रक्तविकार, रक्तचाप, रक्तपित्त, वातादि का प्रकोप देकर, नेत्र पीड़ा, पेशाब पीड़ा (शूगरादि जाना), फोड़े-फुसियाँ, खुजली, दाद, स्त्री गर्भपात, शस्त्र से चोट आदि का भय प्रदान करता है, अष्टम स्थान का मंगल स्त्री के लिये भारी होता है। स्त्री कुण्डली में पुरुष के लिये पुरुष कुण्डली में स्त्री के लिये अष्टम मंगल मृत्यु का कारण बनता है, लिखा है कि--

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्याभर्ता विनाशाय पूर्वं स्त्री च विनश्यति ॥

यदि बुध अष्टम स्थान में उच्च स्वगृही मित्र क्षेत्री, वृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य शत्रु रहित, शान्त, विद्वान् तो नहीं किन्तु वाक्पटु कह सकते हैं, अपने वर्ग में आदर पाने वाला, सभ्य तथा हँसमुख, विनोदी हो सकता है। बुध कभी सूर्य से अस्त नहीं होता यदि नीच या शत्रु राशि का शनि या मंगल से दृष्ट हो तो मनुष्य कपिल रोगी, प्रमेह युक्त, अप्राकृतिक नियमों का बर्तने वाला, दुश्चरित्र, इष्ट-मित्रों से कलह रखने वाला, दूसरों से ईर्ष्या रखने वाला होता है। यदि अष्टम स्थान में गुरु उच्च स्वगृही मित्रक्षेत्री, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य को नौकरी करनी पड़ती है, पराधीन रहकर दिन व्यतीत करने पड़ते हैं, विचारों की उड़ान प्रत्येक व्यथा को गुरुतर बना देती है, मनुष्य आलसी, मलिन, शत्रु युक्त तथा निर्धन होता है। और गुरु नीच अस्त शत्रु राशि का, शत्रु पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य रोगी, भयभीत, चोरी के मामले में फँसने वाला या अपयश पाने वाला, शत्रुओं से कष्ट पाने वाला, जल या चोट से अकाल मृत्यु देने वाला होता है। और यदि शुक्र उच्च स्वगृही तथा मित्रक्षेत्री हो और शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य विद्वान्, ग्रन्थकार, कविताप्रिय तथा कलाकार होता है, नीच अस्त, शत्रु क्षेत्री पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य कामी, चरित्रहीन, धातु-रक्त विकार से पीड़ित, पान रत, श्रृंगारी, इन्द्रियलोलुप तथा पापरत रहता है। यदि सप्तमेश शुक्र अष्टमस्थान में शनि से दृष्ट हो तो मनुष्य मातृ समान स्त्री से विषय करने वाला पापी होता है या फिर किसी नीच स्त्री के प्रेम में अपयश पाने वाला होता है। सूर्य और मंगलसे दृष्ट होने पर मनुष्य बलात्कार से अपयश को प्राप्त होता है। गुरु से दृष्ट होने पर स्त्री पुरुष की सदा अनबन रहती है। यदि शनि

अष्टम स्थान में उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री हो तो मनुष्य दीर्घायु होता है और वृद्धावस्था में वायु रोग से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि शनि नीच, अस्त, शत्रु राशि का पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य, वात-पित्त-कफ रुधिर प्रकोप, रक्तविकार, धातु विकार, मुष्टि मैथुन करने वाला, पाप रत, अप्राकृतिक नियमों को वर्तने वाला, उदासीन, लोभी, लम्पट तथा कामी होता है। और दुष्ट संगति में प्रसन्न रहने वाला, नीच प्रकृति का होता है। यदि अष्टम स्थान में राहु मिथुन का हो तो मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, कांतिमान्, दीर्घायु होता है, मकर का राहु मनुष्य को पाप कर्म करने से रोकता है, मन में सन्तोष तथा हठ योग की प्रेरणा प्रदान करता है। यदि जल राशि में राहु अष्टम हो तो जल से भय, अग्नि राशि में हो तो अग्नि से भय, वायु राशि में वायु से भय, आकाश राशि में सर्प, बिच्छू, वर्रादि से भय करता है, राहु चाहे जिस राशि में हो मनुष्य को प्रमेह, अर्श, धातु, रक्त विकार, अण्डकोष वृद्धि, शत्रु से पीड़ा दिलवाता है। और स्त्री-पुत्रादि का सुख नहीं होने देता, नीच का राहु ८ से १२ वर्ष की अवस्था तक मृत्यु प्रदान करता है। यदि इस समय मनुष्य, चेचक, हैजा, प्लेग, अतिसार आदि रोगों से बच गया तो फिर दीर्घायु होता है। राहु फिर उस मनुष्य की मृत्यु से रक्षा करता है किन्तु समय-समय पर अनेक कष्ट अवश्य देता रहता है। केतु चाहे किसी भी राशि का अष्टम स्थान में हो राहुजनित समस्त रोगों के अतिरिक्त और भी बहुत से रोग, कष्ट भय, पीड़ा, बेचैनी, उद्विग्नता, अशान्ति तथा असन्तोष प्रदान करता है।

धर्मस्थाने स्थिताः पापा नदं कुर्वन्ति पापिनाम्।
धर्मस्थाः शीलवन्तश्च पुण्यधीः शुभकर्मदाः॥

यदि नवम या भाग्य स्थान में पापग्रह (शनि-राहु-केतु) बैठे हों तो मनुष्य अत्यन्त पाप करने वाला होता है, ऐसा पूर्वार्ध श्लोक का अर्थ है किन्तु शनि धनेश होकर उच्च का भाग्य स्थान में हो या राज्येश होकर स्वगृही भाग्य स्थान में शत्रुग्रहों से अदृश्य सूर्य-युति से रहित बलवान् बैठा हो तो मनुष्य धनवान्, गुणवान्, धार्मिक तथा तप करने वाला संसार से उदासीन, मनमलिन होता है और ३६ वर्षोपरि विशेष धार्मिक प्रवृत्ति होकर लक्ष्यपूर्ति का साधन करता है और ४२ वर्षोपरि अच्छी प्रवृत्ति हो जाती है, एकान्त वास उसे प्रिय लगता है,

यही दशा राहु से होती है, ऐसा मनुष्य ४८ वर्षोपरि धार्मिक प्रवृत्ति का होकर तीर्थयात्रा करने वाला, दानी, समाज में आदर पाने वाला होता है, यदि राहु नीच का हो या सूर्य के साथ हो या शत्रु राशि पर हो तो मनुष्य की कुप्रवृत्ति होती है। उच्च का राहु भाग्य स्थान में देर से भाग्योदय करता है। केतु के भाग्य स्थान में होने से मनुष्य सदा मन्दभागी, दुःखी, शोकित, विफल प्रयासहीन तथा पापरत रहता है। और बन्धु, इष्ट-मित्र सुख से रहित होता है। सूर्य यदि भाग्य स्थान में उच्च, स्वगृही, गुरु के घर का हो तो मनुष्य पराक्रमी, कीर्तिमान्, धार्मिक, यशस्वी, सन्ततियुक्त, मातृद्वेषी होता है। यदि शनि से दृष्ट हो तो पितृद्वेषी, नीचकर्म में इच्छा रखने वाला, पापरत रहता है। यदि मंगल उच्च स्वगृही हो, गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य तान्त्रिक, मन्त्र जपने वाला, स्वाध्याय प्रिय, धर्म-कर्म करने वाला, तपस्वी सा ५६ वर्ष की अवस्था तक हो जाता है। यदि मंगल नीच अस्त तथा शत्रुक्षेत्री बलहीन बैठा हो तो मनुष्य पापी, क्रूर कर्म करने वाला, पर स्त्री रत, रक्तविकारी, मातृद्वेषी, शनि से दृष्ट होने पर इष्ट-मित्रों से लड़ने वाला, सदा घर से बाहर रहने वाला होता है। शुभ ग्रह—बुध, गुरु और शुक्र के उच्च स्वगृही तथा मित्र क्षेत्री होने पर मित्र शुभग्रहों से दृष्ट तथा युक्त होने पर मनुष्य धार्मिक, परोपकारी, दानी, तीर्थयात्रा करने वाला, स्वाध्यायप्रिय, कवि, लेखक, शत्रुरहित, समाज में आदर पाने वाला, यशस्वी, श्रेष्ठ पुरुष होता है और यदि ये ही तीनों शुभ ग्रह नीच-अस्त, शत्रु क्षेत्री अथवा पाप क्रूर युक्त-दृष्ट हों तो उपर्युक्त फल के विपरीत होता है। उसकी प्रकृति भिन्न-भिन्न प्रकार की हो जाती है। और वह अपनी वंश परम्परा के प्रतिकूल चलकर अपने को कलंकित कर लेता है।

कर्मणि क्रूरा दारिद्र्यं पितृभ्रातृविवर्जितम्।
सौम्यं सौम्याः प्रकुर्वन्ति राजसम्मानदायकाः॥

यदि क्रूर ग्रह (सूर्य और मंगल) कर्म या राज्य स्थान में हों तो मनुष्य दरिद्री, पिता और भाई के सुख से वर्जित या रहित होता है। सौम्य-बुध-शुक्र, गुरु पूर्णचन्द्रादि ग्रहों के होने से मनुष्य को राज्य सम्मान प्राप्त होता है और वे मनुष्य को सुख प्रदान करते हैं। जन-साधारण के मन बहलाने को श्लोक का अर्थ ठीक भी हो सकता है किन्तु वास्तविकता से बहुत दूर है। यदि विचार

की तीव्र दृष्टि से देखा जाय तो सौम्य ग्रहों की अपेक्षा क्रूर ग्रह दशम स्थान में अधिक प्रभाव रखते हैं। यदि सूर्य उच्च का या स्वगृही या मित्रक्षेत्री बलवान् गुरु से पूर्ण दृष्ट बैठा हो तो मनुष्य बड़ा ही प्रतापी, शूर-वीर, राज्य प्रमुख कर्मचारी, मन्त्री या ऐसा ही कोई उच्चाधिकारी होता है। इसी प्रकार मंगल भी उच्च का, स्वगृही या मित्रक्षेत्री बलवान् दशम में बैठा हो तो मनुष्य, पुलिस या सेना विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करते हैं। यदि ये ग्रह नीच के, निर्बल, शत्रुक्षेत्री, शनि से दृष्ट तथा युक्त बैठे हों तो अवश्य बुरा फल करते हैं। इसी प्रकार शनि और राहु, उच्च या स्वगृही हो तो मनुष्य राज्यकर्मचारी या स्वतन्त्र व्यवसायी होता है और निम्न वर्ग में अवश्य ख्याति पाता है और अच्छी प्रकार से अपना जीवन-यापन करता है, यदि ये भी नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो अवश्य बुरा फल करते हैं। इसी प्रकार उच्च का या स्वगृही पूर्ण चन्द्रमा अपने शुभ फल दिये विना नहीं रहता और शेष ग्रह, बुध-शुक्र और वृहस्पति यदि उच्च के या स्वगृही दशम में बैठा भी हो तो भी साधारण सरकारी कर्मचारी ही रखते हैं, यदि ये नीच-अस्त के हों तो मनुष्य को दारिद्रय प्रदान करते हैं, जब तक कि कोई विशेष राजयोग ही इनकी सहायता न करता हो, तबतक मनुष्य विशेष उन्नति नहीं कर पाता।

लाभस्थाने ग्रहाः सर्वे बहुलाभफलप्रदाः।
गजाश्वपतिसौम्यादि क्रूराः कुर्वन्ति कुंजरान्॥

यह बात सर्व विदित ही है कि लाभ (एकादश) स्थान सभी शुभाशुभ ग्रह शुभ फल दायक होते हैं। धन, वाहनादि का पूर्ण सुख प्रदान करते हैं जैसा कि उपर्युक्त श्लोक से पूर्णतया विदित है। किन्तु कोई भी विचारवान् व्यक्ति बिना प्रश्न उठाये रह सकता कि क्या शुभ-अशुभ, ऊँच-नीच, अस्त, शत्रु-मित्र क्षेत्री सभी प्रकार के ग्रह सभी अवस्थाओं में शुभ तथा लाभप्रद प्रदान करने में समर्थ हो सकते हैं ? किसी भी ज्योतिषाचार्य का उत्तर इस प्रश्न के प्रति चाहे कुछ भी रहा हो, किन्तु मैं तो यही कहूँगा कि सभी ग्रहों का सभी अवस्थाओं में शुभ ही फल प्राप्त नहीं हो सकता। तो फिर दूसरा प्रश्न तुरन्त ही मस्तिष्क में उठता है कि पृथक्-पृथक् ग्रह का एकादश स्थान में क्या फल हो सकता है जिसका इस

प्रकार निम्नांकित किया जाता है। यदि सूर्य उच्च या स्वगृही लाभ स्थान में पाप दृष्टि-युति से रहित हो तो मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, धार्मिक, शत्रुजित् तथा पुत्र सुख से युक्त होता है, शनि राहु केतु से दृष्ट या युक्त होने पर सभी शुभ फलों का ह्रास हो जाता है। इसी प्रकार यदि पूर्ण चन्द्र उच्च या स्वगृही पाप दृष्टि-युति से रहित हो तो मनुष्य लेखक, कवि, श्वेत वस्त्र का कुशल व्यापारी, स्त्री, सन्तान, वाहन तथा धन-धान्य, भूमि आदि से युक्त होता है। क्षीण चन्द्रमा अस्त नीच शत्रु राशि का, पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य को जल-भय, यात्रा में भय, अनेक रोग से युक्त, बहुकन्यावान्, पथभ्रष्ट सा होता है। यदि उच्च या स्वगृही मंगल वृहस्पति से दृष्ट एकादश स्थान में बलवान् बैठा हो तो मनुष्य रक्त वस्तुओं से लाभ पाने वाला, प्रतापी, शत्रुओं से जीतने वाला, पुलिस, सेना विभाग में अधिकारी, धन-धान्य से युक्त, बड़ा भूमिधर, समाज में आदर पाने वाला होता है। नीच-अस्त, शत्रु राशि का पाप दृष्ट होने से मनुष्य, नीच कर्म करने वाला, रक्त-पित्त रोगी, झगड़ालू, धन हीन तथा दुराचारी होता है। यदि बुध उच्च या स्वगृही शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य विद्वान्, बुद्धिमान्, कलाकार, कवि, गायनप्रिय, समाज में आदरणीय तथा तेजस्वी-ओजस्वी वक्ता होता है। यदि एकादश भी नीच या शत्रु राशि का बुध पाप शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य चिवल्ला, चंचल, विनोदी, चोर, पर स्त्री प्रेमरत, दुराचारी तथा अनेक प्रकार के कुकर्मों से युक्त होता है और यदि कर्क का या उच्च का या स्वगृही वृहस्पति एकादश स्थान से पाप क्रूर दृष्टि से रहित हो तो मनुष्य विद्या-विनय सम्पन्न, उच्चविचार, उच्चाकांक्षी, परोपकारी, देव-गुरु भक्त, वादन-कला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, समाज में आदर पाने वाला, सब प्रकार से बड़ा आदमी होता है। यदि यही बृहस्पति, नीच अस्त, शत्रु राशि का शत्रु पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य कुचारी, घमंडी, अभिमानी, दुराचारी तथा अनेक प्रकार के दोषों से युक्त होता है। यदि शुक्र उच्च या स्वगृही, बलवान् सर्व दोषों से रहित एकादश स्थान में बैठा हो तो मनुष्य बड़ा ही विद्वान्, कवि, लेखक, नाट्यकार, गायन-वादन, नृत्यादि में निपुण, सभ्य समाज में आदर पाने वाला, स्त्री, सन्तानादि के सुख से सुखी, धार्मिक, सत्संगी तथा इष्ट-मित्रों के सुख से सुखी होता है और यदि शुक्र नीचास्त, शत्रु राशि में पाप शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य में उपर्युक्त सभी गुणों का ह्रास हो जाता है और मनुष्य कामी, कुचाली,

नीच संगति में रहने वाला, पतित कर्म रत होता है। इनके अतिरिक्त यदि शनि-
राहु और केतु इन तीनों ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह उच्च या स्वगृही होकर
एकादश स्थान में शत्रु ग्रहों की दृष्टि या युति से रहित होकर बैठा हो, तो वह
मनुष्य, प्रतापी, शत्रुजित, सुन्दर मकान बनाने वाला, नीतिज्ञ, रोग-शोक से मुक्त,
धन-धान्य युक्त, उत्तम कर्म करने वाला, आदरनीय, सब प्रकार से समर्थ होता है
और ये ही ग्रह यदि नीचास्त, शत्रुक्षेत्री-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो मनुष्य
पागल की भाँति फिरने वाला, अर्श, गठिया, वात रोग से रोगी, पितृ सुख, स्त्री
पुत्रादि सुख से रहित, सफर में धोखा खाने वाला, पाप रत होता है।

कुचैलिनं तथा काणं पापिनामनमीतिनम् ।
महाकुष्ठं प्रकुर्वन्ति व्ययस्थाने गता ग्रहाः ॥

यदि द्वादश स्थान में पाप ग्रह बैठे हों तो मनुष्य बुद्धिहीन, चरित्रहीत, नेत्र-
हीन तथा चित्रकोण आदि रोगों से रोगी होता है। केवल इतना ही कह देने
मात्र से इस श्लोक की कमी पूर्ण नहीं होती है इस लिये प्रत्येक ग्रह का व्यय
स्थान में क्या फल होता है यह लिखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि सूर्य उच्च
या स्वगृही व्ययस्थान में हो तो मनुष्य व्यय करने में उत्साही, शुभ कर्म रत,
शत्रुजित् तथा मलिन दृष्टि होता है। और यदि नीच शत्रु राशि का, पाप ग्रहों
से, शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य धन-धान्य हीन, रोगी, पितृ सुख से रहित,
धर्म कर्म से दूर, अनेक कष्ट भोगने वाला होता है।

यदि पूर्ण चन्द्रमा उच्च या स्वगृही होकर व्यय भाव में गुरु से दृष्ट बैठा हो
तो मनुष्य जलयात्रा करने वाला, अपने मकान को बनाने वाला, शुभ कार्यों
तथा तीर्थादि में धन व्यय करने वाला, सत्संगी होता है और यदि क्षीण चन्द्र
नीचास्त, शत्रु राशि का, पाप या क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य दुर्बुद्धि, नेत्र
रोगी, कुसंगति में अपयश पाने वाला, स्वजनों से त्यक्त होता है। यदि
द्वादश स्थान में मंगल हो तो मनुष्य को पैतृक ऋण चुकाना पड़ता है। अर्श,
अतिसार, रक्त-पित्त विकार, रक्तचाप, सर्पादि का भय, स्त्री को गर्भपात, राज्य,
नौकरी में विफलता पाने वाला, अग्नि-विषादि से भयभीत, शत्रु-रहित, शस्त्र से
चोट खाने वाला, नेत्र ज्योति क्षीण होता है। उच्च या स्वगृही शनि से दृष्ट या
युक्त होने पर मंगल का कुप्रभाव क्षीण हो जाता है। यदि बुध उच्च या स्वगृही,

शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, देवाराधक, चपल तथा कलाप्रिय होता है और जब नीच, शत्रुराशि का शत्रु पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य चंचल, बुद्धिहीन, चोर, नेत्ररोगी, प्रवासी, पराक्रमहीन तथा परस्त्री आसक्त, पशुमय युक्त, शस्त्र तथा कलहप्रिय होता है। यदि बृहस्पति कर्क (उच्च) या स्वगृही होकर द्वादश भाव में हो तो मनुष्य उच्च विचार, तीर्थ यात्रा में धन-व्यय करने वाला, मातृ सुखी, स्वच्छ मकान में रहने वाला, अधिकारी वर्ग से मेल रखने वाला होता है। यदि नीचास्त, शत्रुराशि का गुरु, पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य अंग पीड़ा से विकल, दुर्भाषी, आलसी, क्रोधी, उन्नति रहित, सभी पुत्रादि सुख से रहित, दुष्ट संगति में कष्ट पाने वाला, राज्य नौकरी में पदवृद्धि को न प्राप्त होने वाला, लापरवाह सा होता है। यदि शुक्र उच्च या स्वगृही होकर द्वादश भाव में बैठा हो तो मनुष्य बाल्यावस्था में उद्दण्ड, यौवनावस्था के उपरान्त सत्कर्मी, अपूर्ण विद्या तथा स्वतन्त्र व्यवसाय करने वाला, तरल पदार्थों के व्यवसाय में लाभ उठाने वाला होता है। यदि नीचास्त शत्रु राशि का शुक्र द्वादश भाव में शत्रु पापक्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य मलिन ज्योति, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित, पर गृहवास करने वाला, अति कामी, मन-मलिन, द्वेषी, छोटे मनुष्यों की संगति में प्रसन्न रहने वाला, गुरुजनों के सत्कार से रहित होता है। जब शनि उच्च या स्वगृही होकर द्वादश भाव में बैठा हो तो मनुष्य संसार से उदासीन, कोयले, लोहे के कार्य में लाभ पाने वाला, लाभ में रुकावट पाने वाला, शत्रुओं से रहित होता है और जब शनि, नीचास्त, शत्रु राशि का शत्रु पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य दुर्बुद्धि, क्रूरकर्मी, सुखहीन, धन-धान्य रहित, इष्ट-मित्रों का द्वेषी, भाग्यहीन, नीच-संगति में खर्च करने वाला, सुरापी, भंग, गाँजा, चुरटादि का प्रयोग करने वाला, एकान्त में कष्ट पाने वाला, मन-मलिन तथा उदासीन होता है। राहु यदि उच्च या स्वराशि या मित्रक्षेत्री होकर द्वादश में हो तो मनुष्य शुभ कर्म करने वाला, शत्रु-रहित, अग्नि चोर, विष, पीड़ा से रहित, यात्रा-प्रिय होता है, नीच शत्रु राशि का होने पर अपकीर्ति, नेत्र-पीड़ा, शत्रु-पीड़ा तथा बन्धु-पीड़ा होती है, यदि केतु द्वादश में हो तो अपव्यय होता है और देशान्तर में मनुष्य कष्ट पाता है, नेत्र ज्योति क्षीण करता है, यदि नीच हो तो अनेक प्रकार के कष्ट देता है। सन्तान का सुख नहीं के बराबर होता है। एकाकी जीवन से मनुष्य दुखी रहता है।

एकोऽपि यदि केन्द्रस्थो भार्गवो वा गिरांपतिः।
नवमे वा सुतस्थाने दारिद्र्यं च न जायते ॥

इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार से है कि यदि शुक्र या बृहस्पति इन दोनों शुभ ग्रहों में से कोई एक भी केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य दरिद्री नहीं होता किन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है क्योंकि अनुभव से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि यदि शुक्र कन्या राशि का सूर्य के साथ केन्द्र में ही क्यों न हो मनुष्य दरिद्री होने के साथ स्त्री-पुत्रादि के सुख से भी रहित होता है। इसी प्रकार यदि वृहस्पति मकर राशि में शनि के साथ हो तो मनुष्य को दरिद्री बनाता है। यदि गुरु या शुक्र या ये दोनों ही उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित होकर सब प्रकार से बलवान् मित्र शुभ ग्रहों को दृष्टि-युति का सहयोग पाकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ५-९) में बैठे हों तो निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि मनुष्य लक्षाधिपति भी न हुआ तो जीवन में भिक्षुक या दरिद्री भी नहीं रह सकता। वह अपने वंशानुसार अवश्य विशेष उन्नति करेगा।

लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने क्रूरस्तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवारक्षयंकरः ॥

यदि लग्न, द्वितीय, सप्तम और द्वादश (१, २, ७, १२) स्थानों में क्रूर और पाप ग्रह शत्रु, नीच तथा अस्त के होकर बैठे हों तो केवल परिवार ही नहीं बल्कि सब प्रकार की क्षति होती है। यदि ये ही पापक्रूर ग्रह उच्च-स्वगृह मित्रराशि के होकर शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो मनुष्य की उन्नात करते हैं।

केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम्।
इतरैरप्रसक्ताश्चेद् विशेषफलदायकाः ॥

यद्यपि हम ग्रहों के आपसी सम्बन्ध के बारे में पहले स्थानाप्रसंग वस लिख आये हैं फिर यहाँ संक्षेप में यह बता देना अत्यन्त आवश्यक है कि ग्रहों का आपसी सम्बन्ध चार प्रकार का होता है। प्रथम अन्योन्याश्रय (अन्योन्यराशि-स्थित सम्बन्ध) या एक दूसरे की राशि में बैठकर होता है। जैसे लग्नेश दशम

में और दशमेश लग्न में या फिर गुरु की राशि धन या मीन में सूर्य हो और सूर्य की राशि सिंह में गुरु बैठा हो।

द्वितीय परस्पर दृष्टि सम्बन्ध—एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखना जैसे मेष राशि में सूर्य हो और तुला राशि में शुक्र हो तो ये एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे।

तृतीय अन्यतर दृष्टि सम्बन्ध—उसे कहते हैं जिसमें एक ग्रह दूसरे ग्रह को पूण दृष्टि से देखता हो किन्तु दूसरे ग्रह की अपने को देखने वाले ग्रह पर पूर्ण दृष्टि न हो, जैसे मेष का सूर्य तुला के मंगल पर तो पूर्ण दृष्टि रखता है किन्तु मंगल की सूर्य पर पूर्ण दृष्टि नहीं रहती क्योंकि मंगल अपने स्थान से चौथे व आठवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

चतुर्थ—सहावस्थान सम्बन्ध उसे कहते हैं जिनमें दो ग्रह एक ही राशि में बैठे हों जैसे सूर्य और गुरु एक ही राशि, कर्क या मेष राशि में बैठे हों।

ये सभी सम्बन्ध क्रमशः निर्बली और उत्तरोत्तर बलवान् होते हैं। इन चारों प्रकार के सम्बन्धों के समझ में आ जाने के पश्चात् उपर्युक्त तथा निम्नांकित श्लोकों का अर्थ स्पष्ट रूप से समझ में आ जाना चाहिये कि यदि केन्द्रेश (१, ४, ७, १०) के स्वामी त्रिकोणेश (५, ९ स्थान के स्वामी आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित हो तो विशेष रूप से शुभ फल तब करते हैं जब कि वे दोनों ही ग्रह शुभ मित्र हो, नीचास्त, शत्रु पाप-क्रूर आदि ग्रहों की दृष्टि युक्ति रहित हो, पाप-क्रूर शत्रु ग्रहों का सम्बन्ध भी पूर्ण शुभफल प्रद नहीं होता।

केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयम्।
सम्बन्धमात्राद् बलिनौ भवेतां योगकारकौ॥

यदि केन्द्राधिपति और त्रिकोणाधिपति स्वयमेव दोषयुक्त हों अर्थात् शत्रु राशि पर हों या नीच या अस्त हों तो शुभ फल की हानि करते हैं किन्तु उपर्युक्त प्रकार से सम्बन्धित होने पर दोष युक्त ग्रह भी योगकारक हो जाते हैं, अपना पूर्ण शुभ फल न देने पर कुछ न कुछ शुभ फल अवश्य ही करते हैं और जो हानि उनकी अशुभता से होनी थी इस सम्बन्ध मात्र से नहीं होती।

निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः।
एकत्रान्यतरो वाऽपि वसेच्चेद्योगकारकौ॥

यदि धर्मेश (भाग्येश) और कर्मेश (राज्येश) ये दोनों ही एक दूसरे के स्थान में बैठे हों या दोनों नवम स्थान में बैठे हों या दोनों ही दशम में बैठे हों अथवा किसी अन्य प्रकार से सम्बन्धित हों तो राजयोग उत्पन्न करते हैं और ऐसे योग वाले मनुष्य ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाले बड़े आदमी होते हैं।

केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे योगकारकौ ।
अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किं परम् ॥

यदि केन्द्रेश और त्रिकोणेश के आपसी सम्बन्ध में दूसरा त्रिकोणेश भी सम्मिलित हो जाय तो सोने में सुगन्धि का काम करता है अर्थात् प्रथम केन्द्र त्रिकोणेश के फल को शुभ्रता को और भी बढ़ा देता है अर्थात् ऐसे योग वाले मनुष्य के प्रत्येक कार्य में कुछ न कुछ विशेषता अवश्य पायी जाती है, वह मनुष्य विद्वान्, धार्मिक, वाहन, राज्यादि सुख से सुखी होता है। बड़ा सरकारी कर्मचारी होता और अपने अधिकार को सुरक्षित कर धन-धान्य पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

त्रिकोणाधिपयोर्मध्ये सम्बन्धो येन-केनचित् ।
केन्द्रनाथस्य बलिनो भवेद्यदि सुयोगकृत् ॥

यदि किसी न किसी प्रकार त्रिकोणेश (पंचमेश और नवमेश) आपस में सम्बन्धित हों और केन्द्रेश उनके मध्य में बलवान् हो या बलवान् केन्द्रेश उनसे किसी न किसी प्रकार सम्बन्धित हो (विशेष प्रकार से यहाँ लग्नेश से अभिप्राय है) तो अत्यन्त शुभ राज्य योग होता है। ऐसे योग वाला मनुष्य बड़ा ही धनाढ्य, धार्मिक, तीर्थयात्राप्रिय, परोपकारी, समाज में आदर पाने वाला, बड़ा सुखी होता है।

यदि केन्द्रत्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥

यदि केन्द्रेश और त्रिकोणेश का आपसी सम्बन्ध केन्द्र या त्रिकोण में हो और उनके साथ शनि, राहु और केतु में से कोई भी इसी प्रकार उनसे सम्बन्धित हो तो भी राज्य योग नष्ट नहीं होता। अर्थात् तामसिक प्रकृति के ग्रहों का केन्द्रेश त्रिकोणेश होकर शुभ ग्रहों से सम्बन्धित होना धन-धान्य तथा ऐश्वर्य-

मय जीवन प्रदान करने वाला है। कहने का तात्पर्य यह है कि शुभाशुभ ग्रहों का योग केन्द्रेश और त्रिकोणेश होने पर शुभ फल प्रदान करता है (मेरी राय में यह उचित नहीं, क्योंकि जो शुभ फल शुभ मित्र ग्रहों के योग से होगा वह अशुभ योग से नहीं हो सकता ।)

धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि ।
तयोः सम्बन्धमात्रेण न योगो लभते नरः ॥

यदि नवमेश और दशमेश, जो कि अष्टमेश और नवमेश (मिथुन लग्न होने पर) और दशमेश और एकादशेश (मेष लग्न होने पर) शनि होता है, यदि यह शनि अष्टमेश और एकादशेश होकर केन्द्रेश और त्रिकोणेश भी होकर आपसी सम्बन्ध को यदि किसी प्रकार भी राज योग को करता है तो उसका शुभ फल जातक को प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार शनि के योग सम्बन्ध में बृहस्पति का ही सम्बन्ध दशमेश और नवमेश के रूप में प्राप्त होता है क्योंकि यदि शनि अष्टमेश और नवमेश हो तो बृहस्पति दशमेश होता है और शनि दशमेश और एकादशेश होता है तो नवमेश बृहस्पति हो जाता है। बृहस्पति शनि का सम है और शनि बृहस्पति का सम है। केवल यदि रन्ध्रेश होने से राजयोग नहीं हो तो एकादशेश और दशमेश होने पर अवश्य राजयोग हो जाना चाहिये किन्तु श्लोक कर्ता की क्या इच्छा है यह तो वही जानता होगा या ईश्वर जानता है या अनुभव में लाने वाले ज्योतिषी जन ही इसका अनुभव समयानुकूल करने में समर्थ हो सकेंगे । श्लोक का भावार्थ इस प्रकार से दिया जाता है पाठक अपनी सुविधानुसार अनुभव करें ।

धनलाभाधिपे केन्द्रे त्रिकोणे वा बलान्विते ।
वित्ते शुभग्रहैर्दृष्टे वित्तलाभमुदीरयेत् ॥

यदि धनेश और लाभेश केन्द्र या त्रिकोण में हो अर्थात् दूसरे और ग्यारहवें भवन के स्वामी (१, ४, ७, १०, ५, ९) में से किसी स्थान में हो या वे बलवान् हो और दूसरा स्थान लग्न से शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य को धन का लाभ होता है। यद्यपि इस प्रकार का अर्थ युक्तिसंगत अवश्य है फिर भी अपने फलादेश की पूर्ति नहीं करता, इसलिये श्लोक के अर्थ रूप पूर्ण फल प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि पाठक, पाठान्तर क्रम को समझें

कि यदि धनेश और लाभेश केन्द्र और त्रिकोण में बलवान् होकर बैठे हों (अर्थात् उच्च, स्वगृहो अपने उच्चांश पर मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट-युक्त बैठे हों, शत्रु-पाप क्रूर ग्रह की राशियों में न हो और शत्रु-पार क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित हों और साथ ही ये दोनों स्थान शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो एसे योग वाले मनुष्य को सदा ही धन का लाभ रहता है।

ग्रहा: दशान्तर्दशाफलानि

त्रिकोणधनलाभस्था बलिना यदि शोभनाः।
स्वदशान्तर्दशाकाले कुर्वान्त विपुलं सुखम्॥
स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम्।
दिशेत् सोऽपि तथा नो चेदसम्बन्धेन पापकृत्॥

यदि केन्द्रेश की महादशा में (शुभ) त्रिकोणेश की अन्तर्दशा हो, या त्रिकोणेश की महादशा में (शुभ) केन्द्रेश की अन्तर्दशा चल रही हो तो इन दोनों प्रकार की महादशान्तर्दशा गत मनुष्य को शुभ फल की प्राप्ति होती है, प्रतिकूल इसके होने पर अशुभ फल की प्राप्ति होती है अर्थात् (केन्द्रेश अशुभ हो, त्रिकोणेश शुभ हो तो या त्रिकोणेश अशुभ हो, केन्द्रेश शुभ हो तो या एक दूसरे की अन्तर्गत दशायें न हों तो या केन्द्रेश केन्द्र त्रिकोण या त्रिकोणेश त्रिकोण केन्द्र में न हो या ये दोनों हो अन्योन्य स्थान स्थित सम्बन्ध को न रखते हों तो शुभाशुभ दोनों ही ग्रहों की अन्तर्दशा का फलादेश अशुभ फल दायक होता है।)

शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः।
स्वभुक्तिषु प्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजं फलम्॥

जो भी शुभ ग्रह जन्मपत्र में राजयोग के करने वाले होते हैं, उनमें से कदाचित् ही कोई शुभ ग्रह अपनी दशा के अन्तर्गत अपने ही भुक्त समय से अर्थात् स्वदशान्तर्दशागत शुभ फल प्रदान करता है। श्लोक का तात्पर्य यह है कि राजयोग कारक ग्रह अपनी दशान्तरगत अपनी भुक्ति के समय अधिकतर अशुभ फल ही का दिग्दर्शन कराते हैं अर्थात् अशुभ फल ही देते हैं।

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु॥

यदि मारक ग्रह की महादशा के अन्तर्गत शुभग्रह की दशा व्यतीत हो रही हो तो वह मारक दशा मृत्यु प्रदान नहीं करती इसका कारण शुभ ग्रह का मारक ग्रह से सम्बन्ध शुभ फल देता है। और यदि मारक ग्रह की दशान्तर्गत पाप ग्रहों की भुक्ति का समय व्यतीत हो रहा हो तो इस पाप ग्रह के सम्बन्ध से जातक को मारक फल की प्राप्ति होती है।

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रय-संस्थितौ ।
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ॥

यदि राज्येश (दशमाधिपति) लग्न में हो, और लग्नेश राज्य या दशम स्थान में (बलवान्) बैठा हो तो यह एक प्रकार का राजयोग होता है। इस राजयोग के अन्तर्गत दशा-महादशा, अन्योन्याश्रय से शुभ फल प्रदान करती है। उस समय मनुष्य योग फल परिणाम स्वरूप कीर्ति, यश, धन-धान्य तथा विजय को प्राप्त होता है।

धर्म-कर्माधिनेतारावन्योन्याश्रय-संस्थितौ ।
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ॥

उपर्युक्त प्रकार से यदि भाग्येश और राज्येश अन्योन्याश्रय से एक सीमित परिधि में बलवान् बैठे हों तो इस प्रकार के ये दोनों शुभ ग्रह एक दूसरे की दशान्तर्गत राजयोग का फल प्रदान करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य विजयी तथा यशस्वी हो जाता है और धन-धान्य पूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

रविदशायाम् अन्तर्दशाफलानि

यदि उच्च का सूर्य केन्द्र या त्रिकोण में हो और सूर्य की दशा में सूर्य का ही अन्तर आये तो मनुष्य को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलती है, धन-धान्य की प्राप्ति होती है। सेना-पुलिस विभाग के कर्मचारियों की पदवृद्धि होती है, पारितोषिक मिलते हैं, धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है। देशाटन करना पड़ता है। स्त्री-पुत्र आदि से सुख मिलता है। शुभ मित्र ग्रहों की दृष्टि-युति से और भी अधिक सुख की प्राप्ति होती हैं। अशुभ पाप ग्रहों की दृष्टि-युति से मनुष्य के मन में खेद-उद्विग्नता, अशान्ति, सिर-नेत्र पीड़ा, रक्त-पित्त विकार, पिता बन्धु विरोध प्राप्त होता है। त्रिक स्थान गत रवि दशा का फल, शत्रु उत्कर्ष, रोग, लड़ाई-झगड़ा, मुकदमा आदि होता है। स्वगृही सूर्य की दशा का फल, भावेश-

फलानुसार अच्छा या बुरा होता है। धन आता भी है और खर्च भी होता है। और यदि सूर्य नीच राशि गत हो तो मनुष्य के विचार कुत्सित रहते हैं। सदा क्रोध बढ़ा रहता है। काम, मोह, अहंकार और ईर्ष्या-द्वेष बढ़ जाता है। मनुष्य किसी प्रकार भी शान्ति को न प्राप्त होकर कभी जंगल में, तो कभी विदेश में कष्ट उठाता है। पर स्त्री गमन या वेश्या गमन में रुचि बढ़ती है। नीचास्त रवि यदि क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो कामवासना, जलक्रीड़ा तथा नीच कर्म में रुचि बढ़ती है। पूर्ण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य के विचार मलिन तो हो जाते हैं किन्तु पतित नहीं हो पाता। मंगल से दृष्ट होने पर बलात्कार दोष में फँसकर, दंड पाता है, मुकदमा, लड़ाई-झगड़ा, कलह कराता है। बुध और शुक्र से सूर्य कभी दृष्ट नहीं होता। गुरु से दृष्ट होने पर मनुष्य सत्कर्म को रुचि होते हुए भी सत्कर्म नहीं कर पाता, पिता, पूज्य गुरु जनों से अनबन रहती है। शनि से दृष्ट होने पर पिता से दूर रहना पड़ता है, आलस्य, प्रमाद बढ़ता है, दुख मिलता है। यदि उच्च का सूर्य, पूर्ण चन्द्र दृष्ट हो तो मनुष्य नौकर, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से सुखी होकर धर्म-कर्म करने वाला, परोपकार में धन व्यय करने वाला, रोग रहित, स्वभवन में आनन्द से जीवन व्यतीत करने वाला होता है। मंगल से दृष्ट होने पर, शूर-वीर, धनिक, रक्त-पित्त विकारी तथा बलवान् होता है। गुरु से दृष्ट होने पर, मनुष्य बहुत बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान्, वकील, मन्त्री, न्यायाधीश अथवा कोई बड़ा अधिकार प्राप्त मनुष्य होता है। धर्म-कर्म में रत रहकर परोपकार में धन लगाने वाला होता है। ऐश्वर्य तथा अभिमान से रहता है। शनि से दृष्ट होने पर प्रत्येक शुभ कार्य में अड़चन पड़ती है। पिता-पुत्र के साथ उन्नति नहीं कर पाता, मन मलिन तथा दुखी रहता है। उत्साह क्षीण रहता है। नीच कर्म में रुचि बढ़ती है और अपयश मिलता है। इष्ट-मित्रों से नहीं बनती। अपना व्यवसाय चलता तो रहता है किन्तु उस समय उन्नति नहीं होती है। बुखार, वायु, पित्त, कफ, नजला आदि रोग कष्ट देते हैं।

नोट—सर्व साधारण की ज्ञान प्राप्ति के लिये निम्नांकित बातें लिखना इसलिये आवश्यक हो जाती हैं कि मनुष्य इनका पूर्ण रूप से परिचय प्राप्त किये बिना अपने फलादेश कहने के ध्येय में सफल हो ही नहीं सकता। इसलिए

हम प्रथम केन्द्र, त्रिकोण, त्रिक, उच्च, स्वगृही, मित्रक्षेत्री, रिपुक्षेत्री, अस्त, बली, निर्बल आदि ग्रहों की दशा का विवेचन करने के पश्चात् उनकी अन्तर्दशा का वर्णन करेंगे। जिससे पाठक सम्बन्धित दशा के पाठचक्रम से पूर्ण लाम उठा सकेंगे।

जो भी ग्रह पूर्ण बली, उच्च का स्वनवांश का होकर मूल-त्रिकोण में पाप क्रूर दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो वह ग्रह स्वदशान्तर्गत पूर्ण शुभ फल को देता है। मित्र के नवांश में पूर्ण फल नहीं देता, वही ग्रह यदि स्वक्षेत्री स्वनवांश में पाप रहित हो तो उत्तम फल देता है। मित्र के नवांश में शुभ फल करता है। इसी प्रकार कोई भी ग्रह नीच का, अस्त का, नीचास्त का या शत्रु क्षेत्र का होने पर अशुभ फल प्रदान करता है।

यदि कोई शुभ ग्रह पूर्ण शुभ बली होकर उच्च का केन्द्र त्रिकोण में स्वतन्त्र बैठा हो तो पूर्ण शुभ फल करता है। स्वगृही होने पर अर्ध शुभ फल देता है, मित्र ग्रही होने पर ¼ चौथाई शुभ फल करता है। नीच अस्त नीचास्त तथा शत्रु क्षेत्री, त्रिक स्थानों में शून्य फल प्रदान करते हैं।

शुभ ग्रह शुभेश होकर शुभ स्थानों में बलवान् बैठे हों तो अपनी दशा में पूर्ण शुभ फल करते हैं, यदि ये ही शुभ ग्रह मारक स्थानों के अधिपति होकर त्रिक स्थानों में बैठ जायँ तो बहुत ही अशुभ फल करते हैं। इसी प्रकार अशुभ ग्रह त्रिक या ३, ६, ११ स्थानों में होने पर शुभ फल देते हैं और इन स्थानों के स्वामी होकर केन्द्र त्रिकोण में बैठने से अशुभ फल प्रदान करते हैं।

उच्च ग्रह दशाफल—उच्च ग्रह की दशा अपने जन्म स्थान (भाव) के अनुसार विद्या में रुचि, यश, कीर्ति, राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में यश प्राप्ति कराती है, अनेक प्रकार की प्रगति, पारितोषिक, उच्च नौकरी, उच्चाधिकार, पुस्तक लेखनकार, व्यापार में उन्नति, कलापूर्ण कार्यों में यश, धन, कृषि में लाभ, बन, उपवन, वाटिका आदि से लाभ, विवाह का होना, पुत्रादि की प्राप्ति, फल, मिष्ठान्न, नवीन वस्त्र, आभूषण तथा कीमती पत्थर की प्राप्ति, वाहन (मोटर, बाइक, स्कूटर, जलयान, नभयान) रेल आदि की सवारी का सुख प्राप्त होता है। भाई-बन्धुओं, इष्ट-मित्रों का सहयोग, लाट्री, रेस, मुकदमे आदि में विजय मिलती है, शत्रु दबे रहते हैं। चित्त की वृत्ति सात्त्विक करती है, स्वाध्याय,

ईश्वर भक्ति, मन्त्रादि, परोपकार, दान, यज्ञादि के करने में मन लगता है, चित्त प्रसन्न रहता है। अपने-पराये सभी से सत्कार प्राप्त होता है। इच्छानुसार व्यवसाय की प्राप्ति होती है। मनुष्य गर्व युक्त न हो तो अवश्य सुख की प्राप्ति होती है।

स्वगृही ग्रह दशा फल—स्वगृही ग्रह की दशा का फल भी स्वभावानुसार बहुत कुछ उच्च ग्रह दशा के समान ही होता है। इसमें भी मनुष्य को नवीन वस्त्र, नव मकान, नव-स्त्री, नवभूमि, नौकरी, व्यापार, व्यवसाय, आभूषण आदि की प्राप्ति होती है। शत्रु दबे रहते हैं। घर में अनेक प्रकार से प्रसन्नता रहती है।

मित्रगृही ग्रह दशा फल—मित्र गृही ग्रह की दशा में मित्रों, वन्धुओं, स्त्री-पुत्रादि से विशेष सुख मिलता है। राज्य से धन, पदवी, उत्साह तथा पारितोषिक प्राप्त होता है। अपने-परायों से मेल बढ़ता है। शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार सत्त्व-रज-तम आदि की प्रवृत्ति बढ़ती है। दुख की अपेक्षा सुख का अनुभव अधिक होता है।

शत्रुगृही ग्रह दशा फल—शत्रुगृही ग्रह की दशा में स्थान प्रभावानुसार मनुष्य की स्मरण शक्ति का ह्रास हो जाता है। बुद्धि स्थिर नहीं रहती, चित्त की चंचलता के कारण मन की स्थिति एकाग्र नहीं हो पाती, काम शक्ति की प्रवलता से मनुष्य विषय-वासना के अधीन हो जाने पर अपयश को प्राप्त होता है। इष्ट-मित्रों, भाई-बन्धुओं तथा समाज में तिरस्कृत दृष्टि से देखा जाता है। धातु क्षीणता, प्रमेह, अर्श, रक्तविकार, कफ, स्वांस, पित्तादि रोगों के कारण शरीर दुर्वल तथा क्षीण हो जाता है। शत्रु पक्ष से हानि, मुकदमे में हार, धन की कमी रहती है। पारिवारिक सुख नहीं मिलता, आय कम हो जाती है, व्यय बढ़ जाता है, जिससे मनुष्य ऋणी होकर अशान्त जीवन व्यतीत करता है। शुभ कार्यों में विघ्न तथा निन्द्य कार्यों में कुत्सा प्राप्त होती है।

नीच-अस्त-नीचास्त ग्रह दशा फल

नीच—जो ग्रह अपने उच्च स्थान से सप्तम राशि में बैठे हों तो वे नीच कहलाते हैं।

अस्त—बुध के अतिरिक्त सभी ग्रह सूर्य के साथ होने पर अस्त कहलाते हैं।

नीचास्त—जो भी ग्रह सूर्य के साथ अपनी नीच राशि में होते हैं वे नीचास्त कहलाते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त तीनों प्रकार के ग्रहों का फल मनुष्य को दूषित या अशुभ ही मिलता है। स्थान का प्रभाव प्रधान होता है, लग्न में होने से मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। मानसिक चिन्ता लगी रहती, चित्त अज्ञात पीड़ा से विकल रहता है, अनेक रोग हो जाते हैं। बहुत कष्ट मिलता है, जीवन रुचिकर नहीं लगता, मनुष्य दुखी रहता है।

दूसरे भाव में होने से—मनुष्य को इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव का विरोध सहना पड़ता है, आपसी कलह रहती है। पारिवारिक सुख नहीं मिलता, अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। मृत्यु तुल्य कष्ट होता है, धन-धान्य की हानि होती है। भोजन की व्यस्था ठीक नहीं रहती, उपवास होते हैं।

तीसरे भाव में होने से—रोगों की उत्पत्ति होती है, पराक्रम को ठेस पहुँचती है। व्यवसाय को धक्का लगता है। शारीरिक, मानसिक चिन्तायें लगी रहती हैं, जीवन में निराशा रहती है।

चतुर्थ भाव में होने से—माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती, अपना मकान या निवास स्थान नहीं बनता, कृषि, भूमि का ह्रास होता है। माता यदि जीवित रहे तो कष्ट पाती है। भोजन की चिन्ता रहती है। अनेक कष्ट मिलते हैं, किसी प्रकार भी सुख का अनुभव नहीं होता, विवाहितानन्द नहीं मिलता, एक न एक रोग या चिन्ता सदा लगी रहती है।

पंचम भाव में होने से—मनुष्य की बुद्धि भ्रमित-सी रहती है। मस्तिष्क शक्ति के क्षीण हो जाने के कारण स्मृति लुप्त प्रायः हो जाती है। सभ्य समाज में निरादर होता है। विद्या का ह्रास हो जाता है, ईर्ष्या-द्वेष, स्पर्धा बढ़ जाती है। पुत्रों से कष्ट मिलता है।

छठें भाव में होने से—अनेक शत्रुओं की उत्पत्ति होती, अनेक झूठे मुकदमे लग जाते हैं जिनमें पराजय होती है, अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है, धातु विकार, अर्शादि होते हैं। चोरी, विष, अग्नि, पशु तथा विषैले कीड़ों के काटने से कष्ट तथा हानि होती है, मामा के पक्ष में किसी की हानि तथा नन्साल विरोध से अपने को कष्ट मिलता है। धन की हानि होती है। जीवन भयभीत रहता है। सुख की प्राप्ति नहीं होती, कार्य में विघ्न पड़ता है।

सप्तम भाव में होने से—मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। कामोत्तेजना के बढ़ जाने पर मनुष्य पथच्युत हो जाता है। स्वस्त्री को रोग या मृत्यु मुख देखना पड़ता है, परस्त्री गमन से अपयश मिलता है। धातु क्षीण, प्रमेहादि रोग के हो जाने से शरीर की कान्ति घट जाती है, जीवन में निराशा तथा स्त्री जाति से व्यर्थ कलह होती है।

अष्टम भाव में होने से—मनुष्य को अनेक रोग होते हैं। चोरी का माल धरने तथा किसी का जामिन बनने से कलंक लगता है। सास और श्वसुर से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। अनेक कष्ट मिलते हैं, शारीरिक-मानसिक क्लेश होने से जीवन में निराशा होती है, नीच संगति, नीच कर्म में रुचि बढ़ती है। बहुत से मनुष्य किसी और ग्रह के कुप्रभाव के कारण, विषपान या किसी और प्रकार से आत्महत्या तक कर लेते हैं। नीचास्त योग अल्पायु करता है।

नवम भाव में होने से—मनुष्य को अधर्म में रुचि बढ़ती है, अनेक पाप, हिंसा कर्म करके अपयश मिलता है। जल, थल यात्रा में व्यर्थ खर्च होता है और कष्ट मिलता, नीचों की संगति से अपकीर्ति मिलती है। गुरुजनों की निन्दा, ईर्ष्या और द्वेष बढ़ता है। घर से दूर रहना पड़ता है। भाग्य की प्रतिकूलता के कारण व्यवसाय, नौकरी, व्यापार में रुकावट होती है, पुरुषार्थ गिर जाता है। इष्ट-मित्रों से कष्ट मिलता है।

दशम भाव में होने से—मनुष्य की माता-पिता से अनबन रहती है। सरकारी नौकरी में अड़चनें पड़ती हैं, आफिसरों से अनबन तथा कलह रहने के कारण प्रगति में रुकावटें पड़ती हैं, उन्नति नहीं होती। राज्य दण्ड तक भोगना पड़ता है। अशुभ कर्म में मन लगता है। जीवन में निराशा आ जाती है। घर का सामान तक बिकने लगता है। ग्रह की अशुभता से स्त्री-पुत्रादि, बन्धु-बान्धव सभी शत्रु से दिखाई पड़ते हैं। मनुष्य की बुद्धि कार्य नहीं कर पाती। जीवन भार हो जाता है।

एकादश भाव में होने से—मनुष्य के व्यवसाय में अनेक रुकावटें उत्पन्न हो जाती हैं, व्यापार में हानि होती है। बड़े भाई से अनबन हो जाती है, धन का कष्ट रहता है। कार्य क्षेत्र दुर्गम हो जाता है। रात-दिन संघर्ष करने पर भी भोजन कष्ट से ही प्राप्त होता है। सन्तान को कष्ट, रोग, पीड़ा होती है।

द्वादश भाव में होने से--मनुष्य को अनेक रोग दबा लेते हैं, बीमारी में खर्च अधिक हो जाने के कारण मनुष्य को ऋण लेना पड़ता है। प्रवास में अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। यात्रायें व्यर्थ ही रहती हैं। अशुभ कार्यों में व्यय होता है। शत्रुओं से दुख मिलता है। अग्नि, विष, चोरी का भय रहता है। ननसाल से कष्ट मिलता है। नेत्र, कान पीड़ा होती है, रक्त-पित्तादि ज्वर से शरीर में विकलता होती है।

मेष राशिगत सूर्य पर ग्रह-दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि जन्म पत्र में मेष राशि के सूर्य को चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य सूर्य की दशा में चन्द्रमा के अन्तर पर अपने व्यवसाय में लाभ होता है, धन-धान्य से युक्त होकर सेवकों से सेवा पाता है, धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है। स्त्री प्रेम की वासना प्रवल होती है। शत्रु दव जाते हैं। इष्ट-मित्र, वन्धु-वान्धवों से सत्कार तथा वस्त्र, धनादि की प्राप्ति होती है। पित्त-कफ, नजला, पीलिया आदि रोग उत्पन्न होते हैं, गृह निर्माण और उसके सजाने में धन व्यय होता है। तरल पदार्थों के व्यवसाय में लाभ होता है, जल विभाग की नौकरी से लाभ होता है।

मंगल दृष्टि फल---यदि जन्म पत्र में सूर्य को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य का स्वभाव क्रूर होता है। सदैव दूसरों से झगड़ा करने को तत्पर रहता है। पुलिस और सेना विभाग में नौकरी करने से उन्नति होती है। युद्ध-स्थल में ऐसे व्यक्ति सदा विजयी होते हैं। इनकी बुद्धि मलिन और नेत्र लाल होते हैं। ये लोग शूर, वीर, बात के पक्के, धर्म भीरु तथा पुरुष जातक से काम पिपासा शान्त करने की इच्छा रखते हैं। और शीघ्र आवेश में आकर कुछ से कुछ कर बैठते हैं, पित्तादि रोग होते हैं।

वुध दृष्टि फल—सूर्य पर वुध की कभी दृष्टि नहीं होती इसलिये दृष्टिफल का प्रश्न ही नहीं उठता, सूर्य वुध युति का महत्त्वपूर्ण वर्णन ग्रह युति फल के साथ करेंगे।

गुरु दृष्टि फल---यदि मेष के सूर्य को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य का स्वभाव मिलनसार तथा परोपकारी हो जाता है। उसकी बुद्धि

पढ़ने-लिखने में अच्छी होती है और उचित शिक्षा पाकर ऐसे मनुष्य राज्य में उच्चाधिकार प्राप्त कर, धन-धान्य से पूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करते हैं।

शुक्र दृष्टि फल—सूर्य पर शुक्र की दृष्टि नहीं होती इसलिये युति वर्णन ही विशेष रूप से किया जायेगा।

शनि दृष्टि फल - यदि मेष के सूर्य पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य की वुद्धि मलिन तथा मन उदास रहता है, पिता से कलह, भाव की हानि, पित्त-वायु विकार, आलस्य, विकल हृदय, नीच संगति तथा हीन उत्साह रहता है।

राहु दृष्टि फल—जब सूर्य से सप्तम राहु हो तो मनुष्य का जन्म ग्रहण की परिस्थिति में होता है और माता या पिता में किसी एक को मरणासन्न रोग या एक की मृत्यु होती है। सूर्य, राहु, केतु की दृष्टि या युति का परिणाम अच्छा नहीं होता, ऐसे योग में उत्पन्न हुआ बालक बड़ा होकर चाहे सुखी भले ही हो जाय किन्तु बचपन में दुखी रहता है, रोग से कष्ट होता है, पिता का ऋण चुकाना पड़ता है। इसका फल सभी राशियों में निकृष्ट ही रहता है। इसी प्रकार सर्वत्र राहु-केतु की दृष्टि-युति का परिणाम चन्द्रमा के साथ जानना चाहिये क्योंकि इन दोनों में एक की भी सप्तम पूर्ण दृष्टि यदि चन्द्रमा पर होगी तो ग्रहण पड़ जायेगा और दुख, दरिद्र, शोक, भय, पीड़ा आदि हाहाकार के अतिरिक्त कोई विशेष शुभ परिणाम नहीं होता या फिर वह ऐसे योग में उत्पन्न बालक अपनी परिस्थिति से बहुत ऊँचा उठकर असाधारण रूप में जगत् के सम्मुख आता है।

वृष राशि गत सूर्य पर ग्रहदृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि वृष राशि के सूर्य को चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य साधारण बुद्धि का होता है। कामवासना की प्रबलता से किसी भी कार्य में विशेष उन्नति न कर सकने पर भी अपनी कोमल वाणी द्वारा अपना कार्य कर लेता है, ऐसे लोग परस्त्री आसक्त होने के साथ-साथ स्त्रियों द्वारा धन पाकर आनन्द करते हैं। तरल वस्तुओं से आजीविका चलाते हैं। प्रमेह, धातु क्षीण, नजला, कफादि रोग होते हैं।

मंगल दृष्टि फल - यदि वृष राशिगत सूर्य को मंगल देखता हो तो मनुष्य शक्तिशाली, हठी, कामी, समाज में प्रतिष्ठा पाने वाला, परोपकारी, दुर्वलों की सहायता करने वाला, मिलनसार, पराक्रम पूर्ण कार्यों में अग्रसर रहता है।

गुरु दृष्टि फल—वृष राशिगत सूर्य यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य की बुद्धि अधिक तीव्र नहीं होती। उसके मित्रों की अपेक्षा शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, स्त्रीद्वेषी होता है। पुरुषों में स्थिति के अनुसार मान-प्रतिष्ठा मिलती है। सरकारी नौकरी से आजीविका चलती है। सदा भयतीत रहने वाला, धन-धान्य से युक्त, अशान्त हृदय, स्वतन्त्र विचार, गुरुजनों का आदर करने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि वृष राशि का सूर्य शनि से दृष्ट हो तो मनुष्य अनेक शत्रु वाला, मलिन वसन, हीन बुद्धि, उदास, नीच की संगति में प्रसन्न रहने वाला, माता-पिता से अनबन रखने वाला, बड़ी आयु की स्त्रियों के प्रति मलिन विचार रखने वाला, वायु, पित्त, स्वाँस रोगी, चरित्र हीन होता है।

मिथुन राशिगत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—मिथुन राशि गत सूर्य को यदि चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य उत्साह हीन, उदास, प्रवास में रहने वाला, इष्ट-मित्रों के सुख से रहित, शत्रु-स्त्री के भय से युक्त, धन-धान्य से रहित, कामवासना युक्त, सरकारी नौकरी में अप्रसन्न रहने वाला, मन-मलिन तथा विद्याभ्यासी, निराश होता है।

मंगल दृष्टि फल—यदि सूर्य मिथुनगत मंगल से दृष्ट हो तो मनुष्य अस्त्र-शस्त्रादि का शत्रुओं से भय खाने वाला, भीरु प्रकृति का, झगड़ालू होता है। निर्धनता के वशीभूत, लज्जा से दबा रहता है फिर भी आवेश आने पर उसका सँभालना कठिन हो जाता है: वासना की प्रबलता रहती है। अनेक स्त्रियों में सम्बन्ध होता, नयन रक्त, शरीर उष्ण, अर्श, पित्तादि रोग होते हैं।

गुरु दृष्टि फल—मिथुनगत यदि सूर्य बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य विद्वान्, स्वतन्त्र विचार, गुप्त मन्त्रणा में प्रवीण, राज्य में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, नीतिज्ञ, बहादुर, देशाटन प्रिय, विदेशरत, अचल कीर्ति वाला, लेखक, स्वाध्याय प्रिय, धार्मिक, परोपकारी, क्रोधी, इष्ट-मित्रों से रहित होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि मिथुन राशि का सूर्य, शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य मन्दबुद्धि, पाप-रत, उद्दण्ड प्रकृति, पिता-द्वेषी, नीच जाति के स्त्री-बच्चों

से कलुषित प्रेम करने वाला, घर से हताश, इष्ट-मित्रों से रहित, मन-मलिन, मुष्टिका मैथुन से॰ शक्ति नष्ट करने वाला, दीन-हीन, मलीन, कृषगात होता है।

कर्क गत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल---यदि कर्क राशि गत सूर्य को चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी में उन्नति पाने वाला, जल क्रीड़ा प्रिय, परस्त्री प्रेमरत, समाज तथा मित्र वर्ग से ईर्ष्या करने वाला, क्षणिक क्रोधी, तरल पदार्थों के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, धन सम्पन्न, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला आलसी होता है।

भौम दृष्टि फल---कर्क राशि गत सूर्य मंगल से पूर्ण दृष्ट होने पर मनुष्य क्रोधी तथा आवेश पूर्ण होता है। दुर्बलों का शत्रु और सबल मनुष्यों का मित्र तथा सैनिक शिक्षा से प्रसन्न रहता है। खुजली, दाद, रक्तविकार, अर्श, मस्तक पीड़ा तथा चित्त में विकलता रहती है। स्वजनविरोधी तथा कामासक्त होता है।

गुरु दृष्टि फल---यदि कर्क राशि गत सूर्य बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य कुशाग्र बुद्धि, तर्क शिरोमणि, नीतिज्ञ, राज्य में उच्चाधिकार पाने वाला, निपुण सैनिक, लेखक, कलापूर्ण कार्यों को समझने वाला, राजनैतिक क्षेत्र तथा लोक में आदरणीय, वासनाप्रिय, उच्च संगति करने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल---कर्क राशिगत सूर्य यदि शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य मलिन बुद्धि, इष्ट-मित्रों का विरोधी, डिपलोमेट, पाप कर्मरत, नीचों का हितैषी, उत्तम वर्ण का द्वेषी, चुगली करके लड़ाने वाला, लोह कार्य में प्रवीण, दूसरे मनुष्यों को हानि पहुँचाकर लाभ पाने वाला, दुष्ट प्रकृति होता है। वात-पित्त रोगी होता है।

सिंह राशि गत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल---सिंह राशि के स्वगृही सूर्य पर चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य शुभ गुणों से युक्त होकर, लोक में प्रतिष्ठा, समाज में आदर तथा राज्य पारितोषिक से विभूषित होता है। पित्त, नजला, जुकाम तथा स्वाँस, कफादि रोगों से पीड़ित रहता है, रक्तातिसार से भी पीड़ित होता है।

भौम दृष्टि फल---सिंह राशि का सूर्य यदि मंगल से पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, साहसी, लड़ाकू, पुलिस, सैनिक विभाग में प्रगति करनेवाला,

क्रोधी, कामासक्त, आचरणहीन, परस्त्रियों से विषय-वासना की तृप्ति करने वाला, पराक्रमी, परिश्रमी, उद्योगी, रोब से काम लेने वाला, धूर्त प्रकार का सज्जन होता है। वायु पित्त, रक्तातिसार, रक्तविकार, रक्तचाप आदि रोगों से पीड़ित रहता है। क्रोध से नेत्र लाल तथा शरीर गर्म रहता है।

गुरु दृष्टि फल—स्वगृही सूर्य यदि गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य उच्चाभिलाषी, बड़े-बड़े कार्य करने वाला, राज्यभाषा का ज्ञाता, धार्मिक, परोपकारी, दानी तथा कुआँ, उद्यानादि बनवाने वाला, गुरुजनों की सेवा करने वाला, गर्वयुक्त, मिलनसार, विद्याभ्यासी, कम मित्र वाला, दीनों पर दया करने वाला, मन्दाग्नि रोग से पीड़ित रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि स्वगृही सूर्य शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य मन्दबुद्धि, दूसरों के कार्य बिगाड़ने वाला, स्वार्थपरायण, नीच संगति में प्रसन्न, शुभ संगति से दूर, पितादि गुरुजनों को कष्ट देने वाला, वायु पित्त कफादि रोगों से पीड़ित रहने वाला, बन्धुद्वेषी, तथा निन्दनीय होता है।

कन्या राशि गत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—कन्या राशि गत सूर्य के चन्द्र दृष्टि फल अधिकतर मिथुन राशि जैसे ही होते हैं, यद्यपि ऐसे योग वाला मनुष्य अनेक कार्य करने की सामर्थ्य रखता है फिर भी सरकारी नौकरी के अतिरिक्त किसी कार्य में सफलता नहीं पाता और नौकरी में प्रसन्न नहीं रहता, इसलिए सदा अज्ञात पीड़ा से विकल, निराशामय जीवन व्यतीत करता है। हठात् जितेन्द्रिय होता है। वासना प्रबल होती है।

भौम दृष्टि फल—कन्या राशि गत सूर्य को यदि मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य का स्वभाव उग्र तथा आवेश पूर्ण होता है। पशु पालन में मन लगता है। कृषि, बागादि के कार्य में सफलता कम मिलती है। रक्तातिसार, अर्श, जिगर में खराबी आदि रोग रहते हैं, नेत्र पीड़ा होती रहती है, बहादुराना कार्यं में अग्रसर रहते हैं। नौकरी से जीविका चलती है। इष्ट मित्रों से अनबन रहती है।

गुरु दृष्टि फल—यदि कन्या राशि गत सूर्य गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य विद्या व्यसनी, गर्व युक्त, घर से बाहर रहने वाला, पिता से दूर रहकर

उन्नति करने वाला, परोपकारी, दानी, स्वलिंग जातक से प्रेम करने वाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, एकान्तसेवी, धार्मिक, तपस्या में तत्पर, मन्त्रजापी, आस्तिक बुद्धि, स्वतन्त्र विचार, किसी की न सुनने वाला, वायु रोगी होता है।

शनि दृष्टि फल--कन्या राशि का सूर्य जब शनि से दृष्ट होता है तो मनुष्य नीच प्रकृति, नीचों की संगति में रहने वाला, पिता से कलह रखने वाला, मन्द दृष्टि, नेत्ररोगी, पाप रत, गुरु जनों का द्वेषी, दीर्घसूत्री, उदास, निराश, बात का पक्का, हठी, शस्त्र, अग्नि, विषादि से हानि उठाने वाला, उद्विग्न मन, डिपलोमेट प्रकार का कुत्साप्रिय, अजीर्ण रोगी होता है।

तुला राशि गत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल--तुला राशि में सूर्य नीच का होता है, उसे यदि चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य नीच प्रकृति, पर स्त्रियों के प्रेम में आसक्त, अग्नि-जल से भय खाने वाला, हानि उठाने वाला, मन मलिन, उन्माद पूर्ण, जुआ, ठगी के कार्य में दण्ड पाने वाला, प्रपंची, प्रमेह, धातु क्षीण, पित्तादि रोगों से पीडित, समाज में निरादर पाने वाला, स्त्री से दुखी होता है।

भौम दृष्टि फल--यदि नीच राशि गत सूर्य पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य नीच प्रकार के बहादुराना कार्यों में सफलता पाता है, डाकू, चोर, आग लगा देने वाला होता है। क्रोध से सदा पूर्ण रहता है। छोटी-छोटी बातों पर भी रक्तपात करने को तत्पर रहता है। पित्त, कफ, अर्श, रक्तविकार, रक्त-चाप, अंग भंगादि होते हैं। शस्त्र से चोट खानी पड़ती है। नीच राशि गत सूर्य पर मंगल की दृष्टि का फल बहुत खराब होता है, मनुष्य सदा धर्म से दूर, कुकर्म रत रहता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि नीच राशि गत सूर्य पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य नीच प्रकृति, नीच कर्मरत होने पर भी लोक लज्जा के कारण अनेक पाप कर्मों से बचा रहता है। क्योंकि समय-समय पर शुभ कर्मों द्वारा अपने दुष्कृत्यों पर हल्का सा आवरण डालकर समाज की दृष्टि में अपने को पूर्णतया गिरने नहीं देता। नाम के लिए धन का त्याग भी कर देता है, वायु-पित्त, पीलिया आदि रोग होते हैं। स्वर्ण, गेहूँ, सरसों, तांबा आदि के व्यवसाय में लाभ रहता है। छोटी नौकरी विचारों के विरुद्ध करनी पड़ती है। देशाटन में कष्ट होता है।

शनि दृष्टि फल--नीच का सूर्य शनि से दृष्ट होने पर अनेक नीच कर्म करने को प्रेरित करता है, चोर, शस्त्र से भय होता है, नीच स्त्रियों के सहयोग से समाज में इष्ट-मित्रों में तिरस्कार होता है। सुलफा, गांजा, शराब, चरस, जुआदि सभी दुर्व्यसन लगे रहते हैं, राज्यदण्ड का भय रहता है, धोखा देना, छल, ठगी करना उन्हें सहज आता है। जीवन दुखी रहता है।

वृश्चिक राशिगत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि वृश्चिक राशिगत सूर्य को चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य पराक्रम पूर्ण कार्यों में यश पाने वाला, कृषि कर्म तथा नौकरी द्वारा जीविका उपार्जन करने वाला, शीतोष्ण विकार से पीड़ित, कामासक्त, दूसरे की स्त्री को प्रेम करने वाला, अग्नि, जल से हानि उठाने वाला, इष्ट-मित्रों से आदर पाने वाला होता है।

भौम दृष्टि फल—वृश्चिक राशिगत सूर्य यदि मंगल से दृष्ट हों तो मेष राशिगत सूर्य के समान ही फल होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि वृश्चिक राशिगत सूर्य बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य का स्वभाव गर्वयुक्त, आवेशपूर्ण होता है। ऐसे मनुष्य पुलिस या सेना विभाग में वीरता के लिए पदक पाने वाले साहसी वीर होते हैं। ऐसे मनुष्य नीति द्वारा रोब से कार्य लेने वाले, किसी भी दायित्व के सँभालने को तत्पर रहते हैं। ये लोग हठी, बात के पक्के, गुणवानों का आदर करने वाले, साधारण रूप से उपकारी तथा धार्मिक होते हैं।

शनि दृष्टि फल—मेष राशिगत सूर्य के समान ही फल होता है।

धन-मीन राशिगत सूर्य पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यनि धन या मीन राशिगत सूर्य पूर्ण चन्द्र से दृष्ट हो तो मनुष्य उच्च विचार, स्वतन्त्रता प्रिय, सफाई पसन्द, स्पष्टवक्ता, लेखक, कवि या सौन्दर्य उपासक होता है। स्त्री, पुत्रों के सुख से सुखी, धन-धान्य पूर्ण, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला बड़ा ही भाग्यशाली होता है। ये लोग धर्म-कर्म में आस्था रखने वाले, अच्छे विद्वान्, जीवन में किसी अनुभूति को लिये हुए होते हैं। इनका जीवन लोक-सेवा, कल्याण तथा किसी ध्येय की पूर्ति के लिए होता है जिसके लिए मन विकल रहता है।

भौम दृष्टि फल—धन या मीन राशिगत सूर्य पर यदि मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य नीतिज्ञ तथा उग्र स्वभाव होता है। इसकी वाणी में कठोरता तथा व्यवहार में सत्यता अधिक पायी जाती है। ये लोग अच्छे सैनिक तथा कुशल योद्धा होते हैं। इसलिए अपने पराक्रम द्वारा बड़े-बड़े पारितोषिक, पदक, उच्चाधिकार तथा कीर्ति पाते हैं। सुन्दर मकान बना कर रहना पसन्द करते हैं, अच्छे भूमिधर तथा सम्पत्तिशाली होते हैं। रक्तविकार, वायु-पित्तादि रोग, वृद्धावस्था में अवश्य सताते हैं।

गुरु दृष्टि फल--जब बृहस्पति के घर में सूर्य. मित्र बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा ही विद्वान्, नीतिज्ञ, कलापूर्ण कार्यों में कुशल, उच्च राज्य कर्मचारी, सम्पत्तिशाली, धन-धान्य पूर्ण, अनेक वाहनों से युक्त, इष्ट-मित्रों को प्रिय, समाज में आदरणीय, मिलनसार, धार्मिक, परोपकारी, दानी, गुप्तमन्त्रणा प्रवीण, राज्यप्रिय, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, ज्वर तथा ताप रोगी होता है।

शनि दृष्टि फल--यदि धन-मीन राशिगत सूर्य, शनि से दृष्ट हो तो मनुष्य मलिन मन, मलिन वस्त्र, नीच कर्म रत, गुरुजनों का द्वेषी, भिक्षा वृत्ति से उदर पूर्ति करने वाला, दास कर्म रत, लोह, भैंस आदि पशुओं से आजीविका पाने वाला, निरक्षर तथा पतित होता है। कभी-कभी ये लोग कुमार्ग पर चलकर अपने को और भी गिरा लेते हैं और अपयश पाते हैं।

मकर-कुम्भ राशिगत सूर्य पर ग्रह दृष्टि

चन्द्र दृष्टि फल--शनि सूर्य का शत्रु है। मकर-कुम्भ शनि का घर है, यदि मकर कुम्भगत सूर्य, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य की बुद्धि मन्द, भ्रमित, छल, कपट से पूर्ण, नीचों की संगति में बैठने वाला, अनेक कुकर्म से द्रव्य कमाने वाला, अनेक शत्रुओं से कष्ट पाने वाला, स्त्री, पुत्रादि सुख से वर्जित, हृदय रोग से विकल रहने वाला, वायु-पित्त नजलादि से पीड़ित रहने वाला, पैतृक सम्पत्ति नष्ट करने वाला, गुरुजनों को कष्ट देने वाला, ऋणग्रस्त, उन्मादी होता है।

भौम दृष्टि फल---यदि मकर कुम्भ राशि स्थित सूर्य को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य का लड़ाई, झगड़े तथा मुकदमे में बहुत सा धन नष्ट हो जाता है। अधिक परिश्रम करने पर भी सफलता कम मिलती है। अग्नि, शस्त्र, पशुओं से भय रहता है। बलात्कार से मनुष्य को अपयश मिलता है, समाज में

निरादर होता है। मन में चिन्ता, उद्विग्नता तथा व्यग्रता रहती है, स्त्री-पुत्रादि से कलह तथा राज्य से हानि होती है। व्यवसाय में नुकसान हो रहता है। मनुष्य सामर्थ्य से, सुख से रहित, रक्त-पित्त-वायु विकार से पीड़ित रहता है।

गुरु दृष्टि फल—मकर, कुम्भ राशिगत सूर्य को यदि बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, लड़ाई-झगड़े के समय भी बुद्धिमानी से काम लेने वाला, स्वतन्त्र विचार, किसी भी कार्य में विशेष उन्नति न करने वाला, अपनी कीर्ति तथा धन-सम्पत्ति को स्थिर रखने वाला, हठी, विद्या व्यसनी, गर्वयुक्त, धार्मिक विचार, उत्थान-पतन के दृश्य देखने वाला, पित्त, शूल, पीलिया आदि रोगों से युक्त, किसी मित्र के सम्बन्ध में आकर अपकीर्ति पाने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि मकर-कुम्भ राशिगत सूर्य को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य को अपने पिता और पुत्र से अनबन रहती है, फिर भी अस्त्र-शस्त्र विद्या में प्रवीण होकर अपने पराक्रम द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, सदा अपनी बात को रखने वाला, नौकरों पर शासन करने वाला, इष्ट-मित्रों से दूर, विदेश में या विदेशी वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, प्रत्येक शुभ कार्य में देरी करने वाला, आलस्य युक्त, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, सदा नौकरी की ओर झुका रहने वाला, हठी, कठोर हृदय, वायु-पित्त, जलोदर या जल भय से पीड़ित रहने वाला, दृष्टिगत स्थान की कारक वस्तुओं को नष्ट करने वाला, सुख से रहित, सदा अज्ञात पीड़ा से विकल रहता है।

नोट—दशान्तर्दशा लिखने से प्रथम यहाँ पाठकों की सुविधा के लिये यह लिखना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि विंशोत्तरी दशा का फल लिखते समय योगिनी दशा का ध्यान रखकर किसी भी ग्रहदशा का फल कहना चाहिये। कल्पना करो कि विंशोत्तरी दशा बृहस्पति की चल है, जो कि अत्यन्त शुभ मानी जाती है। अभाग्य वश यदि उसी समय योगिनी महादशा संकटा की चल रही हो, जो कि पूर्ण रूप से संकट ग्रस्त होती है। इस प्रकार के विरोध सम्मेलन में मनुष्य को कभी भी सुख और शान्ति नहीं मिल सकता, इसलिये फलादेश कहने वाले व्यक्ति को चाहिये कि वह ग्रीष्म कालीन धूप-छाँह के समान ही फल को कहे। साथ ही यह भी देखना चाहिये कि दशापति उदयी, वक्री, मार्गी, रोही, आरोही, अवरोही, उच्च, नीच, अस्त, नीचास्त, शत्रुगृही, मित्रगृही, मूल केन्द्र,

त्रिकोण, त्रिक स्थानों में से किस स्थान का स्वामी है क्योंकि षष्ठेश सप्तमेश अष्टमेश और द्वादशेश की दशा का फल अधिकतर अशुभ ही रहता है। जिनका थोड़ा-बहुत ज्ञान इस पुस्तक में कराया गया है। दशा-दशान्तर में यदि वर्ष फल में भी वही दशा आये, तो चाहे वह पाप या अशुभ ही क्यों न हो अशुभ फल नहीं करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक ही ग्रह की तीन दशा एक साथ चलने पर विशेष दूषित फल नहीं करती जैसा कि ज्योतिषी लोग प्रत्यन्तर्दशा का सहारा लेकर मनुष्यों को सान्त्वना देते हैं या भयभीत बना देते हैं। यह मेरा अपना जातीय अनुभव है, हो सकता है किसी की कुण्डली की त्रुटि से यह बात भी असत्य हो रहे किन्तु मैंने अनुभव किया है कि अशुभ और पाप ग्रहों की अन्तर्दशा में वर्ष की शुभ ग्रह दशा, और शुभ ग्रहों की दशान्तर्दशा में अशुम-पाप ग्रहों की दशा का फल अशुभ रहता है। इसलिये दशान्तर्दशा के शुभाशुभ फलादेश को उचित रूप से जानने के लिये वर्ष की शुभाशुभ दशा, समयानुकूल जाननी अत्यन्त आवश्यक हो जाती है। अब हम रोगेश मारक दशाओं का संक्षिप्त वर्णन कर आगे अपने विषय की ओर बढ़ने का सफल प्रयास करेंगे।

षष्ठेश दशा—षष्ठेश की दशा अधिकतर मनुष्यों की रोग की उत्पत्ति का कारण बनकर शारीरिक, मानसिक, हार्दिक चिन्ताओं का कारण बन, दैवी, भौतिक, आध्यात्मिक किसी न किसी प्रकार की चिन्ता अवश्य देती है, स्वजन-परिजन-इष्टमित्र, बन्धु-बान्धव से शत्रुता, चोर, अग्नि, विष, शस्त्र से घाव, दुष्टों से अपयश, कलंक, मिथ्यापवाद, उन्माद, बुद्धि ह्रास, हृदय में क्लेश, व्याकुलता, धन-धर्म का ह्रास, रक्त पित्त कफ विकार, धातु क्षय, कीर्ति लोपादि के कारण कुछ न कुछ हानि लगी ही रहती है।

सप्तमेश दशा – सप्तमेश की दशा में अधिकतर मनुष्यों को धातु क्षीण, प्रमेह, सुजाक आदि रोग होते हैं, जिगर, तिल्ली बढ़ना, मन्दाग्नि, अजीर्ण होना, स्त्री-बच्चों को रोग होना, उसमें धन का अत्यधिक व्यय होना, शत्रुओं से चोट लगना, राज्य दण्ड भय होना, कलह कारिणी स्त्री के संसर्ग से अपयश मिलना, हृदय में व्याकुलता रहना, प्रेमोन्माद से पतित होना, किसी प्रकार का कोई न कोई कष्ट अवश्य होता है।

अष्टमेश दशा—अशुभ ग्रहों की अष्टमेश दशा मनुष्यों को इतनी भयंकर कष्टदा नहीं होती जितनी शुभ ग्रह दशा होती है। इस दशा में मनुष्य को अनेक

रोग, मृत्यु कष्ट प्रदान करने वाले होते हैं। किसी की धरोहर से राज्यदण्ड हो सकता है, किसी भी दुर्घटना से प्राणों पर बन सकती है। इष्ट-मित्रों से कलह, अनेक मलिन विचारों से क्लेश होता है, यात्रा में कष्ट होता है, किसी की दुष्ट संगति से ठगी, चोरी, जुआ आदि का व्यसन लग सकता है।

व्ययेश दशा - व्यय स्थान, रोग और ऋणादि के लिये होता है। देखने में यही आया है कि द्वादशेश की दशा में मनुष्य किसी न किसी ऐसे राज रोग से पीड़ित होता है जिसमें धन और शरीर दोनों का ह्रास हो जाता है, राजयक्ष्मा, स्वाँस, कफादि लगे रहने वाले रोग होते हैं। यात्राओं में कष्ट होता है। दुष्ट संगति से अपयश मिलता है। पशुओं से कष्ट मिलता है। इसकी दशा में धनिक मनुष्यों को भी ऋण की आवश्यकता होती है, साधारण मनुष्य तो उधार से कार्य चलाते ही हैं।

पिछली बातों को दोहराने की आवश्यकता नहीं, आवश्यकतानुसार हमने उन सभी बातों का यथेष्ट रूप से वर्णन कर दिया है जो कि सफल ज्योतिषी के लिये परम आवश्यक है। यदि कोई भी व्यक्ति आद्योपान्त, भावेश फल से लेकर दशापर्यंन्त फलादेशों को विवेक द्वारा मनन कर, स्वबुद्धिगत फलों को कहेगा तो आशा है शतप्रतिशत किसी भी मनुष्य के फलादेशों को, जिसका की जन्मपत्र ठीक बना है, सत्यरूप से कहने में समर्थ हो सकेगा। यहाँ देश-काल की प्रधानता भी आवश्यक है। अन्तर्दशा वर्णन यथाक्रम ही लिखा गया है।

सूर्य में चन्द्रान्तर दशा फल—शुभ स्थान गत सूर्य की दशा में यदि पूर्ण चन्द्र का अन्तर शुभ स्थान गत हो तो मनुष्य को वस्त्र, भूषण, धन-धान्य, नौकरी में उन्नति, स्त्री-पुत्रादि सुख, यश, मान, बड़ाई, इष्ट-मित्रों से सुख, शत्रुओं से अभय, मुकदमें में विजय, नवीन मनुष्यों से शुभ सम्बन्ध, स्त्री जाति से लाभ, संगीत, ड्रामा, सिनेमा आदि का शौक बढ़ता है। अनेक पारितोषिक भी मिलते हैं। यदि क्षीणचन्द्र हो या इन दोनों में से कोई भी अशुभ स्थान में बैठा हो तो मनुष्य की काम वासना प्रबल होती है, स्त्रियों से अपयश मिलता है। अतिसार, नजला, जुकाम, पीलिया, गर्मी, जलोदर, पानी में डूबना, झगड़े में हार, अनेक प्रकार से धन का ह्रास, नीच संगति से कष्ट मिलता है।

सूर्य में भौमान्तर दशा फल—यदि शुभ स्थान गत सूर्य की दशा में, शुभ स्थान गत मंगल का अन्तर हो तो मनुष्य को पराक्रम पूर्ण कार्यों में अच्छे तथा सुन्दर पारितोषिक प्राप्त होते हैं। लाल रंग की वस्तुओं के व्यवसाय से अच्छा लाभ होता है। मित्रों से मान तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। कृषि कर्म से बहुत लाभ होता है। पुलिस तथा सैनिक-विभाग में कार्य करने वाले मनुष्यों में उच्च पद की प्राप्ति होती है। अनेक मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करना पड़ता है। यदि उपर्युक्त दोनों ग्रहों में से एक भी ग्रह त्रिक स्थान का स्वामी हो तो मनुष्य को व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े, मुकदमे लगे रहते हैं। शत्रुओं से व्यर्थ का अपवाद सुनना पड़ता है। व्यापार में हानि, पद में गिरावट, पुलिस से भय, चोर डाकुओं से चोट लगती है। बन्धु-बान्धवों से अनबन तथा कलह रहती है। कृषि कर्म या भूमि के हाथ से चले जाने का भय रहता है। व्यर्थ धन की हानि होती है। रक्त-पित्त, अर्श, रक्तातिसार, रक्तचाप, रक्त विकार, नेत्र-शीर्ष पीड़ा, मन्दाग्नि आदि रोग होते हैं। शरीर दुर्बल, चित्त में विकलता, मन में मलिनता तथा घबराहट रहती है।

सूर्य में राहोरन्तर्दशा फल—राहु सूर्य का प्रबल शत्रु है। इसलिये सूर्य की दशा में राहु का अन्तर वर्तता है तो मनुष्य को अनेक प्रकार की आधि-व्याधि का सामना करना पड़ता है। शारीरिक, मानसिक वेदनायें मन को विकल करती रहती हैं। हृदय सदा सन्तप्त रहता है। इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव तथा शत्रुओं से लड़ाई-झगड़ा तथा कलह रहती है। मन की शान्ति भंग हो जाती है। वासना प्रबल होती है। रक्त-चाप, रक्त-विकार, सिर में रुधिर का प्रकोप, विषपानादि का भय, चोरी-ठगी का भय रहता है, यह दशा बहुत ही खराब होती है। इसमें मनुष्य को सुख और शान्ति स्वप्न में भी नहीं मिलता। यदि राहु (३–६–११) भाव में स्वगृही या उच्च का हो तो मनुष्य को इतना विपरीत फल प्राप्त न होकर समय-समय पर कुछ शान्त्वनामय फल की प्राप्ति भी होती रहती है।

सूर्य में जीवान्तर्दशा फल—यदि केन्द्र त्रिकोण, शुभ स्थान गत सूर्य की दशा में शुभ स्थानगत बृहस्पति का अन्तर हो तो मनुष्य का मन सत्कर्म, धार्मिक उत्सवों में खूब लगता है। तीर्थयात्रा, दान देना, स्वाध्याय, जप-तप मन्त्रादि द्वारा, भक्ति में मन लगता है, आस्तिकता बढ़ती है। गुरुजनों की सेवा में मन

लगता है, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से प्रीति बढ़ती, उनसे आदर मिलता है। व्यवसाय में लाभ पद में वृद्धि, मुकदमे में विजय होती है, शत्रु दब जाते है, समाज में सत्कार होता है; स्त्री-पुत्रों का सुख रहता है। आज्ञाकारी पुत्रों द्वारा चित्त को शान्ति मिलती है। धन-धान्य पूर्ण जीवन व्यतीत होता है। अनेक प्रकार से धनागम होता है। इन दोनों में से कोई भी ग्रह त्रिक स्थान में दूषित बैठा हो तो मनुष्य को पोलिया, पित्त ज्वर, वायु, यक्ष्मा, अस्थ्यादि अनेक रोग हो जाते हैं और पाप वृत्ति बढ़ने से अपयश मिलता है, अनेक प्रकार की निराशा का सामना करना पड़ता है। जीवन भार-सा दृष्टि गोचर होने लगता है। संकल्प-विकल्पों से मन सन्तप्त रहता है।

सूर्य में शनेरन्तर्दशा फल—शनि सूर्य का परम शत्रु है। अपनी प्रकृति के अनुसार सूर्य में शनि का अन्तर्दशा फल बहुत कुछ राहु की दशा से मिलता-जुलता होता है। इसकी दशा में मनुष्य की बुद्धि भ्रमित सी रहती है जिस कारण कुछ से कुछ कार्य कर बैठता है। पिता-पुत्र की अनबन हो जाती है। दोनों का वियोग हो जाता है। इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव सभी, अपमान करने लगते हैं। शत्रुओं की प्रबलता से चित्त में व्याकुलता रहती है। अधिकार की हानि, पद में गिरावट, व्यवसाय या व्यापार में हानि होती है। राज्य-दंड भय लगा रहता है, नीचजनों की संगति मिलती है, पापेच्छा प्रबल होती है, मानसिक वृत्ति बिगड़ जाने से उन्मादी भाव जागृत हो जाते हैं। आत्महनन करने को जी चाहता है। वृत्ति का ह्रास होने से शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है। चोर, डाकुओं, शस्त्रादि से चोट लगती है, हानि होती है। खुजली, दाद, नासूर, कफ, स्वाँसादि पीड़ायें सताती रहती हैं। स्त्री-पुत्रादि के वियोग का दुख सहना पड़ता है। दाँत, कान, पैर आदि में वायु पीड़ा होती है, यदि शनि ३, ६, ११ स्थान में से किसी एक स्थान में हो तो इतना प्रतिकूल फल नहीं मिलता। मनुष्य को काली वस्तु के व्यवसाय से लाभ तथा मुकदमें में विजय प्राप्त होती, शत्रु दबे रहते हैं। जन्म स्थान से दूसरे स्थान में निवास करने पर अनेक प्रकार से सुख की प्राप्ति होती है।

सूर्य में बुधान्तर्दशा फल—यदि शुभ स्थान गत सूर्य की दशा में शुभ बुध की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य को पीली वस्तु के व्यवसाय से लाभ होता है।

नौकरी में उन्नति की आशा रहती है और अनेक प्रकार से सुख का आभास होता है। शुभ कार्यों में पठन-पाठन के कार्यों में धन का व्यय होता है। शिक्षा कार्य, खेल-कूद, विनोदादि कार्योंमें मन लगता है और चोटें भी लगती हैं, यदि ये दोनों ही या एक ही ग्रह अशुभ भाव में बैठा हो तो मनुष्य को दाद, खुजली, रक्तविकार, पित्त, बिवाई फटना, जूड़ी-ताप चढ़ना, रोगों के उपचार में धन का व्यय होना, मन अशान्त रहना, इष्ट-मित्रों से दुःख मिलना, पराक्रमपूर्ण कार्यों में हतोत्साह रहना, मानसिक वेदना का रहना, अजीर्ण-मन्दाग्नि, जिगर-तिल्ली, कुष्ट रोग आदि होते हैं। यह दशा अच्छी नहीं कही जा सकती।

सूर्य में केत्वन्तर्दशाफल—सूर्य की महादशान्तर्गत केतु दशा का समय राहु के समान ही व्यतीत होता है। क्योंकि शास्त्रकारों ने राहु और केतु को एक ही माना है, ये दोनों ही सूर्य के शत्रु तथा ग्रहणकारक होते हैं जिस प्रकार ग्रहण के लगते ही निर्मल आकाश में सूर्य की प्रभा क्षीण दृष्टिगोचर होती है। सूर्य का कुछ भाग काला तथा कटा-सा दृष्टिगोचर होता, प्रकाश मन्द पड़ जाता, कुत्ते भोंकने तथा रोने लगते हैं, संसार में हाहाकार मच जाती है। उसी प्रकार सूर्य की दशा में राहु या केतु के अन्तर पर मनुष्य के जीवन में एक अन्धकार-सा छा जाता है। चारों तरफ से दुःख, क्लेश, शोक, भय, पीड़ा के बादल आ-आकर बरसने लगते हैं। अपने पराये, इष्ट-मित्र उसका साथ छोड़ देते हैं। जन्म स्थान से दूर जाना पड़ता है बुद्धि भ्रमित-सी रहती है। मन में सन्ताप, कण्ठ रोग, टाँसिल, कैन्सर, नेत्र-सिर पीड़ा, स्वाँस कफ पित्त, मानसिक कष्टादि के कारण आत्महनन करने की प्रवृत्ति हो जाती है। शत्रुता बढ़ती है। पदावनति होती है। धन-धान्य का नाश होता है, अपने परायों से विग्रह होता है। जीवन दुःखी रहता है, पाप वृत्ति बढ़ती है, दुष्ट संगति में रहने पर राज्य दण्ड मिलता है। मृत्यु संवाद सुनने को मिलते हैं।

सूर्य में शुक्रान्तर्दशा फल—यदि सूर्य की महादशान्तर्गत शुभ शुक्र का समय व्यतीत हो तो मनुष्य को अनेक प्रकार के तरल पदार्थों तथा जल पदार्थों, चाँदी, मोती आदि के व्यापार से लाभ होता है। नौकरी में उन्नति, पद वृद्धि, विवाह, पुत्रादि के जन्म से सुख प्राप्त होता है। मनुष्य सात्त्विक वृत्ति से धन संचय में लगा रहता है। प्रतिकूल इसके यदि शुक्र नीच का, अस्त, नीचास्त

या त्रिक स्थान में हो या उनका स्वामी हो तो मनुष्य को अशुभ फल की प्राप्ति होती है, जैसे किसी पतित, नीच स्त्री के सम्भाषण, सम्भोग से अपकीर्ति मिलती है, धन का क्षय होता है। सुरापान कर नीच संगति में रहना पड़ता है। काम वासना प्रबल होती है। स्वप्नदोष-धातु क्षीण, शुक्रविकार, प्रमेह, अतिसार, नजला-जुकाम, पेट दर्द, नेत्र पीड़ा, सिर दर्द आदि रोग होते हैं। पानी में डूबने का समागम होता है। आलस्य-भय-निद्रा बढ़ती है, इस अवस्था में मनुष्य अपनी सत्कीर्ति को खोकर पतन को प्राप्त होता है। परदेश में कष्ट पाता है। व्यवसाय में हानि होती है, जिगर-तिल्ली अर्शादि रोग होते है।

चन्द्र दशा फल

यदि पूर्ण बली, उच्च, स्वगृही चन्द्रमा, केन्द्र त्रिकोण में अशुभ ग्रह की दृष्टि-युति से रहित बैठा हो तो मनुष्य को उसकी शुभ दशा में पदोन्नति, व्यवसाय में वृद्धि, व्यापार में तरल-सुगन्धित वस्तुओं, फूलों, इत्रों आदि से लाभ होता है। जलयात्रा, विदेश गमन होता है। शृंगारी, कविता, लेखादि, नाटकों, नृत्यों, संगीत, वाद्यादि अनेक प्रकार के खेल, तमाशे, धर्म-कर्म, यज्ञ, अग्निहोत्र, भूषण, श्वेत वस्त्र, परोपकार, स्वाध्याय आदि में मन लगता है। दूध-दही, खोवा, मिष्ठान्न, आसन्न, भोजन, फल, शयन, धन-धान्य, भूमि, स्त्री-पुत्रादि सुख की प्राप्ति होती है। वाहन आदि की सवारी सुख मिलता है। और जब चन्द्रमा नीच, अस्त, नीचास्त, शत्रु राशि का त्रिक स्थान में पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त बैठा हो तो मनुष्य को आलस्य, भय, निद्रा, जल में डुबकी खाना, पाप कर्म में रुचि होना, परस्त्री गमन करना, कामासक्त होकर उन्मत्त की भाँति इधर-उधर फिरना, धातु क्षीण, स्वप्नदोष, शुक्र खलित, प्रमेह, वीर्य-विकार आदि के रोगों से पीड़ित होना, पर-स्त्री प्रेम में कुत्सा, अपकीर्ति पाना, नजला, जुकाम, जलोदर, वात रोग होना, धन का ह्रास होना आदि विपरीत फलों से मनुष्य को शारीरिक, मानसिक कष्टों के साथ-साथ मित्र वर्ग से मनमुटाव तथा अनबन रहती है।

ग्रह दृष्टि फल

मेष राशिगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूय दृष्टि फल—यदि मेष राशिगत चन्द्रमा पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य ज्ञानी, ध्यानी, पण्डित, गर्वयुक्त, अभिमानी, धन-धान्य से पूर्ण, ऐश्वर्य-

मय जीवन व्यतीत करने वाला, अपने अधीन मनुष्यों से, सेवकों के साथ दया का व्यवहार करने वाला, राज्यमान, युद्धेच्छा से युक्त, अधिकारी वर्ग को प्रिय होता है।

भौम दृष्टि फल—मेष राशिगत चन्द्रमा पर यदि मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य धर्म भीरु, पराक्रमशील होता है अर्थात् अन्दर से हृदय में झगड़े से डरता है और मौखिक वार्ता में बहादुरी खूब दिखाता है। शस्त्र, अग्नि, विष, वायु, पृथ्वी पर गिरकर चोट लगने का भय रहता है। दाँत, नेत्र, पथरी, शूगर आदि रोगों से बहुत पीड़ा होती है। परोपकारी तथा धार्मिक प्रकृति होने के कारण गरीबों का पालन करता है।

बुध दृष्टि फल—मेष राशिगत चन्द्रमा को यदि बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य अनेक भाषाओं का जानने वाला, कविता, नाटक, ज्योतिष, हस्तरेखा, गणितादि का जानने वाला, संगीतप्रिय, समाज में आदरणीय, धार्मिक, बड़े मनुष्यों की संगति में प्रसन्न रहने वाला, कम धन वाला, स्त्री द्वेषी, स्वजाति प्रेम से रहित, उपकारी, विद्या दान करने वाला, ग्रन्थकर्त्ता, शत्रुद्वेषी, प्रतिशोध-पूर्ण, सरकारी नौकर, एकान्तप्रिय होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि मेष राशिगत चन्द्रमा को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य दर्शनीय तथा बुद्धिमान् होता है। स्वगुणानुकूल सरकारी नौकरी में उन्नति करता है। पुलिस-सेना विभाग की इच्छा रखता है। पर स्त्री प्रेम की इच्छा रखता है, विवाह देर में होता है। नीतिज्ञ, लालची, स्वार्थ-परायण, बन्धु प्रिय, धनवान्, दिखावटी व्यवहारकुशल, अनेक कला सीखने में तत्पर, कविताप्रिय, नाच-गानप्रिय, लेखक, कुछ धर्मभीरु-सा, मन्दाग्नि, वायु, नजला, जुकाम तथा जल में डुबकी खाने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मेष राशि का चन्द्रमा लग्न में हो और उसे शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य हँसमुख, दर्शनीय, पर स्त्री प्रेम में रत, प्रेम विवाह करने वाला, अनेक स्त्रियों से भोग करने वाला, कामासक्त, पापरत, पढ़ने-लिखने में चतुर, दूध, घी, खोवा, मिष्ठान्नादि के साथ फल, रस, अर्क, शर्बतादि का पीने वाला, कलाकार, शिल्पी, शृंगारी, सुगन्धि युक्त वस्तुओं

का रखने वाला, इष्ट-मित्रों से युक्त, सरकारी ठेकेदार, वीर्यपतन, शुक्रक्षीण, प्रमेह, धातु विकारादि रोग होते हैं।

शनि दृष्टि फल--यदि मेष राशिगत चन्द्रमा को शनि देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, नीच संगति में रहने वाला, रोगी, हठी, झूठा, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से द्वेष करने वाला, पापरत होता है। कामासक्त, मुष्टि मैथुन से वीर्य नष्ट करने वाला, कलुषित विचार, निर्धन तथा श्यामवर्ण होता है। स्त्री से विचार-विनिमय न होने के कारण घर में कलह रहती है।

वृष राशिगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल--वृष राशिगत चन्द्रमा उच्च का समझा जाता है। यदि वृष के चन्द्रमा को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, परिश्रमी, पशुपालक, वाहन युक्त, कृषि कर्म रत, धन-धान्य से पूर्ण, पर स्त्री प्रेम रत, सरकारी नौकर, शेष सभी फल वृश्चिक राशिगत सूर्य पर चन्द्र दृष्टि फल के समान ही होते हैं, पाठक वहाँ देखें।

भौम दृष्टि फल--यदि वृष राशिगत चन्द्रमा पर (यदि चन्द्रमा पंचम में हो) मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य माता-पिता से अनबन रखने वाला, बुद्धिमान्, पढ़ने-लिखने में चतुर, पुत्र सुख से रहित, अत्यन्त कामी, अपनी स्त्री के होते हुए पर स्त्रियों के पीछे लम्पट की भाँति दौड़ने वाला, हँसमुख, क्रोधी, अनेक मित्रों वाला होता है। इसकी माता सत्कर्मी, धार्मिक होती है। सरकारी नौकरी में विशेष उन्नति नहीं होती, उत्थान-पतन देखना पड़ता है।

बुध दृष्टि फल--यदि उच्च के चन्द्रमा को बुध देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, चतुर, अनेक भाषाएँ जानने वाला, कलाकार, लेखक, गणितज्ञ संगीतज्ञ, कवि तथा दूसरों के प्रपंच को जानने वाला, स्पष्टवक्ता, शत्रुओं से युक्त, पुत्र सुख से रहित, एकान्त में सुख पाने वाला, परोपकारी, दीनों पर दया करने वाला, सौन्दर्य का मूल उपासक, प्रतिशोध पूर्ण भावना से युक्त, अपने साथियों में आदरणीय होता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि उच्च का चन्द्रमा, गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, गर्व युक्त, माता-पिता की सेवा में उनका धन हरण करने वाला, यदि ये दोनों ही ग्रह केन्द्र त्रिकोणगत हों तो शुभ फल करते हैं। मनुष्य प्रसिद्ध

पण्डित, समाज में आदर पाने वाला, परोपकारी तथा धार्मिक होता है। अन्यथा, झूठी, कामी, घमण्डी, पापी, पढ़ने से जी चुराने वाला, घर से भागने वाला, कुसंगति में पर-स्त्री प्रेम में कष्ट तथा अपयश पाने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि वृष राशिगत चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो मनुष्य अति दर्शनीय, अपने सौन्दर्य पर मुग्ध रहने वाला तथा गर्व करने वाला, शृंगारी, कवि, लेखक, नृत्य, संगीत प्रिय, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाला, सुगन्धयुक्त रहने वाला, सवारी सुख से युक्त, इष्ट-मित्रों को प्रिय, अनेक स्त्रियों के प्रेम में रत, स्वार्थपूर्ण, सरकारी नौकरी में प्रसन्न रहने वाला होता है। ऐसे मनुष्य २०–२४ वर्ष की अवस्था में किसी युवती के प्रेम में फँस कर अपने चरित्र को दूषित कर लेते हैं और अन्तिमावस्था में कष्ट पाते हैं।

शनि दृष्टि फल—यदि उच्च के चन्द्रमा को शनि देखता हो तो मनुष्य कम पढ़ने वाला, माता या पिता के सुख से रहित, स्त्री स्वयं या पुत्रादि में से कोई न कोई कष्ट में रहने वाला, निर्धन, स्त्री से अनबन रखने वाला, घर पर जम कर न रहने वाला, नौकरी में सदा अप्रसन्न, दृढ़ व्रती, शुभ कार्य के लिए अवकाश न पाने वाला, तिनक वाला होता है।

मिथुन राशिगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—मिथुन राशिगत चन्द्रमा को यदि सूर्य देखता हो तो मनुष्य अच्छे स्वभाव वाला, ज्ञानी तथा धनहीन सा होता है। धार्मिकता तथा अन्य सभी फल धनगत सूर्य पर चन्द्र दृष्टि फल के समान ही होते हैं, पाठक वहाँ देखें।

भौम दृष्टि फल—यदि मिथुनगत चन्द्रमा को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य समयानुकूल परिवर्तनशील स्वभाव का होता है। कभी अति कोमल, तो कभी अति उग्र होकर अपना कार्य निकाल लेता है। कृषि, बाग, उद्यान, फल, तरल पदार्थों का अत्यन्त शौकीन होता है। वाहन रखने वाला, अत्यन्त कामी, नीच स्त्री के बलात्कार से अपयश पाने वाला, चंचल नेत्र, व्याकुल हृदय, क्षणिक मित्रता से युक्त, माता-पिता की सम्पत्ति से रहित होता है, अनेक कार्य करने पर भी सफलता कम होती है। नेत्र ज्योति कम ही रहती है।

बुध दृष्टि फल—यदि मिथुन राशिगत चन्द्रमा को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य धैर्यवान्, गम्भीर, नीतिज्ञ, कार्यकुशल, परिश्रमी, धन कमाने में तल्लीन, सरकारी नौकरी में खुशामद से कार्य चलाने वाला, दिखावटी, सदाचारी, परस्त्रियों को ताकने वाला, ईर्ष्यालु, मिलनसार, माता-पिता, भाई-बन्धु के सुख से सुखी, गृहस्थ जीवन से दुखी होता है। इसकी स्त्री सदा कलह करने वाली, निर्लज्ज तथा पुत्र द्वेषी होती है। घर में झगड़ा रहता है।

गुरु दृष्टि फल—मिथुन राशिगत चन्द्रमा को यदि बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य कार्य कुशल, नीतिज्ञ, साक्षर, पढ़ा-लिखा, उच्चाभिलाषी, उच्च संगति मे प्रसन्न रहने वाला, धार्मिक, दूसरों के काम आने वाला, प्रतिष्ठित, कृपण, लोभी तथा सौन्दर्य पिपासा से युक्त, घर के सभी कर्म हाथ से करने वाला, अनवरत स्त्री से विचार-विनिमय न हो सकने के कारण घर में पुत्रादि से कलह रहती है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मिथुन राशिगत चन्द्रमा को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो बुद्धिमान्, पढ़ने-लिखने में मन लगाने वाला, वस्त्र, वाहन, पुष्प, सुगन्धि आदि से युक्त, चलचित्त, चंचल नेत्र, कामासक्त, सुन्दर स्त्रियों को चाहने वाला, आकर्षित आकृति, प्रेम विवाह में तल्लीन, संगीत, फर्नीचर, वाद्य, कलापूर्ण चित्रों को बनाने वाला या उनसे अपने कमरे को सजाने वाला, प्रेम की प्यास हृदय में छिपाकर बात करने वाला, स्त्रियों की स्पर्धा का विवेचन करने वाला होता है। ऐसे स्त्री-पुरुष, सिनेमा में कार्य करने वाले ऐक्टर या ऐक्ट्रस होते हैं। थियेटर, सांग, सिनेमा पात्र या फिर देखने के शौकीन होते हैं।

शनि दृष्टि फल—यदि मिथुन राशिगत चन्द्रमा को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, शान्त, उदास, एकान्त में विषय वासना की चिन्ता करने वाला, वायु-जलादि से भय खाने वाला, नजला-जुकाम, पेट दर्द से पीड़ित, अजीर्णादि रोग होते हैं। धन, स्त्री, पुत्रादि सुख कम होता है। बन्धु-बान्धवों से अनबन, वाहन, शस्त्र, विषादि से हानि होती है। मनुष्य कुकर्म की ओर झुकता है। जीवन में निराशा रहती है, किन्तु जिस कार्य को करने की ठानते हैं उसे पूर्ण रूप से करके ही छोड़ते हैं।

कर्क राशिगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि स्वगृही चन्द्रमा सूर्य से दृष्ट हो तो मनुष्य गुणी, कलाकार होता है किन्तु सूर्य से दृष्ट होने पर उसका उपयोग नहीं हो पाता, सैनिक, सिपाही, रक्षक आदि का भार सँभालना पड़ता है। हृदय अशान्त रहता है। शेष सभी फल मकर गत सूर्य के समान ही होते हैं। स्त्री सुख कम ही रहता है।

भौम दृष्टि फल—यदि स्वगृही चन्द्रमा को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मातृ विरोधी वार्ता करने वाला, कृशगात, दुर्बल देह, साहसी बातें करने वाला, नीतिज्ञ, रक्त-पित्त विकार से युक्त, जल में डुबकी खाने वाला, आवेश पूर्ण स्त्री पुत्रादि से कलह रखने वाला, विवाह देर में होता है, अनेक कठिनाइयाँ पड़ती है, नीच प्रकृति वाला, अर्श, रक्तातिसार, शस्त्रादि से भय खाने वाला, भीरु प्रकृति होता है।

बुध दृष्टि फल—स्वगृही चन्द्र यदि बुध से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य गुणवान्, नीतिज्ञ, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, वकील, मुख्तार, स्वतन्त्र व्यवसाय वाला, सबका प्यारा, सभा में प्रधान पद पाने वाला, आदरणीय तथा विद्वान् होता है, कलापूर्ण कार्यों में यश तथा पारितोषिक पाने वाला, पुत्र विरोधी कार्य करने वाला, कुछ धार्मिक होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि कर्क के चन्द्रमा को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, गुणवान्, बुद्धिवान्, मस्तिष्क शक्ति से समाज में उच्च पद पाने वाला, श्रेष्ठ राज्याधिकारी, सर्वत्र सत्कार पाने वाला और अनेक गुणों से युक्त होता है। इसकी पत्नी सुन्दर गुणों से युक्त होती है। पुत्र पदाधिकारी होते हैं, किन्तु आज्ञाकारी नहीं होते। ऐसे योग वाले मनुष्य कामासक्त होते हैं, परस्त्री की लालसा रखते हैं, किन्तु अपना यश, मान, कीर्ति के लिये सब कुछ त्याग कर देते हैं।

शुक्र दृष्टि फल—जिसके स्वगृही चन्द्रमा को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो वह मनुष्य विषय-वासना प्रवीण होता है। पढ़ने-लिखने में मन कम लगाने पर भी किसी कला में प्रवीण रहता है, जिससे आजीविका भली प्रकार चलती रहती है। माता पिता के विपरीत आचरण करता है। उसका सौन्दर्य स्त्रियाँ

को मोहने के लिये काफी सामग्री रखता है। इसलिये छोटी अवस्था से ही पतन को प्राप्त हो जाता है। परस्त्री गमन, वेश्यागमन उसके लिये साधारण सी बात रहती है। शृंगारी कवितायें, अश्लीलता पूर्ण गाने, खेल, तमाशे, नृत्य उन्हें बहुत प्रिय लगते हैं। हाव-भाव, मधुर वाणी द्वारा दूसरे व्यक्तियों से धन ठगना भी उन्हें अच्छी तरह आता है।

शनि दृष्टि फल--यदि कर्क राशिगत चन्द्रमा को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य अश्लील वक्ता, झूठ बोलने वाला, माता से अनबन रखने वाला, कामी, भीरु प्रकृति, मित्रों में बढ़-चढ़कर बात करने वाला, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, विवाह देर में करने वाला, वीर्य सम्बन्धी दोष से युक्त, पीलिया, वायु रोग से पीड़ित, शुक्र क्षीण, प्रमेहादि रोग से उदास रहता है। पानी में डुबकी खाने वाला, गुरुजनों का द्वेषी, अधर्म में रुचि रखने वाला, विदेश यात्रा का शौकीन, मन्दगति, चंचल हृदय, क्षीण शक्ति प्रवीण होता है।

सिंह राशि गत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—सिंह राशिगत चन्द्रमा को यदि सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, गुणवान्, राज्यसेवक, उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, सन्तप्त, आवेश पूर्ण, पर स्त्री की लालसा करने वाला, पाप रत रहता है, सन्तान देर से होती है, शेष फल कुम्भ के सूर्य के समान ही होते हैं।

भौम दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत चन्द्रमा को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य पुलिस, सेना विभाग में साहस तथा पराक्रम पूर्ण कार्यों के लिये पारितोषिक तथा कीर्ति पाने वाला, स्त्री, पुत्र, धन, वाहन, कृषि तथा अचल सम्पत्ति से युक्त होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, धर्मभीरु होता है।

बुध दृष्टि फल--सिंह राशिगत चन्द्रमा को यदि बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य गुणवान्, विनोदी प्रकृति, हास्य मुख, आवेश युक्त, स्त्री सुख से सुखी, पुत्र से कलह रखने वाला, धन-धान्य पूर्ण, सब प्रकार से सुखी, स्त्री प्रेमरत, सदा मान पाने की इच्छा रखने वाला, वा८न युक्त, यात्रा प्रिय होता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि सिंह राशिगत पूर्ण चन्द्रमा को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य की बुद्धि पढ़ने-लिखने में बड़ी तीव्र होती है। ऐसा मनुष्य धर्मशास्त्र ज्ञाता, बड़ा विद्वान्, गर्व युक्त, प्रधानपद पाने वाला, समाज में सत्कार पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, परोपकारी, धार्मिक तथा दानी होता है।

शुक्र दृष्टि फल--सिंह राशिगत पूर्ण चन्द्रमा को यदि शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य गुणवान्, शास्त्रज्ञाता, विद्वान् मण्डली में शोभा पाने वाला, पर स्त्री प्रेम रत, उससे धन पाने वाला, सुन्दराकृति, कोमल वाणी, कवि, लेखक, नृत्य संगीत प्रिय, जोवन के रहस्य को समझने वाला, कामशास्त्र प्रवोण होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत चन्द्रमा को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य कम पढ़ा-लिखा, कृषक या पुलिस, सेना विभाग में कार्य करने वाला, लोहे, कोयले का कार्य करने वाला, झूठ बोलने वाला, प्रपंची, धन हीन, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित, कामातुर, वीर्यदोष से युक्त, वायु पीड़ित होता है।

कन्या राशिगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—कन्या राशि गत चन्द्रमा को यदि सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, गणितज्ञ, विद्वान्, धार्मिक, कोषाध्यक्ष तथा क्लीब प्रकार का होता है। स्त्री-पुत्रादि सुख बहुत कम होता है। शेष फल मीन राशिगत सूर्य के समान होते हैं।

भौम दृष्टि फल—यदि कन्या राशिगत चन्द्रमा को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही शक्तिशाली, शूर-वीर, सर्वत्र विजय पाने वाला, शिक्षित-शिल्पज्ञ, हिंसक, आखेट प्रिय, क्रोधी, मातृकष्टदा, नोच स्त्री में रत, रक्त, पित्त, शुक्र, जलोदरादि से पीड़ा पाता है।

बुध दृष्टि फल--यदि कन्या राशिगत चन्द्रमा को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य कवि, लेखक, गणितज्ञ, ज्योतिष, हस्त सामुद्रिक, संगोत, वाद्यादि का जानने वाला, विद्वानों में आदर पाने वाला, तर्कशिरोमणि, साहसी, कोमल प्रकृति का होता है। अपरजन उससे ज्ञान पाने के लिये उसका सहवास करते हैं, शेष फल मिथुन राशि जैसे होते हैं।

गुरु दृष्टि फल--कन्या राशिगत चन्द्रमा पर यदि गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य तीव्र बुद्धि, बड़ा विद्वान्, सरकारी उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, बन्धु-बान्धव प्रिय, कोमल हृदय, धार्मिक, अचल कीर्ति वाला, अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त, स्त्री-पुत्रों के सुख से सुखी, शुद्ध भोजन करने वाला, परस्त्री प्रेमरत होता है।

शुक्र दृष्टि फल--यदि कन्या राशि के चन्द्रमा को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, प्रपंचकारक, राज्यसेवी, अनेक प्रकार के शृंगारों, अलंकारों से युक्त, क्लीब प्रकृति, चरित्रहीन, वेश्यागामी तथा परस्त्री गामी होता है, इसकी स्त्री भी पर पुरुष को चाहती है। धन-युक्त, चतुर, पर द्रव्य भोक्ता, निर्लज्ज, अश्लील, चिवल्ला होता है, प्रमेह, स्वप्नदोष, स्खलितवीर्य तथा क्षय रोगी भी होता है।

शनि दृष्टि फल--कन्या राशिगत चन्द्रमा को यदि शनि देखता हो तो मनुष्य क्लीब प्रकृति, पापरत, स्नानागार में वीर्यपात करने वाला, नेत्र-विकारी, धन-बुद्धि-हीन, सदैव स्त्री-वार्ता में रत, मातृपक्ष की हानि चाहने वाला, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित, प्रपंच से धन पाने वाला, ठग, चोर तथा वायु, शस्त्र, जल से भयभीत रहता है।

तुला राशिगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—तुला राशिगत चन्द्रमा पर यदि उच्च के सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रमित सी रहती है। व्यर्थ का परिभ्रमण होता है। शत्रुओं की वृद्धि होती है। स्त्री-पुत्र, मित्र-बन्धुओं से सुख नहीं मिलता, मन सन्तप्त, चित्त की वृत्ति खिन्न तथा उदास रहती है। पित्त, वात, नजला, जुकाम, अग्नि-पानी से भय रहता है, परस्त्री की इच्छा होती है।

भौम दृष्टि फल--यदि तुला राशिगत चन्द्रमा को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य नीच कर्म करने वाला, कपटी, दूसरे के धन को हड़प करने की इच्छा रखता है। विषय-वासना की तृप्ति के लिये किसी नीच जाति की स्त्री से सम्बन्ध रखता है। हृदय में बेचैनी, नेत्र में पीड़ा, रक्त विकार, पित्तादि से पीड़ा पाता है। और दुखी रहता है।

बुध दृष्टि फल--तुला राशिगत चन्द्रमा पर यदि बुध की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, कलापूर्ण कार्यों का ज्ञाता तथा उसके मर्म को जानकर प्रशंसा करने वाला, कवि, लेखक, नृत्य-संगीत का जानने वाला, सभा का प्रमुख वक्ता तथा प्रधान पद पाने वाला, धन-धान्य से पूर्ण, सुन्दर स्त्री वाला, पुत्र से कलह रखने वाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक, बाग, जलाशय, पर्वत, नदी, झरने आदि से प्रसन्न होता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि तुला राशिगत चन्द्रमा को वृहस्पति देखता हो तो मनुष्य, अच्छो बुद्धि वाला, कुशल व्यापारी, नीतिज्ञ, सुन्दर तथा तरल पेय पीने वाला, सुन्दर स्त्री से युक्त, धार्मिक, दानी, उपकारी, उच्च विचार, श्वेत वस्त्रों को धारण करने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल--यदि तुला राशिगत चन्द्रमा को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य अनेक कलापूर्ण कार्यों द्वारा धन कमाने वाला, नीतिज्ञ, स्वस्थ, हँसमुख, शृंगारी, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, प्रेम विवाह रत, धातु विकार युक्त, मृदुभाषी, इष्टमित्रों से युक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—तुला राशिगत चन्द्रमा को यदि शनि देखता हो तो मनुष्य धन-धान्य युक्त, नीति-निपुण, यथार्थ भाषण करने वाला, धर्म-कर्मरत, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित, एकान्त में परस्त्री-प्रेम की चिन्ता करनेवाला, जल यात्रा में भय पाने वाला, एक साधारण-सा व्यक्ति होता है। और उदासीन सा रहता है।

वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल--वृश्चिक राशि में चन्द्रमा नीच हो जाता है, इसकी प्रकृति भी नीच हो जाती है। यदि इसे सूर्य देखता हो तो मनुष्य नीच कर्म करने वाला, हठी, जिद्दी, अपढ़, छोटे-छोटे उद्योगों से आजीविका कमाने वाला, लड़ाई को तत्पर, नीच स्त्री का प्रेमी तथा अपयशी होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य असाधारण रूप से बहादुर होता है। पुलिस-सेना विभाग में ख्याति पाता है, कभी-कभी ऐसे मनुष्य डाकुओं के रूप में भी पाये जाते हैं। लड़ाई करना, आग लगाना, पर स्त्री प्रेम में उन्मत्त रहना, शराब पीना, नशे करना, चाहे जैसे हो धन जमा करना, शस्त्र, जल से भय खाना किसी को मार देना तथा किसी कार्य में लज्जित होकर आत्महनन कर लेना आदि भी कर लेते हैं।

बुध दृष्टि फल--वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा को यदि बुध देखता हो तो मनुष्य उद्दण्ड, नीच प्रकृति, अनेक शृंगारी भावों से मन को लुभाने वाला, पापी, लम्पट, छोटे बालकों से विषय की भावना रखने वाला, नीच संगति, नीच जाति

की स्त्री को प्रेम करने वाला, अश्लील शब्दों का प्रयोग करने वाला, दुष्ट, अपयशी तथा कलंकी होता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा को वृहस्पति देखता हो तो मनुष्य चतुर तथा परतन्त्र व्यवसाय से आजीविका पाने वाला, शुभाशुभ कर्म करने वाला, शृंगारी, हठी, इन्द्रिय, लोलुप धन-धान्य पूर्ण, दर्शनीय तथा नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा को यदि शुक्र देखता हो तो मनुष्य कोमलांग, मधुभाषी, लज्जित स्वभाव वाला, कामासक्त, नीच स्त्रियों के प्रेम में धन को व्यय करने वाला, पापरत शृङ्गारी, अश्लील भाषा का प्रयोग करने वाला, कवि, लेखक या कलाकार होता है, नाटक में पुरुष-स्त्री पात्र का पार्ट अदा करने वाले होते हैं।

शनि दृष्टि फल--यदि नीच के चन्द्रमा को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य कृष्ण वर्ण, नीच प्रकृति, नीच संगति, नीच कर्मरत होता है। धर्म हीन, धन हीन, बुद्धि हीन तथा पराक्रम से हीन होता है। कपटी, कृपण, हाथ से वीर्य नष्ट करने वाला, पापी, लम्पट, पर दारगामी, पुत्रों द्वारा ही पराभव को प्राप्त होता है, वात, जल, कफादि का रोगी होता है।

धन या मीन राशि गत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि धन मीन राशि गत चन्द्रमा को सूर्य देखता हो तो मनुष्य साहसी, प्रतापी, धन-धान्य पूर्ण, वाहन सुख से युक्त, पुलिस-सेना विभाग में अधिकार प्राप्त करने वाला, कृषि, दमकल नौकरी में तत्पर, कामासक्त, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी, प्रतिष्ठावान, समाजसेवी, परस्त्रियों से प्रेम वार्ता करने वाला, जलयात्रा, जलविनोद करने वाला, पित्त, प्रमेहादि रोगी होता है।

भौम दृष्टि फल—धनगत चन्द्रमा को मंगल देखता हो तो मनुष्य पराक्रमी, वीर, सेनाधिकारी, धन-धान्य सेवक, स्त्री-बच्चों का सुख भोगने वाला, सत्कर्मी होता है। मीन गत चन्द्रमा को देखने पर मनुष्य नीच प्रकृति, दुश्चरित्र, व्यभिचारी, शत्रुओं से भय खाने वाला, भीरु प्रकृति दुर्व्यसनों में पड़ कर प्रतिष्ठा को खोने वाला, समाज से बहिष्कृत-सा रहता है। शराब-जुआदि का व्यसन होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि धन या मीन राशिगत चन्द्रमा को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मधुभाषी, दर्शनीय, शिल्पज्ञ, गणितज्ञ, ज्योतिष, हस्त-सामुद्रिकादि जानने वाला, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी, प्रतिष्ठित, राज्यप्रासाद पाने वाला, सरकारी नौकर, कन्यावान, समाज में आदरणीय, अनेक कलाओं से पूर्ण होता है। बाल्यावस्था में धोखा खाता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि धन मीन राशिगत चन्द्रमा को गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, धनवान्, उच्चविचार, उच्चाधिकार पाने वाला, शुद्ध हृदय, स्पष्टवक्ता, दर्शनीय, धार्मिक, उदार, परोपकारी, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी, ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला, सबका प्रिय, समाज सेवक, राज-नीतिज्ञ, गुरुजनों का सत्कार करने वाला, कामासक्त होता है।

शुक्र दृष्टि फल—धन-मीन राशिगत चन्द्रमा को यदि शुक्र देखता हो तो मनुष्य श्रेष्ठ संगति में रहने वाला, उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, दर्शनीय, धन-धान्य, कलापूर्ण कार्यों में दिलचस्पी लेने वाला, गायन-वादन प्रवीण, कवि, लेखक, नाटकी, कामी, वेश्यागामी, हँसमुख, शृंगारी, प्रेम विवाह करने वाला, स्वप्नदोष, धातु क्षीण, प्रमेह, नजला, मन्दाग्नि आदि रोगों से पीड़ित होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि धन-मीन राशिगत चन्द्रमा को शनि देखता हो तो मनुष्य, हठी, स्वप्रमाण को सत्य मानने वाला, बुद्धि-बल तथा धन से रहित, संसार से उदास, हृदय में द्वेषाग्नि वाला, नीचों में यश पाने वाला, बड़ी अवस्था वाली स्त्री से रति इच्छा रखने वाला, माता-पिता से कलह करने वाला, पुराना वस्त्र धारण करने वाला, पापरत ही रहता है।

मकर कुम्भगत चन्द्रमा पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि मकर-कुम्भगत चन्द्रमा पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य मलिन मति, मलिन वस्त्र, कृषि कर्म करने वाला, सिपाही, या सैनिक, थोड़ी आय वाला, जल से भय खाने वाला, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित, निर्धन जैसा होता है।

भौम दृष्टि फल—मकर-कुम्भगत चन्द्रमा पर यदि मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बड़ा ही क्रोधी, प्रतिशोध की भावना रखने वाला, स्त्री-पुत्रादि निजी सम्पत्ति का ऐश्वर्य भोगने वाला, उदार, सत्यवक्ता, अपनी हठ को पूर्ण करने

वाला, माता-पिता के धन का त्यागी, जलक्रीडा में प्रवीण, किन्तु जल भय पाने वाला, नीच स्त्री से प्रेम करने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि मकर कुम्भगत चन्द्रमा को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य चालाक किन्तु बुद्धिहीन होता है। धनहीन होने के कारण स्त्री-पुत्रादि के सुख से वंचित रहता है और जन्मस्थान को छोड़कर किसी और जगह आजीविका को प्राप्त करने जाना पड़ता है। चंचल नेत्र, चलचित्त, धूर्त, दीर्घसूत्री तथा कामासक्त होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब मकर-कुम्भगत चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो मनुष्य नीतिज्ञ, धन-सम्पत्ति, जायदाद, बागादि के सुख का भोगने वाला, स्त्री-पुत्र, इष्टमित्र, बन्धु-बान्धवों के सुख से युक्त, सबको प्रिय, साहसी, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाला, उच्च विचार, सादा जीवन व्यतीत करने वाला, स्त्री सौन्दर्य का उपासक, सुस्वाद भोजन करने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मकर कुम्भगत चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो मनुष्य प्रपंची, नीति में निपुण, नीच की संगति में रहकर अपयश पाने वाला, भीरु प्रकृति, पाप युक्त, स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्रादि के सुख से रहित, दीन की भाँति फिरने वाला, अश्लील शब्द प्रयोग करने वाला विधर्मी, विजाती स्त्री से प्रेम विवाह करने में तत्पर, वीर्य विकार से युक्त, तुच्छ जन होता है।

शनि दृष्टि फल—मकर कुम्भगत चन्द्रमा को यदि शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य आलसी, पराक्रम शून्य, शठ, हठी, हीन बुद्धि, पापरत, परदार गामी, किसी वृद्धा की इच्छा करने वाला, भैंस का दूध बेचने वाला, पशु व्यवसायी, लोहे-कोयले का व्यापारी जल भय से युक्त, शस्त्र प्रहार से ताड़ित, अनेक व्यसनों में संलग्न, सन्तप्त हृदय, उदास, दीर्घसूत्री, द्वेषी, दूसरों का बुरा चाहने वाला होता है।

चन्द्र में चन्द्रान्तर्दशा फल—यदि चन्द्रमा की दशा में चन्द्रमा का ही अन्तर हो और चन्द्रमा भी पूर्ण शुभ स्थानगत हो तो मनुष्य को विद्या, कला-पूर्ण कार्यों में सफलता मिलती है। संगीत, वाद्य, श्वेत वस्त्र, साधु संगति, स्वास्थ्य सौख्य, धन-धान्ययुक्त, तरल पदार्थ, अनेक प्रकार के फल, दूध,

दही, खोये का सामान, अनेक प्रकार के मिष्ठान्न, जल पदार्थ, सुन्दर स्त्री, जल, क्रीडा, समुद्र यात्रा, उद्यान, उपवन, पर्वत, नदी, जलाशय, झरने, हिमादि की सैर करने को मिलती है। सुन्दर भोजन, आसन, रहने को निवास स्थान, वाहन की सवारी सुख, कृषि, भूमि आदि से लाभ होता है। अनेक स्त्रियों से समागम होता है, स्त्री-पुत्रादि-कन्या सुख होता है सगे-सम्बन्धियों से धन का लाभ होता है। समाज में आदर होता है। सरकारी नौकरी में उन्नति होती है। नेवी (नाविक वेड़ा) सैनिक विभाग में कीर्ति, विजय तथा पारितोषिक प्राप्त होते हैं। नये-नये मित्रों से सहयोग मिलता है। माता को कष्ट होता है, अशुभ चन्द्रंदशान्तर में मनुष्य को आलस्य, भय, निद्रा, पर-स्त्री प्रेम में अपयश, जल में डुबकी खाना, शुक्रक्षय, स्वप्नदोष, प्रमेह, धातु विकार, काम की प्रवलता, पुत्र से कलह, नजला, जुकाम, शीतज्वरादि से पीड़ा होती है, मनुष्य काम से विकल हो जाता है।

चन्द्र में भौमान्तर्दशा फल—यदि चन्द्रमा की दशा के मध्य में मंगल का अन्तर हो तो मनुष्य को अवस्था भेद से अनेक प्रकार शुभा शुभ फलों की प्राप्ति होती है। इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, स्त्री-पुत्रादि से विरोध, अनबन तथा कलह रहती है। धन-धान्य, पैतृक सम्पत्ति तथा निवास स्थान का त्याग करना पड़ता है। बुद्धि भ्रमित हो जाती है, माता-पिता से विचार-विनिमय नहीं हो पाता, कलह रहती है, शरीर में क्रोध की मात्रा बढ़ जाती है। सदा आवेश बना रहता है। रक्तविकार, रक्तचाप, अर्श, पित्त-रक्तातिसार आदि रोगों से कष्ट मिलता है। किसी वलात्कार चेष्टा से अपयश मिलता है, शत्रुओं, चोरों तथा अनल प्रकोप से हानि होती है। बिजली से झटका लगता है। और भी जल-स्थल सम्बन्धी हानि होती है। पानी में डूबना, वृक्ष-मकान तथा ऊँची जगह से गिरना, पशुओं से, शस्त्रादि से चोट खाना, नकसीर फूट पड़ना, नासूर तथा घाव हो जाना, उसकी चिकित्सा में धन-व्यय होना, अशुभ तथा नीच कर्मों में रुचि बढ़ना, क्लेश भय,पीड़ा, दुख-दर्द, दारिद्र्यादि से मनुष्य दबा रहता है। यह दशा अशुभ होती है।

चन्द्र में राहोरन्तर्दशा फल—यदि चन्द्रमा की महादशा में राहु का अन्तर वर्तता हो तो मनुष्य को अधिकतर सूर्य महादशा के समान ही फल मिलता है, क्योंकि चन्द्रमा भी सूर्य के समान ही राहु का शत्रु है। शत्रु दशा का फल

विपरीत होता ही है। इस दशा में मनुष्य की बुद्धि मलिन, भ्रमित-सी रहती है। विद्यार्थीगण परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाते तो तीसरे दर्जे में, व्यापारियों का व्यापार, व्यवसायियों का व्यवसाय, नौकरी करने वालों की नौकरी शिथिल पड़ जाती है, दूसरे व्यक्तियों को भोजन तक ठीक समय पर नहीं मिल पाता, अनेक रोग लग जाते हैं। हैजा, चेचक, म्यादी बुखार, प्लेग, काला बुखार आदि से कष्ट होता है, शत्रुओं से कलह, मुकदमा चलता है। मुकदमों में तथा रोग चिकित्सा में धन व्यय होता है, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु तथा स्त्री-पुत्रादि से कष्ट मिलता है। निवास स्थान बदलना पड़ता है, यात्रा में कष्ट, अग्नि, जल, चोर, विषादि का भय होता है। धातु क्षीण, प्रमेहादि के कारण क्षय रोग होने का भय रहता है। नीच कर्म करने में प्रवृत्ति लगती है, मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली, पित्तादि रोगों से कष्ट होता है। स्थान प्रभाव से जो कष्ट भी न हो जाय वही थोड़ा है।

चन्द्र में गुरोरन्तर्दशा फल--जब चन्द्र महादशा में वृहस्पति का अन्तर वर्तता है तो मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि होती है बुद्धि धर्माधर्म के विवेचन करने में स्थिर हो जाती है, मनुष्य का मन पुरुषार्थ, उपकार, दान धर्म, स्वाध्याय, यज्ञादि में खूब लगता है, मांगलिक कार्यों में धन व्यय होता है। उत्सवों में उत्साह होता है, अविवाहितों का विवाह भी हो जाता है। विवाहितों को सन्तान-पुत्रादि की प्राप्ति होती है। शरीर निरोग रहता है। वाहन (साइकिल, स्कूटर, मोटर) आदि का सुख होता है। नवीन वस्त्र बनाने में तथा धारण करने में रुचि बढ़ती है। नौकरी में पद वृद्धि (एडवान्स इन्क्रीमेंट, ओनोरेरियम), पारितोषिक मिलते हैं, व्यापार तथा व्यवसाय में अत्यधिक लाभ होता है। मुकदमे में विजय प्राप्त होती है। तीर्थ यात्रा में सुख मिलता है और किसी न किसी मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

चन्द्र में शन्यन्तर्दशा फल—यदि चन्द्र महादशा में शनि की अन्तर्दशा व्यतीत होती हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रमित सी रहती है, किसी कार्य में दिल नहीं लगता, आलस्य, शत्रुभय, पीड़ा आदि वात रोग बढ़ते हैं, मनमें उद्विग्नता, चित्त में निराशा, खिन्नता, उदासी, पेट में दर्द, गठिया आदि रोग होते हैं। माता या स्त्री को कष्ट होता है। तर्क व्याख्यानादि में पराजय होती है। इष्ट-मित्रों से अनबन, यात्रा में कष्ट तथा हानि होती है। काम वासना प्रबल होती है। नीच

जाति की स्त्री से प्रेमवार्तालाप में अपयश, पुत्रादि से कष्ट तथा शोक प्राप्त होता है। मन्दाग्नि, जिगर, तथा हाथ-पैरों में सूजन, अण्डकोष वृद्धि, जलोदरादि रोग होते हैं, कई प्रकार से हानि होती है।

चन्द्र में बुधान्तर्दशा फल—जब चन्द्रमा को महादशा के अन्तर्गत, बुध का अन्तर वर्तता हो तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक होती है। पढ़ने-लिखने, कविता, लेख, नाटक, संगीत, वाद्य, खेल, तमाशों में खूब मन लगता है किन्तु इच्छानुकूल पूर्ण फल की प्राप्ति कभी नहीं होती, यद्यपि अनेक प्रकार से व्यापार, नौकरी, व्यवसाय, कलापूर्ण कार्यों में लाभ होता है। यात्रा सुखद, जयकारक तथा लाभ-प्रद रहती है, नये-नये प्रकार के वाहनों की सवारी का अवसर प्राप्त होता है। मामा, नाना, माता, इष्ट मित्रों से सत्कार तथा धन का लाभ होता है। वस्त्रा-भूषण का भी आगमन होता है। जल यात्रा से सुख मिलता है। अनेक प्रकार से धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। मनुष्य सुखी रहता है फिर भी पुत्र से कलह या पुत्र चिन्ता बनी रहती है, कन्या जन्म सुखकर रहता है।

चन्द्र में केत्वन्तर्दशा फल—जैसा कि हम पहले कह आये हैं कि राहु और केतु, चन्द्रमा और सूर्य के परम शत्रु हैं जिस प्रकार ग्रहण के समय आकाश और पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता है उसी प्रकार चन्द्रमा की महादशा के अन्तर्गत राहु या केतु का अन्तर आते ही मानव सम्बन्धित जीवन में उथल-पुथल मच जाती है और कोहराम मच जाता है, सभी कार्य उलटे होने लगते हैं। मनुष्य का मन नीच कर्मों की तरफ जाता है। चित्त में चंचलता, उद्वेग, शोक, भय, पीड़ा रहती है। धन की हानि होती, स्त्री-पुत्र, भाई-बन्धुओं से कलह रहती है। धर्म विरुद्ध नीच संगति से अपकीर्ति मिलती है। पेट में दर्द, वायु विकार, हैजा, म्यादी, तिजारी, चौथिया बुखार आता है। पैतृक सम्पत्ति की हानि होती है। यात्रा कष्टमय रहती है। पानी में डूबने, जलोदर होने, अण्डकोष बढ़ने, जिगर तिल्ली में खराबी होने का भय रहता है। यह दशा मानव को सुखकर न होकर कष्ट दायक ही रहती है।

चन्द्र में शुक्रान्तर्दशा फल—जब चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही हो तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक रहती है। धार्मिक उत्सवों में उत्साह रहता है। तीर्थयात्रा तथा विदेश यात्रा का समागम बनता है। अवि-

वाहित मनुष्य का विवाह हो सकता है। विवाहित मनुष्यों के पुत्र या कन्या जन्म होने पर स्वशुर के घर से दहेज में प्रचुर धन-धान्य मिल सकता है या किसी इष्ट-मित्र के यहां से अच्छे पारितोषिक के रूप में अनेक प्रकार के उपहार, आभूषण, गहने आदि मिल सकते हैं। व्यापारी वर्ग को श्वेत वस्त्र, चाँदी, सच्चे मोती, चावल, दही, दूधादि श्वेत वस्तुओं के क्रय-विक्रय से लाभ हो सकता है। नौकरी करने वालों को वेतन में वृद्धि, एडवान्स, इन्क्रीमेण्ट, ओनोरेरियम के उपहार स्वरूप कुछ मिल सकता है। पद वृद्धि हो सकती है। यात्रामय नौकरी द्वारा लाभ हो सकता है। नदी, समुद्र, बड़े-बड़े जलाशय में स्नान करने का अवसर प्राप्त हो सकता, जल से उत्पन्न पदार्थों से लाभ हो सकता है। खेती, बाग, बन, उपवन, फल तथा तरल पदार्थों द्वारा लाभ हो सकता है। पैतृक रोग उत्पन्न होकर कष्ट हो सकता है। एक समय में दो स्त्रियों के प्रति प्रेम होने पर अपयश मिल सकता है। विषय वासना की प्रबलता के कारण प्रमेह, धातु क्षीण, स्वप्नदोषादि रोग उत्पन्न होने में धन व्यय हो सकता है। पशु पालन तथा वाहनादि का सुख मिल सकता है। यद्यपि चन्द्रमा शुक्र का शत्रु है, फिर भी वह पूर्ण हो तो शुक्रान्तर में दोनों के शुभ होने से उपयुक्त सभी लाभ सम्भव है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो और शुक्र भी जन्म-पत्र में अशुभ या नीच का हो तो निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि मनुष्य को विपरीत फल की ही प्राप्ति होगी और अनेक प्रकार के कष्ट, मुकदमे, स्त्री जाति से अपयश, कामासक्ति से रोग उत्पन्न होंगे।

चन्द्र में सूर्यान्तर्दशा फल--यदि चन्द्रमा की महादशा में सूर्य का अन्तर चल रहा हो तो मनुष्य को बहुत सा फल सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा के समान ही मिलता है फिर भी निम्नांकित बातें विशेष रूप से फलदायक होती हैं। सरकारी नौकरों को इस दशा में पद वृद्धि, वेतन वृद्धि अथवा किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ लाभ अवश्य होता है। शरीर स्वस्थ रहता है। शत्रु दबे रहते हैं। यदि मुकदमे का फैसला उस समय हो तो अवश्य विजय मिलती है। रोग कोई नहीं होता, फिर भी क्षणिक क्रोध का आवेश कभी-कभी हो ही जाता है। धन-सम्पत्ति का लाभ होता है। धार्मिक कार्यों में उत्साह बढ़ा रहता है। इष्ट-मित्रों में तथा समाज में सम्मान मिलता है। पुत्र लाभ की खुशी होती है, यदि चन्द्रमा क्षीण हो, सूर्य नीच या शत्रु राशि का हो तो मनुष्य,

पित्त, कफ, जलोदर, नजला, जुकामादि रोगों से पीड़ित होता है। क्रोध बढ़ता है, अनेक शत्रु प्रबल होते हैं। रोगों के उपचार तथा मुकदमों में काफी धन मिलता है, व्यवसाय तथा व्यापार स्थिर हो जाते हैं, नौकरी में पदवृद्धि न होने से ईर्ष्या-द्वेष बढ़ जाता है। मन में विकलता, हृदय में व्यर्थ का सन्ताप होता है। किसी विधवा स्त्री से अपयश मिलता है। समाज में कुत्सा होती है। चोर, अग्नि से हानि होती है।

भौम दशा फल

यदि शुभ स्थान गत शुभ मंगल की दशा का प्रारम्भ हो तो मनुष्य के पराक्रम में वृद्धि, साहसपूर्ण कार्यों में यश, कीर्ति, पारितोषिक, विवाह, पुत्रादि के जन्मोत्सव, धार्मिक कृत्यों आदि से सुख मिलता है। सेना, पुलिस-विभाग वाले मनुष्यों की तो अवश्य वेतन वृद्धि या पदवृद्धि होती है और जब अशुभ मंगल की दशा का प्रादुर्भाव होता है तो मनुष्य की बुद्धि उन्मादपूर्ण रहती है। क्रोध बहुत आता है, आवेशपूर्ण बातों में अश्लीलतापूर्ण शब्दों का प्रयोग होता है। चोरों, डाकुओं तथा नृशंस हत्याओं की कथायें अच्छी लगती हैं। इष्ट-मित्रों, भाई-बन्धुओं से शत्रुता बढ़ती है। मुकदमे आदि में हार होती है। राज्य दण्ड भय रहता है। चोर, अग्नि, सर्प, विष, शस्त्रादि का भय रहता है। समाज में मान हानि, परस्त्री गमन से कुत्सा, निन्दा और अपकीर्ति मिलती है। विद्यार्थी-गण परीक्षा में अधिकतर अनुत्तीर्ण ही रहते हैं। पित्त, कफ, अर्श, रक्तातिसार, वमन आदि रोगों से कष्ट मिलता है, धन-धान्य सम्पत्ति की हानि होती है, निर्धनता बढ़ती है। मन में चिन्ता, हृदय में उदासीनता एवं स्त्री-पुत्रादि से कलह रहती है। यात्रा में तथा परदेश गमन में कष्ट मिलता है एवं आँखें दुखने लगती हैं।

ग्रह-दृष्टि फल

मेष या वृश्चिक राशिगत मंगल पर ग्रह दृष्टिफल

सूर्य दृष्टि फल—मेष और वृश्चिक राशि पर मंगल स्वगृही होता है। मंगल सूर्य का मित्र भी है। जब मेष के मंगल की महादशा हो और सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो सूर्य निश्चय तुला में नीच का होगा तो मनुष्य क्रोधयुक्त, बुद्धिहीन, पराक्रमपूर्ण होगा और साथ ही सूर्य मेष पर उच्च का होता है तो

नीच होकर उच्च स्थान को देखता है। इसलिये उच्चाभिलाषी भी हुआ जिसका तात्पर्य यह हुआ कि मनुष्य चतुर, उदार, स्त्री-पुत्रादि वाला होगा। पित्त, अर्श, अग्नि, चोरादि का भय लगा रहेगा। वृश्चिक राशिगत मंगल को जब सूर्य देखता हो तो मनुष्य धनधान्य, कृषि, वाणिज्य, पुलिस, सेना विभाग में अधिकार प्राप्त करने वाला, एक प्रसिद्ध तथा यशस्वी व्यक्ति होता है और स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी रहता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि मेष राशिगत मंगल को पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य सूर्य दृष्टि की अपेक्षा शान्त, बुद्धिमान्, गुण-ग्राह्य, कलाकार, साहसी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, राज्य सेवा से आजीविका पाने वाला, समाजसेवी तथा सबका प्रिय होता है और जब वृश्चिक के मंगल को चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य नीच कर्म करने वाला, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, आवेशपूर्ण, परस्त्री से बलात्कार में अपयश पाने वाला, माता-पिता, बहन-भाई, इष्ट-मित्रादि के विरोध में रहने वाला, इर्ष्या-द्वेषयुक्त होता है और जीवन में कोई विशेष उन्नति न कर सकने के कारण सदा ही मनमलीन रहता है। कृषि, व्यापार में हानि होती है।

बुध दृष्टि फल—यदि गृही मंगल को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य चतुर, प्रपंची, धोखा, ठगी, धूर्त, रेस, सट्टा आदि से धन कमाने वाला, कामी, लम्पट, वेश्या, परस्त्री या स्वलिंग जातक से विषय पिपासा को शान्त करने वाला, खेल-कूद में तत्पर, निन्दित तथा कुत्सित कार्यों द्वारा अपयश पाने वाला, परद्रव्यहर्ता तथा परकन्या का हरण कर घर से भाग जाने वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि स्वगृही मंगल अपने मित्र बृहस्पति से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, विद्वान्, धार्मिक, मल्लजाति, स्वाध्याय प्रिय, गर्वयुक्त, स्वाभिमानी, सरकारी उच्चाधिकारी, राजनीति में चतुर, बड़े ही ऐश्वर्य से जीवन व्यतीत करने वाला, माता-पिता का भक्त, गुरुजनों का सेवक, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, इष्ट-मित्रों तथा पदाधिकारियों से मेल रखने वाला, धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त, चोरी का माल गिरवी रखने वाला, रोब से काम लेने वाला, उपकारी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि स्वगृही मंगल को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान् तथा साहस पूर्ण कार्यों में भाग लेने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, धार्मिक उत्सवों, त्यौहारों, अनेक मांगलिक कार्यों में धन व्यय करने वाला, जल-स्थल यात्रा करने वाला, कामासक्त, लम्पट, परस्त्री प्रेम में रत, बलात्कार द्वारा कारालय का दण्ड भोगने वाला, आचरणहीन, समाज में पतित समझा जाने वाला, स्त्री के वशीभूत, चिन्ताओं से युक्त, श्रृंगारी, प्रपंची, बनावट से युक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—मंगल शनि का परम शत्रु है। यदि मंगल स्वगृही अपने शत्रु शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य, नीच कर्म करने में बहादुर तथा नामवरी-समझने वाला, नीचों का मित्र होता है। शस्त्रादि से पूर्ण, चोर कला में निपुण, दुर्बल देह, संतप्त, स्त्री-पुत्रादि, इष्ट-मित्रों से अनबन रखने वाला, मातृहीन, उदास, निराश तथा कामासक्त होता है और परस्त्री प्रेम में कारागार भोगने वाला, भयावह सूरत का होता है।

वृष या तुला राशि गत मंगल पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि वृष राशिगत मंगल को सूर्य देखता हो तो मनुष्य क्रोधी, बुद्धिहीन, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, पराक्रमी, पुलिस तथा सेना विभाग में उन्नति करने वाला, मित्रों का मित्र और भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्रादि से कलह करने वाला, कामी तथा वाचाल होता है और जब तुला राशिगत मंगल को सूर्य देखता है तो मनुष्य महाक्रोधी, नीच कर्म करने वाला, पापरत, चोरी, ठगी, आग लगाने वाला, शराबी, पर-स्त्री गमन के अपराध में दण्ड पाने वाला, डाकू भी हो सकता है, वन पर्वत पर भ्रमण करने वाला, गर्मी, पित्त, अर्श, खुजली आदि रोगों से पीड़ित होता है। कृषि तथा पशुओं से हानि उठाने वाला, स्त्री वियोग से दुःखी, उत्साह हीन तथा दुःखी, निर्धन होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—वृष या तुला राशिगत मंगल को यदि पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, गायन, वादनादि का शौकीन, संगीत-प्रिय, कलापूर्ण कार्यों को समझने वाला, पराक्रमशून्य, भीरु प्रकृति, कामासक्त, अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला, आलस्ययुक्त, दुराग्रही होता है। स्वप्नदोष, धातुक्षीण, शुक्रपात, प्रमेहादि रोगों से युक्त, मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली, नजला,

जुकाम, पानी से भय खाने वाला, गठिया, पित्त रोगी होता है, नौकरी में उन्नति नहीं होती, स्त्रियों के धन का अधिकारी होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि वृष या तुला गत मंगल को शुभ दृष्टि से बुध देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, दर्शनीय, चपल, वाचाल, स्वाध्यायप्रिय, शस्त्र-शास्त्र, का जानने वाला, युद्धेच्छुक, कोमल शरीर, सबको प्रिय, क्षीण धन वाला होता है, स्त्री सुन्दर होती है। पुत्रों का सुख कम होता है। कामवासना प्रबल होने के कारण अनेक स्त्रियों से अनुचित सम्बन्ध रखता है। अधिकतर पैतृक सम्पत्ति पर निर्भर रहता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि वृष-तुला राशि गत मंगल को बृहस्पति शुभ पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, उच्च विचार, साहसी, संग्रामविजयी, धन-धान्य युक्त, स्वजन-परिजन में सुयश-कीर्ति पाने वाला, राजनीतिक क्षेत्र में प्रसिद्ध, गायन, नृत्य तथा अनेक कला पूर्ण कार्यों की सराहना करने वाला, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से सुखी, स्वलिंग जातक से प्रीति करने वाला, गर्वयुक्त, राज्य सेवा में रत, भाग्यवान होता है।

शुक्र दृष्टि फल--वृष-तुला राशिगत मंगल को यदि शुक्र देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, श्रृंगारी, अलंकारों से युक्त, अनेक प्रकार के कला पूर्ण कार्यों का जानने वाला, सुशोभित कमरे में ऐश्वर्यमय अनेक स्त्रियों के साथ जीवन व्यतीत करने वाला, संगीत, नाटक, सिनेमा आदि में पार्ट करने वाला या उनके देखने का शौकीन होता है।

शनि दृष्टि फल--यदि वृष राशिगत मंगल को शनि देखता हो तो मनुष्य दुर्बल देह, क्रोधी, आलसी, पराये धन पर दृष्टि रखने वाला, जीवन से निराश, स्त्री जाति का द्वेषी, एकान्त में प्रसन्न रहने वाला, अस्थिर प्रकृति, शान्त सा रहता है और जब तुला राशि गत मंगल को देखता है तो मनुष्य शस्त्र-शास्त्र का जानने वाला, धन-सम्पत्ति से युक्त, इष्ट-मित्रों से युक्त, इन्जीनियरिंग कार्य में दक्ष, पंचायत का प्रधान, आदरणीय व्यक्ति होता है।

मिथुन-कन्या राशि गत मंगल पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—मिथुन-कन्या राशि गत मंगल को यदि सूर्य देखता हो तो मनुष्य कम बुद्धिमान्, साहसी, पराक्रमी, पुलिस-सेना विभाग में उन्नति करने

वाला, नीतिज्ञ, धन-धान्य, जमीन, मकान, वाटिका आदि से युक्त, मनोविनोद करने वाला, हँसमुख, स्त्रियों को प्रिय, पित्त, कफ, स्वाँस आदि रोगों से युक्त होता है। फिर भी ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

चन्द्र दृष्टि फल—मिथुन कन्या राशिगत मंगल को यदि पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य अधिक बुद्धिमान् न होकर, छोटी नौकरी तथा पराक्रम शील कार्यों से आजीविका प्राप्त करने वाला, सन्तोषी, थोड़े ही में सुख मानने वाला, स्त्री तथा कन्याओं का भरण-पोषण करने वाला, पर स्त्री गमन की इच्छा रखने वाला, चपल नेत्र, उद्विग्न मन, दर्शनीय, पर स्त्रियों को लुभाने वाला, कामासक्त, लम्पट प्रकार का होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि मिथुन-कन्या राशि गत मंगल को बुध देखता हो तो मनुष्य बहुत ही बुद्धिमान्, काव्य कला प्रवीण, कवि, लेखक, गणितज्ञ, कलापूर्ण कार्यों की सराहना करने वाला, वाचाल, हँसमुख, पराक्रमी, स्त्री-पुत्र आदि इष्ट-मित्रों के सुख से सुखी, वकील, न्यायाधीश आदि में से कुछ होकर ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करता है और यह स्त्री सौन्दर्य का पुजारी होता है। धातु सम्बन्धी अनेक रोगों से पीड़ित रहता है। पीलिया रोग होता है।

गुरु दृष्टि फल—मिथुन-कन्या राशि गत मंगल को यदि बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, पराक्रम शाली, नीतिज्ञ, राजनैतिक क्षेत्र में प्रमुख कार्य कर्ता, अनेक मनुष्यों का अधिपति, वकील, जज या कोई और स्वतन्त्र कार्य कर्ता होता है। विदेश गमन करने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, समाज में आदरणीय होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मिथुन कन्या राशि गत मंगल को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान् किन्तु कम पढ़ा-लिखा होता है। काव्य संगीत में अभ्यास रखता है। काम वासना प्रबल होती है। साधारण प्रकार से अच्छा जीवन व्यतीत करता है। स्त्री-पुत्रादि का सुख कम होता है। जीवन चिन्ता मय रहता है, नीच कर्म में रत रहता है किन्तु कोई भी नीच कर्म करने का साहस नहीं होता। नौकरी के साथ दूसरा व्यापार भी कर सकता है।

शनि दृष्टि फल—यदि मिथुन कन्या राशि गत मंगल को शनि देखता हो तो मनुष्य, कम पढ़ा लिखा या अनपढ़ होता है। हठी, साहसी कार्यों से सफलता

पाता है, लकड़ी, कोयला, फूंस आदि के ठेके या मजदूरी से आजीविका चलाता है। कृषि कर्म में रत रहता है। स्त्री-बच्चों का सुख बहुत कम होता है। गठिया, वात, पित्तादि रोग बहुत सताते हैं। कामासक्ति प्रबल होती है। किसी नीच जाति की स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होने के कारण अपयश मिलता है और बदनामी भी होती है।

कर्क राशि गत मंगल पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—कर्क राशि गत मंगल नीच का होता है। इसलिये नीचस्थ मंगल को यदि सूर्य देखता हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, नीच कर्म करने वाला, अनपढ़, साहसी, समय पर साथियों का साथ त्याग देने वाला, पित्त प्रकोप से दुखी, अर्शादि रोग से पीड़ित, स्त्री सौन्दर्य की प्रशंसा उसकी कटि भाग से करने वाला, अभिमानी, रोब से काम लेने वाला, हठी प्रकृति का होता है। नीच स्त्रियों से अनुचित सम्बन्ध रखने के कारण कुत्सा का पात्र होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि कर्क राशि गत मंगल को चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, शान्त प्रकृति, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, जल विनोदी, श्वेत रक्त वस्तुओं का क्रय-विक्रय करने वाला, आलसी, बहुत शयन करने वाला, कामासक्त, लम्पट, पर स्त्रियों के साथ अनुचित प्रेम करने वाला, आचरण हीन, मन्सूबों को बांधने वाला, विषय वासना की चिन्ता करने वाला, धातु क्षीण, शुक्र पतन, स्वप्नदोष तथा प्रमेहादि रोगों से पीड़ित होता है।

बुध दृष्टि फल—नीचस्थ मंगल को यदि बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, कम बुद्धिमान्, कम पढ़ा-लिखा, इष्टमित्रों, स्वजन परिजनों से रहित, स्त्री-पुत्रादि से कलह करने वाला, दुष्ट चित्त वृत्ति वाला, आचरण हीन, निर्लज्ज प्रकार का होता है। छोटे-छोटे बच्चों के प्रति भी विषय पिपासा रखता है। समाज में तिरस्कृत होता है, अनेक रोगों से रोगी रहता है।

गुरु दृष्टि फल—कर्क राशिगत मंगल को यदि बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो (कर्क मंगल का नीचस्थ और गुरु का उच्चस्थ स्थान है) तो मनुष्य धीर-वीर, पुरुषार्थी, साहसी, धर्म भीरु, कूट नीतिज्ञ, प्रधान पद का चाहने वाला, स्वाभिमानी, राजनैतिक क्षेत्र में सुयश पाने वाला, सैनिक संचालन में प्रवीण, अनिश्चयवान, कभी एक दम उच्च बातें करने वाला तो कभी इसके एकदम

विपरीत आचरण करने वाला होता है। कभी त्याग, तपस्या, स्वाध्याय तथा धार्मिक चर्चा करने वाला तो कभी कामशास्त्र के चौरासी आसनों की वार्ता करने लगता है। यह सभी कुछ होते हुए भी नीचस्थ मंगल का प्रभाव प्रधान रहता है और ऐसा मनुष्य अपने आचरण हीन कार्यों के लिए निन्दित हो जाता है और अनेक रोगों से पीड़ित होकर पछताता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि नीचस्थ मंगल को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बनावटी वेष-भूषा, शृंगार से अपने सौन्दर्य को बढ़ाने वाला, मधुर वाणी द्वारा अनेक स्त्रियों को चरित्र हीन बनाने वाला, कामपिपासा शान्ति में धन सम्पत्ति लुटाने वाला, बिना सोचे-समझे अनर्थ करने वाला, पतित, एवं नीच स्त्रियों का भोक्ता, निर्लज्ज, धातु सम्बन्धी रोगों से पीड़ित होता है। किसी नीच स्त्री को लेकर भागने के प्रसंग में राज दण्ड पाने वाला, कुत्सित तथा निन्दित होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि कर्क राशि गत मंगल को शनि देखता हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, पराक्रम शून्य, अग्नि, जल, विष, चोर, शस्त्र आदि से भय खाने वाला तथा हानि उठाने वाला होता है। उसका जीवन अनेक अनर्थों की उत्पत्ति का कारक होता है। किसी नीच स्त्री के समागम से अनेक रोग तथा राजदण्ड प्राप्त होता है। ऐसा मनुष्य पुलिस से बहुत डरता है। छोटे-छोटे कर्मों द्वारा आजीविका कमाता है, निर्लज्ज इतना होता है कि पथगामी स्त्रियों से भी छेड़-छाड़ किये बिना नहीं रहता।

सिंह राशि गत मंगल पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि सिंह राशि गत मंगल पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य हृष्ट-पुष्ट, बलवान्, साहसी, क्रोधी, पुलिस, सेना विभाग में अधिकार प्राप्त करने वाला, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से युक्त, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, उपकारी, धर्म भीरु तथा सबका यथायोग्य सत्कार करने वाला, पित्त, घाम, रक्तातिसार, अर्शादि रोग का रोगी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब सिंह राशि गत मंगल को पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य दर्शनीय, नम्र, विनीत, स्वधर्मरत, गुरुजनों की सेवा करने वाला, प्रत्युत्पन्नमति, नीति निपुण, नदी, तालाब, समुद्र, वन, पर्वत, उद्या-

नादि में भ्रमण करने वाला, सबका प्रिय, समाज सेवी तथा कुलीन स्त्री का पति होता है। इसे पर स्त्रियाँ बहुत चाहती हैं और यह पित्त एवं कफादि रोग से पीड़ित रहता है।

बुध दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत मंगल को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, हँसमुख, कलापूर्ण कार्यों के मर्म को जानने वाला, प्राकृतिक सौन्दर्य का पुजारी, नाटक, काव्य का लेखक, चतुर, अनेक गुण से युक्त, अपने अभीष्ट को प्राप्त करने वाला, तथा खेल-कूद में अग्रसर रहने वाला (एथलीस्ट) होता है और इष्ट-मित्रों के साथ ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करता है।

गुरु दृष्टि फल—जब सिंह राशि गत मंगल को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, विद्वान्, कूटनीतिज्ञ, राजनैतिक क्षेत्र में अग्रसर, साहसी, पराक्रमी, सैन्य संचालन में दक्ष, सेनापति (जनरल), राज्य सेवक, अपने अभीष्ट की प्राप्ति करने वाला, समाज में, लोक में आदर पाने वाला, कोई बड़ा वकील, न्यायाधीश, मन्त्री या कोई इसी प्रकार का उच्चाधिकारी होता है, स्त्री-पुत्रों के सुख से सुखी रहता है। वृद्धावस्था में रोग उत्पन्न होते हैं।

शुक्र दृष्टि फल—सिंह राशिगत मंगल को यदि शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य अति सुन्दर, रूपवान, बुद्धिमान्, कामासक्त, शृंगारी, कविता करने वाला, कलापूर्ण, धन-सम्पत्ति, यौवनमद से पूर्ण; अनेक स्त्रियों से कामवासना की तृप्ति करने वाला, घमंडी होता है, अवस्था भेद से स्वप्नदोष, वीर्यपात, धातु क्षीण तथा प्रमेहादि, मन्दाग्नि, नजलादि से पीड़ित रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत मंगल को शनि देखता हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, दुर्बल देह, क्रोधी, पिता से कलह रखने वाला, उदास, खिन्नमन, निराश, भ्रमणशील, सदा पर धन, पर घर की इच्छा रखने वाला, व्याकुल हृदय, पाप रत, ऋणी होता है। स्त्री-पुत्रादि से विचार-विनिमय न होने के कारण अनबन रहती है। शरीर वात पित्त कफ का रोगी रहता है।

धन मीन गत मंगल पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—धन या मीन राशि गत मंगल पर यदि सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धि और आयु की अपेक्षा अधिक समझदार प्रतीत होता है।

साहस और पराक्रम पूर्ण कार्यों में अग्रगण्य होता है। सेना विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त कर संग्राम विजयी होता है। राजनैतिक क्षेत्र में देश की बागडोर सँभालकर सबका नतृत्व करने में समर्थ होता है। वन, विजन तथा निर्जन में निर्भय भ्रमण करता है। समाज में, देश में, अपने-परायों में मान तथा सत्कार पाता है। स्त्री, पुत्र, धन-सम्पत्ति आदि से युक्त होता है और सुखी रहता है। जल भय, पित्त, पीड़ा अवश्य रहती है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि धन-मीन राशि गत मंगल को चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य पराक्रमी, कलापूर्ण कार्यों में दक्ष, गर्व युक्त, किसी की परवाह न करने वाला, स्वतन्त्रता प्रिय, प्राकृतिक सौन्दर्य प्रिय, बन, पर्वत, नदी, झरने, समुद्र, नाव, यानादि के चित्र खींचने वाला अथवा इनकी सैर करने वाला, चतुर तार्किक, शत्रुजित् तथा विद्या प्रेमी होता है। पर स्त्री प्रेम की इच्छा रखता है। पित्त, कफ, नजला, स्वांस, जलोदर आदि का रोगी होता है, विदेश यात्रा में तल्लीन रहता है।

बुध दृष्टि फल—यदि धन-मीन राशि गत मंगल को बुध देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, ज्ञानी, गणितज्ञ, शास्त्रों का ज्ञाता, शिल्पकला प्रवीण, खेल-कूद में अग्रिम, कलापूर्ण कार्यों के मर्म को जानने वाला, मृदुभाषी, हँसमुख, शान्त स्वभाव, कुशाग्र बुद्धि, सम्पूर्ण कलाओं में हस्तक्षेप करने वाला, चपल, चंचल मन, व्यापार कुशल, आदरणीय होता है।

गुरु दृष्टि फल—धन-मीन राशि गत मंगल यदि गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य मेधावी, शत्रुजित्, पुरुषार्थी, स्वाभिमानी, नीतिज्ञ, देश-विदेश का भ्रमण करने वाला, सेनापति, धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त, स्त्री-पुत्रादि का विरोधी, समाज का प्रधान तथा आदरणीय होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि धन-मीन राशिगत मंगल को शुक्र देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, साहसी, विद्वान्, कलापूर्ण, शृङ्गारी, नृत्यप्रिय, उदार, कामासक्त, अनेक स्त्रियों से विषय भोग करने वाला, जल से भयभीत, वीर्य सम्बन्धी विकारों से युक्त, लम्पट-सा होता है।

शनि दृष्टि फल—धन-मीन राशि गत मंगल को यदि शनि देखता हो तो मनुष्य दूसरे की सेवा करने वाला, परतन्त्र, निर्धन, यात्रा में कष्ट पाने वाला,

नीच संगति, धन-स्त्री के लिए विधर्म स्वीकार करने वाला, दीन, स्थान भ्रष्ट, जल, शस्त्र, अग्नि, विषादि से धोखा या चोट खाने वाला होता है।

मकर-कुम्भगत मंगल पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—मकर राशि का मंगल उच्च का होता है, मकर का मंगल सूर्य से दृष्ट होने पर मनुष्य शूर-वीर तथा युद्ध प्रिय, संग्राम विजयी, स्त्री-पुत्रादि, धन-सम्पत्ति से युक्त होता है। कुम्भ राशि गत होने पर मनुष्य क्रोधी, उदास, कलहप्रिय, जल, शस्त्रादि से हानि उठाने वाला, दुर्बल देह, पिता से पृथक् रहने वाला, युद्ध से उपराम हुआ, स्थान-स्थान पर भटकने वाला होता है। दुख पाता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब मकर कुम्भगत मंगल चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य मलिन मन, अनेक मित्रों से युक्त, धर्मभीरु, परोपकारी, यात्राप्रिय, जल-विनोदी, धन-वस्त्रादि का शौकीन, परिवर्तन चाहने वाला, मातृ विरोधी, अनेक स्त्रियों की लालसा वाला, प्रमेहादि रोग से युक्त होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि मकर कुम्भ-राशि गत मंगल बुध से दृष्ट हो तो मनुष्य, हठी, उद्दंड, छल-कपट, धोखादि से धन उपार्जन करने वाला, देशाटन रत, स्थान भ्रष्ट, निरर्थक भाषण करने वाला, लोहा, ताँबा, पित्तलादि का छोटा कार्य करने वाला, नीच, एवं विधर्मी स्त्री के लिए धर्म परिवर्तन कर देने वाला, दुष्ट प्रकृति, पापी तथा लम्पट की भाँति प्रिय का पीछा करने वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—मकर-कुम्भ राशिगत मंगल को यदि गुरु देखता हो तो मनुष्य दर्शनीय, बुद्धिमान्, धन-धान्य सम्पन्न, नीतिज्ञ, उच्च विचार, स्त्री-बच्चे, इष्ट-मित्रादि के सुख से सुखी, राज्य सेवा से पारितोषिक पाने वाला, सोच-समझकर कार्य करने वाला, स्थिर प्रकृति, धार्मिक, परोपकारी, दानी, समय पर काम आने वाला, यशस्वी तथा समाज, देश की सेवा में तत्पर होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मकर-कुम्भ राशिगत मंगल को शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, भाग्यवान्, धनवान्, स्वतन्त्र व्यवसायी, विद्या व्यसनी, कलापूर्ण कृत्यों का ज्ञाता, देश-विदेश का भ्रमण करने वाला, जलयात्रा प्रिय,

अश्लील, शृङ्गारी, अनेक स्त्रियों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाला, कुत्सित, निन्दित, वीर्य दोष से युक्त, मूत्र दोषी, मन्दाग्नि युक्त, रोगी होता है।

शनि दृष्टि फल—जब मकर या कुम्भ राशि गत मंगल पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य हठी, दृढ़ व्रती, मेधावी, युद्धेच्छुक, संग्राम -विजयी, पराक्रमी, कूट नीतिज्ञ, डिपलोमेट, साम, दाम, दण्ड भेद से कार्य लेने वाला, राज्य हितैषी, अस्त्र-शस्त्र चलाने में प्रवीण, सेनाध्यक्ष, स्त्री-पुत्रादि के सुख से वंचित, अपने कार्य को पूर्ण करने वाला, दीनों का रक्षक होता है, उदास तथा शांत रहता है। राज्य से पराक्रम के लिए तगमा तथा पारितोषिक पाता है।

भौमान्तर्दशा फल

भौम में भौमान्तर्दशा फल--यदि मंगल की महादशा में मंगल का ही अन्तर व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य के शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। क्रोध बहुत आता है, बुद्धि भ्रमित सी रहती है। शक्ति बढ़ी हुई सी प्रतीत होती है। इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से अनबन तथा कलह रहती है। सरकारी नौकरी करने वालों की अपने अधिकारियों से नहीं बनती, जिस कारण मनुष्य नौकरी छूटने के भय से भयभीत रहता है, व्यापारी वर्ग की आय स्थिर हो जाती है, उनकी ग्राहकों से सौदा देते समय झगड़ा हो जाता है। अग्नि, चोर, शस्त्र, शत्रुओं से भय रहता है। अनेक प्रकार के रोगों से शरीर में विकलता तथा वेदना होती है, रोगोपचार में बहुत सा द्रव्य व्यय हो जाता है, पित्त प्रकोप से, लू लगने से, सिर, आँख में पीड़ा, रक्तचाप, रक्तविकार, अर्शादि में रक्त स्राव, फोड़े-फुन्सियाँ, खुजली, पित्ती उछलना, शरीर में लाल चकत्ते पड़ जाना आदि रोग होते रहते हैं। कोई भी उष्ण तासीर वस्तु सेवन से कष्ट होता है। यदि मंगल शुभ हो तो मनुष्य को केवल कृषि कर्म, कृषि, भूमि तथा मकानादि के सिलसिले से लाभ रहता है। पर-स्त्री गमन से अपयश, पोता-पोती, धेवता-धेवती से शोक मिलता है। दाँत में पीड़ा भी होती है।

भौम में राहोरन्तर्दशा फल—यदि मंगल की महादशा में राहु का अन्तर व्यतीत होता हो तो मनुष्य को अधिकतर अशुभ फल की ही प्राप्ति होती है। बुद्धि में भ्रम उत्पन्न होता है। पढ़ने में मन नहीं लगता, मनुष्य घर से भाग जाता है। इधर-उधर मारा-मारा फिरना पड़ता है। इस देशाटन में अनेक कष्ट

होते हैं। धन की कमी से पश्चात्ताप होता है, गुरुजनों से बिगड़ जाती है। शरीर में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। शस्त्र, अग्नि, विष, सर्प, जल, शत्रुओं से आपत्ति उठानी पड़ती है, पेट में वायु विकार, मन्दाग्नि, मुँह से रक्त, स्वाँसादि रोगों में धन खर्च होता है। नीच की संगति मिलती है, भोजन की व्यवस्था ठीक नहीं रहती, छुआ-छूत, ऊँच-नीच का विचार छोड़कर जहाँ भोजन मिल जाय वहीं करना पड़ता है। शुद्धि का ध्यान नहीं रहता। दुष्ट संगति में धन-धान्य का नाश होता है। व्यवसाय में शिथिलता आ जाती है। नौकरी में ह्रास या पदवृद्धि नहीं होती। मन नौकरी से ऊब जाता है। इष्ट-मित्र, गुरुजनों से कलह होती है। खेती में हानि होती है। किसी भी कार्य में सफलता नहीं होती। यदि मंगल और राहु अच्छे जन्म पत्र में हों तो मनुष्य का खर्च तीर्थ यात्रा, ब्रह्मभोज, परोपकार या किसी भी शुभ कार्य में होता है।

भौम में गुरोरन्तर्दशा फल—जब मंगल की महादशा के अन्तर्गत बृहस्पति का अन्तर व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य को अपने व्यवसायानुकूल धन-धान्य का लाभ होता, व्यापार में वृद्धि, नौकरी में पदवृद्धि, अर्थ लाभ होता है। धार्मिक वृत्ति होती है। तीर्थयात्रा, देशाटन में मन लगता है। स्वाध्याय होता है, भक्ति-भाव मन में बढ़ते हैं। परोपकार में धन लगता है। शरीर स्वस्थ रहता है, कोई बीमारी नहीं होती। इष्ट-मित्रों में मान-सत्कार, समाज में आदर और लोक में प्रसिद्धि प्राप्त होती है। स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव, वाहनादि से सुख मिलता है, विद्यार्थीगण परीक्षा में उत्तम प्रकार से उत्तीर्ण होते हैं। सुकर्म होते हैं। मन में उत्साह रहता है। अकर्मण्य को कर्म मिलता है। मकान, जमीन, जायदाद, बागादि का क्रय-विक्रय होने की बातें होती हैं, जीवन में स्फूर्ति तथा अनुभूति का उद्गम होता है। यदि दोनों ग्रह शुभ फल प्रद हों तो लाट्री, बोण्डादि से अकस्मात् धन की प्राप्ति हो सकती है। शत्रुओं से मुकदमे में जीत होती है, धन मिलता है, कर्णपीड़ा, स्वाँस, कफादि रोगों की वृद्धि होती है। यह दशा सब प्रकार से मनुष्य के लिए शुभ फलदायक ही होती है।

भौम में शन्यन्तर्दशा फल—जब मंगल की महादशा के अन्तर्गत शनि का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती, उसका मन अपने व्यवसाय को छोड़कर दूसरे व्यवसाय को करता है। यदि नौकरी करता हो तो

उससे ऊबकर भाग जाना चाहता है, एक बन्धन या कारावास के समान कष्ट पाता है। अधिकारी वर्ग से न बनने के कारण पद में वृद्धि होना तो दूर रहा, पदावनति तक हो जाती है। माता-पिता, भाई-बन्धु, इष्ट-मित्र सभी रुष्ट हो जाते हैं और जातक का अनिष्ट चाहते हैं तथा जातक स्थान, पथभ्रष्ट होकर, आवारा सा हो जाता है। राज्यदंड भी हो सकता है। चोरों, डाकुओं द्वारा शस्त्र प्रहार से सिर में और दूसरे अंगों में घाव, पीड़ा होती है, जिसके उपचार में धन-व्यय होता है। विवाहित पुरुषों का स्त्री-बच्चों से बिछोह हो जाता हैं, अनेक प्रकार से धन-सम्पत्ति का कष्ट होता है। भोजन की व्यवस्था में तंगी हो जाती है, किसी मित्र की मृत्यु का संवाद श्रवण होता है। किसी पराक्रम पूर्ण कार्य के लिये क्षणिक यश की प्राप्ति होती है जो कि व्यर्थ ही रहती है। मनुष्य जीवन से उदास तथा निराश होकर भक्ति की ओर जाना चाहता है तो मन नहीं लगता, किसी भी प्रकार से जब मनुष्य की व्यवस्था नहीं हो पाती तो कितने ही आत्म-हनन का प्रयत्न करने में असफल होकर पुलिस के हाथों दुख पाते हैं।

भौम में बुधान्तर्दशा फल—यदि मंगल की महादशा में बुध का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि स्थिर रहती है फिर भी किसी विशेष फल की प्राप्ति नहीं होती, इस दशा का फल मिश्रित सा ही होता है जिसको दशारम्भ में हानि, अपकीर्ति या किसी और प्रकार से ह्रास उठाना पड़ता है, उसे दशान्त में लाभ रहता है, और जिसे दशान्त में हानि होती है, उसे दशारम्भ में लाभ होता है। जो विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहते हैं, फिर दूसरी बार अवश्य उत्तीर्ण हो जाते हैं, जिनको व्यापार में पहले हानि होती है, अन्त में लाभ होता है, जिन नौकरों को आरम्भ में पदह्रास होता है या उन्नति नहीं होती अन्त में पदवृद्धि तथा धन-मान की प्राप्ति होती है, लेखन कला में यश मिलता है, किन्तु मानसिक वेदना पीछा नहीं छोड़ती, राज्यभय, शस्त्र, चोर, अग्नि, शत्रुभय निरन्तर लगा रहता है। दुष्टजनों से क्लेश मिलता है। घर से बाहर रहना पड़ता है। स्त्री-पुत्र, भाई-बन्धु आदि का वियोग तक होता है। वाहन, पशु आदि से कष्ट मिलता है।

भौम में केत्वन्तर्दशा फल—जब मंगल की महादशा के अन्तर्गत, केतु की अन्तर्दशा का समय व्यतीत होता है तो मनुष्य घबराया हुआ सा, उद्विग्न मन, पापरत, निराश, किसी प्रकार भी शान्ति को न प्राप्त होने वाली, अशान्ति से

विकल रहता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, माता-पिता को कष्ट होता है, और पेट, पेड़ू तथा करवट आदि में दर्द, दर्द गुर्दा, कार्बंकल, नासूर, फोड़ा आदि भयानक रोग होते हैं। अपने परायों से क्लेश तथा कष्ट मिलता है। दुष्ट मनुष्यों की प्रतिकूलता के कारण निन्दा-कुत्सा, अपकीर्ति तथा लोकापवाद मिलता है। मुकदमे में हार, शत्रुओं से पराभव, शस्त्र, अग्नि, चोर, वज्र, बिजली आदि से भय होता है। राज्यदंड मिल सकता है। नीच की संगति से अपमान होता है। व्यर्थ देशाटन में धन खर्च और मन में ग्लानि उत्पन्न होती है। व्यवसाय, व्यापार, नौकरी में मन नहीं लगता और कष्ट होता है, जंगल उजाड़ में भोजन की व्यवस्था हुए बिना ही भटकना पड़ता है। निवास स्थान या शहर को बदलना पड़ता है। किसी पुराने मित्र से कष्ट पहुँचता है, अनबन होती है, केत्वन्तर्दशा का फल शुभ परिणाम दायक नहीं होता है।

भौम में शुक्रान्तर्दशा फल—यदि मंगल की महादशा के अन्तर्गत शुक्र दशा का समय व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की बुद्धि चंचल, कामासक्त, विषय वासना से पूर्ण, ईर्ष्यालु रहती, विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं। गृहस्थों को श्वसुर के घर से, पुत्रोत्सव आदि में वस्त्र, आभूषण, अलंकार, इष्ट-मित्रों से उपहार तथा भेंट की प्राप्ति होती है। अविवाहितों का विवाह इस दशा में अवस्था भेद से हो जाता है, उसे दहेज तथा अच्छा सुसज्जित मकान की प्राप्ति होती है। और अनेक स्त्रियों से प्रेमोपहार की प्राप्ति होती है। विदेश गमन के समय जलयान या नभयान की सवारी मिलती है और विदेश में विधर्मी स्त्री के संसर्ग से ज्ञान तथा धन की हानि होती है। दूसरे मनुष्यों द्वारा पराभव होता है। किसी निन्दित कर्म के लिये शस्त्र-प्रहार से ताड़ित होता है। अनेक धातु सम्बन्धी रोग होते हैं, चित्त की वृत्ति चंचल रहती है। जहाँ-तहाँ से क्लेश, शोक, भय, पीड़ा के सम्वाद प्राप्त होते हैं, शुक्रान्तर्दशा का फल विशेष अच्छा न होकर मनुष्य को कामासक्त ही बनाता है।

भौम में सूर्यान्तर्दशा फल—जब मंगल की महादशा के अन्तर्गत सूर्य दशा का अन्तर व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य शुभ परिणाम स्वरूप सरकारी नौकरी में पदवृद्धि (ओनोरेरियम, एडवान्स, इन्क्रीमेंट) आदि में से कुछ मिलता है, उच्चाधिकारियों से मेल रहता है। पुलिस-सेना विभाग के आदमियों को

विशेष रूप से शुभ फलदायक यह दशा रहती है। युद्ध में विजय की प्राप्ति, मुकदमे में जीत, मित्रों से मेल, वन-पर्वत, दुर्ग तथा निर्जन स्थानों में रहना पड़ता है, अशुभ ग्रहदशा पर माता-पिता, गुरुजनों तथा सहोदरों से कलह, गर्मी, पित्त, रक्त-विकार, रक्तचाप, खुजली, घाम, शस्त्र, चोट, फोड़े-फुन्सियाँ तथा रक्तिम अर्शादि से पीड़ा होती है। शरीर को कष्ट मिलता है, नेत्र पीड़ा होती है, हृदय दौर्बल्यता के कारण बैठा जाता है, मन बेचैन रहता है। गर्मियों में लू लगने से ज्वर तथा अतिसार का प्रकोप बढ़ता है। हृदय में विलासता बढ़ती है। और मानव के हृदय में स्वलिंग जातक से विषय तृप्ति करने की वासना जागृत होती है। कोमल तथा श्वेत गुलावी कपोलों के चुम्बन को मन आकर्षित रहता है। फिर भी मनुष्य अपनी मर्यादा का ध्यान रखते हुए एक दम पतित नहीं हो जाता।

भौम में चन्द्रान्तर्दशा फल--यदि मंगल की महादशा के अन्तर्गत, चन्द्रदशा का समय व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की बुद्धि शान्त तथा आलस्य युक्त होती है, उसे निद्रा बहुत होती है। रात-दिन शयन में मगन रहता है, रेल के कई सफर करने पड़ते हैं। घी, दूध, दही, फल, खोये के सामान तथा मिष्ठान्न खाने को खूब मिलते हैं, कहानी, कलापूर्ण, प्राकृतिक दृश्यों, की छटा वर्णन करने में मन खूब लगता है। परोपकार तथा धार्मिक कार्यों में धन-व्यय होता है, श्वेत वस्तु व्यापार में धन खूब मिलता, नौकरी में स्थान परिवर्तन तथा कुछ लाभ भी होता है। खाने-पीने का सुख रहता है। गृहस्थियों के लेन-देन में चाँदी, मोती, नगादि के आभूषणों का आदान-प्रदान रहता है। नजला, जुकाम, खाँसी, पित्त, कफ, स्वांस, जलोदर आदि रोग होते हैं। जल में डुबकी खाना आदि भय होते हैं। विषय वासना प्रबल होती है, अविवाहितों को स्वप्नदोष होते हैं, मन उद्विग्न तथा चिन्तित रहता है, विवाहित परस्त्रीगमन में रत रहता है। धातु क्षीण, शुक्रक्षय, प्रमेह, अण्डकोष वृद्धि, अतिसार, मन्दाग्नि तथा जिगर तिल्ली पर सूजन होना आदि रोग होते हैं।

राहु दशाफल

यदि राहु जन्मपत्र में ३, ६, ११ (तीसरे, छठें, एकादश) स्थान में ऊंच का स्वगृही, मित्र राशि (शनि के घर) का बैठा हो तो मनुष्य को शुभ ग्रह

जो कि मूल त्रिकोण में बैठे हों और दशाफल के लिहाज से शुभ फल दायक समझे जाते हों, उनकी अपेक्षा भी अधिक शुभ फल दायक होता है। अन्य शुभ स्थानों में राहु दशा फल, अन्य अशुभ-पाप-क्रूर ग्रहों की अपेक्षा भी खराब फल होता है। कुछ आचार्यों ने राहु की दृष्टि ही नहीं मानी है। कुछ ने राहु पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का प्रभाव भी शून्य ही माना है, क्योंकि राहु एक बलिष्ठ पाप ग्रह है, जिस पर अन्य ग्रह की दृष्टि फल नहीं होता, औरकुछ ने सप्तम, तो कुछ ने पाँच, नौ, तो कुछ ने चार-आठ दृष्टि मानी है। अतः कठिन हो जाता है, लेखक किस दृष्टि का फल लिखे और किसका न लिखे, हमने अनुभव से सिद्ध किया है कि राहु की दृष्टि की अपेक्षा राहु की युति का परिणाम अधिक प्रभावशाली है, जो समयानुकूल लिखने का प्रयास किया जायेगा। यहाँ तो राशि गत राहु का फल देकर पाठकों को दशान्तर्दशा का फल लिखकर अभीष्ट की सिद्धि करनी है। साधारणतः अब तक देखने में यही आया है कि राहु दशा का फल मनुष्य जीवन के अत्यधिक लाभदायक नहीं होता है। राहु का भाव फलादेश हम इस पुस्तक के प्रारम्भ में लिख चुके हैं, पाठक वहाँ देखने का कष्ट उठायें, यहाँ राशिगत फल लिखने के पश्चात् अन्तर्दशा फल लिखेंगे। अभी तक पढ़ने तथा अनुभव में यही आया है कि राहु एक पाप तथा क्रूर ग्रह है। इसकी दशा में मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती, चित्त की अवस्था चल-विचल रहती है, जो कि मति में भ्रम सा उत्पन्न कर मनोवृत्ति को सन्देहात्मक बना देती है और मनुष्य क्या करूँ? क्या न करूँ के फेर में पड़कर कुछ भी नहीं कर पाता। नौकरी, व्यवसाय, व्यापार, कलात्मक कार्य करने वाले सभी प्रकार के मनुष्य कभी-कभी तो अपने व्यवसाय से हाथ तक धो बैठते हैं। जीवन में उथल-पुथल हो जाती है। अन्तर में कोहराम मच जाता है। मनुष्य पथ-विचलित होकर कहीं से कहीं पहुँच जाता है। माता-पिता, इष्ट-मित्र, बहन-भाई-बन्धु सभी सम्बन्धी साथ छोड़ देते हैं। स्त्री-पुत्र तथा किसी प्रिय का वियोग सहना पड़ता है। मृत्यु संवाद तक श्रवण होते हैं। वात-पित्त-कफ, आधि-व्याधि, गठिया, पेट दर्द, आँख, सिर, कमर, पेड़ू में दर्द तथा अण्डकोष वृद्धि, अतिसार, चेचक, हैजा, रक्तविकार, रक्तचाप, अतिसार, अर्श, स्वांस, कफादि अनेक प्रकार के रोग इस दशा में हो सकते हैं। देश-देशान्तर में भटकना पड़ता है। कष्ट होता है, अनेक बार भोजन की व्यवस्था नहीं हो पाती, दर-दर के धक्के खाने पड़ते

हैं। धन-सम्पत्ति प्रायः नष्ट हो जाती है। मनुष्य को मानव जीवन से मोह तक नहीं रहता, जिससे बहुत से मनुष्य स्वयं ही आत्म-हत्या कर लेते हैं। कुछ निन्दित कर्मों द्वारा राज्य दंड पाते हैं, चोरी, जारी, डकैती, नृशंस हत्याओं द्वारा मनुष्य अपने पतन को अपनी आँखों से देखकर भयभीत हो जाता है, रोता है, चिल्लाता है, बहुत से दण्ड भय से बचने के लिए एकान्त में वन, पर्वत, निर्जन कन्दराओं में रहने लगते हैं। बहुत से गेरुआ वस्त्र रंग कर जनता को धोखा देकर इधर से उधर ठोकरें खाते फिरते हैं। जिन्हें मानापमान का आभास तक नहीं होता, वंशपरम्परागत कीर्ति को खोकर उन्मादी, पागल तथा अप्राकृतिक अवधूत बनकर रहते हैं। चिता तथा मसान को सेते हैं, भूत, पिशाच की सिद्धि कर जगत् को चमत्कार दिखाकर भयभीत तथा आश्चर्यान्वित कर अपने इष्ट की सिद्धि करते हैं। निर्लज्जता इतनी बढ़ जाती है कि छोटे-बड़े का भेद-भाव, जाति-पाँति का बन्धन तोड़ नीच से नीच कर्म कुसंगति में पड़ कर कर डालते, नशे करते हैं। भंग, चरस, गाँजा, शराब, सुल्फा आदि नशीली मादक वस्तुओं का सेवन कर भक्ष्या-भक्ष्य का ध्यान तक नहीं रखते, मल-मूत्र, शव-मांसादि को भक्षण कर अघोरी जीवन व्यतीत करते हैं। कापाली बनकर अनेक हत्या कर डालते हैं। शाक्त बनकर रक्त-पान कर लेते हैं, कोई अच्छा या निन्दित कर्म शेष नहीं रहता, जो कि इस राहु के शुभाशुभ प्रभाव के कारण मनुष्य को प्राप्त न हो जाता है। पाठक फलादेश कहते समय अपनी बुद्धि से काम लें और देश-काल, समय-परिस्थिति के अनुकूल फल का विवेचन करें।

मेष में राहु—यदि मेष राशि में राहु हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, विद्वान्, नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त करता है। धन-धान्य-सम्पत्ति, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी होता है। वायु, पित्त, कफादि का रोगी होता है। क्रोध से युक्त होता है। अग्नि, बिजली के धक्के से पीड़ित होता है।

वृष में राहु—जब वृष राशि में राहु होता है तो मनुष्य, कवि, लेखक, कलापूर्ण कार्यों में दक्ष, सरकार से पारितोषिक पाने वाला, संग्रामजित्, विद्या-विनय से युक्त, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, कामी, शृङ्गारी, वृक्ष, पशु तथा ऊँची जगह से गिरकर चोट खाने वाला होता है।

मिथुन में राहु—मिथुन का राहु मनुष्य को विद्वान् बनाता है। समाज में आदर, सत्कार दिलाता है, तीर्थयात्रा कराता है। मुकदमे में जीत, संग्राम में

विजय पाने वाला, धन-धान्य से पूर्ण, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, वायु पीड़ा से युक्त, नभयान से भय खाने वाला या चोट खाने वाला होता है।

कर्क में राहु—जब कर्क राशि पर राहु होता है तो जातक देखने में सुन्दर, लम्बे कद का, विद्या-विनोद से युक्त, मित्रों का मित्र, शत्रुओं का परम शत्रु, अकड़ में रहने वाला, चल चित्त, आँख, कानादि में दर्द, नजला, जुकाम से पीड़ित, जल में डुबकी खाने वाला होता है।

सिंह में राहु—यदि सिंह राशि में राहु विद्यमान हो तो मनुष्य, क्रोध युक्त, अग्नि, विष, सर्पादि से कष्ट पाने वाला, उच्च वर्ण से शत्रुता रखने वाला, इष्टमित्रों से कलह रखने वाला, धन-धान्य पूर्ण होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

कन्या में राहु—जब कन्या राशि में राहु होता है तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमशाली, साहस पूर्ण कार्यों में यश पाने वाला, परोपकारी, सैन्य संचालन में दक्ष, धन-धान्य पूर्ण, उद्यान तथा स्त्री सहवास से आनन्द पाने वाला, कामासक्त, नीच जाति में अनुरक्त, वायु पीड़ित होता है।

तुला में राहु—तुला राशि का राहु जातक को किसी भी कार्य में विशेष उन्नति करने से रोकता है, साधारण व्यवसाय द्वारा आजीविका चलती है। तरल तथा रस युक्त वस्तुओं से लाभ होता है। गठिया या दूसरे के दर्द-गुर्दा आदि होते हैं। जल में डूबने का भय रहता है।

वृश्चिक में राहु—यदि वृश्चिक राशि में राहु होता है तो मनुष्य असाधारण रूप से पराक्रमी, साहसी, पुलिस, सेना विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, कृपण, दयारहित, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला, अग्नि, वायु, जल, शस्त्रादि से हानि उठाने वाला होता है।

धन में राहु—धन राशि में राहु हो तो मनुष्य, बुद्धिहीन, नीच कार्यों में तल्लीन रहने वाला, राज्य दण्ड पाने वाला, चोर, डाकू तथा दुराचारी होता है। हिंसा वृत्ति से अधिकतर प्रसन्न रहने वाला, मांसाहारी, क्रोधी, अग्नि, जल तथा वात रोग से कष्ट पाने वाला होता है।

मकर में राहु—मकर राशि का राहु जातक को बड़ा ही पराक्रमी तथा परिश्रमी बनाता है और मनुष्य धनोपार्जन में तत्पर रहता है। विवाह होने में

रुकावट डालता है। मित्रों से धोखा खाता है। छोटे मनुष्यों में आदर पाता है, गिर कर चोट लगती है, पानी में डुबकी खानी पड़ती है।

कुम्भ में राहु--कुम्भ राशि गत राहु जातक को श्रमिक बनाता है। ऐसे मनुष्य जीवन में कोई विशेष कार्य नहीं कर पाते, पिछड़े वर्गों में आदर पाते हैं। स्त्री-पुत्रादि का सुख कम होता है। इष्ट-मित्रों के सहारे कार्य चलता है। वायु पीड़ा रहती है, जल से भय लगता है।

मीन में राहु--जब मीन राशि गत राहु होता है तो उत्साह हीन तथा आलसी होता है। पैतृक सम्पत्ति या नौकरी आदि के आश्रय से आजीविका चलती है, सच्चाई के कारण मनुष्य छोटे ग्राम, पड़ोस, मुहल्ले आदि में आदर-णीय होता है। स्त्री-पुत्रादि का सुख रहता है। जलोदर, मन्दाग्नि, जिगर-तिल्ली आदि से रोग होवे हैं, जल तथा वायु से भय रहता है।

राहु में राहोरन्तर्दशा फल—यह हम पहले लिख आये हैं कि राहु की दृष्टि से राहु के स्थान का प्रभाव अधिक होता है, जब तीन, छह ग्यारह (३, ६, ११) स्थान में मेष, वृष, मिथुन, कन्या, मकर तथा मीन का राहु बैठा हो तो मनुष्य को शुभफल ही प्रदान करता है। मनुष्य के व्यापार, व्यवसाय तथा नौकरी में अच्छे दिन दिखाता है। इष्ट-मित्रों से मेल रहता है। आधि-व्याधि रोग पीड़ा का विशेष भय नहीं रहता, समय विद्या-व्यसनादि में व्यतीत होता है। रहने का स्थान या कोई दूसरा स्थान अवश्य परिवर्तन करना पड़ता है किन्तु जब उपर्युक्त स्थानों के अतिरिक्त धनराशि पर विशेष रूप से जातक की बुद्धि में भ्रम उत्पन्न कर, इष्ट-मित्रों से झगड़ा, कलह, स्त्री-पुत्रों को रोग तथा उनसे विवाद, मानहानि, धन हानि, किसी की दुखद मृत्यु सम्वाद से कष्ट तथा निवास स्थान परिवर्तन का कष्ट भी हो सकता है। यात्रा में कष्ट तथा दुख उठाना पड़ता है। भोजन की व्यवस्था न होने पर भूखा रहना पड़ता है या फिर कुत्सित भोजन ही करना पड़ता है। सर्प, अग्नि, विष से भय रहता है, वात रोग से पेट, पेड़ू, अण्डकोष, आँख, कान, सिर में तथा गठिया रोग होता है। दुष्ट मनुष्यों की संगति से अपयश मिलता है, गुरुजनों, आफीसरों से अनबन रहती है और नौकरी में उन्नति होना तो दूर रहा त्यागपत्र तक देने की व्यवस्था हो जाती है। अपने परायों से दूर रहना पड़ता है।

राहु में जीवान्तर्दशा फल—जब राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा का प्रादुर्भाव होता है तो मनुष्य की चित्त वृत्ति सात्त्विक, बुद्धि प्रखर तथा शरीर स्वस्थ रहता है। व्यापार तथा व्यवसाय में उन्नति, नौकरी में पद वृद्धि या किसी प्रकार से सरकारी पारितोषिक की प्राप्ति होती है। रोग दबे रहते हैं। शत्रु शान्त हो जाते हैं। मुकदमे में विजय मिलती है, विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम सफलतामय होते हैं। अविवाहितों के विवाह हो जाते हैं, विवाहितों को पुत्र की प्राप्ति तथा धन की प्राप्ति होती है। उत्साह बढ़ा रहता है, पुरुषार्थ से पराक्रम खूब फलता है। धार्मिक उत्सवों तथा कृत्यों में, तीर्थ यात्रा में, मन्त्र-जाप, स्वाध्याय तथा शुभ कामों में मन लगता है। भक्ति-भाव हृदय में बढ़ता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, अपने-पराये, गुरुजनों में श्रद्धा बढ़ती है। सुख और शान्ति का मनुष्य को अनुभव होता है। समाज में आदर प्राप्त होता है।

राहु में शन्यन्तर्दशा फल—यदि राहु की महादशा के अन्तर्गत शनि की दशा का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती, वह उन्मादी की तरह इधर-उधर, किसी अज्ञात पीड़ा से विकल होकर भटकता फिरता है। उदास तथा अशान्त रहता है। कभी-कभी रोता है, पश्चात्ताप तथा मन ही मन एकान्त में विलाप करता है। कभी निर्जन तो कभी शहर में, तो कभी घर-गृहस्थ में रमण करते हैं, उनकी विकलता, उनकी वेष-भूषा से प्रत्यक्ष प्रकट हो जाती है। जन्म स्थान से दूर कहीं भी कष्ट पाते हैं। स्त्री-पुत्र, माता-पिता, बहन-भाई या किसी निकटतम सम्बन्धी के वियोग का मृत्यु सम्वाद श्रवण को मिलता है। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य कभी-कभी आत्महनन तक कर लेते हैं। साधु-संन्यासी के रूप में तो दर-दर की ठोकरें खाते हुए अनेक व्यक्ति देखे गये हैं। अग्नि, सर्प, विष, शस्त्र, चोर, डाकू तथा शत्रु कलह से चोट तथा हानि उठाते भी देखने में आते हैं। गठिया, दर्द, गुर्दा, वायु पीड़ा, हाथ-पैरों में सुन्नी, लकवा आदि रोगों से कष्ट पाते हैं। सभी शुभचिन्तक तथा सम्बन्धी घृणा करने लगते हैं। वात, पित्त, कफ, स्वाँसादि रोगों में धन-सम्पत्ति खर्च हो जाती है। निराहार तक रहना पड़ता है। घर-बार गिर पड़ते हैं, लगा व्यवसाय छूट जाता है। कभी-कभी कुकर्म द्वारा राज्यदण्ड भी मिलता है। राहु में शनि का अन्तर बहुत

ही अशुभ फलदायक होता है। ऐसी कोई आपत्ति नहीं जो कि मनुष्य के लिए इस दशा में शक्य न हो।

राहु में बुधान्तर्दशा फल—जब राहु की महादशा में बुध की दशा का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की चित्तवृत्ति स्थिर और बुद्धि सात्विक कार्यों में लगती है। धार्मिक कार्यों में विशेष उत्साह दिखाई देता है। भक्ति, स्वाध्याय, यज्ञ, हवनादि में विशेष रुचि प्रतीत होती है। खेल-कूद, नाटकादि में खूब मन लगता है। विद्यार्थियों को परीक्षा में सफलता कम मिलती है। स्त्री, बच्चों में कन्या जन्मोत्सव का सुख होता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, नौकर-चाकर, वाहनादि का सुख होता है। व्यापार तथा व्यवसाय में अच्छी आय होती किन्तु सरकारी नौकरी में कन्या के बुध का दशम में होना उन्नति करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा उन्नति नहीं होतो तो अवनति भी नहीं होती है। पुस्तक लिखने तथा बड़े मनुष्यों से मुलाकात करने का अवसर मिलता है। कुछ धन को प्राप्ति होती है। हरे फल तथा शाकादि का सुख रहता है। विष, पीलिया रोग, चोरादि से हानि होती है। वात रोग से मनुष्य पीड़ित होता है।

राहु में केत्वन्तर्दशा फल—यदि राहु की महादशा के अन्तर्गत केतु की दशा का अन्तर विद्यमान हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। चित्त में चंचलता बढ़ जाती है। दुष्ट संगति, नीच कर्मों की ओर मनुष्य का मन आकर्षित होता है। पापाचार वृत्ति से मनुष्य आजीविका चलाने लगता है। चोरी, जारी, जुआ, शराब, वेश्या गमनादि के कारण राज्यदण्ड भय रहता है। धन-सम्पत्ति का क्षय होता है। समाज में, पड़ोस तथा लोगों में मनुष्य तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है। अपने-पराये, इष्ट-मित्रों से कलह होने लगती है तथा जन्म-स्थान से दूसरी जगह जाना पड़ता है। बीमारी तथा धन क्षय के कारण मार्ग में तथा विदेश में कष्ट-वेदना, क्लेश तथा मानहानि का सामना करना पड़ता है। स्त्री-पुत्रादि का वियोग तथा शोक देखना पड़ता है। कृषि तथा पशु धन की हानि होती है। यदि केतु जन्म पत्र में भाग्य स्थान पर बैठा हो तो विशेष रूप से अभाग्य का सामना करना पड़ता है। बने बनाये कार्य बिगड़ जाते हैं। भोजन की व्यवस्था नहीं हो पाती, सिर दर्द, पेट दर्द, गुर्दे का दर्द, गठिया, जिगर, तिल्ली में खराबी, काला ज्वर, सर्पादि का भय होता है। राहु में केतु

का अन्तर बहुत ही खराब दिन दिखाता है। यदि राहु छठे और केतु द्वादश स्थान पर न हो। ऐसा होने पर भी नन्साल का सुख नहीं हो पाता, मनुष्य मन्दाग्नि से पीड़ित रहता है।

राहु में शुक्रान्तर्दशा फल—जब राहु की महादशा के अन्तर्गत शुक्र की दशा का प्रादुर्भाव होता है तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक तथा पहले की अपेक्षा चित्त की वृत्ति शान्त तथा स्थिर होती है। मन धार्मिक कार्यों, उत्सवों, तीर्थों, स्वाध्यायों तथा भक्ति-भजन में लगता है। वह अपने को कारागार से छूटे हुए कैदी से भिन्न स्वतन्त्रता मय पाकर सुख की अनुभूति प्राप्त करता है। व्यवसाय में उन्नति करता है। स्त्री-बच्चों से सुख का अनुभव करता है। परस्त्रीगमन की इच्छा रखता है। कामवासना प्रबल होती है, शृंगारी, खेल-तमाशे, नाटक सिनेमा आदि से दिल प्रसन्न रखता है। किसी कलापूर्ण कार्य, स्त्री तथा मुकदमा विजय से धन पाता है। विदेश-गमन में कष्ट होता है। वहाँ चोरों से, तथा अपने ही सम्बन्धियों से मनुष्य हानि तथा शोक की प्राप्ति होती है। विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि बढ़ती है। उत्तीर्ण होते हैं, अविवाहितों के विवाह हो जाते हैं, विवाहितों को कन्या जन्म की प्राप्ति होती है, स्वप्नदोष प्रमेह, धातु क्षय, मन्दाग्नि, जिगर-तिल्ली में खराबी के कारण अतिसार, अर्श आदि रोगों में वृद्धि होती है। स्वाथ्य बिगड़ा रहता है। भोजन नहीं पचता तो अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, जिससे कष्ट मिलता है। धन का व्यय होता है, किसी स्त्री से झगड़े में अपयश मिलता है।

राहु में सूर्यान्तर्दशा फल—जब राहु की महादशा के अन्तर्गत सूर्य की अन्तर्दशा का आगमन होता है तो मनुष्य को सूर्य महादशा के अन्तर्गत राहु दशा के समान ही फल प्राप्त होता है। बुद्धि में भ्रम तथा गर्मी रहती है, चित्त क्रोध तथा आवेश रहता है। माता-पिता से अनबन तथा कलह रहती है, चित्त में अभिमान तथा इच्छायें बलवती होती हैं। चोर, अग्नि, सर्प, विष तथा शस्त्र का भय रहता है, अकारण शत्रुओं से कष्ट मिलता है। व्यापार, व्यवसाय तथा नौकरी में तब तक सफलता नहीं मिलती जब तक राहु छठे और सूर्य किसी शुभ फल कारक स्थान दशम या एकादश में न हो अन्यथा व्यापार में हानि तथा नौकरी में उच्चाधिकारियों से अनबन हो जाने के कारण किसी प्रकार की उन्नति

नहीं होती, रजोगुण प्रधान हो जाने के कारण लड़ाई-झगड़े में मन लगता है, सिर में दर्द, आँख में पीड़ा; गठिया, वात रोग, रक्तातिसार तथा अर्शादि रोग होने से शरीर को कष्ट होता है, राहु में सूर्यान्तर्दशा का फल किसी भी प्रकार से शुभ फल दायक नहीं कहा जा सकता।

राहु में चन्द्रान्तर्दशा फल—यदि राहु की महादशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की अन्तर्दशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य को चन्द्रमा के पूर्ण होने पर, उच्च स्वगृही किसी शुभ स्थान में होने पर, साथ ही राहु के ३, ६, ११ स्थान में स्वगृही या उच्च का होने पर जातक की बुद्धि स्थिर तथा सत्कर्मरत रहती है। किसी अच्छे कार्य या कलापूर्ण कार्य के लिये पारितोषिक, धन-वस्त्रादि मिलते हैं, दूध-दही, खोये तथा रसीले पदार्थ फल इत्यादि खाने को मिलते हैं। इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से मेल-मिलाप बढ़ता है, स्त्री तथा सन्तान आदि से सुख मिलता है। परस्त्री गमन का संयोग बनता है और मनुष्य अनेक प्रकार से सुख का अनुभव करता है, जब चन्द्रमा क्षीण होकर त्रिक स्थान में बैठा हो और राहु केन्द्र या त्रिकोण में नीच या शत्रु क्षेत्री बैठा हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रमित तथा चित्तवृत्ति अस्थिर होती हैं, उसका कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो पाता, वह उन्मादी या पागल की भाँति इधर-उधर भटकता फिरता है, व्यर्थ शत्रुता बढ़ती है, अनेक प्रकार की आधि-व्याधि से शरीर को कष्ट होता है, चोर, जल, सर्प-विष आदि से भय होता है : इष्ट-मित्रों से कलह होती है। मुकदमे चलते हैं। धन-सम्पत्ति का विनाश होता है, किसी पतिता के स्नेह में अपयश मिलता है, चित्त में खिन्नता, निराशा, उदासी तथा भय होता है। मनुष्य को प्रत्येक प्रकार से कष्ट मिलता है। वायु, शीत रोग होते हैं।

राहु में मंगलान्तर्दशा फल—जब राहु की महादशा के अन्तर्गत मंगल की अन्तर्दशा का आगमन होता है तो मनुष्य की बुद्धि में भ्रम हो जाता है, चित्त की वृत्ति चंचल हो जाती है। क्रोध का आवेश बढ़ जाता है और वह पागल की भाँति कार्य करने लगता है, उसे तन-मन-धन का होश नहीं रहता, इष्ट-मित्रों, भाई-बन्धुओं से बिगड़ जाती है। मन में अनेक दुष्ट भाव उत्पन्न होते हैं। सहन-शक्ति का ह्रास हो जाता है। अनेक प्रकार की उपद्रवता से धन-सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। स्मृति के विस्मरण हो जाने पर मनुष्य की दुर्दशा

होती है, अग्नि, शस्त्र, चोर, विष आदि से हानि होती है, स्त्री-पुत्रादि में से किसी की क्षति हो सकती है। रक्त-पित्त विकार, अर्श, भगन्दर, नासूर, रक्तातिसार, कुसंगति से मानहानि तथा समाज में तिरस्कार होता है। हिंसा वृत्ति करने को जी चाहता है, भोजन की दुर्व्यवस्था होने के कारण मनुष्य की दुर्दशा हो जाती है, मनुष्य की इस दशा में मृत्यु भी हो सकती है, जीवन भार हो जाने पर कभी-कभी मनुष्य आत्महनन तक कर लेता है किन्तु सफलता न मिलने पर पुलिस द्वारा दुर्दशा को प्राप्त होकर अपनी करनी पर पछताता है। यह दशा सब प्रकार से खराब होती है।

बृहस्पति (जीव) दशा फल

जब मनुष्य को बृहस्पति की दशा आती है तो मनुष्य की बुद्धि निर्मल, सात्विक, प्रखर तथा स्मरण शक्ति तीव्र होती है। पाठ्य पुस्तकें तुरन्त याद हो जाती है। विद्यार्थियों को शुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त होते हैं और परिश्रम कम करना पड़ता है, चित्त की वृत्ति धार्मिक होती है, उत्सवों, तीर्थ यात्राओं, परोपकार, दान, दया, यज्ञ, हवनादि तथा सुगन्धित वस्तुओं के प्रयोग में मन प्रसन्न रहता है। रसीले, स्निग्ध पदार्थ, दूध, दही, खीर, खोये का सामान, मिष्ठान्न, हरी सब्जियाँ तथा अनेक प्रकार के फल खाने को मिलते हैं। अविवाहितों के विवाह हो सकते हैं, अच्छा दहेज मिलता है, विवाहितों को सन्तान, पुत्रादि की प्राप्ति, धन-धान्य के साथ होती है, व्यापारियों को कपड़े के क्रय-विक्रय से विशेष लाभ होता है, व्यवसायिकों का अच्छा व्यवसाय चलता है, नौकरी पेशे वालों को पारितोषिक तथा पद वृद्धि की प्राप्ति होती है। अधिकारी गण अकारण ही प्रसन्न रहते हैं। बड़े-बड़े औफिसरों से मुलाकात होती है, प्रशंसा पत्र मिलते हैं। मन में उत्साह तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है, कलाकारों को कलात्मक कार्यों के लिए प्रमाण पत्र, पारितोषिक तथा उत्तम उपकारों की प्राप्ति होती है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, अपने-पराये, स्वजन, परिजन सभी प्रसन्न रहते हैं। शत्रु भी मित्र हो जाते हैं और सत्कार की भावना से देखते हैं समाज में, लोक में, राजनैतिक क्षेत्र में विशेष आदर मिलता है और पुरुषार्थ की सफलता पर चित्त की शान्ति प्राप्त होती है, धन-धान्य सम्पत्ति तथा नये मकान का श्री गणेश होता है। शरीर स्वस्थ रहता है शरीर की कान्ति बढ़ती है वाहन सुख की प्राप्ति होती है। मनुष्य अनेक विद्या-

विनय से विपन्न होकर कविता, नाटक, इतिहास, उपन्यास, कहानियाँ, आख्या-यिकायें, आलोचना, समालोचना आदि से परिपूर्ण गोष्ठियों में प्रधान पद पाकर अपने को धन्य मानता है। यह सुन्दर फल मनुष्य को तभी हितकर होते हैं जब बृहस्पति शुभ अपने उच्च के नवांश में पूर्ण बली बैठा हो, इसके प्रतिकूल यदि गुरु नीच के नवांश में हो तो मनुष्य को उपर्युक्त फल के विपरीत फल मिलता है और चोर, शत्रुओं से मान हानि, स्त्री-पुत्रादि से द्वेष कलह, अनवन तथा वियोग होता है। ऋण लेना पड़ता है, किसी दुष्कर्म के लिए राजदण्ड भी प्राप्त हो सकता है। और भी बहुत सी आपत्तियाँ अचानक आ सकती हैं। मन की शान्ति भंग हो जाने के कारण और भी बहुत से कष्ट मिलते हैं। मनुष्य दुखी हो जाता है। सभी ज्योतिषी तथा जातक गुरु दशाफल के श्रवण मात्र से प्रसन्न न हों क्योंकि जहाँ इसकी दशा का इतना शुभ प्रभाव दर्शाया गया है वहीं इसका दुष्परिणाम भी पूर्ण रूप से प्रदर्शित किया गया है। यद्यपि साधारणतः गुरु दशा का परिणाम शुभ स्थानान्तर्गत शुभ ही देखा गया है और अशुभ स्थानगत अशुभ ही होता है। इसलिए पाठकों की सुविधा के लिये यहाँ इतना प्रत्यक्ष रूप से खोलकर कह देना अत्यन्त आवश्यक होता है कि गुरु दशा के शुभाशुभ फलों का विवेचन करते समय पाठकों को यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये कि गुरु जन्म पत्र मेंकिस नवांश का है। गुरु के नवांश के शुभाशुभ होने का मनुष्य के जीवन पर अतिशय प्रभाव पड़ता है। अभीतक अनुभव में यही आया है कि यदि गुरु कामी हो और नीच नवांश पर हो तो अशुभ फल करता है। नीच का गुरु यदि अपने ही उच्च के नवांश पर हो तो अत्यन्त शुभ फल प्रदान करता है। क्योंकि गुरु के स्थान से गुरु की दृष्टि अत्यन्त शुभ फलदायक होती है। इसलिए पाठक इस दशा फल के कहने में जल्दी न करें और सोच समझ कर अपने फल काविवेचन करने से यश की तथा धन की प्राप्ति हो सकती है।

ग्रह दृष्टि फल

मेष या वृश्चिक राशिगत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि मेष राशिगत बृहस्पति को सूर्य देखता हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रखर, सत्य धर्म पर आरूढ़ रहने वाली होती है। ऐसा मनुष्य मिलन-

सार, परोपकारी, सभी के काम आने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, भाग्यशाली, काव्य प्रणाली में यशस्वी तथा उच्च राज्याधिकार प्राप्त करने वाला होता है और जब वृश्चिक राशिगत गुरु को सूर्य देखता हो तो मनुष्य हठी, साहसी, पराक्रमी, हिंसक, पुलिस तथा सेना विभाग में उन्नति करने वाला, क्रोधी, डाकू आदि में से कुछ होता है। इष्ट-मित्रों से कलह करने वाला, कामी, स्वलिंग जातक से विषय की इच्छा रखने वाला, तथा अर्शादि अनेक रोगों से रोगी रहता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब मेष राशिगत गुरु को पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य सात्त्विक बुद्धि, धर्म भीरु, गुरुजनों की सेवा करने वाला, शान्त, प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक, कलाकार, कविता करने में चतुर, सरकारी कोष से धन पाने वाला, इतिहासवेत्ता, तीर्थयात्रा करने वाला, दर्शनीय तथा सुन्दर स्त्रियों का प्रेमी होता है, और जब वृश्चिक राशि के गुरु को चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य हतबुद्धि, पाप रत, श्रृङ्गारी तथा अश्लील प्रकार का होता है। इष्ट-मित्रों से अनबन रखने वाला, कामासक्त, वेश्यागामी तथा अपराध में राज्य दण्ड पाने वाला, धातु सम्बन्धी रोगों से युक्त, नीच प्रकृति होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत बृहस्पति को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य हठी, क्रोधी, आवेशपूर्ण, साहसी, पुरुषार्थी, तथा अभिमानी होता है। सेना तथा पुलिस विभाग में पराक्रम से उन्नति करने वाला, राजभक्त सेवक होता है। बात का इतना पक्का कि प्राण देकर भी दूसरों की रक्षा में तत्पर रहता है। समर में शत्रुओं को परास्त कर पारितोषिक पाने वाला, शत्रुओं का शत्रु और मित्रों का मित्र होता है। कृषि विभाग में उन्नति करने वाला, धन-सम्पत्ति से युक्त होता है।

बुध दृष्टि फल—जब मेष या वृश्चिक राशि गत बृहस्पति को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य की प्रकृति राजस प्रकार की होती है। चित्तवृत्ति कुछ आवेशपूर्ण रहती है। ऐसा मनुष्य तर्क-वितर्क करने वाला विद्वान् होता है। गणितशास्त्र में प्रवीण होता है। इष्ट-मित्रों से युक्त, शान्त, खेल-कूद में अग्रसर, छिद्रान्वेषी तथा कपटी मनुष्यों के कपट को जानने वाला, सभ्यों में सभ्य तथा असभ्यों के साथ यथायोग्य व्यवहार करने वाला, समयानुकूल होता है। हँसमुख

रहता है और अपने समस्त कार्यों को बिना धन व्यय किये अपनी नीति के आश्रय पूर्ण कर सुख से रहता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत बृहस्पति को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य तीव्र बुद्धि होनेपर भी पूर्ण विद्या नहीं कर पाता, स्वतन्त्र विचार होने के कारण स्वतन्त्र व्यवसाय पसन्द करता है, विवश होकर नौकरी भी चाहे क्यों न करनी पड़े, ये लोग अपने यौवन में चाहे जैसे भी कामी, लम्पट, शृङ्गारी रहे हों, समय आने पर इन सबका त्याग कर, वृद्धावस्था में परमार्थ द्वारा यश की प्राप्ति करते हैं, स्वकुलानुसार समाज तथा लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। अन्तिमावस्था इनकी लोक कल्याणी तथा धर्मदेश के लिए होती है। उस समय साधु वेश में भी इन्हें सब कुछ अनायास ही प्राप्त रहता है। जनता इनके अवगुणों को भूल कर गुणों का गायन करती है। ये भी लोकहितार्थ अपने जीवन तक को दान कर देते हैं।

शनि दृष्टि फल—जब मेष या वृश्चिक राशिगत बृहस्पति को शनि देखता हो तो मनुष्य तामस प्रकृति, मलिन बुद्धि, परिश्रमी, साहसी, हठी, लोभी, क्रोधी, कृपण, शत्रुजित्, अस्त्र-शस्त्रों को चलाने वाला, संग्राम विजयी, सैनिक होता है। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्रादि से रहित, रोम युक्त, शरीरा भयानक आकृति, शत्रुदमन होता है। इसको अपने भले-बुरे का ज्ञान कम होत है, फिर भी जिस बात पर अड़ जाता है, उसे पूर्ण करके छोड़ता है। चाहे जितना भी कष्ट क्यों न उठाना पड़े। वात-पित्त, रक्त, कफ, स्वाँसादि रोगों से कष्ट होता है।

वृष-तुला राशि गत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—जब वृष या तुला राशि गत बृहस्पति पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि होता हो तो मनुष्य राजस प्रकृति का, युद्ध के लिये तत्पर, सदा विजयी होता है, अनेक शस्त्र प्रहार होने पर भी पीछे नहीं हटता, राजभक्त तथा देशभक्त होता है। इसकी आकृति रोबदार तथा बुद्धि नीतिरंजित होती है, विचार उच्च होते हैं, फिर भी पर-स्त्री प्रेम में आसक्त रहती है। धन-सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख रहता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि वृष राशि गत बृहस्पति को पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य सात्त्विक बुद्धि वाला, धर्म-कर्म, पूजा-पाठ, भक्ति करने वाला, दार्शनिक होता है। धन-धान्य से पूर्ण, परोपकारी, नम्र, विनीत, गुरु जनों का आज्ञाकारी, कवि, कलाकार तथा अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला होता है। तुलागत गुरु को चन्द्रमा देखता हो तो उपर्युक्त फल के विपरीत फल होता है। मनुष्य अत्यन्त कामी, दुराचारी, पर स्त्री गमन में अपकीर्ति पाने वाला, नीच प्रकृति, सदा दो स्त्रियों को रखने वाला, पापी, लम्पट तथा जल भय से युक्त, धातु विकार से पूर्ण, अनेक रोगों वाला होता हैं।

भौम दृष्टि फल—जब वृष या तुला राशि गत बृहस्पति पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बड़ा ही बलवान्, भाग्यवान्, नीतिवान्, प्रतिष्ठावान्, सात्त्विक-राजस मिश्रित गुणों से युक्त, चतुर, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से युक्त वाहन वाला होता है। सेना-पुलिस विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, अत्यन्त कामी, अनेक स्त्रियों से प्रेम रखने वाला, जलक्रीड़ा में डुबकी खाने वाला, शुक्र क्षय, धातु विकार तथा प्रमेहादि रोगों से युक्त, पित्त-कफ आदि रोगों वाला, शस्त्र ताड़ित होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि वृष या तुला राशि गत बृहस्पति को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य कुशाग्र बुद्धि, गुणी, विद्वान्, कलाकार, कवि, लेखक, संगीत प्रिय, नाटक, सिनेमा आदि देखने का शौकीन, शृङ्गारी, विनोदी, सुन्दर सुसज्जित कमरे में रहने वाला, इष्ट-मित्रों से युक्त, हँसमुख, मधुभाषी, दर्शनीय होता है। और किशोरावस्था से ही विषय की ओर आकर्षित होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब वृष तुला राशि गत बृहस्पति को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, धनवान्, सुगन्धि पुष्पों, इत्रों, अलंकारों, वस्त्रों से सुसज्जित रहने वाला, सबका प्रिय, शृंगारी, कवि, लेखक, अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला, ऐश्वर्य से जीवन व्यतीत करने वाला, धार्मिक, परोपकारी तथा काम जनित रोगों से पीड़ित होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि वृष-तुला राशि गत बृहस्पति को शनि देखता हो तो मनुष्य चतुर, बुद्धिमान्, अपूर्ण विद्या वाला, पिता का विरोधी, गुरु जनों का द्वेषी, शहर, ग्राम में स्वकुलानुसार आदर पाने वाला, उत्सवादि में अग्रसर,

स्त्री-पुत्र आदि का सुख सामान्य रहता है। धन सम्पत्ति इतनी होती है कि कार्य नहीं रुकता, हाथ नहीं फैलाना पड़ता। जलभय रहता है, जलयात्रा में संकट आता है। लाठी या शस्त्र से चोट लगती है, वात, कफ, नजला, मन्दाग्नि, मन्द दृष्टि आदि रोग होते हैं।

मिथुन कन्या राशि गत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि मिथुन कन्या राशि गत गुरु पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, चतुर तथा नीतिज्ञ होता है। व्यापार की अपेक्षा सरकारी नौकरी में उन्नति करता है। माता-पिता, स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र आदि से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं और धन सम्पत्ति से युक्त होता है। मोहल्ले, पड़ोस तथा समाज में आदर मिलता है। ऐसा मनुष्य छिप कर पर-स्त्री गमन करने वाला, शान्त, विनय युक्त तथा विनोदी होता है। मिष्ठान्न तथा फल खाने का शौकीन होता है। पीलिया, पित्त तथा कफ स्वाँसादि रोगों से कष्ट होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब मिथुन या कन्यागत बृहस्पति पर चन्द्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य गुणवान्, धनवान्, पुरुषार्थपूर्ण, गौरवशाली, स्त्री प्रकृति का, लज्जित भाव से पूर्ण, परोपकारी, दयालु तथा माता-पिता की सम्पत्ति पाने वाला, स्त्री को प्रिय, सन्तान द्वेषी, समाज में आदरणीय होता है, क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट होने पर विपरीत फल होता है। मनुष्य कामी तथा पर-स्त्री प्रेम में अपयश पाने वाला होता है। प्रमेहादि रोग से पीड़ित रहता है।

भौम दृष्टि फल—यदि मिथुन कन्या राशिगत गुरु पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य साधारण बुद्धिमान्, साहसी, नीच कर्म करने वाला, लड़ने-मरने वाला, शस्त्र से घाव खाने वाला, हठी, मित्रों के सहारे साहसपूर्ण कार्य करने वाला, क्लीब मनुष्यों तथा पतित स्त्रियों से प्रेम करने वाला, नीचों में सम्मानित होता है। प्रपंच, धोखा, ठगी, चोरी आदि कामों में निपुण होता है। मित्रों से मित्रता तथा शत्रुओं से शत्रुता पूर्णतया निभाता है।

बुध दृष्टि फल—जब मिथुन-कन्या राशिगत बृहस्पति को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य विद्या-विनय विपन्न, धन-धान्य युक्त, मधुभाषी, इष्ट-मित्र, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी, गणित, ज्योतिष, हस्तरेखा, कविता, लेख-कहानी,

नाटकादि लिखने या सुनने का शौकीन होता है। नियमित तथा सुचारु रूप से कार्य करने वाला, विनोदी, हँसमुख, स्वतन्त्र विचार तथा नीतिज्ञ होता है। बाल्यावस्था से ही कामासक्त रहने के कारण अनेक रोगों से ग्रसित रहता है और आयु के साथ ही साथ अपयश मिलता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मिथुन-कन्या राशिगत गुरु को शुक्र देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, धनवान्, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, सुन्दर मकान में रहने वाला, परोपकार की दृष्टि से अनेक कर्म करने वाला, अनाथालय, चिकित्सालय, पियाऊ आदि बनाकर यश प्राप्त करने वाला, श्वेत सुगन्धित वस्त्र धारण करने वाला, फल, दूध, दही तथा रसीले, चिकने पदार्थों का सेवन करने वाला, नीच स्त्री का प्रेमी, वीर्य विकार जनित रोगों से पीड़ित होता है।

शनि दृष्टि फल—जब मिथुन-कन्या राशिगत गुरु को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य शूर-वीर, प्रपंची, कूटनीतिज्ञ तथा शत्रुओं पर प्रहार करने वाला, पराक्रम द्वारा धन तथा पारितोषिक पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से रहित, शहर, ग्राम तथा कस्बे में नाम मात्र की प्रतिष्ठा पाने वाला, लम्बे कद का, नीचों का नेतृत्व करने वाला, चतुर होता है। वात, पित्त, कफ, स्वाँसादि रोगों से पीड़ित रहता है। इसका अन्त समय अच्छा नहीं होता है।

कर्क राशि गत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि कर्क राशि गत गुरु पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, गर्वयुक्त, अनेक भाषाओं का जानने वाला, दर्शनीय, बड़ी इच्छा वाला, माता-पिता के सुख से सुखी, इष्ट मित्रों का द्वेषी होता है। विवाह देर में होता है। विवाह के पश्चात् मनुष्य स्त्री-पुत्र आदि धन-धान्य से पूर्ण होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। सदा पर स्त्री की लालसा करता है।

चन्द्र दृष्टि फल—कर्क राशि में गुरु उच्च का होता है और चन्द्रमा स्वगृही होता है, यदि उच्च का गुरु उच्च नवांश में भी हो तो सोने में सुगन्धि का काम करता है और उसे पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, धर्मात्मा, परोपकारी, शुद्धात्मा, कलाकार, कवि, लेखक, कोषाध्यक्ष, दर्शनीय, समाज तथा लोक में आदर पाने वाला, अच्छे वाहन से युक्त, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से सुखी, इष्ट-मित्रों से युक्त, मधुर वाणी, सबका प्रिय होता

है। यदि नीच के नवांश में गुरु क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य को विपरीत फल की प्राप्ति होती है। किसी नीच, सुन्दर स्त्री के प्रेम में अपयश मिलता है और मनुष्य पाप तथा निन्दित कर्म की ओर अग्रसर होता है। धर्म-कर्म से रहित होकर दुखी होता है।

भौम दृष्टि फल---यदि कर्क के गुरु को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही परिश्रमी, साहस से कार्य करने वाला, दर्शनीय, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से सुखी, धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त, बन्धु-बान्धवों को प्रिय, शस्त्र-प्रहार से ताड़ित, शत्रुओं का मर्दन करने वाला, घमण्डी, नीतिज्ञ तथा पर-स्त्रियों के प्रेम की इच्छा रखने वाला, संगीत प्रिय, स्वाध्याय प्रिय होता है।

बुध दृष्टि फल---जब उच्च के गुरु को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, धार्मिक, सरकारी नौकर, अनेक विद्याओं को सीखने का प्रयत्न करने वाला, शान के साथ रहने वाला, कृपण, आलसी, झूठा होता है। पर-स्त्री तथा पर पुरुष से प्रेम करने वाला, अपने को उच्च समझता है, इसके पुत्र आज्ञाकारी नहीं होते, विवाह देर में होता है, मन्दाग्नि, जिगर में खराबी होने से कष्ट पाता है।

शुक्र दृष्टि फल---यदि कर्क राशिगत गुरु को शुक्र देखता हो तो मनुष्य बहुत ही ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, पण्डित, संगीत-प्रिय, कलाकार, कवि, लेखक, प्राकृतिक सौन्दर्य का उपासक, तैराकी, जलयात्रा करने वाला, शृंगार-प्रिय, मधुभाषी, दर्शनीय तथा स्त्री-पुत्रादि से कलह रखने वाला, पर स्त्री पर आसक्त होता है। सरकारी नौकरी में उन्नति करता है।

शनि दृष्टि फल---जब उच्च के बृहस्पति को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही कूटनीतिज्ञ, प्रपंची, शूर-वीर, अस्त्र-शस्त्र का ज्ञाता, सेना-पुलिस विभाग में उन्नति करने वाला, समाज तथा लोक में यशस्वी, तथा संग्राम विजयी होता है। ऐसे जातक वृद्धावस्था में संसार को त्याग कर ईश्वर भक्ति करते हैं, परोपकार द्वारा परलोक सुधारते हैं।

सिंह राशिगत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल---यदि सिंह राशिगत गुरु को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही परिश्रमी, लगन के साथ कार्य करने वाला, नीति निपुण,

कुशल व्यापारी या सरकारी नौकर होता है। क्रोधी तथा साहसी होता है। दूसरों से कार्य करवा लेने की अच्छी शक्ति होती है। स्त्री सुन्दर तथा गर्व युक्त होती है। समय पर व्यय करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति, समाज का प्रधान, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, भ्रमणशील होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब सिंह राशि गत गुरु को पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बहुत ही उत्तम विचार, शुभ कर्म रत, धार्मिक, विद्वान्, कलाकार तथा कवि या लेखक होता है। स्त्री-सन्तान के सुख से सुखी रहता है, दर्शनीय, हँसमुख, पर-स्त्री मन को हरण करने वाला, स्त्री जाति से धन पाने वाला होता है। क्षीण चन्द्र उपर्युक्त फल की हानि करता है और किसी पतित स्त्री के प्रेम में धन और मान की हानि उठाता है।

भौम दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत बृहस्पति को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही शूर-वीर, साहसी तथा उद्यमी होता है। पुलिस या सेना विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त कर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। यद्यपि ऐसे जातक अधिक पढ़े-लिखे नहीं होते, फिर भी कूटनीतिज्ञ तथा गुरुजनों का आदर करने वाले, स्वाभिमानी, हठी तथा बन-विजन में विचरने वाला, समाज में आदरणीय होता है।

बुध दृष्टि फल—जब सिंह राशि गत बृहस्पति को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य अधिक बुद्धिमान् न होने पर भी परिश्रम द्वारा सभी कार्य क्षेत्रों में सफलता पाने वाला, स्त्री सौन्दर्य की पूजा करने वाला, सन्तान के सुख से सुखी होता है। अपने गुणों के कारण समाज में आदर पाने वाला, धन-सम्पत्ति से युक्त, मकानादि बनाने वाला, इष्ट-मित्रों से प्रख्यात, अचल नीति होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत गुरु को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बहुत ही बुद्धिमान्, विद्वान्, उच्च विचार, कवि, लेखक, स्त्री सौंदर्य की उपासना करने वाला, मधुभाषी, लज्जा युक्त, अनेक स्त्रियों की इच्छा रखने वाला, सरकारी कर्मचारी, धन-धान्य से युक्त, स्वाभिमानी, आवेशपूर्ण, शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाला, स्त्री-पुत्रादि से कम सुख पाने वाला, भाग्यवान्, मन्द दृष्टि तथा वायु, कफ, नजलादि रोगों से युक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—जब सिंह राशि गत बृहस्पति को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन बुद्धि, मलिन मन, प्रपंची तथा कूटनीतिज्ञ होता है।

धर्म-कर्म के बाह्याडम्बरों से उदासीन, कृश शरीर, शस्त्रादि विद्या में निपुण, समयानुकूल बनकर अपना कार्य निकाल लेने वाला, अजीब प्रकृति होता है। वायु, पित्त, पीलियादि रोगों से युक्त रहता है। स्त्री-पुत्रादि सुख कम होता है।

धन या मीन राशिगत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि धन या मीन राशिगत बृहस्पति को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही प्रतापी, शूर-वीर, क्रान्तिकारी, स्वतन्त्र विचार, इच्छानुकूल धर्म को मानने वाला, नौकरी में अप्रसन्न रहने वाला, नियमित समय का पाबन्द, योग का इच्छुक, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्रादि के सुख से रहित, गुणवान्, धार्मिक, क्रोधी, शत्रु युक्त तथा समाज में आदर पाने वाला, उपकारी तथा गरीबों की सहायता करने वाला, स्वकुलानुकूल, धनिक तथा पित्तादि से रोगी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब धन या मीन राशि गत बृहस्पति को पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, सरकारी नौकरी में उन्नति करने वाला, माता-पिता, भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, गर्वयुक्त तथा अपनी बात को विशेष प्रकार से समझाने वाला, साहित्यप्रेमी, कलापूर्ण कार्यों को करने वाला होता है। अपूर्ण चन्द्रमा से दृष्ट होने पर मनुष्य नौकरी में उन्नति न करने वाला, अपूर्ण विद्या वाला, स्त्री से विचार-विनिमय न होने के कारण कलह रहती है। कृपण, सन्तान युक्त तथा बन्धु-बान्धवों से पृथक् रहने वाला होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि धन या मीन राशि गत बृहस्पति को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, साहसी, नीतिज्ञ, संग्राम विजयी, क्रोधी, स्वाभिमानी, लड़ाई में घाव खाने वाला, हठी तथा परोपकारी होता है। स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, इष्ट-मित्रों से युक्त, सैनिक विभाग में उन्नति करने वाला, जलयात्रा में प्रसन्न रहने वाला, समाज में आदरणीय, बड़े-बड़े अधिकारियों से मुलाकात रखने वाला, धार्मिक तथा निर्धनों का सहायक, पित्तादि रोग का रोगी होता है।

बुध दृष्टि फल—जब धन या मीन राशिगत बृहस्पति को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, स्वाभिमानी, पढ़ने-लिखने में चतुर, अनेक भाषाओं

को सीखने वाला, सरकारी नौकर, कविता, संगीत श्रवण का शौकीन, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव के सुख से सुखी, सुन्दर स्त्री वाला, गुरुजनों से शत्रुता रखने वाला, कामासक्त, परोपकारी, धार्मिक विद्या, पुस्तकों द्वारा धन कमाने वाला, जलयात्रा में प्राण संकट पाने वाला, ऐश्वर्यंयुक्त, विनोदी, चलचित्त, कृपण होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिसका धन या मीन राशि गत बृहस्पति शुक्र से पूर्ण दृष्ट हो तो वह मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान् फिर भी अपूर्ण विद्या रहती है। समस्त आयु उसकी पुस्तकें पढ़ने-पढ़ाने तथा लिखने-लिखाने में जाती है। धार्मिक, परोपकारी तथा तीर्थयात्रा प्रिय होता है। सादा जीवन, उच्च विचार रखता है। वृद्धावस्था शान्तिमय व्यतीत होती है। वह अपने गुणों के कारण समाज तथा लोक में कीर्ति पाता है। कामवासना उसकी प्रबल होती है, फिर भी अपयश को प्राप्त नहीं होता, स्त्री-पुत्रादि का सुख कम होता है, शुक्रक्षय, धातु विकार, नजला, जुकामादि रोग समय-समय पर होते रहते हैं।

शनि दृष्टि फल—यदि धन या मीन राशि गत बृहस्पति को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन बुद्धि, संसार से उदास, अपने व्यवसाय में अप्रसन्न रहने वाला, गुरुजनों का द्वेषी, प्रतिशोधपूर्ण भावना रखने वाला, आवेशपूर्ण, शत्रुओं से भय खाने वाला, धर्मभीरु, रूढ़िवादी, अस्थिर विचार, धार्मिक विचारों को बदल देने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख को कठिनता से पाने वाला, हठी, दीर्घसूत्री, इच्छित कार्य को शीघ्र करने वाला, निर्जन तथा एकान्त-प्रिय होता है और असम्भव बातों द्वारा अपनी उन्नति का स्वप्न देखा करता है।

मकर कुम्भ राशिगत गुरु पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यह सभी जानते हैं कि मकर राशि पर गुरु नीच का होता है, इसलिए जब नीच के गुरु को सूर्य देखता हो तो मनुष्य मलिन बुद्धि, मलिन मन, क्रोधमय वार्ता करने वाला, नौकरी में उन्नति न करने वाला, छापे खाने, लोहे की फैक्ट्री, कोयले आदि के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, किसी को हानि पहुँचाने वाली चित्त-वृत्ति से रहित होता है। और जब कुम्भ राशि पर गुरु सूर्य से दृष्ट हो तो मनुष्य उग्रस्वभाव, हठी, विद्वान्, स्वाभिमानी, उच्च विचार, परोपकारी, धार्मिक, इष्ट-मित्रों से युक्त, गुरु जनों का आज्ञाकारी, समाज में आदरणीय, जल में डुबकी खाने वाला, पित्तादि से रोगी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब मकर राशिगत गुरु को अपूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य नीच प्रकृति, शृंगारी, अश्लील, कुत्सित तथा निन्दित कर्म होता है। किसी नीच स्त्री के प्रेम में अपमान तथा धन की हानि होती है। पाप कर्मरत रहता है। ठगी, जुआ, शराब आदि व्यसनों से युक्त पथभ्रष्ट की भाँति देश-विदेश में घूमना पड़ता है। कुम्भ राशि के गुरु को यदि पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य विद्वान्, धार्मिक, परोपकारी, राज्य से धन पाने वाला, कवि, लेखक, देशाटन प्रिय, जल विनोदी, माता-पिता का सेवक, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, धर्मशाला, कुआँ, चिकित्सालय, अनाथालयादि बनवाने वाला, धातु क्षीण, नजलादि से रोगी रहता है।

भौम दृष्टि फल—यदि मकर राशिगत गुरु को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन बुद्धि, क्रोधी, निन्दित कर्म करने वाला, पुलिस का सिपाही, डाकू या इसी प्रकार के छोटे कर्म करने में निपुण, प्रपंची, घमंडी, नीच की संगति में प्रसन्न रहने वाला, गुरुजनों का द्वेषी, सुन्दर तथा नीच वर्ण की स्त्री से प्रेम करने वाला, सभी से धमकी देकर काम लेने वाला, धर्म विरुद्ध होता है, और जब कुम्भ के गुरु को मंगल देखता हो तो मनुष्य शूर-वीर, साहसी, उद्यमी, पुलिस-सेना विभाग में निजी पराक्रम से उन्नति करने वाला, धर्मभीरु, जल-यात्रा प्रिय, समाज में प्रतिष्ठा पाने वाला, गुरुजनों का सेवक, राज्य पारितोषिक पाने वाला, दर्शनीय, नीतिज्ञ तथा चतुर होता है, रक्त-पित्तादि रोग से भी पीड़ित होता है।

बुध दृष्टि फल—जब मकर राशिगत बृहस्पति को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मन्द बुद्धि, अस्थिर विचार, पाप कर्मरत, छोटे बच्चों को विषय की लालसा से प्रेम करने वाला, पिता द्वेषी, धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, पीलिया रोग से रोगी, नीचों में यश पाने वाला होता है और जब कुम्भ राशि गत गुरु को बुध देखता हो तो मनुष्य विशुद्ध बुद्धि, धार्मिक प्रकृति, तीर्थ यात्रा रत, शान्त, विनोदी, हँसमुख, सुन्दर स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी, पर स्त्री प्रेम की इच्छा रखने वाला, परोपकारी, व्यापारी या सरकारी नौकर होता है। समाज में आदर पाता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मकर राशिगत गुरु को शुक्र देखता हो तो मनुष्य अशुभ कर्म करने वाला, अश्लील साहित्य का सेवी, स्वच्छन्द, इष्ट-मित्रों का

द्वेषी, नीच स्त्रियों के सहवास में अपयश पाने वाला, कामी, कुटिल तथा कुचाल होता है। धातु विकार, जल विकार, नजला, जुकाम से पीड़ित होता है। कुम्भ गत गुरु को शुक्र देखे तो मनुष्य, विद्या, विनय, कला, धन-धान्य से युक्त, शुभ कर्म युक्त, उत्तम स्त्री, वाहन, आसन से युक्त, श्वेत वस्त्र धारण करने वाला, उत्तम मस्तक, राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति करने वाला, वकील या बड़ा राज्याधिकारी होता है, धर्म कर्म रत रहता है।

शनि दृष्टि फल--जब मकर गत गुरु को शनि देखता हो तो मनुष्य मलिन मन, पापी, पर धन की इच्छा रखने वाला, जल तथा शस्त्र से भय खाने वाला, उच्च वर्ण, पिता, मित्रों का द्वेषी होता है। रोगी रहता है और जब कुम्भगत गुरु को शनि देखता हो तो मनुष्य धर्म-कर्म करने वाला, उत्तम गुणों से युक्त, वायुयान या जलयात्रा करने वाला, विश्वसनीय, पशुओं, शस्त्रों से लाभ पाने वाला, धन-धान्य से युक्त, उदास, वृद्धावस्था में योग करने वाला तथा वात रोगी होता है।

जीवोपदशा फल

गुरु में गुरोरन्तर्दशा फल—यदि गुरु की महादशा के अन्तर्गत गुरु का ही अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि बड़ी ही सात्त्विक, धर्म कर्म करने में तत्पर, स्वाध्याय, पूजा-पाठ, मन्त्र-जाप, यज्ञादि कार्यों में चित्त की वृत्ति बहुत लगती है, उत्सवों में उत्साह रहता है। विद्यार्थियों को परीक्षा के शुभ परिणाम मिलते है। अविवाहितों के विवाह तथा विवाहितों को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। मुकदमों में विजय मिलती है। सरकारी नौकरी में वेतन या पदवृद्धि होती है। पारितोषिक प्राप्त होते हैं। मनुष्य अपनी विद्वत्ता तथा कलापूर्ण कार्यों के लिए सत्कार पाता है। समाज, लोक तथा राजनैतिक में आदर पाता है। माता-पिता यदि जीवित रहें तो सुख मिलता है। धन-सम्पत्ति, मकानादि का प्रादुर्भाव होता है। ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि होती है। इष्ट-मित्रों से मिलाव होता है, गुरु-देवताओं में सेवा की भावना जागृत होती है। सोचे हुए अधिकतर कार्य पूर्ण हो जाते हैं। कविता, लेख, संगीत-आदि में से किसी कार्य के लिए यश तथा कीर्ति का लाभ होता है। स्त्री-पुत्रादि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। साधु तथा सज्जनों की सेवा का अवसर प्राप्त होता है। ईश्वर भक्ति बढ़ती, सुवर्ण, सुन्दर वस्त्र, दूध,

दही, घी, मिष्ठान्न तथा फल और रसीले चिकने पदार्थों की प्राप्ति होती है, वाहनादि का सुख होता है, यदि गुरु नीच के नवांश में हो तो उपर्युक्त फल की हानि करता है, जैसा कि गुरुदशा फल में लिखा है।

गुरु में शन्यन्तर्दशा फल—जब बृहस्पति की महादशान्तर्गत शनि की उपदशा का समय वर्त रहा हो तो मनुष्य की बुद्धि मलिन तथा चित्त की वृत्ति उदास हो जाती है। ऐसा मनुष्य धर्म के विरुद्ध आचरण करने लगता है। उच्च वर्ण होकर भी नीचों की संगति करता है। मदिरा, मांस, जुआ, वेश्या या पर स्त्री गमन को ललचाता है। अनेक दुर्व्यसनों से पीड़ित रहने के कारण शरीर कृश हो जाता है। क्रोध बहुत आता है और किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती, सभी परिश्रम तथा उद्योग व्यर्थ से हो जाते हैं। जीवन निराशामय रहता है, आत्म-हत्या करने को जी चाहता है। दुःस्वप्न दबाते, वायु, पित्त, कफादि रोगों से कष्ट मिलता है। काम वासना प्रबल होती है। किसी नीच प्रेयसी के सम्बन्ध में आ जाने पर धन-धर्म की हानि, अपयश की प्राप्ति होती है। कृषि, व्यापार तथा नौकरी में हानि ही हानि रहती है, अधिकारी वर्ग अप्रसन्न रहता है, किसी भी कार्य में मन नहीं लगता, मनुष्य परेशान रहता है। व्यवसाय से ऊबकर एकान्त वास को दिल करता है। स्त्री-पुत्रादि का वियोग, मुकदमा, तथा शत्रुओं से हानि होती है। परीक्षार्थी अनुत्तीर्ण ही रहते हैं। शस्त्र तथा पशुओं से चोट भय रहता है, आय घट जाती है, व्यय बढ़ जाता है। यात्रा में हानि रहती है। मित्र शत्रु बन जाते हैं। पशुओं की क्षति तथा सौख्य का ह्रास होता है।

गुरु में बुधान्तर्दशा फल—यदि गुरु की महादशान्तर्गत बुध की उपदशा वर्तमान हो तो मनुष्य को शनि अन्तर्दशा के उपरान्त सुख की साँस मिलती है। और वह मनुष्य व्यापार, नौकरी तथा व्यवसाय से ऊबे हुए चित्त में स्थिरता का अनुभव करता है और शान्ति तथा सहज उद्योगों द्वारा उत्कर्ष तथा उन्नति को प्राप्त होता है। धन-धान्य सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, धर्म-कर्म में चित्त की वृत्ति रहती है। बुद्धि में सात्विकता बढ़ती है। विदेश गमन तथा जल यात्रा का समय आता है। खेल-कूद, उत्सव में उत्साह बढ़ता है, कविता, लेख, कहानी, नाटक कला पूर्ण कार्यों में यश मिलता है। संगीत, गणित, ज्योतिष,

हस्त-सामुद्रिकादि में रुचि बढ़ती है। सरकारी नौकरी में वेतन या पद वृद्धि होती है। अनेक प्रकार से सुख मिलता है। साथ ही लाट्री, जुआ, रेस आदि व्यसनों से हानि होती है। मस्तक, नेत्र पीड़ा, पीलिया रोग, कफ, स्वाँसादि रोगों में वृद्धि होती है। मित्रों से धोखा मिलता है। अनेक प्रकार के फल, रसीले, चिकने पदार्थ खाने को मिलते हैं। कभी सुख तो कभी दुख को प्राप्ति होती है। जीवन सम रहता है।

गुरु में केत्वन्तर्दशा फल---जब वृहस्पति की महादशा के अन्तर्गत केतु की उपदशा वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि मलिन तथा भ्रष्ट हो जाती है। उसे कृत कर्म तथा कुकर्म का ध्यान तक नहीं रहता, और धर्म से हटकर अधर्म की ओर चित्त की वृत्ति जाती है। जुआ खेलना, शराब पीना, भाँग, गाँजा, चरसादि का व्यसन लग जाता है। नीचों की संगति से अपयश मिलता है। परीक्षार्थियों को परीक्षा परिणाम अशुभ प्राप्त होते हैं। व्यापार तथा व्यवसाय में हानि होती है। नौकरी पेशा मनुष्यों को अधिकारी वर्ग से अनबन रहती है। कोई भी उन्नति नहीं होती, शत्रुओं से, चोरों से शस्त्र भय रहता है। स्त्री-पुत्रादि से सन्ताप मिलता है। मन की परिस्थिति डाँवाडोल रहने के कारण किसी भी उद्योग में सफलता नहीं मिलती, माता-पिता या किसी पूज्य व्यक्ति का वियोग सहना पड़ता है। किसी प्रिय मित्र से लड़ाई हो जाती है। वायुगोला, पेट दर्द, जिगर तिल्ली, मन्दाग्नि तथा अण्डकोष वृद्धि आदि अनेक रोग होते हैं। स्वास्थ्य चिन्ता बनी रहती है। हृदय दुर्बलता के कारण चित्त की धड़कन बढ़ जाती है। भोजन की व्यवस्था ठीक न रहने के कारण मनुष्य पथभ्रष्ट होकर देश-विदेश में दर-दर की ठोकरें खाता है। यदि केतु उच्च या स्वगृही छठे या एकादश स्थान में हो तो मनुष्य को इतना हानि कारक न होकर, कुछ धन-धान्य या मूल्यवान् पत्थरों के व्यापार, काष्ठ, फूँसादि से लाभ देता है।

गुरु में शुक्रान्तर्दशा फल—यदि गुरु की महादशा के अन्तर्गत, शुक्रान्तर का समय व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की बुद्धि बड़ी ही सात्त्विक होती है। धर्म-कर्म, तीर्थयात्रा, परोपकार, दान, दूसरों की सेवा में मन लगता है। अनेक प्रकार के कला पूर्ण कामों में मन लगता है। राजनैतिक क्षेत्र में प्रगति होती है। कविता, लेख, कहानी, ड्रामा, नाटकादि में पारितोषिक मिलते हैं। परीक्षा-

थियों को परीक्षा परिणाम शुभ प्राप्त होते हैं। श्वेत वस्तुओं का व्यापार लाभप्रद रहता है। स्निग्ध, चिकने, रसीले, फल, दूध, खोये के पदार्थ, मिष्ठान्न आदि सुस्वाद पदार्थ खाने को मिलते हैं। स्त्री-पुत्रादि सन्तान का सुख होता है। उत्सवों में उत्साह रहता है। सरकारी नौकरों की पद वृद्धि, वेतन वृद्धि तथा किसी प्रकार के पारितोषिक द्वारा उन्नति होती है। किसी स्त्री से धन की प्राप्ति होती है। जल यात्रा का अवसर आता है, देश-विदेश की शुभ यात्रा होती है। काम वासना प्रबल होती है, अनेक स्त्रियों के सहवास की लालसा मन में बढ़ती है। नजला, जुकाम, शुक्र, धातु क्षीणादि रोग होते हैं, अविवाहितों के स्वप्नदोष बढ़ जाते हैं और विवाह की वेला आ जाती है और विवाहितों को सन्तान की प्राप्ति होती है। धन-धान्य, सम्पत्ति, वाहन, वस्त्र का सुख होता हैं। गुरुजनों से द्वेष रहता है। समाज में आदर मिलता हैं। उद्योग में सफलता मिलती है।

गुरु में सूर्यान्तर्दशा फल—जब बृहस्पति की महादशा में सूर्य की उपदशा वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि तीव्र तथा उत्साही होती हैं, सत्कर्म में प्रवृत्ति रहती है, धर्म दया परोपकारादि शुभ कर्म होते हैं। व्यापार, व्यवसाय, नौकरी आदि में वृद्धि तथा लाभ होता हैं, सेना और पुलिस विभाग के अधिकारियों की विशेष उन्नति होती हैं। शत्रु दबे रहते हैं संग्राम में विजय मिलती हैं, राज्य भाषा पढ़ने वालों को विशेष लाभ रहता है। राजनैतिक क्षेत्र में नीति निपुणता के कारण जय-सौख्य तथा प्रतिष्ठा प्राप्ति होती है। कृषि विभाग से लाभ होता है। माता-पिता की सम्पत्ति प्राप्त होती है। तार्किक व्याख्यानदाताओं को विजय प्राप्त होती हैं और मनुष्यों को समाज, भाई-बन्धुओं, इष्ट-मित्रों से आदर तथा सत्कार मिलता है। बड़े-बड़े अधिकारियों की मुलाकात से लाभ होता है और मनुष्य अपने रोब तथा नीति से काम लेने वाला, साहित्यिक होता है। ऐसा मनुष्य आवेशपूर्ण स्वाभिमानी होता है। वात, पित्त, कफ रोग होता है, सिर में दर्द, आँख में पीड़ा, त्वचा का जलना आदि रोग होते हैं और कई प्रकार के रोग हो सकते हैं। इस दशा में सुखों की अधिकता के साथ साथ दुखों की भी कमी नहीं रहती। रजोगुण प्रधान होने से मनुष्य समासम जीवन व्यतीत करने में सफल हो जाता है।

गुरु में चन्द्रान्तर्दशा फल—बृहस्पति की महादशा के अन्तर्गत यदि चन्द्र उपदशा का समय व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक तथा

धर्म-कर्म में उत्साह रखने वाली होती है। मनुष्य कविता कलाप, संगीत, साहित्य तथा अनेक प्रकार के कलापूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त कर पारितोषिक पाता है। परीक्षार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होता है। निकम्मे मनुष्य को व्यवसाय मिल जाता है। व्यापारियों को श्वेत-पीत वस्त्रों तथा वस्तुओं के व्यापार में अच्छा लाभ रहता है। सरकारी नौकरों की पदवृद्धि, वेतन वृद्धि तथा और किसी प्रकार के पारितोषिक से उन्नति होती है। अनेक प्रकार से पुस्तकालोकन करने को मिलता है। दूध, दही, घृत, खोयादि के बने अनेक प्रकार के मिष्ठान्न पदार्थ खाने को मिलते हैं। रसीले फल तथा अनेक प्रकार की सब्जियां खाने को मिलती हैं। वाहन सुख रहता है, तीर्थयात्रा, जलयात्रा, देशाटन तथा विदेश यात्रा से लाभ होता है। विद्या द्वारा उन्नति होती है। अविवाहितों को विवाह करने का अवसर प्राप्त होता है। क्वाँरे युवकों को धातुक्षीण, स्वप्नदोष, प्रमेहादि रोग लग जाते हैं। तथा पर कन्या प्रेम में पथ भ्रष्ट होने का डर रहता है। कामवासना प्रबल होती है। यति, सती भी विचलित हो जाते हैं। विवाहितों को कन्या रत्न की प्राप्ति होती है और अनेक स्त्रियों में आसक्ति रहती है। नजला, जुकामादि से पीड़ा होती है। ससुराल से वस्त्र, भूषणादि मिलते हैं। क्षीण चन्द्रमा के होने पर आलस्य तथा प्रमाद बढ़ता है और किसी नीच स्त्री के प्रेमालाप में अपयश मिलता है। धन की हानि होती है। लोकापवाद का सामना करना पड़ता है।

गुरु में भौमान्तदशा फल—जब गुरु की महादशा के अन्तर्गत मंगल की उपदशा का अन्तर चल रहा हो तो मनुष्य में रजोगुण की प्रधानता रहती है। उत्साह, पराक्रम के सभी कार्यों में नीति द्वारा पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। पुलिस तथा सेना विभाग के अधिकारियों को यह दशा विशेष रूप से फलदायक होती है। कृषि कर्म से लाभ अच्छा रहता है। वाहन सुख होता है। माता-पिता यदि जीवित हों तो उनसे धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। बहुत बुद्धिमान् परीक्षार्थी ही पास होते हैं। साधारण विद्यार्थी नीति, चालाकी तथा सिफारिश से पास हो जाते हैं। अविवाहितों के विवाह कम होते हैं और काम वासना प्रबल होती है। पुलिंग विषय की वासना जागृह होती है। विवाहित पुरुष को पुत्र रत्न की प्राप्ति हो सकती है। उसके शत्रु हतोत्साह रहते हैं। मुकदमे तथा

लड़ाई, युद्ध में विजय प्राप्त होती है। सुकर्म करने में तथा उपकार में मन लगता है। अनेक रेल की यात्रायें करनी पड़ती हैं। गर्म पदार्थों का सेवन प्राप्त होता है। मंगल की अशुभता पर रक्तविकार, रक्तचाप, अर्श, रक्तातिसार, मस्तक पीड़ा, नेत्र पीड़ा, शस्त्र भय, बन्धु पीड़ा तथा कृषि उद्योग में हानि होती है। उद्योगी और परिश्रमी सफलता पाते हैं।

गुरु में राहोरन्तर्दशा फल—यदि वृहस्पति की महादशा के अन्तर्गत राहु की अन्तरदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि मलिन तथा तामस हो जाती है। धर्म-कर्म के विरुद्ध आचरण कर मनुष्य पाप कर्म की ओर आकर्षित होता है। नीचों की संगति में सुख मिलता है। सर्प-विषादि का भय रहता है। स्त्री-पुत्रादि को कष्ट होता है। मनुष्य स्वयं वात पीड़ा, मन्दाग्नि, जिगर तिल्ली, अतिसार, अर्श, अण्डकोष वृद्धि, वायु गोले के दर्द आदि से पीड़ित होता है। व्यापार, व्यवसाय, नौकरी में उन्नति नहीं हो पाती, मनुष्य दुखी रहता है। मन मलिनता तथा उद्वेग बना रहता है। मित्र भी शत्रु हो जाते हैं। तीसरे, छठे, आठवें, नवें, एकादश स्थान में यदि राहु उच्च या स्वगृही बलवान् बैठा हो तो उपर्युक्त अशुभ फलों की हानि कर शुभफल प्रदान करता है। मनुष्य को उद्योग और परिश्रम से सभी कार्यों में सफलता मिलती है। धर्म-कर्म, तीर्थयात्रा, सभी सुखप्रद रहते हैं। व्यापार, व्यवसाय, नौकरी में कोई बाधा नहीं होती, बन्धु कलह फिर भी होती है। चाहे जो भी कार्य हो सभी में देर होती है। भोजन की व्यवस्था बिगड़ी रहती है। वायु गोले का दर्द, गठिया, पैरों में सूजन, या भारीपन रहता है। स्वास्थ्य बिगड़ा रहता है। आपसी वैमनस्य बढ़ता है।

शनि दशा फल

जैसा कि जन साधारण में यह बात प्रत्यक्ष रूप से प्रचलित है कि शनि की दशा का नाम सुनते ही मनुष्य के प्राण शुष्क से पड़ जाते हैं और ज्योतिषी भी निराशा भरी वाणी से जातक की हाँ में हाँ मिलाकर अपने फलादेश की पुष्टि कर, अपने पैसे बना अपना रास्ता लेते हैं। इसलिए जातक और ज्योतिषी दोनों को ही निराश न होना चाहिए और सावधानी से सुखासुख मय फलादेश के भार को सहन करना चाहिए। क्योंकि देखने में अभी तक यही आया है कि शनि एक बहुत ही बलवान् ग्रह है जो कि उपासना से शीघ्र प्रसन्न हो जाता है।

उपासना यथाविधि होने पर फिर किसी विशेष हानि का डर नहीं रहता। यदि शनि तीसरे, छठे और एकादश स्थान में हो तो अत्यन्त शुभ फल कारक होता है। यदि शनि उच्च राशि से उच्च नवांश में हो तो आयु पर्यन्त सुख-सम्पत्ति प्रदान करता है और उच्च राशि के नीचांश में हो तो दशारम्भ में सुख और दशान्त में दुख, कष्ट, क्लेश, शोक, भय, पीड़ा प्रदान करता है। यदि नीच राशि गत नीच ही नवांश में हो तो दशारम्भ से दशान्त तक दुख, विफलता, वेदना कष्ट, शोकादि देता ही रहता है और नीच राशिगत उच्चांश पर हो तो मनुष्य को दशारम्भ में अनेक प्रकार के कष्ट मिलते हैं। और दशान्त में अनेक प्रकार कि सुख, उद्योग, सफलता तथा सामग्री प्राप्त होती है। उच्चाभिलाषी शनि की दशा में व्यापार से लाभ, पदवृद्धि तथा वेतनवृद्धि होती है। वाहन तथा स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है। उच्च शनि दशा में समाज, ग्राम पंचायत या किसी मण्डली का प्रधानत्व प्राप्त होता है। दाँतों, कानों में दर्द, नेत्र पीड़ा, मनोद्वेग, कृषि व्यापार से हानि, व्यर्थ का भ्रमण, अधिकारी वर्ग से अनबन, तथा बनते-बनते कार्य रुक जाते हैं। नीचोन्मुख, शनि की दशा में, व्यापार तथा नौकरी में हानि, स्त्री-पुत्रादि, बन्धु आदि से झगड़ा, पराधीनता, अतिसार, अर्शादि रोग होते हैं। नीच राशिगत शनि दशा में सब प्रकार से हानि ही हानि होती है। उद्योग तथा परिश्रम सफल नहीं होता। सदा ही कष्ट उठाना पड़ता है। स्वक्षेत्री शनि की दशा में मनुष्य का पुरुषार्थ उद्योग, परिश्रम पूर्ण रूप से सफल होता है। व्यापार में लाभ, नौकरी में पद तथा वेतन में वृद्धि होती है। लोक या समाज में यश मिलता है। शस्त्र तथा कृषि कर्म से लाभ होता है। मित्र राशिगत शनि दशा में, बल, प्रताप, शौर्य बढ़ता है। शिल्पकला तथा पत्थर, लोहे के कार्य से लाभ रहता है ओर समय-समय पर कष्ट भी उठाना पड़ता है। शत्रु राशिगत शनि दशा में, बन्धु-बान्धव, चोर, अग्नि, शस्त्र, राज्यदण्ड से भय रहता है। स्त्री-पुत्र, नौकरादि से हानि होती है। शेष सभी प्रकार से शनि की दशा जातक के लिए कष्टदायक होती है। इसकी दशा में मनुष्यों में द्वेष, ईर्ष्या, मृत्यु तुल्य कष्ट, अनेक प्रकार की आधि-व्याधि, धन-धान्य, सम्पत्ति, कृषि आदि की हानि, शत्रुओं के उत्पात, मुकदमे, कलह, लड़ाई-झगड़े, व्यर्थ के कलंक, लोकापवाद, व्यभिचार, मन में सन्ताप, बुद्धि का ह्रास, दुष्ट जनों की संगति से

धन का नाश, स्त्री, पुत्र, पिता, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव में से किसी न किसी का वियोग, वाहन, निवास स्थान तथा इसी प्रकार वस्त्र, अलंकारादि की हानि होती है। और भी बहुत से अनर्थ कारक दृश्य देखने को मिलते हैं। पशुधन की हानि होती है। चित्त मलिन तथा उदास रहता है। दुर्गम स्थानों, पहाड़ों की गुफाओं तथा कन्दराओं में एकान्तवास करना पड़ता है। भूमि शयन प्राप्त होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि की दशा, स्थान-राशि की शुभाशुभ परि-स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करती है। तिस पर भी दशा के आदि, मध्य तथा अन्त में से किसी भी समय जातक को एक बार शुभ और एक बार अशुभ फल की प्राप्ति होती है। इसलिए शनि की प्रारम्भिक दशा यदि कष्ट-दायक हो तो अन्तिमावस्था अवश्य सुखप्रद होगी। इतना ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है।

ग्रह दृष्टि फल

मेष–वृश्चिक राशि गत शनि पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—ज्योतिष का कार्य करने वाले सभी मनुष्य यह बात भली भाँति जानते हैं कि मेष राशिगत शनि नीच का होता है और तुला में सूर्य नीच का होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि नीच के शनि को नीच का सूर्य अपने उच्च स्थान गत देखता है, तो मनुष्य शिल्पकार, कृषि कर्ता, परिश्रमी, हठी, पशु वृत्ति से आजीविका प्राप्त करने वाला, क्रोधी, शस्त्र भय से युक्त, पिता से अनबन रखने वाला, नीच कर्म रत, नीच संगति में प्रसन्न रहने वाला होता है। वृश्चिक का शनि सूर्य से दृष्ट होने पर मनुष्य आवेश पूर्ण, कलह कर्ता, उद्योगी, भार उठाने वाला, पशु सेवा से धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, ताँबे, लोहे, कोयले की खानों में कार्य करने वाला, छापे खाने या किसी कारखाने में कार्य करने वाला, धर्मभीरु, वात, पित्त, रोगी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि नीच के शनि को क्षीण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य नीच प्रकृति, मलिन बुद्धि, नीच की सेवा रत, पतित स्त्री का प्रेमी, धर्म-कर्म से दूर, स्त्री-पुत्रादि सुख से रहित होता है। पूर्ण चन्द्र से दृष्ट होने पर उपर्युक्त फलों की अशुभता में कुछ सुधार हो जाता है और जब वृश्चिक के शनि को, जो कि चन्द्रमा का नीच स्थान है, अपने उच्च स्थान से देखता हो

तो मनुष्य मिश्रित फल पाने वाला होता है। कभी पाप कर्म हिंसादि करता है तो कभी परोपकार करता दिखाई देता है। उसे स्त्री-बच्चों का सुख कम होता है और किसी नीच स्त्री के सहवास में कष्ट तथा अपकीर्ति पाता है। ऐसे व्यक्ति अधिकतर स्त्री के कटि भाग से आकर्षित होते हैं। नजला जुक़ाम, वात, कफ, आदि रोग से पीड़ित रहते हैं।

भौम दृष्टि फल—शनि, मंगल का परम शत्रु है। (मेष, वृश्चिक, मंगल के क्षेत्र हैं) कहने का तात्पर्य यह है कि जब मंगल क्षेत्री शनि अपने शत्रु मंगल से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, प्रतिशोध के लिए तत्पर, शस्त्र ताड़ित, हिंसा वृत्ति से जीविका पाने वाला, (माँस, अण्डे, मछली) आदि का क्रय-विक्रय करने वाला, मांसाहारी, चोर, अग्नि-शस्त्रादि से भयभीत, पुलिस, सेना में नौकरी भी कर सकता है। वात, पित्त, कफ, अर्शादि रोगों से पीड़ित, मित्रों से शत्रुता रखने वाला, निर्दय होता है। धन, सम्पत्ति, भूमि आदि से रहित, क्रोध में पागल हो जाने वाला, सन्तप्त होता है।

बुध दृष्टि फल—मंगल का बुध शत्रु है और शनि का मित्र है। इसलिए हम कह सकते हैं कि शत्रु क्षेत्री, मित्र शनि को जब बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, शिल्पकला, संगतराशी, लोह कार्य के छोटे शस्त्रादि बनानेवाला, धर्माधर्म का विचार न करने वाला, चोरी, ठगी आदि कार्य से आजीविका चलानेवाला, खेल-कूद में मस्त रहने वाला, नीच संगति, स्त्री-पुत्रादि के सुख से रहित, छोटे-छोटे बच्चों से विषय की भावना रखने वाला, गठिया, पीलिया, कफ आदि रोगों से पीड़ित होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब नीच (मेष) के शनि को गुरु देखता हो तो मनुष्य कूटनीतिज्ञ, उत्साही, शत्रुओं को जीतने वाला, शस्त्र-शास्त्र का ज्ञाता, कोयले, लोहे का व्यापारी, अधिकारी वर्ग से मेल रखने वाला, नीच संगति होते हुए भी गुरुजन का भक्त होता है और वृश्चिक गत शनि यदि गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी में अधिकार प्राप्त करने वाला, राजनैतिक क्षेत्र में आदरणीय, समाज में सत्कार पाने वाला, हठी प्रकृतिवाला, धन-धान्य युक्त, पशु पालक, दयालु, परोपकारी, दुष्टदमन, वातरोगी, मित्रों का सहयोग प्राप्त करने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत शनि को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य समझदार, देशाटनप्रिय, उदास, कामासक्त, नीच स्त्रियों के प्रेम में अपयश पाने वाला, आचार हीन, चञ्चलचित्त, वात, पित्त, कफ, नजला, श्वास, जलोदर, गठिया, धातु क्षीण, वीर्य विकार आदि रोगों से पीड़ित होता है। अपढ़ होने पर भी चतुरता से बात करता है। शस्त्र तथा जल से भय खाता है और सन्तप्त रहता है।

वृष-तुला राशि गत शनि पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यति वृष या तुला राशिगत शनि को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, विचारवान्, आवेशपूर्ण, शृंगारी, नौकरी करके आजीविका प्राप्त करने वाला, धन से हीन, शस्त्र, अग्नि से हानि पाने वाला, दुष्ट-संगति, नीच जाति की स्त्री के प्रेम में अपयश पाने वाला, वायु, पित्त, कफ आदि से रोगी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब वृष या तुला राशि के शनि को पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, विद्या विनय से सम्पन्न, धन धान्य युक्त, सुन्दर स्त्री पुत्रादि के सुख से सुखी, सरकारी नौकरी से प्रसन्न रहने वाला, धार्मिक तथा परोपकारी सा होता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य, बुद्धिहीन, स्त्री-पुत्रादि से कलह करने वाला, पर स्त्री के प्रेम में अपकीर्ति पाने वाला, पराधीन, नीच प्रकृति, नीचों में प्रसन्न रहने वाला, धातु विकार, नजला-जुकाम का रोगी, शस्त्र-जल से भयभीत, कुकर्मी होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि वृष तुला राशि गत शनि को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य क्रोधी, जीवन से निराश, पापाचारी होता है। सदा झगड़ा करने वाला, संग्राम से भाग आने वाला, भीरु प्रकृति, कृशदेह, तार्किक, निरर्थक, वार्तालाप में समय खोने वाला, नीचों में प्रधानत्व पाने वाला, वात, पित्त, कफ, प्रमेहादि रोगों से युक्त, छोटे कर्मों का करने वाला, कृषक होता है।

बुध दृष्टि फल—जब वृष तुला राशिगत शनि को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य कम पढ़ा-लिखा होने पर भी, अपनी अवस्था से ऊँची बातें करने वाला, उचित राय देने वाला, हंसमुख, खिलाड़ी, कविता, नाटक, अश्लील प्रकार के लेख या कहानी लिखने वाला या सुनने वाला, पर स्त्री के

प्रेम में तल्लीन रहने वाला, लम्पट प्रकृति का होता है। अस्थिर प्रकृति, अस्थिर व्यवसाय, कामासक्त, शुक्रक्षय, वातरोग, पाण्डुरोग से युक्त होता, है तथा उसे मिश्रित फल की प्राप्ति होती है।

गुरु दृष्टि फल—यदि वृष तुलागत शनि को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान, विद्वान से तर्क वितर्क करने वाला, इष्टमित्रों का द्वेषी, परोपकारी, धर्म-कर्म का जानने वाला, शिल्पकला पूर्ण, श्रृंगारी, उद्योगी, समाज में आदरणीय, नीतिज्ञ, शस्त्र-शास्त्र प्रवीण, शत्रु की स्त्री को चाहने-वाला, मूत्र कृच्छ्र रोग से रोगी, स्वतन्त्र विचार वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब वृष या तुला राशिगत शनि को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य स्वतन्त्र विचार, स्वतन्त्र व्यवसाय करने वाला, बड़ा ही बुद्धिमान, वकील, डाक्टर, वैद्यादि, होता है। तरल पदार्थों तथा लोहे, कोयले के कार्य को करने वाला, प्रतिष्ठावान, बड़ा आदमी होता है। जल पदार्थ, जलयात्रा विदेश यात्रा, विदेशी वस्तुओं के व्यापार से लाभ पानेवाला, विधर्मी स्त्री का प्रेमी, वात, जलोदर, नजला, श्वाँसादि रोगों से पीड़ित होता है।

मिथुन कन्या राशिगत शनि पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि मिथुन या कन्या राशिगत शनि को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मूढमति, बुद्धिहीन, क्रोधी, पिता से द्वेष रखने वाला, हठी, नीच कर्मरत, छोटे २ व्यवसाय से धन कमाने वाला, ऋणग्रस्त, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से रहित, किसी कुलटा के प्रेम में लीन रहने वाला, शस्त्र, पशु, नीच जाति, पित्त, घाम से कष्ट पाने वाला, दरिद्री होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब मिथुन या कन्या राशिगत शनि को पूर्ण चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी करने वाला, स्त्री जाति से धन पाने वाला, पुत्रों से कलह रखने वाला, कृष्ण-श्वेत वस्त्र धारण करने वाला, धर्मभीरू, कलाकार होता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य मलिनमति, पर स्त्री प्रेमरत रहकर अपयश पाने वाला, कलंकित, जल-शस्त्र से हानि उठाने वाला, स्त्री-पुत्रों का द्वेषी, विधर्मियों का साथी, निर्लज्ज होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि मिथुन या कन्या राशिगत शनि को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, मल्लयुद्ध में प्रवीण, झल्ली या बोझा

उठाने के कार्य से आजीविका कमाने वाला, व्यवहारकुशल, शस्त्रादि का शौकीन, शत्रु के प्रति प्रतिशोध की भावना रखने वाला, अपने वर्ग में आदरणीय, तथा किशोर बालक, बालिकाओं के प्रति कुत्सित भावना रखने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—जब मिथुन या कन्या राशिगत शनि को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य गुणवान्, बुद्धिमान्, संगीत प्रिय, कलाकार, शिल्पज्ञ, ज्योतिष, हस्तरेखा, गणित, कविता, लेखादि लिखने वाला, शस्त्र-शास्त्र प्रवीण होता है। विनीत, धन-धान्यपूर्ण, स्त्रियों में आदरणीय, नीचों का मित्र तथा विविध प्रकार से धन कमाने वाला, भाग्यशाली होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि मिथुन या कन्या राशिगत शनि को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बहुत ही बुद्धिमान्, गुणवान्, धनवान्, कूटनीतिज्ञ, उच्च विचार, राज्य में अधिकारी पद प्राप्त करने वाला, गर्वयुक्त, स्वाभिमानी होता हैं। अस्त्र-शस्त्र का जानने वाला, स्वतन्त्रताप्रिय, अधिकारी वर्ग का हितैषी, सत्संगी होता है। फिर भी पर स्त्री प्रेम रत रहता है। इसकी स्त्री सुन्दर और बच्चे कृतघ्न होते हैं। इसे वृद्धावस्था में रोगों के कारण कष्ट मिलता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब मिथुन या कन्या राशिगत शनि को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य सद्बुद्धि, शिल्पज्ञ, सुनार, लुहारादि का कार्य करने वाला, कामी, परस्त्री की इच्छा रखने वाला, धर्मभीरु, निर्बल, आत्मशक्ति-हीन, स्त्री पुत्रादि के सुख से रहित सा होता है। परोपकार में धन व्यय करता है। यह लोक से परलोक सुधारने की चेष्टा में वृद्धावस्था में संसार से उदास होकर योग तप के लिए निर्जन वास करता है। यौवन में धातु-क्षीण, वात-रोगी रहता है।

कर्क राशिगत शनि पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—यदि कर्क राशिगत शनि को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिनमन, क्रूर कर्मा, स्त्री-पुत्रादि के सुख से रहित, माता-पिता का विरोधी, भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला, उदास, सन्तप्त, क्रोधी, सदा झगड़ा करने वाला, सुख सम्पत्ति से रहित होता है। वात, पित्त रोगी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कर्क राशिगत शनि को चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य दुर्बल देह, सरकारी नौकरी में प्रसन्न रहने वाला, सुन्दर

स्त्री वाला, धन-धान्य से युक्त, सन्तानादि सुख से सुखी, जलयात्रा करने वाला, परोपकारी होता है और जब क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य, दुर्बुद्धि, उन्मादी, पतित स्त्री से प्रेम करने वाला, माता को कष्ट देनेवाला, कलंकित, वात, धातुक्षीण, प्रमेहादि रोगों से युक्त होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि कर्क राशि गत शनि को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, नीच प्रकृति, क्रोधी, स्वतन्त्र धर्म को मान कर चलने वाला, पुलिस या सेना विभाग में छोटी नौकरी करने वाला, शत्रु के प्रति कठोर व्यवहार करने वाला, कलहकारी स्त्री का पति होता है। किसी नीच स्त्री के संसर्ग से अपयश पानेवाला, धन-हानि उठाने वाला, वात, पित्त, रुधिरविकार, अर्शादि रोग से पीड़ा पाने वाला, सबका द्वेषी होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कर्क राशिगत शनि को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, सत्य तथा अप्रिय भाषण करनेवाला, मल्लयुद्ध करनेवाला, खिलाड़ी, असम्भव बातों को पूर्ण करने की सोचने वाला, पिता का द्वेषी, शत्रुओं को परास्त करने वाला, जल से भयभीत, वात-पाण्डु रोगी, नजला, जुकामादि रोगों से कष्ट पाने वाला, छोटे २ बच्चों के प्रति भी द्वेष तथा प्रतिशोध की भावना रखने वाला, तर्क-वितर्क में आस्था रखने वाला, गुरु वर्ग से निरादर पाने वाला, बालकपन में जल में डुबकी खाने वाला, सेवक कार्य से आजीविका पाने वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि कर्क राशि का शनि वृहस्पति से पूर्ण दृष्ट हो तो, मनुष्य बुद्धिमान, गुणवान कूटनीतिज्ञ राजनैतिक क्षेत्र में प्रगति करने वाला, सरकारी नौकरी में उन्नति करने वाला, समाज, मोहल्ले, ग्रामपंचायत आदि में प्रतिष्ठा पाने वाला, आदरणीय, स्त्री-पुत्रादि का सुख पाने वाला, जल यात्रा से सुख पाने वाला, विजातीय स्त्री से प्रेम करने वाला, वाहनादि के सुख से सुखी रहता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कर्क राशि का शनि शुक्र से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य बुद्धिमान श्रृंगारी, स्त्रियों के प्रति अश्लील वाणी बोलने वाला, पर स्त्री प्रेमरत, नृत्य, संगीत, नाटकादि में रुचि रखने वाला, किशोरावस्था से ही कामासक्त, विषय वासना के कारण अपयश पाने वाला, वात, कफ, श्वास, मन्दाग्नि, जिगर-

तिल्ली, धातु-क्षय, प्रमेहादि रोगों से युक्त होता है। ऐसा मनुष्य मुष्टिका मैथुन द्वारा वीर्य नष्ट करने वाला, धर्म कर्म के विपरीत आचरण करने वाला दुश्चरित्र होता है।

सिंह राशिगत शनि पर ग्रह दृष्टिफल

सूर्य दृष्टि फल--यदि सिंह राशिगत शनि को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, मलिन वसन, महाक्रोधी, सदा लड़ाई करने वाला, पिता-द्रोही, स्त्री पुत्रादि सुख से रहित, आचरणहीन, दूसरों का बुरा चाहनेवाला, बनपशुओं, जलचरों से कष्ट पानेवाला, छोटे २ धन्धों द्वारा आजीविका करने वाला, जलोदर, पित्त, गर्मी, गठिया आदि रोगों से पीड़ित, द्यूत कर्मरत सुरापी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब सिंह राशिगत शनि को पूर्ण चन्द्रमा, पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, उत्तम कर्म करने वाला, कला, संगीत, शिल्पकला का ज्ञाता, प्राकृतिक दृश्यों की सराहना करने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, माता-पिता का आज्ञाकारी, समाज में आदरणीय, स्त्रियों से वार्ता करने वाला, दर्शनीय होता है और जब क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो मनुष्य, दुष्ट प्रकृति, नीच स्त्रियों के प्रेम में तल्लीन, क्रोधी, पापरत, धातुविकार, गठिया आदि रोग से पीड़ित, जल में डुबकी खाने वाला, दोषी होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत शनि को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, महाक्रोधी, बलवान, पुलिस-सेना विभाग का सिपाही, क्रूर, निर्दयी, व्यर्थ देशाटन में धन, समय नष्ट करने वाला, प्रतिशोधपूर्ण, डाकू, निर्जनवासी, वात, अर्शादि, पित्त रोगी, स्त्री-पुत्रादि से पृथक् रहता है। संग्राम में शत्रुओं को परास्त करनेवाला, शस्त्रादि प्रवीण, वृद्धावस्था में धार्मिक कार्य करता है।

बुध दृष्टि फल—जब सिंह राशिगत शनि को बुध देखता हो तो मनुष्य मलिनमन, पथभ्रष्ट की भाँति इधर-उधर भ्रमण करने वाला, नीचों का मित्र, नीच स्त्रियों में आसक्त, समाज से बहिस्कृत, धनधर्महीन, सुरापी, द्यूतकर्मी, ऋणी तथा लम्पट होता है। सदा पर सेवा से आजीविका पाता है। गुरुजनों का द्वेषी, मलिनदृष्टि, वात, पित्त, पाण्डुरोगी, हीन आचरण वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत शनि को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य तीव्र बुद्धि, स्वाभिमानपूर्ण, क्रोधी, कूटनीतिज्ञ होता है। सेना पुलिस आदि नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, ग्रामपंचायत, राजनैतिक क्षेत्रादि में प्रगति करने वाला, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, धर्मभीरु, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, समयानुकूल कार्य कर लेने वाला चालाक व्यक्ति होता है। वात, पित्तादि रोग से पीड़ित रहता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब सिंह राशिगत शनि को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य तीव्रबुद्धि, अपूर्ण विद्यावाला होता है। श्रृंगारी, कामासक्त, आवेश-पूर्ण, वाहनयुक्त, स्त्री-पुत्रादि के प्रति द्वेष करने वाला, मित्र को पत्नी का प्रेमी होता है। प्राकृतिक सौन्दर्य की उपासना करता है, रंग बिरंगे वस्त्र धारण करता है। चलचित्त, चंचल नयन होता है, वात, पित्त, कफ, धातुक्षय, अर्शादि रोगों से कष्ट पाता है। उपकारी मनुष्यों के उपकार को नहीं मानता, पिता से कलह करता है। स्वच्छन्दतापूर्वक भ्रमण करता है।

धन-मीन राशि गत शनि पर ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—धन और मीन गत शनि को यदि सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य उत्तम बुद्धि, उच्च विचार, धीरे तथा स्पष्ट कार्य करने वाला, नीतिज्ञ, परराष्ट्र नीति निपुण, पिता से शत्रु भाव रखने वाला, धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त, समाज में आदरणीय, राजनैतिक क्षेत्र में अग्रसर, स्त्री-पुत्रादि सुख से सुखी, जलयात्रा करने वाला, वात-पित्त रोगी होता है। वृद्धावस्था में संन्यास मार्ग का सेवन करता है।

चन्द्र दृष्टि फल—धन या मीन राशि गत शनि यदि पूर्ण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य उत्तमचरित्र, सद्‌बुद्धि, परोपकारी, धार्मिक, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, कवि, लेखक, समाज तथा लोक में आदरणीय, कलापूर्ण कार्यों में पारितोषिक पाने वाला, प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। दूध, दही, स्निग्ध, रसीले पदार्थ तथा फल खाने का शौकीन होता है, पर स्त्रियों को प्रिय लगता है और जब क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो मनुष्य मलिन मन, पापरत, कामासक्त किसी नीच स्त्री के प्रेम में अपयश पाने वाला, उन्मादी की भाँति भ्रमण करने करने वाला, जल में डुबकी खाने वाला, अश्लील तथा कुत्सित रचनाओं के लिए प्रसिद्ध होता है। धातु रोगी होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि धन या मीन राशि गत शनि को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मन मलिन, बुद्धि हीन, छोटे कार्य करने वाला बलवान, शत्रुओं पर विजय की आशा रखने वाला, निरर्थक कलह करने वाला इष्ट मित्रों से प्रतिकूल चलने वाला, स्वच्छन्द, देशाटन में कष्ट पाने वाला, नीच की संगति में अपयश पाने वाला, ईर्ष्यालु प्रकृति का होता है। वायुगोला, गठिया पित्तादि रोग से पीड़ित रहता है। बोझा ढोकर या इसी प्रकार के छोटे कार्यों द्वारा आजीविका प्राप्त करता है। सदा ऋणी रहता है। विजातीय, विधर्मी कन्या के प्रेम या बलात्कार में अपयश पाता है।

बुध दृष्टि फल—जब धन या मीन राशि गत शनि को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य सत्कर्मी, गुणवान, धन सम्पत्ति से युक्त, सरकारी नौकरी से आजीविका पाने वाला चपल, विनोदी, हंसमुख, लेखन कला में निपुण, प्रेस-स्वामी या इसी प्रकार का कार्य करने वाला होता है। गुरुजनों का सेवक, स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी, प्रतिष्ठावान, अपने परायों में आदर पाने वाला, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला कामासक्त तथा पर स्त्री प्रेम में अनुरक्त होता है। प्रमेहादि रोगों के साथ-साथ वात रोग भी रहता है और बचपन में पानी में डुबकी खानी पड़ती है।

गुरु दृष्टि फल—धन और मीन ये दोनों ही राशियां, गुरु का निवास स्थान हैं और शनि गुरु का सम है और जब शनि गुरु के क्षेत्र में गुरु से ही दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा ही सद्वुद्धि, सत्कर्मी, धार्मिक, तीर्थयात्राप्रिय, सरकारी नौकरी में पदाधिकार प्राप्त करने वाला, स्वाभिमानी, मन्त्री या पुलिस सेना विभाग का उच्चाधिकारी, कूटनीतिज्ञ, संग्राम विजयी, अस्त्र-शस्त्र को चलाने वाला, निडर, अड़चनों का धैर्य तथा शान्ति से सामना करने वाला, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, माता-पिता सभी से बनाकर रखने वाला, देशभक्त, देश समाज तथा राजनैतिक क्षेत्र में आदरणीय, प्रगतिशील मानव होता है। स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी रहता है और वृद्धावस्था में साधु संगति करता है। वात, कफ, श्वासादि रोगों से पीड़ा पाता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि धन या मीन राशि गत शनि को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, विद्वान तथा विद्वानों का द्वेषी होता

है। स्वतन्त्र कार्य करने का इच्छुक, कलाकार, लेखक, वाचनालय, पुस्तकालयाध्यक्ष, जलयात्रा प्रेमी तथा जलयात्रा से कष्ट पानेवाला, विदेश यात्रा में तत्पर, स्त्री-पुत्रादि से युक्त समाज में आदरणीय, वाहनयुक्त, धनसम्पन्न, कामासक्त पर स्त्री प्रेम में अपयश पाने वाला, धातु विकार, जल विकार, वात विकार, नजला, कफादि रोगों से पीड़ा पाने वाला होता है।

मकर-कुम्भ राशिगत शनि पर ग्रह दृष्टफल

सूर्य दृष्ट फल—मकर और कुम्भ राशि में शनि स्वगृही होता है। और जब स्वगृही शनि को सूर्य पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, बुद्धिहीन, अपढ़, उद्यमी, लोहे, कोयले, ताँबे का कार्य करने वाला, खान खोदने वाला, पत्थर तोड़ने वाला, घर से बाहर भटकने वाला, कुत्सित स्त्री का सहवास करने वाला, वायुपित्त गठिया, कफादि रोगों द्वारा कष्ट पाने वाला, जल से भय खाने वाला, पिता से अनबन रखने वाला होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब मकर, कुम्भ राशि गत शनि को पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य, साक्षर बुद्धिमान, कलाकार, मूर्ति बनानेवाला, शिल्पी, चलचित्त, कामासक्त, धन-धान्य से युक्त, बहु कन्यावान, माता का विरोधी, होता है। जब क्षीण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही कुत्सित विचार वाला, चंचलनेत्र, नीच की स्त्री में प्रेमासक्त, माता की मृत्यु चाहने वाला, कर्महीन, पापी होता है। ऐसा मनुष्य धातुक्षय मुष्टिका मैथुन द्वारा करता है। स्वप्नदोष, वात, जलोदर, प्रमेहादि का रोगी, जल में डुबकी खाने वाला होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि स्वगृही शनि को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, मोटी बुद्धि का, अक्खड़ प्रकृति का, हठी, शत्रु के प्रति सदा प्रतिशोध की भावना रखने वाला संग्राम में शस्त्रादि से चोट खाने वाला, मल्लयुद्ध के लिए तत्पर, घर से दूर रहने वाला, विदेश यात्रा की इच्छा रखने वाला, अधर्म में रूचि रखने वाला, चोर, डाकू, पुलिस या सेना विभाग का सिपाही, उदास, चिन्तातुर, वायुरोग या पित्तादि रोगों से रोगी रहने वाला, किसी नीच स्त्री के प्रेम में, धनहानि अथवा मानहानि उठाने वाला, स्वतन्त्रताप्रिय, घमण्डी होता है। वृद्धावस्था में निर्जन निवास करता है।

बुध दृष्टि फल—जब मकर या कुम्भ राशिगत शनि को बुध पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही विनोदी, चंचल, हंसमुख, कलाकार, अस्त्र-शस्त्र चलाने में रुचि रखने वाला, उत्साही, देशाटनप्रिय, कलापूर्ण कार्यों के लिए उद्यम करने वाला, समस्त शुभ कार्यों को सीखने की इच्छा रखने वाला, रजोगुणी, कामासक्त, गिरकर चोट खाने वाला, धन, वाहन इष्ट-मित्रों से युक्त, मधुभाषी, फलादि का सेवन करने वाला, पाण्डु, वातादि रोग का रोगी होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि स्वगृही शनि को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, धनवान, भाग्यशाली, कूटनीतिज्ञ, राजनैतिक क्षेत्र में अग्रसर रहने वाला, पुलिस-सेना विभाग में अग्रसर रहने वाला, सेनापति, मन्त्री, गुप्तचर विभाग का पूर्ण ज्ञान रखने वाला, समाज में आदरणीय, नीरोग, पुष्ट, स्त्री, पुत्र, माता-पिता, बन्धु आदि से युक्त, सबका प्रिय, अतिशय प्रभावशाली पुरुष होता है। जल-विभाग में नाविक आदि के कार्य में प्रसन्न रहने वाला, विदेश यात्रा करने वाला, विजातीय स्त्री का प्रेमी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब मकर या कुम्भ राशि गत शनि को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, बुद्धिमान, श्रृंगारी, गायन-वादन, नाटकादि श्रवण का शौकीन होता है। इष्ट-मित्र, स्त्री पुत्रादि के सुख से सुखी वाहनों से युक्त, (साइकिल, मोटर साईकिल स्कूटरादि) जल तत्त्वों का जानने वाला, जलपदार्थ, लोहे आदि के व्यापार से लाभ पाने वाला, धन-सम्पत्ति से युक्त, गुरुजनों से अनबन रखने वाला, पर स्त्री से सहवास की इच्छा रखने वाला, धातुक्षय, स्वप्नदोष, प्रमेह, गठिया, वायुगोला, नजला, जुकाम, आदि रोगों से समय-समय पर पीड़ा पाने वाला, कुछ निर्लज्ज प्रकार का व्यक्ति होता है। ऐश्वर्य से रहता है।

शनि-उपदशा फल

शनि में शन्यन्तर्दशा फल—यदि उच्च के या स्वगृही शनि की महादशा शुभ उपदशा से उदित हो तो मनुष्य की बुद्धि सत्कर्म में लगती है। यद्यपि विद्यादि में विशेष उन्नति नहीं होती, फिर भी परिश्रमी विद्यार्थियों के परीक्षा-परिणाम अधिकतर शुभ फलदायक ही होते हैं। खेती करने वालों, दूध, भैंस को बेचने वालों तथा घरेलू नौकरी करने वालों की परिश्रम द्वारा काफी उन्नति

होती है। स्थिर या अचल भूमि, संपत्ति होने पर उसकी आय से वृद्धि होती है। लोहे, कोयले और पत्थरादि के कारखानों, खानों तथा अस्त्र-शस्त्र के क्रय-विक्रय से धन का अच्छा लाभ रहता है। शेष सभी दशाओं में यह दशा कष्ट-दायक ही रहती है और इष्ट-मित्रों द्वारा वैर की भावना उत्पन्न होकर, मुकदमे आदि से धन तथा मान की हानि होती है। सरकारी नौकरी में अधिकारी वर्ग से अनबन होने के कारण किसी प्रकार की उन्नति नहीं होती। मनुष्य की बुद्धि भ्रम युक्त सी रहती है। शरीर में आलस्य बढ़ा रहता है। शस्त्र, अग्नि, चोर, डाकू, विष, पशु आदि से हानि तथा प्राण भय रहता है। स्त्री-बच्चों को कष्ट होता है, वे बीमार रहते हैं, स्वयं जातक को वात, शूल, गठिया, वायुगोला आदि का रोग होता है, मनुष्य को विदेश यात्रा या घर से बाहर जाने में कष्ट होता है। मन किसी कार्य में नहीं लगता, विद्यार्थी अधिकतर अनुत्तीर्ण ही रहते हैं, अविवाहितों के इस दशा में विवाह नहीं हो पाते। शरीर अस्वस्थ रहता है और भोजन की अव्यवस्था के कारण मनुष्य जीवन से ऊब कर कुछ से कुछ कर बैठता है।

शनि में बुधान्तर्दशा फल—जब शनि की महादशा के अन्तर्गत, बुध की उपदशा का समय व्यतीत होता है तो मनुष्य की बुद्धि उत्तम कर्मरत रहती है। विद्या में उन्नति होती है, विद्वानों, साधुओं, सज्जनों का सत्संग होता है। सरकारी नौकरी में पद या वेतन वृद्धि का अवसर प्राप्त होता है। मनुष्य धार्मिक उत्सवों तथा तीर्थयात्राओं में धन व्यय करता है। स्त्री, सन्तान, माता-पिता, भाई-बन्धुओं के सम्पर्क में आकर प्रसन्नता को प्राप्त होता है। समाज में आदर, तथा लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, धन-धान्य की वृद्धि होती है। स्वतन्त्रता बढ़ती है। कृषि, व्यापार में विशेष रूप से धनागम होता है। शरीर नीरोग तथा स्वस्थ रहता है, फिर भी कभी-कभी कफादि प्रकोप से पीड़ा हो जाया करती है। वात साधारणतः लगा ही रहता है। शनि अन्तर्दशा का पीड़ित मनुष्य बुध की उपदशा के अन्तर्गत सुख की साँस लेता हैं और ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। रुके हुए अविवाहित मनुष्यों के विवाह इस दशा में हो जाते हैं और मित्रों की सद्भावना द्वारा अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होती है, फिर भी मनुष्य शत्रु भय से भयभीत तथा अज्ञात पीड़ा से विकल रहता है। इसलिए सुन्दर,

रसीले, स्निग्ध पदाथ तथा उत्तम वस्त्र भी रूचिकर नहीं लगते और आत्मिक विश्वास मनुष्य में कम हो जाता है।

शनि में केत्वन्तर्दशा फल—यदि शनि की महादशा के अन्तर्गत केतु की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य को जितना सुख, बुध की दशा में प्राप्त होता है वह सभी केतु की अन्तर्दशा में विस्मृत हो जाता है। क्योंकि शनि में केतु की अन्तर्दशा अशुभ फल प्रदान करती है। इसमें मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती, चित्त की वृत्ति चंचल तथा मलिन रहती है। देश-विदेश में व्यर्थ देशाटन द्वारा धन की हानि तथा कष्ट की वृद्धि होती है। व्यापारी वर्ग का व्यवसाय शिथिल पड़ जाता है। परिश्रमी वर्ग को उद्योग नहीं मिलता। नौकरी पेशा की वृत्ति तथा बुद्धि स्थिर हो जाती है। सरकारी नौकरों की पद तथा वेतन-वृद्धि में अड़चनें पड़ जाती हैं, लोगों से व्यर्थ शत्रुता बढ़ जाती है, नीच कर्मों तथा नीच संगति में मन लगता है। भोजन के लिए भटकना पड़ता है। कभी समय पर नहीं मिलता, मनुष्य बीमारी के कारण ऋणी हो जाता है। स्वजन समुदाय से त्रास मिलता है, किसी कार्य में अपयश या लोकापवाद प्राप्त होता है। वायु, पित्त, कफ, शूल, वायुगोला, कुक्षि पीड़ा, मन्दाग्नि, जिगरतिल्ली से कष्ट मिलता है। अनेक दुर्व्यसन लग जाते हैं। स्त्री-पुत्र या किसी निकट सम्बन्धी का वियोग सहना पड़ता है। मनुष्य को इस दशा में सुख लेशमात्र ही मिल पाता है।

शनि में शुक्रान्तर्दशा फल—जब शनि की महादशा के अन्तर्गत शुक्र की उपदशा का प्रादुर्भाव होता है, तो मनुष्य केतु की अन्तर्दशा में पाये हुए सभी दुःखों को भूल जाता है। क्योंकि इस दशा के प्रारम्भ होते ही मनुष्य की बुद्धि निर्मल तथा सात्त्विक हो जाती है। व्यापारियों का व्यापार, व्यवसायिकों का व्यवसाय, कलाकारों की कला सफलीभूत होकर उनको धन-धान्य से सम्पन्न कर देती है। नौकर पेशा मनुष्यों की नौकरी तथा वेतन में वृद्धि होती है। अधिकारीगण प्रसन्न रहते हैं, अपनी बात मान्य रहती है, विद्यार्थियों के अधिकतर शुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त होते हैं। बेरोजगारों को रोजगारों की प्राप्ति होती है। रसीले, चिकने, पदार्थ जैसे दूध, दही, खोवे के बने हुए मिष्ठान्न तथा सुन्दर फल, अनेक प्रकार की सब्जियाँ, गन्ने आदि का रसास्वादन प्राप्त होते हैं।

अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो सकते हैं, विवाहितों को सन्तान हो सकती है या किसी नव प्रेयसी से प्रेम सम्बन्ध हो सकता है। शत्रु दब जाते हैं, स्त्री, पुत्र, भाई, बन्धु, इष्ट-मित्रों से सुख मिलता है। कृषकों, बागवानों को खूब लाभ होता है। नवीन मकान बनाये जाते हैं, समाज, ग्राम पंचायत, मोहल्ले, पड़ोस तथा लोक में अपनी २ हैसियत के अनुआर, आदर, सत्कार, तथा यश मिलता है। स्वास्थ्य ठीक रहता है, अचानक धन की भी प्राप्ति हो सकती है। पशु, जल, शस्त्र, कृष्ण वस्तुओं के व्यापार से भी लाभ रहता है। कामवासना प्रबल होने पर मनुष्य परस्त्री प्रेम या वेश्यागमन भी कर बैठता है। अविवाहितों को स्वप्नदोष बढ़ जाते हैं, शुक्रक्षय, प्रमेहादि रोग हो जाते हैं। द्यूतकर्म, रेस, सट्टादि से रुपया कमाने की लालसा प्रबल हो जाती है। नजला, जुकाम होता रहता हैं।

शनि में सूर्यान्तर्दशा फल—यदि शनि की महादशा के अन्तर्गत सूर्य की अन्तर्दशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि क्रोधावेश के कारण स्थिर नहीं रहती। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, पिता तथा गुरुजनों से विचार विनिमय न होने के कारण अनबन रहती है। व्यर्थ शत्रुता बढ़ जाने के कारण जीवन भी संशययुक्त रहता है। केवल परिश्रमी विद्यार्थी ही शुभ परीक्षा फल कठिनता से प्राप्त करते हैं। अविवाहितों के विवाह में अड़चन पड़ जाती है। विवाहितों की स्त्री या सन्तान को कष्ट होता है और स्वयं को भी गर्मी, पित्त, कफ, वात आदि अनेक रोग लग जाते हैं। शस्त्र द्वारा घातक चोट का भय रहता है। घर से बाहर रहना पड़ता है, विदेश यात्रा या देशाटन में कष्ट होता है। चोरी, अग्नि, विषादि का भय रहता है। पैतृक सम्पत्ति का ह्रास हो जाता है। भोजन व्यवस्था उचित न होने के कारण मन्दाग्नि, कालापीतज्वर आता है। केवल राज्य भाषा के पण्डितों के लिए यह दशा थोड़ी सुखप्रद रहती है।

शनि में चन्द्रान्तर्दशा फल—जब शनि की महादशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की उपदशा का प्रादुर्भाव होता है, तो मनुष्य की बुद्धि आलस्ययुक्त तथा चंचलता के वशीभूत होती है। यदि जन्म पत्र में चन्द्रमा उच्च, स्वगृही, ५, ९, १०, ११ स्थान में शुभ बैठता हो तो मनुष्य को बहुत सुख मिलता है, विद्यार्थियों को शुभ परीक्षा परिणाम मिलते हैं। अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो जाते

हैं, विवाहितों को सन्तानोत्पत्ति पर सम्पत्ति मिलती है। किसी नव स्त्री से प्रेम सम्बन्ध होता है, काम वासना प्रबल होती है। स्वप्नदोष शुक्रक्षय आदि होने के कारण अनेक रोग, मन्दाग्नि, जिगर में खराबी, गर्दन का अकड़ जाना आदि रोग हो जाते हैं। दूध, दही, घी, फल, मिष्ठान्न की प्राप्ति होती है। शुभ स्निग्ध पदार्थ खाने को मिलते हैं, अशुभ चन्द्र के होने पर स्त्री, पुत्र, भाई-बन्धु का वियोग, जल, वात, शीत, ज्वर आदि का प्रकोप होता है। नीच स्त्रीसंसर्ग में मान-हानि, लोकापवाद, उत्साह में मन्दता, परिश्रम में विफलता शोक, भय, पीड़ा आदि की प्राप्ति होती है और मनुष्य जीवन भार समझने लगता है।

शनि में भौमान्तर्दशा फल—यदि शनि की महादशा के अन्तर्गत मंगल की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रमयुक्त क्रोधावेश पूर्ण रहती है। जिस कारण उद्यम और पराक्रम सफल नहीं हो पाते, व्यवसाय, व्यापार तथा नौकरी आदि में अड़चनें पड़ जाती हैं और मन विकल होकर घर से बाहर भाग जाने के लिए इधर-उधर भटकता फिरता है। स्थानभ्रष्ट हो जाने पर मनुष्य को भोजन की दुर्व्यवस्था हो जाती है। शहद, घी, जौ, चावल, तिल, उरदादि जो कुछ भी मिल जाता है समय पर खाना पड़ता है। इष्ट-मित्रों से व्यर्थ कलह तथा अनबन रहने के कारण शत्रुता बढ़ जाती है। शस्त्र, अग्नि, चोर, विषादि से भय तथा हानि होती है। मुकदमों में धन व्यय होता है, स्त्री पुत्रादि का वियोग सहना पड़ता है। समाज में अपमान तथा निरादर होता है किसी नीच स्त्री के संसर्ग में आने से लोकापवाद सहना पड़ता है। पदावनति, वेतन की कटौती की सम्भावना रहती है। रक्तपात, रक्तविकार, रक्तचाप, वायुरोग गठिया, वायुगोला, पित्त, घाम, अर्श, भगन्दरादि रोगों में से किसी एक की सम्भावना रहता है। वज्रपात, बिजली करन्ट, रेल, यानादि की टक्कर से घातक चोट की सम्भावना रहती है। सम-विषम ज्वरादि की व्याधि लग जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी रोग तथा शोक इस दशा में अवश्य हो सकता है।

शनि में राहोरन्तर्दशा फल—जब शनि की महादशा के अन्तर्गत राहु की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य को मङ्गल और केतु की

अन्तर्दशा का मिश्रित फल प्राप्त होता है। मनुष्य की बुद्धि अस्थिर तथा चित्त की परिस्थिति डावाँडोल हो जाती है। मनुष्य उन्मादी की भाँति कुछ से कुछ अनर्थ करने को तत्पर हो जाता है। कभी-कभी आत्महनन तक कर बैठता है। ईर्ष्या द्वेषादि के बढ़ जाने पर अपने पराये सभी शत्रु हो जाते हैं। परीक्षार्थी, कठिन परिश्रम करने पर भी उत्तीर्ण नहीं हो पाते, अविवाहितों के विवाह रुक जाते हैं और विवाहितों को स्त्री, पुत्र, बन्धु इष्ट-मित्र में से किसी एक का वियोग सहना पड़ता है। वायुरोग, वायुगोला, पेट दर्द, कमर, कुक्षि आदि में दर्द हो जाता है। मनुष्य देश-देशान्तर में भटकता है कष्ट उठाता है। भोजन की दुर्व्यवस्था से मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली, अपच का रोग होता है। डाक्टरों-वैद्यों की शरण में पड़ा रहना पड़ता है, धन-धान्य-सम्पत्ति, पशु, भूमि, कृषि आदि सभी व्यापार व्यवसाय समाप्त जैसे हो जाते हैं। रोगी सर्वाङ्ग पीड़ा से मृत्यु को अच्छा समझने लगता है। सदैव सन्त्रस्त रहने के कारण जीवन को भार समझने लगता है। चोर, अग्नि, शस्त्र, राज्यदंड का भय लगा रहता है। सारांश यह है कि कोई रोग, कोई शोक, क्लेश, भय, पीड़ा शेष नहीं रहती जिससे मनुष्य किसी न किसी प्रकार कष्ट न पाता हो।

शनि में जीवान्तर्दशा फल—यदि शनि की महादशा के अन्तर्गत बृहस्पति की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य मङ्गल और राहु दशा में दुःख में डूबे हुए सन्तप्त हृदय में सुख और शान्ति का अनुभव करता है और एक लम्बे समय के बाद सुख का साँस लेकर प्रसन्न होता है। उसकी बुद्धि सात्विक, धार्मिक तथा सत्कर्मों की ओर आकर्षित होती है। घर में मांगलिक उत्सव या कार्य होते हैं। कार्य व्यापार-व्यवसाय नौकरी में वृद्धि तथा लाभ होता है। पारितोषिक मिलते हैं। स्त्री पुत्र, बन्धुबान्धव इष्ट-मित्रों से सुख मिलता है। सरकारी नौकर को विशेष लाभ रहता है। अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहती है। विद्यार्थियों को थोड़ा सा परिश्रम करने पर शुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त होते हैं। अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो जाते हैं। पुत्राभिलाषियों को पुत्र की प्राप्ति होती है। ईश्वर-भक्ति, स्वाध्यायादि खूब होते हैं। मकान-भूमि का क्रय-विक्रय होता है। कलापूर्ण कार्यों से लाभ, गुरुजनों से आदर प्राप्त होता है। समाज तथा लोक में प्रतिष्ठा बढ़ती है। धन-धान्य सम्पत्ति की वृद्धि होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य

पिछले पाये हुए सभी कष्टों को भूलकर वास्तविक सुख का अनुभव करता है। सत्कर्म करता हुआ ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। परलो सुधारने के लिए वृद्धावस्था को एकान्त शान्त स्थान में व्यकतीत करने के लिये चला जाता है।

बुध दशा फल

बुध एक शुभ ग्रह है। इसकी दशा भी मनुष्यों के लिए सुख फल प्रदान करती है। जब बुध की दशा आती है तो जातक की बुद्धि निर्मल तथा सात्विक होती है। मनुष्य का मन पढ़ने-लिखने, गणित करने, ज्योतिष, हस्तरेखा, रेखा-गणित, खेल-कूद आदि कार्यों में खूब लगता है। संगीत, शिल्प, कलापूर्ण कार्य तथा नये-नये आविष्कारों के करने में मनुष्य का मन पूर्ण रूप से आकर्षित होता है। कविता, लेख, कहानी, गल्प, उपन्यास, नाटकादि पढ़ने तथा लिखने में खूब मन लगता है। सिनेमा, नाटकादि, इष्ट-मित्रों के साथ खूब देखने को मिलते हैं। गुरुजनों तथा अधिकारी वर्ग की शुभ संगति से अच्छा लाभ होता है। व्यापार, व्यवसाय तथा नौकरी में धन का लाभ अच्छा रहता है। सरकारी नौकरों को पद तथा वेतन वृद्धि का अवसर प्राप्त होता है और भी अनेक प्रकार के पारितोषिक प्राप्त होते हैं, बुध की दशा खिलाड़ी युवकों बालकों (एथलीस्ट) के लिए विशेष रूप से फलदायक होती है। जो व्यक्ति फुटबाल, हाकी, क्रिकेट, वैडमिन्टन, टैनिस आदि खेलों के अभ्यासी होते हैं वे अपने अभ्यास में सफल होकर प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर विदेश यात्रा करते हैं। यश तथा धन की प्राप्ति के साथ-साथ अपने देश का नाम भी उन्नत करते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम अधिक शुभ नहीं होते; फिर भी विज्ञान जानने वाले जातक वैज्ञानिक अनुसन्धान में सफल होकर धन-धान्य पूर्ण पारितोषिक पाकर मानव जीवन सफल बना लेते हैं। बुध की दशा में मनुष्य को दूध, दही, घी के पकवान, मिष्ठान्न, रसीले फल, चिकने पदार्थ तथा अनेक प्रकार की सब्जियाँ खाने को मिलती हैं। स्वास्थ्य सुन्दर रहता है। काम वासना प्रबल रहती है। सवारी, वाहन, मोटर, स्कूटर, साईकिल, वायुयान, जलयान आदि की सवारी का सुख प्राप्त होता है। अविवाहित युवकों के विवाह हो जाते हैं। स्त्री बड़ी ही सुन्दर, दर्शनीय तथा मोहल्ले में अद्वितीय स्वरूपवान मिलती है

और दहेज में धन-धान्य-सम्पत्ति, नवीन मकान, ग्रामभूमि, वस्त्र, आभूषण आदि प्राप्त होते हैं। अपनी परिस्थिति के अनुसार मनुष्य को समाज, मोहल्ले, ग्राम, शहर आदि में यश, कीर्ति तथा आदर प्राप्त होता है। बुध की दशा में सोचे हुए कार्य का तीन चौथाई भाग ही प्राप्त होता है। पूर्ण इष्ट सिद्धि प्राप्त नहीं होती। यदि उच्च का बुध उच्च के नवांश पर हो तो पूर्ण फल मिलता है। नीच के नवांश में अशुभ फल मिलता है। नीच राशिगत बुध नीच के नवांश पर हो तो सर्वनाश करता है और उच्च नवांश में हो तो शुभ फल मिलता है। ऐसी दशा में मनुष्य धर्म-कर्म करने वाला, स्वाध्याय प्रिय, अनेक उत्सवों से युक्त, तीर्थ-यात्रा में तत्पर, शुभ संगति में धन व्यय करने वाला, परोपकारी, दूसरों की आवश्यकता को पूर्ण करने वाला, दयालु तथा विद्याग्राह्य होता है। लड़ाई-झगड़े से बचने वाला, गुल्म रोग से पीड़ित, जोड़ों में दर्द हो जाने से कष्ट पाने-वाला, पाण्डु तथा पीनस रोगी होता है। बुध की दशा में मनुष्य को चित्रकारी, तर्क-वितर्क, व्याख्यानादि का शौक हो जाता है। जहाँ इस दशा में मनुष्य को प्रत्येक प्रकार का सुख मिलता है, वहाँ वायु पीड़ा से कष्ट भी खूब मिलता है। सुवर्ण के व्यापारियों को इस दशा में विशेष रूप से लाभ होता है।

ग्रह दृष्टि फल

मेष-वृश्चिक राशिगत बुध पर सर्व ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल— सूर्य सदा ही अपने स्थान से सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है किन्तु बुध सूर्य से सप्तम कभी नहीं होता। इसलिए सूर्य की दृष्टि बुध पर कभी नहीं होती, युति अक्सर हो जाया करती है। इसलिए सूर्य बुध दृष्टि फल न लिखकर युतिफल यथास्थान लिखकर पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जायेगा। यही बात सर्वत्र समझनी चाहिये।

चंद्र दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत बुध को चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन बुद्धि, कपटी होता है। (यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि बुध मंगल का शत्रु है, इसलिए बुध शत्रुक्षेत्री हुआ। चन्द्रमा बुध का पिता है और बुध से शत्रुता रखता है। सारांश यह है कि शत्रु क्षेत्री बुध अपने शत्रु पिता से दृष्ट हुआ जिसका परिणाम किसी प्रकार भी शुभ फल दायक नहीं हो सकता)। ऐसा मनुष्य अनेक कलाओं की शिक्षा

प्राप्त करके भी अपूर्ण ही रहता है। कामासक्त होने के कारण अनेक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखता है। तांडव नृत्य, प्रतिशोध पूर्ण खेल, तमाशे देखने का शौकीन होता है। वाहन तथा नौकरों से कष्ट पाता है। शत्रुओं, शस्त्रों, नजला, जुकाम पित्तादि रोगों से पीड़ित रहता है। अग्नि तथा जल का भय रहता है।

भौम दृष्टि फल—जब मेष या वृश्चिक राशिगत बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य अस्थिर प्रकृति, लड़ने झगड़ने वाला, पराक्रमशील, आवेशपूर्ण, क्रोधी होता है। छिद्रान्वेषी, झूठ बोलने वाला, चलचित्त, कामासक्त, अधिकारी वर्ग द्वारा अपमानित, लाठी, शस्त्र द्वारा चोट खाने वाला, पित्तादि रोग से पीड़ा पाने वाला, ईर्ष्यालु होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत बुध को गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य सद्‌बुद्धि, धार्मिक, अनेक कलापूर्ण कार्यों में दक्ष, पंडित, हँसमुख, स्त्री-पुत्र, इष्टमित्र आदि के सुख से सुखी, धन-धान्य, सम्पत्ति से युक्त, सब प्रकार से सुखी होता है। फिर भी सौंदर्य प्रतियोगिता में द्वेष तथा ईर्ष्या का आश्रय ग्रहण करता है, कामी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—शुक्र की सप्तम दृष्टि ही प्रधान मानी गयी है और यही पूर्ण दृष्टि मानी गयी है। अभी तक अनुभव से यही सिद्ध हुआ है कि बुध शुक्र से सप्तम कभी नहीं आता। शुक्र और बुध सूर्य के (इर्द-गिर्द) इधर-उधर ही रहते हैं। इसलिए कभी एक दूसरे के सन्मुख किसी प्रकार भी दृष्टिगत नहीं होते, और कभी-कभी इनकी युति होती अवश्य देखी गई है। इसलिए यथास्थान युति फल लिखकर पाठकों की सेवा की जायगी। इसलिए शेष राशियों में शुक्र बुध दृष्टि फल नहीं दिया जायगा, यह बात स्मरणीय है।

शनि दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत बुध शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य नीतिज्ञ, चतुर, उद्यमी, आवेशपूर्ण वार्ता करने वाला, कलह कर्त्ता, शत्रुओं को नीचा दिखाने वाला, शस्त्र-शास्त्र प्रवीण, लोहे, कोयले, स्वर्ण तथा पीत वस्तुओं के व्यापार से लाभ पाने वाला, प्रतिशोध की भावना से पूर्ण, चोरी, ठगी, आदि भी कर लेने वाला, बच्चों का विरोधी होता है और वृद्धावस्था में संसार से उदास होकर निर्जन में वास करता है और एकान्त में कष्ट पाता है और जीवन से दुःखी रहता है।

वृष-तुला राशिगत बुध पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि वृष या तुला राशिगत बुध को पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान, गुणवान, कलापूर्ण कार्यों में प्रगति करने वाला, धार्मिक मनुष्य होता है। सरकारी नौकरी में अच्छी प्रगति करता है। प्राकृतिक सौंदर्य का प्रेमी, जल प्रतियोगिता में विजयी, कुल में दीपक होता है। समाज में आदर पाता है और क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो मनुष्य पथ भ्रष्ट की भाँति प्रपंची, झूठ बोलने वाला, नीच संगति, पुत्र से द्वेष करने वाला, कुल को कलंकित करने वाला, बड़ा ही कामी, धातु क्षीण, स्वप्नदोष, प्रमेहादि रोग से पीड़ित रहने वाला, जल में डुबकी खाने वाला, लम्पट प्रकृति का होता है।

भौम दृष्टि फल—जब वृष या तुला राशिगत बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य दुष्ट प्रकृति, धर्म के प्रतिकूल कार्य करने वाला, पराक्रम से हीन, हतभाग्य, व्यापार या नौकरी में उन्नति न करने वाला, चोरी के अपराध में राज्यदण्ड पाने वाला, शत्रुओं से युक्त, इष्ट-मित्रों से रहित, नीच कर्म करने वाला, किशोरावस्था के बालकों से विषय वासना की तृप्ति इच्छा रखने वाला, कामासक्त तथा घातक या हिंसक प्रकृति का पुरुष होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि वृष या तुला राशिगत बुध को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, चतुर, नीतिज्ञ, गणितज्ञ, ज्योतिष, हस्त रेखा का ज्ञान रखने वाला, सत्कर्मी, धार्मिक प्रकृति का होता है। इष्ट-मित्र आदि के सुख से सुखी, गुणी जनों का आदर करने वाला, मांडलिक, ग्राम पंचायत या समाज का प्रधान, रसीले फल, स्निग्ध भोजन, मिष्टान्न खाने वाला सात्त्विक प्रकृति का मनुष्य होता है। परोपकार में धन खर्च करता है।

शनि दृष्टि फल—जब वृष या तुला राशिगत बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन मन, कृशगात, हतबुद्धि होता है। सतत प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं पाता, नीच संगति से सन्ताप पाता है। पशु, शस्त्र, विष, जल से भयभीत रहता है, हानि उठाता है। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, भाई, बन्धु वाहनादि से दुःखी होता है। मन में विकलता, आकृति उदास रहती है। वात, नजला, जुकामादि रोग होते हैं। वह जीवन में दुःखी रहता है।

मिथुन-कन्या राशिगत बुध पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि मिथुन या कन्या के बुध को पूर्ण चन्द्र देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही विद्वान, गणितज्ञ, कलाकार, मधुभाषी, सरकारी नौकरी में अधिकार प्राप्त करने वाला, नीतिज्ञ, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से सुखी, बात की खाल निकालने वाला, बड़ा ही मर्मज्ञ होता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य किसी अधिकारी का अंगरक्षक, पिता से झगड़ा करने वाला, स्त्री-पुत्र आदि के सुख से रहित होता है। छिद्रान्वेषी, कामासक्त, धातु क्षीण, स्वप्नदोष, प्रमेह, नजला, जुकाम, पीलिया आदि रोगों से पीड़ा पाने वाला, जल में बाल-चापल्य के कारण डुबकी खाने वाला, धर्मरहित होता है। मिथुन और कन्या का बुध स्वगृही रहता है। कन्या में उच्च होने से मनुष्य प्रतिष्ठावान तथा समाज-सेवी होता है।

भौम दृष्टि फल—जब स्वगृही बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, कूटनीतिज्ञ, शूर वीर, देश सेवा में तत्पर, सरकारी नौकरी में प्रसन्न रहने वाला, हँसमुख, रोब के साथ कार्य करा लेनेवाला, समयानुकूल अपने को बदल लेने वाला, संगीत-प्रिय, हस्तकला में प्रवीण, सामर्थ्यवान, समाज सेव्य, प्रतिष्ठा पाने वाला, उपकारी, धार्मिक, तीर्थ यात्रा प्रिय, समय पर चोरी, द्यूत कर्म, ठगी आदि सभी छल-कपट कर लेने वाला होता है। फिर भी लोग उसे अच्छा व्यक्ति समझते हैं और सत्कार देते हैं। ऐसे मनुष्य पित्त, गर्मी तथा पाडु रोग के रोगी होते हैं और छोटे बच्चों से अपनी काम पिपासा को शान्त करने की आशा रखते हैं।

गुरु दृष्टि फल—जब मिथुन या कन्या के बुध को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से खता हो तो मनुष्य कुशाग्र बुद्धि, नीतिज्ञ विद्वान, गणितज्ञ, कलाकार लेखक, कवि, शस्त्र और शास्त्र का जानने वाला बड़ा ही साहसी होता है। व्यापार में बहुत सा धन प्राप्त करने वाला, सम्पत्तिशाली, सरकारी नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, माता-पिता स्त्री पुत्रादि के सुख से सुखी, इष्ट-मित्र, समाज में आदरणीय होता है। सत्कर्मी, धार्मिक, तीर्थयात्रा प्रिय, अच्छा व्याख्यानदाता, कभी वायुरोग से पीड़ित रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि मिथुन या कन्या राशिगत बुध का शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य हठी, दृढ़व्रती, प्रतिशोध भावना से पूर्ण, उद्योगी, परिश्रमी, किसी भी कार्य को अथ से लेकर इति तक करने वाला, छोटे कार्यों द्वारा जीवनयापन करने वाला, पशु, वाहन, शस्त्र, लोहे आदि से हानि उठाने वाला, वात, पाण्डु रोग से पीड़ित एक साधारण सा व्यक्ति होता है।

कर्क राशिगत बुध पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—जब कर्क राशिगत बुध को पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान, कलाकार, अत्यन्त दर्शनीय, स्त्रियों के चित्त को आकर्षित करने वाला, जलपदार्थों तथा सुवर्ण चाँदी आदि के व्यापार से लाभ उठाने वाला कुशल व्यापारी होता है। स्त्री तथा कन्या का सुख होता है। पुत्र-लालसा बनी ही रहती है और जब क्षीण चन्द्र से दृष्ट होता है तो मनुष्य बुद्धिहीन, अश्लील शब्दों का प्रयोग करने वाला, दुर्बलांग, कामासक्त, लम्पट, परस्त्री प्रेम में अपयश तथा धन हानि पाने वाला, कपटी, तथा धूर्त प्रकार का होता है। धर्म-कर्म से दूर रहता है। वीर्यपात, स्वप्नदोष, धातुक्षीण, जल में डूबना, नजला जुकाम, कफ स्वाँस आदि रोग होते हैं। पिता से कलह के कारण घर त्याग करना पड़ता है।

भौम दृष्टि फल—यदि कर्क राशिगत बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, मनमलिन, अपढ़ मूर्ख, पुष्टांग, पहलवान, चोरी या डकैती के कार्य में प्रवीण, गप्पी, धोखा देने वाला, झूठा, अविश्वासी, कामासक्त तथा लम्पट होता है। सदा नीच तथा धूर्त संगति में रहने वाला, गुदा भोग या मुष्ठिका मैथुन से काम पिपासा शान्त करने वाला, पाप कर्म रत, अपवाद फैलाने वाला, कलंकित, दुष्टों का सरदार होता है। दिखावे को छोटे-मोटे कार्य कर लेता है। वास्तव में इसकी आय कुकर्म द्वारा ही होती है। पानी में डुबकी खाना, शरीर में सूजन, पित्तगर्मी, पाण्डु आदि रोग होते हैं। इस मनुष्य में निर्लज्जता की प्रधानता रहती है।

गुरु दृष्टि फल—जब कर्क राशिगत बुध को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य तीव्र बुद्धि, बड़ा ही समझदार, विद्वान्, धार्मिक, स्वाध्याय प्रिय, धर्म-कर्म रत, सत्कर्मी, परोपकारी, कवि, लेखक, उपन्यासकार या नाटककार

में से कोई एक कर्म करने वाला होता है। सुवर्ण चाँदी के व्यापार से बहुत धन कमाता है। सरकारी नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त कर ऐश्वर्य के साथ स्वनिर्मित भवन में रहने वाला होता है। तार्किक, स्पष्टवक्ता होने के कारण गुरुजनों से कम पटती है, फिर भी समाज, लोक तथा राजनैतिक क्षेत्र में आदर पाने वाला, नीतिज्ञ, गुप्तचर विभाग में उन्नति करने वाला होता है। नजला, जुकाम कफादि रोग समय-समय पर होते रहते हैं।

शनि दृष्टि फल—यदि कर्क राशि गत बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य गुणहीन, भाग्यहीन, कुकर्म करने वाला, पापरत, दम्भी, घमंडी, कृतघ्न ईर्ष्या-द्वेष करने वाला, प्रपंची, असत्यवक्ता, ठगी-चोरी आदि करने वाला, झल्ली उठाने वाला, स्त्री, पुत्र, इष्ट-मित्रादि के सुख से रहित, घर से बाहर कष्ट पाने वाला, समाज से त्यक्त, विधर्मरत नीच की स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला, वायु, कफ, नजला जुकामादि रोगों से कष्ट पाने वाला परिचायक होता है।

सिंह राशि गत बुध पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि सिंह राशि गत बुधपर पूर्ण चन्द्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, अति दर्शनीय, विनीत, संगीतप्रिय, निपुण कलाकार, कवि, लेखक, नाटचकार, हस्तरेखा विशारद, नृत्य कला में प्रवीण, सुशील, सरकारी नौकरी में अधिकार प्राप्त करने वाला, धन-धान्य संपत्ति से युक्त, सुन्दर स्त्री वाला, समाज में आदरणीय होता है और जब क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, कामासक्त, पर स्त्री प्रेमरत तथा उसके साथ भाग जाने वाला, अश्लील साहित्य का पढ़ने वाला, नीच संगति में रहने वाला, पित्त, कफ, नजला, जुकामादि रोगों से पीड़ा पाने वाला होता है।

भौम दृष्टि फल—जब सिंह राशि गत बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, साहसी, पराक्रमपूर्ण कार्यों का करने वाला, महाक्रोधी, दुष्ट प्रकृति, दूसरों को कष्ट देने वाला, दुःखी, धन सम्पत्ति से रहित, राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित, श्वाँस रोगी, सुरापी, चोरी डकैती का करने वाला, लम्पट होता है। धर्म कर्म से रहित, समाज से बहिस्कृत-सा होता हैं। पित्त, अर्श, रक्तचाप, रक्तविकार से पीड़ित निर्जन में वास करने वाला क्षुद्र प्रकृति वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल--यदि सिंह राशि गत बुध को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य तीव्र बुद्धि, सुशील, कोमल-मधुर वाणी, स्वाध्याय प्रिय, धार्मिक प्रकृति, तीर्थ यात्रा करने वाला, स्त्री पुत्रादि के सुख से युक्त, गुरुजनों का सत्कार करने वाला, अतिथि सेवक, सरकारी नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, नीतिज्ञ, पुलिस सेना विभाग में अस्त्र-शस्त्र को रखने वाला, धन-धान्य सम्पत्ति से युक्त, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। हठी तथा स्वभिमान पूर्ण होता है। पित्तादि रोग से रोगी रहता है। स्वजनसमुदाय में सत्कार पाता है।

शनि दृष्टि फल—जब सिंह राशिगत बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धि हीन, मलिन मन, पिता से कलह करने वाला, दुष्ट प्रकृति, दुर्गन्ध युक्त मलिन वस्त्र धारण करने वाला, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से अनबन रखने वाला, आवेशपूर्ण वार्ता करने वाला, छोटे मनुष्यों की संगति में प्रसन्न रहने वाला, छोटे काम करने वाला, स्त्री पुत्रादि के सुख से रहित, पैतृक सम्पत्ति से वंचित, उद्योग करने पर भी सफलता न पाने वाला, सदा रोगी, वात-पित्त, कफ, श्वांस, अग्नि, चोरी, और शस्त्र-विषादि से हानि उठाने वाला होता है

धन-मीन राशि गत बुध पर ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि धन-मीन राशि गत बुध को पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो बुद्धिमान दर्शनीय, कवि, लेखक, कलापूर्ण कार्यों में प्रगति करने वाला, संगीत नृत्य कला में निपुण, सज्जन, धार्मिक प्रकृति, परोपकारी, साधु संगति से लाभ पाने वाला, धन सम्पत्तिवान, जलविनोद जलयात्रा से सुख पाने वाला, स्त्री चित्ताकर्षक होता है और क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट होने पर मनुष्य पिता से कलह करनेवाला, गुरुजनोंका द्वेषी, दुष्ट संगति वाला, पतित स्त्री से प्रेम करने वाला, अश्लील वक्ता, चरित्र हीन, नौटंकी, स्वाँगादि छोटे खेल तमाशे देखने का शौकीन, मलिनमन होता है। जल में डुबकी खाता है। धातु पीड़ा नजला जुकाम से कष्ट पाता है।

भौम दृष्टि फल—जब धन या मीन राशिगत बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य नीच कर्म करने वाला, चोर डाकुओं का कोषाध्यक्ष, घर से बाहर रहने वाला, लूट, चोरी के माल से ऐश्वर्य करने वाला, पतित तथा

स्यक्ता स्त्रियों से प्रेम करने वाला, गुप्त नीति से चलने वाला, पाप रत रहता है। इसके कुकर्मों को जानकर भी मनुष्य इसे कुछ नहीं कह सकते, लोग डरते हैं और यह सुरापन कर अकड़कर चलता है। जलोदर पित्तादि रोग होते हैं। राज्य दण्ड पाता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि धन-मीन राशिगत बुध को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, विद्वान, वैज्ञानिक, आविष्कार करने वाला, स्वतन्त्र विचार, शास्त्रज्ञ, सरकारी नौकरी में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, मन्त्री, उपमन्त्री, वकील, न्यायाधीश या कोई उच्च कोटि का मनुष्य होता है। दानी, ध्यानी, परोपकारी, ज्ञानी, निर्धनों का सहायक होता है। नीतिज्ञ होने से सेना-पुलिस विभाग में अच्छी प्रगति करता है। युद्ध में विजय पाता है, लेखन कला में निपुण होता है। सम्पादक का कार्य बड़ी ही दक्षता से करता है। धार्मिक होता है, तीर्थयात्रादि में धन व्यय करता है। समाज में, लोक में, राजनैतिक क्षेत्र में सर्वत्र प्रतिष्ठा पाता है।

शनि दृष्टि फल—जब धन या मीन राशिगत बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही कूटनीतिज्ञ, शस्त्र-शास्त्र का जानने वाला तथा उसकी दीक्षा देने वाला, सेना-पुलिस विभाग का अधिकारी होता है या फिर राज्य भंडारी का कार्य करने वाला होता है। वहाँ के चोरी के माल से आजीवन ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। ऐसे मनुष्य धर्माधर्म का विचार त्यागकर पाप कर्म में प्रवृत्त होते हैं। इनका अन्त समय कष्टदायक रहता है। वात पीड़ा से विकल होता है या जल में डूबकर मृत्यु होती है। ये नीचासक्त होते हैं।

मकर कुम्भगत बुध पर ग्रह दृष्टि फल

चंद्र दृष्टि फल—मकर तथा कुम्भगत बुध को यदि पूर्ण चन्द्रमा देखता हो तो मनुष्य स्वतन्त्र व्यापार, तरल पदार्थों, दवाईयों या जलोत्पादक पदार्थ या नगों का व्यापार करने वाला होता है। भीरु प्रकृति का होने के कारण कोई बड़ा कार्य नहीं कर पाता, फल, सब्जी, कन्दमूल से लाभ उठाता है, क्षीण दृष्ट होने पर मनुष्य हतबुद्धि, अस्थिर विचार, निकृष्ट कर्म करने वाला, शराबी, नीच स्त्री से प्रेम में अपयश पाने वाला नराधम होता है। पानी में डुबकी खाता है। शस्त्र के भय, तथा धातु, नजला, जुकामादि रोग से पीड़ित रहता है।

भौम दृष्टि फल—यदि मकर-कुम्भ राशिगत बुध को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो बुद्धिहीन, आवेशपूर्ण बातें करने वाला, नीच प्रकृति, नीच कर्मरत, शस्त्र शास्त्र का ज्ञाता, संग्राम, लड़ाई के लिए तत्पर होता है, सदा पराक्रम-पूर्ण कार्यों में अग्रसर रहता है। पारितोषिक पाता है। प्रतिशोधपूर्ण भावना रखता है। अपने शत्रु को जीवित देखना नहीं चाहता। ऐसे व्यक्ति पुलिस-सेना विभाग में अच्छी प्रगति करते हैं। पित्त, गर्मी, वात, गठिया, जलोदर आदि रोगों से पीड़ा पाते हैं। वृद्धावस्था में अति कष्ट पाते हैं।

गुरु दृष्टि फल—जब मकर कुम्भ राशिगत बुध को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान, धर्मभीरू, कूटनीतिज्ञ, शुभ सङ्गति, समान व्यवहार वालों में आदरणीय, शस्त्र-शास्त्र का ज्ञाता, जल विभाग में नोकरी करने वाला, व्यर्थ खर्च करने वाला, रिश्वत (घूस) लेने वाला, चलचित्त होता है। नीच स्त्री से रति की इच्छा रखता है। वायु पीड़ा से विकल रहता है, जल से, शस्त्र से जीवन भय रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि मकर कुम्भ राशिगत बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य दुष्ट प्रकृति, नीच सङ्गति, ऋणी तथा पाप कर्म रत रहता है। छोटे-छोटे कार्यों द्वारा मजदूरी या झल्ली उठाकर अपनी आजीविका पाने वाला दुःखित होता है। घर से बाहर कष्ट मिलता है। शराब पीकर इधर-उधर घूम फिर कर दिन व्यतीत करने पड़ते हैं। छोटी अवस्था के लड़को से विषय तृप्ति की भावना रखता है और समय पर काम पिपासा को शान्त भी करता है। इनका जीवन जग में पशु समान हो रहता है।

बुधोपदशा फल

बुध में बुधान्तर्दशा फल—यदि बुध की महादशा के अन्तर्गत बुध की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की विद्या-बुद्धि में वृद्धि होती है। शरीर स्वस्थ तथा नीरोग रहता है, विद्यार्थीगण सामान्य परिश्रम से ही परीक्षा में अच्छे नम्बर पाकर उत्तीर्ण होते है। अच्छे विद्यार्थियों को वजीफे, मासिक बन्धान, पारितोषिक, खिलाड़ी युवकों, बच्चों को प्रतियोगिता पारितोषिक प्राप्त होते हैं। उनका जीवन हँसी-खुशी से व्यतीत होता है। गणित

और विज्ञान के विद्यार्थी विशेष रूप से लाभ में रहते हैं। नवीन आविष्कार तथा विशेष योग्यता के लिए प्रशंसा के पात्र होते हैं। विश्वविद्यालय में उच्च स्थान प्राप्त कर आदर्श रूप से प्रतिष्ठित होते हैं। व्यापारियों के व्यापार, कलाकारों की कला, तथा सरकारी नौकरों की नौकरी में पद या वेतन वृद्धि होती है। ज्योतिष, हस्तरेखा, कविता, लेख, कहानी, नाटक, सङ्गीत, बुझोवल के लेखकों को धन तथा मान का लाभ होता है। यह दशा जन साधारण को धन-मान, सम्पत्ति, कीर्ति, प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली होती है। सुसज्जित मकान में रहने को मिलता है। स्त्री, पुत्र, वस्त्र, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु आदि से आदर मिलता है। सुख की प्राप्ति होती है। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है। सत्कर्म, स्वाध्याय, तीर्थयात्रा, देवार्जन, परोपकारादि शुभ कार्यों में धन व्यय होता है और अनेक प्रकार से लाभ होता है। बुध यदि जन्मपत्र में बलवान शुभ स्थानगत हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है। स्थानान्तर से न्यूनाधिक फल की प्राप्ति होती है। बुध यदि नीच या अशुभ स्थान में हो तो विद्यार्थियों को विशेष रूप से अशुभ फल प्रदान करता है।

बुध में केत्वन्तर्दशा फल—जब बुध की महादशा के अन्तर्गत केतु की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रमयुक्त रहती है। मन मलिन तथा चित्त की वृत्ति अस्थिर रहती है। विद्यार्थियों को परिश्रम करने पर भी शुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त कम ही होते हैं। भाई-बन्धु, इष्ट-मित्रों से व्यर्थ कलह तथा झगड़ा रहता है। आपस में मुकदमे चलते हैं। हार होती है, शत्रुओं से कष्ट मिलता है। रक्त-पित्त विकार, उदर पीड़ा, मन्दाग्नि, जिगर तिल्ली, हैजा, चेचक, आदि रोग होते हैं। अग्नि, विष, शस्त्र, सर्पादि से कष्ट मिलता है। व्यापार में हानि, व्यवसाय में शिथिलता, नौकरी में पद ह्रास, अधिकारी वर्ग से अनबन, चित्त में विकलता, सन्ताप, पैतृक सम्पत्ति का ह्रास, खेती आदि में हानि, स्त्री-पुत्रादि की बीमारी से मनुष्य दुःखी हो जाता है, मन में बुरे-बुरे विचार उठते हैं। घर से दूर रहना पड़ता है। धन हानि तथा शरीर कष्ट होता है, नीच की संगति से अपयश प्राप्त होता है। समाज में निरादर पाता है। सारांश यह है कि जातक जिस कार्य में हाथ डालता है उसी में हानि उठाता है।

बुध में शुक्रान्तर्दशा फल—यदि बुध की महादशा के अन्तर्गत शुक्र उपदशा का समय व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की विद्या-बुद्धि में बड़ी उन्नति होती है। विद्यार्थीगण सहज परिश्रम द्वारा परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं। चित्त की वृत्ति धार्मिक रहती है। तीर्थयात्रा के अवसर प्राप्त होते हैं। उत्सवों, त्योहारों तथा अतिथि सत्कारों में धन का व्यय होता है। परोपकार में मन लगता है। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, वस्त्रालंकार आदि का सुख रहता है, किसी शुभ कार्य के लिए समाज में आदर, लोक में प्रतिष्ठा और विद्वानों में पुरस्कार मिलता है। रसीले फल, दूध, दही, खोये की वस्तुएँ, मिष्टान्नादि खाने को मिलते है। किसी नये ज्ञान की प्राप्ति होती है। स्त्रियों से धन तथा सत्कार मिलता है। कामवासना प्रबल रहती है, अविवाहितों को स्वप्नदोष होते हैं। सिर में दर्द, प्रमेह, नजला, जुकामादि रोग होते हैं, विवाह भी हो जाते हैं। विवाहितों को कन्या रत्न की प्राप्ति होती है। श्रृंगारी, कविता, लेख, कहानियाँ पढ़ने लिखने में आती हैं। क्लीब पुरुषों के दर्शन प्राप्त होते हैं, इस दशा का मिश्रित फल मिलता है। चाँदी-सोने के व्यापार में लाभ होता है। नौकरी में उन्नति कम होती है। मन में ईर्ष्या बढ़ती है। मन स्त्रियों की तरफ आकर्षित होता है।

बुध में सूर्यान्तर्दशा फल—जब बुध की महादशा के अन्तर्गत सूर्य की उपदशा का समय व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की बुद्धि पढ़ने लिखने में भली प्रकार से लगती है। परीक्षार्थियों को साधारण परिश्रम करने पर अधिकतर को शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। पिता से पुत्र को धन-सम्पत्ति-स्नेह की प्राप्ति होती है। साधारणतया मनुष्य के मन में क्रोधावेश बढ़ जाता है, चित्त में खिन्नता, ईर्ष्या का प्रादुर्भाव होता है। पित्त रोग या घाम से उत्पन्न बीमारियाँ होती हैं। अविवाहितों के विवाह हो सकते हैं। विवाहितों को सन्तान या पुत्र उत्पन्न हो सकते हैं, व्यापारियों को सुवर्ण, पीतल, मूँगा आदि के व्यापार से अच्छा लाभ हो सकता है। वाहनादि का सुख प्राप्त हो सकता है, सरकारी कर्मचारियों को पद या वेतन वृद्धि हो सकती है। स्थान परिवर्तन या नौकरी में दूसरी जगह जाना या क्वार्टर परिवर्तन हो सकता है। इच्छित वस्तुओं का पूर्णलाभ तो नहीं होता फिर भी किसी अंश तक इष्ट की प्राप्ति

होती है। तीर्थयात्रा, धार्मिक कार्यों, उत्सवों तथा कथा श्रवण में चित्त वृत्ति बढ़ती है। यदि त्रिक स्थानगत दशारम्भ हो तो मनुष्य को नेत्र, सिर पीड़ा, चित्त में व्याकुलता, अग्नि, रोग से भय रहता है। उद्योग में सफलता कम होती है।

बुध में चन्द्रान्तर्दशा फल—यदि बुध की महादशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की उपदशा का शुभ प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य का मन पढ़ने-लिखने, कविता कला करने, खेल-कूद करने, प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रशंसा करने, नदी, झरने तालाब की सैर, पहाड़ों की सैर तथा समुद्री या वायुयान की सैर करने को जी चाहता है। उन दिनों कल्पना शक्ति के बढ़ जाने से काव्य रचना हो सकती है। दूध दही, फल, पौष्टिक तथा रसीले पदार्थ खाने को मिष्टान्न के साथ मिलते हैं। अविवाहितों के विवाह होने की प्रतिशत संख्या बढ़ जाती है, विवाहितों को कन्या जन्मोत्सव की खुशी होती है। व्यापारियों को चाँदी, श्वेतवस्त्र तथा श्वेतपोत वस्तुओं के क्रय-विक्रय से लाभ होता है। यदि अशुभ स्थानगत दशा फल हो तो मनुष्य की बुद्धि कामासक्त हो जाती है। विद्यार्थी खेल तमाशे के शौक या व्यसन में अशुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त करते हैं। युवक प्रेमासक्त कार्यों में अपयश तथा धन हानि उठाते हैं। विवाहित भी पर स्त्री कामना में तल्लीन रहते हैं, अनेक प्रकार की धातु सम्बन्धी प्रमेहादि बीमारियों से पीड़ा पाते हैं। दाद, खुजली, गर्भपात, पिता से कलह, मस्तक पीड़ा, कोढ़, श्वेत-दाग, छीप, छाजन, श्वास, कफ, नजला, जुकाम आदि रोगों से पीड़ा होती है। पानी में डुबकी खाने का अवसर भी मिलता है, पशुओं से चोट का भय रहता है। शुभाशुभ स्थानगत और भी बहुत से शुभाशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

बुध में भौमान्तर्दशा फल—जब बुध की महादशा के अन्तर्गत मंगल की उपदशा का अन्तर व्यतीत हो रहा हो तो मनुष्य की प्रवृत्ति धर्म के विपरीत सी हो जाती है। मन में कुत्सित विचार उत्पन्न होते हैं। पढ़ाई-लिखाई में मन कम लगता है। जाई, टोना, तान्त्रिक, सिद्धि आदि के लिए प्रयत्न होते हैं। किन्तु सफलता नहीं मिलती। तामसिक भोजनों में आमिष की इच्छा होती है। हिंसाकार्य अधिक होते हैं। पुलिस, सेना तथा सरकारी नौकरों, खेती करने वाले कृषकों को थोड़ा बहुत लाभ रहता है। विवाहित मनुष्यों को स्त्री पुत्र आदि की बीमारियों से धन हानि होती है। अग्नि, शस्त्र, चोर, डाकू, आदि से भय

होता है। अर्थ, मूत्र विकार, नेत्रपीड़ा, वायु, पित्तादि से रोग होते हैं, तर्क-वितर्क, वितण्डावाद में सफलता रहती है। गुरुजनों तथा वलिष्ठ मनुष्यों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न होती है। इस दशा में मनुष्य को अधिकतर निराशा तथा कलह का सामना करना पड़ता है। उसकी कामवासना प्रबल होती है, वह छोटे-छोटे बच्चों द्वारा अपनी कामाग्नि को शान्त करना चाहता है। उसे अपयश प्राप्त होता है, अनेक घृणित विचार उत्पन्न होते हैं। यह दशा कुछ मनुष्यों में छोड़कर अधिकतर के लिए हानि और अपयश ही देने वाली होती है।

बुध में राहोरन्तर्दशा फल—यदि बुध की महादशा के अन्तर्गत राहु की उपदशा का शुभ प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य, उद्योग, व्यापार, नौकरी आदि में धन लाभ पाता है; इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धवों से धन का लाभ पाता है और भी अनेक प्रकार से सौख्य प्राप्त होता है। विद्यार्थियों का विद्याध्ययन में अच्छा मन लगता है। अनेक बड़े मनुष्यों से मिलाप होता है। सरकार से पारितोषिक तथा विद्या से, कला पूर्ण कार्यों से समाज में सत्कार प्राप्त होता है और यदि अशुभ राहु अन्तर्दशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य को किसी भी कार्य में परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्रों से निरर्थक कलह होता रहती है। अग्नि, चोर, विष, सर्पादि से भय रहता है। किसी समाज विपरीत कार्य के लिये लोकापवाद प्राप्त होता है। विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने पर ही सफलता मिलती है अन्यथा नहीं मिलती। सरकारी नौकरों की प्रगति में अड़चन पड़ती है। अधिकारी वर्ग से अनबन रहने के कारण वार्षिक वृत्ति में भी रुकावट पड़ती है। विवाह के इच्छुक मनुष्यों के विवाह रुक जाते हैं। व्यापार शिथिल पड़ जाते हैं। मन्दाग्नि, पेटदर्द, पेड़ू दर्द, अण्डकोष वृद्धि आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जिगर तिल्ली की आम शिकायत रहती है। भोजन से रुचि उठ जाती है। और वायु वृद्धि के कारण अतिसार उल्टी, मिचली आदि रोग उत्पन्न होकर चित्त उदास-निराश तथा घबराता है।

बुध में जीवान्तर्दशा फल—जब बुध की महादशा के अन्तर्गत बृहस्पति की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक तथा धर्म कर्म में दृढ़ता के साथ आरूढ़ रहने वाली होती है। यज्ञ-हवन, पूजा-पाठ, स्वाध्याय, तीर्थयात्रा-देशाटन में मन लगता है और लाभ होता है। जीवन ऐश्वर्यमय

व्यतीत होता है। गुरुजनों से ईर्ष्या तथा द्वेष बढ़ता है। विद्यार्थियों का मन विद्याध्ययन में खूब लगता है। उन्हें तनिक से परिश्रम से ही शुभपरीक्षा परिणाम प्राप्त होते हैं। गणित, विज्ञान और कानून के विद्यार्थियों को विशेष रूप से लाभ होता है। खेल-कूद की प्रतियोगिता वालों को शुभ अवसर प्राप्त होता है। अविवाहितों को विवाह हो जाने की पूर्ण आशा रखनी चाहिये। यदि इस दशा में विवाह न हुआ तो दो वर्ष तक ठहरना पड़ेगा। मुकदमे में विजय प्राप्त होती है। वोरोड, लाट्री, रेस, सट्टे से धन मिल सकता है। इष्ट-मित्र, बन्धु-वान्धव, स्त्री पुत्रादि से सुख मिलता है। किसी शुभ कार्य के लिए समाज तथा लोक में प्रतिष्ठा बढ़ती है। दूध, दही, घृत के पकवान मिष्ठान्नादि खाने को मिलते हैं श्वेत वस्त्रों में रूचि बढ़ती है। बड़े-बड़े अधिकारियों से मिलाप का अवसर प्राप्त होता है। वायु, पीलिया, नजला, जुकाम, जल सम्बन्धी रोग होते हैं फिर भी शरीर स्वस्थ सा ही रहता है।

बुध में शन्यन्तर्दशा फल—यदि बुध की महादशा के अन्तर्गत शनि की उपदशा का प्रादुर्भाव शुभ स्थान में शुभ प्रकार से हो तो मनुष्य की बुद्धि मलिन नहीं हो पाती बलिक धर्म-कर्म तीर्थ व्रतादि के करने में लगी रहती है। सांसारिक सुख की प्राप्ति होती है। लोहे, पीतल, कोयले आदि के व्यापार से लाभ होता है। कारखाने खूब चलते हैं। इन्जीनियरिंग के विद्यार्थी अच्छी प्रगति करते हैं। छोटे वर्ग के मनुष्यों में वैद्यक, डाक्ट्री, व्याख्यानादि से कीर्ति तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। अशुभ शनि की अन्तर्दशा में मनुष्य उदास निराश रहता है, पढ़ने लिखने में मन नहीं लगता, बच्चे घर से भाग जाते हैं और कष्ट पाते हैं, धन धर्म की हानि होती है, पापेच्छा बढ़ती है। वात, पित्त, कफादि रोग होते हैं, शरीर में पीड़ा, मन में विकलता, एकान्त सेवन की इच्छा होती है। स्त्री पुत्रादि का वियोग होता है। रोने को मन करता है। अनेक यातनाओं के वशीभूत होकर मनुष्य का स्वभाव रुक्ष तथा उग्र हो जाता है। उसमें मोह की कमी हो जाती है। कृषक लोगों को विशेषकर यह दशा हानि प्रद रहती है।

केतु दशा फल

यदि विवेक की गहरी दृष्टि से विचारपूर्वक देखा जाय तो केतु कोई स्वतन्त्र ग्रह नहीं है। इसको सभी शास्त्रकारों ने राहु का ही अंश माना है। राहु एक

सर्प है तो केतु उसकी पूछ है जो कि राहु से सदा सप्तम स्थान में केतु के रूप में रहतो है। राहु जिस राशि के जितने अंश पर होगा केतु निश्चयपूर्वक राहु से सातवीं राशि के उतने ही अंश पर होगा। केतु की चाल, स्थान, गति-विधि जो कुछ भी दृष्टिगोचर होती है सभी कुछ राहु की गति-विधि पर निर्भर है। केतु का उच्च, नीच, मित्र-शत्रु होना राहु के ही हाथ में है। कल्पना करो कि आज राहु-मेष के दश अंश पर है तो निश्चय ही आज केतु तुला के दस अंश पर होगा। इसीलिए केतु की कोई अपनी स्वतन्त्र सत्ता नहीं मानी जाती। इसी प्रकार इसके फलादेश भी स्वतन्त्र नहीं होते इसकी अपनी कोई स्वतन्त्र दृष्टि नहीं होती है। युति का फल प्रभावशाली देखने में आता है जो कि समयानुकूल स्थानान्तर पर लिखा जायगा। राशिगत केतु का प्रभाव राहु की सप्तम राशिगत प्रभाव के अनुकूल ही होता है। इसलिए पाठक थोड़ा कष्ट सहन करें और राहु दशा फलादेश में दिये गये फलों से केतु फल प्राप्त कर अपने अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त करें। साधारणतया देखने में यही आया है कि केतु एक अशुभ तथा पाप ग्रह है जो कि अशुभ ही फल प्रदान करता हैं। राहु तो शुभाशुभ फल-प्रभाव का प्रदान कर्ता हो सकता है किन्तु केतु सर्वत्र अशुभ ही फल का द्योतक रहता हैं। हम इसके भी राशिगत शुभाशुभ फल राहु की भाँति यथास्थान लिख आये हैं। पाठक वहाँ से अपने अभीष्ट की सिद्धि कर सकते हैं। अभी तक अनुभव से यही सिद्ध हुआ है कि केतु की दशा में मनुष्य की बुद्धि भ्रमित रहती है। यदि यह दशा बचपन में किसी को आती है तो बच्चा बहुत ही बीमार रहता हैं। चेचक, हैजा, अतिसार, उल्टी, ज्वर, पीलिया-घाँटी, जिगर-तिल्ली, निमोनियाँ, हब्बा-डब्बा, पसली-चलना आदि रोग होते हैं। युवकों को सन्ताप, चित्त में विकलता, मन में अशान्ति, उद्योग में विफलता व्यापार में हानि, विवाह में रुकावट, वायु गोला, पेट, पेड़ू, अण्डकोष आदि में दर्द, नौकरी तथा व्यवसाय के लिये इधर-उधर व्यर्थ प्रयास करते हुए फिरते रहना। धनवान भी असावधानी के कारण इस दशा में निर्धनता को प्राप्त हो जाते हैं। शरीर में अनेक रोग लग जाते हैं शरीर दुर्बल पड़ जाता है। भोजन की व्यवस्था ठीक नहीं रहतो। सरकारी नौकरों की पदोन्नति, तथा वेतन वृद्धि में अड़चने पड़ जाती है। अधिकारियों स मनमुटाव रहने के कारण अपने उनके सभी कार्य बिगड़े से रहते हैं। व्यर्थ के

एक्सप्लेनेशन (जवाबतलबी) देने पड़ते हैं। घर के स्त्री बच्चों तथा बन्धु-बान्धवों से कलह रहती हैं। मन विक्षिप्त की भाँति हो जाता है। कितने ही नौकरी छोड़ बैठते हैं। कितने ही राज्यदण्ड के अधिकारी हो जाते हैं। वंशपरम्परागत रोग के कारण या किसी अन्य रोग के कारण शरीर को कष्ट तथा धन की हानि होती है। लड़ाई-झगड़े कलह, मुकदमे आदि में पराजय होती है। दुष्ट संगति प्राप्त होती है। कुकर्म में रुचि लगती है। अग्नि, चोरी, विषपान, सर्पादि के काटने का अवसर आ जाता है। चित्त की वृत्ति स्थिर न रहने के कारण मनुष्य क्या से क्या कर बैठता है। कोई-कोई तो दुःखी होकर आत्महत्या तक कर बैठते हैं। यदि उच्च का केतु एकादश स्थान शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो शुभ फल प्रदान करता है। मनुष्य को अचानक धन की प्राप्ति कराता है। यदि नीच का या शत्रु राशि का (१, ४, ५, ७, ९, १०) में हो तो अत्यन्त हानिकारक होता है। प्रत्येक प्रकार की आपत्ति प्रदान करता है। केतु के बारे में यह पूर्णतया ठीक ही लिखा गया है कि "केतुः केवलं दुःख दायकः;" केतु चाहे किसी स्थान में किसी भी राशि का क्यों न हो अपनी दशा में किसी न किसी प्रकार कष्ट या हानि किसी न किसी रूप में अवश्य करता है। शुभ होने पर यदि कोई सुख भी दिया तब भी उसी भाव के दूसरे फलादेशानुसार कष्ट अवश्य देगा। कल्पना करो एकादश स्थान में धन दिया तो उसे भ्रातृ कष्ट अवश्य होगा।

केतूपदशा फल

केतु में केत्वन्तर्दशा फल—केतु की महादशा के अन्तर्गत केतु की ही उपदशा का प्रादुर्भाव यदि किसी मनुष्य की बाल्यावस्था में हो तो वह बचपन में अवश्य ही बीमार रहा होगा। चेचक, हैजा, अतिसार, खून, आँव के दस्त, काँचादि बढ़ने का रोग, ज्वर, जिगर तिल्ली, पेट में दर्दादि रोग होते हैं। पढ़ाई में रुकावटें आती हैं। परीक्षा परिणाम शुभ प्राप्त नहीं होते। युवकों को व्यवसाय, व्यापार तथा नौकरी के लिए कितना ही परिश्रम करना पड़े व्यर्थ ही रहता है। अविवाहितों के विवाह रुके रहते हैं। विवाहितों को स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्रों से कष्ट तथा तिरस्कार प्राप्त होता है। सरकारी नौकरों की उन्नति रुक जाती है। अधिकारियों से कलह तथा झगड़ा रहता है। जिस कारण व्यर्थ

जवाबतलबी होती है। किसी-किसी की नौकरी छूट भी जाती है। मन में संताप, चित्त में उद्विग्नता, व्यर्थ भ्रमण, बुद्धि में भ्रम, अग्नि, चोर, विष, सर्पादि से भय, जल में डुबकी खाना, किसी दुष्ट स्त्री के कारण अपयश, लोकापवाद तथा राज्यदण्ड की प्राप्ति तक हो जाती है। व्यर्थ की लड़ाई-झगड़ा तथा मुकदमे बाजी होती है। शत्रुओं से हानि होती है। बीमारी या मुकदमे के कारण धन की हानि होती है। वायुगोला, पेट में दर्द, अण्डकोष वृद्धि, शरीर में जलन, मन में निराशा तथा किसी समीपी, सम्बन्धी की मृत्यु का संवाद श्रवण को मिलता है। कहने का तात्पर्य यह है कि केतु में केतु का अन्तर अशुभ ही फल प्रदान करता है और वह किसी न किसी प्रकार से अवश्य ही दुःखी रहता है।

केतु में शुक्रान्तर्दशा फल—जब केतु की महादशा के अन्तर्गत केतु की उपदशा का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि कामासक्त कार्यों में बहुत लगती है। विद्यार्थी छोटी अवस्था में ही प्रेम की कहानियाँ, उपन्यासादि पढ़कर समय को व्यर्थ करते हैं। बड़े विद्यार्थी जहाँ सम्मिलित शिक्षा पाते हैं। प्रेम में पड़कर कई बार लड़कियों के साथ भाग जाते हैं। नीच जाति की लड़कियों के प्रेम में लोकापवाद पाते हैं। यदि विदेश गमन हुआ तो अवश्य विधर्मी लड़की के प्रेमपाश में रहते हैं। स्वप्नदोष, प्रमेह, शुक्रक्षय, कफ, नज़ला, जुकामादि रोग होते हैं। परस्त्री प्रेम में विष, शस्त्रादि का प्रयोग हो सकता है। स्वस्त्री, पुत्रादि से झगड़ा बार-बार होता है। स्त्री वियोग हो सकता है। इष्ट-मित्र, बहिन-भाइयों में अनबन रहती है। विवाहित पुरुषों को कन्या रत्न की प्राप्ति हो सकती है। बुखार, अतिसारादि रोग हो सकते है। अनीति और अधर्म में चित्त की वृत्ति खूब लगती है। पाप कर्म में रुचि बढ़ती है। गुरुजनों से द्वेष तथा ईर्ष्या उत्पन्न होती है। नेत्र, शिर, पीड़ा, पशु, जल से हानि हो सकती है। इस दशा में कभी-कभी दूध, दही से बने पदार्थ, मिष्टान्न तथा फल खाने को मिल जाते हैं। यह दशा अधिकतर सुखप्रद न होकर मनुष्य को पराभव की ओर ले जाने वाली ही होती है। पर धनलिप्सा लगी रहती है।

केतु में सूर्यान्तर्दशा फल—यदि केतु की महादशा के अन्तर्गत सूर्य की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रम युक्त, आवेशपूर्ण तथा क्रोध-युक्त होती है। विद्यार्थी इस दशा में अधिक परिश्रम करने पर भी अच्छे

नम्बरों से पास नहीं होते। उद्योगियों का उद्योग कम सफल होता है। नौकरी करने वालों की अपने अधिकारियों से नहीं बनती, जिस कारण उन्नति नहीं हो पाती। अविवाहितों के विवाह रुके रहते हैं, विवाहितों की स्त्री, बच्चों, माता-पिता तथा गुरुजनों से कलह रहती है। शत्रुओं से पराभव की प्राप्ति होती है, मुकदमे में हार होती है। विदेश यात्रा में सन्ताप मिलता है। हीन भोजन की प्राप्ति होती है। शरीर में रोग, पित्त के कारण होते हैं, किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु का संवाद प्राप्त होता है। मन में निरन्तर सन्ताप, उद्वेग तथा अशान्ति रहती है। किसी प्रबल आदमी से झगड़ा होता है। जीवन दुःखी रहता है। आँखों में दाह और शिर में पीड़ा रहती है। किसी नीच कर्म के लिए धर्म का अनुष्ठान होता है। उद्योग में विफलता रहती है। इस दशा में कोई भी कार्य बिना अड़चन पड़े नहीं होता है।

केतु में चन्द्रान्तर्दशा फल—जब केतु की महादशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की उपदशा का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्यकी बुद्धि कामार्थं वशीभूत होती है। मनुष्य इस दशा में कठिन परिश्रम करने पर प्रत्येक कार्य में सफल हो जाता है। विद्यार्थीगण सतत परिश्रम से उत्तीर्ण हो जाते हैं। अविवाहितोंके रुके हुए विवाह हो जाते हैं। विवाहितों को कन्या रत्न की प्राप्ति होती है। युवक प्रेमालिंगन में मस्त रहते हैं। मनुष्य धन कमानेकी बड़ी इच्छा रखता है। कमाता भी है, किन्तु वह धन टिकता नहीं। कामवासना इतनी प्रबल होती है कि मनुष्य ऊँच-नीच, धर्माधर्म, जाति-विजाति का विचार त्यागकर परस्त्री प्रेममें आसक्त रहता है। स्वप्नदोष, धातुक्षीण, प्रमेह, कफ, नजला, जुकाम इत्यादि रोग बहुत दबाते हैं। जलयात्रा या जल-विनोद में भय रहता है। विदेशगमन हुआ तो विजाति की लड़की का प्रेम धर्म परिवर्तन तक करा देता है। शृंगारी कवितायें, कहानियाँ, प्रेम के विवरण अति रुचिकर लगते हैं। समय-समय पर दूध, मक्खन, टोस्ट, दही, खोये का सामान, मलाई के लड्डू, रबड़ी, मिष्टान्न तथा रसीले पदार्थ या फल खाने को मिलते रहते हैं। अनेक मनुष्यों से मिलाप होता है। स्त्री, पुत्र, मातादि में से किसी एक को कष्ट होता है। पशुओं तथा कृषिकर्म में हानि होती है। किसी परस्त्री के आकर्षण के कारण लोकापवाद, अपयश तथा परिजनों से शत्रुता द्वारा मानहानि हो सकती है। मनुष्य का मन दुर्गम स्थान, पुराने किले,

घाटियों, नदी, तालाब, झरने, पर्वत तथा इसी प्रकार के प्राकृतिक दृश्य खण्डरा-तादि के देखने में खूब लगता है। यह दशा मनुष्य को दुःख और सुख का समान अनुभव कराती है। इसलिए अच्छी और बुरी दशा समयानुकूल ही रहती है।

केतु में भौमान्तर्दशा फल—यदि केतु की महादशा के अन्तर्गत मंगल की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि पराक्रमशील कार्यों की ओर लगती है। यह दशा पुलिस तथा सेना विभाग के व्यक्तियों के लिए सुखप्रद रहती है। मनुष्य में हिंसा तथा उद्योग की इच्छा उत्पन्न होती है। स्वजन-परिजन समुदाय से लड़ाई, झगड़ा, कलह, मुकदमादि होते हैं। शस्त्राग्नि, चोर, विष आदि से भय रहता है। स्त्री-पुत्र, भाई-बन्धुओं से ईर्ष्या तथा द्वेष बढ़ता है। पित्त, कफ, श्वाँसादि रोग बढ़ते हैं। किसी रक्तपात या खून-खराबे के लिए राज्यदण्ड मिल सकता है। इस दशामें पुलिस से भय रहता है। नेत्र-सिर में पीड़ा होती है। मदिरा, मछली, मांसादि कुधान्य का भोजन मिलता है। रक्त-पित्त-विकार, रक्तचाप, रक्तिम अतिसार या अर्श हो सकती है। किसी समीपी सम्बन्धी की मृत्यु का संवाद प्राप्त हो सकता है। पेट दर्द, फोड़ा, फुन्सी, रक्तविकार, पशुओं से भय, खेती में हानि तथा किसी बलवान शत्रु द्वारा पराभव की आशंका रहती है। गिरकर चोट लग सकती है।

केतु राहोरन्तदशा फल—जब केतु की महादशा के अन्तर्गत बुध की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती। विद्यार्थी कठिन परिश्रम करने पर भी अशुभ परीक्षापरिणाम प्राप्त करते हैं। उद्योगियों के उद्योग विफल ही रहते हैं। व्यापारियों के व्यापार शिथिल पड़ जाते हैं। सरकारी नौकरों की उन्नति रुक जाती है। अधिकारी वर्ग से झगड़े तथा अनबन रहने के कारण जवाबतलबी होती है। हृदय में कुत्सित भावनायें उठती हैं। भोजन की व्यवस्था ठीक न रहने के कारण, वायुगोले का पेटदर्द, रीढ़ का दर्द, अण्ड कोश-वृद्धि तथा इसी प्रकार के अनेक रोग लग जाते हैं। उपवास करने पड़ते हैं। इधर-उधर आजीविका के लिए भटकना पड़ता है। कुकर्मों के लिए राज्य दण्ड भय रहता है। चोर, अग्नि, विष सर्पादि भय होता है। समाज में अपयश प्राप्त होता है। दुष्ट मनुष्यों से कलह रहती है। अपशब्द श्रवण को मिलते हैं। मुकदमे में

हार होती है। किसी दुष्ट स्त्रीके संवाद में मानहानि होती है। धन-धर्म की हानि होती है। नीच मनुष्यों की संगति में अपयश की प्राप्ति होती हैं। नित्य नये संकट का सामना करना पड़ता है। जीवन दुःखी हो जाता है।

केतु में जीवान्तर्दशा फल—यदि केतु की महादशा के अन्तर्गत वृहस्पति की उपदशा का अन्तर वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि पहली दशाओं की अपेक्षा कुछ शान्त तथा धर्म-कर्म में रत होती है। तीर्थयात्रा तथा देशाटन में प्रवृत्ति रहती है। परीक्षार्थी थोड़े परिश्रम से उत्तीर्ण हो जाते हैं। अनेक मनुष्यों से मिलाप होता हैं। नीच तथा दुष्ट मनुष्य शत्रुता छोड़कर आदर प्रदान करते हैं। व्यापारियों के व्यापार, उद्योगियों के उद्योग फलते हैं। नौकर पेशा को पद तथा वेतन में वृद्धि होती है। कलाकार पारितोषिक पाते है। सरकारी ओफीसर प्रसन्न रहते हैं। रुके हुए कार्य सुलभ हो जाते हैं। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु सत्कार करते हैं। समाज में आदर तथा प्रधान पद मिलता है, राज्य से लाभ होता है। कृषकों को धन-धान्य का लाभ होता है। अविवाहितों के विवाह हो जाते हैं। विवाहितों को पुत्र लाभ या सन्तान लाभ होता है। देवी-देवताओं तथा गुरुजनों में श्रद्धा बढ़ती है। दूध मिष्टान्न पकवानादि का भोजन प्राप्त होता है। अन्न-वस्त्र की सुव्यवस्था रहती है। स्वास्थ्य ठीक रहता है। विचार उत्तम होते हैं। स्वाध्याय, मन्त्र, जाप तथा ईश्वर-भक्ति में मन खूब लगता है।

केतु में शन्यन्तर्दशा फल—जब केतु की महदशा के अन्तर्गत शनि की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि भ्रमित-सी रहती है। उसका मन किसी भी कार्य में नहीं लगता है। धर्म से परे अधर्म में रुचि बढ़ती है। पाप कर्म होते हैं। लोहे काष्ठादि से लाभ रहता है। अन्य सभी व्यापारों में हानि होती है। परीक्षार्थी परिश्रम करने पर भी सफल नहीं होते। नीच संगति में शत्रु का भय रहता है। मन में सन्ताप, चित्त में खेद, आत्मीयजनों से विरोध तथा वियोग होता है। आजीविका के लिए देश, विदेश का भ्रमण करना पड़ता है और कष्ट मिलता है। शत्रुओं द्वारा घात लगता है। दूषित अन्न का भोजन प्राप्त होता है। बात, कफ, स्वाँस, वायुगोला, पित्त-विकारादि से रोग उत्पन्न होते हैं। कृषि तथा पशुओं से हानि होती है। अनेक अशुभ संवाद श्रवण को मिलते हैं। शस्त्र, चोर से भय रहता है। मन में उदासी, शरीर में आलस्य रहता है। नौकरी करने वालों की उन्नति सीमित हो जाती है। जीवन दुःखी रहता है।

केतु में बुधान्तर्दशा फल—यदि केतु की महादशा के अन्तर्गत बुध की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य शनि की दशा से ऊबा हुआ सुख की सांस लेता है। उसकी बुद्धि स्थिर रहती है। पढ़ने लिखने में मनुष्य का मन खूब लगता है। परीक्षार्थी परिश्रम करने पर ही पास होते हैं अन्यथा नहीं होते। साधारण रूप से यह दशा अच्छी रहती है। रुके हुए काम हो जाते है। इष्ट-मित्र बन्धु-बान्धवों से सुख मिलता है। अविवाहितों के विवाह हो जाते हैं। विवाहितों को संतान लाभ हो जाता है। धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। लोक समाज में आदर मिलता है। कृषि कर्म में हानि तथा पशुओं से घात भय रहता है। वायु, पित्त, कफ, श्वांस, पीलिया आदि रोग हो सकते हैं। पेट दर्द हो सकता है। गठिया का रोग भी हो सकता है। शत्रुओं से कष्ट प्राप्त होता है। अनेक प्रकार से यह दशा शनि की अपेक्षा बहुत अच्छी रहती है। फिर भी किसी विशेष प्रकार से सुखप्रद नहीं होती।

शुक्र महादशा फल

शुक्र एक शुभ ग्रह है। इसकी दशा सदैव काम और सुख फल प्रदान करने वाली है। जिस व्यक्ति को बचपन में यह दशा आती है उस व्यक्ति की बुद्धि बड़ी ही सात्विक तथा निर्मल रहती है, पढ़ने-लिखने में उसका मन खूब लगता है। यदि शुक्र शुभ स्थानगत हो तो मनुष्य बिना कठिन परिश्रम किये भी परीक्षा का शुभ परिणाम सहज ही प्राप्त कर लेते हैं। ये लोग शृङ्गारी प्रकार के स्वच्छ श्वेत सुगन्धित वस्त्रों को धारण करने वाले हँसमुख, चलचित्त, मधुभाषी, दर्शनीय होते हैं। शृङ्गारी कहानी, प्रेम भरे उपन्यास, रसिक कवितायें, नाटक आदि पढ़ने-देखने का चाव हृदय में उत्पन्न हो जाता है। कुछ बड़ी अवस्था वाले मनुष्य, नाटक, थ्येटर, स्वांग, नौटंकी या सिनेमा आदि देखकर या उनको पढ़कर या उनमें भाग लेकर पथ विचलित भी हो जाते हैं। युवकों के लिए यह दशा अच्छी और बुरी दोनों प्रकार से आती है। कुछ युवक जो कि देश जाति तथा कुल के प्रति अपने कर्त्तव्य के उत्तरदायित्व को समझते हैं वे अवश्य ही पढ़-लिखकर वकील, बैरिस्टर, जज, न्यायाधीश आदि अनेक प्रकार के स्वतन्त्र व्यवसाय के करने वाले सुन्दर लेखक, सम्पादक, समालोचक तथा आलोचक बनकर, अपनी भाषा, देश-जाति की मान-मर्यादा

की रक्षा करते हैं और कितने ही युवक अपने देश-जाति कुल की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाकर, कुल को कलंकित कर सहज ही परस्त्री प्रेम के कारण विदेशी, विधर्मी तथा विरक्त हो जाते हैं। अनेक काम के वशीभूत होकर अपनी आत्महत्या तक कर लेते हैं। प्रत्येक ग्रह दशा का प्रभाव उस ग्रह की परिस्थिति, स्थान तथा भावना के ऊपर निर्भर होता है। फिर भी साधारणतः यह दशा मनुष्य को सात्त्विक फल प्रदान करने वाली है। इस दशा में मनुष्य की बुद्धि का पूर्ण विकास होता है। मनुष्य सत्कर्म में निष्ठा रखता है। यज्ञ, हवन, अतिथि सेवा, स्वाध्याय, तीर्थयात्रा, देशाटन तथा जलयात्रा का अवसर प्राप्त होता है। अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो जाते हैं। सन्तान की इच्छा वाले विवाहितों को शुभ सन्तति की प्राप्ति होती है। इस दशा में विशेषकर भोजन की बड़ी ही सुव्यवस्था रहती है। अपने पराये सभी आग्रह पूर्वक भोजन के लिए निमन्त्रण देते हैं और सुस्वादु पदार्थों से सेवा करते हैं। दूध, दही, घृत, पकवान, मिष्टान्न, खोये के बने पदार्थ, स्निग्ध, रसीले भोजन, सुन्दर-रसीले फल, श्वेत वस्त्र, चाँदी के आभूषणादि, किसी उत्सव विशेष पर प्रदान करते हैं। व्यापारी वर्ग, चाँदी तथा रजताभूषण, श्वेत वस्त्र, व्यापार में विशेष रूप से लाभ उठाते हैं। धन, सम्पत्ति, मकान, भूमि, वाहनादि (साइकिल, मोटर, स्कूटर, मोटर साईकिल, नभयान, वायुयान तथा जलयान में से किसी एक की लम्बी यात्रा का सुअवसर प्राप्त होता है। मेज, कुर्सी, सोफासेट, रेडियो, सुसज्जित पर्यंक आदि की दहेज में प्राप्ति होती है। गायन, वादन, नृत्यादि का चाव बढ़ता है। बाग, वाटिकादि लगाये जाते हैं या फिर वन, उपवन, पर्वतादि के प्राकृतिक सौन्दर्य निरीक्षण की हृदय में उत्कण्ठा उत्पन्न होती है जो कि अभिलाषा पूर्ण होती है। कलाकारों के कलात्मक कार्य सिद्ध होते हैं जो कि पारितोषिक पाते हैं। इस दशा में मनुष्य को समाज तथा लोग में प्रतिष्ठा तथा कीर्ति प्राप्त होती है। जीवन में सुख का अनुभव होने लगता है। बड़े-बड़े मनुष्यों से मुलाकात होती है। इष्ट-मित्र, बहिन-भाई तथा अपने-पराये सभी सम्बन्धी बिना उपकार के ही सत्कार प्रदान करते हैं। लक्ष्मी-गृहलक्ष्मी का सुख सहज प्राप्त होता है। सरकारी नौकरों को पद या वेतन वृद्धि का अवसर प्राप्त होता है। अधिकारी वर्ग में प्रशंसा होती है। बिगड़े तथा रुके कार्य सहज ही

में हो जाते हैं। किन्तु फिर भी देखने में यही आया है कि इस दशा में मनुष्य की काम-वासना प्रबल होती है। अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरे की स्त्री को इच्छा उत्पन्न होती है। बहुत से मनुष्य इसके कारण अपयश को भी प्राप्त होते हैं। स्वप्न दोष, धातु तथा शुक्र क्षीण प्रमेहादि रोग सहज ही लग जाते हैं। इस दशा में बड़े से बड़े और छोटे से छोटे व्यक्ति भी दशा चक्र में आ जाते हैं। जिनमें कुछ उत्थान की ओर और कुछ पतन को प्राप्त होते हैं। इसलिए प्रत्येक को सावधानी की आवश्यकता है।

ग्रह दृष्टि फल

मेष-वृश्चिक राशिगत शुक्र पर सर्व ग्रह दृष्टि फल

सूर्य दृष्टि फल—सूर्य अपने स्थान से सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है। अनुभव में आज तक यही बात आई है कि सूर्य-शुक्र के एक घर आगे-पीछे, साथ या किसी स्थान पर दो घर आगे-पीछे भी हो जाता है, किन्तु किसी भी कुंडली में सूर्य से सप्तम शुक्र देखने में नहीं आया है। यदि किसी को इसका अनुभव हुआ हो तो वह केवल भूल या कल्पना मात्र ही है। इसलिए शुक्र पर सूर्य दृष्टि फल किसी भी राशि पर न लिख कर पाठकों को सत्य पथ का दिग्दर्शन करायेंगे।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत शुक्र पर पूर्ण चन्द्र को पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य को बलवान इच्छायें सफल होती हैं। चित्त की वृत्ति चंचल रहती है, समाज तथा स्त्रियों में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसा मनुष्य चित्रकार, कवि, श्रृंगारी तथा कलाकार होता है और स्वतन्त्र रहना पसन्द करता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य की वासना शक्ति प्रबल होती है. अनेक अपूर्ण कार्य कर जीवन यात्रा चलानी पड़ती है। किसी नीच जाति की स्त्री के प्रेम में अपयश मिलता है। धातु क्षीण, मन्दाग्नि, स्वप्नदोष, नजला, जुकाम आदि रोगों से पीड़ा होती है, आलसी होता है।

भौम दृष्टि फल—जब मेष या वृश्चिक राशिगत शुक्र को मंगल देखता हो तो मनुष्य का मन शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में कम लगता है। ऐसा मनुष्य दीन-हीन-मलिन, स्त्री सुख से रहित होता है। प्रथम स्त्री का सन्ताप देखना पड़ता

है, दूसरी स्त्री लड़ाकू आती है। किसी नीच स्त्री के कलुषित प्रेम में अपयश तथा हानि होती है। उसको मकान के लिए भटकना पड़ता है, उसकी स्त्री को गर्भपात हो सकते हैं। धातु, पित्त सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

बुध दृष्टि फल—शुक्र और बुध का सूर्य से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। ये दोनों ही ग्रह सदा सूर्य के आस-पास, आगे-पीछे, (इर्द-गिर्द) या साथ ही रहते हैं और बुध की दृष्टि पूर्ण रूप से सप्तम पर ही पड़ती है और शुक्र, बुध से सप्तम स्थान पर कभी नहीं जाता ऐसा अनुभव से सिद्ध है, तो बुध दृष्टि फल शुक्र के प्रति लिखने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। पाठक इस बात से सन्तोष प्राप्त करें और भविष्य में भी यही आशा रक्खें कि शुक्र पर बुध दृष्टि फल का कोई प्रभाव नहीं होता या बुध की शुक्र पर दृष्टि ही नहीं होती है।

गुरु दृष्टि फल—यदि मेष या वृश्चिक राशिगत शुक्र पर बृहस्पति पर पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य दर्शनीय, नीतिज्ञ तथा बुद्धिमान, उच्चाधिकारी, स्त्री पुत्रादिसुख से सुखी, इष्ट-मित्रों से युक्त होता है। फिर भी किसी उच्च वर्ण की स्त्री से सम्बन्ध कराता है। ऐसा मनुष्य सात्त्विक, धार्मिक, स्वाध्याय प्रिय, तीर्थ यात्रा प्रिय होता है। सरकारी नौकरी में प्रसन्न रहता है। अधिकारी वर्ग उससे प्रसन्न रहता है। वह धन सम्पत्ति से युक्त होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने में तल्लीन रहता है और अपनी व्यवहार कुशलता के कारण अधिकतर सभी कार्यों में सफल होता है। उसका स्वाभिमान उच्च कोटि का होता है।

शनि दृष्टि फल—जब मेष या वृश्चिक राशिगत शुक्र को शनि देखता हो तो मनुष्य चतुर, शान्त, मलिन, आलसी, मित्रों का मित्र और शत्रुओं का प्रबल शत्रु होता है। धन हीनता दिखाने पर भी धनवान होता है। यह दूसरे मनुष्यों को उचित राय देता है किन्तु स्वयं उस पर नहीं चलता। किसी नीच स्त्री के कलुषित प्रेम में पतन को प्राप्त होता है। मुष्टि मैथुन द्वारा वीर्य नष्ट करता है। प्रमेह-धातु क्षीणादि रोगों के साथ, वायु, कफ, पित्त, नजला, जुकामादि रोगों से दुःखी होता है।

वृष तुला राशिगत शुक्र पर सर्व ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि स्वगृही (वृष-तुला का) शुक्र पूर्ण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य शुद्ध हृदय, मधुर भाषी, दर्शनीय, गौरवर्ण, धनवान, कलाकार

श्रृंगारी, कविता करने वाला, पर स्त्री प्रेम रत, उनसे धन पाने वाला होता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य बड़ा ही दुष्टात्मा, पापरत, लम्पट, कामासक्त तथा दुश्चरित्र होता है। नीच स्त्री संसर्ग से अपयश पाने वाला, बनावटी बातों से पूर्ण, सुरापी, धातु क्षीण, स्वप्नदोष, प्रमेह, नजला, जुकाम आदि से पीड़ित रहता है।

भौम दृष्टि फल—यदि स्वगृही शुक्र मंगल से पूर्ण दृष्ट हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, लड़ाई-झगड़े में आस्था रखने वाला, कलहप्रिय, घर से दूर रहने वाला, देशाटन प्रिय, अनेक स्त्रियों से कलुषित प्रेम करने वाला, प्रमादी, गर्वयुक्त, अपयश का भागी होता है। जल, अग्नि, शस्त्र से भयभीत रहता है। पित्त, कफ, रक्तविकारादि के रोगों से पीड़ा पाता है।

गुरु दृष्टि फल—जब स्वगृही शुक्र को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान्, विद्वान, तर्क-वितर्क पर आस्था रखने वाला, गुरुजनों का द्वेषी, नीति निपुण, कलाकार, शास्त्र का ज्ञाता, समयानुकूल व्यवहार करने वाला, स्वार्थी प्रकृति का मनुष्य होता है। परस्त्री सम्भोग की इच्छा रखता है। स्त्री, पुत्र, इष्टमित्र, वाहन, धन-धान्य, सम्पत्ति के सुख से सुखी, वैभव युक्त, बड़ा आदमी होता है। शुक्र क्षीणादि रोगों से युक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि स्वगृही शुक्र को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन मन, उदास तथा बुद्धिहीन होता है। स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव, वाहनादि सुख से रहित हो रहता है। उद्यमहीन रहता है। व्यर्थ इधर-उधर घूमना पड़ता है। अप्राकृतिक नियमों द्वारा अपनी वासना की तृप्ति करता है। किसी नीच स्त्री के संसर्ग में अपयश पाता है। रोगी रहता है।

मिथुन-कन्या राशि गत शुक्र पर सर्व ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—जब मिथुन राशिगत शुक्र को पूर्ण चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य उत्तम कर्म करने वाला, सात्त्विक वृत्ति, धन-वाहन से युक्त, प्रेमी, स्त्री पुत्रादि से युक्त होता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर विपरीत फल होता है। कन्या का शुक्र क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो मनुष्य दुद्धिहीन, कामासक्त, स्त्री पुत्रादि सुख से रहित, परस्त्री 'सम्भोग की इच्छा रखने वाला, कामातुर, अपयश का भागी होता है। स्वप्नदोष, प्रमेहादि रोगों से युक्त होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि बुध क्षेत्री शुक्र को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य, बुद्धिहीन, कामी, लड़कों से कामाग्नि शान्त करने की इच्छा वाला, सदा क्रोधी, आवेश पूर्ण बात करने वाला, परस्त्री पर धन व्यय करने वाला, धातु रोग से युक्त, क्षीणतन, पित्त, कफ, वायु रोग से ग्रसित, प्रमेह, स्वप्नदोष, शुक्र क्षीणादि रोगों से मुख की कान्ति खो देने वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब बुध क्षेत्री शुक्र को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिमान, नीतिनिपुण, दर्शनीय तथा कामासक्त होता है और अपनी योग्यता से उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, ऐश्वर्य युक्त, देर में विवाह करने वाला, धन सम्पत्ति से युक्त, शांत भाव से कार्य निकाल लेने वाला, स्वार्थी-सा होता है। मन्दाग्नि, जिगर तिल्ली रोग से पीड़ित रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि बुध क्षेत्री शुक्र को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य चलचित, बुद्धिहीन, स्वार्थी, स्वजन समुदाय से द्वेष करने वाला, निर्लज्ज, चिवल्ला, उसकी स्त्री पर पुरुष की इच्छा रखती है। वह अनेक दुःख से दुःखी होकर उदास रहता है। ऐसा पुरुष किसी स्त्री से अनुचित प्रेम के कारण अपयश पाता है। समाज में बहिष्कृत सा समझा जाता है। जीवन में कई बार उतार-चढ़ाव आते हैं। वायु, पित्त, कफ, नजला, जुकामादि रोग होते हैं।

कर्क राशिगत शुक्र पर सर्व ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि कर्क राशिगत सूर्य पर पूर्ण चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धिमान, दर्शनीय, कलाकार, कामासक्त, धन-धान्य से युक्त, माता का आज्ञाकारी, प्रेम विवाहरत, भाग्यवान, अनेक कन्याओं का पिता होता है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर मनुष्य मलिनबुद्धि, भ्रमयुक्त, चित्त, दुष्टात्मा, लम्पट, अनेक स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट करने वाला, शृङ्गारी, नीच कर्म द्वारा अपयश पाने वाला, प्रमेह, धातुक्षीण, स्वप्नदोष, नजला जुकामादि से पीड़ित रहता है।

भौम दृष्टि फल—जब कर्क राशिगत सूर्य पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होती है तो मनुष्य शूर-वीर, बलवान्, उद्यमी, संगीतप्रिय, शत्रुओं को दबाकर रखने वाला, अनेक स्त्रियों को चाहने वाला, धन-सम्पत्ति से सुखी रहता है। मनुष्य कामी, क्रोधी, कामासक्त, सुरापी, पर-स्त्रियों के प्रेम में धन व्यय करने वाला,

तथा उनके प्रेम में अपयश तथा दुःख पाने वाला होता है। पित्त, क्षय, शुक्रक्षीण, नजला, जुकाम से पीड़ा पाने वाला होता है। इसकी स्त्री को अक्सर गर्भपात हो जाते हैं।

गुरु दृष्टि फल—यदि कर्क राशिगत सूर्य को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, उदार, परोपकारी, नीतिज्ञ, उच्चाभिलाषी, स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, नौकर, वाहन आदि के सुख से युक्त, बड़ा ही ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला, कर्मकांडी, तीर्थयात्रा प्रिय, स्वास्थ्य सुन्दर तथा दर्शनीय होता है। गुरुजनों से द्वेष रखता है। सुन्दर, उच्चवर्ण की पर-स्त्री पर आसक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—जब कर्क राशिगत शुक्र को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिनमन, बुद्धिहीन, पाप कर्मरत, उदास तथा स्त्री सुख से रहित-सा होता है। इसका विवाह देर में होता है। चलचित्त होने के कारण इसके उद्योग असफल ही रहते हैं। इसको मन्दाग्नि, जिगर-तिल्ली आदि रोग होते हैं। स्त्री के पेट में वायु पीड़ा अक्सर रहती है। जीवन में कोई विशेष उन्नति नहीं होती। सन्तान सुख कम होता है।

सिंह राशिगत शुक्र पर सर्वग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत शुक्र पर पूर्ण चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बुद्धिमान, काव्य-कला में निपुण, धार्मिक, स्त्री सन्तानादि के सुख से सुखी होता है। अनेक कार्य करने पर भी सफलता कम मिलती है। क्षीण चन्द्र से दृष्ट होने पर अनेक स्त्रियों से कलुषित प्रेम की भावना होती है। किसी नीच स्त्री के सम्बन्ध से धन तथा मान हानि होती है। उसका जीवन रोग ग्रस्त तथा दुःखी रहता है। ऐसे मनुष्य प्रेम-विवाह में बड़ी ही आस्था रखते हैं।

भौम दृष्टि फल—जब सिंह राशिगत सूर्य पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य उग्रस्वभाव, मलिनबुद्धि, झगड़ालू स्वभाव का होता है। कामासक्त होने के कारण अनेक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखता है और किसी स्त्री से धन पाता है। ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। राज्यसेवा से धन सम्पत्ति प्राप्त होती है। उसकी स्त्री को गर्भपात अवश्य होता है। धातुक्षीण, प्रमेह, स्वप्नदोष नजला, जुकाम, पित्तादि रोगों से पीड़ा पाता है। अग्नि, जल भय रहता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि सिंह राशिगत शुक्र को गुरु देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, नीतिज्ञ, गुप्तचर विभाग में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला, गर्वयुक्त, गुरुजन द्वेषी, विवाह देर में करने वाला, स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, वाहनादि सुख से सुखी रहता है। कानून का जानने वाला वकील, बैरिस्टर, न्यायाधीश, या ऐसा ही कोई बड़ा व्यक्ति होता है। किसी सवर्ण सुन्दर स्त्री का प्रेमी होता है।

शनि दृष्टि फल—जब सिंह राशिगत शुक्र को शनि पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धिहीन, सन्तप्त तथा मलिन मन होता है। स्त्री-पुत्र तथा सम्बन्धियों से कलह रखने वाला, उद्यमी तथा परिश्रमी होता है। स्वतन्त्र व्यवसाय में लाभ पाता है। किसी नीच, सुन्दर, आकर्षक वस्त्र धारण करने वाली स्त्री से, चाहे वह विधवा ही क्यों न हो, विवाह करना पसन्द करता है। ऐसे मनुष्य रूप तथा लावण्य की उपासना न करके आकृति की बनावट पर बहुत ध्यान देते हैं। ऐसे मनुष्य वीर्य हाथ से नष्ट करने वाले, वायु रोग से पीड़ित होते हैं। इन्हें नजला बहुत सताता है। शरीर के जोड़ों, कमर, पेट, गर्दन, पेडू तथा खवों के पास अक्सर दर्द की शिकायत बड़ी अवस्था में हो जाती है।

धनु या मीन राशिगत शुक्र पर सर्व ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि धनु-मीन राशिगत शुक्र पर पूर्ण चन्द्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, विनीत, धार्मिक, विद्वान, सरकारी नौकरी करने वाला, सुन्दर स्त्री का पति, प्रथम कन्या सन्तान पाने वाला, धन-धान्य युक्त, कवि, लेखक, भोग-विलास से युक्त, जलविनोद, जलयात्रा करने वाला, कुल दीपक के समान होता है। यदि क्षीण चन्द्र से दृष्ट हो तो फल विपरीत होता है। किसी स्त्री के कलुषित प्रेम के कारण धनहानि तथा मान हानि होती है। स्त्री-बच्चों से कलह रहता है। जल में डुबकी खाने का भय रहता है। हो सकता है जल में डूबकर मृत्यु हो जाय। वीर्य सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जलोदर, अण्डकोषवृद्धि, नजला, जुकाम, पेशाब में पथरी या शूगर जाने का रोग हो सकता है। इन्हें जीते जो अपयश अवश्य मिलता है।

भौम दृष्टि फल—जब धनु या मीन राशिगत शुक्र पर मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य साधारण बुद्धिमान, उद्यमी, पराक्रमी, आवेशपूर्ण, झगड़ालू

होता है। शत्रुओं को दबाकर रखता है। मित्र का मित्र और शत्रुओं को जीवित न देखने वाला परम शत्रु होता है। जीवन में सुख का अनुभव बहुत ही कम अवसर पर होता है। स्त्री-सुख बहुत कम या बिल्कुल नहीं होता है। यह स्त्री जाति से घृणा करता है। किन्तु कामासक्त होता है। किन्तु काल्पनिक तथा मानसिक, विषय वासना के कारण ही अनेक शारीरिक रोग व्यर्थं में ही मोल ले लेता है। स्वप्नदोष, प्रमेह, शुक्रक्षय, मन्दाग्नि, जिगर तिल्ली, पित्त, नजला, जुकाम आदि रोगों से सदा पीड़ा पाता है। प्रारम्भिक जीवन दुःखी रहता है। अन्तिमावस्था में धन वाहन का सुख रहता है। इसका संसार सीमित रहता है। यह जिसे मन से प्रेम करता है उसी के समक्ष में घृणा भी करता है। स्वतन्त्र विचार होने के कारण किसी की पराधीनता नहीं चाहता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि स्वराशिगत शुक्र को बृहस्पति पूर्णं दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यवान, धनवान, विद्वान, नीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ कायदे कानून का जानने वाला, बैरिस्टर, न्यायाधीश, मन्त्री या इसी प्रकार का कोई उच्चाधिकारी होता है। धार्मिक, तीर्थयात्रा करने वाला, स्वाध्यायप्रिय, शत्रुजित, शान्त, गर्वयुक्त, श्वेत वस्त्र धारण करने वाला, मिष्टान्न प्रिय, स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, धन-धान्य, वाहन, सम्पत्ति के सुख से सुखी होता है और किसी सवर्ण स्त्री का प्रेम पात्र होकर रहना चाहता है।

शनि दृष्टि फल—जब धनु या मीन राशिगत शुक्र पर शनि की पूर्णं दृष्टि हो तो बड़ा ही बुद्धिमान, प्राकृतिक दृश्यों को देखने वाला, लोहे, कोयले, की खाने, ऊँचे पर्वत, पुराने दुर्गादि देखने का सौकीन होता है और इन्हीं के व्यवसाय से लाभ पाता है। जलविनोद, (तैरना, नाव चलाना,) खेल-तमाशे देखने का चाव होता है। उत्तम वाहनादि का सुख भोगने वाला, दीनों का सहायक, किसी नीच जाति की स्त्री का प्रेमी होता है। उससे धन पाता है। अपयश मिलने पर सब कुछ त्याग कर चल देता है। वायु, धातु, नजलादि से पीड़ा पाता है।

मकर कुम्भ राशि गत शुक्र पर सर्वं ग्रह दृष्टि फल

चन्द्र दृष्टि फल—यदि मकर या कुम्भ राशिगत शुक्र पर पूर्णं चन्द्रमा की पूर्णं दृष्टि हो तो मनुष्य :बुद्धिमान्, रूपवान्, दर्शनीय, पराक्रमी, प्रतापी, धन,

वाहन स्त्री सन्तान से युक्त होता है। तेजस्वी, कलापूर्ण कार्यों के लिए समाज तथा लोक में प्रतिष्ठित होता है। यौवन काल में इसका प्रेम किसी न किसी पर स्त्री से अवश्य रहता है। ऐसे योग वाले मनुष्य प्रेम विवाह करके पछताते देखे गये हैं और यदि क्षीण चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य बड़ा ही कामासक्त, लम्पट तथा बुद्धिहीन और पराक्रम शून्य होता है। ऐसे योग वाले मनुष्य शृंगारी तथा कलाकार (नृत्य गान करने वाली) किसी नीच स्त्री के साथ भागते देखे गये हैं। उनका कलुषित तथा निकृष्ट प्रेम बड़ा ही उग्र तथा प्रबल होता है। उसके वेग में वे कुछ से कुछ कर बैठते हैं। स्वस्त्री, पुत्रादि का सुख उन्हें बहुत ही कम होता है। जल विनोद या जल यात्रा में जीवन संकट ग्रस्त होता है। नजला, जुकाम, प्रमेह, शुक्रक्षीण, स्वप्नदोषादि रोगों से पीड़ित रहने के कारण तिल्ली, जिगर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, कफ श्वाँसादि रोग बहुत कष्ट देते हैं।

भौम दृष्टि फल—जब मकर या कुम्भ राशि गत शुक्र को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बड़ा ही उद्यमी परिश्रमी, शस्त्र-शास्त्र का ज्ञाता, लड़ाई के लिये तत्पर, आवेशपूर्ण बात करने वाला होता है। इसकी अपनी स्त्री तथा पुत्रादि से सदा अनबन-सी रहती है। जीवन दुःखी रहता है। इसकी पत्नी को गर्भपात बहुत होते हैं और सदा किसी न किसी रोग से पीड़ित रहती है। ऐसे मनुष्य रुपये के लिए बड़ी दूर-दूर की यात्रायें करते हैं। क्रोधावेश में कभी-कभी ऐसे व्यक्ति स्त्री की हत्या भी कर डालते हैं या फिर आत्म-हत्या भी कर लेते हैं। जल, शस्त्र से भय इन्हें जीवन में अवश्य होता है। ऐसे योग वाले मनुष्य की स्त्री दुश्चरित्र होती है जिस कारण कई प्रकार के अनर्थ हो जाते हैं।

गुरु दृष्टि फल—यदि मकर-कुम्भ राशि गत शुक्र पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य बड़ा ही बुद्धिमान, विद्वान्, इत्र, फुलेल, चन्दन सुगन्धित पुष्प, नदी, झरने जलाशय, वन-उपवन, जल-विनोद में आस्था रखने वाले, व्यवहार कुशल, नीतिज्ञ तथा गर्व युक्त मधुर वाणी बोलने वाले होते हैं। वकील बैरिस्टर, न्यायाधीश अथवा सरकारी उच्चाधिकारी भी होते हैं। काव्य कला-संगीत तथा अनेक प्रकार के वाद्य बजाने का अत्यन्त चाव होता है। ये लोग धार्मिक प्रकृति, स्वाध्यायप्रिय तथा तीर्थयात्रा करने वाले होते हैं। इन्हें जल विनोद प्रतियोगिता में पारितोषिक प्राप्त होते हैं। जल यात्रा तथा जलोत्पादक

पदार्थों से लाभ होता है। स्त्री सुन्दर प्राप्त होती है। किसी-किसी में वन्ध्या दोष रहता है। सन्तान सुख बहुत ही कम होता है। इन्हें पर स्त्री प्रेम की लालसा अवश्य रहती है।

शनि दृष्टि फल—जब शनि क्षेत्री शुक्र को शनि ही पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य मलिन मन, उद्यमी तथा उपकारी प्रकृति का होता है। व्यापारी प्रकृति होती है किन्तु पूर्ण रूप से कृपण होता है। ऐसे मनुष्य दहेज या धन के लालच में रुके रहते हैं। विवाह देर में होता है और नीच स्त्रियों से संबंध रखते हैं। सन्तान सुख कम होता है। स्वार्थी तथा मतलबी होते हैं। अविश्वसनीय होते हैं। उदास तथा निराश रहते हैं। झूँठ बोलकर कार्य कर लेते हैं। मुष्टि मैथुन द्वारा वीर्य नष्ट करते हैं। मन्दाग्नि, जिगर, पेट-दर्दादि से पीड़ित रहते हैं। स्त्री के पेट में दर्द रहता है।

शुक्रोपदशा फल

शुक्र में शुक्रान्तर्दशा फल—यदि शुक्र को महादशा के अन्तर्गत शुक्र की ही उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि बड़ी ही सात्त्विक, धार्मिक होती है। इस दशा को प्राप्त विद्यार्थी गण बिना कठिन परिश्रम किये ही परीक्षा के शुभ परिणाम को प्राप्त होते हैं और परिश्रमी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर छात्र-वृत्ति पाते हैं और देश विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजे जाते हैं। अविवाहित युवकों के रुके हुए विवाह सम्बन्ध हो जाते हैं। या किसी भी लड़की या स्त्री से प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। विवाहितों को शुभ सुन्दर सन्तान की प्राप्ति होती है। इस दशा में मनुष्य की काम वासना प्रबल होती है। मनुष्य शृंगारी तथा सौन्दर्य की ओर झुकता है। शृंगारी, कवितायें, साहित्य पढ़ने में मन खूब लगता है। पर स्त्रियों-पुरुषों की ओर मन आकर्षित होता है। अनेक धार्मिक उत्सवों, त्योहारों तथा प्रीतिभोजों के करने में चाव बढ़ता है। शुभ, पवित्र तीर्थस्थानों की यात्रायें प्राप्त होती है, सिन्धु जल यात्रा का अवसर प्राप्त होता है। मनुष्य को धन-धान्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु सभी से सुख की प्राप्ति होती है। श्वेत वस्त्र चाँदी-सोने, मोती आदि के आभूषणों की प्राप्ति होती है। सुगन्धित-पुष्प-इत्र, चन्दनादि से सुसज्जित रहने को जी चाहता है। मुकदमे में विजय होती है।

शत्रु दबे रहते हैं, समाज तथा लोक में ख्याति मिलती है। बड़े २ अधिकारियों से मुलाकात होती है। रुके हुए कार्य हो जाते हैं। भोजन की सुव्यवस्था रहती है। दूध-दही, क्षीर, मक्खन, टोस्ट, डबलरोटी, हलुआ, पूरी आदि समय २ पर भोज्यार्थ प्राप्त होवे हैं। वाहन सुख की प्राप्ति रहती है। यह दशा सब प्रकार से सुखकर होती है, फिर भी मनुष्य को अवस्था भेद से स्वप्नदोष, प्रमेह, धातु-क्षीण, शुक्रादिस्राव के साथ २ परस्त्री प्रेम बढ़ता है।

शुक्र में सूर्यान्तर्दशा फल—जब शुक्र की महादशा के अन्तर्गत सूर्य की उपदशा वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि मलिन तथा चित्त की वृत्ति उद्विग्न रहती है। उसका मन पढ़ने-लिखने में बहुत कम लगता है। इसलिए अति परिश्रमी विद्यार्थी ही परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। साधारणतः सिर, नेत्र, मस्तक कानादि में पीड़ा हो जाया करती है। मनुष्य की वृत्ति कुकर्म की ओर आकर्षित होती है। कामाग्नि प्रबल रहती है। स्त्री-सन्तान, इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव सभी से मनमुटाव रहता है। व्यर्थ शत्रुता बढ़ती है, क्रोधावेश लगा रहता है। सरकारी नौकरी के लिए यह दशा विशेष रूप से हानिकारक होती है। उसको अनेक अधिकारियों से अनबन रहती है। गुरुजनों से द्वेष बढ़ता है, भोजन की व्यवस्था ठीक नहीं रहती। हृदय की गति ठीक नहीं रहती, पित्त, कफ, नजला, जुकाम, मन्दाग्नि, स्वप्नदोष, प्रमेह, जिगर, तिल्ली आदि रोगों से शरीर दुर्बल हो जाता है। बीमारी में धन काफी व्यय होता है, जल से भय होता है। आजीविका में कमी आ जाती है, मुकदमे में पराजय होती है।

शुक्र में चन्द्रान्तर्दशा फल—यदि शुक्र की महादशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि शान्त रहती है और काम वासना की प्रबलता के कारण मन्दाग्नि, जिगर, तिल्ली या अजीर्ण से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। सिर, मस्तक, दाँत, कान, नाखूनादि में चोट लगती है या दर्द होता है। जल में डुबकी खाने का भय रहता है। इसलिए पढ़ाई कम होती है। अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो जाते हैं। प्रेम विवाह के अवसर प्राप्त होते हैं, विवाहितों को कन्यारत्न की प्राप्ति होती है। किसी स्त्री से धन की प्राप्ति होती है, श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है। धार्मिकता के भाव बढ़ते हैं। जोड़ों में दर्द होता है, जल विनोद या जलयात्रा में कष्ट

होता है। यह दशा सरकारी कर्मचारियों की उन्नति के लिए लाभप्रद रहती है। भोजन की सुव्यवस्था होती है। घी, दूध, दही, खोये के सामान, मिष्ठान्न, रसीले, चिकने, स्निग्ध भोजन तथा फल खाने को मिलते हैं। किसी स्त्री के कलुषित सम्बन्ध द्वारा लोकापवाद की प्राप्ति होती है, धातुक्षय, स्वप्नदोष, मन्दाग्नि रोग होते हैं।

शुक्र में भौमान्तर्दशा फल--जब शुक्र की महादशा के अन्तर्गत मंगल की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि उद्यमरत रहती है। साहसी तथा पराक्रमी कार्यों में धन तथा मान की प्राप्ति रहती है। पराक्रमपूर्ण कार्यों के लिए राज्य से भूमिलाभ तथा पारितोषिक की प्राप्ति होती है। वायु-पित्त, कफ, नजलादि रोगों से पेट, कमर, जोड़ों में दर्द होता है। रक्तविकार, रक्तचाप से पीड़ा होती है। आँखों तथा सिर में दर्द होता है। अर्शादि रोग बढ़ते हैं। लड़ाई-झगड़े तथा मुकदमे आदि में मन लगता है। भोजनादि की दुर्व्यवस्था रहती है। विद्यार्थियों के लिए यह दशा विशेष लाभप्रद नहीं होती, परिश्रमी विद्यार्थी अवश्य उत्तीर्ण होते हैं। अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो जाते हैं और पुत्रेच्छुक मनुष्यों को पुत्र की प्राप्ति होती है। श्वेत-लाल रंग की वस्तुओं के व्यापार में अच्छा लाभ रहता है। यह दशा पुलिस तथा सेना विभाग के कर्मचारियों के लिए लाभप्रद रहती है। पद तथा वेतन में वृद्धि होती है। इन दिनों मनुष्य की वासना बढ़ जाती है और किसी स्त्री से बलात्कार को जी चाहता है। इसलिए लड़ाई-झगड़ों के अवसरों पर लोकापवाद तथा समाज में निरादर की प्राप्ति होती है। यह दशा उत्तेजनामय होने के कारण मनुष्य के लिए शुभफल दायक नहीं होती। मनुष्य दुःखी-सा ही रहता है।

शुक्र में राहोरन्तर्दशा फल--यदि शुक्र की महादशा के अन्तर्गत राहु की उपदशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती। उसका मन उदास तथा चित्तवृत्ति अस्थिर रहती है। इसलिये धर्म-कर्म में मन नहीं लगता, यात्रा में कष्ट होता है। विद्यार्थियों को यह दशा हानिप्रद रहती है। उन्हें परिश्रम करने पर भी शुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त नहीं होता। अविवाहितों के विवाह रुक जाते हैं। विवाहितों के स्त्री-पुत्र, भाई-बन्धुओं से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। काली वस्तुओं, काष्ठ, फूसादि के व्यापार से लाभ हो सकता है। सरकारी कर्म-

चारियों के लिए यह दशा अच्छी नहीं होती। नौकरी तो स्थिर रहती है, फिर भी अपने उच्चाधिकारियों से कलह तथा अनबन रहने के कारण किसी प्रकार की भी उन्नति नहीं हो पाती, बल्कि किसी न किसी प्रकार की अवनति या हानि की ही सम्भावना रहती है। मन में उद्वेग, चित्त में सन्ताप, द्वेष तथा ईर्ष्या का प्रादुर्भाव होता है। अग्नि, चोर, विष, सर्प, जलादि से प्राणसंकट उत्पन्न होने का भय रहता है। जीवन दुःखी हो जाता है, अचानक शोक तथा क्लेश की प्राप्ति होती है, भोजन की बहुत ही दुर्व्यवस्था रहती है। कभी भोजन मिलता है, कभी नहीं मिलता। यदि मिला तो नमकीन, विरस तथा अस्वादिष्ट मिलता है। किसी निकट सम्बन्धी की अकाल मृत्यु का अचानक संवाद प्राप्त होता है और धन की हानि होती है। स्थानभ्रष्ट हो सकता है।

शुक्र में जीवान्तर्दशा फल—जब शुक्र महादशा के अन्तर्गत बृहस्पति की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक, धार्मिक तथा प्रखर होती है। विद्यार्थीगण सहज अभ्यासगत शुभ परीक्षा परिणाम प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे मनुष्य वकील, वैरिस्टर, न्यायाधीश मंत्री, उपमंत्री, आदि भी हो सकते हैं। नीतिनिपुण होने के कारण राजनैतिक क्षेत्र में अच्छी प्रगति करते हैं और अपनी विद्वत्ता से यशस्वी होकर लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। सरकारी कर्मचारियों के लिए यह दशा विशेष लाभप्रद रहती है। उन्हें वेतन तथा पदवृद्धि के अवकाश मिलते हैं। अधिकारियों से प्रशंसा पाते हैं। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्रों से सुख तथा सत्कार प्राप्त होता है, स्वास्थ्य ठीक रहता है, भोजन की व्यवस्था ठीक रहती है, खाने को मिष्टान्न, पकवान, स्निग्ध, चिकने पदार्थ तथा रसीले फल प्राप्त होते हैं। धन-धान्य, सम्पत्ति, उद्यान, मकानादि का सुख प्राप्त होता है। ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत होता है। मुकदमे में विजय होती है। कलापूर्ण कार्यों में सफलता मिलती है। सत्कर्म में रुचि बढ़ती है। तीर्थ यात्रायें होती है। नौकर वाहानादि का सुख होता है। धार्मिक उत्सव, त्यौहार, परोपकार, दानादि में उत्साह रहता है और किसी सवर्ण सुन्दर स्त्री से प्रेम सम्बन्ध की भावना उत्पन्न होती है।

शुक्र में शन्यन्तर्दशा फल—यदि शुक्र की महादशा के अन्तर्गत शनि की अन्तर्दशा का प्रादुर्भाव हो तो मनुष्य साधारणतः सभी शुभाशुभ कर्मों में मन

को लगाने वाला होता है। कठिन परिश्रम करने वाले सभी विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। अविवाहितों के विवाह में अड़चनें पड़ जाती हैं। सन्तान इच्छुक को हीनांग सन्तान की प्राप्ति होती है। ऐसी दशा में कभी मनुष्य धर्म, कर्म, यज्ञ हवनादि करने वाला, तो कभी चोरी आदि में दण्ड पाने वाला होता है। यदि इस दशा में किसी का विवाह हो तो स्त्री अपने से बड़ी अवस्था की प्राप्त होती है या किसी वृद्धा से प्रेम होता है। उसका धन, सम्पत्ति, मकान, जमीन, जायदादादि हाथ लगते हैं। शत्रु एकदम दब से जाते हैं। ग्राम पंचायतों, समाज, निगमादि में मान प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। लोहे, कोयले, गुड़, तेल, तिल, उर्दादि के व्यापार से अच्छा लाभ होता है। देशाटन हानिप्रद रहता है। भोजन की व्यवस्था उचित न होने के कारण गठिया, वात पीड़ा, शुक्रस्रावादि रोगों से पीड़ा होती है। किसी निकटतम सम्बन्धी की मृत्यु का संवाद श्रवण को मिलता है और कई प्रकार से आपत्तियाँ आती हैं। किसी नीच जाति की स्त्री के प्रेम सम्बन्ध के कारण लोकापवाद प्राप्त होता है। मानसिक कष्टों के कारण मनुष्य उदास हो जाता है और अनेक प्रकार की कुत्सित भावनायें हृदय में उठती है। जीवन भार-सा हो जाता है।

शुक्र में बुधान्तर्दशा फल—जब शुक्र की महादशा के अन्तर्गत बुध की उपदशा का समय वर्तमान हो तो मनुष्य की बुद्धि सात्त्विक, निर्मल तथा स्मरणशक्ति तीव्र होती है। विद्यार्थियों का मन पढ़ने-लिखने में खूब लगता है। गणित के परीक्षार्थी यशस्वी होते हैं, छात्रवृत्ति पाते हैं और देश-विदेश में उच्च शिक्षा के लिए नियुक्त होते हैं। अविवाहितों के रुके हुए विवाह हो जाते हैं, विवाहितों को सुन्दर सन्तान की प्राप्ति होती है। व्यापारियों को श्वेत, पीत वस्त्र तथा वस्तुओं के व्यापार से अच्छा लाभ होता है। सरकारी कर्मचारियों के लिए यह दशा लाभप्रद रहती है। उन्हें पद, वेतन तथा अन्य प्रकार के पारितोषिक प्राप्त करने का शुभ अवसर प्राप्त होता है। किन्तु विभागगत परीक्षा परिणाम बहुत ही कम परीक्षार्थियों का शुभ प्राप्त होता है। अधिकारी वर्ग की सहानुभूति प्राप्त होती है। भोजन की सुव्यवस्था रहती है। दूध, दही, मक्खन, रसीले फल, अनेक प्रकार की सब्जियाँ तथा मिष्टान्न की प्राप्ति होती है। धर्म, कर्म, परोपकार, तीर्थयात्रा, देशाटन की रुचि बढ़ती है, अचानक धनागम

होता है। समाज तथा लोक में कीर्ति, यश बढ़ता है, प्रतिष्ठा तथा सत्कार की प्राप्ति होती है। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु; आदि से सुख मिलता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है, मन में प्रसन्नता बढ़ती है। सभी ओर से सौख्य बढ़ता है। ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत होता है, धन-धान्य सम्पत्ति, उद्यानादि की व्यवस्था होती है। फिर वात, कफ, नजला, जुकाम, पीलिया, शुक्रक्षय आदि रोग हो जाया करते हैं। यह दशा यदि बचपन में आये तो बच्चे बिगड़कर चरित्रहीन हो जाते हैं। युवक-वृद्ध पर स्त्रीप्रेम में रत रहते हैं।

शुक्र में केत्वन्तर्दशा फल—यदि शुक्र की महादशा के अन्तर्गत केतु की अन्तर्दशा का समय व्यतीत हो तो मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती। मन में अनेक संकल्प-विकल्प तथा शंकायें उत्पन्न होती हैं। विद्यार्थियों का मन शिक्षा प्राप्ति में नहीं लगता। इसलिए बहुत ही परिश्रमी विद्यार्थी उत्तीर्ण होते हैं। युवकों की कामवासना प्रबल रहती है। नीच कर्मों में मन लगता है, काष्ठादि, फूँस के व्यवसाय में कुछ लाभ होता है। स्त्री, पुत्र, भाई, बन्धु, इष्ट-मित्रादि से कलह या झगड़ा हुए बिना नहीं रहता, मुकदमें आदि में धन की हानि होती है। किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु का दुःखद संवाद श्रवण को मिलता है। शत्रुओं, चोरों, जल में डूबने, विषपानादि तथा सर्पदंशादि का संकट उपस्थित हो सकता है। पेट में, जोड़ों में दर्द हो सकता है। व्यर्थ इधर-उधर भ्रमण करना पड़ता है। अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं, चित्त में अशांति रहती है। जीवन भार-सा लगता है, जिससे मनुष्य परिस्थिति से विवश होकर अपघात तक कर बैठता है।

आवश्यक तथा उपयोगी बातें

पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक को पढ़ने के साथ-साथ इसमें लिखे समस्त नोटों को ध्यान पूर्वक पढ़ें और विवेक द्वारा मनन कर, तत्काल बुद्धि से उन्हें ग्रहण करें, क्योंकि इस पुस्तक की तालिकायें इन्हीं नोटों में निहित हैं। जिस प्रकार बिना ताली के ताला नहीं खुल सकता और बिना ताला खुले कमरे का आन्तरिक भाग दृष्टिगोचर नहीं हो सकता, उसके गुण, दोष, पवन-प्रकाश आदि का परिज्ञान उसमें कुछ दिन रहे बिना नहीं हो सकता, उसी प्रकार इस पुस्तक की भलाई-बुराई, गुण-दोषादिका ज्ञान मनुष्य को इसका पूर्ण अध्ययन

किये बिना नहीं हो सकता। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि पाठक इस पुस्तक का अद्योपान्त पाठा करते समय इसमें लिखे समस्त नोटों के आदेशानुसार इस पुस्तक को उत्तरोत्तर पढ़ते जायें। क्योंकि लेखक का एकमात्र ध्येय धन कमाना ही नहीं है, बल्कि अपने पाठको की ज्ञान-वृद्धि और बुद्धि विकास द्वारा योग्य बनाकर अपने लक्ष्य की पूर्ति करने का है और विशेष ज्ञान द्वारा पाठकों की फलादेश पद्धति की कठिनाइयों का निवारण कर जन साधारण तथा जन विशेष के सम्मुख बिना हिचकिचाये अपने समस्त फलादेशों को निर्भय रूप से कहकर लोक-समाज तथा विश्व में नाम, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा, सत्कार तथा धन प्राप्त करने का है। जो भी व्यक्ति इस पुस्तक के लिखे नोटों के अनुसार फलादेश पद्धति को अपनायेगा वह निश्चय ही उपर्युक्त बातों को प्राप्त कर धन-धान्य युक्त अचल सम्पत्ति को प्राप्त कर यशस्वी हुए बिना न रहेगा। स्वच्छन्द पद्धति को अपनाने वाले व्यक्ति चाहे जितना भी परिश्रम करें, तर्क-वितर्क की समस्याओं को सुलझाने में ही अपने समय को व्यर्थ लगाकर अंधेरे में खोई हुई सुई को पाने के लिए परिश्रम को व्यर्थ कर निराशा को प्राप्त होंगे। जीवन क्षणिक है, संसार का कार्य क्षेत्र विस्तृत तथा अनन्त है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को समय की कीमत करनी चाहिए और उसके सदुपयोग से लाभ उठाना चाहिये। कुछ मनुष्यों की मनोवृत्ति सन्दिग्धात्मक ही होती है। ऐसे व्यक्ति साफ, स्वच्छ, स्पष्ट रूप से दिखाई तथा समझ में आ जाने वाली बात को भी सन्देहात्मक तुला पर रखकर, उसके केवल अवगुणों का ही मनन करते हैं। विपरीत इसके कुछ व्यक्ति इतने भावुक होते हैं कि भाषा की सुव्यवस्था तथा रसात्मक वाक्यों द्वारा ही उसके गुणानुवाद-गायन करते हुए नहीं थकते। ये दोनों ही वृत्तियां अपनाने योग्य नहीं हैं। इसलिए मनुष्य को निष्पक्ष होकर निश्चयात्मक मनोवृत्ति से किसी भी पुस्तक की आलोचना, समालोचना, उसके गुण तथा दोषों का विवेचन, स्वबुद्धि के अनुसार करके किसी तथ्य पर पहुँचना चाहिये। कितने ही व्यक्ति नामविशेष, जाति विशेष, प्रदेश विशेष के नाम से ही इतने प्रभावित हो जाते हैं कि अपनी निश्चयात्मक मनोवृत्ति ही खो बैठते हैं और किसी-किसी के हृदय में, व्यक्ति विशेष का तथा प्राचीन ऋषि-मुनियों का इतना प्रभाव जमा हुआ होता है कि वे उनके विपरीत कुछ

श्रवण करना ही नहीं चाहते। फल क्या होता है कि फलादेश झूठे फल प्रदान करते हैं। प्राचीन आचार्यों ने स्वसमयानुकूल किसी भी फलादेश के लिखने में कसर नहीं छोड़ी है। यह सत्य ही है। फिर भी युग प्रभाव का हवाला देते हुए उन्होंने आगामी ज्योतिषियों को सचेत करने के लिए काफी से ज्यादह सामग्री छोड़ दी है। अब प्राचीन ग्रंथों के समस्त फलादेश कलियुग में सत्य नहीं बैठते हैं। देश, काल, स्थान तथा जाति वर्णानुसार उनमें भी परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है। समय परिवर्तनशील है। सभी मर्यादायें टूट चुकी हैं। मनुष्यों का रहन-सहन, खान-पान, पढ़ाई-लिखाई, विवाहादि संस्कार सभी पद्धतियाँ बदल चुकी हैं, जिनका पूर्ण प्रभाव वायुमण्डल द्वारा समस्त संसार को एक बना रहा है। धर्माधर्म का विचार उठ-सा ही गया है। इसलिए मर्यादा-हीन वस्तुओं के फलादेश भी मर्यादाहीन हो होंगे। ये बातें ध्यान देने योग्य ही हैं।

यहाँ यह बात कह देनी अत्यन्त आवश्यक है कि जो भी ग्रह स्वराशिगत, स्वनवांश गत, मित्र राशिगत, उच्च राशिगत या उच्चांश उच्च राशिगत, अपने ही द्रेष्काणादि में, चारों प्रकार से केन्द्र या मूल-त्रिकोण में तत्काल बली हों या वर्गोत्तमांश में बलवान हों तो वे सभी अपनी २ दशान्तर्दशा में शुभ फल प्रदान करने वाले होते हैं। प्रतिकूल इसके जो भी ग्रह या भावेश, क्रूर भाव में, अधिशत्रु ग्रह अपने नीच नवांश या त्रिक स्थान में बलहीन हो तो वह ग्रह अपनी दशान्तर्दशा या उपदशागत सदा ही अशुभ फल प्रदान करेगा। अब हम यहाँ प्रत्येक भावगत शुभाशुभ ग्रहों की शुभाशुभ फल प्रदायिनी दशा पद्धति के अनुसार सूक्ष्म रूप से उनके शुभाशुभ फलों का दिग्दर्शन कराने के पश्चात्, दशा, अन्तर्दशा आदि का प्रकरण समाप्त करेंगे। यहाँ यही विशेष रूप से लिखना है कि पाप दशा का शत्रु तथा पापान्तर्दशा में निम्नांकित फल किस प्रकार अपना-अपना प्रभाव रखते हैं।

द्वादशेश शुभः पापान्तर्दशा फल

यदि लग्नेश पापग्रह हो तो वह अपनी दशा में अपने शत्रु ग्रहों की अन्तर्दशा में, रोग उत्पन्न करता है। धन और पराक्रम की हानि करता है। उद्योग में शिथिलता तथा बने बनाये कार्यों में रुकावटें डालता है। मन में मलिनता,

चित्त में खिन्नता, उदासी तथा सिर में पीड़ा उत्पन्न करता है और यदि लग्न में शुभ ग्रह हो, शुभ-मित्र राशिगत हो, लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में उच्च, स्व-मित्र राशि का बलवान हो तो अपनी दशा में तथा मित्र ग्रहों की अन्तर्दशा में अत्यन्त शुभ फल प्रदान करता है। शरीर स्वस्थ रहता है, घर में उत्सव, पुत्र-जन्म, विवाह, यज्ञोपवीत, चूड़ाकर्म, तीर्थयात्रा आदि शुभ कर्म होते हैं। ब्रह्मभोज, स्वाध्याय, यज्ञ, हवन, इष्ट-मित्रों का समागम, नौकरी में पद तथा वेतन वृद्धि, अनेक प्रकार के पारितोषिक, भाई-बन्धुओं से सहयोग, सत्कार तथा सुख की प्राप्ति होती है। शत्रु दबे रहते हैं, समाज तथा लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। कीर्ति, यश तथा सम्मान प्राप्त होता है। ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने के साथ-साथ मनुष्य पूर्ण सुख का भी अनुभव करता है।

यदि धन भाव में शुभग्रह हो, धनेश भी शुभ ग्रह हो, शुभ स्थान में बैठा हो, क्रूर तथा पाप ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त न हो तो मनुष्य को उसकी दशान्तर्दशा में शुभ फल की प्राप्ति होती है। व्यापारियों को व्यापार में लाभ होता है, कलाकारों की कला फलती है, उन्हें धन, यश, प्रतिष्ठा, मान, सत्कार तथा गुरुजनों से मान्यता प्राप्त होती है। नौकरी करने वालों तथा सरकारी कर्मचारियों की पद वृद्धि या वेतन में वृद्धि होती है। वार्षिक बढ़ोत्तरी से प्रथम ही पारितोषिक स्वरूप आय वृद्धि की प्राप्ति होती है। उच्चाधिकारियों द्वारा प्रशंसा प्राप्त होती है। स्त्री-पुत्र, इष्ट-मित्र, भाई-बन्धुओं द्वारा कार्य में सहयोग प्राप्त होते हैं। वाणी की प्रचुरता से मनुष्य को धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। सुस्वादु पदार्थ भोजन के समय प्राप्त होते हैं। विपरीत इसके जब धन स्थान में पाप या क्रूर ग्रह हो, धनेश पाप या क्रूर ग्रह होकर अशुभ स्थान जैसे त्रिक स्थान में बैठा हो, पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, शुभ ग्रहों में से किसी एक से भी दृष्टि, युति आदि में किसी प्रकार भी कोई सम्बन्ध न हो तो मनुष्य पाप, क्रूर ग्रहों की उपदशा या दशान्तर में अशुभ फल को प्राप्त होता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, कुटुम्बादि पारिवारिक मनुष्यों से कष्ट पाता है, अनेक रोग होते हैं, नेत्रों में पीड़ा रहती है। स्थान भ्रष्ट होकर इधर-उधर भागना पड़ता है। धन, सम्पत्ति सम्बन्धी हानि होती है। आपसी कलह द्वारा मुकदमें आदि में राज्यदण्ड का भय रहता है। भोजन की दुर्व्यवस्था होने के कारण स्वास्थ्य पर

कुप्रभाव पड़ता है। मान, प्रतिष्ठादि को ठेस पहुँचती है, जिससे मन मलिन, सन्तप्त तथा चिन्तातुर रहता है। जीवन भार समान, प्रतीत होता है, जिससे कितने ही अनर्थों का सामना करना पड़ता है।

यदि तीसरे भाव में शुभ ग्रह हो और तृतीयेश शुभ ग्रह होकर केन्द्र या त्रिकोण में बलवान् बैठा हो या किसी मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो और पाप क्रूर ग्रहों से किसी प्रकार भी सम्बन्धित न हो तो मनुष्य बड़ा ही उद्यमी पराक्रमी तथा कार्यशील होता है। उसका उद्यम सफल होता है और अपने पराक्रम से धन-सम्पत्ति कमाकर उसका सुखपूर्वक उपभोग करता है। भाई-इष्ट-मित्रादि में आदरणीय होता है। (यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि राहु और शनि यद्यपि पाप ग्रह हैं फिर भी वे तीसरे स्थान में बुरे फलदायक नहीं माने जाते। यदि ये दोनों ग्रह उच्च के या स्वगृही तृतीय स्थान में हों तो सभी तो नहीं किन्तु पराक्रमशील कार्यों में शुभ फल प्रदान करते हैं। फिर भी उच्च शनि की दशान्तर्दशा में मनुष्य के कान या दाँत में दर्द अवश्य होता है।) यदि तीसरे स्थान में पाप या क्रूर ग्रह हों और तृतीयेश पाप या क्रूर ग्रह होकर त्रिक स्थान में बैठा हो तो मनुष्य पापकर्मा, हिंसक वृत्ति धारण करने वाला, रोगी, इष्ट-मित्र-भाई-बन्धुओं से कलह या झगड़ा करने वाला, शस्त्र, अग्नि, विष, चोरादि से पीड़ा पाने वाला होता है। किसी कुकर्म के लिए राज्य दण्ड भी हो सकता है। मन में क्रोध, बुद्धि में जड़ता होने से सदा आवेशपूर्ण रहता है। कर्ण पीड़ा विशेष प्रकार से होती है। यदि इन पाप क्रूर ग्रहों पर भी मित्र शुभ ग्रहों की दृष्टि युत्ति हो तो मनुष्य को अनेक प्रकार के क्षणिक कष्ट तो होते हैं फिर भी स्थायी प्रकार से अनिष्टफल की प्राप्ति नहीं होती है।

यदि चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह हो और चतुर्थेश शुभ ग्रह होकर किसी शुभ स्थान में (केन्द्र-त्रिकोण) अपने उच्च का या स्वगृही अपने ही नवांश या अपने मित्र शुभ ग्रह के नवांश में बलवान् बैठा हो या अपने मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो किसी भी शत्रु पाप ग्रह की दृष्टि युत्ति सम्बन्ध से रहित होने पर अपनी दशान्तर्दशा में अत्यन्त शुभ फल प्रदान करने में समर्थ होता है। ऐसे योग वाला मनुष्य धन-धान्य सम्पन्न, सुख-सम्पत्ति से युक्त घर में जन्म लेता है। अपने पैतृक धन का उपभोग करता है। उनकी सम्पत्ति स

ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। उसके माता-पिता चिरकाल तक जीवित रहते हैं। उनकी ही छत्रछाया में सुख का अनुभव करता है। ऐसे योग में उत्पन्न मनुष्य माता-पिता का सेवक तथा गुरुजनों का भक्त होता है। कृषि कर्म, उद्यान तथा बागवानादि के कार्यों में विशेष रूप से लाभ रहता है। वाहन सुख की प्राप्ति होतो है। रहने को सुन्दर मकान मिलता है। भोजन की सुव्यवस्था रहती है। दूध, दही, घृत, मेवा, पकवान, खोये के पदार्थ, मिष्ठान्न, स्निग्ध, मादक वस्तुयें तथा रसीले, मीठे, सुस्वादु फलों के साथ इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति यथा-समय होती है। नौकरादि का पूर्ण सुख रहता है। विपरीत इसके यदि चतुर्थ भाव म पाप या क्रूर ग्रह हो, किसी भी शुभ मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त न हो बल्कि शत्रु पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट युक्त हो तो मनुष्य की माता का देहान्त, ग्रहावस्था के अनुसार लड़कपन में ही हो जाता है। उसको लालन-पालन से ही कष्ट प्राप्त हो जाता है एवं माता-पिता का सुख न मिलने से ही बच्चे की अधोगति हो जाती है। धन-सम्पत्ति की प्राप्ति नहीं होती। यदि हुई भी तो उसकी दुर्व्यवस्था ही रहतो है। व्यापार तथा कृषि कर्म में हानि रहती है, वाहनादि सुख नहीं मिलता, शिक्षा पूर्ण नहीं हो पाती, कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है। यदि विवाह हुआ तो स्त्री रोगी रहती है। मंगल के चतुर्थ होने पर निश्चय ही स्त्री को गर्भपात होते हैं। रक्तविकार, रक्तचाप, अर्शादि रोगों में से एक न एक अवश्य होता है। ऐसे मनुष्य स्थान भ्रष्ट की भाँति कष्टमय जीवन व्यतीत करते देखे जाते हैं।

यदि पंचम स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च का, उच्चांश का, स्वगृही स्वनवांश एकाकी या अपने मित्र शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो, क्रूर पाप ग्रहों की दृष्टि-युति से सर्वथा रहित हो तो मनुष्य बड़ा ही सात्त्विक, धार्मिक, परोपकारी, विद्वान्, दयालु, स्वाध्याय प्रिय, दान, पुण्य में आस्था रखने वाला, तर्क शास्त्र शिरोमणि, कवि, लेखक, आलोचक, समालोचक, सर्वप्रिय, विद्या विनय सम्पन्न, समाज लोक में अपनी विद्या के कारण कीर्ति, यश, प्रतिष्ठा तथा सत्कार प्राप्त करने वाला, धन-धान्य से युक्त, सम्पत्तिशाली, राज्य में उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला होता है। साथ ही यदि पंचमेश शुभ ग्रह हो और वह भी पूर्ण रूप से निर्दोष बलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में, शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर

पंचम स्थान को देखता हो तो सोने में सुगन्धि का कार्य करता है। ऐसा मनुष्य स्त्री-पुत्र, मित्र, भाई-बन्धुओं के सुख से सुखी रहता है। सर्वत्र जय पाता है। भोजन की सुव्यवस्था रहती है। ऐसे मनुष्य स्वतन्त्र व्यवसाय में बहुत सा धन कमाते हैं और राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त कर जीवन सफल बनाते हैं। इसके प्रतिकूल यदि पंचम स्थान में पाप क्रूर ग्रह हों और पंचमेश भी पाप क्रूर ग्रह हो, नीच का हो, अस्त का हो या नीचास्त दोनों ही हो और अशुभ स्थान में विराजमान हो तो बुद्धि में भ्रम रहता है। उसको उद्योग करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। व्यवसाय के लिए व्यर्थ इधर-उधर चक्कर लगाना पड़ता है। उसके जीवन की सभी क्रियायें प्रतिकूल होती हैं। निष्ठुर हृदय पापरत रहता है। उसे स्त्री-पुत्रों का सुख नहीं होता, उसके पुत्र पिता का अपमान करते हैं, आज्ञाकारी नहीं होते। भोजन का दुर्व्यवस्था होने के कारण स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। व्यर्थ लोकापवाद को प्राप्त होता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, सभी सम्बन्धी उससे रुष्ट रहते हैं। कोई भी समय पर काम नहीं आता। इस प्रकार के अनिष्ट फल ग्रह पापान्तर्दशा में ही विशेष रूप से प्राप्त होते हैं।

यदि छठें स्थान में शुभ ग्रह हों और षष्ठेश शुभ ग्रह हो और वह किसी भी स्थान में क्यों न बैठा हो और चाहे कितने शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट-युक्त या किसी और प्रकार से सम्बन्धित क्यों न हो कोई विशेष शुभ फल प्रदान नहीं करता। किसी न किसी रोग से पीड़ा अवश्य पहुँचाता है। हो सकता है ग्रह विशेष की कृपा से शत्रु दबे रहें और प्रतिवाद तथा मुकदमें में विजय प्राप्त हो जाय फिर भी सुखमय जीवन की कोई झलक उसे प्राप्त नहीं होती। इसके प्रतिकूल पाप क्रूर ग्रह छठें स्थान में हो और षष्ठेश भी पाप तथा क्रूर ग्रहों से युक्त दृष्ट होकर नीच, अस्त तथा नीचास्त होकर शत्रु राशि का किसी भी शुभाशुभ स्थान में बली या निर्बल बैठा हो तो, या नीच के नवांश में हो तो भी मनुष्य ग्रह प्रकृति के अनुसार पाप-क्रूर ग्रह की दशान्तर्दशा या उपदशा में अनेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक कष्टों को प्राप्त करता है। मन अशान्त रहता है। बुद्धि में भ्रम रहता है। शत्रुओं, चोरों, अग्नि, विष, जलादि से प्राणों का भय रहता है, गिर कर चोट लग सकती है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षय, गुल्मरोग, गठिया, श्वास, कफ, वायु, पित्तादि रोगों में से कोई भी

रोग हो सकता है। किसी मुकदमे में पराजय होने पर राज्यदण्ड का भय हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य जीवन भार हो जाता है। इष्ट-मित्र ही शत्रु होकर पीड़ा देते हैं। अपने परायों की सहानुभूति उठ जाती है। रोगों के उपचार में धन व्यय होने के कारण मनुष्य ऋणी हो जाता है। उसका सत्कार तो दूर रहा पहचानने तक में धोखा ही रहता है।

यदि सप्तम स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च स्थान, उच्चांश, या स्वनवांश में स्वगृही अथवा किसी प्रकार से बलवान बैठा हो या सप्तमेश उपर्युक्त प्रकार से केन्द्र-त्रिकोण या लाभ स्थान में बलवान बैठा हो तो मनुष्य का भाग्योदय विवाह के पश्चात् होता है। उसकी बुद्धि स्थिर, चित्त शान्त तथा मन उत्साही होता है। धर्म-कर्म में मन लगता है, तीर्थ यात्रा तथा देशाटन से पूर्ण लाभ रहता है। शुभ विवाह होता है, दहेज में धन-सम्पत्ति, सुसज्जित शय्या, अनेक प्रकार के आभूषण तथा बहुमूल्य वस्त्रों का समूह प्राप्त होता है। वाहन सुख की प्राप्ति होती है। जल यात्रा का साधन प्राप्त होता है। अनेक प्रकार के व्यंजनों द्वारा भोजन की मुख्य व्यवस्था रहती है। स्त्री सुन्दर तथा दर्शनीय मिलती है। सन्तान आज्ञाकारी तथा रुचि के अनुकूल ही रहती है और जब सप्तम स्थान में पाप-या क्रूर ग्रह नीच, अस्त नीचास्त या शत्रु राशि के हों और सप्तमेश भी उपर्युक्त प्रकार से दूषित तथा निर्बली हो और त्रिक स्थान में बैठा हो, किसी शुभ-मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त या किसी प्रकार भी सम्बन्धित न हो, प्रतिकूल इसके शत्रु पाप क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति द्वारा सम्बन्धित हो तो मनुष्य का प्रथम तो विवाह ही नहीं होता, येन केन प्रकारेण यदि विवाह हुआ भी तो स्त्री जीवित नहीं रहती, यदि जीवित भी रही तो पर पुरुष गमन द्वारा कलंकित होती है। या किसी के साथ भाग जाती है। पत्नी वियोग सहना पड़ता है। मन मलिन, चित्त उदास तथा चिन्तातुर रहता है। बुद्धि भ्रमित-सी रहती है, उस मनुष्य को किसी प्रकार भी चैन नहीं मिलता। अधर्म तथा पाप कर्म में प्रवृत्ति रहती है। किसी नीच या कलंकित स्त्री से अनुचित सम्बन्ध के कारण अपयश मिलता है, लोकापवाद प्राप्त होता है। यात्रा में कष्ट, जल से भय, अर्श, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, धातुक्षय, गुदा से रक्तस्राव, कांच, भकन्दरादि रोगों की उत्पत्ति होती है। किसी पाप कर्म के लिये राजदण्ड का भय होता है। ऐसे योगवाला मनुष्य पापान्तर्दशा में बहुत ही दुःखी रहता है।

यद्यपि अष्टम स्थान में शुभ ग्रह का होना शुभ फलदायक नहीं होता, फिर भी उच्च का स्वगृही, स्वनवांश का बलवान शुभ ग्रह अपनी दशा में, अपनी अन्तर्दशा में तथा अपने मित्र शुभ ग्रह की उपदशा में, स्वास्थ्य-सुख, निरोगता, उत्साह, उद्योग, पराक्रम तथा देशाटन में शुभ फल प्रदान करता है। प्रतिकूल इसके जब पाप तथा क्रूर ग्रह अष्टम स्थान में होते हैं और अष्टमेश पाप या क्रूर ग्रह, स्वगृही, उच्चांश, स्वनवांश के शुभ स्थानों या अष्टम स्थान पर ही हो तो कुछ शुभ फल प्रदान करते हैं। यदि ये ग्रह, नीच, अस्त, नीचास्त या शत्रु राशि के अष्टम स्थान में हो या अष्टमेश, उपर्युक्त प्रकार से दूषित तथा बलहीन होकर त्रिक स्थान में शत्रु राशि का बैठा हो तो जातक को स्वान्तर्दशा से भी कहीं अधिक हानिप्रद फल मारकेश की उपदशा में प्रदान करता है। ऐसे समय में मनुष्य को रोग, ऋण, शत्रु, आदि का भय दबाये रहता है। किसी दूषित कर्म के लिये राजदण्ड मिल सकता है। विष, अग्नि, चोरी का माल धरने पर सजा तथा जातक की मृत्यु तक हो सकती है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, बहिनादि निकट सम्बन्धियों में से किसी की भी मृत्यु का दुःखद संवाद प्राप्त हो सकता है। चेचक, हैजा, सन्निपात, लकवा, प्लेग, काला बुखार, गर्दनतोड़ बुखारादि से आयु क्षीण होती है धन हानि हो सकती है। यश कीर्ति प्रतिष्ठादि को ठेस लगती है। जीवन दुःखों को सहते-सहते भार-सा प्रतीत होता है। शनि, मंगल राहु-केतु आदि की दशायें सब प्रकार से नाश का कारण बन जाती हैं। अच्छे-अच्छे मनुष्य भीख तक मांगने लग जाते हैं। स्थान भ्रष्ट होकर कहीं से कहीं पहुँच जाते हैं। लोग पागल और उन्मादी की भाँति कार्य करने लगते हैं। कोई-कोई तो आत्महत्या तक करने लगते हैं।

यदि नवम स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च, उच्चांश, स्वगृही, स्वनवांश तथा मित्र क्षेत्री होकर निर्दोष रूप से बलवान बैठे हों या नवमेश शुभ ग्रह उपर्युक्त प्रकार से निर्दोष बलवान, केन्द्र या त्रिकोण में एकाकी या अपने मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त बैठा हो तो मनुष्य धर्म-कर्म करने वाला, बुद्धिमान, भाग्यवान, धन-धान्य, सुख-सम्पदा, स्त्री-पुत्र, भाई-बन्धु, इष्ट-मित्रादि के सुख से युक्त होकर ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है। सरकारी नौकरी, व्यापार तथा कलापूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करता है, उद्योग फलता है। देशाटन, तीर्थयात्रा, जलया-

आदि का शुभ अवसर प्राप्त होता है। स्वाध्याय, यज्ञ, जपतप-मन्त्रादि शक्ति द्वारा आध्यात्मिक, मानसिक शक्ति का विकास होता है। साधु संगति, गुरु-भक्ति परोपकार, दया, आदि के कार्यों में चित्त की वृत्ति खूब लगती है। धार्मिक उत्सव तथा त्योहार, उत्साह के साथ मनाये जाते हैं। अचानक धन की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि शुभ ग्रह नवम में और नवमेश यदि नीच, अस्त, नीचास्त, शत्रु राशि के हों तो फल विपरीत होता है। यदि पाप-क्रूर ग्रह नवम में हो और नवमेश नीच-अस्त, नीचास्त, शत्रु राशि का त्रिक स्थान में हो तो मनुष्य का उद्यम सफल नहीं होता, पराक्रम शिथिल रहता है। भाग्य मन्द रहता है। आशा में सदा निराशा रहती है। मन चिन्तित तथा उदास रहता है। इष्ट-मित्र, भाई बन्धु, स्त्री, पुत्रादि से कलह तथा झगड़े रहते हैं। शत्रुओं से मुकदमे में पराजय प्राप्त होती है। मनुष्य धर्म से विमुख रहता है। पाप कर्म में प्रवृत्ति रहती है। ईर्ष्या-द्वेष की मात्रा बढ़ी-चढ़ी रहती है। भोजन की दुर्व्यवस्था रहती है, व्यवसाय की प्राप्ति के लिये इधर-उधर, देश-विदेश की ठोकरें खानी पड़ती हैं। विदेश में जीवन संकट उत्पन्न होता है। जल यात्रा में प्राण संकट, इसी प्रकार वायुयान यात्रा में भी शारीरिक कष्ट तथा प्राण संकट उत्पन्न होता है। विशेषकर सूर्य, शनि, मंगल तथा राहु की अन्तर, उपदशा तथा प्रत्यन्तर में मनुष्य को धन-जन-सम्पत्ति पशु, वाहनादि की हानि होती है। कभी-कभी स्वयं जातक संन्यास ले लेता है।

जब दशम स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च-उच्चांश, स्वगृही, नवांश, शुभ मित्र की राशि में शत्रु पाप क्रूर ग्रहों की दृष्टि-युति से रहित बलवान बैठा हो और इसी प्रकार से दशमेश सर्व प्रकार से निर्दोष तथा बलवान अपने शुभ मित्र ग्रहों की दृष्टि युति सम्बन्धित केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो तो मनुष्य दशान्तर्दशा में राज्य से पारितोषिक, पदवृद्धि तथा वेतन वृद्धि पाता है। उसके उच्चाधिकारी उससे बड़े प्रसन्न रहते हैं। वह स्वयं स्वस्थ तथा पराक्रमशील कार्यों में तल्लीन रहकर सपने की सार्थकता को प्राप्त होता है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्रादि का सहयोग तथा सुख प्राप्त रहता है। धन-धान्य, सुख, सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। समाज में यश, लोक में प्रतिष्ठा, राजनैतिक क्षेत्र में सम्मान तथा सत्कार की प्राप्ति होती है। शत्रु दबे रहते हैं, मुकदमे में विजय, पिता से सुख तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। गुरुजनों के सत्कार की इच्छा होती है।

धर्म-कर्म, परोपकार, दीन-दुखियों के कष्ट निवारण का साधन बनता है। यदि दशम स्थान में पाप क्रूर ग्रह नीच, अस्त, नीचास्त तथा शत्रुक्षेत्री, नीच के नवांश में सदोष तथा बलहीन पड़े हों और दशमेश भी इसी प्रकार सदोष, नीचास्त, शत्रुक्षेत्री तथा शत्रु पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त त्रिक स्थानों में बलहीन बैठा हो तो मनुष्य नीच कर्मों को ओर आकर्षित होता है और किसी दुष्ट कर्म के लिए राजाज्ञा से कठिन कारागार का दण्ड पाता है। व्यवसाय में विफलता, उद्योग में शिथिलता, पराक्रम में पराजय तथा राज्य कर्मचारियों को पद तथा वेतन हानि हो सकती है। वार्षिक वृद्धि रुक सकती है। उच्चाधिकारियों से अनबन के कारण नौकरी छूट भी सकती है। पिता से विचार-विनिमय न होने के कारण सदा अनबन तथा कलह रहती है। इसलिए पैतृक सुख-सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ता है। माता का सुख नहीं मिलता, देश-विदेश के भ्रमण में कष्ट होता है। स्वजन वियोग हो सकता है। शरीर की अस्वस्थता के कारण जीवन भार स्वरूप सा प्रतीत होने लगता है। मन में अशांति चित्त में विकलता तथा हृदय में निराशा जमी रहती है। अपने परायों में निरादर, समाज में तिरस्कार तथा लोक-अपकीर्ति की प्राप्ति होती है। स्त्री-पुत्रादि के कारण मनुष्य शोकातुर रहता हैं। यात्रा में कष्ट मिलता है। जीवन दुःखी रहता है, निद्रा भंग से पीड़ा होती है।

यदि एकादश स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या उच्चांश स्वगृही या स्व-नवांश मित्र क्षेत्री निर्दोष अपने शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त बलवान बैठे हों या एकादशेश, उपर्युक्त प्रकार से बलवान तथा निर्दोष होकर केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो तो मनुष्य कुशल व्यापारी, चतुर कलाकार या कोई राजकीय उच्चाधिकारी होता हैं। इस प्रकार शुभ ग्रह की शुभान्तर्दशा में मनुष्य को धन, सम्पत्ति, मकान, भूमि, पारितोषिक, उच्च पद, वेतन वृद्धि, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा आदि सुयश प्राप्त होते हैं। इष्ट-मित्र, बड़े भाई, स्त्री-पुत्रादि का सुख प्राप्त होता है। शत्रु दबे रहते हैं, कार्य में सफलता मिलती है। सट्टे, लाट्री, रेस, बॉण्डादि के कार्य में अचानक धन की प्राप्ति होती हैं। मनुष्य ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने के साथ-साथ धर्म-कर्म की ओर आकर्षित होता है। तीर्थ-यात्रा, यज्ञ, हवन, ब्रह्मभोज, त्योहार, उत्सवों में धन राशि व्यय करके यशस्वी

होता है। जलयात्रा से लाभ पाता है। यदि ये ही शुभ ग्रह त्रिक स्थानों में बैठ जायें तो फल बिल्कुल विपरीत होता है। मनुष्य को लाभ के स्थान पर हानि ही हानि होती है। किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती, प्रतिकूल इसके यदि एकादश स्थान में पाप क्रूर ग्रह हों और लाभेश भी पाप या क्रूर ग्रह नीच, अस्त, नीचास्त या शत्रु वर्ग का होकर यदि त्रिक स्थान में बैठ जाय तो मनुष्य की बड़ी ही दुर्दशा होती है। उसकी बुद्धि स्थिर नहीं रहती, व्यापार तथा व्यवसाय में हानि होती है। कलाकारों की कलायें व्यर्थ ही पड़ी रह जाती हैं। उनका विकास नहीं हो पाता। सरकारी कर्मचारियों की पदवृद्धि या वेतन वृद्धि रुक जाती है। वार्षिक आय वृद्धि में भी अड़चनें पड़ जाती हैं। अधिकारी वर्ग से मनोमालिन्य हो जाता है। उनकी अप्रसन्नता से किसी निर्दोष की उन्नति में बाधा पड़ जाती है। इष्ट-मित्र, भाई-बन्धुओं से कलह तथा झगड़ा ही रहता है। शत्रुओं से मुकदमे आदि में मुँह की खानी पड़ती है। स्त्री-पुत्रादि का वियोग सहना पड़ता है। भोजन की दुर्व्यवस्था हो जाने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। ऋण लेना पड़ता है। यात्रा में कष्ट होता है। साथी साथ छोड़ देते हैं। मन में सन्ताप, चित्त में उदासी छा जाती है। किसी भी कार्य में मन नहीं लगता। सूर्य, मंगल, शनि, राहु यदि एकादश में हों या एकादशेश हों तो इनकी दशान्तर्दशा में सर्वनाश तक की सामग्री उत्पन्न हो जाती है। राज्य-कोप से किसी दुष्ट कार्य के लिए राज्य दण्ड की प्राप्ति हो सकती है। उद्योग तथा परिश्रम में शिथिलता आ जाने के कारण धन मान की हानि होती है। जीवन निर्वाह के लिए दर-दर भटकना पड़ता है।

यदि द्वादश स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च के उच्चांश के स्वगृही या स्वनवांश के मित्र क्षेत्री, मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो मनुष्य उद्यमी तथा परिश्रमी होता है और अपने बाहुबल के पराक्रम से धन कमाकर, परोपकार, विद्यादान, तीर्थयात्रा, धार्मिक उत्सव, त्यौहारों के मानने, ब्रह्मभोज करने में व्यय करता है और यदि द्वादशेश शुभ ग्रह उच्च का या स्वगृही, मित्रक्षेत्री, उच्चांश, स्वनवांश का बलवान होकर केन्द्र त्रिकोण में निर्दोष बैठा हो तो मनुष्य को शुभ फल प्रदान करता है। लग्नेश शुभ ग्रह से सम्बन्धित होने प-

स्थान के प्रभाव द्वारा फल में और भी वृद्धि करता है। धन खूब आता है और उपर्युक्त प्रकार के शुभ कार्यों में अत्यधिक रूप से व्यय भी खूब होता है। ऐसे योग वाला मनुष्य अत्यधिक धनी न होकर मान, प्रतिष्ठा वाला होता है। धन कम होने पर भी लोग उसे धनिक समझते हैं और सत्कार प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है और बीमारियाँ बहुत ही कम होती हैं। प्रतिकूल इसके जब व्ययेश त्रिक स्थान में बैठ जाता है, नीच का नीचांश पर शत्रुक्षेत्री हो तो मनुष्य रोगी रहता है। बीमारी में बहुत सा धन व्यय करना पड़ता है। ऋण लेना पड़ता है। व्यर्थ का देशाटन करना पड़ता है। भोजन की दुर्व्यवस्था रहती है। मुकदमे लगे रहते हैं और जब द्वादश भाव में पाप क्रूर ग्रह, नीच, अस्त, नीचास्त, शत्रुक्षेत्री क्रूरांश पर बलवान बैठे हों या द्वादशेश उपर्युक्त प्रकार से दूषित होकर निर्बली त्रिक स्थान में शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर बैठा हो तो मनुष्य तामसी, आलसी, पाप कर्म रत होता है। किसी पाप कर्म के लिए मुकदमा लगता है। उसमें धन व्यय होता है। राज्य दण्ड तक प्राप्त हो सकता है। उत्साहहीन मनुष्य परोपकार से दूर उदरपूर्ति के लिए देश-विदेश में भटकता फिरता है। इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, घृणा की दृष्टि से देखते हैं। समाज में तिरस्कार, लोक में निन्दा तथा लोकापवाद प्राप्त हो जाता है। आपसी कलह के कारण मन में खिन्नता, चित्त में निराशा, उर में क्षोभ तथा उद्योग में शिथिलता ही प्राप्त होती है। पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। मान, प्रतिष्ठा और कीर्ति धूमिल सी हो जाती है। मंगल की दशा में अर्श, रक्त-विकार, रक्तचाप, आँख दुखना, पुलिस चालानादि का भय रहता है। सूर्य की दशा में नेत्र पीड़ा, सिर दर्द, पित्त विकार, घामादि से पीड़ा या रोगों के कारण धन व्यय होता है। राहु से चोरी, शत्रु से संकट, मुकदमा, विष तथा सर्प के काटने का भय रहता है। शनि से नीच जाति द्वारा मान हानि या लोह शस्त्र द्वारा चोट लगने का भय रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि क्रूर और पाप ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में अनिष्ट प्रभाव रखते हैं। धनवान पर इन दशाओं का प्रभाव धन द्वारा येन केन प्रकारेण कुछ निवृत्त सा भी हो जाता है। किन्तु निर्धन और दीन मनुष्यों के लिए प्राण घातक कष्ट होता है। कितने ही आदमी ऋणी होकर घर-बार छोड़ कर निर्जन वास कर लेते हैं और कितने ही प्राणान्त भी कर लेते हैं।

●